

श्रीविधीपद्म गव्हीय अणुगारस्य प्रतिक्रमणानि सविधि सुत्राणि.



साधु तथा साधवी समुदायने जणुवा तथा वांचवा अर्थे

विधिपद्म समाचारी अतुसार तैयार करतार

मुनिमदारराज श्री गौतमसागरजीनी आझाथी

उपावी प्रसिद्ध कर्ता

श्रेष्ठ कानजी वीरम, चिचवंदर ध. नं. ४३-५३ सुवर्द्ध.

श्रीमुवर्द्ध-क्रीलभटलेन घर न २३ मा आर्वेला निर्णयसागर प्रेसमा वाळकृष्ण रामचंद्र पाणेकरे प्रकाशकमाटे छाप्यो.



सवत १९६७, श्रीवीरसवत २४३७.

1

2

3

विनंती पत्र.

आ पुस्तक नणनारा तथा वांचनारा प्रत्ये अवश्यनी सूचना.

आ पुस्तक नणनारा वांचनारा तथा तेनो उपयोग करनारा सर्वे साहित्योने सविनिय जणाव वामां आवे ठे के, आ पुस्तक ठपाव्या पती केटवीन जगोण विशेष अशुरूता माळम पडेवी तेतुं शुद्धिपत्र तैयार करी ते तुरत जणाड आवे तेटला माटे ठपावी आ पुस्तकनी शरूआतमां मुक- वामां आवेठुं ठे, माटे ते मुजव प्रथमशी चूवो सुधारी वेईने पती ते नणवु के वांचवुं केमके चूवो सुधार्या सिवाय नणवा वांचवाशी अशुरूतानो दोष लागे अने खरो नावार्थ— परमार्थ स- मजाय नही, तेथी थारेलो लाग्र मळे नही, माटे महेरवाती करी शुद्धिपत्रमां जणाव्या प्रमाणे चूवो सुधारी वेईने नणवु वांचवु तथा सडुपयोग करवो. एज विनंती ठे

प्रसिद्ध कर्ता.

विशेष सूचना

आ पुस्तकनें रखरवुं मुकी तथा तेनो अविनय करीने कोड पण प्रकारनी आशातना करवी नही. पुस्तक आशातना करवाशी झानावणीं कर्मे वधाय ठे अने तेथी झान प्राप्ति यती नथी. झान विना मनुष्य पशुतुदय गणाय ठे माटे झाननुं वहुमान करवा माटे अमारी नम्र प्रार्थना ध्यानमां वेड पुस्तकनी आशातना करशो नही. ए खास विनंती ठे.

जाहिर खबर

आ पुस्तक- साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविकाने लणवा वाचवा
माटे काड पण किंमत्त तीथा सिवाय थापवानो वराव
करवामां थाव्यो ते माटे मंगावी वेवा कृपा करवी
प्रसिद्ध कर्ता

आ पुस्तक मलवातुं वेकाणुं

अनंत नाथजी महाराजना देसासरमा ज्ञान नगर.
(मांडवी) मुंबई.

अनुक्रमणिका.

पत्र	विषय	पत्र
१	१८ चार स्तुतियें देववंदन करवानी विधि	६
२	२० वैयावच्चगराणं (शुद्धिपत्रमां ताप्यो ते)	६
२	२१ नगवानादि वंदन	७
२	२२ नगवानादिकने वंदन कर्था पठीनीविधि	७
२	२३ सवस्सविदेवसिध्दां	७
२	२४ मुनिने माटे करेसिन्नते	७
२	२५ देवसिं अलोळं द्रष्टामिवाभि	७
२	२६ द्रष्टामिवाभि पठी करवानी विधि	७
२	२७ काउस्सग्गमां चितववानी गाथा	७
२	२८ काउस्सग्ग पठीनी विधि	७
३	२९ सुहंपति तथा शरिर पक्खिदहणना पच्चास	८
३	वोळो ते क्या क्यां केवा तेनी विधि	८
४	३० सुहंपति पक्खिदह्या पठी करवानी विधि	१०
४	३१ सुगुरुने द्वादशवृत वांदणा	११
४	३२ वांदणा देवा पठी करवानी विधि	११
४	३३ देवसि अलोयणनी पांच गाथा	११
४	३४ गमणा गमणनो पाठ	११
४	३५ गमणा गमण कक्षा पठीनी विधि	११
५		

आक

विषय.

१	१ प्रतिकमण समाचारी गाथा त्रण
२	२ प्रतिकमण शब्दनेो अर्थ
३	३ मंगला चरणरूप नवकार सूत्र
४	४ खमासमणसूत्र
५	५ सुगुरुने सुख पृथासूत्र
६	६ सुगुरुने सुखसाता पृथा पठीनी विधि.
७	७ द्रियावही सूत्र
८	८ तस्सजसरी सूत्र
९	९ अन्नवजससिणं
१०	१० लोगस्स सूत्र
११	११ लोगस्स कक्षा पठी करवानी विधि
१२	१२ चोवीस माडलानी विधि
१३	१३ माफला कक्षा पठीनी विधि
१४	१४ अशोकवृक्ष सुरपुण्य वृष्टि
१५	१५ द्रष्ट जयजय महाप्रभुतुं चैत्यवंदन
१६	१६ जंकिं चिनामतिडं
१७	१७ नमुहुण अथवा शकस्सव
१८	१८ जेअ अइआसिळा

श्लोक	विषय	पत्र	श्लोक	विषय	पत्र
३६	चत्वारिंशंगलनो पाठ	११	५५	ठ अथश्यकनां नाम	१६
३७	चत्वारिंशगदं कक्षा पठीनी विधि	११	५६	नमो खमासमणाय वीर स्तुति	१६
३८	श्रमण सूत्र वा पगाम सथाय	११	५७	नमो खमासमणाय पठीनी विधि	१७
३९	श्रमण सूत्र कक्षा पठी करवानी विधि	११	५८	शुरुवंदना पाठ अद्वादजोसु	१७
४०	अशुष्टीव	११	५९	शुरुवंदना पाठ पठी करवानी विधि	१७
४१	अशुष्टीव खमाख्या पठीनी विधि	११	६०	नदीसूत्रनी सथाय जयद जगजीवजोणी	१७
४२	आयरियजवज्जाय	१५	६१	नदीसूत्रनी सथाय पठी करवानी विधि	१८
४३	आयरियजवज्जाय पठी करवानी विधि	१५	अथ राइ प्रतिक्रमण विधि अतुकमणिका	१९	
४४	सवलोय् अरिदत्त चेट्थ्याण	१५	६२	राइ प्रतिक्रमण विधि मूल गाथा चार	१९
४५	सवलोय कक्षा पठी करवानी विधि	१५	६३	राइ प्रतिक्रमणना प्रारजनी विधि	१९
४६	पुरकरवरदीवट्टे	१५	६४	जावति चेट्थ्याइ	१९
४७	सुअस्स जगवज	१५	६५	जावंत केविसाहू	१९
४८	सुअस्स जगवज पठी करवानी विधि	१५	६६	जावंत केविसाहू कक्षा पठीनी विधि	१९
४९	सिरूण बुरूण	१५	६७	जयवीयरथ	१९
५०	सिरूण बुरूण पठी करवानी विधि	१६	६८	जयवीयरथ पठी करवानी विधि	२०
५१	शुतदेवतानी स्तुति	१६	६९	जरहेसर वाहुवतीनी सथाय	२०
५२	शुतदेवतानी स्तुति पठीनी विधि	१६	७०	जरहेसर वाहुवतीनी सथाय पठीनी विधि	२०
५३	केजदेवतानी स्तुति	१६	७१	तप चितवणीना काउस्सगमा शु चितववु	२१
५४	केजदेवतानी स्तुति पठीनी विधि	१६	७२	ते तथा तप चितवणा विधि	२१

श्राक	विषय	पत्र	श्राक	विषय.	पत्र
१२	तप चितवणीना काउत्सग पठीनी विधि	२१	१० पाक्षिक कामणा पठी करवानी विधि	-	११
१३	उँ नमो जवृद्धियेनो पाव	२२	११ सुवन देवतानी स्तुति		१२
१४	उँ नमो जवृद्धियेना पाव पठीनी विधि	२२	१२ क्षेत्रदेवतानी स्तुति		१२
१५	केवलनाणी वृहत् चैत्यवंदन स्तवन	२३	१३ क्षेत्रदेवतानी स्तुति पठी करवानी विधि		१२
१६	केवलनाणी कथा पठी करवानी विधि	२५	१४ नंदीसूत्रनी सथाय सुहम्मं अग्निवेसाण		१२
	अथ अणगारस्य पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि		१५ नंदीसूत्रनी सथाय कथा पठीनी विधि		१३
१७	पाक्षिक प्रति क्रमणविधिनी गाथा	२५	१६ चउमासी प्रतिक्रमण विधि		१३
१८	पाक्षिक प्रतिक्रमणा प्रारंभमांती विधि	२५	१७ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि		१३
१९	अष्टोत्तरी तीर्थमाला (अरिहंतं नगवंतं)	२५	१८ राइ संथारा पोरसि विधि		१३
२०	अष्टोत्तरी तीर्थमाला कथा पठीनी विधि	२५	१९ चउक्रसायतुं चैत्य वंदन		१४
२१	परकी संबधी अष्टुठिड	२५	२० चउक्रसायतुं चै कथा पठीनी विधि		१४
२२	अष्टुठिया पठी करवानी विधि	२५	२०१ राइ संथारानी वीस गाथाउ		१४
२३	परकी अतिचार	३०	२०२ राइसंथारानी गाथाउ कथा पठीनी विधि		१५
२४	परकी अनिचार पठी करवानी विधि	३१	२०३ अण गारस्य राइ पडितेहणविधि		१५
२५	परकी तप चितववानो पाव	३१	२०४ स्यापनाचार्यनी पक्षितेहणान्तेर बोवो		१६
२६	परकी तप चितवण पठी करवानी विधि	३१	२०५ उपयोग करवानी विधि		१६
२७	पाक्षिक सूत्र	३२	२०६ इति प्रजातनी पडितेहण विधि	संपूर्ण	१७
२८	पाक्षिक सूत्र कथा पठी करवानी विधि	४०	२०७ जिनमंदिरे चैत्यवंदन विधि		१७
२९	पाक्षिक कामणा चार	४१	२०८ उथाडा पोरसी नणावानी विधि		१८

श्राक	विषय	पत्र	श्राक	विषय	पत्र
१०९	जनाशुपकरण पक्वलेहण विधि	४७	१२४	चन्द्र सूर्य ग्रहणनी अस्त्राय विधि	५९
११०	गोचरी ज्वानी विधि	४७	१२५	वस्तुनु कालमान विचार	६०
१११	आहारना सुडतातीस तथा चोपन एम सर्व मती ठडु दोष	४९	१२६	वस्तुना कालमाननु यत्र	६०
११२	गोचरी आलोववानी विधि	५३	१२७	साधु निरवाण विधि	६३
११३	गोचरी आलोवतां कालस्सगमा कहेवानी गाथा	५३	१२८	अबला देव वांदवानी विधि	६३
११४	पञ्चस्काण पारवानी विधि	५३	१२९	सवला देव वांदवानी विधि	६४
११५	अणगारस्य आहार वापरवानी विधि	५४	१३०	मृतक साधवीने वत्र पहेराववानी विधि	६४
११६	अणगारस्य स्थनील ज्वानीविधि	५४	१३१	परकी, चोमासी तथा सवत्सरी प्रतिक- माण गुरु महाराजधी नोखो करनारने वंदन विधि	६५
११७	अणगारस्य चौथा पीहेरनी पक्वलेहण विधि	५५	१३२	स्थापनाचार्य राखवानी विचार	६५
११८	पाक्षिकादिक प्रतिकमणमा ठोक आवे स्वारे करवानी विधि	५६	१३३	नमुकारसीतुं पञ्चस्काण	६६
११९	कुड्रोपडवनी स्तुति	५६	१३४	पोरिसि साहपोरिसिनु पञ्चस्काण	६६
१२०	वारमासे मुनिने कालस्सगकरवानी विधि	५७	१३५	पुरिमदतुं पञ्चस्काण	६६
१२१	मुनिने लोच करवानी विधि	५७	१३६	निविगदनु पञ्चस्काण	६६
१२२	अस्त्राय विचार	५७	१३७	निविगद एकासणुं पञ्चस्काण	६६
		५७	१३८	एकलवाणानुं पञ्चस्काण	६६
		५७	१३९	आयविजनु पञ्चस्काण	६६
		५७	१४०	आयविजनु पञ्चस्काण	६६

आक	विषय	पत्र	आक	विषय	पत्र.
१४१	चजविहार उपवासनु पञ्चरकाण	६७	१५७	दशवैकालिकसूत्रना चोथा आध्ययननी	७०
१४२	तिविहार उपवासनु पञ्चरकाण	६७		आदिनी ११ गाथानी सद्याय	७०
१४३	चजड,डठ,श्रवम चत्तादिकना पञ्चरकाण	६७		(नंदीसूत्रनी प्रथम सद्याय १७ मे तथा	
१४४	रात्रिये चजविहारनु पञ्चरकाण	६७		नंदी सूत्रनी वीजी सद्याय ४२ मे तथा चर-	
१४५	गंवसहियादिक श्रान्निग्रहनु पञ्चरकाण	६७		तेसर बाहुवतीनी सद्याय १० मे पाने ठपा-	
१४६	चजद नियम धारनारने देसावगासिकनुं	६७		येती ठे त्यांथी पाठ करवो)	
	पञ्चरकाण	६७	१५८	नवकारनी सद्याय	७०
१४७	साधुसुनिराजने पञ्चरकाण पारवानी गाथा	६७	१५९	धणमिडुण सुर महावतनी सद्याय	७०
१४८	श्रावकने पञ्चरकाण पारवानी गाथा	६७	१६०	पारणक वुरु सद्याय	७१
१४९	श्रावक माटे सामायिकनु पञ्चरकाण	६७	१६१	पारणक लघु सद्याय	७१
१५०	पोसहनु पञ्चरकाण	६८		अथ निर्भुक्ति सद्याय संग्रह	७१
१५१	पोसहमां सामायिकनुं पञ्चरकाण	६८	१६२	ते वंदिऊणक्षिरसा सद्याय १ ती	७१
१५२	देसावगासिकनु पञ्चरकाण	६८	१६३	सामाड्य माड्यं, सद्याय २ ती	७१
१५३	पञ्चरकाणना आगारोनी पंच	६८	१६४	पुणरविय समोसरणे सद्याय ३ ती	७१
	अथ प्रतिक्रमणमां कहेवा योग्य सूत्रनी	६८	१६५	जसत्रो पंच धणुरसय. सद्याय ४ थी	७३
	अटार सद्यायो	६९	१६६	जोयतवो अणुचित्रो सद्याय ५ मी	७४
१५४	दशवैकालिकसूत्रनी प्रथम सद्याय	६९	१६७	अत्रिणि वोहियनाण सद्याय ६ ती	७४
१५५	दशवैकालिकसूत्रनी वीजी सद्याय	६९	१६८	चाराणसी नयरीण सद्याय ७ मी	७५
१५६	दशवैकालिकसूत्रनी वीजी सद्याय	६९	१६९	उत्तराध्ययननी सद्याय. असंखयं जिविय ७५	७५

श्लोक	विषय	पत्र.	श्लोक	विषय	पत्र
अथ नव सरणविक्रसोत्रनीशत्रुकमणिक १६	अथ नव सरणविक्रसोत्रनीशत्रुकमणिक १६	१६	१६	श्रान्तिजिन स्तवन " दयवृी (स्तोत्र)	१०१
११० परमेष्टिनमस्कार-प्रथम सरण	११० परमेष्टिनमस्कार-प्रथम सरण	१६	१०१	श्रीश्रान्तरिक्षपार्श्वजिन स्तवन (स्तोत्र)	१०२
१११ अजितसातिस्त्व-द्वितीय सरण	१११ अजितसातिस्त्व-द्वितीय सरण	१६	१०१	श्रीगोत्रिकपार्श्वजिनाष्टक (स्तोत्र)	१०३
११२ वीरस्तोत्र-तृतीय सरण	११२ वीरस्तोत्र-तृतीय सरण	१६	१०१	श्रीगोत्रिकपार्श्वनाथ स्तवन (स्तोत्र)	१०३
११३ जपसर्गहर-चतुर्थ सरण	११३ जपसर्गहर-चतुर्थ सरण	१६	१०१	श्रीदादापार्श्वनाथ स्तवन (स्तोत्र)	१०३
११४ नमिजण स्तोत्र-पंचम सरण	११४ नमिजण स्तोत्र-पंचम सरण	१६	१०१	श्रीकविकुण्ठपार्श्वजिन स्तवनाष्टक	१०४
११५ लीरिकापद्मीपार्श्वनाथस्तोत्र-षष्ठम सरण ७०	११५ लीरिकापद्मीपार्श्वनाथस्तोत्र-षष्ठम सरण ७०	७०	१०१	श्रीरावणपार्श्वनाथ	१०५
(नमुहुण नाम सप्तम सरण पाने ५ मे ठापुहुणे)	(नमुहुण नाम सप्तम सरण पाने ५ मे ठापुहुणे)	७०	१०३	श्रीगोत्रिपुरपार्श्वजिन स्तवन (स्तोत्र)	१०५
११६ लघु अजित श्रान्ति-अष्टम सरण	११६ लघु अजित श्रान्ति-अष्टम सरण	७१	१०४	श्रीपार्श्वजिन स्तवन	१०६
११७ वृहत् अजितश्रान्ति-नवम सरण	११७ वृहत् अजितश्रान्ति-नवम सरण	७२	१०५	श्रीमद्वरापार्श्वनाथ	१०७
११८ नक्तामर स्तोत्र	११८ नक्तामर स्तोत्र	७२	१०५	श्रीवीराष्टक (स्तोत्र)	१०७
११९ कल्याण मदीर स्तोत्र	११९ कल्याण मदीर स्तोत्र	७२	१०५	श्रीसत्यपुरीय श्रीमहावीर स्तवन	१०७
१२० लघु श्रान्ति स्तोत्र	१२० लघु श्रान्ति स्तोत्र	७३	१०६	श्रीलोक्षणपार्श्वनाथ स्तवन	१०८
१२१ वृहत् श्रान्ति स्तोत्र	१२१ वृहत् श्रान्ति स्तोत्र	७३	१०६	श्रीसेरीजपार्श्वनाथ	१०८
कल्याण सागर स्फुट स्तोत्र संग्रह	कल्याण सागर स्फुट स्तोत्र संग्रह	७६	१०७	श्रीसन्नवनाथाष्टक	१०९
१२२ माणिक्यस्वामि स्तवन (स्तोत्र)	१२२ माणिक्यस्वामि स्तवन (स्तोत्र)	७६	१०७	श्रीमत्पार्श्वनाथ स्तवन	१०९
१२३ सूर्यपुरीय श्रीसन्नवजिन स्तवन (स्तोत्र)	१२३ सूर्यपुरीय श्रीसन्नवजिन स्तवन (स्तोत्र)	७७	१०७	श्रीचित्तमणीपार्श्वनाथ स्तोत्र	१०९
१२४ सुविधि जिन स्तवन (स्तोत्र)	१२४ सुविधि जिन स्तवन (स्तोत्र)	७७	१०७	श्रीपार्श्वजिन स्तवन (लक्ष्मीमहस्तु)	१०९
१२५ श्रान्तिनाथजिन स्तवन (स्तोत्र)	१२५ श्रान्तिनाथजिन स्तवन (स्तोत्र)	७९	१०८	श्रीगौडीपार्श्वनाथ स्तवन (सकलत्रय)	१०९

आक	विषय.	पत्र	आक	विषय	पत्र
२०५	श्री र कर पचीसी (श्रेय. श्रियांमंगल०)	१०१	२२४	पार्श्वनाथ स्तोत्र-कस्तूरी तिलकं जुव.	११३
२०६	श्रीनवकारनोडद-वंडितपुरेविधिपर-	१०२	२२५	गोडीपार्श्वनाथ स्तोत्र-श्रीगौरीपुर प्रशु	११४
२०७	श्रीपञ्चपरमेशि स्तोत्र-सुखकारणत्रिविध	१०३	२२६	चोत्रीस अतिसयनोडद-श्रीसुमतीदायक	११५
२०८	श्रीगौतमस्वामीनोरास म्होटो	१०४	२२७	चोत्रीस अतिसयनो डद-श्रीजिन प्रणुं	११६
२०९	श्रीगौतम स्वामीनो वयुरास-	१०५	२२८	शांतिनाथनो डद-शारदमाय नमुं	११६
२१०	श्रीगौतमाष्टक-वीरजिणेशर केरो ज्ञिष्य	१०६	२२९	अतरिकपार्श्वनाथस्तुति तंड-प्रशु पास-	
२११	श्रीगौतमाष्टक-मातपृथ्वीसुत नमो	१०७	जी तादरु नाम मीतुं	११७	
२१२	श्रीगौतम स्तुति-श्रीइन्द्रजुति०	१०८	२३०	पार्श्वनाथगीततंड-सकल सुखाकर	११८
२१३	श्रीगौतमस्वामि स्तोत्र-स्वर्णष्टाय०	१०९	२३१	अतरिकपार्श्वनाथ स्तोत्र-सुख संपति	११८
२१४	गौतमगुरुनी चोपाद-जयो जयौ गौतम	१०९	२३२	पार्श्वनाथगीत-श्रावकतुं ऊठेपरजात	११८
२१५	गणधर स्तवन-एकादश गणधरनां नाम	११०	२३३	गोनीपार्श्वनाथ स्तोत्र-नमो नित प्रतें०	११९
२१६	प्रजात मंगलना चार-मंगलं नगवान्वीरो	११०	२३४	नेमिनाथगीत-जाग गुल जारी वे	१२०
२१७	सरस्वती स्तोत्र-प्रथम जारती नाम	११०	२३५	गोडीपार्श्वनाथ गीत-मन तोता पठमन	१२०
२१८	सतिजनां नाम-ब्राह्मीचदनवाहिका	११०	२३६	पार्श्वनाथ गीत-कट्याणकारी दरसतोहि	१२०
२१९	सोवसतीनो तंड-आदिनाथ आदे	११०	२३७	नेमिनाथगीत-सांकी सहीए	१२०
२२०	पासजिन स्तोत्र-जयजगतारण	१११	२३८	सुतकनी सद्याय-श्रीसरस्वती देवी	१२०
२२१	सिद्धचक्र स्तोत्र-केवल कमलापति	१११	२३९	सचित्त अचित्त वस्तु विचारनी सद्याय-	
२२२	श्रीकृपनस्तुति-मनोहरतं जगतो निरंतरं	११२	प्रवचन अमरी समरी सदा	१२२	
२२३	श्रीडदालकार-जयती जगति चंद्रः	११२	२४०	अणाहारी वस्तुनी सद्याय-जखौमदण	

वीर जिणंद

२४१	सम्भ्रतवना सहस्रव बोधनी सथाय-	१२३	२५७	पुन्यतत्रीशी-पुन्यतणां फलपरतक पेखो	१६५
२४२	रात्रिजोजननी सथाय-पुण्य सयोगे	१२३	२५८	कर्म तत्रीशी-कर्मथीको वृटे नदी प्राणी	१६७
२४३	निदावारकनी सथाय-निदा म करजा कोइनी पारकीरे	१२७	२५९	शिक्षा तत्रीशी-सांनलजो सज्जन	१६८
२४४	निड्डीनी सथाय-निड्डी वेरण हुइरही	१२८	२६०	आरमठत्रीशी-ककेकुचसन कहीये सात	१७०
२४५	पद्मावती आराधना-ह्वे राणी पटमावती	१२८	२६१	पुजल गीता-सतो देखीये वे	१७१
२४६	आराधना (पुन्यप्रकाश)नु स्तवन-	१३०	२६२	आदीश्वर विनतिगाथाए-सुण जिनवर	१७६
२४७	वैकुण्ठ पथ-वैकुण्ठ पथ वीहामणो	१३४	२६३	आदीश्वर विनतिगाथा ३१-वे करजोनी	१७७
२४८	शीयल विषे पुरुपने श्रीखामणनी सथाय	१३६	२६४	सुशुरुपच्चीशी-सुशुरुगीठाणो एणे आचारे	१७८
२४९	शीयल विषे नारीने श्रीखामणनी सथाय एक अनोपम शिखामण खरी	१३७	२६५	सुशुरुपच्चीशी-सुशुरुगीठाणो एणे आचारे	१७८
२५०	श्रीहृद्विजयजी कृत दशवैकालिक स०	१३८	२६६	सुर किन्नर नाग नरिदनतंतुं चैरय	१७९
२५१	जीवविचारनु स्तवन-ढालो नव	१३९	२६७	श्रीसिद्धचक्रनु चैरय०-श्रीसिद्धचक्र आराधिये	१८०
२५२	नवतवनु स्तवन-ढालो अग्नीधार	१४१	२६८	श्रीसिद्धचक्रनु चैरय० वारणुण अरिहृत्तना	१८०
२५३	चोवीशभंफकनु स्तवन-ढालो सत्तावीश	१४४	२६९	श्रीवीरजिन दीवादीनु चैरय० सिद्धारथ सुत वंदिये	१८१
२५४	नारकीनु पट ढालीयु-ढालो सात	१४४	२७०	शातिनाथनुं चैरय० शातिरण प्रभु	१८१
२५५	दयावतीसी-चोटा सारवा सर्वथा	१६१	२७१	कामावाजकी कृत नवपदानां चैरयवदनो	१८१
२५६	कामा तत्रीशी-आदर जीव कामाणुण	१६३	२७२	सिद्धाचल स्तोत्र- पूर्णानंदमयनुं चैरय०	१८३

श्राक	विषय	पत्र.	श्राक.	विषय.	पत्र
२३३	श्रीपार्श्वनाथनुं चैत्य० जय जगत तारण	१८३	चोवीस पंदर पिरतालीसनी		१८६
२३४	सिरुाचलनुं चैत्य० विमल केवल ज्ञान	१८३	विचारता जिननु चैत्य० श्रीमंधर प्रमुख		१८६
२३५	सिरुाचलनु चैत्य० श्रीशत्रुंजयसिरुकेव १८४	१८४	वीजतीथीनु चैत्य० दुविध धर्मजिणे		१८७
२३६	श्री पचतीर्थनु चैत्य आदिदेव अरिहंत १८४	१८४	ज्ञानपंचमीनु चैत्य० त्रिगर्भे वेठावीर जिन		१८७
२३७	चोवीश जिनता वर्णना चैत्य० पद्मप्रत्न १८४	१८४	आष्टमीनु चैत्य० महाशुदि आठमने		१८७
२३८	चोवीशजिन समकित नव गणतीनु		एकादशीनुं चैत्य० शासन नायक		१८७
	चैत्य० प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा	१८४	खरतर गढ कृत स्तुति संप्रह		१८७
२३९	चोवीश तीर्थंकरनी राशोठनुं चैत्य०	१८४	श्रीमंधरजिन स्तुति - महीमंरणं पुत्र		१८७
	शांति नमी मछि मेप ते	१८४	वीस विरहमाण स्तु० ४ पंच विदेह विपे		१८७
२४०	श्रीचंदकेवलीना रासमांधी चैत्य० अरि-		पार्श्वजिन स्तु० ४ सम दमोत्तम वस्तु		१८७
	हंत नमो जगवंत नमो	१८५	आदिजिन स्तु० ४ वर मुत्तियहार सुता		१८७
२४१	चौदसे वावन गणधरनु चैत्य० गणधर		ज्ञानपंचमीनी स्तु० ४ पंचानंतक सुप्रपं०		१८९
	चोरसी कला	१८५	वीरजिन स्तु० ४ वीरं देवं नीरयं वंदे		१८९
२४२	पंच परमेष्टिनु चैत्य० वार शुण अरिहंत १८५		वीरजिन स्तु० ४ यदंछि नमना देव		१८९
२४३	श्रीसीमंधर जिननु चैत्य० श्रीसीमंधर १८५	३०१	आजितनाथ स्तु० ४ विश्वनाथक लायक		१८९
२४४	श्रीमंधरजिननु चैत्य० सीमंधर परमातमा १८५	३०२	आष्टमीनी स्तु० ४ चण्डीसे जिनवर		१८९
२४५	श्रीमंधरजिननुं चैत्य० श्रीसीमंधर जग १८६	३०३	महावीरजिन स्तु० ४ मूरति मनमाहन		१९०
२४६	वीस स्थानकनु चैत्य० पहेले पदअरिहंत १८६	३०४	पार्श्वजिनस्तु० ४ अश्वसेन नरेसर		१९०
८७	वीस स्थानक तपना काठसगनुं चैत्य०-	३०५	सौनेकादशी स्तु० ४ अरस्य प्रवज्या		१९०

३०६	श्रीतलजिन स्तु० ४ सुख समकित दायक	१९७	३२४	श्रीसिरुचक चतुष्कस्तु०-अरिहत नमो	१९९
३०७	समवसरण नावगर्भित स्तु० ४ मिलचल विर	१९८	३२५	बीजतिथिनी चतुर स्तु०-दिन सकल	१९९
३०८	पार्थजिन स्तु० ४ ड्रेड्रे कि थपमप	१९९	३२६	पंचमीतिथिनी चतुर स्तु०-श्रावण शुदि	१९६
३०९	वेनी पुनेम स्तु० ४ सेडुंज गिरि नमिये	१९९	३२७	आष्टमीतिथिनी स्तु०-मगल आव करी	१९६
३१०	नवपद स्तु० ४ निरुपम सुख	१९९	३२८	एकादशीतिथिस्तु०-एकादशी अतिशुभ	१९६
३११	पर्युषणार्थ स्तु० ४ वही वही हु ध्यातु	१९९	३२९	वीसस्थानकनपनी स्तु०-पुढे गौतमवीर	१९७
३१२	गिरनारमडण नेमिजिनस्तु० ४ सुरअसुर	१९९	३३०	पुण्यपर्वनी स्तु०-सत्तर देदी जिनपूजा	१९७
३१३	वीरप्रभु स्तु० ४ श्री देवार्थ	१९९	३३१	रोहिणीनक्षत्रनी स्तु०-नक्षत्र रोहिणी	१९७
३१४	श्रीतलजिन स्तु० ४ त्रिचवन जन नायक	१९३	३३२	सखेश्वरपार्थजिनस्तु० ४-सखेश्वरपास	१९८
३१५	(स्तुतिसंघट्ट) कल्याणकदनी स्तुति ४	१९३	३३३	श्री शत्रुजयनी चतुर स्तु०-श्री शत्रुजय	१९८
३१६	छातस्थानी स्तुति ४	१९३	३३४	श्री शोत्रन मुनिकृत चतुर्विंशति जिन	१९८
३१७	संसारदावानी स्तुति ४	१९३		स्तुतिर्द-दरेक श्लोक चार.	१९९
३१८	आध्यात्मोपयोगनी स्तु० ४ उगी सवेरे	१९४	३३५	विनयसागरजीकृत वसंतपद (१०)	२०५
३१९	श्रीसीमधरजिन स्तु० सीमधर जिनवर	१९४	३३६	ज्ञानसागर कृत चोविंसी	२१०
३२०	श्रीमधरजिन चतुर स्तु० ४ श्रीसीमधर देव	१९४	३३७	दर्शनसागरकृत पंचकल्याणनीचावीसी	२१६
३२१	आदिजिन चतुष्क स्तु०-आदि जिनवर	१९४	३३८	स्वरूपचंदजीकृत चोवीसी	२२३
३२२	शाश्वतजिन चतुष्क स्तु०-कृपन चद्रा-	१९५	३३९	तिललात्रजी वीगेरे कृत तुटां सतवन	२३३
३२३	नन वंदन कीजे	१९५	३४०	कृपत्रजिन स्तु०-आदि जिनेश्वर	२३३
	श्रीसिरुचक चतुष्क स्तु०-जिन शासन	१९५		विनसी आमासी	२३३

क्रा.क.	विषय.	पत्र	क्रा.क.	विषय	पत्र
३४१	अजितजिन स्त०- अजित जिणेसर सेवीय, सही मोरीरे	२३३	३५२	श्रेयांसजिन स्त०- श्रेयांस जिनेसर देव, नयणे निरख्यारे	२३३
३४२	सन्नवजिन स्त०- मोहन तारा सुखमाने	२३४	३५३	वासुपूज्यजिन स्त०- श्रीवासुपूज्य जिनराज	२३३
३४३	अचिनंदनजिन स्त०- अचिनंदन जिन राजिया	२३४	३५४	वासुपूज्यजिन स्त०- वासुपूज्य जिन साहेबारे	२३३
३४४	सुमतिजिनस्त०- संगतसुमतिनीकीजीयेरे२३४	२३४	३५५	विमलजिन स्त०- विमल जिनेसर साहेबाजी	२३६
३४५	पद्मप्रजजिन स्त०- पद्मप्रज उदंगणी, सुखदापरे	२३४	३५६	अनंतजिन स्त० श्री- अनंत जिनेसर सोहंताजो	२३६
३४६	सुपार्थजिन स्त०- मुजमनचमरो प्रभुगुण कूलडरे	२३५	३५७	शांतिनाथजिन स्त०- शांतिजीनुं सुखहुं जोवा चणीजी	२३६
३४७	चंद्रप्रजजिन स्त०- चंद्रप्रभुजीनेरे विनवु२३५	२३५	३५८	कुशुजिन स्त०- कुशुनाथतणी वलीहारीजी	२३६
३४८	सुविधिजिन स्त०- सुरत सुविधि जिणदनीरेवो	२३५	३५९	कुशुजिन स्त०- कुशुजिननीहो सेवा नमिजिन स्त०- नमिनाथ जिणेसर	२३६
३४९	श्रीतलजिन स्त०- श्रीतल जिनवर सांजलोरे	२३६	३६०	पार्श्वजिन स्त०- जीनजी गोडीमण पार्श्वजिन स्त०- सुगुण सोत्रागीरेके	२४०
३५०	श्रीतलजिन स्त०- श्रीतल जिननी सेवाकीजे	२३६	३६१	पार्श्वजिन स्त०- पासजिणंद सदा	२४०
३५१	श्रीतलजिन स्त०- महरि श्रीतलजिनशुं लागी पूरण प्रीतजो	२३६	३६२		

श्राक	नियम	पत्र	श्राक	नियम	पत्र
श्रीव्रगामी		२४१	३१५	सिरुचकजीनुस्त०-सखी चालोने	२४५
३६४ पार्श्वजिनस्त०-प्रगट्पातेपुरण अविनासी१४१		२४१	३१६	सिरुचक वादवा	२४५
३६५ पार्श्वजिन स्त०- सद्गुरुने चरणे नमी	२४१	३१६	कृमाळाजजी विभोरे पंक्ति कृत		
३६६ पार्श्वजिन स्त०- (कधी जापामां)			नवपदना उत्रीस स्तवन	२४५	
सुषड पास प्रयुरे दरिसण वेळडोनी दिङ्ग	२४१	३१७	मुक्तिसागर कृत नवपदनी उलीनांस्तवन१५६		
३६७ पार्श्वजिन स्त०- (कधी जापामां) अमा		३१७	लावण्यमुनि कृत गोनीपार्श्वनाथनु		
आंठ नेहडो कधी	२४१		चोढातीथु	२५६	
३६८ विद्यासागर सूरि स्त०- वदो वीरवर		३१८	नित्यलाजजी कृत महावीरस्वामीनां पांच	२६१	
धीरवर सूरि विद्या सुगुरु	२४१		कल्याणकनुं चोढातीथु	२६१	
३६९ घृतकझोव पार्श्वजिन स्त०- ह्योजिनरापा		३१८	श्री ध्यानदधनजी कृत चोवीशी	२६५	
जिनेसर	२४१	३१९	देवचड्जजी कृत चोवीशी	२६६	
३७० घृतकझोव पार्श्वजिन स्त०- घृतकझोव		३१९	साध्वीजी देव श्री जीकृत गरवी ५-	२७७	
प्रयुपास जिणद	२४१	३१९	गरवी पहेली-आवे वेनी चढो सहिया	२७७	
३७१ शांतिजिन स्त०- शांतिप्रयु विनती एक	२४१	३१९	गरवी वीजी-चावो सखी शांतिनाथने	२७८	
३७२ वीरजीन दीवालीनुं स्त०- श्रीसीधारथ		३१९	गरवी त्रीजी-चावो सखि जड्यें	२७८	
नंदन देवा	२४१	३१९	गरवी चोधी-वीर वशीरलीयामणी	२७९	
३७३ कंसरीआजीनुस्त०- सरसति माता चरण१४४		३१९	गरवी पाचमी-काशीदेशे ते नयरी	२७९	
३७४ धर्मनाथजिनस्त०-श्रीजिनवरपद पूजीये	२४४	३१८	आराधना गाथा ३१ जयशेखरसूरीकृत	२९१	

पत्र पंक्ति अशुद्ध.	शुद्ध.	पत्र पंक्ति अशुद्ध.	शुद्ध.
३ सामाचारी	सामाचारीगाथात्रण	३२६ उडपणं	उडुपणं
१ सहशुरणां	सहशुरणा	३३० सुहुभेहिं खेव	सुहुभेहिं खेव
१ तियासक	तियासक	३३१ अविराहिज	अविराहिज
३ समासणुं	खमासणं	३३३ जाणेण, काणेणं	काणेणं
३ इडाभि	इडाभि	३ ४ नमि	नमिं
३ अंगुवनी	अंगुवतुं	३ ५ तिडयरमे	तिडयरमे
३ एवीमुझा	एवी योगमुझा	३ ६ मम दिसवु	मम, दिसवु
३ नसुजे	न सुजे	३ ११ इडाकारेण	इडाकारेण
३ अपत्तिकंताण	अपत्तिकंताए	३ १६ इड	इडं
३ ए प्रहम	प्रथम	३ २० मांडला ॥ २ ॥	मांडला ॥ १ ॥
३ इडाकारेण	इडाकारेण	३ २१ आधाडे	आधाडे
३ पट्टिकपिजं	पट्टिकमिजं	३ २६ उपसराना	उपासराना
३ जसा	जसा	३ प्रमाजर्वा	प्रमाजर्वा
३ कलाभिया	किलाभिया	३ प्रमाजर्वा	प्रमाजर्वा
३ वाणाजवाणं	वाणाज वाणं	३ एरीते ते मांडला	एरीते मांजला
३ जीवीयाज	जीवियाज	३ ६ इडं	इड
३ तस्य	तस्य		

पत्र पकि अशुक्र

शुक्र

पत्र पकि अशुक्र

शुक्र

४११ तीचण

टीचण

५१ कवण

कवणे

४१२ त्रिमिपर

त्रिमिपर

५२ सरीसां

सरीसां

४१५ मागे

मागे

५३ त्रिजिणु

त्रिजिणु

४१७ इडाकारेण

इडाकारेण

५४ मरगयवण

मरगयवण

४१७ नगवन

नगवन्

५५ कचणवण

कचणवण

४१८ वृक्ष

वृक्ष

५६ वहु ठद

वहु ठद

४१९ व्यापे

व्यापे ते

५७ लम्पद

लम्पद

४१९ कबु

कबुं ठे.-

५८ कवलिण

कवलिण

४१९ समय

समये

५९ वरनाणं

वरनाण

४१९ प्रतिकमाथो

प्रतिकमाथी

६० रिसह

रिसह सिरि

४१६ संधाचार

संधाचार

६१ जिके वि

जिके वि

४१७ प्रायाश्चित

प्रायश्चितं

६२ अठ कोनिज

अठ कोडीठ

४१७ (ते) ॥

ते)॥अथअथोकवृक्षः

६३ काजसग

काजसग

४१८ दिव्यध्वनिचामर

दिव्यध्वनिचामर

६४ तिडनो

तिडनो

४३० जिनेसराणाम्

जिनेश्वराणाम्

६५ नाम तिडं

नामतिडं

४३० अथइव

इव

६६ वृहीण

वृहीण

४३१ देवाधिदेवा

देवाधिदेव

६७ अत्रयदमाणं

अत्रयदमाणं

४३२ सचिउ

सचिउ

६८ जावयाणं

जावयाणं

४३३ दिवं

दिवं

६९ सबन्नणं

सबन्नणं

५२७ वांथा	वांथा
५३२ बदामी	बंदासि
५३३ नामतिड	नामतिडं
६२ अन्नठ	अन्नठ
६५ प्रथम वृक्षः	प्रथम अशोक वृक्षः
६७ अन्नठ	अन्नठ
६८ पतीगुड	पती गुरु
६१३ काजसग	काजसगं
६१४ अन्नठ	अन्नठ
६१८ वैयावच्चगराण	वैयावच्चगराणं
६१९ संपूर्णकही पठी	संपूर्ण कही, "अथ वैयावच्चगराणं" वैया- वच्चगराणं,संतिगराणं, समदितिसमाहिन- राणं, करेसि काज ससगं कही पठी
६१९ अन्नठ	अन्नठ
६२४ मध्यनुधानं	मध्यनुधानं
६२६ सास्साणवतो	सास्साणिवतो

६२९ बहुमानादिकनीत्रकी	बहुमानादिकत्रकि
पूर्वक	करवाथी
७ इड्वामि	इड्वामि
७ इ त्रगवानादिने	त्रगवानादिकने
७११ वांथा	वांथा
७१२ वांथा	वांथा
७१३ इडाकारेण	इडाकारेण
७१९ सावज्ज	सावज्जं
७२३ कज	कज
७२३ काइज	काइज
७२३ वाइज	वाइज
७२३ माणसीज	माणसीज
७२३ डुज्जाज	डुज्जाज
७२४ डुविचिंतिज	डुविचिंतिज
७२४ अस्समणयाजगो	अस्समणयाजगो
७२५ तिएण	तिएणं
७२५ चजएणं	चजएणं
७२५ पचएहं	पंचएहं
७२५ ठएहं	ठएहं

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

(१ समकित

वधूटक

अणवगान्धे

चारित्र

पूँजीये

मनोदंन

सिंघात्त

जघांठुं

जगवन्

उषो

देवासद

दरेक

अद्धारो कर्त

गुत्तीड

गुत्तीड

कहेवो पठी "झाका-

रेण सदिस्द जगवन्

रामणसुत्रआदेसोजी

एमआदेसमागी, पठी

७२६ सत्तएहं

७२६ सत्तएहं

७२६ अठएहं

७२६ नवएहं

७३० चदय

७३१ सिद्धकाय

७३३ सादिम

७३४ चैत्यवंदन

८ १ वैयावद्य

८ १ (सिधकेण)

८ २ वडीनीत

८ ११ दधान

८ १२ जगवन्

८ १५ सुचछ

८ २४ मिडादसणसद्य

८ २८ मन, व चन

८ २९ (सुतवततदिठी

८ ३० सम्यक

८ ३१ चहुपासां

सत्तएहं

सत्तएहं

अठएहं

नवएहं

चैय

सिद्धकाय

सादिम

चैत्यवंदन करावा

वैयावद्य

(सिध के.)

वडीनीती

दर्शन

जगवन्

सुचछ

मिडादसणसद्य

मने, वचने

(सुचछततदिठी

सम्यक

चहुपासा

११	उ साहुसरण
१२	एइहमि
१२	३३ संघठणाए
१२	२४ जनाइए
१२	२५ इहि
१२	३७ जघाफकवाहु
१२	३८ सहस्सागारि,
१२	३९ पाणिसणाय
१२	३९ पाणनोअणाय
१२	४० पढाकम्मिआए
१२	४० अदगसंस
१२	४६ दंडेहिं
१२	४७ मिढादंसण
१२	४३ इही कहाए
१३	४ सभिइहिं
१३	४ इतियासमिए
१३	५ किह्वेसाए
१३	८ सुकवेसाए
१३	९ पावसुअएपसंगेहिं

साहुसरणं
इहामि
संघटणाए
जनाइए
इहि
जघाफकवाहु
सहसागारिए
पाणिसणाए
पाणनोअणाए
पढाकम्मिआए
दगसंस
दंडेहिं
मिढादंसण
इही कहाए
सभिइएहिं
इतियासमिए
किह्वेसाए
सुकवेसाए
पावसुअएपसंगेहिं

१३	४७ सबभुरक
१३	४७ इहंतिआ
१३	४७ जवसपजामि
१३	४७ जवसंघामि
१३	४७ मिढवं
१४	४ जवसजामि
१४	४७ आगामसां
१४	४ जजाय
१४	३ जवथाए
१४	३ जवथाए
१४	३ जवथाए
१४	२ सीमाधरस्स
१४	३ अस्स
१४	२७ नगवउ
१४	२७ अत्तव
१४	३२ पंजली
१४	३३ दिक्कानाणं
१६	७ अविघाविका
१६	९ सुदेवयाए
१६	११ जसि

सबभुरक
इहंतिआ
जवसंपजामि
जवसंपघामि
मिढवं
जवसंपजामि
आगामसां
जवजाय
जवथाए
जवथाए
जवथाए
सीमाधरस्स
अस्स
नगवउ
अत्तव
पंजली
दिक्कानाणं व
अविघाविका
सुपदेवयाए
जसि

पत्र पकि अशुद्ध	शुद्ध	पत्र पकि अशुद्ध	शुद्ध
१७ शनम-	नमु	१० णसमासमणुं	खमासमणु
१७ १० सीलधारा	सीलंगधारा	१० एइंढ	इंढं
१७ १७ पागार	पागारा	१० १० सुलासा	सुलसा
१७ ३१ पनणुस्सियस्स	पनाणुस्सियस्स	१० १६ युत्तिन्नदस्स	युत्तिन्नदस्स
१७ ३१ संघरा	संघर	११ १४ कही, पठी	कही, पठी इहामि
१७ ३१ नायस्स	नायस्स		पक्किमित्तं जो मे दे
१७ ११ विणयपणल	विणयपणल		वसिठं ए पाठ संपुणं
१७ १३ नयरह	नयररह		कहीने, पठी “इ-
१७ १३ समुद्ध	समुद्ध		हामि पक्किमित्तं
१७ १७ पढमिड	पढमिड		इरियावहियाए” ए-
१७ १४ केह	कहे		पाठ संपुणं कहेवो
१७ १७ करवा	गणवा		पठी
१७ ३४ तुमेव	तुमेव	११ १७ इहाकारेण	इहाकारेण
१७ १ प्रतिकम	प्रतिकमण	११ ३३ गोपवो	गोपवे
१७ ६ वीय	वीय	११ ३४ चित्तवण विधि-	चित्तवणविधि, अथ-
१७ ११ इहाकारेण	इहाकारेण		विधि
१७ १४ इंढं	इंढ	११ १० गौतम. पञ्च	गौतम- प्रञ्च
१७ १७ इंढ जय	इंढं जय	११ १७ जगवते	जगवंते
१७ १ च्चणाणं	चचणाणं	११ १७ अरिहं	अरिहंत

२३	३ शिवंगति	शिवंगति
२३	३ अस्ताथ	अस्तांथ
२३	६ स्पदन	स्पदन
२३	१० महाजड वंदं	महाजड वंडं
२३	१० ध्यानंद	ध्यानडं
२३	१४ नागाकुर	नागाकुमार
२३	१५ बहुतेर	बहुंतेर
२३	१७ बहुतेर	ठहुंतेर
२३	१८ तरसे	तेरसे
२३	३३ देव	देव
२४	१० गजदंत	गजदंते
२४	१५ चोत्रीश	चोत्रीश
२४	१० नवावे	रवावेर
२४	११ जेसलमीर	जेसलमेर
२४	११ अवाल	अवाल
२४	१५ पुरव	पुरवर
२४	३० सिरिपुर	सिरिपुर
२४	३१ देवो	देवा
२५	१ अण्ड प	आणंड प

२५	३ जया	जया
२५	६ पकि	पकि
२५	८१॥ प्रथम	१॥ प्रथम
२५	११ कहेवी	कहेवी.
२५	१२ सिंक	सिंक
२५	१८ पुणेद	पुणेदं
२५	१९ पसाय	पसाय
२६	२ चूरदेवं	चुइदेवं
२६	३ आमसामिं	आममसामिं
२६	४ जिणं	जिण
२६	८ मणअ	मणुअ
२६	१० जहज्जवि	जहज्जवि
२६	१४ चाहुदेवो	चाहुदेवो
२६	१४ ईसरज	ईसरज
२६	१७ जुजाते	मुजाते
२६	३३ नरवार	नरवर
२६	३४ तिलज	तिलज
२७	१ तिलाय	तिलोय
२७	१ तिलज	तिलज

जइया	जइया
पकि	पकि
१॥अयविधि॥ प्रथम	१॥अयविधि॥ प्रथम
कहेवी. ॥ अथ	कहेवी. ॥ अथ
सिंकं	सिंकं
पुणेदं	पुणेदं
पसाय पासाय	पसाय पासाय
चुइदेवं	चुइदेवं
आममसामिं	आममसामिं
जिण	जिण
मणुअ	मणुअ
जहज्जवि	जहज्जवि
चाहुदेवो	चाहुदेवो
ईसरज	ईसरज
मुजाते	मुजाते
नरवर	नरवर
तिलज	तिलज
तिलोय	तिलोय
तिलज	तिलज

पत्र पक्ति अशुद्ध	२७ ५ अठवावीठ
	२७ ५ चिअठ
	२७ ६ रट
	२७ ६ पासाठ
	२७ ७ महीसीठ
	२७ ८ तठ
	२७ १० पवइठ
	२७ १० सुवइ
	२७ ११ जाठ
	२७ १२ यनिा
	२७ १२ ताविइरिठ
	२७ १३ रयणमयणीठं
	२७ १५ धम्मचकतिठं
	२७ १६ ठिठ
	२७ १७ नामाठ
	२७ २३ तठ
	२७ २३ चउरो
	२७ २५ सेविष
	२७ २६ जिणपुरठ

शुद्ध	अठवावीठ
	वि अठ
	पइ
	पासाठ
	महीसीठ
	तठ
	पवइठ
	सुरवइ
	जाठ
	पडिम
	ता विइरिठ
	रयणमयणीठं
	धम्मचकतिठं
	ठिठ
	नामाठ
	तठ
	चउरो
	सेविष
	जिणपुरठ

पत्र पक्ति अशुद्ध	२७ २८ पाठवगया
	२७ ३० संधा
	२७ ३२ पुंरिठ
	२७ ३२ जुठ
	२७ ३२ कोडिठ
	२७ १ सेतुंज
	२७ २ सुमिणं चं
	२७ ४ तुरंगा
	२७ १२ तिलोयतिवठ
	२७ १३ सेरे
	२७ १५ अठरिय
	२७ १७ तठ
	२७ २२ वहचेइए
	२७ २५ वीय
	२७ २५ तठ
	२७ २५ वहु
	२७ २७ सिरिषर
	२७ ३० रोठिठ
	२७ ३१ वीरजम्माठ

शुद्ध	पाठवगया
	संधा
	पुंरिठ
	जुठ
	कोडिठ
	सेतुंज
	सुमिणं च
	तुरंगा
	तिलोयतिवठ
	सेरे
	अठरिय
	तठ
	वहुचेइए
	वीयं
	तठ
	वहु
	सिरिषर
	रोठिठ
	वीरजम्माठ

प्र० ३१४ ताविज	ताविज	३०	५ नपयो	नपयो
प्र० ३ कठ	कठ	३०	६ दूवमो	दूवमो
प्र० ४ शुण्मिमे	शुण्मिमे	३०	७ जलव्युं	जलव्युं
प्र० ७ गुरुआजा	गुरुआ जा	३०	१४ शंकाकीधी	शंकाकीधी
प्र० १६ सन्नातस्या	सनातस्या	३०	१७ कीधुं	कीधु
प्र० १७ द्वाकारेण	द्वाकारेण	३०	१९ विशेषतो	विशेषतो
प्र० २३ देवमीनी	देवमीनी	३०	२१ संघट्ट	संघट्ट
प्र० २४ कहेवो)	कहेवो) द्वाकारेणसं	३०	२४ हं	हं
प्र० २५ द्वाकारेण	दीसद् नगवन् परकी	३१	२५ चरकाण	चरकाण
प्र० २६ अशुविज	सुहंपति पडित्तेहुं	३१	२७ जया	जया
प्र० २६ सवुरू	द्वाकारेण	३१	७ पच्चरकाण	पच्चरकाण
प्र० २७ अशुविज	संवुळा	३१	७ जपासाराथका	जपासाराथकी
प्र० २७ अशुविज	अशुविज	३१	२० परिक	परिक
प्र० २७ पणाणं	पणाणं	३१	२३ द्वाकारेण	द्वाकारेण
प्र० ३० अशुविज	अशुविज	३१	२४ जवास	जवास
प्र० ३१ आलाज	आलाजं	३१	२७ द्वाकारेण	द्वाकारेण
प्र० ३२ कहे "द्वं	द्वं	३१	३० अशुविजमि	अशुविजमि
प्र० ३४ आलाज	आलाजं	३१	३० अशुविज	अशुविज

पत्र पकि अशुद्ध	शुद्ध	पत्र पकि अशुद्ध.	शुद्ध
३१ ३१ खमवो	खमववो	३५ २५ कुस्किस्वत्वस्य	कुस्किस्वत्वस्य
३२ ३२ अने मोटा	अने	३५ २५ गिएहाविजा	गिएहाविजा
३२ ११ सवाल	सवाल	३५ २६ राजवा	राजवा
३२ ११ मेह	मेह	३५ २२ परिसागलमि	परिसागलमि
३२ २० पालयतण	पालयतेणं	३५ ३३ लवठिठ	लवठिठ
३२ ३५ विराय	विरय	३५ ३३ सवाल	सवाल
३३ ५ विणे	विषे	३५ ३३ अदिनादाणाल	अदिनादाणाल
३३ २२ किड्याए	किड्याए	३५ ३५ मेहुणाल	मेहुणाल
३३ २० सिरुस रिकयं	सिरुस रिकयं, साहु- स रिकयं	३५ ५ महणे	महणे
३३ ३० राज	राज	३५ ६ कावजण	कावजणं
३३ ३२ सिपाणणं ॥	सिपाणण ॥ सर्वेसि- युयाणं	३५ ७ राजवा	राजवा
३३ ३२ अरुक्कणयाए	अरुक्कणयाए	३५ १५ पन्निपुणं	पन्निपुषं
३५ २ लवठिठमि	लवठिठमि	३५ १९ समणुत्ताल	समणुत्ताल
३५ २ सवाल	सवाल	३५ १९ जहं	जहं
३५ ५ अदिनागिएहा	अदिनागिएहा	३५ २२ पणल	पणल
३५ ९ पणने	पणने	३५ २२ परिसागल	परिसागल
३५ १० थारणिजेमु	थारणिजेमु	३५ २३ अनुगामिए	अणुगामिए
३५ ११ राजवा	राजवा	३५ २५ सर्वेसिजीवाणं सर्वेसि	सर्वेसि चूआणं सर्वेसि
		चूआण सर्वेसि	जीवाण सर्वेसि

३५ ३५ सहदे
 ३५ ३८ जवठिठमि
 ३५ ३८ सबाव
 ३५ ३८ मेहुणाल
 ३५ ३८ मैशुनविरमण
 ३५ ३८ परिग्हाल
 ३५ ३८ जते ॥
 ३५ ३१ परिगिण्हाविजा
 ३५ ३१ परिगिण्हा
 ३५ ३४ पणते
 ३६ १ दवजणं
 ३६ २ राजवा
 ३६ २ जावजणं
 ३६ ११ पन्निपुणं
 ३६ १२ गहिजवा
 ३६ १२ गाहाविजवा
 ३६ १२ समणुत्ताव
 ३६ १४ अणानायं

सहदे महायुणे
 जवठिठमि
 सबाव
 मेहुणाल
 मैशुनविरमण
 परिग्हाल
 जते ॥ परिग्हादं पञ्च-
 र्कामि
 परिगिण्हाविजा
 परिगिण्हा
 पणते
 दवजणं
 राजवा
 जावजणं
 पन्निपुणं
 गहिजवा
 गाहाविजवा
 समणुत्ताव
 अणानायं

३६ १४ अणिसिजहं
 ३६ १८ पञ्चायपावकस्मे
 ३६ १८ रज वा
 ३६ १८ एगजवा
 ३६ १८ परिसागजवा
 ३६ २४ जवठिठमि
 ३६ २४ सबाव
 ३६ २४ परिग्हाल
 ३६ २६ अहावर
 ३६ २६ नोयणाल
 ४६ २८ राइ
 ३६ ३१ पणते
 ३६ ३१ दवज
 ३६ ३१ खित्तज
 ३६ ३१ कावज
 ३६ ३१ दवजणं
 ३६ ३२ खित्तजणं
 ३६ ३२ कावजणं

अणिसिजहं
 पञ्चरकाय पावकस्मे
 राज वा
 एगजवा
 परिसागजवा
 जवठिठमि
 सबाव
 परिग्हाल
 अहावरे
 नोयणाल
 राइ
 पणते
 दवज
 खित्तज
 कावज
 जावज
 दवजणं
 खित्तजणं
 कावजणं

पत्र. पकि. अशुद्ध	शुद्ध	पत्र पकि अशुद्ध	शुद्ध.
३६ ३३ राज	राज	३७ ३४ मेढुणाल	मेढुणाल
३६ ३३ नावलणं	नावलणं	३८ १ ङित	ङित
३७ २ अहिरण	अहिरण	३८ २ नाहाल	नाहाल
३७ ८ पकिपुण	पकिपुण	३८ २ ङित	ङित
३७ ११ पुण	पुण	३८ ३ नोयणाल	नोयणाल
३७ ११ अणिसिजहं	अणिसिजहं	३८ ३ समित	समित
३७ १४ तिरक्का	तिरक्का	३८ ३ ङित	ङित
३७ १५ राजवा	राजवा	३८ ४ इनायाल	इनायाल
३७ १५ एगजवा	एगजवा	३८ ४ समित	समित
३७ १५ परिसागजवा	परिसागजवा	३८ ४ ङित	ङित
३७ २१ महवए	वए	३८ ५ मुसावायाल	मुसावायाल
३७ २३ लोनय	लोनेय	३८ ७ ङित	ङित
३७ ३० ङित	ङित	३८ ८ ङित	ङित
३७ ३१ पाणाइवायाल	पाणाइवायाल	३८ ९ परिगहाल	परिगहाल
३७ ३१ ङित	ङित	३८ ९ ङित	ङित
३७ ३२ मुसावायाल	मुसावायाल	३८ १५ सरिच	सरिच
३७ ३३ ङित	ङित	३८ १६ अप्पसत्ताल	अप्पसत्ताल
३७ ३३ आदिवादायाल	आदिवादायाल	३८ १७ सुप्पसत्ताल	सुप्पसत्ताल
३७ ३४ ङित	ङित	३८ २३ उजावनिकाववहं	उजावनिकाववहं

३० २४ जासाठ
 ३० २४ अपसठाठ
 ३० २५ ठविहमप्रितरिय
 ३० २५ अठहि
 ३० ३४ दसाठ
 ३० १ सव
 ३० ३ इच्चेय महवय
 ३० ५ एस तिठ
 ३० ६ देसिठ
 ३० ७ संकयवाणं
 ३० ८ नगवठ
 ३० १० वापयं
 ३० ११ सठठ
 ३० १२ ससुते संगंठे
 ३० १४ सहहतेहिं
 ३० १५ गरिहामो
 ३० २१ नगवते
 ३० २२ दंकी
 ३० २२ अणुठ-

जासाठ
 अपसठाठ
 ठविहमप्रितरिय
 अठहि
 दसाठ
 सव
 इच्चेयं पंचमहवय
 एस खलुतिठ
 देसिठ
 सुकयंवाण
 नगवठ
 वाइय
 सठठ
 ससुते सअठे संगंठे
 सहहतेहिं
 गरिहामो
 नगवतं
 नंकी
 अणुठ-

३० २३ देविदठठ
 ३० २४ विणिठठ
 ३० २४ ऊणवि
 ३० २५ साही
 ३० ३४ गरिहामो
 ४० ३ दसो
 ४० ३ उकपो
 ४० ८ वएहिदसाठ
 ४० १५ परियदयं
 ४० १७ गरिहामो
 ४० १७ विसोहामो
 ४० २० विहाहपन्नती
 ४० २१ पएहावागरणं
 ४० २५ गरिहामो
 ४० ३१ उवालसंगं । नगवतं, समं

देविदठठ
 विणिठठ
 ऊणवि
 सोही
 गरिहामो
 दसा
 उकपो
 वएहीदसाठ
 परियदियं
 गरिहामो
 विसोहामो
 विवाहपन्नती
 पएहावागरणं
 गरिहामो
 नगं नगवतं समं
 मुयदेवयाय
 अणुठ-

४० ३२ टुकांडं	डुकर्मं	४३ ७ पयत्त	पयत्तं
४१ ३ कहेवा	कहेवो	४३ १३ तहिनानाणं	तहिनानाण
४१ १२ सदिस्वह	सद्विस्वह	४४ २ मंभासणधी	डंभासणधी
४१ १८ तुप्रह	तुप्रहं	४४ १३ पती वेठेज एकखमा	पती ॥ इथा
४२ २० सावयात्त	सावियात्त	सणु देइने "इथा	
४२ २१ महाएण	महाएण	४४ २६ उवजग	उवत्तंगं
४२ २२ तुप्रह	तुप्रहं	४५ ५ नकत्त	न कत्तं
४२ २५ दिक्क	दिक्कं	४५ ५ नवठेत्त	नवठेत्तं ।
४३ २८ अणुठिजहं । तुप्रह	अणुठिजहं ॥ तुप्रहं	४५ ५ कत्त	कत्तं
४३ २९ तिठस्सिमि	तिठस्सिमि	४५ ६ कहिज	कहिजं
४३ ५ यस्सा	यस्सा	४५ ६ सुहावत्त	सुहावत्तं
४३ १५ गणयरोत्ते सत्तान	गणयरोत्ते संतान	४५ ८ रत्त	रत्तं
४३ १७ पाइत्त	पाइत्तं	४५ १४ य्यान	य्यान
४३ २४ अणुत्तगो	अणुत्तगो	४५ १६ वसीक्कं	वसीक्कं
४३ २८ अणुत्तगिय	अणुत्तगिय	४५ १८ राय	राइय
४३ २९ अणुत्तगो	अणुत्तगो	४५ २० सत्तात्त	सत्तात्तं
४३ ३३ अणुत्तगो	अणुत्तगो	४५ २४ शिप्यकहे	शिप्यकहे
४३ ३ अणुत्तगिय	अणुत्तगिय		"इत्तंत्तह- त्ति" वत्ती एक खमा-
४३ ६ अत्तमत्त	अत्तमत्त		सणुं दइने जत्ता य

४५२४ अन्नव
 ४५२६ इडाकारेण
 ४६ ५ पती एक एक
 ४६ १३ स्वर्शनायी
 ४६ ३२ अन्नव
 ४७ ७ अन्नव
 ४७ एकदां
 ४७ एपूण साहू
 ४७ १३ अशुद्धि
 ४७ २ ७ अपयमांथी
 ४७ ३३ अशातना
 ४७ ३३ डावी
 ४७ ३३ वीराजमन
 ४७ २ नमहुणं
 ४७ ६ अन्नव
 ४७ ७ जयातिवयरा

इने "इडाकारेण सं- ४७ १५ अन्नव
 दिसहू नगवन् इति- ४७ २७ अन्नव
 यावही पडिक्कुं" ४७ ३४ महाजने
 अन्नव ४७ २७ आवि
 इडाकारेण ४७ २७ धणी
 पती एक ५० ५ अजीविका
 स्वर्शनामयी ५० १० (तोत्रके०) तोत्रे
 अन्नव ५० १२ वखाणे
 अन्नव ५० ३० जंढ्ये
 कयां ५१ १० प्रणसे
 पूवणए साहू ५१ १३ प्रमाणदोष
 अशुद्धि ५१ २२ पाहू क्रियाणं के०
 तपाप्रयमांथी ५२ ७ पठा
 आशातना ५२ २३ पहेवा
 कावी ५२ ३२ दोष ॥ ए
 वीराजमन ५३ १२ पासठानो
 नमहुणं ५३ २६ अन्नव
 अन्नव ५३ ३२ अन्नव
 जेइयातिवयरा ५४ १० इहं

अन्नव
 अन्नव
 महाराजने
 आवि
 धणा धणी
 अजीविका
 (तोत्रके०) तोत्रे
 वखाणे
 जंढ्ये
 पक्ष्णे
 अप्रमाणदोष
 पाहू डियाए
 पठा
 पहेवां
 दोष ॥ ४१ ॥ ए
 पासठानो
 अन्नव
 अन्नव
 इहं

अन्नव
 अन्नव
 महाराजने
 आवि
 धणा धणी
 अजीविका
 (तोत्रके०) तोत्रे
 वखाणे
 जंढ्ये
 पक्ष्णे
 अप्रमाणदोष
 पाहू डियाए
 पठा
 पहेवां
 दोष ॥ ४१ ॥ ए
 पासठानो
 अन्नव
 अन्नव
 इहं

पत्र पकि अशुद्ध	पत्र पकि अशुद्ध
५४१४ जपवास	जपवास
५४१४ अन्नतठ	अन्नतठ
५४३० वेसीने नीचे	वेसीने एक नवकार
५५६ ददाखेव	देखाडेव
५५२१ सवना	सवाडा
५६१० हजससिएणं	ह जससिएणं
५६१५ अन्नह	अन्नह
५६२६ जपधि संदिसाहू	जपधि पक्किदेहण सं-दिसाहू
५६३० पठी एक	पठी जेवानी पडिदेहण करवी पठी एक
५६३३ अन्नह	अन्नह
५७० अन्नह	अन्नह
५७१९ नगवन् अचिस	नगवन् सचिस अ-चिस
५७१९ जडावणहं	जडावणहं
५७१९ अन्नह	अन्नह
५७२५ अन्नह	अन्नह

शुद्ध

पत्र पकि, अशुद्ध.

शुद्ध

५८१२ पडवो)	पडवो समजवो)
५८१३ दिवस अचिस	दिवस सचिस अचिस
६०१० पाकवान	पाकवान
६११० जेथे	जेथे
६१२४ ने जेचे	ते जेचे
६१२४ भासे	भासे
६१२६ अतरतुं	अतरतुं
६२१९ वेलायं	वेलायं
६२२१ जोसरावतुं	जोसरावतुं
६३२७ जवसगहरे	जवसगहरे
६३२९ जाकिचिनाम	जं किचि नाम
६३३० तिह	तिहं
६४१८ जडावणहं	जडावणहं
६४२१ वारागामधी	वार गामधी
६५२६ काटासणुं	काटासणुं
६५५ अन्नह	अन्नह
६५८ परकी	परकी
६५१३ परकाणं	परकाणं

६५१५	आलोच	आलोचं	६६३०	एगलठाणं	एकलठाणं
६५१६	परकठं	परकीठं	६६३०	तिविहंमि	तिविहंमि
६५१७	गमाणा	गमणा	६६३१	पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६५१८	पाव पाव	पाव	६७	३ जखिन	जखिन
६५१९	ठेक	ठे के	६७	५ ससिडेणवा	ससिडेणवा
६५२१	पखि	पखि			णवा
६५२३	कट	काट	६७	७ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६५२३	सज्ञावा असज्ञावा	सज्ञाव असज्ञाव	६७	८ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६	अन्नडणा	अन्नडणा	६७	१२ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६१२	पञ्चखाड	पञ्चरकाड	६७	१३ पडन	पडन
६६१५	पञ्चखाड	पञ्चरकाड	६७	१६ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६१७	पञ्चखाड	पञ्चरकाड	६७	१७ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६२०	ससिडेणवा	ससिडेणवा असिडेण	६७	१८ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
	वोसिरड	वा वोसरड	६७	२१ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६२१	पञ्चखाड	पञ्चरकाड	६७	२४ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६२४	पञ्चखाड	पञ्चरकाड	६७	२५ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६२७	ठहु लवाणतुं	ठहु एकलवाणतुं	६७	२६ पञ्चखाड	पञ्चरकाड
६६२८	पञ्चखाण	पञ्चरकाण	६७	३० पञ्चखाण	पञ्चरकाण
६६२९	पडन	पडन			

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

६७३२ पञ्चराण
 ६७३३ पञ्चराण
 ६७३४ पञ्चराणि
 ६७ २ पोसह
 ६७ ७ पञ्चराणि
 ६७११ इह
 ६७१२ प्रमाण
 ६७ पञ्चराणना
 आगारोना
 नामना प-
 हेला खा-
 नानी वधी
 पंक्तिर्मां

अक्षर

—अक्षर

पञ्चकाण
 पञ्चकाण
 पञ्चकाणि
 पोसहं सवह
 पञ्चकाणि
 इहं
 प्रमाण
 पञ्चकाण
 आक्षर
 कौड
 वं
 इच्छिं
 च्येई
 इञ्चवतां
 डुरक

६८१२ परवदे
 ६८१२ जोड
 ६८१६ अगधणे
 ६८१७ अंभगविच्छिणो
 ६८२१ सामान्न
 ६८२३ सुविपाण
 ६८२७ गायसुवह
 ६८३१ वही
 ७० २ सव डुरक
 ७० ३ कइइ
 ७० ५ तिंभे मि
 ७० १३ कहं जुजतो
 ७० १७ निदी
 ७०२३ ताण
 ७०२३ मगळ
 ७०२४ बोसिरा
 ७०२७ ए पांचे
 ७०२८ कित्तयताणं
 ७०३१ सववाह

परकदे
 जोड
 अगधणे
 अंभगवच्छिना
 सामन्न
 सुविप्याणं
 गायसुवह
 वही
 सव डुरक
 कइइ
 तिंभे मि
 कहं जुजतो
 नदी
 ता
 मंगळ
 बोसिरा मि
 ए पंचे
 कित्तियंताणं
 सववाह

७१	१ सधाह	सधाह
७१	३ तिगिठीकाणं	तिगिठिकाणं
७१	४ पढमिष्ठ	पढमिष्ठ
७१	५ तिठपरौ	तिठेपरौ
७१	५ त्ठेव	त्ठेव
७१	६ अठ	अठ
७१	७ तिठपरंतं	तिठपरंतं
७१	११ तिठपरंतं	तिठपरंतं
७१	१२ त्रिया	त्रिका
७१	१३ त्रियाठ	त्रिकाठ
७१	१३ इकुरसौ	इकुरसौ
७१	१६ इकुरस	इकुरस
७१	१७ इठिणपुरं	इठिणपुरं
७१	१७ सावठि	सावठि
७१	१७ वनठलयं	वनठलय
७१	२० पढमत्रिका	पढमत्रिका
७१	२१ तैसि	तैसि
७१	२१ बुठासि	बुठासि
७१	२३ वगध	वगध

७१	२६ त्रियाठ	त्रिकाठ
७१	२७ लखा	लखा
७१	२७ त्रियाठ	त्रिकाठ
७१	३१ तजमठौ	तजमठौ
७१	३३ मिठिजाई	मिठिजाई
७२	६ नवप	नवपं
७२	७ नवतं तिठं	नवतं तिठं
७२	७ अठ	अठ
७२	८ दिज्जर	दिज्जर
७२	१० रठामुह	रठामुह
७२	१० वटवरिया	वटवरिया
७२	१४ अठपुहचरस	अठपुहचरस
७२	१८ अठग	अठग
७२	२१ बुठिं	बुठिं
७२	२२ गिह्ठ	गिह्ठ
७२	२२ तिठपर	तिठपरं
७२	२४ अठं	अठ
७२	२४ सुतंगठति	सुतंगठति
७२	२५ तज	तज

पत्र पंक्ति अशुद्ध
 ७२ २७ असुनाणं
 ७२ २७ वदन्तो
 ७२ २७ ददय्य
 ७२ २७ जहडे
 ७२ २७ मजवि
 ७२ २७ पोत्र
 ७२ २७ विद्या
 ७२ ३४ सचकु
 ७२ १ नडु
 ७२ २ तियद्वि पि
 ७२ ६ पुत्रद
 ७२ ७ तिठगरो
 ७२ ८ तिठयरा
 ७२ ११ तिठयरा
 ७२ १२ सति
 ७२ १८ तिठक
 ७२ २० कपड्हे
 ७२ २१ पत्रमे
 ७२ २५ तिठकरा

शुद्ध
 सुनाणं
 वदंती
 मदय्य
 जहडे
 मजवि
 पोत्र
 विद्या
 सचकु
 नडु
 तिद्वि पि
 पुत्रद
 तिठगरो
 तिठयरा
 तिठयरा
 सति
 तिठकु
 कण्डे
 पत्रमे
 तिठकरा

पत्र पंक्ति अशुद्ध
 ७३ २७ तसमो
 ७३ ३१ तिठयराण
 ७३ ३२ तिठयरा
 ७३ ३३ सावधि
 ७४ १ द्योय
 ७४ २ सिद्धा
 ७४ ३ त्रखण
 ७४ ७ तिठयरा
 ७४ १० छत्रमत्र
 ७४ १३ सवत्र
 ७४ १७ चत्रत्र
 ७४ १८ तत्र
 ७४ २२ त्रगात्रत्र
 ७४ २२ छत्रमत्र
 ७४ २२ त्रयोशुणत्रत्र
 ७४ २४ त्रानमत्रिण
 ७४ २५ तत्र
 ७४ २६ सोमिलशुति
 ७४ २८ त्रिनाणं

शुद्ध
 तसमो
 तिठयराण
 तिठयरा
 सावधि
 द्योय
 सिद्धा
 त्रखण
 तिठयरा
 छत्रमत्र
 सवत्र
 चत्रत्र
 तत्र
 त्रगात्रत्र
 छत्रमत्र
 त्रयोशुणत्रत्र
 त्रानमत्रिण
 तत्र
 सोमिलशुति
 त्रिनाण

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

७४३१ अडाण
७४३४ समसेढीउ
७५ १ गिहूइय
७५ २ गिहूइ
७५ ३ गिएइइ
७५ ४ गिएइइ
७५ १३ गुठमप्रे
७५ १६ सुअलं
७५ २१ सुतडजालं
७५ २३ परिचज्जं
७५ २५ अहियहं
७५ २५ वत्तुमहांसि
७५ २६ पुक्कोत्तराल
७५ २७ नडिताणं
७५ २७ कएइं
७५ ३२ अडि
७६ ३ पडा
७६ ५ पडा
७६ १० इयमाणं

अडाणं
समसेढीउ
गिएइय
गिएइ
गिएइ
गिएइ
गुठमप्रे
सुअलं
सुतडजालं
परिचज्जं
अहियहं
वत्तुमहांसि
पुक्कोत्तरालं
नडिताणं
कएइं
अडि
पडा
पडा
इयमाणं

७६ १४ स्तोत्र प्रारंभ
७६ १५ परमेष्ठि
७६ १६ अरिहंताण
७६ १७ वप्पो
७६ २१ वप्पो
७६ २५ संति
७६ २७ सप्रावे
७६ २७ सवपाप
७६ ३३ संति
७७ ३ नित्तम
७७ ४ शुत्तम
७७ ४ तिडयरं
७७ ४ सावडि
७७ ५ वडं
७७ १० दडिणाउर
७७ १३ डण
७७ १४ मे ॥
७७ २० पपनावणेअ पइसमे
जावणेअ पइसमे

स्तोत्र संग्रह प्रारंभः
परमेष्ठि
अरिहंताणं
वप्पो
वप्पो
संति
सप्रावे
सवपाप
संति
नित्तम
शुत्तम
तिडयरं
सावडि
वडं
दडिणाउर
डण
मेनयवं ॥
पपनावणेअ पइसमे

पत्र. पक्षि. अशुद्धं

शुद्ध

पत्र पक्षि. अशुद्ध

शुद्ध

११११	केलाइरेअ	कलाइरेअ
१११२	रूप	रूप
११३४	डुलिअं	डुलिअ
११६	दुहपि	मदपि
११६	दुलिसिय	सित्तयं
११६	दुहपि	मदपि
११६	दुनरिद	नरिद
११६	१ लिस्त्रियं	लिस्त्रय
११६	१२ पटणो	संढणो
११६	१५ जिणचद	जिणचदं
११६	समणणे	समाणणे
११२३	जुव	जुव
११२३	सिरिनज	सिरिवध
११२३	सुलडणा	सुलडणा
११२४	सडिअ	सडिअ
११२५	अंतोस	अदोस
११२५	गड	गडं
११३३	नदि	नदि
११३३	ठरिप	ठरिप

११६	१ नमोडु	नमोडु
११६	४ डडद	डडद
११६	४ सुविठड	सुविठड
११६	१० अजिनशांति	अजितशांति
११६	१२ दसगो	दसगो
११६	१३ सुत्तिठं	सुत्तिठ
११६	१४ विणिमिन्न	विणिचिन्न
११६	११ पाप	पाप
११६	१२ मत्ता	मत्तो
११६	१२ बुज	बुज
११६	४ सडदं	सडद
११६	५ परिधुद	परिधुद
११६	६ सिमथ	सिमथ
११६	११ सिद	सिद
११६	१२ डादं	डादं
११६	१४ विणिमिन्न	विणिमिन्न
११६	११ सवाडं	सवाडं
११६	१२ ररस	ररकस
११६	११ नाण	ताण

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

पत्र पक्ति अशुद्ध

शुद्ध

८० २४ त्रयविण्डाड
 ८० २६ श्रीमानतुंग
 ८० ३१ शतकोटि
 ८१ ६ पक्षेण
 ८१ १० तिष्ठं
 ८१ २४ सह वडि
 ८१ २५ त्रीश्र सिव
 ८१ २५ संबहरिय
 ८१ २६ संतिवय
 ८१ ३१ त्रवत्ररि
 ८१ ३३ युखिनापसौ
 ८२ १० जग्रहवुः
 ८२ १४ पाणितलमानमत्तम
 त्रवत्रत्रो
 ८२ १६ ऽत्रितः
 ८२ २६ मक प्रारंज
 ८२ २६ प्रमाणा
 ८२ २४ प्रविचार्य
 ८२ २४ सुगेड

त्रयविण्डासं
 श्रीमानतुंग
 शतकोटि
 पक्षेण
 तिष्ठं
 सह जड वडि
 त्रीश्र जड सिव
 संबहरिय
 संतिवयं
 त्रवत्रुरि
 युखिनोपसौ
 जग्रहवुः
 पाणितलमानमत्रव-
 त्रत्रो
 ऽत्रित
 मक स्तोत्र प्रारंजः
 प्रमाणा
 मविचार्य
 सुगेडं

८३ ७ जगता
 ८३ १८ निद्रुम
 ८३ २३ कांति
 ८३ २६ तथा महत्त्वं
 ८३ ३० सहसरश्मिम्
 ८३ ३२ मुनीद्
 ८३ ३३ वागीश्वरं
 ८४ १ विधातात्
 ८४ ७ मणिमयूख
 ८४ १० लघाशशाक
 ८४ ११ हन
 ८४ ११ शानकौत्रम्
 ८४ १४ ह्य
 ८४ १८ गलज्ज्वल
 ८४ २० मुज्ज्वलं
 ८४ २१ समुखमापतंतं
 ८४ २३ बलाचुरंग
 ८५ २५ कर्मचौराः

जगतां
 निद्रुमं
 कांति
 यथा महत्त्वं
 सहसरश्मिम्
 मुनीद्
 वागीश्वरं
 विधानात्
 मणिमयूख
 लघाशशाक
 हन
 शानकौत्रम्
 हन
 ह्यं
 गलज्ज्वल
 मुज्ज्वल
 समुखमापतंतं
 बलाचुरंगं
 कर्मचौराः

पत्र पकि अशुक्र

शुक्र-

पत्र पकि अशुक्र

शुक्र

८६२३ ज्ञापितानि
 ८६२४ यज्ञजाड
 ८७१० इव
 ८७११ सस्तवं
 ८७१४ ज्ञांत
 ८७१५ इति
 ८७३४ पूर्वसूरिदक्षित
 ८७३४ स्तव
 ८८ ६ शृणुत
 ८८१३ मत्वा
 ८८१४ स्वाहा उ
 ८८१६ ऋषम
 ८८१८ शाता.
 ८८२३ चतुर्वर्षस्य
 ८८२५ सोमयमवरुणकुवेर
 ८९ ५ प्रतिष्ठा
 ८९ ८ नृत्यति
 ८९ ११ तुहानयर
 ८९२९ अर्था

ज्ञापितानि
 यज्ञजाड
 इव
 सस्तवं
 ज्ञांत
 मिति
 पूर्वसूरिदक्षित
 स्तव.
 शृणुत
 कृत्वा
 स्वाहा उ
 ऋषम
 शांता.
 चतुर्वर्षस्य
 सोमयमवरुणकुवेर
 प्रतिष्ठा
 नृत्यति
 तुहानयर
 अर्था

९० ए अर्धद्वितति
 ९० १२ चडान
 ९० १८ राकांतहार्दकथनो
 ९० २८ तिष्ठति
 ९१ १ मकराकितं
 ९१ २१ चडसमं
 ९१ २६ विशुक्र्या
 ९१ ३६ सपद.
 ९२ ७ युवि
 ९२ ८ हर्षे
 ९२ ९ नर्षे
 ९२ १४ नतत्रविकजनाना
 ९३ १७ कीर्त्तिय
 ९४ १४ तिष्ठति
 ९४ १६ पार्श्वजिनेभ्य
 ९४ २९ तामय
 ९६ ३३ वासितं
 ९७ १० स्वमसि
 ९७ २६ श्रितवांधव,

अर्धद्वितति
 चडान
 राकांतहार्दकथनो
 तिष्ठति
 मकराकितं
 चडसमं
 विशुक्र्या
 सपदः
 युवि
 हर्षे
 नर्षे
 नतत्रविकजनाना
 कीर्त्तिय
 तिष्ठति
 पार्श्वजिनेभ्य
 तामय
 वासितं
 स्वमसि
 श्रितवांधव,

पत्र पकि. अशुक्र.	प्रतिबोधदः
१७२ ११ प्रतिबोधदः	प्रतिबोधदः
१७८ ३३ नयता	नयता
१७९ ३० इतिश्रम	इति श्रीम
१०० ३ शान्ति	शान्ति
१०० १० किंचिद्	किं चंद्
१०० ११ न्यान्नावातं	न्यान्नावातं वनं
१०० ११ कलयनधरां	कलयन् धरां
१०० ११ धवलद्वारा	धवलयद्वारा
१०० १४ स्यावहं	वत्स्यावहं
१०० १११ डर्पलहो	डर्पलहो
१०१ ४ अज्ञानस	अज्ञानस
१०१ ६ हरिहरिहरी	हरीहरिहरी
१०१ १७ वमसिमम	वमसिमम विधाता
१०१ ३३ डुवीर	डुवीर
१०१ १ स्तवाये	स्तवाये
१०१ १ सुवैव	सुवैव
१०१ ४ वरुश्व	वरुश्व
१०१ ५ यल	यल
१०१ १० कथां विनोहं	कथ विनोहं

पत्र पकि. अशुक्र.	विनं वितं
१०१ १० विडं वितं	विनं वितं
१०१ ११ द्वीयैवा	द्वियैव
१०१ ११ व्वस्तोन्यमंत्रैः	व्वस्तोन्यमंत्रैः
१०१ ११ मेवचेत्सि	मेवचेत्सि
१०१ ११ पापयुक्ति	पापयुक्ति
१०१ ११ विपयात्रिजापे	विपयात्रिजापः
१०१ १० नैपट्टय	नैपट्टय
१०१ ११ शोद्धितं च	शोद्धितं च
१०१ १६ नगुरुदितेयु	नगुरुदितेयु
१०१ १० किवासुधाहं	किवासुधाहं
१०१ ३० नांस्ते	नांस्ते
१०१ ३१ त्रिदमेव	त्रिदमेव
१०३ ३ तेदहाटकी नव	तेदहाटकी ॥ नवका-
१०३ ३ कारथ की	रथकी
१०३ ३ श्रीपालनरे	श्रीपालनरे
१०३ ६ वासि	वेसि
१०३ १० वसुधातले	वसुधातले
१०३ ३३ सप्रभागम	सनभागम
१०३ ३३ कहितां	कहितां

पत्र-पंक्ति अशुक्र.
 १ नमिजं १०४
 ४ करेसाधारण १०४
 ५ तोम १०४
 ७ जवधाय १०४
 १४ सारो १०४
 १८ जलपानीय १०४
 २१ दृढ १०४
 २३ पंचासथा १०४
 २४ विद्या १०४
 ३३ तिहदेवा १०४
 ३३ चासव १०४
 ३३ तंरजक १०४
 ५ सुरमहिय १०४
 ८ नुमिसमोसरण १०४
 ८ प्रथमारंजतो ॥ १०४
 १२ एहअसंनवए १०४

नमियं
 करेसारण
 सोम
 जवधाय
 रासो
 जलपानीय
 दृढ
 पंचसथा-
 विद्या
 तिहदेवा
 चासव
 तरंडक
 सुरमहिय
 नुमिसमोवसरण
 प्रथमारंजतो ॥ दह-
 दिसि देखे विबुधवहु
 आवंतीसुररजतो ॥
 एहअसंनवसंनवए

पत्र पंक्ति अशुक्र.
 १४ ठेढीकरे १०५
 १५ करे १०५
 १८ संसार १०५
 २३ गणहा, १०५
 २४ साइमुनि १०५
 ३३ चजदेसी १०५
 ३ प्रबोधे १०६
 ३ जज्जलं १०६
 ८ वेज १०६
 ३० उत्तमसख १०६
 ५ पवर १०७
 २४ डावण १०७
 २१ रणे १०७
 २६ वरपावक १०७
 २८ हिक्के १०७
 १ बोधे १०८
 १६ पोम १०८
 १० जहसे १०८

ठेढीकरी
 करी
 संसय
 गणहार,
 सोइमुनि
 चजदिसी
 प्रतिबोधे
 जज्जल
 वेज
 उत्तमसख
 पवर
 नाकण
 रणे
 वरपायक
 हियडे
 बोधे
 पोम
 जहसे

पत्र पाकि. अशुभं.
 १०९ ६ चासृते
 १०९ ११ दलैरासा-
 १०९ १२ तिसञ्जावना
 १०९ १३ सर्वस्वं
 १०९ ४ कष्टकाष्टावती
 ११० १ विसराज
 ११० ३ करोशिश्य
 ११० ४ सुधर्मासा,
 ११० २१ गौतमशुर
 ११० २१ द्वा
 ११० २१ लडि
 ११० २४ षटं
 ११० २५ द्वादशंबर
 १११ ३ त्रिञ्चनमांहि
 १११ १६ वेहिन
 १११ २२ नावद
 १११ २४ अजर
 १११ २५ द्रव्यपट
 ११२ १ ज्योत्वाव

शुभ
 चासृते,
 दलैराजा
 तिसञ्जावना
 सर्वस्वं
 कष्टकाष्टावती
 विसराज
 करोशिश्य
 सुधर्मासार,
 येशारणे
 गौतमशुर
 द्वा
 लडि
 षट
 द्वादशंबर
 त्रिञ्चनमांहि
 वेहिन
 नावद
 अजर
 द्रव्यपट
 ज्योत्वावि

पत्र पाकि अशुभ
 ११२ २ नितनतरणी
 ११२ ३ कमलां
 ११२ ४ तुयं
 ११२ २० त्रपावनं
 ११३ १३ जोजभुंगं
 ११३ २६ किमन्यच्चनै
 ११३ २६ विधित्तैः
 ११४ ४ प्रयत्तद्विव
 ११४ ४ मेषिञि
 ११४ ५ वननै
 ११४ ५ राधनै
 ११४ ७ परमेष्टिनं
 ११४ ९ त्वन्याय
 ११४ ९ वैद्व्याकृत
 ११४ ११ प्रकृति
 ११४ १२ सास्त्रात्
 ११४ १२ तमणिः
 ११४ १७ त्वन्यादापरजः
 ११४ २० नडि

शुभ
 नितनवतरणी
 कमला
 तु.ख
 मित्रपावनं
 जोजभुंगं
 किमन्यच्चनैः
 विधित्तैः
 प्रयत्तद्विव
 मेषिञिः
 वननैः
 राधनैः
 परमेष्टिनं
 त्वं न्याय
 ब्रह्माद्वैत
 प्रकृतिः
 सास्त्रात्
 तमणि
 त्वन्यादापरजः
 लडि

पत्र पक्ति अशुद्ध	पत्र पक्ति अशुद्ध
११४ २० सौदर्य	११४ २० सौदर्य
११४ २६ सखल	११४ २६ सखल
११४ २७ कुपात्रं	११४ २७ कुपात्रं
११५ ७ मोद	११५ ७ मोद
११५ १४ मांसलोही	११५ १४ मांसलोही
११५ १६ द्विजधर्म	११५ १६ द्विजधर्म
११५ २१ डट	११५ २१ डट
११५ २७ सहस	११५ २७ सहस
११५ २८ कल्यो, स्तुतमां	११५ २८ कल्यो, स्तुतमां
११५ २९ स्त्रीमी	११५ २९ स्त्रीमी
११५ २९ सुवशाड	११५ २९ सुवशाड
११५ २९ चैतीया	११५ २९ चैतीया
११५ २९ पुव	११५ २९ पुव
११५ २९ एजीकथे	११५ २९ एजीकथे
११५ २९ विपरीत	११५ २९ विपरीत
११५ २९ रतु	११५ २९ रतु
११५ २९ श्रवतप्यवने	११५ २९ श्रवतप्यवने
११५ २६ अमनोहन	११५ २६ अमनोहन

- शुद्ध

सौदर्य	सौदर्य
सकल	सकल
कुपात्रं	कुपात्रं
मोद	मोद
मांसलोही	मांसलोही
धर्म	धर्म
अट	अट
सहस	सहस
॥ स्त्री परमत खलत्रजे	॥ स्त्री परमत खलत्रजे
स्वामी	स्वामी
सुवशाड	सुवशाड
विरचैतीयां	विरचैतीयां
पुव	पुव
एजीकथे	एजीकथे
अनुकूल	अनुकूल
ऋतुसव	ऋतुसव
श्रवतप्यवने	श्रवतप्यवने
अमनोहन	अमनोहन

पत्र पक्ति, अशुद्ध

११५ २९ वीसमेतेसुनदथाए	११५ २९ वीसमेतेसुनदथाए
११५ २९ अदेसना	११५ २९ अदेसना
११५ २९ प्रचुरण	११५ २९ प्रचुरण
११५ २९ इवरे	११५ २९ इवरे
११५ ३३ चोत्रीसे	११५ ३३ चोत्रीसे
११५ ३४ तणत	११५ ३४ तणत
११५ ३४ आत्मारंगमा	११५ ३४ आत्मारंगमा
११६ १ सुजो	११६ १ सुजो
११६ २ पूज	११६ २ पूज
११६ ३ इस्तवे	११६ ३ इस्तवे
११६ ७ प्रचुदेय सोवास	११६ ७ प्रचुदेय सोवास
११६ ७ मेवजुं	११६ ७ मेवजुं
११६ ८ कोड	११६ ८ कोड
११६ ९ गतिक	११६ ९ गतिक
११६ १० आपार	११६ १० आपार
११६ ११ तिहां	११६ ११ तिहां
११६ १२ पूवे	११६ १२ पूवे

शुद्ध

वीसमे अतिशयं सु-	वीसमे अतिशयं सु-
निक थाए	निक थाए
देसना	देसना
प्रचुरण	प्रचुरण
वेर	वेर
चोत्रीसमे	चोत्रीसमे
तणतां	तणतां
आत्मारंगमां	आत्मारंगमां
आत्मारूप	आत्मारूप
सुजो	सुजो
पुन्य	पुन्य
संस्तवे	संस्तवे
प्रचुदेह सुवास	प्रचुदेह सुवास
मेवजु	मेवजु
कोय	कोय
यातिक	यातिक
अपार	अपार
जिहां	जिहां
पूवे	पूवे

पत्र-

पत्र. पं. कि. अशुद्ध

शुद्ध.

पत्र. पं. कि. अशुद्ध

शुद्ध.

११६	१६	सिस
११६	१७	जने
११६	१७	जधा
११६	१७	दाल
११६	१७	पाए
११६	११	वफल
११६	११	जेप्रगटे
११६	१३	बुफतां
११६	१५	हुं गुणगाठं
११६	१७	मारनी वारी
११६	१७	महितारि
११६	१७	रिष
११६	३०	वठे साइ
११६	३०	चरे
११७	६	परीस परीसा
११७	१०	ते नर
११७	१३	नीतु
११७	१७	सव्य
११७	१७	जिनीमाय

दीव	११७	३३	रचिजमे
जणे	११७	१४	खाते
जंथा	११७	१३	मुसाने जडमत्तमांतंगा मत्तमांतंगठं नीरास०
डाल	११७	३	वदजे
पास	११७	७	सद्या
ठे फल	११७	१४	कन्यासी
प्रगटे	११७	१	परनीत
बुफतां	११७	१०	जलमा
हुं गाठं	११७	३१	साधार
मारि निवारी	११७	६	अकराक
हितकारि	११७	१५	जेदेक
कडि	११७	३१	॥ ३१ ॥
वठे सोई			
चुरे			
परीसा			
ते मनवंडित			
नातुं	११७	३३	॥ ३३ ॥
संघ	१३१	१६	॥ ७ ॥
जेहनीमाय	१३१	१७	पतंगीयां

११७	३३	॥ ३३ ॥
१३१	१६	॥ ७ ॥
१३१	१७	पतंगीयां

रचिजमें	३१ ॥ जव अनंत जम-
खाते	तां थकां, कीधा परि
	मह संबंध ॥ त्रिविध
	त्रिविध करी वोसरु,
	तिणसं प्रतिबंध ॥ ३१ ॥
	॥ ३३ ॥
	॥ ७ ॥
	पतंगीया

पत्र पकि अशुद्ध	शुद्ध	पत्र पकि. अशुद्ध	शुद्ध
१३१ १ए०कोता	कुता	१४० १३ आहारनी	आहारनु
१३२ १३ हवे सुणो	हवे निसुणो	१४१ १४ जीवकेद जुग	जीवकेदकेद जुग
१३२ १७ चरण	चरण	१४७ ४ अन्नप	अन्नुरप
१३२ २७ यात्रा	यात्र	१४९ २ पाच	पांच
१३३ ११ उगति	उरगति	१५४ ३२ सज्ञाप	संज्ञाहुप
१३३ २६ हुवो	तुवो	१५५ १ ॥ ए ॥	॥ १ ॥
१३४ २५ लखे	लेखे	१५७ १६ चार	चार
१३५ १७ शरणगारे	शरणगारे	१५७ ३ किमससे	किमससे
१३५ २५ रमी	रिमी	१५७ ६ माण	जाण
१३५ ३० तमे	तुमे	१५९ ३ वधता	वधता
१३६ २ सोटा	खोटा	१६१ ३४ दवानाव	दयानाव
१३६ ३ जीव	जीवा	१६२ ३ यति	याति
१३६ ९ कांता	कता	१६२ ५ व्यत	वत
१३६ २७ कासिनी	बलिकासिनी	१६२ २७ विण	पिण
१३७ १२ पड्यां	पड्युं	१६३ १ फलत	फूलत
१३७ १५ सवारा	सवारे	१६३ २ फल फल	फल फूल
१३७ ३१ मनवागाडीये	मन न वगाडीये	१६४ ६ न्याघसु	बाघसुं
१३७ ३१ पण	पर	१६४ १० अतुकी	चुकी
१४० १० लहय	लहिय	१६४ १६ स सहो	सहो

१६६ २३ राजकुंघी
 १६७ १५ केहेरो
 १६७ २६ चिरप्रतिमाख्यत
 १७० २४ संघ
 १७० ३१ पतदी
 १७३ १ गमाव
 १७३ १७ते
 १७४ १३ टंक
 १७५ ९ होये किम
 १७५ १९ नाहि
 १७७ १७ शत्रुजय
 १७९ ३१ बोजयते
 १७९ २२ हरा
 १७९ २२ सण
 १७९ २२ दियस
 १७३ ९ जिनरजमूर्ति
 १७३ ९ सौम्याकृतिः
 १७५ ४ प्रवचन

राजकुंघरी
 केहरो
 चिरप्रतिपाठ्यत
 सिरु
 पतदी
 गमावे
 तो
 टक
 होये कहो कि
 नाहि
 शत्रुजय
 बोजयते
 हरा
 सय
 दियसं
 ध्यायाने
 जिनराजसूर्तिः
 सौम्याकृतीः
 प्रवचन

१७५ २७ ठाहोतेर
 १७७ १७ सुखधाम
 १७७ २६ सुपर्वद
 १७९ ३१ नाखे
 १७४ २२ इकिठाला
 १७५ १९ समुहित
 १७ २२ फरस अरस
 १७ ११ अजि
 १७९ ३० दधं
 १७९ ३४ सुख
 १७० २९ तुयचदन्नजिन
 १७९ १ वजाकरयं
 १७३ ७ कुतांत
 १७३ १६ तीमहा
 १७३ ३३ समरक
 १७५ २ मयदमर
 १७५ ९ परेता
 १७५ ११ मानित्त.

ठोहातेर
 सुखधाम
 सुपर्वद
 नाखी
 ठिकिठाली
 समुहित
 फरस आठ
 अगी
 धूली
 दध
 सुरव
 तुयचदन्नजिन
 वजाकरय
 कुतांतं
 तीममहा
 समरक
 नमदमर
 परेता
 मानिनः

पत्र पक्ति, अशुद्ध
 २०५ १३ सवास
 २०५ १३ समाहितः
 २०७ २५ जिनगुन
 २१४ १५ पास
 २१५ ० ममता
 २१६ १० जिन
 २१७ २ हृत
 २१७ ३२ सोहे
 २२० १ जोम वि
 २२० २२ र
 २२३ २५ सुलदय
 २२६ २ दोहिलो
 २३० ६ एकोविस
 २३० १४ व
 २३४ २५ ओजग
 २३७ ३२ गणशु
 २४० २२ पूज
 २४१ ३४ जय
 २४२ २२ पठ
 २४३ ६ हीसि

शुद्ध
 स्य वास
 समाहितः
 निजगुन
 वास
 ममता
 जिन
 कृत
 सोहीयं
 मो नवि
 रे
 सुलदाय
 दक्षिण दोहिलो
 एकोनविस
 व
 जंजग
 गुणशु
 पूरण
 जयजय
 पठ
 हीसि

पत्र पक्ति, अशुद्ध
 २४५ ३ कटाणी
 २५२ ५ सकल
 २५३ १५ म्म
 २५३ २० शेखर
 २५३ ३३ अराधन
 २५६ ० जिनपद्विपति
 २६१ १६ ॥
 २६३ १७ मुज
 २६३ ३२ कलशना
 २६५ ३३ सलस
 २६७ १४ कामिक
 २६९ ३१ पंजक
 २७३ ७ सोगत
 २७४ १० गात
 २७४ ३४ विनिश्वरु
 २७६ २२ तेष
 २७४ २३ आवापरे
 २७७ ४ वेवा
 ३९१ ९ नवार्णवात्

शुद्ध
 कटाणीक
 सकल
 नव
 शेखर गुरु
 अराधन
 जिनपति
 ॥ गिरु
 मुज
 कलशना
 अलस
 कामित
 पंजक
 सुगति
 गात
 विनिश्वरु
 तेष
 आवापरे
 वेवा
 नवार्णवात्

अथ सविधि विधि पक्षसाधु प्रतिक्रमण सूत्राणि.

३० ॥ ॐ नम. सिद्ध ॥ श्री गौतमायनमः ॥ श्रीविधिपक्ष गत्र श्राणगार जंगम युग
 प्रधान पूज्य पुरंदर श्रीश्रीश्री १०८ श्री आर्य रक्षित सूरि गुरुन्यो नमः ॥ अथ
 अणगारस्य प्रतिक्रमण सामाचारी लिख्यते ॥ तत्र प्रथमं देवसिक प्रतिक्रमण समा-
 चारी विधिमाह ॥ प्रवचनसारोक्षरे उक्तंच-पंचविहायार विशुद्धिहेतु मिह साऊ सावगो
 गावि ॥ पञ्चक्रमण सहगुरुणां ॥ गुरु विरहे कुण्ड दकोवि ॥ १ ॥ चिद्वंदण सुस्सगो
 पुत्तिअपक्वित्तेह वंदण लोए ॥ सुतं वदण खामण । य वंदण चरित्त जस्सगो ॥ २ ॥
 दंसण नाणुसगो, (पाठांतरे-पुत्तिअ वंदण शुद्ध असजा ओद्धखययज जस्सगो पडि-
 क्रमणं दोह देवसिअं ॥) सुय-देवय खित्तदेवयाणंच ॥ पुत्तिय वंदणं शुद्ध तियासक-
 थयथोत्त देवसिअं ॥ ३ ॥ प्रतिक्रमण शब्दतो अर्थ-प्रतिक्रमण एट्ठे शुभयोगोनी
 अंदर जे क्रमण करवुं ते प्रतिक्रमण कहेवाय कहुं ते के-

प्रमादना वयाथी स्वस्थानथी जे परस्थानमां जवानुं थयुं होय, अने फरीने पातुं जे
 स्वस्थानमां आववुं ते प्रतिक्रमण कहेवाय. कहुं ते के-

मोक्षरूपी फलने देनारा एवा शुभ योगोमां शब्द रहित एवा यतिनुं जे प्रतिवर्त्तन,
 ते प्रतिक्रमण कहेवाय. वली ते प्रतिक्रमण अतीत, अनगत, अने वर्तमान एम त्रण

कालना विषयोवाहुं वे अर्ही शंका करेवे के, प्रतिक्रमण तो अतीत कालना विषयवाहुं ज युक्त वे, केमके कह्युं वे के,
अतीत कालनुं हुं प्रतिक्रमण करुं हुं. माटे ते प्रतिक्रमणने त्रिकाव विषय पणुं केम प्राप्त थाय ? तेमाटे हवे कहेवे. अर्ही प्रतिक्रमण शब्द मात्र अशुभ योगनी निवृत्तिना अर्थवालो वे. कह्युं वेके—

सिध्यात्वपणामाटे प्रतिक्रमण वे, तेमज असयम माटे प्रतिक्रमण वे. कषायोनुं प्रतिक्रमण वे, तथा अप्रशस्त एटवे अशुभ योगो माटे पण प्रतिक्रमण वे. अने तेथी निंदा द्वारे करीने अशुभ योगनी निवृत्तिरूप अतीतकालना विषयवाहुं प्रतिक्रमण वे वली अशुभयोगोना संवर द्वारे करीने वर्तमान कालना विषयवाहुं पण प्रतिक्रमण वे, माटे ते प्रतिक्रमणने त्रणे कालना विषयवाहुं कहेवामां कंड दोष नथी, वली ते प्रतिक्रमण दैवसिकञ्चादिक वेदोथी पांच प्रकारनुं वे. दिवसने अंते जे कराय ते दैव-सिक प्रतिक्रमण कहेवाय; रात्रिने अते जे कराय ते राड प्रतिक्रमण कहेवाय; पक्षने अते जे कराय ते पाक्षिक प्रतिक्रमण कहेवाय, चार मासने अंते जे कराय ते चऊमासी प्रतिक्रमण कहेवाय; तथा जे वर्षने अंते कराय, ते सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कहेवाय ॥ प्रथम संगदाचरण रुप नक्कार सूत्र कहीये टीए ॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिधाणं ॥ २ ॥ एमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो जवजायाणं ॥ ४ ॥ एमो दोए सव

साह्यं ॥ ७ ॥ एसो पंचणसुकारो ॥ ६ ॥ सब पावपणासणे ॥ ७ ॥ मंगलाणंच
सर्वेसि ॥ ८ ॥ पढमं दोड मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ विधि-प्रथम एक समासणुं देवुं. ते नीचेप्रमाणे-

॥ अथ खमासमण ॥ इजामि खमासमणो वंदिजं जावणिजाए निसीहिआए मज्ज-
एण वंदामि ॥ इति ॥ अथविधि-गुरु महाराजने वे खमासमणे वांदावा, “ इजामि खमा-
समणो ” इत्यादि पाठथी तिर्यंकर महाराजने त्रणवारवांदावा ॥ ३ ॥ फरी उत्रा अइ वे
हाथ जोडीने नीचे मुजव सामाचारी एटदे सुगुरुने शाता पूववी. ते आ प्रमाणे ॥
अथ ॥ सुगुरुने शाता सुख पुजा ॥

इजाकार, सुहराइ, सुहदेवासि, सुख तप, शरीरनिरावाध, सुख संजम जात्रा निर्वंही
जोजी स्वामी जेजी शाता (तेवारे गुरु कहे देवगुरु पसायेंजी) महएण वंदामि
अथविधि-एवी सुख शाता पूवीने पवी एमज उत्रो शर्को वे हाथ जोडी वे पणंन
आगदे त्रागे चार अंगुदनी आंतरं अने पावदे त्रागें त्रण अंगुदी जाकेरुं आंतर
राखे एवी जिन मुजा साचवतो तथा वे हाथनी आंगुदी एकेकमां त्ररावी वे हाथ कमद
कोषने आकारे सुख आगद देइ वे हाथनी कोणीयो पेट उपर राखे; एवी मुजा साचवतो
इरिया वहियं सूत्रनो पाठ कहे ते नीचे लखीए थीए ॥

(उक्तंच-हवे इरिया वहि पडिकभ्याविना चैत्यवंदन, सजाय, सामाधिक, पोसह,
प्रतिक्रमण इत्यादिक महोटां अनुष्ठानो कांड पण नसुजे, जे माटे महा निशीथ सूत्रमां

कह्युं वेके ॥ “इरिया वहियाए अपभिकंताण एकप्पइ किपि चेइय वंदण सज्जाया वरस-
याइं कज्,” ते जणी प्रहम इरिया वहिसूत्र वखाणीए हैए) ॥ अथ इरिया वहियं तिरव्यते ॥
इजाकारेण संदिसइ जगवन्इरिया वहियं पभिकमामि (गुरु कहे पडिकमह) इहं ॥
इजामि पभिकपिऊ ॥ १ ॥ इरिया वहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ जमणजमणे ॥ ३ ॥
पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे, जसा जतिग पणग दण मडी मकडा ॥

संताणा संकमणे ॥ जेमे जीवा विराहीया ॥ एगेदिया, वेइदिया, तेइंदिया चजरंदिया,
पचिदिया ॥ ६ ॥ अत्रिइया, वत्तिया, दोसिया, संवाइया, संघटीया, परियाविया, कला-
भिया, उइविया, जाणजजाणं संकामिया, जीवियाड, ववरोगिया, तस्य भिजामि डकफं ॥
अथ तरसजत्तरी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायजित करणेणं ॥ विसोही करणेणं विसद्धी करणेणं पावाणं
कममाण, निग्वायणजए, जामि काजसणं ॥ ८ ॥ अथ अन्नह जससिएणं ॥

अन्नह जससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, ठीएणं, जंजाइएणं उइएणं, वायतिस-
णेणं, जमलिए पित्तसुजए ॥ १ ॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहिखवे संचालेहि,
सुहुमेहिदिदिठि संचालेहि ॥ २ ॥ एव माइएहि, अगारेहिं, अजगो, अविराहिज, हुज्जमे
काजसणो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, जगवंताणं, न सुकारेणं, नपारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं,
जाणेणं, मोणेणं, जाणेणं, जाणेणं अय्याणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अथ लोगस्स ॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिजपरिजिणे ॥ अरिहंते कितइस्सं,

चञ्चलीसंपि केवली ॥ १ ॥ उत्सन्न मज्जियंचवेदे, संभव मन्त्रिणं दणंच सुमइंच ॥ पञ्चमप्यहं
 सुपासं, जिणंच चंदप्यहं वेदे ॥ २ ॥ सुविदिंच पुष्कदंतं, सीअल सिज्जंस वासु पुज्जांच ॥
 विमल मणंतं च जिणं, धम्म संतिंच वेदासि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरंच मद्धिं, वेदेसुणि सुब्वयं
 नमिजिणंच ॥ वेदासि रिउनेसिं, पासं तह वध्ममाणंच ॥ ४ ॥ एवं मए अन्निशुब्धा, विट्ठिय
 रयमत्ता, पहीण जर मरणा ॥ चञ्चली संपि जिणवरा, तिज्जयरमे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय
 वेदिय महिया, जेए लोगरस उत्तमा सिन्धा आरुग्गा बोहिलानं समाहिवर सुत्तमं दिंतु
 ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयर, आइच्चेसु अहियं पयासयर ॥ सागरवर गंभीरा, सिन्धासिर्हि
 ममदि संतु ॥ ७ ॥ अथविधि-उपर दत्तया प्रमाणे “अन्नत्थ उरसिएणं कही उपर
 प्रमाणे लोगरसनो काजस्सग्गा करवो (ते “चदेसु निम्मलयर ” सुधि काजस्सग्गा करवो.
 सर्व जगोए “ चदेसु निम्मलयर ” सुधिना लोगरसत्ता काजसग्गा जाणवा. संपूर्ण
 लोगरसनो काजसग्गा ज्यां करवानो हेशे, त्यां ते प्रमाणे कहीशुं अने गुरु आदिकथी
 प्रथम शिष्यादिकोयें काजसग्गा न पारवो. जो गुरु आदिकथी काजसग्गा प्रथम संपूर्ण
 अइ रहे तो काजसग्गा ध्याने उजां थकांज धर्मध्यान चिंतवे. ज्यारे गुरु आदिक
 काजसग्गा पारे, त्यारे शिष्यादिक पारे. काजसग्गा एम सर्व जगोए समजवो. पवी

“नमो अरिहंताणो” पाठ कहिने काजसग्गा पारवो. तेम सर्व स्थानके समजवुं. पवी
 काजसग्गा पारीने प्रणट लोगरसनो पाठ संपूर्ण कहेवो पवी एक खमासणु देइने उजा
 थइने नीचे प्रमाणे पाठ कहेवो; “ इत्ताकारेण संदिसह उगावन् स्थंभील न्नामि प्रमार्जवा

मांडला करु ” त्यारे गुरु कहे ‘ करेड ’ त्यारे शिष्य कहे ‘ इडं तदिति ’ एमकहीने नीचे प्रमाणे चौवीश मांडला करावा.

अथ चौवीश मांडला ॥ ९ ॥ आधाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ९ ॥ आधाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आधाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ उपरना त्रण माफला संघारानी डावी वाजु तरफकरवा ॥ ४ ॥ आधाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आधाडे मज्जे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आधाडे दूरे आसन्ने उच्चारे पासवणेअहियासे ॥ ७ ॥ आधाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आधाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे. उपरना त्रण माडला उपासराना वारणानी डावी वाजु तरफ प्रमार्जवा ॥ १० ॥ आधाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आधाडे मज्जे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ आधाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ उपरना त्रण मांफला उपसराना वारणानी जमणी वाजु तरफ प्रमार्जवा ॥ १३ ॥ अणधाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणधाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणधाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ उपरना त्रण मांफला उपासराना वारणानी अने वारसाखनी वच्चे फावा पासाने प्रमार्जवा. ॥ १६ ॥ अणधाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणधाडे मज्जे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणधाडे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ उपरना त्रण मांडला वारणानी अने वारसाखनी वच्चे जमणी वाजु तरफ

प्रमाजर्वा ॥ १९ ॥ अण्णाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ अण्णाघाने
 मर्जे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ अण्णाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥
 उपरना त्रण मांडला द्युनीत वडीनीत परतवानी जगानी डावी बाजु तरफ प्रमाजर्वा
 ॥ १२ ॥ अण्णाघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १३ ॥ अण्णाघाडे मर्जे पासवणे
 अहियासे ॥ १४ ॥ अण्णाघाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ उपरना त्रण मांडला द्युनीत
 वडीनीत परतवानी जगानी जमणी बाजु तरफ प्रमाजर्वा. एवी रीते ते मांडला चोवीत्रा
 करवा. पवी एक खमासणु देहने " इत्राकारेण संदिसह जगवन् शरिया वहियं पडिक-
 मामि इहं" ए रीते आदेश मागिने पवी शरिया वहियं, तस्सजत्तरी, अन्नन्न जससिएणं
 कही एक लोणस्सनो काउसग्ग करवो, पवी पारिने प्रगट लोणस्स कहेवो पवी नीचे
 वेसवुं (जे जगोए चैत्यवंदनके नमुत्थुणं करवानुं आवे त्यारे ते जगोए जोग सुज्जाएज
 वेसवु) ते नीचे प्रमाणे-

जमणो टीचण नूमिपर रथापी राखवो अने डावो टीचण उत्रो राखवो पवे हाथनी
 दशे अंगुलि अन्योन्य ते मांझेमांहे अंतरीत करी ठे जिहां एवी कमलना डोडाने आकारे
 जोडीने कीधा ठे एवा वे हाथे करीने ते वेज हाथ केवा, तोके, पेट उपर कोणी ज्यां राखी
 ठे एने योग सुज्जा कहीए. ए रीते योग सुज्जाए वेसीने चैत्यवंदननो आदेश मांगे नीचे
 प्रमाणे पाठ कहेवो.-

'इत्राकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदनकरं' एम गुरु आदिक ज्यारे प्रथम आदेश

मागे, त्तारे बीजा शिष्यादिक 'इहं' एम कहे पवी गुरु आदिक वनिज प्रथम "अशोक
 दृक् सुर पुष्य दृष्टि कहीने" "इहं जयजय"तुं चैत्यवंदन कहे अथवा गुरु आदिक जे
 मुनिने आदेश आपे ते चैत्यवंदन करे (पण गुरु समक्ष गृहस्थथी प्रतिक्रमणादिमां
 चैत्यवंदन थाय नही एकदा श्रावकोना समुदायमा तो वनीज श्रावक पोते अथवा ते
 वडीज श्रावक जेने आदेश आपे चैत्यवंदन करे) (उक्तंच महानिशिष्यां पण कहुं प्रातः
 प्रतिक्रमणावसाने प्रथमा चैत्यवदना-गोचरी समये चैत्योपयोगार्थं द्वित्रिया चैत्यवं-
 दना-जोजन समये ततीया चरिम प्रत्याख्यानानंतरं चतुर्थी-संध्या प्रतिक्रमाद्यो पचमी
 स्वापवेलाया षष्ठी प्रतिबोधे सप्तमी-सामान्यतोयते रहो राज्ञमध्ये सप्त वेदा जघन्यतोऽपि
 चैत्यवदनाकार्येवाऽन्यथातिचार संनवात् महानिशीथे प्रायश्चित्त नष्टानात् संधाचार दत्तौ-
 साधु साध्वी वा त्रि. संधं चैत्यवंदनां न कुर्यात्तस्य प्रायश्चित्त इति महानिशीथे ए पाठ
 प्रवचन सारोक्षर ग्रंथमा वे) ॥

॥ अशोक दृक्ःसुर पुष्य दृष्टि ॥ दिव्यध्वनिचामरमासनं च ॥ ग्रामंफलं डंडप्रिरात
 पत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनसराणाम् ॥ १ ॥ अथ इह जयजय महाप्रभुतुं चैत्यवंदन ॥
 इहं जयजय महाप्रभु, देवाधिदेवा ॥ सर्वज्ञ श्रीवीतराग देव ॥ सुह दिवो परमेश्वर,
 सुंदर सोम सोहाव ॥ नूरि नवांतर संचित्तु, नवो, सो सविपाव ॥ जेम पाप कीया
 वालापणे, अहवा अज्ञाणे अज्ञ नवंतर, सोसोखंड जयो परमेश्वर, तुहसुह दिवं सिरि
 पासजिणेश्वर ॥ पासपसी पसाञ्चो करी, विनतडी अवधार, ॥ संसारडो विदामणो, स्वामी

आवा गमण निवार ॥ दृश्या ते सुलक्षणा, जेजिनवर पूजंत ॥ एक पुण्ये वाहिरा, सो
 परघर काम करंत ॥ कवणे वानी वावियां, कवणे गुंथ्याफूद ॥ कवण जिनवर चढावियां,
 नाव सरिसा मूल ॥ वाडीवेवो महोरियो सोवन कुंपविएण ॥ पास जिनेश्वर पूजिये,
 पंचे अंगुविएण ॥ दो थोला दो शामला, दो रत्तोपववण ॥ मरगयवणा डब्रिजिएण
 सोलस कंचनवण ॥ नियनियमानकराविया, नरहेस नयणानंद ॥ तेमो नावे वंदिया, ए
 चोवीसे जिणंद ॥ २ ॥

वहु तंद-कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं पढम संघयणिए ॥ उकोसय सत्तरि सय ॥ जिणवराण
 विहरंत लम्पद ॥ नवकोफिहिं कवलीण, कोडी सहस्स नवसाहु गम्मद संपद जिणवर वीस
 सुणिए ॥ विहु कोडिहिं वरनाणं ॥ समणद कोनि सहस्स डब्ब ॥ शुणिएसुं निच्च विहाण ॥
 जयजस्वामी जयजस्वामी रिसह सत्तुंजि जज्जित पहुनेमिजीण ॥ जयज वीर सच्चजरि मंगण
 नरु अज्जहिं सुणिए सुवय ॥ सुहरिपास ड्हड्डरिअ खंडण ॥ अवर विदेहिं तिथयरा ॥
 चिटुं दिसि विदिसि जिके वितीआणाय संपदअ, वंडंजिए सबेवि ॥ ३ ॥ सत्ताण वद
 सहस्सा, लखा उप्पन अठकोडीज ॥ पंचसया चजतीसा, तिअ लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥
 अथविधि-चैत्यवंदन कर्यावाद् पवी जिकेचि नाम तिजंनो पाठ कहेवो ते लखियें ठैयें ॥
 अथ जिकेचि नाम तिजं ॥ जिकेचिनाम तिजं, सगो पायादि तिरिय लोएमि ॥ जाइं
 जिण विंवाइं, ताइं सबाइं वंदासि ॥

अथविधि-पवी ए रीते जिकेचिनो पाठ कहीने पवी “ नसुत्थुणं अरिहंताणं ” इत्यादि

शक्रस्तवने पाठ कहेवो, ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ नसुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥ नसुत्थुणं अरि-
 दंताणं, त्रणवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिहयराणं, सयंसंभु-शाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं,
 पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवरगंध दहीणं ॥ ३ ॥ दोगुत्तमाण, दोगना-
 हाण, दोगहिआणं, दोग पइयाणं, दोगपज्जो अगाराणं ॥ अत्रयदमाणं, चरन्तु दयाणं,
 मग्गदयाणं, सरण दयाण, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं
 धम्म सार हीणं, धम्मवर चाजरंत चक्रवटीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरणाण दंसणधराणं,
 विअट्टवजमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावथाण, तिआणं तारयाणं, दु-शाणं बोदयाणं, सुत्ताणं
 मोअगाणं ॥ ८ ॥ सब्बजुणं सब्ब दरिसिणं, सिवमयव मरुअ मणंत मरुकय मधावाह मपु-
 णराविति सिद्धि गइ नामधेयं, ताणं संपत्ताणं, णमो जिणाणं, ॥ जिअ त्रयाणं ॥ ९ ॥
 (हवे डव्य अरिदंत जे श्रीतिर्थकर देवनां दवियां ते पण वांदवा योग्य वे वंदनीय वे
 जेम श्री त्रस्तेश्वरें श्रीमहावीरना जीवने मरीचिना त्रवें वांधा, तेत्रणी ते डव्य अरिदंत
 कहीए. एवा त्रिकावतीं डव्य अरिदंत जे होय, तेमने वांदवाने अर्थे पूर्वाचार्यकृत
 गाथा कहे वे.)

अथ जेअ आइआसिशा-जेअअइआसिशा जे अत्रविरसंतिणा गएकावे ॥ संपइय
 वडमाण, सब्बेतिविदेण वदामि ॥ १० ॥ (कोइ कहेशेके “ जेअ अइआसिशा ” केम कहे
 वो तेने उत्तर ए ठेके जेम “ नसुत्थुणं ” नी आदिमासर्व जगोए “ जंकिचिनामतिव्वं ”
 कहेवाय वे, ते पण पूर्वाचार्योनी रचेव वे. तेम “ जेअ अइआसिशा ” नी पाठपण पूर्वो-

चार्थो नो रचेव ते. माटे तेमाफक कहेवामां कांड पण दोष नथीजां) अथ चार स्तुतिए देव वंदनविधि ॥ प्रथम “ इरियावहि ” पन्क्तिनि पवी “ तरसजत्तरी ” तथा “ अन्नव जससिएणं ” कहीने पवी एक दोगस्सनो काजसग्ग करवो. पवी काजसग्ग पारीने, प्रगट दोगस्स कहीने एक खमासमणुं देइने (जिन मंदिरमां त्राण खमासमण दइने) योण सुजाए बेसीने प्रथम टक्कः सुर पुण्य टुट्टि ” ए काव्य कहीने “ इहं जय जय महाप्रभु ” तुं चैत्यवंदन कहीने, पवी “ जांकिचिनाम तिहं ” तथा “ नमुत्थुणं ” अने “ जेअ अइअ्या सिधा ” नो पाठ कही, पवी जग्गा अइने “ अरिदंत चेइ आणुंनो पाठ संपूर्ण कहेवो, पवी “ अन्नव जससिएणं ” नो पाठ कहेवो, पवी एक नवकारनो काजसग्ग करी, पवी गुन आदिक वनीदे काजसग्ग कर्या पवी ते गुरु आदिके जेने अदेअ आर्पव ते शिष्यादिके काज सग्ग पारी एक नवकार संपूर्ण प्रगट कहीने सारास्वरथी “कळ्याण कंदान्दिक ” नी प्रथम स्तुति कहेवी. अने बीजा सर्व जणाए काजसग्गमां रहीने स्तुति सांगववी अने स्तुति संपूर्ण थया पवी सर्व जगोए काजसग्ग पारवो. अने पवी प्रगट दोगस्स कहेवो. पवी सबलोए अरिदंत चेइआणुं करेनिकाजसग्गनो पाठ संपूर्ण कहीने पवी “ अन्नवजससिएणुंनो पाठ कहीने एक नवकारनो काजसग्ग करवो, तथा पूर्वनी पेठेज काजसग्ग पारीने बीजा स्तुति कहेवी पवी सर्वे काजसग्ग पारीने “ पुक्कर वर-दिवहे ” नो पाठ कहेवो. पवी “ सुअस्स जगवअो ” नो पाठ संपूर्ण कहीने पवी ववी पूर्वनी पेठेज एक नवकारनो काजसग्ग करवो पवी काजसग्ग पारीने बीजा स्तुति कहेवी.

पत्नी सर्वे काजसग्ना पारीने “सिखाणं बुद्धाणं” नी पांच गाथा सुधी संपूर्ण कही. पत्नी दैयावच्चनराण ” नो पाठ संपूर्ण कही, पत्नी “अन्नच्च जससिएणं” नो पाठ कहीने एक नवकारनो काजसग्ना करी, पत्नी काजसग्नापारी, प्रगट नवकार एक कहीने, चौथी स्तुति-कहेवी. पत्नी हेजा योग सुद्धाए वेशी “जंकिंचि” तथा “नमुत्थुणं” अने “जेअ अइ-आसिखा” नो पाठ संपूर्ण कहेवो. एवी रीते प्रतिक्रमणेने आदि चतुर स्तुति देव वंदनविधि संपूर्ण

(आवश्यकारंने—साधुः श्रावकश्चादौ श्रीदेवगुरुवंदनांविधते सर्व मप्यनुष्ठानं श्रीदेव गुरु वंदन विनय बहुमानादि त्रिक्रि पूर्वक सफलं त्रवति आह च विणयादीआविजादिति फलं इहपरे अलोभंमि न फलं तिवियदीणा सास्साणवतो अहिणाणि ॥ १ ॥ त्रत्तीइ जिणवराण खिज्जंतिपुब्ब संचि आकम्मा आयरि अन मुक्कारेण विज्जामंताय सिज्जंति ॥१॥ अर्थ-आवश्यक एटले प्रतिक्रमण प्रारंभमां साधु अने श्रावक पहेलां श्रीदेवगुरुनुं वंदन करे ते. केमके सधवादी क्रियाओ देवगुरुना वंदन विनय अने बहुमानादिकनी त्रिक्रिपूर्वक सफल थाय ते. अने गाथानो त्रावार्थ पण उपर सुजव ते, उपर प्रमाणेज प्रतिक्रमण गर्भ हेतुमां पण कहेल ते.) अथविधि.

ए रीते चार स्तुतिए देव वंदन करी पत्नी दैवासिक प्रतिक्रमण जाइये, ते नीचे सुजव ॥ पत्नी प्रगवान आदिने वंदन विधि ते नीचे प्रमाणे—

प्रत्येक वंदन वखते जसो अइने एक एक खमासमणुं देइने चार खमासमणा पूर्वक

वादे तेभ्या प्रमाणे-॥ अथ जगवानादि वंदन ॥ इत्थामि खमासमणो वंदितं जावणिजाए
 निसिद्धिआए जगवानने वांडं ॥ १ ॥ इत्थामि खमासमणो वंदितं जावणिजाए निसि-
 द्धिआए आचार्य महाराजने वांडं ॥ २ ॥ इत्थामि खमासमणो वंदितं जावणिजाए
 निसिद्धिआए जगध्याय महाराजने वांडं, ॥३॥ इत्थामि खमासमणो वंदितं जावणिजाए
 निसिद्धिआए सर्व साधु मुनिराजने वांडं ॥ ४ ॥

इति-अथविधि ए रीते जगवानादिने वांदी, पठी जन्ना थइने “इत्थाकारेण सुहृदेवसि”
 ए पाठे गुरुने सुख शाता पूवीने (ए रीते अर्ही गुरु वंदन विधि संपूर्ण) ॥ देव वंदन
 करीने चतुरादिक क्रमा श्रमण सहित श्रीगुरुने वांदे वे. केमके लोकामां पण राजाने
 अने प्रधानादिकोने बहुमान देवा आदिकथी पोताना इत्थित कार्यानी सिद्धि थाय वे.
 तेम अर्ही राजानी जगोए तिर्थकर जाणवा. अने प्रधानादिकनी जगोए आचार्यादि-
 कने जाणवा. कोइ कहेशेके अरिहंतने, तो प्रथम वांछा तो फरीने केम जगवानने वांदो
 वो ? तो कहेवुं के, प्रथम विशेष्यपणे वांछा अने आंही सामान्यपणे वाछा एम समजवुं ॥
 अथविधि पठी जन्ना थइ “ इत्थाकारेण संदिसह जगवन् देवसिय पक्किसणेजाउ ”
 एम कहीने पांचे अंग नमावीने, तथा जमणो हाथ रजोहरण उपर अथवा पाथरणा उपर
 स्थापीने नीचे प्रमाणे पाठ कहेवो. ॥
 अथ सबस्सविदेवसिअं तिरुवत्ते ॥ सबरसविदेवसियरस, इत्थितियरस, इत्थासियरस,
 इत्थितियरस, इत्थं तरस सित्तामिडकडं ॥ १ ॥

अथ विधि—ए प्रमाणे प्रतिक्रमणुं तावीने पवी उत्रा थइने नीचे प्रमाणे “करेमिप्रते” नो पाठ कहेवो ॥ अथ करेमि प्रते ॥ करेमिप्रते सामाहयं सधं सावजा जोग पञ्चस्कामि जाव जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएणं नकरेमिनकारवेमि, करंतापि अन्नंन समणुजाणामि तस्सप्रते पक्किमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ अथ देवसिअं आतोउं विरयते—इहामिउमि काउसणं ॥ जोमे देवसिअो अइ-अरो, कउ, काइउ, वाइउ, माणसीउ, उस्सुतो, उभमगो, अकप्पो, अकरणिजो, उजाउ, उविचित्तिउ, अणायारो अणिविअथो, असमणयाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ते, सए, सामाहए, तिएइ, गुतीणं, चउएइं कसायाणं, पंचएइं महधयाणं उएइं जीव निकयाणं-सतएइं पिंडे सणाणं, सतएइं पाणेसणाणं, अउएइं पवयण माउणं, नवएइं वंउचेर गुतीणं, दश विहे सम्मण धम्मं, समणाणं जोगाणं, जंखंडियं, जंविराहियं, तस्समिजामि उकडं ॥ १ ॥ इति ॥ अथविधि—पवी “तस्स उत्तरीनो” पाठ कहेवो पवी “अन्नउ उस, सिएणं” नो पाठ कहेवो, पवी नीचे दाखेवी गाथा एकनो अर्थ काउसणमां चिंतववो.

अथ गाथा काउसणमां चिंतववानी—सयणासणनपाण—सयणा सणन्नपाण चइयजइ सिद्धकाय उच्चारे ॥ समिइं नावणगुती, वित्ता चरणे अइअरो ॥ अर्थ—(सयणासण के०) सुवाना संथारा वेसवानां आसन वाजोउ प्रमुखनी पन्निदेहण करवा विषेः—(अन्न-पाणे केहतां) असन, पान, खादिम, अने खादिम प्रमुख गोचरीना सन्तावीस दीषटाववा विषे, (चेइय केहतां) अहो रात्रमां सात चैत्यवंदन विषे १ (जइ के०) गुरु आ-

दिक यतिनी त्रिकि वैयावह करवाविषे. (सिद्य के०) शय्या, वसति, उपाश्रय, प्रमार्जवा विषे. (काय के०) स्त्रीआदिथी शुक्रस्थानने विषे रहेवा. विषे. (उच्चारे के०) लघुनीत वडीनीती परतववानी विधिने विषे. (समिर्द के०) श्यादिक पांच समिति पाळवा विषे. (त्रावणा के०) अनित्यादिक वारत्रावना तथा पंच महाव्रतनी पचीस त्रावना त्राववाने विषे. (गुत्तीठ के०) त्राण गुत्ति पाळवा अथवा गोपववाने विषे. (वितहाके०) विपरीतपणे. (चरणेय के०) आचरवा थकी अथवा अंगीकार करवा थकी. (अर्ह्यारो के०) अतिचार थयो दोय एटवे ज्ञानादिक आत्मगुण जेथी मदीन थाय ते अतिचारथी माहारा आत्मनाज ज्ञानादिक जे गुण मदीन थया दोय ते मिथ्या थालं. ॥

अथ विधि-अर्दी पहेलुं सामायिक नामनुं आवाश्यक संपूर्ण थयुं. आ आवाश्यक चारि-त्रनी शुद्धिने माटे वे. पवी काजसग्ण पारिने त्रगट “लोगस्स” कहेवो अर्दीं चौविसजा नामनुं बीजुं आवाश्यक संपूर्ण थयुं. ए आवाश्यक दर्शनेशुद्धिमाटे वे. पवी एक खमासमणुं दर्शने तथा उत्रडक आसने बेसीने नीचे प्रमाणे पाठ कहेवो,-“इवाकारेण संदिसह त्रगवान् त्रीजा आवाश्यक त्राणी सुहपत्ति पडिवेहुं” एम कही पञ्चास वोटो सहित हेवा उत्रडक आसने बेसीने सुहपत्तिनी पडिवेहणा करवी ॥ इति ॥ अथ सुहपत्ति तथा शरीर पडी-वेहणना पञ्चास वोट ॥ सुतत्र तत्रदिति हृदयमां थरं ॥ १ ॥ समकित मोहिनी ॥ २ ॥ मिश्र मोहिनी ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व मोहिनी परिहरं ॥ ४ ॥ कामराग ॥ ५ ॥ स्नेहराग ॥ ६ ॥ जट्टि-राग परिहरं ॥ ७ ॥ सुदेव ॥ ८ ॥ सुगुरु ॥ ९ ॥ सुधर्म आदरं ॥ १० ॥ कुदेव ॥ ११ ॥ कुगुरु ॥ १२ ॥

कुधर्म परिहरुं ॥ १३ ॥ ज्ञान ॥ १४ ॥ दर्शन ॥ १५ ॥ चारित्र्य आदरुं ॥ १६ ॥ ज्ञान
 विराधना ॥ १७ ॥ दर्शन विराधना ॥ १८ ॥ चारित्र्य विराधना परिहरुं ॥ १९ ॥ मनोगुप्ति
 ॥ २० ॥ वचन गुप्ति ॥ २१ ॥ काय गुप्ति आदरुं ॥ २२ ॥ मनोदंड ॥ २३ ॥ वचनदंड ॥ २४ ॥
 कायदंड परिहरु ॥ २५ ॥ हास्य ॥ २६ ॥ रति ॥ २७ ॥ अरति परिहरुं ॥ २८ ॥ सोगा ॥ २९ ॥
 जय ॥ ३० ॥ झुगंछा परिहरुं ॥ ३१ ॥ कृष्णलेश्या ॥ ३२ ॥ नीललेश्या ॥ ३३ ॥
 कापोल्लेश्या परिहरुं ॥ ३४ ॥ शृङ्गारव ॥ ३५ ॥ रसगारव ॥ ३६ ॥ श्रोतानारव परिहरु
 ॥ ३७ ॥ मायासह ॥ ३८ ॥ नियाणसह ॥ ३९ ॥ मित्रादंसणसह परिहरु ॥ ४० ॥
 क्रोध ॥ ४१ ॥ मान परिहरुं ॥ ४२ ॥ माया ॥ ४३ ॥ लोत्र परिहरु ॥ ४४ ॥ पृथ्वीकाय
 विराधना ॥ ४५ ॥ अण्य कायविराधना ॥ ४६ ॥ तेजकाय विराधना ॥ ४७ ॥ वाजकाय
 विराधना ॥ ४८ ॥ वनस्पतिकाय विराधना ॥ ४९ ॥ असकाय विराधना ॥ ५० ॥ दुर्देहोयते
 सविदुं मन, वचन, काययें करी मिच्छामि उकरुं ॥ इति ॥ अर्थ, तिहां प्रथम सुदृपतीना
 पञ्चीस पद्विदेहण कर्हेते तेमां (सुतलततदिठी हृदयमां धरुके०) सुत्र अने अर्थ
 एतदे सुदृपत्तिने पहेले पासे सूत्र अनेवीजे पासे अर्थ तेतुं तत्त्व सम्यक प्रकारे हृदयने
 विषेधरुं एम चितवी सुदृपत्तिने उखेदीने बहुपासां सर्वत्र जट्टिष्करीने जीवां, ते प्रथम
 जट्टिष्करीदेहणा जाणवी. ॥ १ ॥ ते वारपवी सुदृपत्ति फेरवी वेदाथेसाहीने नचाववा रूप
 त्रणत्रण उंचा पखोत्र एकेका हाथेकरीयें. तिहावेहाथे करतां (समकित मोहिनी ॥ २ ॥
 मिश्र मोहिनी ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व मोहिनी परिहरुंके०) दर्शन मोहनीपहुं त्रिक एतदे समकित

मोहिनी, मिश्र मोहिनी अने मिथ्यात्व मोहिनी, ए त्रिक परिहरुं एटले त्याग करुं, तथा जमणे
 हाथे खंखेरतां (१ कामरागश्चेत्तेहराग ३ जट्टिराग परिहरुं के०) कामराग, स्नेहराग अने जट्टि-
 राग ए त्रण परिहरुं एटले त्याग करुं. ए व खंखेरवा रूप व पडिवेहणा थर्ड. पवी सुहृपत्तिने एक पड
 जट्टि पडिवेहणा मेळवीए ते वारे सर्व मळी सात पडिवेहणा थर्ड. पवी सुहृपत्तिने एक पड
 वादीने सुहृपत्तिना त्रण वधूटक करी जमणा हाथनी आंगतीना आंतरानी वचमां त्ररावीने
 हाथनी उपर त्रण अखोडा अने त्रण पखोडा करीए. तिहां त्रणवार सुहृपत्तिने जंजी राखी
 हाथने आणवगाफते खंखेरीए. ते त्रण अखोभा कहेवाय. पवी त्रणवार प्रमार्जना रूप पस-
 दीमांथी सुहृपत्तिने धसी कदाभिये ते त्रण पखोडा कहेवाय. एम एकएकने अंतरे त्रणत्रण
 वार अखोडा अने त्रणत्रण वार पखोडा करीए, ते वारे सर्व मळी नव अखोभा अने नव
 पखोडा एम अदार पडिवेहणा थाय, अने व त्रिक थाय. तेमां शुं शुं चिंतविये, ते कहेवे.
 प्रथम (१ सुदेव १ सुगुरु ३ सुधर्म आदरुं के०) देवादिक तत्व त्रिक एटले देव
 तत्व, गुरु तत्व अने धर्म तत्व ए त्रण तत्व आदरुं एटले अंगीकार करुं. ए त्रण
 अखोभा हाथनी उपर हाथने आणवगावे त्रणवार खंखेरीए, तेमज वदी (१ कुदेव १
 कुगुरु ३ कुधर्म परिहरुं के०) कुदेवादिक त्रिक एटले कुदेव, कुगुरु, अने कुधर्म ए त्रण
 परिहरुं एटले त्याग करुं त्रण पखोडा हाथउपर प्रमाज्जावा, एटले हाथउपर धसी कदाडवा
 ॥१॥ (१ ज्ञान १ दर्शन ३ चारित्र आदरुं के०) ज्ञानादिक त्रिक एटले ज्ञान दर्शन अने
 चारित्र ए त्रणने आदरुं एटले अंगीकार करुं. ए त्रण अखोडा हाथनी उपर त्रणवार खंखे-

रीषं, वळी (१ ज्ञान विराधना २ दर्शन विराधना ३ चारित्रविराधना परिहरूं के०) तेजज्ञान, दर्शन, अने चारित्रनी ए त्रणनी विराधना परिहरूं एटवे त्याग करूं एम चितवतां त्रण पखोना करीषं, एटवे द्वाधमाधी सुहृपत्ति त्रणवार घसी कहाडीषं, अर्थात् पूजीषं, तथा त्रीजीवारना त्रण अखोनामा (१ मनोगुति, २ वचनगुति, ३ कायगुति आदरूं, के०) त्रणगुति ते मनोगुति, वचनगुति अने कायगुति, ए त्रण गुति आदरूं. एटवे अंगीकार- करूं एम चितवता द्वाधजपर त्रणवार सुहृपत्तिने खंखेरीषं, तथा त्रीजा त्रण अखोनामां (१ मनोदंभ २ वचनदंभ ३ कायदंभ परिहरूं के०) दंभ त्रिकं ते मनोदंभ, वचनदंभ, अने कायदंभ ए त्रण परिहरूं एटवे त्याग करूं अर्थात् ताडुं. एम चितवतां त्रणवार सुहृपत्तिने द्वाधमाधी घसी कहाडीषे ॥ एरीते सुदेवादिक त्रिकधी माडीने त्रण त्रिक मदी नव अ- खोडा थाय, ते आदरवा अने त्रण मदी नव पखोडा थाय, ते ठाभवा. एम नव अखोना अने नव पखोडा मदी अद्वार पन्निदेहणा सुहृपत्तिनी थद, तेनी साथे प्रथम कहेदी सात पन्निदेहणा मेळवीषं, ते वारे सर्व मळी पच्चीस पन्निदेहणा सुहृपत्तिनी द्वाध जपर थाय. तेर सुखांनंतक एटवे सुहृपत्तिनी पच्चीस पन्निदेहणा कर्ही. ते पूर्वोक्त अनुक्रमे मनमाहे चितववी ॥ २ ॥ हवे शरीरनी पच्चीस पन्निदेहणा कया कया अंगने विषे केटवी केटवी करवी ? अने त्यां शुं शुं चितववु ? ते कहेवं.—प्रथम (१ दास्य २ रति ३ अरति परिहरूं के०) भूजानुं युगल एटवे वे युजाओने पुजतो एटवे पन्निदेहण करतो थको शुं चितवे ? ते कहेवं. प्रथम नावा द्वाधनी युजा त्रणवार पुंजीषं तिहां दास्य, रति,

अने अरति, ए त्रणने परिहरुं, एम चिंतवीए पती जमणा हाथनी मुजा त्रणवार पूंजीयें
 तिहां (१ सोग, २ त्रय, ३ दुर्गांच्वा परिहरुं के०) त्रय, शोक अने डगांवा ए त्रणने परिहरुं
 एटले त्याग करूं एम चितवीयें. ए त पडिदेहण वे त्रुजाओनी थड. हवे मसत्के त्रण
 वार पूंजे तिहां (१ कृष्णदेश्या २ नील देश्या ३ कापौत देश्या परिहरुं के०) अप-
 शस्त एटले माठी एवी जे कृष्ण, नील अने कापौत ए त्रण देश्याओ वे, तेने परिहरुं
 एटले वाहुं एम चिंतवे. एवं नव थर्द. ॥ ३ ॥ पवी मुख तेने त्रण वार पूंजे. तिहां (१ कृष्
 गारव २ रसगारव ३ शातगारव परिहरुं के०) त्रण गारव जे कृष्णगारव, रसगारव,
 अने शातगारव तेने परिहरुं एटले त्याग करूं, एम चिंतवे तथा वली हृदय तेने त्रणवार
 पूंजे तिहां (१ मायासहज २ नियाणसहज ३ मिथ्यादंसणसहज परिहरुं के०) माया
 शब्द, नियाणशब्द, अने मिथ्यात्वशब्द, एत्रण परिहरुं एटले त्याग करूं, एम चितवी
 अने पूंजे वे वाजुना वे पासानी पक्रिदेहणा करतो एकेका पासयें वेवेवार पूंजतो कहे
 (१ क्रोध २ मान परिहरुं के०) क्रोध अने मान ए वे कषाय परिहरुं एटले त्याग करूं.
 एम चिंतवीने डावी कोरना पासाने पूंजवो वली (१ माया, २ दोष परिहरुं के०) माया अने
 दोष ए वे कषायने परिहरुं एटले त्याग करूं. एम चिंतवतो जमणी कोरना पासाने
 पूंजवो. तथा (१ पृथ्वीकायविराधना २ अप्पकायविराधना ३ तेजकाय विराधना
 परिहरुं के०) पृथ्वीकाय, अप्पकाय अने तेजकाय ए त्रण कायनी विराधना परिहरुं
 एटले त्याग करूं, एम चिंतवीने डावा पगने पूंजे. अने वली (१ वाजकायविराधना २

वनस्पतिकायविराधना ३ त्रसकायविराधना परिहरं के०) वायुकाय, वनस्पतिकाय, अग्ने त्रसकाय, ए त्रण कायनी विराधना परिहरं एटले ठाडुंतुं, एम चिंतवीने जमणो पण पूंजे. ए पच्चीस बोल शरीरनी पच्चीस पन्डिहण करतां मनसां एम चिंतवे. यथापि, ए पन्डिहण जे ठे, तेनो जीवरक्षा करवानो हेतु नव्य जीवनेठे, एवी श्री जिनाज्ञा ठे, तथापि ए पन्डिहण ते मनरुप माकतुं तेने नियंत्रवाने अर्थे ठे. एरीते पूर्वाचार्यो कही गयाठे ॥ ५ ॥ ए पच्चीश पन्डिहण शरीरनी कही तेमांथी श्राविकानुं मस्तक टांक्युं होय, माटे माथानी त्रण अग्ने हृदय टाक्युं होय, माटे हृदयनी त्रण अग्ने व पासां टांक्युं होय, माटे वे पासानी चार, एवं दश पन्डिहण श्राविकाने न होय, शेष पद्मर होय, अग्ने साध्वीतुं मस्तक उधाडुं होय, माटे तेने मस्तकनी त्रण होय, शेष हृदयनी तथा वे पासानी सात न होय, ते वारे अद्धार पन्डिहण होय, ए पन्डिहणाधिकार थयो. ॥ अथविधि ॥ पवी एक खमासणुं देख्ने जना थड्ने नीचे प्रमाणे पाठ कर्हेवो. “इच्छाकारेण संदिसह जगवान् त्रीजा अ्यावरुचक त्रणी वादणां देऊं” एम आज्ञा मागीने वे वांदणा देवां.

हवे वांदवाने जजमाव थएवो एवो शिष्य विधि पूर्वक पूर्वोक्त सुहपत्ति पनीवेही, वली पोतानुं शरीर पन्डिहोही, पणठे चढावेला धनुष्यनी परं लगारेक अवनतकाय थको एटले लगारेक काय नमावतो, वेदाथे उंधो सुहपत्ति ग्रहण करीने ललाट कर संपुट जोडी, यथा जातसुजा एटले जन्मता बालकनी जेवी सुजा करीने अथवा दीक्षा अवसर जेम चोलपट मात्र उपकरण रजोहरणादिक युक्त एवी सुजा करीने जिनसुजायें पण

राखीने अथग्रहश्री वाहेर रह्यो शक्यो सुखे नीचे दख्या प्रमाणे वंदनक सूत्रनो पाठ करे.
 ते आ प्रमाणे -॥ अथसुरुरु वांदणा प्रारंभ॥इच्छामि, स्वमासमणो, वांदिउं, जावणिज्जाए
 निसीद्विआए ॥१॥ अणुजाणह, मे, मिजग्गहं ॥२॥ निसिही, अहो, कायं, कायसंफासं, स्वम
 णिज्जो, ने, किलामो, अण्णकिदंताणं, बहु सुत्रेण, ने दिवसो, वइकंतो, ॥३॥ जत्ता, ने, ॥
 जवणिधं च, ने, ॥४॥ स्वामेमि, स्वमासमणो देवसियं, वइकम्मं, ॥५॥ आवसिआए, पणिकमा-
 मि, स्वमासमणो, देवसिआए, आसायणाए, तितीसन्नयरए, जंकिंचि, मिच्छाए मण्डक-
 डाए, वयडकभाए, कायडकडाए, कोहाए, माणाए मायाए, दोत्राए, सब्बकादीआए, सब्ब
 मिच्छोवयाराए, सब्बधम्ममाइकमणाए, आसायणाए, जो मे देवसिज, अइअरोकअो, तरस
 खमासमणो, पणिकमामि, निंदामि, गरिहामि, अण्णण वोसिरामि ॥१५॥ इति ॥ अथवि-
 धि-देरक ठेकाणे वादणा देती वखते बीजी वारना वांदणामां “आवसिआए” ए पद क-
 हेवुं नहि, केमके पहेवीवारना वांदणामां “आवसिआए” ए पद कहीने गुरु अथग्रहमां
 आववानो आदेश मागेवोले. अने बीजीवारना वांदणा पवी तो फरीने वांदणा देवा माटे
 गुरुना अथग्रहमां ते वखते आववुं नथी, माटे बीजीवारना वांदणाना पाठमां “आवसि-
 आए” ए पद कहेवुं नहि माटे त्या अथग्रुं अंग नमवीने जत्रा शकांज बीजीवारने वांदणे
 “पणिकमामि स्वमासमणो” श्री मानीने संपूर्ण कहेवो एम गुरु समीपे वांदणा बेवार
 दीजे, ए वादणा देतां ज्ञानादि त्रण निर्मद थाय. ए त्रीजुं आवश्यक पूरुं थ्यु. (अर्ही वांदणा-
 नामनुं त्रीजुं आवश्यक थ्युं. ए आवश्यक ज्ञानादिक त्रिकनी शुद्धि माटे वे) एम वे

वाद्गणा दीधा पती पोतानं स्थानकं उत्रां थकांज नीचे प्रमाणे पाठ कहेवो " इच्छा
कारेण सदिसह र्नागवन् देवसिद्धं आलोडं " त्पारे गुरु कहे " आलोवेह " त्पारे
शिव्य कहे " इच्छं आलोएमी " एम कही " जो मे देवसिद्धो अइअरोकज " नो
संपूर्णं पाठ कहेवो पती "वयसमण धम्मं" ए आदि गाथा पांच कहेवी ॥ अथ दैवसिक
आलोयणानी पांच गाथा ॥ वयसमणधम्मसंयम, वेयावच्च च वंज गुत्तीज, नाणा इत्तियं
तवको, इ निग्गादाइ चरण मेयं ॥ १ ॥ पिंन विसोही समई, चावण पफिमाय इंदिय
निरोही ॥ पनीवेहण गुत्तिज, अत्तिग्गाहो चेवकरणं तु ॥ २ ॥ सयणा सणत्तपाणे, चेइय
जइ सिक्ककाय उच्चारे ॥ समिई चावण गुत्ती, वित्ता चरणे अइअरो ॥ ३ ॥ गोससु-
हणंतकाए, आलोइअ देसिएय अइअरे ॥ सर्वे समाण इत्ता, हियए दोसे ठविज्जाहि
॥ ४ ॥ काउं हियए दोसे, जइ कम्मं जावता न पारेइ ॥ ताव सुहमाणपाणु, धम्मं सुक्कं च
काइज्जा ॥ ५ ॥ अथविधि- एरीते पाच गाथा कहीने पती "गमणा गमण" नो पाठ संपूर्ण
कहेवो ॥ अथ गमणा गमण-॥ मारगने विषे जातां आवतां, पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेज-
काय, वाजकाय, वनस्पतिकाय त्रसकाय, नीलश्रव, मटी, पाणी, कण, कपाशीया, स्त्री
आदिक तणो संबइ हुअो होय, पांच सुमति त्रणगुत्ति, ए आठ प्रवचन माता, साधु
तणे धर्मे रुडी रीते पावी नही, खंडन विराधना थइ होय, ते सवि हुं, मने वचने कायाए
करी मिच्छामि इक्कडं ॥ अथविधि- पती "सव्वससवियस्स, " नो पाठ कहेवो. पती हेठे
वीर आसने वेसवुं, ते आप्रमाणे- (डवो दींचण नूमीपरथी कांडक उचो राखवो अथवा

त्रमिथी अथर राखवानी शक्ति न होय, तो त्रूमीपरज - राखवो. अत्रने जमणो ढींचण
 त्रुत्रो राखवो. एवी रीते वीरासनथी वेसीने) पवी एक नवकार कहीने, पवी “करे मित्रते” नो
 पाठ संपूर्ण कहेवो. पवी चत्तारि मंगलंतो पाठ कहेवो. ते नीचे प्रमाणे—॥ अथ चत्तारि-
 मंगलं ॥ चत्तारिमंगलं, अरिहंता मंगलं, सिंश मंगलं, साहु मंगलं, केवलपणत्तो धम्मो
 मंगलं ॥ १ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिंशलोगुत्तमा, साहुलोगुत्तमा,
 केवलपणत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारि सरणं पवजामि, अरिहंता सरणं पव-
 जामि, सिंशसरणं पवजामि, साहुसरणं पवजामि, केवलपणत्तंधम्मं सरणं पवजामि,
 ॥ ३ ॥ अथविधि—एरीते “चत्तारि मंगलं” कहीने, पवी “इच्चामि पडिकमिडं जोमे
 देवसिञ्चो,” एपाठ संपूर्ण कहीने, पवी “इच्च मि पडिकमिडं इरियावहियाए”
 ए पाठ संपूर्ण कहेवो. “पवी इच्चामि पडिकमिडं पणाम सिजाए,” त्यांथी मांभीने
 “जाव वंदांमि जिण चोवीसं” सुधि संपूर्ण कहेवो. ते श्रमण सूत्र नीचे प्रमाणे ॥
 अथश्री श्रमण सूत्रं प्रारब्धते ॥ इच्चामि पडिकमिडं, पणामसिजाए, निगाम सिजाए,
 संशारा जवडणाए, परियडणाए, आउडणाए ॥ पसारणाए, उप्पइया संवडणाए,
 कइए, ककराइए वीए जनाइए, आमोसे, ससरखावोसे, आउलमाउलाए,
 सुअणवत्तिआए, इच्चिविप्परियासिआए, दिठि विप्परियासिआए, मण विप्परिया-
 सिआए, पाणत्रोयण विप्परियासिआए, जोमे देवसिञ्चो अइआरो कअो तरस
 मिच्छामिडकडं ॥ पडिकमामि गोअरचरिआए, त्रिखायरिआए, उघाडकवाड्ढयाणणाए,

साणावश्वा दारसंघट्टणाए, मंडिअपाहुमिआए, वविपाहुडिआए, ठवणा पाहुडिआए, सांकिए सहस्सनागारि, अन्नसणाए, पाणसणाय, पाणनोअणाय, वीअनोअणाय, हरि-
यनोअणाय, पत्ताकमिआए, पुराकमिआए, अदिठहडाए, अदगासंसवहडाए, रयसंसवह-
डाए, पारिसाडणिआए, पारिठावणीआए, ओदासणत्रिखाए, जंजगमेण उप्पायणसणाए,
अपरिसुद्धं पडिगहिअं, परित्तुत्तं वाजं न परिठविअं तरसमिच्चासि डुकडं, पडिकमामि
चाउकाव सिजायस्स, अकरणआए, उन्नओकावं, नंभोगरणरस अप्पडिदेहणाए, डप्प-
निदेहणाए, अप्पमज्जाणाए, डप्पमज्जाणाए, अइकमे, वइकमे, अइअरे, अणायारे, जोमे
देवसिअो अइआरो कअो, तस्स मिच्चासि डुकनं ॥ पडिकमामि एगविहे, अंसंजमे,
पडिकमामि दोहिं, वंधणेहिं, रागबंधणेणं, दोस वधणेणं. पन्निक्कमामि तिहि दडेहि, मण-
दभेणं, वयदंभेणं, कायदंडेणं, पडिकमामि तिहिं शुत्तीहिं, मणशुत्तीए, वयशुत्तीए, कायशु-
त्तिए, पडिकमामि तिहिंसद्धेहिं, मायासद्धेणं, नियाणसद्धेणं, मितादंसण सद्धेणं ॥ पडि-
क्कमामि तिहिं गारवेहि, इड्डिगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेणं, पडिकमामि तिहिं विराह-
णाहिं, नाणविराहणाए, दंसणविराहणाए, चारित्तविराहणाए, पडिकमामि चजहिं,
कसाएहिं कोहकसाएणं, माणकसाएण, मायाकसाएण, दोहकसाएणं, पडिकमामि चजहिं
सन्नाहिं, आहारसन्नाए, त्रयसन्नाए, मेहुणसन्नाए, परिग्गहसन्नाए ॥ पडिकमामि चजहिं
विग्गहाहिं, इच्चीकहाए, त्तक्कहाए, देसकहाए, रायकहाए ॥ पडिकमामि, चजहिं ज्जाणेहिं,
अट्टेण ज्जाणेणं रुहेणं ज्जाणेणं, धम्मंणंज्जाणेणं, सुक्केणंज्जाणेणं ॥ पडिकमामि पंचहिं किरि-

आदि, काश्याए, अहिगरणिआए, पाउसिआए, पारितावणिआए, पाणाइवायकिरिआए, ॥
 पडिक्रमामि पंचदिं कामगुणेदिं, सदेणं, स्वेणं, रसेणं, गंधेणं, फासेणं, ॥ पडिक्रमामि पंचदिं
 महद्वएदिं, पाणाइ वायाउ वेरमणं, सुसावायाउ वेरमणं, अदिआदाणाउ वेरमणं, मेहुणाउ
 वेरमणं, परिग्हाउ वेरमणं ॥ पडिक्रमामि पंचदिं, समिइदिं, इतियासमिए, प्राधासमिए, एस्-
 णा समिए, आयाण नंन मत्त निवेवणासमिए, उच्चार पासवण खेव संघाण जव पारिवा
 वणिआ समिए, ॥ पडिक्रमामि ठदिं जीव निकाएदि, पुढविकाएणं, आउकाएणं, तेउकाएणं,
 वाउकाएणं, वणस्सइ काएणं, तसकाएणं, ॥ पडिक्रमामि ठदिं देसादिं किह्वेसाए, नीव
 देसाए, काउवेसाए, तेउवेसाए, पउमवेसाए, सुकवेसाय, ॥ पडिक्रमामि सत्तदिं, नयताणेदिं ॥
 अउदिं मयताणेदिं, ॥ नवादि वंचचेर गुत्तीदिं, दसविदे समणधम्मं ॥ इकारसादि जवासग
 पडिमादिं, वारसादिं, त्रिखुवुपडिमादि, ॥ तेरसादिं किरिआताणेदिं, ॥ चउदसदिं, नूय
 गामेदि, पन्नरसादि, परमाहम्मिणदिं, ॥ सोलसदि गाहासोलसएदि, ॥ सतरसविदे असंज-
 मे, अठारस विदे अबंने, ॥ एगुणवीसाए णायज्जयणेदि, वीसाए असमाहि ताणेदि, ॥ एग-
 वीसाए संबवेदिं, वावीसाए परीसहेदिं, तेवीसाए सुअगडज्जयणेदि, चउवीसाए अरिहं-
 तेदि, पचवीसाए प्रावणादि, ठवीसाए दसाकप्प ववहराणं, उहेसण कावेदिं, सत्तावीसाए
 अणगार गुणेदिं, ॥ अउवीसाए आथार पकप्पेदिं, एगुणतीसाए पावसुअप्प संगेदि, ॥ तीसाए
 मोहणी ताणेदिं, ॥ इगतीसाए सिखाइ गुणेदिं, ॥ वत्तीसाए जोगसंगेदिं, ॥ तित्तीसाए, आसा-
 यणाए, अरिहंताणं आसायणाए, सिखाणं आसायणाए, आयरियाणं आसायणाए, उव-

साणावश्वा दारसंघद्वयाए, मंडिअपाट्टुमिअए, वलिपाट्टुमिअए, ठवणा पाट्टुमिअए, संकिए सदस्सगारि, अद्देसणाए, पाणेसणाय, पाणत्रोअणाय, वीअत्रोअणाए, हरि-
यत्रोअणाए, पव्वाकम्मिअए, पुराकम्मिअए, अट्टिवह्वार, अट्टासंसठद्वार, रयस्संसठ-
द्वार पारिसाडणिअए, पारिवावणीअए, ओदासणनिखाए, जंजगमेण उप्पायणेसणाए,
अपरिसुद्धं पडिगाहिअं, परिसुत्तं वाजं न परितविअं तस्समिच्चासि ड्कदं, पडिकमामि
चाजकदं सिज्जायस्स, अकरणअए, उन्नओकादं, तंभोवगरणस्स अप्पडिवेद्वणाए, डप्प-
मिदेवहणाए, अप्पमज्जाणाए, डप्पमज्जाणाए, अइक्कमे, वइक्कमे, अइअर, अणायारे, जोमे
देवसिअो अइअरो कओ, तस्स मिच्चासि ड्कदं ॥ पडिकमामि एणविदे, अस्संजमे,
पडिकमामि दोहिं, वंधणेहिं, रागबंधणेणं, दोस वंधणेण, पडिकमामि तिहिं द्दोहिं, मण-
दंभेणं, वयदंभेणं, कायदंभेणं, पडिकमामि तिहिं गुत्तीहि, मणगुत्तीए, वयगुत्तीए, कायगु-
त्तीए, पडिकमामि तिहिंसद्वेहिं, मायासद्वेण, नियाणसद्वेणं, मिज्जादंसण सद्वेणं ॥ पडि-
कमामि तिहिं गारवेहि, इट्ठिगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेण, पडिकमामि तिहिं विराह-
णाहिं, नाणविराहणाए, दंसणविराहणाए, चारित्तविराहणाए, पडिकमामि चउहिं,
कसाएहिं कोहकसाएणं, माणकसाएण, मायाकसाएणं, वोहकसाएणं, पडिकमामि चउहिं
सन्नाहिं, आहारसन्नाए, नयसन्नाए, मेहुणसन्नाए, परिग्गहसन्नाए ॥ पडिकमामि चउहिं
विग्गहाहिं, इच्चीकहाए, नत्तकहाए, देसकहाए, रायकहाए ॥ पडिकमामि, चउहिं ज्जाणेहि,
अइए ज्जाणेणं रुहेणं ज्जाणेणं, धम्मणंज्जाणेणं, सुक्केणंज्जाणेणं ॥ पडिकमामि पंचहिं किरि-

आदि, काइयाए, अहिगरणिआए, पाजसिआए, पारितावणिआए, पाणाइवायकिरिआए, ॥
 पडिक्रमामि पंचादि कामगुणेहि, सहेणं, स्वेषं, रसेणं, गंधेणं, फासेणं, ॥ पडिक्रमामि पंचादि
 महबएहि, पाणाइ वायाजं वेरमण, सुसावायाजं वेरमणं, अदिनादाणाजं वेरमणं, भेदुणाजं
 वेरमणं, परिगाहाजं वेरमणं ॥ पडिक्रमामि पंचादि, समिइहि, इतियासामिए, नावासामिए, एस-
 णा समिए, आयाण संभ मत्त निखेवणासामिए, उच्चार पासवण खेव संधाण जव पारिता
 वणिआ समिए, ॥ पडिक्रमामि ठादिजीवनिकाएहि, पुढविकाएणं, आउकाएणं, तेउकाएणं,
 वाउकाएण, वणस्सइ काएणं, तसकाएणं, ॥ पडिक्रमामि ठादि वेसादिं किह्वेसाए, नीव
 वेसाए, काउवेसाए, तेउवेसाए, पउमवेसाए, सुक्कवेसाय, ॥ पडिक्रमामि सत्तादिं, त्रयवाणेहिं ॥
 अउहिं मयवाणेहिं, ॥ नवहि वंनचेर गुत्तीहि, दसविहे समणधम्म ॥ इक्कारसाहि उवासग
 पडिमादिं, वारसहि, त्रिखुवपडिमाहि, ॥ तेरसादिं किरिआवाणेहि, ॥ चउदसदिं, नूय
 नामेहि, पन्नरसहि, परमाइम्मिएहि, ॥ सोउसहि गाहासोउसएहिं, ॥ सतरसविहे असंज-
 से, अउरस विहे अवंचे, ॥ एगुणवीसाए णायज्जयणेहि, वीसाए असमाहि ठाणेहि, ॥ एग-
 वीसाए संबवेहि, वावीसाए परीसहेहिं, तेवीसाए सुअगडज्जयणेहि, चउवीसाए अरिहं-
 तेहि, पचवीसाए नावणाहि, ववीसाए दसाकप्प ववहाराणं, उहेसण कावेहिं, सत्तावीसाए
 अणभार गुणेहिं, ॥ अउवावीसाए आथार पकप्पेहिं, एगुणतीसाए पावसुअप्प संगेहिं, ॥ तीसाए
 मोहणी ठाणेहिं, ॥ इगतीसाए सिक्काइ गुणेहिं, ॥ वत्तीसाए जोगसंगेहिं, ॥ त्तीसाए, आसा-
 यणाए, अरिहंताणं आसायणाए, सिक्काणं आसायणाए, आयरियाणं आसायणाए, उव-

उक्त्याणं आसायणान्, साह्रूणं आसायणान्, साह्रूणीणं आसायणान्, सावयाणं आसा-
यणान्, सावियाणं आसायणान्, देवाणं आसायणान्, देवीणं आसायणान्, इहलोगस्स
आसायणान्, परलोगस्स आसायणान्, केवलपणत्तस्स धम्मस्स आसायणान्, सर्व-
मणु आसुरस्स लोगस्स आसायणान्, सब्बपाण नूअजीव सत्ताणं आसायणान्, कावस्स
आसायणान्, सुअस्स आसायणान्, सुयदेवीयाणं आसायणान्, वायणा रिअस्स आसा-
यणान्, जं वाइरुं, बुच्चामेदियं, हिएख्वरिअ, अच्चख्वरिअं, पयहीणं, विणयहीणं,
जोगहीणं, घोसहीणं, सुतुदित्तं, उटुपडित्तियं, अकादे कडं सज्जाडं, कादे न कडं सज्जाडं,
असज्जाए सज्जाअं, सज्जाए न सज्जाइयं, तस्स मिच्चामि उक्कडं. ॥ एमो चउवीसाए,
तिहयराणं, उसत्ताइ महावीर पज्जावसाणाण, इणमेव निगंधं पावयणं, सच्चं, अणुत्तरं,
केवलियं, पडिपुणं, नेआजयं, संसुखं, सद्धगतणं, सिद्धिमग्गं, सुत्तिमग्गं, निज्जाण मग्गं,
निवाण मग्गं, अवितहमविसंधि, सब्बद्धख्वपपहीणमग्गं, इच्चंठिआजीवा सिच्चंति,
बुज्जति, सुच्चंति, परिनिव्वायंति, सब्ब इख्खाणमंतं, करति ॥ तं धम्मं सद्धामि, पत्तियामि,
रोएमि, फासेमि, पावेमि, अणुपावेमि, तंधम्मं सद्धत्तो, पत्तियंतो, रोयंतो, फासंतो, पावंतो,
अणुपावंतो, तस्सधम्मस्स, केवलीपन्नत्तस्स, अश्शुठिठिमि आराहणाए, विरिठिमि विरा-
हणाए, असंजमं परिआणामि, संजमं उवसपज्जामि, अवंतं परिआणामि, वंतं उवसं-
द्यामि, ॥ अकपं परिआणामि, कपं उवसंपज्जामि, अणाणं परिआणामि, नाणं उवसं-
पद्यामि, अकिरिअं परिआणामि, किरिअं उवसंपज्जामि, मिउतं परिआणामि, सम्मत्तं

उवसंपज्जामि, ॥ अर्वादिं परिआणामि, वोदिं उवसंपज्जामि अमग्गं परिआणामि,
 मग्गं उवसज्जामि ॥ जंसंजरामि, जं च न संजरामि, जं पक्कमामि, जं च न पक्कमामि,
 तस्ससन्नस्स देवासिअस्स, ॥ अइआरस्स, पडिक्कमामि ॥ समणोहं, संजय विरय पडिहय
 पच्चरत्तवाय पावकम्मो, अनियाणो, दिविसंपन्नो, मायामोसविवाज्जिउं अट्टाइज्जेसु दीवससु-
 हेसु, पन्नरससुकम्मन्नमीसु ॥ जावंति केविसाहु, रयहरण शुच्च पडिग्गहधारा, ॥ १ ॥
 पच महद्वयधारा, अठारसहस्स सीदंगधारा, ॥ अरयथायार चरिता, ते सब्बे सिरसा
 मणसा मत्तण वंदामि ॥ २ ॥ खामेमि सब्बजीवे, सब्बेजीवा खमंतुमे, ॥ मितीमेसब्बन्नएसु,
 वेर मज्जन केणइ ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ, गरहिअ, डुग्गंत्विअंसम्मं ॥ तिविहेण
 पडिक्कतो, वंदामि जिणे चउबीसं ॥ २ ॥ अथविधि (समण सूत्र एट्ठे पणाम सज्जाय वोदतां
 “अशुठिजमि आराहणाए” ए पदथीउत्ता थवुं अने पावतो पाठ सधवो उत्ता थकांज
 कहेवो) अर्ही पडिक्कमणुं नामनुं चोथुं आवश्यक संपूर्णे थयुं. पडिक्कमणुं नामनुं चोथुं
 आवश्यक अतिचारनी शुद्धि माटे वे. ॥ पवी एक खमासणुं दइने उत्ताथइने
 नीचे प्रमाणे पाठ कहीने वे वांदणां देवां. “ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् गुरु
 आसातना निमित्ते वांदणां देउ” (प्रतिक्रमण गर्भहेतुमां पण कहुंवे के “ ततः प्रतिक्रं-
 तातिचारः श्री गुरुषु स्वकृतापराधक्षमणकार्थं वंदनकं ददाति ” अर्थ पवी अतिचार
 आलोच्यावाद गुरु प्रत्ये जे पोतानो अपराध थयो होय, ते खमाववा माटे वांदणां अपाय-
 वे.) माटे “ इच्छाकारेण सदिसह जगवन् गुरु आसातना निमित्ते वांदणां देउं ” एम पाठ

कहीने वांदणां देवां. एमकही वे वांदणां देवां. पवी अशुठीठ खमावीए. तेनीचे प्रमाणे-॥
 अथ अशुठिठ ॥ इच्वाकारेण संदिसह जगवन् अशुठिठमि अश्रितर देवसिञ्चं
 खामेठं (गुरुकहे "खामेठ") इच्च खामेमि देवसिञ्चं जंकिचि अपत्तिञ्च परपत्तिञ्चं जतेपाणे
 विणए वेअभावञ्चे आलावे संवावे जञ्चासणे समसणे अंतरजासाए उवरिजासाए जंकिचि
 मञ्जविणय परिशीणं सुहुमं वा वायरं वा तुञ्जेजाणह अहं नयाणांमि तरस मिजामि
 इकड्ढा॥१॥ इति ॥ अथविधि-॥ (अर्दीगुरु आदिक प्रथम स्थापनाचार्यने "अशुठिठं"
 खमावे त्यां सुधी शिष्यादिक उचारहे, पवी आझा मागीने शिष्यादिक वे टींचण अने
 मस्तक नूमिए लग्गाडी डोवे दाथे मुखें सुहपति देइने जमणो दाथ गुरुचरणे लग्गाडी
 "अशुठिठं" खमावे.) पवी उत्राथइने "इच्वाकारेण संदिसह जगवन् चारित्रि वादणां देवं"
 (प्रतिक्रमण गर्न हेतुमां पण कहुंते के, तदनु च कायोत्सर्गकरणार्थं " पडिक्रमणे
 १. सत्वाए २ काजसग्ग ३ " इत्यादि वचनाकंदनकदानं आलोचनाप्रतिक्रम-
 णान्यामजुशानां चारित्रादि दृढदत्तिचाराणां शुद्धार्थं कायोत्सर्गो विधियते. अर्थ-
 पडिक्रमण सूत्र कल्यावाद गुरुने अपराध खमाव्या पवी एटवे अशुठिठं खमा
 व्यापवी काजसग्ग करवा माटे वादणां देवां. केमके पडिक्रमण, सत्वाय तथा काजसग्ग
 आदि जगोए वादणा देवानुं आगाममां कहुंते. अर्दी काजसग्ग करवानुंते, ते आलोचना
 अने प्रतिक्रमणधी हजु शुद्ध नदीं अएवा एवा चारित्रादिक मोटा अतिचारोनी शुद्धि
 माटे वे. तेमा आ पहेलो काजसग्ग चारित्रनी शुद्धि माटे करायवे, अने ते काजसग्गने

निमित्ते करेदां वांद्वाणा पण चारित्रि वादणां कहेवायजं) एम कहीने वे वांद्वाणां देवां,
 पवी जन्मा श्दने “ आयरिय जजाय ” नो पाठ कहेवो. ते नीचे प्रमाणे॥ अथ आय-
 रिय जव्याए ॥ आयरिय जव्याए, सीसे सादम्मिए कुल गणेअ ॥ जेमे केइ कसाया,
 सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगवळ अंजतिं करिय सीसे ॥
 सबं खमावइत्ता, खामेमि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, ज्ञावळं धम्म
 निहिय नियचितो ॥ सबं खमावइत्ता, खामेमि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ इति सर्व जीवने
 खमाववा रूप खामणां ॥ अथविधि-एरीते “ आयरिय जवजाय ” नो पाठ कहीने पवी
 “करेमित्ते” नो पाठ कहेवो. पवी “इच्चामि तामि काजसणं जेमे देवसिठ अइयरो
 कळं ” नो पाठ कही पवी “तस्सुत्तरी” नो पाठ कहेवो. पवी “ अन्नजससिएणं ”
 नो पाठ संपूर्ण कहीने वे दोगस्सनो काजसण करवो. (अा काजसण चारित्राचारनी
 शुद्धि माटे वे.) पवी काजसण पारीने जगट दोगस्स कहीने ॥ सबवोए अरिहंत चेइ-
 अणं कहेवो ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ सबवोए ॥ अरिहंत चेइअणं, करेमि काज-
 स्सणं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कर वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए,
 बोहिवान वत्तिआए, निरुवसण वत्तिआए ॥ २ ॥ सखाए, मेहाए, धीइए, धारणाए,
 अणुपेहाए, वहमाणिए तामि काजसणं ॥ इति ॥ अथविधि-एरीते सबवोए तथा वंदण
 वत्तिआए कहीने पवी “ अन्नजससिएणं ” नो पाठ कही एक दोगस्सनो काजसण
 करवो. (अा काजसण दर्शनाचारनी शुद्धि माटे वे.) पवी काजसण पारीने पवी “ पुरस्वर

कहीने वांदणां देवां. एमकही वे वांदणां देवां. पवी अशुठीळ खमावीए. तेनीचे प्रमाणे॥
 अथ अशुठिळ ॥ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् अशुठिळमि अश्रितर देवसिद्धं
 खमेठं (गुरुकहे “खामेठ”) इच्छ खामेमि देवसिद्धं जंकिंचि अपत्तिद्धं परपत्तिद्धं जन्तेपाणे
 विणए वेअ्यावचे आत्वावे संतावे उच्चासणे समासणे अंतरजासाए उवरिजासाए जंकिंचि
 मझविणय परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुझेजाणह अहं नयाणामि तस्स मिजामि
 इकड॥१॥ इति ॥ अथविधि॥ (अर्दीगुरु आदिक प्रथम रथापनाचार्यने “ अशुठिळ ”
 खमावे त्यां सुधी शिष्यादिक जत्रारहे, पवी आझा मानीने शिष्यादिक वे ढींचण अने
 मस्तक नूमिए दगाडी डोवे दाथे मुखें सुहपति देइने जमणो दाथ गुरुचरणे दगाडी
 “अशुठिळ” खमावे.) पवी जत्राथइने “इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चारित्र वांदणा देउं”
 (प्रतिक्रमण गर्भ हेतुमा पण कह्युवे के, तदनु च कायोत्सर्गकरणार्थं “ पडिक्रमणे
 १ सद्याए २ काजसग्ग ३ ” इत्यादि वचनांद्दंनकदान आत्वोचनाप्रतिक्रम-
 णान्यामशुशानां चारित्रादि वृहदतिचाराणां शुद्धर्थं कायोत्सर्गो विधियते. अर्थ-
 पडिक्रमण सूत्र कहावाद गुरुने अपराध खमाव्या पवी एटले अशुठिळ खमा
 व्यापवी काजसग्ग करवा माटे वांदणां देवां. केमके पडिक्रमण, सद्याय तथा काजसग्ग
 आदि जगोए वादणा देवानुं आगाममां कह्युंवे. अही काजसग्ग करवानुंवे, ते आत्वोचना
 अने प्रतिक्रमणयी हेतु शुद्ध नदीं थएटा एवा चारित्रादिक मोटा अतिचारोनी शुद्धि
 माटे वे. तेमां आ पहेलो काजसग्ग चारित्रनी शुद्धि माटे कराववे, अने ते काजसग्गने

निमित्ते करेलां वांदणां पण चारित्र वांदणां कहेवायज) एम कहीने वे वांदणां देवां,
 पवी जना थडने “ आयरिय जजाय ” नो पाठ कहेवो. ते नीचे प्रमाणे-॥ अथ आय-
 रिय उवद्याए ॥ आयरिय उवद्याए, सीसे सादम्मिए कुल गणेअ ॥ जेमे केइ कसाया,
 सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवरस समण संघरस, जगवठं अंजलिं करिय सीसे ॥
 सवं खमावइत्ता, खामेमि सवरस अहयंपि ॥ २ ॥ सवरस जीवरासिस्स, जावठं धम्म
 निहिय नियचितो ॥ सवं खमावइत्ता, खामेमि सवरस अहयंपि ॥ ३ ॥ इति सर्वं जीवने
 खमाववा रूप खामणां ॥ अथविधि-एरीते “ आयरिय उवजाय ” नो पाठ कहीने पवी
 “करोमिचंते” नो पाठ कहेवो. पवी “इच्छामि तामि काजसगं जोमे देवसिउं अइयारो
 कउं ” नो पाठ कही पवी “तस्सुत्तरी” नो पाठ कहेवो. पवी “अन्नजजसिएणं”
 नो पाठ संपूर्ण कहीने वे लोगस्सनो काजसग करवो. (आ काजसग चारित्राचारनी
 शुद्धि माटे ठे.) पवी काजसग पारीने प्रगट लोगस्स कहीने ॥ सबलोए अरिदंत चेइ-
 आणं कहेवो ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ सबलोए ॥ सबलोए अरिदंत चेइआणं, करेमि काज-
 स्सगं ॥ १ ॥ वदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कर वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए,
 वोहिलान वत्तिआए, निरुवसग वत्तिआए ॥ २ ॥ सधाए, मेहाए, धीइए, धारणाए,
 अणुपेहाए, वहमणाए टामि काजसगं ॥ इति ॥ अथविधि-एरीते सबलोए तथा वंदण
 वत्तिआए कहीने पवी “ अन्नजजसिएणं ” नो पाठ कही एक लोगस्सनो काजसग
 करवो. (आ काजसग दर्शनाचारनी शुद्धि माटे ठे.) पवी काजसग पारीने पवी “ पुखवर

कहीने वांदणां देवां. एमकही वे वांदणां देवां. पवी अशुटीळ खमावीए. तेनीचे प्रमाणे॥
 अथ अशुतिळ ॥ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् अशुतिळमि अश्रितर देवसिद्धं
 खामेठं (गुरुकहे “खामेह”) इच्छ खामेमि देवसिद्धं जंकिंचि अपत्तिद्धं परपत्तिद्धं जंकिंचि
 विणए वेअ्यावचे आदावे संदावे उच्चासणे समासणे अंतरत्रासाए जवरित्रासाए जंकिंचि
 मप्रविणय परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुञ्जेजाणह अहं नयाणामि तस्स मिळामि
 डकड॥१॥ इति ॥ अथविधि॥ (अर्दागुरु आदिक प्रथम रथापनाचार्येने “अशुतिळ”
 खमावे त्यां सुधी शिष्यादिक जत्रारहे, पवी आज्ञा मागीने शिष्यादिक वे ढींचण अने
 मस्तक नूमिए वगाडी ड्रावे हाथे मुखें सुहपति देहने जमणे हाथ गुरुचरणे वगाडी
 “अशुतिळ” खमावे.) पवी जत्रायहने “इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चारित्र वादणां देवं”
 (प्रतिक्रमण गर्भ हेतुमां पण कहुते के, तदनु च कायोत्सर्गकरणार्थं “पडिक्रमणे
 १ सखाए २ काजसग्ग ३ ” इत्यादि वचनांरुंदनकदान आलोचनाप्रतिक्रम-
 णान्यामशुक्षनां चारित्रादि बृहद्दतिचाराणा शुद्धार्थं कायोत्सर्गं विधियते. अर्थ-
 पडिक्रमण सूत्र कथावाद गुरुने अपराध खमाव्या पवी एटले अशुतिळ खमा
 व्यापवी काजसग्ग करवा माटे वांदणां देवां. केमके पडिक्रमण, सखाय तथा काजसग्ग
 आदि जगोए वांदणा देवानुं आगासमां कहुंते. अहीं काजसग्ग करवानुंते, ते आलोचना
 अने प्रतिक्रमणधी हजु शुध नदी अएवा एवा चारित्रादिक मोटा अतिचारोनी शुधि
 माटे वे. तेमां आ पहेलो काजसग्ग चारित्रनी शुधि माटे करायते, अने ते काजसग्गने

तिमिते करेलां वांदणां पण चारित्र वांदणां कहेवायज) एम कहीने वे वांदणां देवां,
 पवी उया थडने “ आयरिय जजाय ” नो पाठ कहेवो. ते नीचे प्रमाणे-। अथ आय-
 रिय उवद्याए ॥ आयरिय उवद्याए, सीसे साहम्मिए कुव गणेअ ॥ जेमे केइ कसाया,
 सधे तिविहेण खामेसि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगवउ अंजादिं करिय सीसे ॥
 सधं खमावइत्ता, खामेसि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, जावउ धम्म
 निहिय नियचितो ॥ सधं खमावइत्ता, खामेसि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ इति सर्व जीवने
 खमाववा रूप खामणां ॥ अथविधि-एरीते “ आयरिय उवजाय ” नो पाठ कहीने पवी
 “करेमिचंते” नो पाठ कहेवो. पवी “इच्छामि जामि काजसगं जेमे देवसिउ अइयारो
 कउ ” नो पाठ कही पवी “तस्सुत्तरी” नो पाठ कहेवो. पवी “ अन्नउजससिएणं ”
 नो पाठ संपुणं कहीने वे लोगस्सनो काजसग करवो. (आ काजसग चारित्राचारनी
 शुद्धि माटे ठे.) पवी काजसग पारीने प्रगट लोगस्स कहीने ॥ सधवोए अरिहंत चेइ-
 आणं कहेवो ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ सधवोए ॥ सधवोए अरिहंत चेइआणं, करेमि काज-
 स्सगं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सकार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए,
 वोहिलान्न वत्तिआए, निरुवसगग वत्तिआए ॥ २ ॥ सखाए, मेहाए, धीइए, धारणाए,
 अणुपेहाए, वड्डमाणीए ठामि काजसगं ॥ इति ॥ अथविधि-एरीते सधवोए तथा वंदण
 वत्तिआए कहीने पवी “ अन्नउजससिएणं ” नो पाठ कही एक लोगस्सनो काजसग
 करवो. (आ काजसग दर्शनाचारनी शुद्धि माटे ठे.) पवी काजसग पारीने पवी “ पुख्खर

कहीने वादणां देवां. एमकही वे वांदणां देवां. पवी अशुठीउं खमवीए. तेनीचे प्रमाणे-॥
 अथ अशुठिउं ॥ इच्वाकारेण संदिसह जगवन् अशुठिउंमि अश्रितर देवसिञ्चं
 खामेउं (गुरुकहे “खामेह”) इच्च खामेमि देवसिञ्चं जंकिंचि अणपत्तिञ्चं परपत्तिञ्चं जनेपाणे
 विणए वेअ्यावञ्चे आत्वावे संत्वावे जञ्चासणे समासणे अंतरज्जासाए जवरिज्जासाए जंकिंचि
 मञ्जविणय परिदीणं सुहुमं वा वायरं वा तुञ्जेजाणह अहं नयाणामि तरस मिवामि
 इकड॥१॥ इति ॥ अथविधि-॥ (अर्हगुरु आदिक प्रथम स्थापनाचार्यने “अशुठिउं”
 खमावे त्यां सुधी शिष्यादिक जगारहे, पवी आझा मागीने शिष्यादिक वे दींचण अने
 मस्तक नूमिए लग्गाडी जावे हाथे सुखें सुहपति देदने जमणो हाथ गुरुचरणे लग्गाडी
 “अशुठिउं” खमावे.) पवी जग्राथइने “इच्वाकारेण संदिसह जगवन् चारिज वांदणां देउं”
 (प्रतिकमण गर्भ हेतुमां पण कह्युवे के, तदनु च कार्यात्सर्गकरणार्थं “पडिकमण
 १ सद्याए २ काजसग्ग ३ ” इत्यादि वचनार्कंदनकदानं आद्योचनाप्रतिकम-
 णान्यामशुशनां चारिजादि बृहदतिचाराणां शुद्धर्थं कायोत्सर्गो विधियते. अर्थ-
 पडिकमण सत्र कहावाद् गुरुने अपराध खमाव्या पवी एटते अशुठिउं खमा
 व्यापवी काजसग्ग करवा माटे वांदणां देवां. केमके पडिकमण, सद्याय तथा काजसग्ग
 आदि जगोए वांदणा देवानुं आगाममां कह्युंवे. अर्दी काजसग्ग करवानुंवे, ते आद्योचना
 अने प्रतिकमणथी हजु शुश नही अएवा एवा चारिजादिक मोटा अतिचारोनी शुधि
 माटे. तेमां आ पहेवा काजसग्ग चारिजनी शुधि माटे करायेवे, अने ते काजसग्गने

निमित्ते कोटां वांदणां पण चारित्र वांदणां कहेवापज) एम कहीने वे वांदणां देवां,
पवी उजा थइने “आयरिय जजाय ” नो पाठ कहेवो. ते नीचे प्रमाणे-॥ अथ आय-
रिय उवथाए ॥ आयरिय उवथाए, सीसे साहम्मिए कुल गणेअ ॥ जेमे केइ कसाया,
सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवरस समण संबसस, जगवड अंजालिं करिय सीसे ॥
सबं खमावइत्ता, खामेमि सवरस अहयंपि ॥ २ ॥ सवरस जीवरासिस्स, जगवड धम्म
निहिय नियचितो ॥ सबं खमावइत्ता, खामेमि सवरस अहयंपि ॥ ३ ॥ इति सर्व जीवने
खमाववा रूप खमणां ॥ अथविधि-एरीते “आयरिय उवजाय ” नो पाठ कहीने पवी
“कोमिजते” नो पाठ कहेवो. पवी “इच्चामि जामि काजसणं जेमे देवसिउं अइयारो
कउं ” नो पाठ कही पवी “तरसुत्तरी” नो पाठ कहेवो. पवी “अन्नजससिएणं ”
नो पाठ संपूर्ण कहीने वे लोगस्सनो काजसण करवो. (आ काजसण चारित्राचारनी
शुद्धि माटे वे.) पवी काजसण पारीने प्रगट लोगस्स कहीने ॥ सबदोए अरिहंत चेइ-
आणं कहेवो ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ सबदोए ॥ सबदोए अरिहंत चेइआणं, कोमि काज-
स्सणं ॥ १ ॥ वदण वत्तिआए, पूज्जण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए,
बोहिदाय वत्तिआए, निरुवसण वत्तिआए ॥ २ ॥ सशए, मेहाए, धीइए, धारणाए,
अणुपेहाए, वड्डमाणीए जामि काजसणं ॥ इति ॥ अथविधि-एरीते सबदोए तथा वंदण
वत्तिआए कहीने पवी “अन्नजससिएणं ” नो पाठ कही एक लोगस्सनो काजसण
करवो. (आ काजसण दर्शनाचारनी शुद्धि माटे वे.) पवी काजसण पारीने पवी “ पुरखर

कहीने वांदणां देवां. एमकही वे वांदणां देवां पवी अशुठीज खमावीए. तेनीचे प्रमाणे-॥
 अथ अशुठिजं ॥ इच्वाकारेण संदिसह जगवन् अशुठिजमि अश्रितर देवसिद्धं
 खामेजं (गुस्कहे "खामेह") इच्चं खामेमि देवसिद्धं जंकिचि अपत्तिद्धं परपत्तिद्धं जंकिचि
 विणए वेअवावञ्चे आलावे संदावे जञ्चासणे समसणे अंतरन्नासाए जवरिन्नासाए जंकिचि
 मअविणय परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुञ्जेजाणह अहं नयाणामि तस्स मिवामि
 डकडं॥१॥ इति ॥ अथविधि-॥ (अदीगुरु आदिक प्रथम स्थापनाचार्यने "अशुठिजं"
 खमावे त्यां सुधी शिष्यादिक उच्चारहे, पवी आझा मागीने शिष्यादिक वे दींचण अने
 मस्तक त्रूमिए लगाडी डवे दाथे सुखे सुहपति देहने जमणे दाथ गुरुचरणे लगाडी
 "अशुठिजं" खमावे.) पवी उच्चारधने "इच्वाकारेण संदिसह जगवन् चारित्रि वांदणां देवं"
 (प्रतिक्रमण गर्भ हेतुमा पण कह्युंते के, तदनु च कायोत्सर्गकरणार्थं "पडिक्रमणे
 १ सखाए २ काजसग्ग ३ " इत्यादि वचनांकंदनकदानं आलोचनाप्रतिक्रम-
 णान्यामशुश्वनां चारित्रादि वृहदतिचाराणां शुद्धार्थं कायोत्सर्गो विधियते अर्थ-
 पडिक्रमण सूत्र कहावाद् गुरुने अपराध खमाव्या पवी एटते अशुठिजं खमा
 व्यापवी काजसग्ग करवा माटे वांदणां देवां. केमके पडिक्रमण, सखाय तथा काजसग्ग
 आदि जगोए वांदणा देवानुं आगाममां कह्युंते. अर्दीं काजसग्ग करवानुंते, ते आलोचना
 अने प्रतिक्रमणधी हजु शुश्व नदीं अएवा एवा चारित्रादिक मोटा अतिचारोनी शुद्धि
 माटे वे. तेमा आ पहेवा काजसग्ग चारित्रनी शुद्धि माटे करायते, अने ते काजसग्गने

अरिनेमिं नमंसासि ॥ ४ ॥ चत्वारि अठदशदो, अयंदिअ जिएवरा, चउधीसं ॥ परमइ
 निडिअइ, सिश सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ अथविधि-एरीते सिश्राणं बुश्राणंनो पाठ
 कहीने (ए काजसग नामतुं पांचसुं आवश्यक थयुं. ए काजसग चारित्राचार, दर्शना चार
 अने श्रुतज्ञानाचारनी शुद्धि माटे वे.) पढी “ सुअदेवयाए करेमि काजसगं अन्नह
 उमसिएणं नो पाठ कहीने एक नवकारनो काजसग करवो. (सधळी धर्म क्रियाउतुं
 “श्रुत” हेतु होवाथी तेनी समृद्धि माटे आ काजसग करायवे. अने “श्रुत” जे सिश्रांत तेनी
 अधिष्ठायिका जे सरस्वति तेने आराधवा तिमित काजसग करवो, अने तेनी स्तुति पण
 कहेवी, ए गाथा श्री पादिक सूत्रने ठेडे कहेवायवे, ते त्राणी काजसग करतां मिथ्यात्वनी
 शंका न करवी.) पढी काजसग पारी एक नवकार प्रगट कहीने गुरु आदिक “ सुदेव-
 याए ” नी स्तुति कहे, ते सांनळीने सर्वेने काजसग पारवो. ॥ अथ श्रुतदेवतास्तुतिः ॥
 सुयदेवया त्रगवइ, नाणा वरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेज सययं, जसिं सुय सायरे
 तत्ती ॥ १ ॥ अथविधि-पढी “ क्षेत्रदेवीयाए करेमि काजसगं अन्नहजससिएणं ” नो
 पाठ संपूर्ण कहीने एक नवकारनो काजसग करवो. (जेना क्षेत्रमां स्थिति करायवे, तेना
 मावीकनी पण स्तुति करवी जोइए, अने तेटला माटे आ स्तुति करायवे, अने श्री महेंद्र-
 सिद्ध सूरि विरचित शतपदी ग्रंथमां विचार ८१ मां पण चोमासी तथा पजोसएणा दिने
 शुवन देवतानो तथा क्षेत्रदेवतानो पण काजसग करायवे.) पढी एक नवकार प्रगट कहीने
 सुगुरु आदिके “ जिसे खित्ते साहु ” नी स्तुति कहेवी, ते नीचे प्रमाणे-॥ अथ क्षेत्र देवतानी

वरदीवह्ने"नो पाठ कहेवो. ते नीचे प्रमाणे- ॥ अथ पुरावरवरदीवह्ने ॥ पुरावरवरदीवह्ने
 धायंइसने, अं जंबुदीविञ्च ॥ नरं देर वंय विदेहे", धम्माई गरे नमंसंमि ॥ २ ॥ अथश्री
 सिश्रत स्तवननी गाथा प्रारंभः ॥ तंमं तिंमिर पन्दाविश्रमाणस्स, सुंरणं नरिंदं मंदि,
 अस्स ॥ सीमाघरस्स वंदे", पक्कोकिञ्चं मोहजांलस्स ॥ १ ॥ वसंत तिलकावंदः ॥
 जाइ जरा मरणं सोग पणासणंस्स, कदांणं पुख्खंल विसंल सुदांवहस्सं ॥ कोदेवं
 दाणंवनरिंदं गणीञ्चिअस्स, धम्मस्ससारं सुवंलज्ज कोरपमायं ॥ ३ ॥ दादूंल विक्रीप्ति-
 वंद. ॥ सिधे जो पयउ णमो जिणमए नदिसया संजमे, देवं नाग सुवय किन्नराण सञ्चय
 जावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठिउं जगमिणं ते लुक मच्चसुरं ॥ धम्मो वह्णं सासल
 विजयउं धम्मसुरं वह्णउं ॥ ४ ॥ अथसुअस्स जगवउं ॥ सुअस्स भगवउं कोरमि काजस-
 गं, वंदण वत्तिअए॥७॥अथविधि-एरीते"पुरावरदी"नो तथा "सुअस्स जगवउं"नो पाठ
 कहीने पवी"वंदण वत्तिअए,"नो तथा अन्नउ उमसिएणं"नो पाठ कहीने एक लोगस्स नो
 काजसग्न करवो ॥ (अ काजसग्न श्रुतज्ञानाचारनी शुचि माटे वे.) पवी काजसग्न पारीने
 पवी " सिश्राणं बुश्राणं " नो पाठ कहेवो ते निचे प्रमाणे ॥ अथ सिश्राणं बुश्राणं ॥
 सिश्राणं बुश्राणं, पारगयाणं, परपरगयाणं, लोअग्न सुवगयाणं, नमो सया सब सिश्राणं, ॥ १ ॥
 जो देवाण विदेवो, जंदेवा, पजंदि नमंसंति, ॥ तंदेव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं
 ॥ २ ॥ इकोवि नमुकारो, जिणवरवसइस्स वशमाणस्स, ॥ संसार सागराउं, तारेइ नरं
 व नरिंवा ॥ ३ ॥ जजित सेवसिद्धे, दिख्खानाणं निसीहिअजस्स ॥ तं धम्मचक्रवट्टि,

वंदामि ॥ सर्वं गण हर वंस, वायगवंसं पवयंणं च ॥३॥ इति संपूर्ण ॥ अथ विधि-एरीते
 “नमो खमासमण्णं” नो पाठ संपूर्ण कहीने, पवी “जंकिंचि नाम तिवं” तथा “नम-
 स्थुणं” तथा “जेअअइआसिश्वा” कहीने पवी “इहाकरेण संदिसह जगवन्
 स्तवन जणुं” एम आझा मानीने पवी, एक नवकार कहीने, वीतरागगुणगर्भित
 स्तवन कहेवुं. (विहार कसी आवेव होइए अथवा वस्ति वददावी होय तो देवसि प्रतिक्र-
 मण्णमां जीरिकापद्धीपार्थ स्तव “उँ नमो देव देवाय” ए कहेवो.) पवी “जयातिजयरा”
 कहेवा. ते तीर्थमावानी ठेह्वी चार गाथाउ जाणवी. पवी एक खमासमण्ण देइने “इच्चा
 करेण संदिसह जगवन् गुरु वंदना करं” एम कहीने गुरु वंदना कहेवी ॥ अथ गुरु वंदना
 पाठ ॥ अह्हाइज्जेसु दीवससुहेसु, पनरससु कम्म जूमीसु ॥ जावंतकेवि साहु रयहरण
 गुज पडिगह धारा ॥ १ ॥ पंच महवयधारा अठारस सहसस सीवं धारा ॥ अरकया
 थार चरिता, ॥ ते सबे सिरसा मणसा महएण वंदामि ॥ २ ॥ हवे मुख्य जे वीर प्रचुने
 पाटे थएला आठ पाट कहेवे. ॥ पहेवे पाटे सुधर्मा स्वामी, बीजे पाटे जंबु स्वामी, त्रीजे
 पाटे प्रजवा स्वामी, चौथे पाटे सिज्जंनवसरि, पांचमे पाटे यशोत्रजसरि, षठे पाटे संश्रुति
 विजयसरि, सातमे पाटे जजवाहु स्वामी, आठमे पाटे धूलीत्रज स्वामी, एवं पाटानुपाटे
 ठेह्वा श्री इप्पसह नामा आचार्य थरो तेमने मारी १०८ वार त्रिकाव वंदना होजो ॥
 इतिसंपूर्ण ॥ अथविधि ॥ पवी एक खमासमणुं देइने, जना थइने, “इहाकरेण संदिसह
 जगवन् देवसिय पायत्तिसिसो द्दण्डं करेमि काउसग्गं” एम शिष्य कहे त्यारे

स्तुति-॥ जिसे खिने साहु, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुख मगं, सादेवीहरज
 डरियाइं ॥ १ ॥ इति अथविधि-एरीते स्तुति सांजळी पवी सर्वेए काजसगा पारवो. पवी एक
 नवकार कहीने पवी एक खमासमणुं देवुं पवी हेवा जत्रडक आसने वेसीने नीचे प्रमाणे
 पाठ कहेवो, “इञ्जाकोरेण संदिसह जगवन् ठठा आवश्यक जणी सुहपत्ति पडिदेहुं” एम
 आझा मगी पचास बोल सहित सुहपत्ति पडिदेहणा करवी, पवी एक खमासमणुं देइ,
 जना थइने “इञ्जाकोरेण संदिसह जगवन् ठठा आवश्यक जणी पञ्चखाण वांदणां करूं”
 एम कहीने वे वांदणां देवां पवी चजविहारनुं पञ्चखाण देवुं, ए चजविहारनुं पञ्चखाण दश
 पञ्चखाणथी जाणहुं (ए वठुं आवश्यक संपूर्ण थयुं, ए आवश्यक पञ्चखाणनी शुद्धि माटे वे)
 पवी ठए आवश्यक संजाळयां ते आ प्रमाणे-॥ १ ॥ अथ ठ आवश्यकनां नाम “ १ पहेवे
 सामाधिक, २ बीजे चजविसवो, ३ बीजे वांदणां, ४ चौथे पन्तिकमणुं, ५ पांचमे
 काजसगा, ६ ठठे पञ्चखाण, ७ ठ आवश्यक संपूर्ण थयां ” एम ठ आवश्यक संजा-
 लवा. पवी हेवा वेसवुं, जोग सुजाए वेसीने नीचे प्रमाणे कहेवुं. “ इञ्जाकोरेण संदिसह
 जगवन् वीर स्तुति जणु ” एम कहीने “ नमो खमासमणुणं ” नो संपूर्ण पाठ कहेवो.
 ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ नमो खमासमणुणं वीर स्तुति ॥ नमो खमासमणुणं इञ्जामो
 अणुसतिं ॥ तिजयर जगवते, अणुतर परकमे अमियनाणी, तिणे सुगइ गइए, सिद्धिपह
 पएसए वंदे ॥ १ ॥ वंदांमि महाजगं, महासुणि महाजसं महावीरं ॥ अमर नरराय
 महियं तिजयरमिमसस तिजसस ॥ २ ॥ इकार सविणएहरे, पवायए पवयणएसस

तव संघममिय लंगण, अक्रिय राहु सुह डरसिनिचं ॥ जयसंघ चंद निम्मल,सम्मत्त
 विसुद्ध जुएहाणा ॥ ९ ॥ पर तिहयगह पहना, सगस्स तवते यदित्त वेसस्स ॥
 नाणुजोयस्स जए, चदं दम संघसूरस्स ॥ १० ॥ चदंधिइ वेलापरि, गयस्स सजाय जोग
 मगरस्स ॥ अरकोहरस्स जगवळ संघ समुद्धस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥ सम्मदंसण वर वहर,
 दहरह गाढावगाढपीहरस्स ॥ धम्मवररणमंडिय, चाभीयर मेहदागस्स ॥ १२ ॥ नियमू-
 स्सिय कणय सिदायडु, ज्जाव जलंत चित्तकूडस्स ॥ नंदण वणमणहर, सुरत्ति सीलगं-
 शुडुमायस्स ॥ १३ ॥ जीवदया सुदर कंदरु, हरिय सुणिवर मइंद इन्नस्स ॥ हेजसय
 धाजपगलंत, रयण दित्तोसहि गुहस्स ॥ १४ ॥ संवर वर जलपगलिय, जञ्जरपविराय
 माण हारस्स ॥ सावगजण पजर रवंत, मोरनच्चत कुहरस्स ॥ १५ ॥ विणय णयपवर
 सुणिवर, पुरंत विञ्जुज्जावत्त सिहरस्स ॥ विविह गुण कप्परकग, फलजर कुसुमाजलवणस्स
 ॥ १६ ॥ नाणवर रयणदीपंत कंत, वेरुदिय विमलचूलस्स ॥ वंदाभि विणयपणज,
 संघमहामंदर गिरिस्स ॥ १७ ॥ गुणरयणुज्जावकडयं, सीव सुगंधी तव मंडिउदंसं ॥ सुय
 वारसग सिहरं, संघमहामंदरं वंदे ॥ १८ ॥ नयरह चकजपमे चदे सूरे समुद्ध मेरुम्मि ॥
 जो उवमिज्जाइसययं, तं संघगुणायरं वंदे ॥ १९ ॥ वदेजसत्रं अजिय, संजव मत्तिणंदण
 सुमइपज मत्पहसुपासं ॥ ससि पुष्पदंत सीयल सिवंसंवासुपुज्जां च ॥ २० ॥ विमलमणं-
 तय धम्मं, संति कुंशुं अर च मद्धिं च ॥ सुण सुधयनमि नेमिं, पारसंतह वक्कमाणं च ॥ २१ ॥
 पढमिउ इंद चूर्द्धवीए पुणहोई अग्नि चूर्द्धति ॥ तइए य वाजचूर्द्ध, तउवियते सुद्धम्मये ॥ २२ ॥

गुरुकहे, “ करेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इहं ’ एम कही अन्नवजससिष्णुं ” नो पाव
 कही चार लोगस्सनो काजसग्न करवो. पवी पारीने एक प्रगट लोगस्स कहेवो. पवी फरी
 एक खमासमणुं देइ तथा उन्ना थइने “ इहाकारेण संदिसह जगवन् सखाय संदिसाहुं ”
 त्यारे गुरु कहे “ संदीसावेह ” त्यारे शिष्यकहे “ इहं तहत्ति ” वदी एक खमासमणु
 देहुं तथा पवी उन्ना थइने “ इहाकारेण सदिसह जगवन् सखाय करं ” एम शिष्य
 कहे त्यारे गुरु कहे “ करेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इहं ” एम कही हेठा वेणीने एक
 नवकार कहीने स्रवतुं अथयन कहेहुं, एटले सूवनी सखाय कहेवी ते नीचे प्रमाणे. ॥
 अथ श्री नंदी सूवनी सखाय ॥ जयइ जगजीव जोणी, वियाणुं जगगुरु जगाणंदी ॥
 जगनाहो जगबंधु, जयइ जगपियामहो जयवं ॥ १ ॥ जयइ सुयाणं पन्नवो, तिजयराणं
 अपत्तिमो जयइ॥ जयइ गुरुलोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो, ॥२॥ नइं सव्वजगुज्जीपगस्स,
 नइ जिणस्स वीरस्स, नइं सुरासुर नमं, सियस्स नइं धूरयस्स ॥ ३ ॥ गुण जवण
 गहण सुयरयण, नरियं दंसण विसुद्धरत्तागा ॥ संबनयरत्तदते, अखं चरित पागार-
 ॥ ४ ॥ संजम तवतुं बारगस्स, नमो सम्मत पारियहस्स ॥ अप्पनि चकरसज्ज, दोइ
 सया संब चकस्स ॥ ५ ॥ नइं सील पडणुस्सियस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संबरा-
 हस्स जगवणं, सिज्जाय सुनदि बोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरयजलोहविणि, गायस्स सुयर-
 यणदीह नागरस्स ॥ पचमहव्वय थिरकणियस्स, गुण केसरावस्स ॥ ७ ॥ सावगजण महुंयंरि
 परि, बुभस्स जिणसुर तेय व्वरस्स ॥ सब पजमरस्स नइं. समण गणमहम्म पत्तम्म ॥ ८ ॥

जं त्रिणे पवद्भ्यं, तं तं धम्मं सद्धं फलं मम होइ, साचाना सदहणा जूवाना मित्रामि डकडं
“सर्वं मंगल मांगल्यं०” इति देवसिक प्रतिक्रम समाप्तं ॥

अथराड प्रतिक्रमण विधिर्दिल्लते ॥ उक्तंच—प्रवचन सारोद्धारे ॥ मूल ॥ मित्रा
डकड पणियाय, दंभां काजसग्गति अकरणं ॥ पुतिअ वंदण आलोअ, सुत वंदण य
खासण्यं ॥ १ ॥ वंदणअं गाहातिअ, पढो उमासिअस्स उस्सगो ॥ पुतिअ वंदण
नियमो, शुइ तिय चिय वंदणा राउ ॥ २ ॥ इत्थंवि पढमे चरणे, दंसण सुधी य वीय ॥
उस्सगो सुअनाणस्स तइउ, नवरं चित्तेइ तिउ इमं ॥ ३ ॥ तइयनिसाय इअारं, चित्तइ
चरमंमि किं तवं काहं ॥ उमासा एण दिणा, इहाणि जा पोरसि नमो वा ॥४॥ साधु ज्यारे
पाववी रावीए जागे त्यारे प्रथम नवकारनुं स्मरण करे, पवी प्रतिक्रमणी वल्लते एक
खमास्समणुं दइने इरियावहीनी आइा मागिने इरियावहीथी मांडीने एक दोगस्सनो
काजसग्ग करवो, काजसग्ग पारीने प्रगट दोगस्स कहीने पवी एक खमास्समणु देवुं. पवी
उजा थइने नीचे प्रमाणे कहेवुं “ इजाकारेण संदिसइ जगवन् कुसुमिण उसुमिण
उइामणी निमित्तं राइ पायवित्त विसोहणहं करेमि काजसग्गं ” एम शिष्य कहे त्यारे गुरु
कहे “ करेइ ” त्यारे शिष्य कहे “ इहं अन्नव उससिएण ” कही चार दोगस्स अने एक
नवकारनो काजसग्ग करवो. (आ काजसग्ग “ सागर वर गंपीरा ” सुधी चित्तववो.)
पवी काजसग्ग पारीने पवी प्रगट दोगस्स कहेवो. पवी एक खमास्समणुं दइने, हेवा जोग
मुधाए वेसीने पवी नीचे प्रमाणे पाउ कहेवो. “ इजाकारेण संदिसइ जगवन् चैत्यवंदन

संख्य मोरिय पुत्रे, अर्कपि ए चैव अथलत्राया य ॥ मेअज्जे य पदसि, गणहरा हूति वारस्स
 ॥१३॥ निबुद्ध पद्दसासणयं, जयइ सयासव्व त्राव देसणयं ॥ कुसमय मयणा सणयं, जिण्णिंद
 वरवीर सासणयं ॥१४ ॥ इति प्रथ नंदिसूत्रनीस्वाध्याय समाप्त ॥ अथविधि-एरीते
 सूत्रनी स्वाध्याय कहीनि पढी एक नवकार प्रगट कहीनि पढी एक खमासमणुं देवुं. पढी
 जना अइने नीचे प्रमाणे कहेवो “इडाकारेण संदिसह त्रगवन् अत्रिन्नव अशेष ड खसकय
 कम्मकय निमित्तं करेमि काजसग्ग” ज्यारे शिष्य एम कहे, त्यारे गुरु कहे “ करेह ” त्यारे
 शिष्य केह “इहं अब्बव उवसिएणुं” एम कहीनि पाच दोगस्सनो काजसग्ग करवो. (आ
 काजसग्गमां पांचे दोगस्सो संपूर्णे गणवा. ए काजसग्ग पांच प्रमादने टालवाने वास्ते वे,
 माटे पांच दोग स्सनो काजसग्ग करवो. जो विशेष स्थीरता होयतो अधिका अधिकु वधारवुं
 एटले जेटदी स्थीरता होय तेटला दोगस्सनो काजसग्ग करवो. ते सर्व संपूर्णे करवा) पढी
 काजसग्ग पारी प्रगट दोगस्स कहीनि आदेश पासेव जण जना अकांज दद्यु अजित शांति
 स्तवनो पाठ कहेवो. (आ दद्यु अजित शांति स्तवनो पाठ सर्व प्रकारना उपज्वोनी शांति
 माटे वे.) ते दद्यु अजितशांति स्तव नव स्मरणमां आठमो स्मरण वे. त्यांथी जाणी
 देवो. पढी एक खमासमणुं देइने हेवा वेशीने नीचे प्रमाणे पाठ कहेवो “ इडाकारेण
 संदिसह त्रगवन् देवसि प्रतिकमण करतां जे कोइ जिनआज्ञा अकी विरुद्ध अधिको
 जवो आघो पावो कह्यो कहेवाणो होय ते सवि मिजामि डकरं. तुंमेव सच्चं निसंकिं यं जं

जं जिणे पवइयं, तं तं धम्म सव्वं फलं मम हेइ, साचाना सदहणा जूलाता।मत्ता।म डकड
“सर्व मंगल मांगल्यं०” इति दैवासिक प्रतिक्रम समाप्तं ॥

अथराइ प्रतिक्रमण विधिर्दिवस्ते ॥ उक्तंच-प्रवचन सारोद्धरे ॥ मूल ॥ मिजा
डकड पणियाय, दंभं काजसग्गति अकरणं ॥ पुत्तिअ वंदण आलोअ, सुत्त वंदण य
खामण्यं ॥ १ ॥ वंदणअं गाहात्तिअ, पढो उमासिअस्स उरसग्गो ॥ पुत्तिअ वंदण
नियमो, शुइ तिय चिय वदणा राउं ॥ २ ॥ इत्थंवि पढमे चरणे, दंसण सुधी य वीय ॥
उरसग्गो सुअनाणस्स तइउं, नवरं चित्तेइ तिह इमं ॥ ३ ॥ तइयनिसाय इअरं, चित्तइ
चरसंमि किं तवं काहं ॥ उमसा एग दिणा, इहाणि जा पोरसि नमो वा ॥४॥ साधु अयारे
पावली रावीए जागे तयारे प्रथम नवकारतुं स्मरण करे, पवी प्रतिक्रमणी वरत्त एक
खमासमणुं दइने इरियावहीनी आइा मागीने इरियावहीथी मांडीने एक दोगस्सनी
काजसग्ग करवो, काजसग्ग पारीने प्रगट दोगस्स कहीने पवी एक खमासमणुं देवुं. पवी
उत्ता अइने नीचे प्रमाणे कहेवुं “ इहाकारेण संदिसइ उगवन् कुसुमिण इसुमिण
उड्ढामणी निमित्तं राइ पायवित्त विसोहणं करेमि काजसग्गं ” एम शिष्य कहे तयारे गुरु
कहे “ करेइ ” तयारे शिष्य कहे “ इहं अन्नव उमसिएणं ” कही चार दोगस्स अने एक
नवकारनी काजसग्ग करवो. (आ काजसग्ग “ सागर वर गंतीरा ” सुधी चित्तववो.)
पवी काजसग्ग पारीने पवी प्रगट दोगस्स कहेवो. पवी एक खमासमणुं देइने, हेवा जोग
सुआए वेसीने पवी नीचे प्रमाणे पाठ कहेवो. “ इहाकारेण संदिसइ उगवन् चैत्यवंदन

करं ” एम शिष्य कहे, त्यारे गुरु कहे “ करेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इह तदिति ” एम कहे, पती गुरु आदिक ” अर्जोक दक्षःसुर पुष्य दृष्टि ” कही, पती “ इह जय जय महाप्रभु ” ए चैत्यवंदन कहेवो. पती “ जिकिचि ” तथा “ नमोऽर्शुणं “ अने “ जे-अइअ्या सिन्धा ” नो पाठ कहेवो, पती वे “ जावंति ” कहेवी ते नीचे प्रमाणे- ॥

॥ अथ जावंति चेइअ्याइं ॥ जावंति चेइअ्याइं, उहे अ अहे अ तिरि अ लोएअ ॥ सबाइं ताइं वंदे, इह सतो तह सताइं ॥ १ ॥ अथ जावंत केवि ॥ जावंत केवि साहु, जरहेरवय महा विदेहे अ ॥ सधेसि तेसिं पणउं, तिविहेण तिवंड विरयाण ॥१॥ इति सपूर्ण ॥ अथ विधि ॥ वे जावंति कहीने पती “इवाकारेण संदिसह जगवन् स्तवन ज्ञाणुं ” एम कहीने एक नवकार कही पती “जवसगा हरं” कहेवो, ते “जवसगाहरं” आज पुरतकमां नव स्मरणमां चोथा स्मरण तरिके लखेव ते, तेथी अहीअ्या लख्यो नथी. एम जवसगाहरं कहीने पती सामसामी अंभुली मेवी मोतीयेजरी शीपना संपुटना आकारे वे हाथ जोडी ललाटदेशे लगाडीये, तेने मुक्ताशुकिमुद्रा कहीए, अने स्त्रीने ए मुद्रा न करवी. केटलाक आचार्य कहेतेके, वेहाथ जोनी ललाटे न लगाडीए. एम वे मत वे ॥पवी ए मुद्रये जयवीरयनो पाठ कहिये, ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ जयवीरय ॥ जयवीरय जगगुरु, होज ममं तुह पनावउं जयवं ॥ जय निवेजं मग्गा, गुसारिअ्या, इव फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुश्चाउं, गुरुजण पूआ परज करण च ॥ सुह गुरु जोगो तद्वय, ए सेवणा आनव मखंडा ॥ १ ॥ (हवे आगदी जण गाथा पूर्वाचार्यकत वे, माटे मुख आगळ वे हाथ जोनी

देव वादवान्नी समासिये कहे, ते कहेवे.) वारिजाइ जइवि निआ, एवंधणं वीअराय तुह
 समए ॥ तहवि मम हुज्जा सेवा, नये नये तुहम चाणणं ॥३॥ डककउठ, कम्मकउठ समाहि-
 मरणं च वोहि लात्रोअ ॥ संपज्जम मह एअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगल
 मंगल्यं, सर्व कट्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जेतं जयति शासनं ॥५॥ इति संपूर्णं ॥
 अथविधि ॥ एम “ जय विचराय ” कहीने पवी खमासमणुं दइने अइहाइ जेसु एटवे
 गुरु वंदनानो पाठ कहेवो, (ते पाठ प्रथम वापेवो वे). पवी एक खमासमणुं दइने
 तथा उत्रा अइने “ इवाकारेण संदिसइ जगवन् सबाय संदिसाहुं ” त्यारे गुरु कहे “संदि-
 सावेइ” त्यारे शिष्यकहे “इवं तहत्ति” वळी पण एक समासमणुं देइने, तथा उत्रा अइने
 “इवाकारेण संदिसइ जगवन् सबाय करं,” त्यारे गुरु कहे “करोइ” त्यारे शिष्यकहे “इवं
 तहत्ति ” एम कही हेवा वेसीने एक नवकार कहीने “ जरहेसर वाहुवलि ” नी सबाय
 कहेवी ॥ अथ जरहेसर वाहुवलिनी सबाय प्रारंभ ॥ जरहेसर वाहुवलि अत्रय कुमारो अ
 दंढण कुमारो ॥ सिरिठ अणीआजत्तो, अइसुत्तो नागदत्तो य ॥ १ ॥ मे अज्जा शुवी
 जहो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरीठ केसि करकंरु ॥२॥
 हल्ल विहल्ल सुदंसण, साद महासाल, सादि जहोअ ॥ जहो दसन्नजहो, पसन्न चंदो अ
 जसजहो ॥ ३ ॥ जंबुपट्ट वंकव्वो, गयसुकुमावो अवंति सुकुमावो ॥ धन्नो इयाइ
 पुत्तो, चिवाइ पूत्तो अ वाहुसुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरखिअ, अज्जसुहवी जदायगो

मणगो ॥ कावय सूरि संवो, पञ्चमो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पत्रवो विहु कुमरो, अहकुमरो
ददप्यदारी अ ॥ सिजांस कुरगडुअ, सिजांनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता,
दितु सुहं गुणगणेहि संजुत्ता ॥ जेसिनामग्गहणे, पावपवंधा विवयजंति ॥ ७ ॥ सुत्तासा,
चंदनवात्ता, मणोरमा मयणरेदा, दमयंती ॥ नमया सुंदरी सीया, नंदा नद्दा सुनद्दाय ॥ ८ ॥
राइमई रिसिदत्ता, पजमावइ, अंजणा सिरिदेवी ॥ जित सुजित मिगावइ, पत्तावई चिद्ध-
णादेवी ॥ ९ ॥ वंत्ती सुंदरी रुप्पिणी, रेवइ कुंती सिवा जयंती अ ॥ देवइ दीवइ धारणि,
कदावई पुष्फचुत्ताय ॥ १० ॥ पजमावई य गोरी, गंधारी ललमणा सुसीमा य ॥ जंबुवइ,
सच्चन्नामा, रुप्पिणि, कन्हव महिंसीड ॥ ११ ॥ जत्ताय जत्क दिन्ना, नूत्त्या तह चैव नूत्त
दिन्ना य ॥ सेणा, वेणा, रेणा, नयणीड थूत्तिनदस्सा ॥ १२ ॥ इत्थाइ महासइउं, जयंति अकलं
कसीव कदिअत्त ॥ अज्जवि वज्जइ जासि, जसपफ्हो तिहु अणे सयदे ॥ १३ ॥ इति
संपूर्णा ॥ अथविधि- एरीते सधाय कहेवी. पवी देवसिक प्रतिकमणसां वताव्या प्रमाणे नग-
वानादिक चारने खमासणां देवां, पवी “ इडकारी सुहराइ ” एरीते सुखसाता पूजवी.
पवी “ इत्ताकरेण संदिसह नगवन् राइ पडिकमणं ताडं ” एम कहीने देवसीनी
माफक “ सबस्सविगइयस्स ” नो पाठ संपूर्णं कहेवो. पवी थोग मुजाए वेसीने “ जंकिंचि
नाम तिडं ” तथा “ नमोरथुणं ” अने “ जेअ अइत्था सिद्धा ” कहेवा पवी जग्गा अइने
“ केसि नंतो ” पाठ कहेवो, पवी “ इत्तामि तामि काजसभं जो से ” तथा “ तसुत्तरी ”
अने “ अन्नव उससिएणं ” कही एक दोगस्सनो काजसभ्ण करवो. काजसभ्ण पारी प्रगट

लोगरस कहेवो “ पवी सबलोए अरिहंत चेइआणं ” तथा “ अन्नन्न-उरससिएणं ”
 कहीने एक लोगरसनो काजसग्न करवो. पवी काजसग्न पारी “ पुस्कर वरदिवहे ” तथा
 “सुअरस नगवर्त्तं” अने “ अन्नन्न उरससिएणं ” कहीने अतिचारनी एक गाथा अर्थ
 सहित चितववी ते “ सयणा सएनपाणे ” ए गाथानो काजसग्न करवो. पवी काजसग्न
 पारीने पवी “ सि-क्षाणं बु-क्षाणं, ” कहीने एक खमासमणुं देइ उन्नडक आसने हेवा
 वेसी “ इत्ताकारेण संदिसह नगवन् त्रीजा आवश्यक त्राणी सुहपत्ति पडिदेहुं ” एम
 कहीने पच्चास वोड सहित सुहपत्ति पडि देहवी. पवी उन्नाथइने, “ इत्ताकारेण संदिसह
 नगवन् त्रीजा आवश्यक त्राणी वांदाणा देउं ” एम कहीने वे वांदाणां देवां. पवी उन्ना
 थकांज “ इत्ताकारेण संदिसह नगवन् राइअ आदोउं ” तयारे गुरु कहे “ आदोवेह ”
 तयारे शिष्यकहे “ इहं आदोएमि जो मे राइउं अइआरो कउं ” नो पाठ कहेवो. पवी
 “वयसमण धम्मं ” ए आदि पाच गाथा कहेवी, अने “ गमणागमणे ” नो पाठ कहेवो.
 पवी “ सबसवि ” नो पाठ कहेवो. पवी वीरासने हेवा वेसीने “ इत्ताकारेण संदिसह
 नगवन् समण सूत्र त्राणुं. ” एम कहीने एक नवकार कहेवो पवी “ करेमिन्नते ”
 पवी “ इत्तामि पडिकमिउं ” कहीने, पवी “ चत्तारिमंगल ” नो पाठ संपूर्ण कही, पवी
 “समण सूत्र”नो पाठ जाव वंदामि जिण चोवीसं सुधी कहेवो. पवी एक खमासमणुं देइने
 उन्नाथइने “ इत्ताकारेण संदिसह नगवन् गुरु आसातना निमित्ते वांदाणां देउं ” एम
 कही वे वांदाणां देवां. पवी “अश्चुठिउं” खमावी, अने उन्ना थइ एक खमासमणुं देइ, तथा

उत्रा थइने “ इत्रा करेण संदिसह प्रगवन् चारित्रि वांदणां देउं ” एम कहीने वे वांदणां देवा. पवी उत्रा थइने “ आयरिय उवजाय ” नो पाठ कही पवी “ करेमि जते ” कहीने, पवी “ इत्रामि ठामि काजसगं ” तथा “ तस्सजत्तरी ” अने “ अन्नड उससिएणं ” कहीने काजसगमां तप चिंतवणीनो काजसग्न करवो. ते नीचे प्रमाणे— (श्री ऋषभदेवजीना समयमा उत्कृष्टमां उत्कृष्ट तपस्या वारमासी करता हता, तेने उत्कृष्टी तपस्या जाणवी, अने अजितनाथादिक वावीसे तिरुंकरोना समये उत्कृष्टमां उत्कृष्ट आठ मासनी तपस्या करता हता, तेने मध्यम तपस्या जाणवी; अने श्री महावीर प्रजुना समयमां उत्कृष्टमा उत्कृष्ट तपस्या ठ मासनी हती ते जवन्य तपस्या जाणवी, हवे दातमां श्री महावीर प्रजुनुं शासन वरतेठे तो काजसगमा एम चिंतववो के) ॥ अथ तपचिंतवणा विधि- हे जीव ताराथी उमासी तप थारो ? अथवा पांचमासी थारो ? अथवा चारमासी थारो ? अथवा त्रणमासी थारो ? अथवा वेमासी थारो ? अथवा एकमासी थारो ? अथवा उगणत्रीश उपवास थारो ? एम एक एक उत्तरता जातां पन्नर उपवास आवे त्त्यारे करेहुं के अथवा पक्षधर थारो ? वलीपण एक एक उपवास उत्तरतां आठ आवे त्त्यारे करेहुं के अथवा अठार थारो ? एम एकेको उपवास उत्तरता पवी आंविद के नीवी थारो ? अथवा एकदण्डाणुं थारो ? एम उत्तरता जातां ठेवट नवकारसी तो करवीज. ज्यांसुधी तप करवानी पोतानी शक्ति चावे त्यांसुधि चिंतववो, ते चिंतव्यो तप करवो. पण शक्तिने गोपववी नहि. ते केमके जो शक्ति गोपवो तो वीर्या- तिचार लागे. इति तप चिंतवणविधि—एरीते तप चिंतवणीनो काजसग्न कपीडे पनी क्तसग्न

पारीने प्रगट लोणसस कहीने एक खमासमणुं देह उत्रडक आसने देवा बेसीने नीचे प्रमाणे
 पाठ कहेवो. “ इत्ताकारेण संदिसह प्रगवन् ठठा आवाश्यक त्रणी सुहपत्ति पडिवेहुं ”
 एम कही पच्चास बोलो सहित सुहपत्तिनुं पडिवेहण करवुं. पवी एक खमासमणुं देहने
 तथा उत्रा थइने “ इत्ताकारेण संदिसह प्रगवन् ठठा आवाश्यक त्रणी पच्चाखाण वांदणां
 करुं ” एम कहेवुं, पवी वे वांदणां देवां. पवी उत्रा थकांज हाथनी अंजली करी कुं नमो
 जंबुद्वीपे द्वीपेनो पाठ कहेवो, ते नीचे प्रमाणे जाणवो.॥ अथ कुं नमो जंबुद्वीपे,॥ कुं नमो
 जंबुद्वीपे द्वीपे, ये तीर्थकराश्च धातकी खंभे ॥ ये चापि पुष्करार्ध, तान् सर्वान् प्रांजलि वेदे॥
 ॥ १ ॥ ल्यातोऽष्टापद् पर्वतो गजपदः, सम्भेत शैवात्रिधः, श्रीमात् रैवतकः प्रसिद्ध
 महिमा, शत्रुंजयः पावकः ॥ वैत्रारो विषुवोऽर्जुंदो गिरिवरः, श्री चित्रकूटात्रिध, स्तत्र श्री
 रूपनादयो जिनवराः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ९ ॥ अद्यु, अष्टापद, सम्भेतशिखर, गिरिनार
 शेत्रुंजो, तारंगो, अग्नीजरो, नवपल्लवो, संखेसरो, गोभीपार्थनाथाय नमो नमः, अग्नीजरा
 पार्थनाथाय नमोनमः, नवखंडापार्थनाथाय नमोनमः, नवसारीपार्थनाथाय नमोनमः,
 पल्लवीपार्थनाथाय नमोनमः, अंतरिक पार्थनाथाय नमोनमः, कलिकुंड पार्थनाथाय नमो
 नमः, मनमोहन पार्थनाथाय नमोनमः, जगवद्वज्र पार्थनाथाय नमोनमः, गान्धी पार्थ-
 नाथाय नमोनमः, त्रीन् व्रंजन पार्थनाथाय नमोनमः, सहस्रफला पार्थनाथाय नमोनमः,
 अलौपी पार्थनाथाय नमोनमः, अंत्रणा पार्थनाथाय नमोनमः, चिंतामणि पार्थनाथाय
 नमोनम, घृतकल्लोल पार्थनाथाय नमोनम, सकल पार्थनाथाय नमोनमः, सकल जैन

तीर्थत्रयो नमोनम., श्री अतीत चोवीशी, अनगत चोवीशी, वर्तमान चोवीशीनेमारी त्रिकाल
 वदना होजो, श्री कल्याण सागरसूरी सुगुरुत्रयो नमोनम. ॥ श्लोकः ॥ मंगलं नगवान्वीरो,
 मंगल गौतम. पशु ॥ मंगल स्थूल प्रजाप्या, जेनो धर्मोऽस्तु मंगल ॥ १ ॥ एक जवु जग जाणीयं,
 बीजा नेम कुमार ॥ बीजा वयर वखाणीए, चौथा गौतमस्वाम ॥ २ ॥ अंगुठे अमृतवसे,
 लब्धीतणो प्रभार ॥ ते गुरु गौतम समरिषं, वाङ्मिदकलदातर ॥ ३ ॥ गामतणे प्सा-
 रणे, गोपम गुरु समरत ॥ इहा जोजन पर कुशल, लढी लीज करत. ॥ ४ ॥ सर्वमंगल ० ॥
 ॥ ५ ॥ इतिसपूर्ण ॥ अथ विधि— ए पाठ कहेवो पवी गुरु आदिक वडीलना सुखयी
 यथाशक्ति माफक पञ्चखाण करवुं, पवी तए आवश्यक संजालयां ते देवासिक प्रतिक्रमणमां
 कहेलवे, तेज माफक जाणवा. ए रीते ठ आवश्यक संजाली पवी एक खमाममणुं देवुं
 हेवल जोगसुजायी वेशी “ इहाकारेण सदिसद् नगवन् वीर स्तुति नष्टुं ” एम कहीने
 “ नमो खमसमणाणं इहामो अणुसठि तिहयरे नगवते ” ए पाठ कहेवो, पवी “ जंकिचि ”
 तथा “ नसुख्यणं ” अने “ जेअ अइअ सिखा ” एम कहा पवी जना थइने “ अरिहं-
 चेइअणं ” आदि चार स्तुति वडे देव वांदावा. (प्रजातना देव वंदनामां स्तुतिव कल्याण
 कंदनिज स्तुति कहेवी.) चौथी स्तुति कहावाद हेला जोगसुजाये वेजीने “ जंकिचि ” तथा
 “ नसुख्यणं ” अने “ जेअ अइअ सिखा ” पवी “ जावंति चेइअइं ” तथा “ जावंत केवी
 साहु ” कहीने पवी तेमज वेला थकाज “ इहाकारेण सदिसद् नगवन् स्तवन नष्टुं ” एम
 कहीने, एक नवकार संपूर्ण कहीने “ केवलनाणी ” स्तवन कहेवुं, ते नीचे प्रमाणे ॥ अथ

केवलनाणी बृहत् चैत्यवंदन स्तवनं प्रारंभ ॥ केवल नाणी श्री निरवाणि, सागर महाजस
 विमल ते जाणी ॥ सर्वानुभूति श्रीधर गुण खाणी, दत्त दामोदर वंदो प्राणी ॥ १ ॥
 सुतेज स्वामी सुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिष्याति पंचम नाणी अस्ताष नेमीश्वर अनिद
 ते जाणी, जशोधर सर्वो मन मांहि आणि ॥१॥ कृत्तरथ जपतां नवी होए हाणी, धमीसर
 पाम्या शिवपूर राणी ॥ शुश्रमति शिवकर रपंदन टाणी, संपतिना गुण गाए इंद्राणी ॥३॥
 वाचक मूला कहे जगते प्राणी, स्तवन प्रणे जेम थाळ नाणी ॥ एचोवीशी नित नित गाणी,
 मुक्तिणां सुख जेम द्यो प्राणी (प्राणी) ॥४॥ दाद बीजी ॥ अर्दें अजित जरे, संजव
 अचिनंदन प्रणुं ॥ श्री सुमतिजरे, पद्मप्रभुजिना गुण शुणुं ॥ श्री सुपारसरे, चंद्रप्रभु
 जिन जाणीये ॥ सुविधि शीतलरे, श्रेयांस हरखे वखाणीए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखा-
 णीए श्री वासुपूज्य, विमल अनंत धर्म शांतीए ॥ कुंशु अर मद्धि सुनिसुव्रत, नमि
 नेम ध्याळं चित्तए ॥ सूर धीरह पार्श्वीरह, वर्तमान ए जिनवरा ॥ करजोडी वाचक
 प्रणे मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ २ ॥ दाद बीजी ॥ पद्मनाभ सुरदेव, सुपार्श्व स्वयं
 प्रभु होइ ॥ सर्वानुभूति देवसुत, उदय पेढालज जोइ ॥ १ ॥ पोटिल सतकीरती,
 सुनीसुव्रत अमम ति. कषाय ॥ निपुलायक निरमम, चित्रगुप्त वंदो पाय ॥१॥ समाधि सु-
 संवर, जशोधर विजय मल्लीदेव ॥ अनंत वीरज नडकृत, तेहनी कीजें सेव ॥ ३ ॥
 अनगत जिनवर, होशो तेहनां नाम ॥ प्रणे वाचक मूला, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥
 दाद चोशी ॥ महा विदेह पंचमऊर, प्रत्येकें जिन चार ॥ सीमंधर जुगमंधर, बाहु

सुवाहु अ सुखकर ॥ १ ॥ सुजात स्वयं प्रभुस्वामी, उसप्रानन वेहुं नामी ॥ अन्त
 वीरजदेव, सुर प्रप कर्ं अ सेव ॥ २ ॥ विशाल वर्जधर साहु, चजानन चजवाहु, युजंग
 ईश्वर गाडं, नेमि प्रभु चित ए लाडं ॥ ३ ॥ वीरसेन महाप्रजवदं, देवजसा दीठे आनंद ॥
 अजित वीरिय वदन, शाश्वता ऋषना चजानन ॥ ४ ॥ वर्धमान वारिषेण ईश, ए
 हुआ जिन चोवीश ॥ एवा ठहुंए जिनवर, वाचकमूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥ ढाल पांचमी ॥
 हवे पायावे लोक मख, जिहा असुर कुमार ॥ लाख चोसठ जिन नूवन अवे, तिहां
 करु जुहार ॥ १ ॥ नागकुर माहे कहा, तिहा लाख चोराशी ॥ एता जिनहर तिहां नसुं,
 थाज समकित वासी ॥ २ ॥ सोवन कुमार मख लाख, बहुतेर प्रासाद ॥ ठहुं लाख वाधु
 मख सुणिये सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकुमार दिशाकुमार, वळी उदधिकुमार ॥ विच्युत् स्तनित
 कुमार अने वदी अशिकुमार ॥ ४ ॥ एवएथानकजाणिएं, प्रत्येक जिनहर ॥ ठहुंतेर बहुतेर
 लाख तिहां ॥ त्रविअण जिन सुखकर ॥ ५ ॥ एवकरे सवि मळी, बहुतेर तिहां लाख ॥ सात कोनी
 जिनहर नसुं, श्री जिनवर लाख ॥ ६ ॥ लाख साठ निव्यासी कोनी, अने तरसें कोनी ॥
 जिन पडिमा श्री जिनतणी, वंडं वे करजोनी ॥ ७ ॥ असख्या व्यंतर जोइसी, असंख्या
 जिनहर, ॥ असंख्य पडिमा जिन तणी, नमिय नहिं दुर्गातिहर ॥ ८ ॥ वाचक मूला कहे
 देव, देज सुमति सदा सुठ ॥ जिन वचने हुं वीन अरु, गाडं जिनजी तुठ ॥ ९ ॥ ढाल
 ठडी ॥ सोहम दशान सनत कुमार ए, माहिद वप्र रे दांतकसार ए ॥ नुटक ॥ सार शुक्र
 अने सहसारह, अानत प्राणत आरणा ॥ अच्युत नवभूवेयक त्रिक तिहां, पंचअनुतर

तारणा, ॥ अनुक्रमे प्रासाद कहीये दाखसहस सत संख्या ॥ वतीस अठावीश वारह
 अठ चड दाख अख्या ॥ १ ॥ पन्नास चावीश ठ सहस जिनहरा दो दो दोढज दोढज
 सतवरा ॥ शुटक ॥ वरा सतवर इयारोतर सतोतरसो जाणीं ॥ एकसो उपर पंच
 अनुसर, अनुक्रमे वखाणीं ॥ सधेमळी जिनहर जिनहर दाख चोरशी साख ए ॥
 सहस सताणुं आगवा तिहां, वीशने त्रण दाखए ॥ ९ ॥ चाल ॥ एकसो कोडीरे, वावन
 कोडीएं ॥ दाख चोरणुरे संख्या जोडीएं ॥ शुटक ॥ जोडीएं चोसठ सहस एकसो,
 चादिसें तिहा आगवी ॥ जिन प्रासाद एकसो असिअ देखे, वंड प्रतिमा उज्वली ॥
 चैयसरख्या ऊर्ध्व दोकें वीर वचन विख्यातए ॥ वाचक मूला कहे त्रणजो, सतवन ए
 परत्रात ए ॥ दाद सातमी ॥ वेयड गिरि सितरि सो जिनहर, दृषधरना तिहा त्रीश जी ॥
 कुरुडुभना दश जिनहर बोध्या, गजदुसें तिहां वीश जी ॥ १ ॥ अशिअते जिनहर कुरुडुम
 परिध, असिअ वखारे जाणुं जी ॥ मेरुतणा पंचासी जिनहर, इरखुकारे चार वखाणुं जी
 ॥ ९ ॥ मानुंपोतर पर्वत तिहां चारज नंदीसरमां वीश जी ॥ कुंभल रुचक तिहां चार चार
 जिनहर, रूषत्रादिक तिहा ईश जी ॥ ३ ॥ पंच सया इयारें अधिका, जिनहर तिठें दोकेंजी ॥
 परिमा एकसठ सहस चारस, बोली सधवे थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो उर्ध्वने तीठें दोकें,
 सवे मली कोनी अठेंजी, ॥ दाख ठपन्नने सहस सताणुं, पण सय चोत्रीश पाठें जी ॥ ५ ॥
 जिन पडिमा पन्नरसें कोनी, वेतावीस वली कोडीजी ॥ दाख पंचावन सहस पण विस,
 पणसय चावीस जोडीजी ॥ ६ ॥ एता तवन त्रणे जे त्रावें, प्रह उगमते सूरें जी ॥ वाचक

मूला कहे गुणगतां, दुर्गती नासे दूरेंजी ॥ ७ ॥ हाव आठमी ॥ अजावय समेत शिखर
 गिरि ॥ साजन जिअ ॥ रेवत गिरि भेनुंज ॥ गजपद् धम्म चक्र कहुं ॥ सा० ॥ वैचार
 गिरि जतंग ॥ १ ॥ रहावते कुंजरा वते ॥ सा० ॥ तिहु अण गिरि ग्वाव ॥ काशी अवंती
 जाणीं ॥ सा० ॥ नागोर जेसलमीर ॥ २ ॥ सोरिपुर ह्नीणजरे ॥ सा० ॥ अवद
 इरावण पास ॥ पीरोजपुरें नूअड नलो ॥ सा० ॥ फव विधि पूरें आश ॥ ३ ॥ विकानेर
 ने भेफते ॥ सा० ॥ सीरोही आबुधुंग ॥ राणकपूर ने सादडी ॥ सा० ॥ वरकाणे मनरंग
 ॥ ४ ॥ चीन भावने कोटडे ॥ सा० ॥ बाहडमेर मजार ॥ रायधणपूर रळियामणुं ॥ सा० ॥
 शांतिनाथ दयोड जुहार ॥ ५ ॥ साचोर जाबोर राडडे ॥ सा० ॥ गोडी पूरव पास ॥
 पाटण अमदावाद वळी ॥ सा० ॥ संखेसर दीजें नास ॥ ६ ॥ अमीऊरे नव पद्वेव ॥
 ॥ सा० ॥ नवखंड थराडें ताम ॥ तारंगे बुरहानपुरे ॥ सा० ॥ वंदूं माणक ताम ॥ ७ ॥
 खंजायतने तारापुरें ॥ सा० ॥ मातरने गंधार ॥ लोडण चिंतामणि वरुं ॥ सा० ॥ सूरत
 ड्योड जुहार ॥ ८ ॥ देवक पाटण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवेनगर वंदीजोय ॥ दीवाटिक
 सवि वंदरे ॥ सा० ॥ अंतरीक सिरिपुत् होय ॥ ९ ॥ वफनगरने हुंगरपुरे ॥ सा० ॥
 इडर मावव देशे ॥ कट्याणक जिहां जिन तणुं ॥ सा० ॥ मनसूधे प्रणमस ॥ १० ॥
 नामनगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जिन मूरति जिहां होय ॥ वाचक मूला कहे मूळ ॥ सा० ॥
 वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ अथ कलश ॥ बन्धुए जिनवर बन्धुए जिनवर अथो ऊर्ध्वने
 लोक तीर्थ जाणुं ए ॥ सासय असासय जैन पफिमा ते सधे वखाणुं ए ॥ गज विधिपद्क

पूज्य प्रगट श्रीधर्ममूर्ति सुरिङ्ग ॥ वाचक मूढा कहे जणतां, रुचि टुचि आणङ्ग ॥ १ ॥
 इति श्री टुचु चैत्यवंदन स्तवन केवलनाणी संपूर्ण ॥ अथ विधि-ए रीते केवलनाणी स्तवन
 कहेवुं. पवी "जया तिज्यरा" कहेवा, पवी हेवा वेठां थकांज कहेवुं "इहाकारण
 संदिसह जगवन् राह प्रतिकमण करतां जे कांडण" ए पाठ संपूर्ण कहेवो, दैवासिक प्रति-
 क्रमण माफक. ॥ ॥ इति अणगारस्य राहप्रतिकमण विधि संपूर्ण. ॥ अथ अणगारस्य
 पाक्रिक प्रतिकमणविधि ॥ उत्तंच-प्रवचनसारोक्षरे ॥ मुहपोत्ति वंद यणं संबुधा खामणं
 तहाजोए ॥ वंदण पत्तेय खामणणी, खामणाय सुतंच ॥ १ ॥ सुतं अञ्जुताण उसगो
 पोत्ति वंदणं तहय ॥ पज्जात खामणणिय, एस विहि पसक पडिकमणे ॥ २ ॥ प्रथम
 "इरियावहि" श्री मांडीनि ठेक देवसीक पडिकमणां "समण सूत्र" कहेवाय ठे, त्यांमुधी
 सर्व विधि ते प्रमाणे करवी. तेमां एटवो विशेष ठे के चैत्यवंदनी जगोए नीचे प्रमाणे
 "अष्टोत्तरी तीर्थमादा" कहेवी ॥ श्री अचलगजेश्वर श्रीमन्महेंजसिंहसुरि विरचित
 श्री अष्टोत्तरी तीर्थमादा प्रारजः ॥ अरिहंतं जगवंतं, सबहुं सबदंसि तिज्यरं ॥ सिरु बुद्धं
 तिथ, प्रमपयडं जणं अणिमो ॥ १ ॥ जयजय तिहुयण मंगल, जहारय सामि-
 साल जयजय ॥ देवाहिदेव जगपटु परमेसर परमकारणिय ॥ २ ॥ जयजय जगि
 जयव, जवजलहिदीय तिहुअणपद्व ॥ जयजय जगचितामणि, तिहुअण चूडामणि
 जयजय ॥ ३ ॥ जयजय सिवपद सेंदण, असरण जण सरण दीन उररण ॥ जयजय
 जयजय ॥ जणरंजण विजजरमरण ॥ ४ ॥ जय कम्मजलहितरण, तरंड गुण

रयण धारण करंडाजय विसमवाण वारण वरंरु, सुणि सुमण वणसंडा॥५॥धन्नोह पुणोह,
 सहवो मह एस माणुसो जम्मो ॥ जंजिण तुह पयपकय, पसाय मन्निरुढो॥६॥धन्नो एसो
 दिवसो, जाम सुहुत्तोवि एस सुपवित्तो ॥ जंमि तुम तिजगगुरु, त्रवमरुपह सुरतरु पत्तो
 ॥ ७ ॥ अर्धं मह चित्तमणि सुरतरु सुरगावि त्रह कुंभाइ ॥ सयत्तं सुवहं जं पट्ट, अत्तख
 पुब्बो तुमं लक्षो ॥ ८ ॥ नरय त्रव तिरिय नर सुर वर समुदय नमिय चत्तण कमलडणं ॥
 तिट्ठुअणजण सुरतरुसम, महात्ति समवि नमहत्तिजगपहुं ॥ ९ ॥ अत्तदस दोसर-
 हिए, सहिए चत्तीस अइसयवरोहि ॥ हयकोहे कयसोहे, अत्त महापाडिहेरोहि
 ॥ १० ॥ जियरगो जियदोसे, जियमोहे अत्तकम्मनिम्महणे ॥ सिवपुर पहसत्ताहे, गय-
 वाहे शोमि जिणनाहे ॥ ११ ॥ त्ररहंमि तीयकात्ते, पट्टमं वंदामि केवत्ति जिणंदं ॥ निवा-
 णी जिण सायर, महाजसं केव विमल जिण ॥ १२ ॥ सत्थाण त्रूइ सिरिहर, दत्तं दामो-
 यर सुतेयं च ॥ सामिजिणं सुणि सुव्वय, सुमइं सिवणइ तहत्ताहं ॥ १३ ॥ नमिमो नमी-
 सर जिणं, अत्तिलं जसोहरं कयत्तं च ॥ धम्मोसर सुद्धमइं सिवकर जिण संदण जिणंदं
 ॥ १४ ॥ संपइनामं वंदे, चत्तीसइमं जिणं सिवं पत्तं ॥ अत्तुणत्त वट्टमाणे, कमेण थुणिमो-
 जिणवरिदे ॥ १५ ॥ नमिमो रिसह जिणंदं, अजिय जिणं संत्रव च तित्थयरं ॥ अत्तिन-
 दण जिण चंदं सुमइं पजमप्पह सुपासं ॥ १६ ॥ चंदप्पहं च सुविहि, सीयत्तनामं जिणं च
 सिद्धंस ॥ वसुपुजं विमल तह, अणत्त धम्मं जिणं संति ॥ १७ ॥ कुंथुजिणं अरनाहं
 मत्ति सुणिसुव्वयं च नमिनाहं ॥ नोमि पासं वंदे, चत्तीसइमं च वीरजिणं ॥ १८ ॥

सिरिपञ्चमनाहनाहं, वंदामि सुरदेव तिष्ठपरं ॥ तद्दयं सुपासनामं, सयंपह जिणं तदा
 तुरियं ॥ १९ ॥ सबाणु नूरदेवं, देवसुब्बं उदयसामि पढावं ॥ पोटिल सय कित्तिजिणं, सुणि-
 सुवय अमसामिं च ॥ २० ॥ पणमामि निकसायं, निप्पुलायं च निम्ममत्तं च ॥ सिरि चित्त-
 गुत्तसामिं, समाहि जिणं संवर जिणंदं ॥ २१ ॥ जसहर विजयंमद्धि, देवुबायं अणंतविरि-
 यं च ॥ चजवीसद्धं न्हं, इच्च जाविजिणे नमंसामि ॥ २२ ॥ वंदे वेअह्हंसु, सासय जिणेचे-
 इयाणि सितरिसयं ॥ तीसंवासहरेसु, वीसं गयदंतसेत्तेसु ॥ २३ ॥ दसकुरुतर सिहरेसु,
 तेसिं परिही वणेसु तह अस्सिद ॥ वक्कर गिरिसु अस्सिद, पणसीद मेरु पण गाम्मि ॥
 ॥ २४ ॥ उसुयार गिरिसु चजरो, चत्तारि नमामि मणअ सेत्तांमि ॥ नंदीसरंमि वीसं,
 कुंडल रुच्चणेसु चज चजरो ॥ २५ ॥ एवं गिरिक्कभेसु, गिरि णद तरसु तरुण कूडेसु ॥
 इक्का राहिय पणसय, सासय जिणन्नवण महिवलए ॥ २६ ॥ वावत्तरि दाकाहिय, कोडी
 सत्तेव न्नवण न्नवणेसु ॥ जिणन्नवणेज अस्सेवे, वंतरनयरेसु पणमामि ॥ २७ ॥ वणचेइय
 सखणुणे, जोइसिएसु तदा विमाणेसु ॥ तेवी साहिय सहसा, सगानउई लक्क चुलसीई ॥
 ॥ २८ ॥ सुरलाणेसु सर्वाहं, सन्नपणणे सतिहोइ पडिमाणं ॥ चेइयमअउसयं, चेइय
 दारेसु वारसणं ॥ २९ ॥ भित्तियं सयं अस्सीयं, चजवीससयं तु नंदिसर दीवे ॥ पइचेइय
 सेसेसु, वीससयं पन्निम तिरिलोए ॥ ३० ॥ न्नवणवइ न्नवणेसु, कप्पाइ विमाण तहय
 महिवलए ॥ सासयपडिमा पनरस, कोमीसय विचत्तकोमीज ॥ ३१ ॥ पण पढात्तक्कपणवी-
 स सहस पंचय सयाज चादीसा ॥ तह वणजोइसुरेसु, सासय पन्निमा पुण अस्सेत्ता ॥ ३२ ॥

जसत्राचंदाणए वरुमाए तहय सिरि वारिसेणाय ॥ सवासासय पडिमा, पुणपुणरवि
 एय चजनामा ॥ ३३ ॥ जंबूधायद पुकर, दीवे विजयाण सतरिसयंमि ॥ त्रविए जुवि
 वोहते, विहरते जुगवमरिहते ॥ ३४ ॥ नमिमोडकोसपए सतरिसयं तह जहवजवी
 सं ॥ कण्ण कवहोय विहुम, मरगयवररिठरयणनिने ॥ ३५ ॥ जंबूदीवे थायइसेंडे तह
 चेव पुकररुंय ॥ सीमंथर जुगमंथर वाहुसुवाहु सुजाड आ॥ ३६ ॥ ठठोसयंपहपहु, जसत्रा-
 णए तह अणंत विरिड अ॥ सरुपहो विसावो, वज्जथरो तह इगारसमो॥ ३७ ॥ चंदाणो
 सिरिचद, वाहुदेवो जुजंग ईसरज॥ नेमि पह वीरसेणो महत्रहो देवजस सामी॥ ३८ ॥ सिरि
 अजिअ विरिय जिणो, इयए संपयं विहरमाणे ॥ वंदे वीसजिणंदे, तिहुअण वदे सुकयकंदे
 ॥ ३९ ॥ इयतीअ अणगणय वडमाणया सासया य विहरता ॥ थुणिया जिणंदचंदा,
 पयंपकय पणयमाहिंदा ॥ ४० ॥ अठावयजुजंते गयअगणए अ धम्मचके अ ॥ पासर-
 हावत्तणयं, चमरुपायं च वंदामि ॥ ४१ ॥ अठावय गिरिए, पणमेमि थुणेमि तहय
 आणमि ॥ धम्म थुरधरणवसत्रं, जसत्रं पणमंत सुरवसत्र ॥ ४२ ॥ अजिआइणोवि
 सेसे, वरअइसेसे जिणोउ तेवीसं ॥ तह सासय चजनामा, सोलसपनिमा उथुनेसु ॥ ४३ ॥
 जसत्रस समोसरणा, पयंपकय अंकेणा जसिगममणा ॥ तवलरिरोहणासिद्धि, जय
 अठा वयं मिथुणे जसत्रं ॥ ४४ ॥ सुर असुर खयर नरवार, सुरिद वंदिजमाण जिण-
 त्रयण ॥ अठावय गिरितिडं, नंदंउ जावीर जिण तिडं ॥ ४५ ॥ जावय कुलसिरि
 तिडंउ, नेमी वयगहण नाण तिवाणे ॥ जहिंपत्तो सो नंदंउ, उज्जंतो तिरुणमिड तिडं

॥ ४६ ॥ तं रेवइ गिरि सिहरं, तिलोयसार तिलोय जंणमहियं ॥ ताणे तिलाय तिलज,
 तिलोय पहुनेमिं जहिं पत्तो ॥ ४७ ॥ रेवय गिरिमि त्रवजल, हि पोयत्रूयंमि नेमिति-
 जामो ॥ इहियंजजिय वगं, सग्गपवगं लहुं नेइ ॥ ४८ ॥ सेले दसन्नकर्णे, दसन्न भइस्स
 गव दरणता ॥ सक्को देवाहिवर्क, नियइहिं दंसए एवं ॥ ४९ ॥ चजसडि करिसहसा, सवे
 चजसडि अइ सुहजुत्ता ॥ पइसुहदंता अइज, पइदंतं अइवावीज ॥ ५० ॥ पइवा चिअइ
 कमला पइ कमलं लक्क पत्त पइपत्तं ॥ वत्तीस विहं नान्य, रइ कणिय रयणपासाज ॥ ५१ ॥
 पइपा सायं अइज, तइहासणयाइं रयण चित्ताइं ॥ सीहासण भेगेणं, सपायपीढं रयणमय-
 चित्तं ॥ ५२ ॥ पइ सिहासण मिंदो, पइतइहासणग मग्ग महिसीज ॥ इयतिपयाहिण पुब्बं,
 गयअग्गपयाणि जुवि दोवि ॥ ५३ ॥ पक्किविंवि अतोसक्को, वंदइ वीरं तज दसण तइो ॥
 विहि अमणसोहरि चो, यणेण विजजय पवइज ॥ ५४ ॥ तो सुखइ सुणिचलणे, खाभिय
 जय यूहियं दिवं पत्तो ॥ गयअग्गपज एवं, जाउ ताहिं शुणह वीरजिणं ॥ ५५ ॥ तक्क सिजाए
 जसयो, वियादि अगम्म पक्कि जजाणे ॥ जा वाहुवल्लि पत्ताए, एई ताविहरिज त्रयवं ॥
 ॥ ५६ ॥ तो तहियं सो कारइ, जिण पयटाणंमि रयणमयणपीढं ॥ तइ वरि जोयण-
 माणं, मणिरयण विणभिमय दंडं ॥ ५७ ॥ तस्सोवरि रयणमयं, जोयणपरिमंढं
 पवरचक्रं ॥ तं धम्मचक्रतिढं, त्रवजलनिहि पवर बोहिवं ॥ ५८ ॥ सिवनयारि कुसग्गवणे,
 पासो पन्निं ठिज अ धरणिंदो ॥ उवरि तिरत्तं उत्तं, धरिसु कासीय वरमहिसं ॥ ५९ ॥
 तं हेजं सा नयरी, अहिवत्ता नामज जणेजाया ॥ तहियं नम्मिसो पासं, विग्ग विणासं

गुणावासं ॥ ६० ॥ पन्निमाए त्रियं पासं, कमजो हरिकरिपिसाय पमुहेहिं ॥ जवसग्नि
 ज्यतो वरिसइ, अखंफ जुग सुसदधारहिं ॥ ६१ ॥ उदगं जिणनासग्गं, पतंतो वट्ठु
 करेइ धरणिंदो ॥ जिणजवरि फणालत्तं, त्रोगेणय देहवहि परिहि ॥ ६२ ॥ चरणाहो
 गुरुनादं, कमदं तो कमजु खामिउं न्हो ॥ धरणो गउं सवासं, जियउवसग्गं नमह
 पास ॥ ६३ ॥ सिरिवयर सामि पढमा, रुहिए सेजांमि तेसिं खुहेण ॥ पढमं कयमा राहण,
 दोगपावा तज चउरे ॥ ६४ ॥ रहरुढापयाहिण, काउं महिमं करिसु खुइरस ॥ तं
 हेउं तय तिहं रह आवत्तं ति तं नमिमो ॥ ६५ ॥ सिरि वयरसामि राहण, गिरिमि
 सको रहेण अहि करिण ॥ पयाहिण तो सेविय, रदावतो कुंजरवत्तो ॥ ६६ ॥ जव
 य वज्जपवाणो, चमरो वीरपयंतरे नितुको ॥ हरिणा सुको तत्तो, जिणपुरज दंसए नइ ॥
 ॥ ६७ ॥ तो तदि तिहं जायं, चमरुप्पायं च सुंसुमारपुरे ॥ सोमवणे तदिं वीर, तिहुअए
 जणववदं नसिमो ॥ ६८ ॥ इय बहुविह अहेरय, निहीसु अइवयाइ ताणिसु ॥ पणमह
 जिणवर चंदे, सुजत्तिअर नमि रमाहिंदे ॥ ६९ ॥ मासं पाजवगया, वव्धारिय पाणिणो
 जिण वीसं ॥ सिद्धि गया जहत्तयं, नमिमो समेयगिरि सिहरं ॥ ७० ॥ जं समेए संधा,
 अजिय जिणंदा परपि आयंसु ॥ तेण य सो महत्तिहं, तिवोयजण तरण समहं ॥ ७१ ॥
 जह य पढमंसिक्षो, पुंनरिज णेगसुणिसहस्स जुज ॥ तक्कावा जा जंवु, असंख कोडिज
 ता सिंश ॥ ७२ ॥ जह य सिंश पंथ, पञ्चुन्न संवाइ जायवा वहेवे ॥ तं विमदं विमदगिरि,
 थुणिमो अइविमदपयहेउं ॥ ७३ ॥ जह य नेमिं सुत्तुं, नूणं उस चाइणो जिणा रुहिया ॥

कह मन्त्रह तेवीसं, जिणपय जुयदाण पडिविवा ॥ ७४ ॥ तद्विय सिरिसेत्तुज, सुरनर पुञ्ज
 अणेगवरचुञ्जे ॥ पणमह जिणवरवसन्नं, वसन्नकं वसन्न सुमिणं चं ॥ ७५ ॥ तच्चं नियाण-
 वाए, सेयपडागा निसाइ जहिं जया ॥ खवगपन्नावा तं शुणि, महुराइ सुपास जिणधून्नं
 ॥ ७६ ॥ नरुअठे कोरटाग, सुधयजिय सत्तु तुराग जाइसरो ॥ अणसण सुर आणंतु,
 जिण महिममकासि तो तद्वियं ॥ ७७ ॥ अस्साववोद्वितिवं, जायं तं नाम पुणवि
 वीयमिणं ॥ सिरि समदिया विदारी, सिदव धुय कारि उशारी ॥ ७८ ॥ जिअसत्तु आस
 समली, पास सुपासा सुदसणा देवी ॥ निय निय सुत्तिहिं अजावि, सेवंते सुधयं तद्वियं
 ॥ ७९ ॥ इकारवक चुवसी, सहस्स किंचूण वरिस जस्स ताहि ॥ जीवंत सामि तिवे,
 नरुअठे सुधयं नमिमो ॥ ८० ॥ सन्नद्विय पान्हिरं, पासं वंदामि थंनण पुरमि ॥ पावय
 गिरिवर सिदरे, इहदवनीरं शुणे वीरं ॥ ८१ ॥ कन्नजकानिव निवेसिय, वरजिण न्नवणं मि
 पाडलागामे ॥ अइ चिरसुत्तिं नेमिं, शुणि तह संखेसरे पासं ॥ ८२ ॥ पारकर देस
 मंणण, नूए गुडर गिरिमि जसन्नजिणे ॥ नंदज तिवोयतिलज, अवलोयणमित्त दत्तफलो
 ॥ ८३ ॥ सुराचंदे इन्निय, इन्निय ठेवणंमि जिणन्नवणे ॥ चजरो वाहड सेरे, पासं
 च शुणामि राडदहे ॥ ८४ ॥ सिरि कन्नजक नरवइ, कारिय न्नवणंमि कीर दारुमए ॥
 तेरस वहर सइए, वीरजीणे जयज सन्नजरे ॥ ८५ ॥ बडुविह अउरियि निही, रहो य
 पडहो अ पयन साद्वो ॥ वलन्नि च गाइ इन्नियि, जालजरे वीरजिण न्नवणे ॥ ८६ ॥
 नव नवइ दाक्कथणवइ, अलश्वसे सुवन्नगिरि सिदरे ॥ नाहड निव कावीणं, शुणि

वीरं जसक वसहीए ॥ ८५ ॥ तह चिर त्रवणे वीए, वंदे चंदप्पहं तज तइए ॥ पणयजण
 पूरियासं, कुमर विहारमि सिरिपासं ॥ ८६ ॥ बन्नेवि पद्धि नाणय, देवाणंदीसु वीरनाहस्स
 ॥ पय पजमजुयल अंक्रिय, थूनजुए चेइए वंदे ॥ ८७ ॥ मेवाड देसगामे, थुणेमि त्ती-
 इ नंदिसम नामे ॥ सगडाल मत्तिकारिय, जिणत्रवणे नायकुलतिलयं ॥ ८८ ॥ सुक्रीसल
 सुणि सुचरिय, पवित्त सिहरंमि सुग्गालगिरिमि ॥ सपइ चित्तजडक्के, चिरतर वहचेइए
 थुणामे ॥ ८९ ॥ अवूय गिरिवर सिहरे, जिणत्रवणं विमल ठावियं विमलं ॥ विमलपि
 अरेहिं दसहिं, गयं दरुद्धेहिं कयमहिमं ॥ ९० ॥ अइरम्म मइविसालं, महिद्धियं सुरकय
 व पडिहाई ॥ वर जिण त्रवणं वीयं, तज सिरि बहुपाल कयं ॥ ९१ ॥ धीय क्कवधीय निम्मिय,
 पयंड धयदंड मंडियं त्रनयं ॥ वरसाय कुंनगायदंय, कुंनसोन्नंत थूनगं ॥ ९२ ॥ पढम
 जिण त्रवण जलनिहि, गथे चित्तमणिं थुणे उसन्नं ॥ अवर वरत्रवणसुरगिरि, तडिअम-
 रतस्व नेमिजिणं ॥ ९३ ॥ नयणङ्गं व सुत्तारं, सिरिधर जुयलं वरयणपडिपुणं ॥ रेइइ जिण
 त्रवणङ्गं, अवुय गिरिवर नरिदस्स ॥ ९४ ॥ अवुअ गिरिवर मूले, सुंडथले नंदिरसक अ
 हन्नगे ॥ ठजमडकालि वीरे, अचलसरीरोठिठ पफिमं ॥ ९५ ॥ तो पुव्वराय नामा, कोइ
 महप्पा जिणस्स त्तीए ॥ कारइ पफिमं वरिसे, सगतीसे वीरजम्माल ॥ ९६ ॥ किच्चाणा
 अठारस, वाससयाएय पवरातिजस्स ॥ तो भित्तवणसमीर, थुणेमि सुंडहले वीरं ॥ ९७ ॥
 महइ महालय अइसय, निम्मल अठेर त्रूय वरसुत्ती ॥ अजिय जिणो तारणगिरि, कुमार
 निव ठाविज जयज ॥ १०० ॥ वायडनयरे सुणिसुव्वयस्स जीवंतसामि पडिमहं ॥ वंदे

तद् वीरजिणं, सत्तरस वडरसया जरस ॥ १०१ ॥ तद् सिरिमादा रासण, वंभाणाणंद सिद्धि
 पुरपसुद्धे ॥ कासदहअजाहर, पुरेसु चिरचेइए अणिमो ॥ १०२ ॥ गुज्जर मावव कुंकण,
 महारत सोरत कव पंचादे ॥ मरुसंचरि महुराजरी, दडिणपुर सोरियपुराइ ॥ १०३ ॥ तिहु-
 अण जिग्गोवगिरी, कासि अवंती मेवान मईसु ॥ देसेसु जिणे शुणिम, दिठ अदिठे सुर
 असुए ॥ १०४ ॥ तद् जंबूदीव थायइ, पुकरदीवड विजय सतरिसए ॥ जे केइ गामागर,
 नग नगराइय तहियं तु ॥ १०५ ॥ जाणि गिहचेइयाणि य, जाणि य जिणत्रवण तेसु
 जा पडिमा ॥ गुरुआ जा पण थाणुसय, दहुआ अंगुठ पवसमा ॥ १०६ ॥ सुरनरकय
 मणिकंचण, रीरी रुण्याइ जाव दिप्प मया ॥ ठजमठेदी असुणिय, संखाज नमामि ता सबा ॥
 ॥ १०७ ॥ जे ईया तिजयरा, जे य त्रविस्सा अणणए कादे ॥ जे आवि वडमाणा, ते सबे
 जावठं नमिमो ॥ १०८ ॥ सुरकय मणुयकयं वा, जुवणतिणे सासयं च जं तिठं ॥ तं सयव-
 मिह ठिजविहु, मणवयण तणुहिं पणमामि ॥ १०९ ॥ जव जिणाणं जम्मो, दिस्का-
 नाणं निसीहिया आसी ॥ जाय च समोसरणं, ताठं त्रूमिठं वंदामि ॥ ११० ॥ एवम-
 सासय सासय, पडिमा शुणिया जिणंद चंदाणं ॥ सिरिमं माहिंदं त्रवाणिंद, चंदसुणिवंदं
 शुअ महिया ॥ १११ ॥ इतिश्री विधि पद्मगोत्रेथर (अचल गत्रेथर) श्रीमन्महेंद्रसुरि
 विरचित तीर्थमादा स्तवन चैत्यवंदन समाप्तः ॥ ॥ अथाविधि ॥ ए रीते “अष्टोत्तरी तीर्थ-
 मादा” कहेवी, अने स्तुति एटवे थोइठनी जगोए “सद्भातरया”नी चार स्तुतियो कहेवी.
 ते आ पुस्तकमां अगाव दखी ठे, तेथी अहिं दखी नथी एटवो फेर जाणवो, पवी

“समणसूत्र” संपूर्ण श्रया बाद एक खमासणुं देवुं, पती उन्नडक आसने हेता वेसीने “इत्ताकारेण संदिसह नगवन् देवसिञ्चं आलोइञ्चं पडिकता इत्ताकारेण संदिसह नगवन् टीक जयणा मांडलामाहे प्रवत्तुं” (आ जगोए एक जण एम कहेके “खांसकरे ते जयवहार, टीक करे ते माडला वाहार ” ए रीति सर्वने सूचना करवी अने टीक आवेद पुरुपनेकाजसअ कर्था बाद मांडलामा देवो. ए काजसगण करवानी विधि आ पुस्तकमा आगल लखी ठे, तेशी आही लखी नथी. आहीथी देवमीनी जगोए ‘पक्की’ शब्द कहेवो) एम कही पच्चास बोलो सहित मुहपत्तिनी पडिदेहणा करवी पती एक खमासणु देइ जना श्रद “इत्ताकारेण संदिसह नगवन् पक्की वांदणां देवं” एम कही वे वांदणां देवां. पती जना श्रकांज ॥ अथ पखी सर्वांधि अश्रुतिज ॥ इत्ताकारेण संदिसह नगवन् संबुद्धकामणेणं अश्रुतिजह अश्रितर पखिञ्चं खामेजं इहं खामेजं पक्कीयं, एक पणाणं पन्नरसदिवसाणं पन्नरस राइआणं पन्नरसराइदियाणं (चार मासाण आठपक्काणं एकशोवीअ राइदियाणं) तथा (चार मासाणं चोवीअ पक्काणं त्रणसोसाठ राइदियाणं) जं किंचि अंपत्तिञ्चं” इत्यादि पाठे खमाववो एरीते अश्रुतिज खमावी, पती जना श्रदने “इत्ताकारेण संदिसह नगवन् पक्कीयं आलोउ ” एम कहे, त्यारे शुरु कहे “आलोवेह ” त्यारे शिष्य कहे कहे “इहं आलोएमी जोसे पखिउ अइआरो कउं ” नो पाठ कहेवो. पती “वयसमण धम्म ” ए आदि पांच गाथा कहेवी. पती “ गमणगमण ” नो पाठ कहेवो. पती जना श्रकांज “इत्ताकारेण संदिसह नगवन् पखिअतिचार आलोउ ” एम आजा मगनीने एक

जणे नीचे प्रमाणे परकी अतिचार कहेवा ॥ अथ पास्की अतिचार ॥ “इडाकारेण
संक्षिप्तं जगवन् पस्किञ्च अत्तोडं” गुरु कहे “आत्तोएह” ॥ पवी-इहं पास्की पडिदेहण
त्रणी कीधी, जे कांड रही विसरी होय ते सवि हुं मन वचन कायार्थे करी मित्रामि डकडं ॥
पद्द दिवसमाहे ज्ञानाचारें काववेलायें अणोजे तते इरियावाहि अणपडिकमी अणपफि-
लेही त्रूमिकायें सिध्दांत वांच्यो, त्रएयो, गुण्यो होय ॥ विनय पाखे वांढणा, खमासमण
अणदीधे सूत्र अर्थ विचार पूढयो होय, गुरु अने वडा जपरे बहुमान त्रक्ति साचवी
न होय ॥ योग वहा पाखे कादिक उत्कादिक सिध्दांत वांच्यो, त्रएयो, गुण्यो होय ॥ योग
वहतां योगतणी सामाचारी चूकी होय ॥ जे गुरुपासे श्रुत त्रण्यु दीक्षा तीधी ते गुरुतणु
नाम जलव्युं होय ॥ अक्षर, कानो, मात्र कूडो कह्यो, विसार्थो होय, सिध्दांततणो अर्थ
अधिको जडो विपरीत करी वखाण्यो होय, सूत्र अर्थ वीहुं जत्सूत्र प्ररुप्या होय ॥ पाटी
पेथी कवली ठवणी नवकरवाली कगले पण दगाड्यो होय, पढतां गुणतां अंतराय
उपघात कीधो होय ॥ अनेरुं ज्ञानाचारविषे पद्ददिवसमाहे जाणतां अजाणतां सूक्ष्म वादर
जिको कोइ अतिचार हूळं होय, ते सवि हुं मन वचन कायार्थे करी मित्रामि डकडं ॥ १ ॥
दर्शनाचारे जिनधर्मतणी शंका करी होय, कांक्षा अनेरा दर्शनविषे मन आरथा आणी होय,
विचिकित्सा पुण्यफलतणो मनमां संदेह धर्यो होय ॥ मूढदृष्टिता सूक्ष्म गंत्रीर विशेष
विचार सांत्रली मन मोह पाभ्यो होय, पुण्यवंततणी प्रशसा सांत्रली मन इर्षा धरी होय,
अवसरे गुणवंततणी प्रशंसा कीधी न होय, ॥ धर्मतणेविषे आवास अवज्ञा करता देखी

मन धिरीकरण कीधुं न होय, आपणपामहे वासट्य धर्मानुराग चिंतव्यो न होय, ॥ प्रमादविशेषनो कवह कंदव करी उडाह कीधो होय, देवतणीदष्टें ज्ञातपाणी वहिरी वावस्थां होय, निजा कीधी होय, देहरामां श्लेष्मादिक वस्तु नाखी होय, ॥ नमस्कार करता देवरहे संघट्ट हूजहोय, गुरुरहे आशातना कीधी होय, गुरुतणे आसणे, वेसणे, जपगरणे पग लग्नाज्योहोय, ॥ वेयावच्च करता पग, श्वास ताभ्यो होय, वडातणुं वचन पातुं वाट्युं होय, वनाजपरें मन अवज्ञा धरी होय, वनातणा आदेश पाखें आपणी इजायें नियम अग्निप्रह्व तीधो होय, ॥ तपश्चरण विद्वारादिक कार्य कीधां होय, वडातणुं आहुं पातुं बोट्युं होय, जिनधर्म तणी आस्था कीधी न होय, अनेरें दर्शनाचारविषे पद्मदिवसमाहें ० ॥ ९ ॥ चारित्र्याचार पुढविकाय, अप्पकाय, तेजकाय, वाजकाय, वनस्पतिकाय, नील, फूल, अनतकाय, तणो संघट्ट परिताप जपजव हुजं होय, फूसणुं हूजं होय वधारी टाट्टि हूई होय, संघट्ट हूजं होय ॥ दगमटी विराधी होय, तार धूंअरतणी विराधना कीधी होय, उऊई हूई होय, मुखवल्लिकातणो अणुपयोग हूजं होय, कोरण उडते महावायुवाते गमनागमन कीधु होय ॥ हरीयकाय वीयकाय तणी विराधना हूई होय, वेंडी, तेंडी, चजरिंदी, पंचिंदी रहें परिताप जपजव हुजं होय, जधन्य मध्यम, उक्कट्ट, अदीकवचन बोट्युं होय, ॥ समर्थ्य महर्थ्यवस्तु अणदीधी तीधी होय, मनसा वाचा कायायें करी स्वप्नांतरमांहि शीलप्रगं हूजं होय, अश्रवा प्रस्यक्क चौथे व्रतें अतिचार हुजं होय, स्त्रीतणो संघट्ट हूजं होय ॥ महात्मा अयोग्य सुवर्णादिक वस्तुतणो परिग्रह कीधो होय, पक्क जपहरो जपगरणतणुं ममत्व धर्मुं होय ॥

वडारहे खमासमण अणदीधे उपगरण दीधुं वावर्युं होय, ॥ असुरी वेलाए दरियावदी
 अणीवते ज्ञानपाणी कीधुं होय, रात्रें चजविहार पञ्चखाण कीधुं न होय, ॥ जाणतां
 अजाणतां असऊतुं ज्ञातपाणी बोहोरी वावर्युं होय, ॥ कारणहेतुपाखें आधाकर्मादिक
 दोषतणी सेवा हूइ होय, रजनीयें जवुं थाप्युं होय, जसहताणी संनिधि कीधी होय, समिति
 गुतिविषे अनुपयोग हूउं होय, अनरुं चारित्राचारविषे पद्व दिवसमाहे ० ॥३॥ तपाचार
 बारजेद तपमाहे कोइ जेद विराधो होय, चोमासी वरसी आलोयण तणुं तप वीसायुं
 होय, पञ्चरकाण पारवुं वीसायुं होय, वेसणुं हाव्युं होय, ॥ काप अणदीधे संदेशथी जठया
 होय, उपवास, आंविद, नीवी, एकामणुं, गुरिमद्वपञ्चरकाण जोग्युं होय, ॥ जपासराथको
 एकसो हाथ जपरांत एकदां फेरो दीधो होय, अनरुं तपाचारने विषे पद्वदिवस ० ॥ ४ ॥
 वीर्याचारे वती शक्तें काजसग्न पञ्चखाण वीसामण विनय वेयावच्च पढवा गुणवा विषे
 आवस कीधो होय, दिवसे जावे पणे संथायुं होय, ॥ रात्रे सूत्रपोरिसी अर्थपोरिसी
 अधूरी रही होय, पडिकमणुं पडितेहण निरतां कीधां होय, जोग वनीवार रह्या होय,
 पद्व जपहरो कपाय राख्यो होय ॥ आपणपामाहे असमंजस वचन बोल्यां होय, कठोर बोळ
 बोली कवह कंदव कीधो होय, अंभिल पडितेह्या नहोय, वसती प्रमाज्जीं न होय ॥ गीत,
 खेद, वाणी, नाटक, इंद्रजाव, वाद, कंदव, कुण, समस्या, प्रहेली शुतकीभादिकविषे अनु-
 राग धयाहोय, उधो सुहपत्ति संघट्यां होय, ॥ जातां आवतां आवरसही निरसही कही न
 होय गृहस्थतणी कणवार कीधी होय, मर्म मोसो बोल्या होय, श्रीवीतराग देवें जे कार्य

निषेध्या ते कार्यं कीधां श्लेषः॥महात्मा योग्य जे करणी कही, ते करणी कीधी न श्लेष, आगम वचन सद्विद्यां न श्लेष, अथवा विपरीत प्ररूप्यां श्लेष, ॥ एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, तप, धीर्याचार मांहे जं आलोश्य जं च न आलोश्यं तस्स सबस्स परिक्यस्स ड्विंतिथस्स ड्वे-
 ष्टिस्स ड्व्यासियस्स तस्स मिजामि ड्वकणं ॥ इति पाक्षिक अतिचार अणगारस्य संपूर्णः
 ॥ ॥ अथविधि- एम अतिचार कथा पठी एक खमासणुं दइने “ इवाकारेण संदिसह
 नगवन् पसाढ करी पखीतपप्रसद करोजी” एम कहेवुं, त्यारे गुरु आदिक कहे-अथपखी-
 तपप्रसादनो पाठ॥चउहेणं एक जवास, वे आंवील, त्रण नीवी, चार एकासणा, आव वी-
 अ्रासणा, वे हजार सखाय तप इति॥(जो ते तप कर्यो श्लेष तो“पइठिउं”कहेवो, अने जो
 पाठवथी करवानो श्लेष तो“तइति” एम कहेवुं, अने जो न करवो श्लेष तो अथवा न कर्यो
 श्लेष तो अणवोड्या रहेवुं. पण पखी तप रती शक्तिये न करे आगत पाठव तो प्रायश्चित्त
 अवे.)पठी एक खमासमणुं दइने तथा उत्रा थइने “इवाकारेण संदिसह नगवन् पखी
 वादणां देउं” एम कहीने वे वादणां देवां पठी एक खमासमणुं दइने “इवाकारेण संदि-
 सह नगवन् पत्तयखामणेणं अश्रुठिउमि अर्पितर पखीयं खामेउं” एरीते पूर्ववत् अश्रुठिउ
 खमवो, पठी सर्व साधुने पोताथी वडीलने अश्रुठिआना पाठवडे करीने खमववो. सह
 माहोमाहे खमववो. पठी एक खमासमणुं दइने तथा उत्रा थइने “ इवाकारेण संदिसह
 नगवन् पखीसूत्र त्रणवा निमित्त वादणां करुं” एम कही वे वादणां देवां. पठी उत्रा थकांज
 “इवाकारेण संदिसह नगवन् पखी सूत्र पढुं” एम कहीने “करेमिन्नते” तथा “इवामि ठामि

काजसगंगं” अने “तस्सुत्तरी” अने “अनन्त जससिएणं” कहीने सर्व साधुज काजस्सग ध्यान
 रह्ये शक्ये परकी सूत्र सांगव्हे अने मोठा गुरुआदिकथकी जे मुनिमहाराजने आझा मज्जेवी
 होय, ते मुनिमहाराज त्राण नवकारना पाठ पूर्वक परकी सूत्र सारा स्वरथी कहे ॥ हवे ते परकी
 सूत्र नो पाठ ते नीचे मुजव समजवो—॥ अथ पाक्षिक सूत्रं ॥ तिजकरे य तिहे । अतिव-
 सिर्धे य तिजसिर्धे य ॥ सिर्धे य जिणेरिसि । महारिसि नाणंच वंदामि ॥ १ ॥ जे इमं गुणर-
 यणसाथर । मविराहिज्जण तिण संसारे ॥ ते मंगलं करित्ता ॥ अहमवि अपराहणात्ति-
 सुदो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिद्धंता । सिद्धा साहु सुयं च धम्मो य ॥ खंति गुत्ति सुत्ति ।
 अज्जव य महदं चोव ॥ ३ ॥ लोगांमि संजया जं । कसंति परमरिसिदेसिय सुदरं ॥ अह-
 मवि जवठितं । महद्वय उच्चारणं काठं ॥ ४ ॥ से कितं महद्वय उच्चारणं ॥ महद्वय
 उच्चारणा पंचविहा पणत्ता ॥ राई त्रोयण वे रमण ठडा ॥ तं जहा ॥ सधाल पाणाइवायाळ
 वेरमणं ॥ सधाल मूसावायाळ वेरमणं ॥ सधाल अदिवा दाणाल वेरमणं ॥ सधाल मेह-
 णाल वेरमणं ॥ सधाल परिग्हाळ वेरमणं ॥ सधाल राइत्रोयणाल वेरमणं ॥ तव खलु
 पढमे त्रंते महद्वय पाणाइवायाळ वेरमणं ॥ सधं त्रंते पाणाइवायं पच्चरकामि से सुदुमं वा
 वायरं वा ॥ तसं वा थायरं वा ॥ नेव सयं पाणे अइवाइजा ॥ नेवनेहिं पाणे अइवायाविजा ॥
 पाणे अइवायते वि अन्ने न समणु जाणामि ॥ जावजीवाए तिविदं तिविदं मणेणं
 वायाए काएणं न करेमि न कारवमि करंतंवि अन्नं न समणु जाणामि, तस्स त्रंते
 पत्तिमामि, निदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ से पाणाइवाए चजधिहे पणते ।

तं जह्या । दध्बर्ज । खित्तर्ज । कावर्ज । त्रावर्ज । दध्बर्जणं पाणाद्वाए । वसुजीवतिकाएसु ।
 खित्तर्जणं पाणाद्वाए सध्बर्जोए । कावर्जणं पाणाद्वाए द्रियावाराज्वा । त्रावर्जणं पाणाद्वाए
 रणोए वा दोसेण वा ॥ जंपिअ मए इम्मस्स धम्मस्स । केवदि पन्नत्तस्स । अहिंसा वत्कणस्स
 सञ्चाहितिअस्स । विणय्यमूदस्स ॥ खंतिपहाणस्स । अहिरणसुवणियस्स । जवसमप्य
 त्रवस्स । नव वंत्तरेर गुत्तस्स अप्यमाणस्स ॥ त्रिस्कावत्तियस्स कुस्कि संवत्तस्स
 निरग्गिसरणस्स संपक्कादियस्स ॥ चत्तदोसस्स । गुणग्गहियस्स ॥ निधियारस्स ॥
 निधित्ति वत्कणस्स ॥ पंचमह्दधयजुत्तस्स ॥ असंनिहि संचयस्स ॥ अविस्वाइयस्स ॥ संसार
 परग्गामियस्स । निव्वाणग्गमण पज्जवसाण फलस्स । पुधि अन्नाणयाए । अप्सवणयाए ।
 अप्पोहियाए । अणत्तिग्गमेणं । अत्तिग्गमेण वा । पमाणं रग्गदोस पडिवश्चयाए ॥
 वात्तयाए । मोहयाए । मंदयाए । किहुयाए । तिग्गरव गुरुयाए । चत्तकस्साज्ज
 वग्गणं । पंचेदियवसहेणं ॥ पडिपुणं न्नारियाए । सायासुत्कमणु पात्तयंतणं । इहं वा
 त्तवे । अत्तेसु वा त्रवग्गहणेषु ॥ पाणाद्वावर्ज कर्ज वा, कसाविज्ज वा कीरंतो वा परेहिं
 समणुञ्जात्त । तं निंदामि गरिहामि ॥ तिक्किहं तिक्किहेणं । मणेणं वायाए काएणं । अर्इयं
 निंदामि । पडुप्पन्नं संवरेमि ॥ अणग्गयं पञ्चकामि । सधं पाणाद्वायं । जावजीवाए ।
 अणस्सिज्जहं । नेव सयंपाणे अइवाइजा ॥ नेवत्तोहिं पाणे अइवायाविजा । पाणे अइवायंत
 वि अत्ते न समणु जाणिजा । तं जह्या ॥ अरिहंत सक्कियं । सिइ सक्कियं । साहु सक्कियं ।
 देव सक्कियं । अप्पसक्कियं ॥ एवं त्रवइ त्रिक्कुवा ॥ त्रिक्कुणी वा । संजय विराय पफिहय

पञ्चत्काय पावकर्मं द्रिया वा । राजवा । एगजं वा परिसागजं वा ॥ सुते वा जगतरमाणे वा
 एस खलु पाणाद्वायस्स वेरमणे हिए सुए खम्मे निसेसिए अणुगामीए ॥ पारगामिए ।
 सर्वेसिं पाणाणं । सर्वेसिं नूञ्जाणं । सर्वेसिं जीवाणं । सर्वेसिं सत्ताणं ॥ अङ्कणयाए ।
 असोवणयाए । अजुरणयाए । अतिप्पणयाए । अपीनणयाए । अपरियावणियाए ॥
 अणुद्वणियाए । महत्थे । महागुणे । महाणुत्रावे । महापुरिसाणुच्चिणे । परमरिसिदेसि-
 य पसत्थे ॥ तं डक्ककयाए । कम्मकयाए । सुकयाए । बोहिवान्नाए । संसारुत्तरणाए ।
 तिकहु ॥ जवसंपज्जाताणं । विहरामि । पढमे त्रंते महधए । जवठिजमि । सव्वाजं पाणाद्-
 वायाजं वेरमणं ॥ इति पढमात्तावो ॥ अहावरे ड्ध्वे त्रंते महधए सुसावायाजं वेरमणं ।
 सव्वं त्रंते सुसावायं पञ्चत्कामि ॥ से कोहा वा दोहा वा । त्रया वा । हासा वा । नेव सयं सुसं-
 वायिज्जा । नेवनेहिं सुसं वायाविज्जा ॥ सुसं वायंतेवि अन्ने न समणुज्जाणामि । जावजी-
 वाए । तिविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए कायेणं । न करेमि । न कारयेमि ॥ करंतिवि
 अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स त्रंते पक्किमामि निंदांमि । गरिहामि । अप्पाणं वोसि-
 रामि ॥ से सुसावाए चजध्विहे पणत्ते । तं जहा । दधजं । खित्तजं । कात्तजं । त्रावजं ॥
 दधजंणं सुसावाए सव्वदधेसु ॥ खित्तजंणं सुसावाए दोए वा अत्तोए वा । कात्तजंणं सुसावाए
 द्रिया वा राजं वा ॥ जावजंणं सुसावाए राणेण वा दोसेण वा ॥ जंपियमए । इमस्स
 धम्मस्स । केवद्विपन्नत्तस्स । अहिंसात्तकणस्स । सच्चाहितियस्स विण्यमूत्तस्स ॥ खंति
 पहाणस्स । अहिरण सुवणियस्स । जवसम पन्नवस्स । नववंत्रचेरगुत्तस्स ॥ अपञ्चय-

माणस्स । त्रिकावत्तियस्स । कुत्थिसंबलस्स । निरणिगसरणस्स ॥ सपत्थादियस्स ।
 चत्तदोसस्स । गुणगहियस्स । निधिञ्चारस्स ॥ निधित्तिवत्थकणस्स । पंचमहद्वयजुत्तस्स ।
 अस्संनिहिसंचयस्स । अविस्संवाइयस्स ॥ संसारपारगामियस्स । निधाणगमणपज्जावसाणफ-
 लस्स ॥ पुढिं अन्नाणयाए । असवणयाए । अबोधियाए । अणत्तिगमेणं ॥ अत्तिगमेण वा
 पमाएणं । रणदोस पडिवद्दयाए । वादयाए मोहयाए मंदयाए किड्दयाए । तिगारव गुरुयाए ।
 चउकसाउवणएणं । पंचिंदिय वसंठेणं ॥ पडिपुणं चारियाए । सायासुखमणु पालयंतेणं ।
 इह वा त्थे । अन्नेसु वा त्थगहणेसु ॥ सुसावाउ । चासिउवा । चासाविउवा । चासिउंतो
 वा परेहिं समणुत्ताउ ॥ तं निंदामि । गरिहामि । तिविदं तिविदेणं ॥ मणेणं । वायाए ।
 काएणं । अर्हयं निंदामि ॥ पडिपव्वं संवरेमि । अणगणयं पच्चत्थामि । सब्ब सुसावायं ।
 जावजीवाए । अणिसिउदं ॥ नेव सयं सुसं वाइज्जा । नेवनेहिं सुसं वायाविज्जा । सुसं वा-
 यतेवि अन्ने । न समणुजाणिज्जा । तं जहा ॥ अरिहंत सत्थियं । सिद्ध सत्थिय । देवसत्थियं
 अप्पसत्थियं । एवं त्थइ त्रिय्यु वा त्रिय्युणि वा । सजय विरय पडिद्वय ॥ पच्चत्थाय
 पावकम्मं । दिया वा । राउ वा । एणउ वा । परिसागउ वा ॥ सुत्ते वा जानरमाणे वा । एस्स
 खलु सुसावायस्स । वेरमणे । हिए सुहे खमे निस्सेसिए ॥ अणुगामिए । पारगामिए । सब्ब-
 सिपाणएणं ॥ सब्बेसिं जीवाणं ॥ सब्बेसिं सत्ताणं ॥ अणुत्थकणयाए । असोवणयाए अजुरणयाए
 अत्तिप्पणयाए । अपीमणयाए । अपरियावणयाए ॥ अणुद्वयणयाए । महत्थे । महानुणे ।
 महाणुत्तावे । महापुरिसाणुत्तिन्ने । परमरिसिदेसीय पसत्थे ॥ तं उक्ककयाए । कमक्क-

याए । मुक्कयाए । वोहिदात्राए । संसारुत्तारणयाए ॥ तिकट्टु उवसंपज्जाताणं । विहरामि ।
 ड्धे तंते महधए । उठविठमि सधाउ मूसावायाउ वेरमणं ॥ १ ॥ इति द्वितीयमहाउ-
 तावापकं संपूर्णं जातः ॥ अहायेर तद्धे तंते महधए । अदिन्नादाणाउ वेरमणं । सधं तंते
 अदिन्नादाणं पञ्चस्कामि ॥ से गामे वा नगरे वा रणे वा । अप्पं वा । वहुवा । अप्पुं वा । युवं
 वा । चित्तमंतं वा ॥ अचित्तमंतं वा । नेव सयं अदिन्नं गिएहिज्जा । नेवन्नोहिं अदिन्नं गिएहा-
 विज्जा ॥ अदिन्नं गिएहंतेवि अन्ने न समणुज्जाणामि । जावजीयाए । तिविहं तिविहेणं ।
 मणेणं ॥ यायाए । काएणं । न करेमि । न कारयेमि । करंतंपि अन्नं न समणुज्जाणामि ।
 तस्स तंते । पडिकमामि । निदामि । गरिहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥ से अदिन्नादाणे
 चउविहे पणत्ते । तं जहा दधउ । खित्तउ । काउउ । चावउ । दधउणं अदिन्नादाणे
 गह्णि धारणिज्जेसु । दधेसु ॥ खित्तउणं अदिन्नादाणे गामे वा नगरे वा । रणे वा । काउउणं
 अदिन्नादाणे ॥ दिया वा राउ वा । चावउणं अदिन्नादाणे । रणेण वा दोसेण वा । जंपिय-
 मए ॥ इमस्स धम्मस्स । केवदि पन्नत्तस्स । अहिंसा दाक्कणस्स । सच्चाहिठियस्स ॥
 विणयमूत्तरस । खंति पदाणस्स । अहिरण सुवाणियस्स उवसमपन्नवस्स ॥ नव वंनचेर
 गुत्तरस । अप्पयमाणस्स । त्रिस्कावात्तियस्स । कुक्किसंवलस्य ॥ निरग्गिसरएणस्स, संप-
 र्कादियस्स, चत्तदोसरस, गुणगहियस्स ॥ निधियारस्स । निधित्तिलखणस्स । पंचमहधय-
 जुत्तस्स । असंनिहिसंचयस्स ॥ अविसंवाइयस्स, संसारपारगामियस्स, तिवाणगमण पज्जा-
 वसाणफलस्स ॥ पुधिं अन्नाणयाए, असवणयाए, अवोहियाए, अणनिगमेणं ॥ अग्निगमेण

वा, पमाएणं, रागदोष पङ्क्तिरुचयाए, वादयाए ॥ मोहयाए, मंदयाए, किडुयाए, तिगारव
 गुरुयाए, चउकसायो वग्गहेणं ॥ पंचिदिय वसठेणं । पभियुणं त्रारियाए । सायासुख
 मणुपादयंतैण । इहं वा त्रये । अन्नैसु वा । त्रवग्गहणेसु ॥ अदिन्नादाण गहियं वा ।
 गाहावियं वा । धिप्पंति वा परेहिं समणुत्ताज ॥ तं निंदामि । गरिहामि । तिविह तिविहेण
 मणेणं । वायाए । काएणं । अइयं निंदामि ॥ पडिपुणं संवरेमि । अणानयं पञ्चस्कामि ।
 सबं अदिन्नादाणं । जावजीवाए ॥ अणिसिउहं । नेवसयं अदिन्नं गिहिज्जा । नेवन्नोहिं
 अदिन्नं गिएहाविज्जा । अदिन्नं गिएहंतैवि अन्नं न समणु जाणिज्जा ॥ तं जहा । अरि-
 हंतं सक्कियं । सिरु सक्कियं । साहुसक्कियं । देवसक्किय । अप्प सक्कियं ॥ एवं त्रवइ
 त्रिस्कु वा । त्रिस्कुणी वा संजय विरयपडिहय । पञ्चस्काय पावकम्मो ॥ दिया वा राज वा । ए-
 गत्था । परिसगज वा । सुत्ते वा । जानरमाणे वा ॥ एस रकदु अदिन्नादाणस्स । वेर-
 मण ॥ हिए । सुहे । खम्मं । निसेसिए । अणुगामिए ॥ पारगामिए । सबेसि पाणाणं । सबेसिं
 नुयाणं । सबेसिं जीवाणं ॥ सर्वेसिं सत्ताणं ॥ अइस्केणयाए । असोवणयाए । अजुर-
 णयाए । अतिप्पणयाए ॥ अपीडणयाए । अपरियावणियाए । अणुइवणयाए । महत्थे
 महाणुणे ॥ महाणुत्तावे । महापुरिसाणुचिन्ने । परमरिसिदेसियपसत्थे तं इत्थस्सकयाए ॥
 कम्मसकयाए । सुस्सकयाए । वोहिं दात्राए । संसारुत्तराणए । तिकडु उवसंपज्जाताणं
 विहरामि ॥ तच्चे तंते महधए उवठिजमि । सबाज अदिन्नादाणाज । वेरमणं ॥ ॥ इति
 त्तियालापक.समाप्तः ॥ अहावरे चउत्थे तंते महधए । मेहुणाज वेरमणं । सबं तंते

मेहुणं पञ्चरुकाभि ॥ से दिवं वा । माणुसं वा । तिरिक्क जोणियं वा । नेव सयं मेहुणं
 सेविजा । नेवनेदिं मेहुणं सेवाविजा ॥ मेहुणं सेवंतेवि अन्नं न समणुजाणामि । जाव-
 जीवाए । तिविदं तिविहेणं ॥ मण्णं । वायाए । काएणं न करेमि न कारवेमि करंतेवि अन्नं
 न समणुजाणामि ॥ तस्स जंते पक्कमाभि । निंदाभि । गरिदाभि । अप्पाणं वोसिरामि से मे-
 हुणे चजविहे पणते ॥ तं जहा दधजं । खित्तजं । कावजं । ज्रावजं । दजरणं मेहुणे रुवेसुवा ।
 रुवसहगेसु वा ॥ खित्तजणं मेहुणे जह्वोए वा । अहोवोए वा । तिरियवोए वा । कावजण
 मेहुणे दिया वा । राज वा । ज्रावजणं मेहुणे रागेण वा दोसेण वा । जंपियमए । इमस्स धम्मस्स
 केवलपन्नत्तरस ॥ अहिंसात्तक्कणस्स । सच्चाहिठियस्स । विणयमूलस्स । खंतिप्पहाणस्स ।
 अहिरण सुवन्नियस्स । जवसमपन्नवस्स । नववंनचेरगुत्तरस्स । अप्पयमाणस्स ॥ निरुका-
 वत्तियस्स । कुखिखसंबत्तस्स । निरुगिरसराणस्स । संपखावियस्स ॥ चत्तदोसस्स । गुणग-
 हियस्स । निव्वियारस्स । निव्वित्तिक्कणस्स ॥ पंचमहद्वयजुत्तरस्स । असंनिहिसंचयस्स ।
 अविसंवाइयस्स । संसारपारागामियस्स । निबाणगमण पज्जवसाणफत्तस्स ॥ पुब्बिअन्ना-
 णयाए । असवणयाए । अवोहियाए । अणत्तिगमेणं ॥ अत्तिगमेणवा । पमाएणं ।
 रागदोसपडिव-इयाए । वात्तयाए । मोहयाए ॥ मंदयाए । किहुयाए । तिगारवगुरूयाए ।
 चउक्कसात्तवणएणं । पांचिदियवसठेणं ॥ पडियुणं जारियाए । सायासुखमणुपात्तयंतेणं ।
 इहंवात्तवे । अन्नसुवा । जवगहणेसु ॥ मेहुणंसेवियंवा । सेवावियंवा । सेविजांतंवा । परे-
 हिसमणुब्बाज । तं निंदाभि गरिदाभि ॥ तिविदं तिविहेणं । मण्णं । वायाए । काएणं । अइयं

निंदाभि पक्रिपुत्रं संवेरभि ॥ अष्टागायंपञ्चखासि । सधंमेहुणे । जावजीवाए । अणिस्सि-
 जहं । नेवसयं मेहुणे सेविजा ॥ नेवदोहं मेहुणं सेवाविजा । मेहुण सेवंतेवि अन्ने न समणु
 जाणिजा । तं जहा ॥ अरिहंत सक्कियं । सिद्धसक्किय । साहुसक्कियं । देव सक्कियं । अप्प
 सक्कियं ॥ एव जवइ । त्रिक्क्या । त्रिक्कणी वा । संजय विरय पडिदय पञ्चकाय पावकम्म ॥
 दिया वा राज वा एगज वा । परिसागज वा । सुत्ते वा ॥ जागरमाणे वा । एस खदु ॥ मेहुणस्स
 वेरमणे । हिए । सुहे । खम्मे । निस्सेसिए । अनुगामिए । पारगामिए ॥ सधंसिपाणाणं ।
 सधंसि जीवाणं । सधंसिं नूआणं सर्वेसिं सत्ताणं । अडक्कणयाए ॥ असोवणयाए । अजूर-
 णयाए । अतिप्पणयाए । अपीक्कणयाए ॥ अपरियावणियाए । अणुदवणयाए । महत्थे म-
 हाणुत्रावे ॥ महापुरिसाणुचिन्ने । परमरिसिदेसियपसत्थे । त डक्कयाए कम्मक्कयाए ।
 सुक्कयाए ॥ वोहिलान्राए । सस्सरुत्तरणयाए । तिकट्टु । उवसपज्जताण विहरामि ॥ चउत्थे
 जते महधए उवठिजमि । सधज मेहुणज वेरमणं ॥ इति मेथुनदिरमण नामा चतुर्थावा-
 पकः संपूणं ॥ अहावरे पंचमे जते महधए । परिग्गहाज वेरमणं । सधं जते ॥ से अप्पं
 वा वहुं वा । अणु वा । थूद वा । चित्तमत वा अचित्तमतं वा ॥ नेव सय परिग्गहं परि-
 णिगहिजा । नेवदोहं परिग्गहं परिणिएहाविजा । परिग्गहं परिणिएहं तेवि अन्ने न
 समणुजाणामि ॥ जावजीवाए । तिविह तिविहेणं । मणेणं । वायाए । काएणं न करेमि ।
 न कारवेमि ॥ करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स जते पक्किमामि । निंदासि ।
 गरिहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥ से परिग्गहेचउद्विहे पणत्ते । तं जहा । दव्वजं ।

खित्तर्त्त । कावर्त्त । नावर्त्त ॥ दृवर्त्तणं परिग्गहे । सच्चित्ताचित्तमीसेसु दृव्वेसु । खित्तर्त्तणं
 परिग्गहे सब्बतोए ॥ कावर्त्तणं परिग्गहे । दिया वा । राज वा । नावर्त्तणं परिग्गहे । अप्प-
 न्नेवा महन्नेवा रणेणवा । दोसेणवा । जंपियमए । इम्मस्स धम्मस्स केवदि पन्नत्तस्स ॥
 अहिंसा लक्खणस्स । सच्चाहिठियस्स । विणयमूदस्स । खंति पहाणस्स ॥ अहिरणसुव-
 द्वियस्स । उव्वसमपन्नवस्स । नववंत्तचेरगुत्तस्स । अप्पयमाणस्स ॥ त्रिखावत्तियस्स ।
 कुल्लिसंवलस्स । निरग्गिसरणस्स । संपत्थादियस्स । चत्तदोसरस्स । गुणगहियस्स । निवि-
 यारस्स । निव्वित्तिलक्खणस्स ॥ पंचमहद्वयजुत्तस्स । असंनिहिसंचयस्स । अविसंवाइयस्स ।
 संसारपारगामियस्स ॥ निव्वाणगमण पक्कवसाण फलस्स । पुब्बि अन्नानयाए । असोवण-
 याए ॥ अबोहियाए । अणत्तिगमेणं । अत्तिगमेण वा । पमाणं ॥ रागदोस पडिवद्वयाए ।
 वालयाए । मोहयाए । मंदयाए । किडुयाए ॥ तिगारवगुरुरयाए चउकसाउवणएणं । पंचदिय
 वसेठणं । परिपुणं त्तरियाए ॥ सायासुवमणुपालयंतेणं । इह वा त्रवे, अन्नेसु वा
 त्रवगहणेषु ॥ परिग्गहो गहियवा । गाहावियवा । विपंत्तो वा परेहिं समणुत्ताज ॥ तं
 निंदामि । गरुहामि । तिविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए । काएण । अइयं निंदामि । परिपुन्नं
 संवरेमि । अण्णगयं पच्चस्कामि । सबं परिग्गहं । जावजीवाए । अणिसिउहं ॥ नेव सयं
 परिग्गहं परिगिह्विज्जा । नेवन्नोहिं परिग्गहं परिगिह्वविज्जा । परिग्गहं परिगिह्वंतेव
 अन्ने न समणुजाणिज्जा ॥ तं जहा । अरिहंत सक्कियं । सिद्धसक्कियं ॥ साहुसक्कियं ।
 देवसक्कियं । अप्पसक्कियं ॥ एवं त्रवद । त्रिखुवा । त्रिखुणीवा । संजय विरय पडि-

हय पञ्चायपवकर्ममे ॥ दिया वा । राज वा ॥ एभजवा । परिसागजवा । सुतेवा ॥ जागरमाणेवा ।
 एस खलु परिगाहस्स वेरमाणे हिए । सुहे । खम्मे । निस्सेसिए । अणुगामिए । पारगामिए ।
 सधेसि पाणणं । सधेसिं नूयाणं । सधेसिं जीवाणं । सधेसिं सत्ताणं ॥ अङ्ककणयाए । अ-
 असोवणयाए । अजुरणयाए । अतिपणयाए । अपीडणयाए । अपरियावणियाए । अ-
 णुदवणयाए । महत्थे । महानुणे ॥ महाणुत्रावे । महाणुरिसाणुच्चिन्ने । परमरिसिदेसीय-
 पसत्थे ॥ तं ड्स्ककयाए । कम्मस्कयाए । सुकयाए । बोहिदान्नाए । संसारुत्तारणाए ॥
 तिकहु । उवसंपजित्ताणं विहरामि । पंचमे त्रंते महद्वए जवठिजमि । सधज परिगाहज
 वेरमणं ॥ ॥ इति पक्की सूत्रे पंचमादापकः संपूर्णः ॥

॥ अहावर । ठठे त्रंते धए ॥ राइ त्रोयणज वेरमणं ॥ सधं त्रंते राइ त्रोयणं पञ्चकामि ॥ से
 असणं वा । पाणं वा । खाइमं वा । साइमं वा । नेव सयं राइ जुजिजा ॥ नेवनेहिं रायं
 जुंजाविजा । राइ जुजंतेवि अन्नं नसमणु जाणामि ॥ जावजीवाए । तिविहं तिविहेणं । मणं ।
 वायाए । काएणं । न करेमि ॥ न कारवेमि । करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स
 त्रंते पक्कमामि । निंदामि । गरिहामि ॥ अत्थाणं वोसिरामि । से राइ त्रोयणे । चजध्विहे
 पणत्ते । तं जहा । दधज ॥ खित्तज । कावज । त्रावज । दधजणं । राइ त्रोयणे । असणे वा
 पाणे वा ॥ खाइमेवा । साइमेवा । खित्तजणं । राइ त्रोयणे । समयखित्ते ॥ कावजणं । राय
 त्रोयणे । दिया वा राज वा त्रावजण । राइ त्रोयणे ॥ तित्ते वा । कणुए वा कस्सायत्ते वा
 अंविदे वा । महुरे वा । दवणे वा ॥ रागेण वा दोसेण वा । जंपियमए । इम्मस्स धम्मस्स ।

केवलपन्नत्स ॥ अहिंसात्कणस्स । सच्चाहिठियस्स । विणयमूलस्स । खतिपदाणस्स ॥
 अहिरण सुवन्नियस्स । उवसमपन्नवस्स । नववन्नचेर गुत्तस्सा अत्थयमाणस्सा त्रिक्कावत्तिय-
 स्स । कुत्तिसंवलस्स । निरणिगरणस्सा । संपक्कादियस्स । चत्तदोसरस्सा गुणगहियस्सा । निधि-
 यारस्स । निधित्तिवत्कणस्स । पंचमद्वयजुत्तस्स । असंनिहिसंचयस्स ॥ अविसेवाइयस्स ।
 संसारपारगामियस्स । निष्ठाणगमणपज्जवसाणफलरस्स ॥ पुढिं अन्नाणयाए । असोवणयाए ।
 अवोहियाए । अणत्तिगमेणं । अत्तिगमेण वा । पमाएणं । रागदोस पडिवदयाए । वाद-
 याए ॥ मोहयाए । मंदयाए । किडुयाए । तिगारव शुरुयाए । चउकसाउवगएण ॥ पंचिदि-
 य वसठेणं । पडिपुणं नारयाए । सायासुखमणुपादयंतेणं । इहंवात्तवे ॥ अन्नेसु वा
 न्नगहणेसु । राइ नोयणं । जुंजिय वा । जुजावियं वा । जुजंतं वा परेहिं समणुत्ताउं । तं
 निंदासि ॥ गरिहासि तिविहं तिविहेणं । मणेणं । वायाए काएण । अइयं निंदासि ॥ पदि-
 पुणं संवरेसि । अणगणयं । पच्चत्कामि । सबं राइ नोयणं ॥ जावजीवाए । अणित्तिजहं ।
 नेव सयं राइयं जुजिजा ॥ नेवन्नोहिं राइयं जुंजाविजा । राइयं जुजंतेवि अन्ने न समणु
 जाणिजा ॥ तंजहा । अरिहत सत्तिकय । सिद्ध सत्तिकयं ॥ साहु सत्तिकयं । देवसत्तिकयं
 अत्थसत्तिकयं ॥ एवं नवइ त्रिक्कावा । त्रिक्काणी वा । संजयविरय पडिदय । पच्चत्काय पाव-
 कम्म ॥ दिया वा । राज वा । एगज वा । परिसागज वा । सुत्ते वा । जागरमाणे वा । एस
 खदु राइ नोयणस्स वेरमणे । हिए । सुहे । खम्म ॥ निस्सेसिए । अणुगामिए । पारगामिए ।
 सब्बेसि पाणणं । सब्बेसि नूयाणं ॥ सब्बेसि जीवाणं । सब्बेसि सत्ताणं । अहत्कणयाए ।

असेवणयाए ॥ अजूरणयाए । अतिप्पणयाए । अपीडणयाए । अपरियावाणियाए ॥
 अणुदवणयाए । महत्थे । महत्तुणे । महाणुत्तावे ॥ महापुरिसाणुच्चित्ते ॥ परमरिसिदेसियप-
 सत्थे ॥ तंङ्कककयाए । कम्मकयाए । सुकयाए । बोहिवात्ताए । संसारत्तारणाए ॥ तिकट्टु ॥
 उवसंपज्जिताए विहरामि । ठठे तंते महद्वए उवत्तिजमि । सत्ताळ राइ त्तोयणाळ वेरमणे ॥
 इत्ति परकी सूत्रे पष्ठात्तापक संपूर्णे ॥ इत्थे इयाइं पंचमहद्वयाइं । राइ त्तोयण वेरमणे
 उठाइं । अत्ताहियत्तायाइ । उवसंपज्जिताए विहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्थाय जे जीणा,
 परिणामाय दात्तणा, पाणा इयायस्स वेरमणे, । एस वुत्ते अइक्कमे ॥ १॥ त्तिवराणा य जा
 त्तासा ॥ त्तिव दोसा त्तेव य सुसावायस्स वेरमणे । एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ३॥ उग्गाह से य
 जाइत्ता । अविदिद्वे य उग्गाहे । अदिनादाणस्स वेरमणे । एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥ सद्दारुत्वार
 सागंधा । फासाणं पवियारणा ॥ मेहुणस्स वेरमणे । एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ५ ॥ इत्ता
 सुत्ता यणेहीय । कंक्का त्तोत्रय दात्तणे ॥ परिग्गाहस्स वेरमणे । एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ६ ॥
 अइमत्तेय आहारे सूर खित्तं मिसंकिए । राइ त्तोयणस्स वेरमणे । एस वुत्ते अइक्कमे
 ॥ ७ ॥ दंसण नाए चरित्ते । अविराहिता ङिउ समण धम्मे । पढम वयमणुरक्के ।
 विरयामो पाणाइयायाउ ॥ १ ॥ दंसण नाए चरित्ते । अविराहिता ङिउ समण धम्मे ।
 वीयवयमणुरक्के । विरयामो सुसावायाउ ॥ २ ॥ दंसण नाए चरित्ते । अविराहिता
 ङिउ समण धम्मे तइयं वयमणुरक्के ॥ विरयामो अदिनादाणाउ ॥ ३ ॥ दंसण नाए च-
 रित्ते अविराहिता ङिउ समण धम्मे । चोत्थं वयमणुरक्के । विरयामो मेहुणाउ ॥ ४ ॥

दंसण नाण चरिते । अकिराहिता तिउ समण धम्मं । पंचम वयमणुरक्के । विरयामो परि-
 गहाज ॥ ५ ॥ दंसण नाण चरिते । अकिराहिता तिउ समण धम्मं । वडं वयमणुरक्के ।
 विरयामो राइ त्तोयणाज ॥ ६ ॥ आलय विहार समिउ । जुत्तो गुत्तो तिउ समण धम्मं । पढमं
 वयमणुरक्के । विरयामो पाणा इयायाज ॥ ७ ॥ आलय विहार समिउ । जुत्तो गुत्तो तिउ
 समण धम्मं । वीयं वयमणुरक्के । विरयामो सुसावायाज ॥ ८ ॥ आलय विहार समिउ ।
 जुत्तो गुत्तो ठिउ समण धम्मं । तइयं वयमणुरक्के । विरयामो अदिग्घादाणाज ॥ ९ ॥
 आलय विहार समिउ । जुत्तो गुत्तो तिउ समण धम्मं । चउत्थं वयमणुरक्के । विरयामो
 मंडुणाज ॥ १० ॥ आलय विहार समिउ । जुत्तो गुत्तो तिउ समण धम्मं । पंचम वयमणु-
 रक्के । विरयामो परिगहाज ॥ ११ ॥ आलय विहार समिउ जुत्तो गुत्तो तिउ समण धम्मं ।
 वडं वयमणुरक्के । विरयामो राइ त्तोयणाज ॥ १२ ॥ आलय विहार समिउ । जुत्तो गुत्तो
 तिउ समण धम्मं । तिविहेण अपमत्तो रक्कामि महवए पंच ॥ १३ ॥ सावज्ज जोगमेणं मि-
 च्चतं एगमेव अन्नाणं ॥ परिवज्जांतो गुत्तो रक्कामि महवए पंच ॥ १४ ॥ अणवज्ज जोगमेणं ।
 सम्मतं एगमेव सन्नाणं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो । रक्कामि महवए पंच ॥ १५ ॥ दो चैव राग-
 दोसे । इन्नियजाणाइं अइरुदाइं । परिवज्जांतो गुत्तो । रक्कामि महवए पंच ॥ १६ ॥ इविहं
 तरित धम्मं । इन्नियजाणाइं धम्म सुक्काइं । उवसंपन्नो जुत्तो । रक्कामि महवए पंच ॥ १७ ॥
 किल्लानी दाकाज । तिनियवेसाज अप्पसत्याज । परिवज्जांतो गुत्तो रक्कामि महवए पंच ॥
 १८ ॥ तेउपजमासुक्क । तिनियवेसाज सुप्पसत्याज । उव संपन्नोजुत्तो । रक्कामि महवए

पंच ॥ १३ ॥ मणसा मणसञ्चविज ॥ वायासञ्चेण करणसञ्चण । तिविहेणविसञ्च विज ।
 रकामि महधए पंच ॥ १४ ॥ चत्तारिय उहसया । चजरो सन्ना तहा कसायाय । परिव-
 ज्जंतो गुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ १५ ॥ चत्तारिय सुहसिजा । चउद्धिहं संवर समा-
 ह्मिच । उवसंपन्नो जुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ १६ ॥ पंचव य कामणुणे । पंचेव य
 अन्हवे महादोसे । परिवज्जंतो गुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ १७ ॥ पंचिंदिय सवरणं । तहे-
 व पंचविहमेवसजायं । उवसंपन्नो जुत्तो रकामि महधए पंच ॥ १८ ॥ उजीवत्तिकाव-
 यह । उट्ठिय त्रासाउ अप्रसत्थाउ । परिवज्जंतो गुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ १९ ॥
 उट्ठिवहमञ्जितरियं । वज्जंपि उट्ठिहं तवोकम्मं । उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रकामि महधए पंच ॥ २० ॥
 सत्तन्नयटाणाइं सत्तविहं वेवत्तण विञ्चं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो । रकामि महधए पंच ॥
 २१ ॥ पिंहेसण पाणेसण । उग्गह सत्तिकया महज्जयणा ॥ उवसंपन्नो जुत्तो । रकामि
 महधए पंच ॥ २२ ॥ अठ मयत्ताणाइं । अठ य कम्मइं तेसिं वधं च । परिवज्जंतो गुत्तो
 रकामि महधए पंच ॥ २३ ॥ अठपवयण मायादिठा अठविहनिठि अठहिं । उवसं-
 पन्नो जुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ २४ ॥ नवपाव नियाणाइं । संसारत्था य नवविहाजीवा ।
 परिवज्जंतो गुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ २५ ॥ नववंत्तचेरुत्ति । उनवविह वंत्तचेर परिमुइं ॥
 उवसंपन्नो जुत्तो रकामि महधए पंच ॥ २६ ॥ उवधायं च दसविहं । अपसंवरं तहय
 संकीदिसं च ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रकामि महधए पंच ॥ २७ ॥ दस सञ्च समाहिटाणा ।
 दस चैव दसाउ समणधम्म च । उवसंपन्नो जुत्तो । रकामि महधए पंच ॥ २८ ॥ आसा-

यणं च सध । तिशुणं इकारसं विवज्जंतो ॥ परिवज्जतो गुत्तो रकामि महधए पंच ॥ १८ ॥
 एवं तिट्ठविरत्तं । तिभरणसुक्षो तिसद्धनिसद्धो । तिविहेण पडिकंतो । रकामि महधए
 पंच ॥ ३० ॥ इच्चैयं महधय उच्चारणं थिरत्तं सद्धुधरणं धिश्चत्वं ववसात्तं सादण्ठो
 पावनिवारणं ॥ निकायणा त्रावविसोही पडानगाहरणं निज्जुहणाराहणा गुणाणं संवर
 जोगो पसत्थज्जाणो वजतया जुतया नाणे परमतो उत्तमतो ॥ एस तित्थं करेहिं रइ
 रागदोसमहणेहिं देसिज पवयणस्ससारो ॥ वजीवनिकायसंजमोवएसियं तिलुक्क-
 संकथंठाणं अज्जुवगया ॥ नमोत्थु ते सिधुवुध सुत्त नीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण
 सीलसायर मणत्त मप्पमेय नमोत्थु ते ॥ महइ महावीर वध्माणसामिस्स नमोत्थु ते अरहत्तं
 नमोत्थु ते त्रगवज्ज ॥ तिकट्टु एस खल्लु महधय उच्चारणा कया इत्तमो सुत्त कित्ठणं कात्तं नमो ते
 सिखमासमणाणं ॥ जेहिं इमं वायथं वड्ढिहं भावरसयं त्रगवत्तं, तं जहा, सामाइयं चजवी-
 सत्थज, वंदणयं, पडिकमणं, काजसग्गो, पच्चरकाणं ॥ सधेसिंपि एयंमि वड्ढिहे आवरसए
 त्रगवत्ते ससुत्ते सगंत्थे ॥ सनिज्जुत्तीए, ससंगहणीए, जे गुणा वा, त्रावा वा, अरिहत्तेहि,
 त्रगवत्तेहिं पत्तत्ता वा, परविया वा, ते त्रावे सहहामो ॥ पत्तियामो रोएमो, फस्सेमो पात्तेमो
 अणुपात्तेमो, ते त्रावे सहहत्तेहिं ॥ पत्तयत्तेहिं, रोयत्तेहिं, फस्तेहिं, पात्तत्तेहिं, अणुपात्तत्तेहि ॥
 अंतोपक्कस्स जं वाइयं, पडियं, परिथडियं, पुत्थियं, अणुपेहियं, अणुपात्तियं, तं उक्कक्क-
 याए ॥ कम्मक्कयाए ॥ मोहक्कयाए, बोहिदानाए, संसारत्तारणाए, तिकट्टु जवसंपज्जिताणं
 विहरामि ॥ अंतोपक्कस्स जं न वाइयं न पडियं न परिथडियं न पुत्थियं, नाणुपेहियं नाणुपा-

अथर्ववेदस्य अथर्ववेदस्य अथर्ववेदस्य ॥ अथर्ववेदस्य ॥ अथर्ववेदस्य ॥

अथर्ववेदस्य अथर्ववेदस्य अथर्ववेदस्य ॥ अथर्ववेदस्य ॥ अथर्ववेदस्य ॥

तं जहा ॥ दत्सवेयादियं, कपिप्या कपिप्यं, चुद्धकप्पसुयं । महाक-
रं, रायप्पसेणियं ॥ जिवात्रिगमो, पन्नवणा, महापन्नवणा, दंती, अणुज-

देविदरथज ॥ तंजदवेयादियं, चंदाविजयं, पमायप्पमायं, । पोरसिमंजलं,
वेसो, गणिविजा ॥ विजाचरण विणिवज अयायविसोही, अयायवित्रतीज्जाणवि-

णवित्रती, नरयविसोही नरयवित्रती मरणविसोही, मरणवित्रती ॥ संवेदण-
यं । वीयरयसुय । विहार कप्पो । चरण विसोही ॥ आउर पञ्चकाणं । महापञ्चकाणं ॥

सवेसिपि एयंमि अंगवाहिरि उक्कादिए जगवंते ससुत्ते सअरथे सगण्थे ॥ सनिज्जुतीए,
ससंगहणीए, जे गुणा वा ज्ञावा वा. अरिहंतोहि, जगवंतोहि, पन्नता वा, पस्खविया वा, ते ज्ञावे

सद्वहामो ॥ पत्तियामो, रोएमो, फासेमो, पादेमो, अणुपादेमो ते ज्ञावे सद्वहंतोहि ॥ पत्तियंते-
हि, रोयंतोहि, फासंतोहि, पावंतोहि, अणुपावंतोहि, अंतोपवसस जंवाइयं, पठियं, परिथदियं,

पुठिय, अणुपेहियं, अणुपादियं, तंजकक्कयाए ॥ कभसकयाए, मोहकयाए, बोहिवान्राए सं-
सारुत्तारणाए, तिकट्ट उवसंपज्जिताणं विहरामि ॥ अंतोपक्कसस जं न वाइयं, नपठियं न परि-

यडियं न पुठियं, नाणुपेहियं, नाणुपादियं, संतेवदे, सतेवीरिए, संते पुरसकारपरकमे तरस
आलोएमो ॥ पन्किक्कामो, तिंदांमो गरिहमो, विउडेमो, विसोहेमो ॥ अकरणयाए अञ्जुठेमो,

अहारादि तवोकम्भं, पायञ्चितं पडिवज्जामो, तरस्स मिज्जामि उकडं ॥ नमो तेसिं खमासम-
 णाणं जेहिं इम वाइयं अंगवाहिरियं कालियं जगवंतं, त जहा ॥ उत्तरज्जाणाइं । दसो
 उकप्पो । ववहारो । इस्सिआसियाइं । तिसीहियं । महात्तिसीहियं ॥ जंबूदीवपन्नती ।
 सूरपन्नती । चंदपन्नती । दीवसागर पन्नती । खुडियाविमाणपविन्नती ॥ महाद्वियाविमाणपवि-
 न्त्ती, अंगचूदीयाए, वंगचूदीयाए, विवाह चूदीयाए, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुदो-
 ववाए, वेसमणोववाए, वेदंधरोववाए, देविदोववाए, उट्टाणसुए, ससुट्टाणसुए, नागपरियाव-
 दियाणं । तिरियावदियाण । कप्पियाणं ॥ कप्पवाडिं सियाणं । पुक्कियाणं । पुक्कचूदियाणं ।
 वएहीदसाणं । आसीविस आवणाणं ॥ दिठ्ठिविसआवणाणं । चारणसमणआवणाणं ।
 महासुविणआवणाणं । ते अग्गितिसगणाण ॥ सबेसिं पि एयंमि अंगवाहिरए, कालिए,
 जगवंते, समुत्ते, सअरथे, सगणंथे, सन्निकुत्तिए ॥ ससंगहणीए, जे गुणा वा, आवा वा,
 अरिहंतोहिं, जगवंतेहिं, पन्नता वा परुक्किया वा ॥ ते आवे सदहामो पत्तियामो, रोएमो,
 फासेमो, पादमो अणुपादमो ॥ ते आवे सदहंतोहिं पत्तियंतेहिं, रोयंतेहि, फासंतेहिं, पादं-
 तेहि, अणुपादंतेहिं ॥ अंतोपरक्कस्स जं वाइयं, पडियं, परियद्वियं पुत्तियं अणुपेहियं, अणु-
 पादियं, तंडाक्कयाए ॥ कम्मक्कयाए, मोहक्कयाए, बोहिदान्नाए, संसारुत्तरणाए, तिकडु
 उवसंपज्जिताणं विहरामि ॥ अंतोपरक्कस्स जं न वाइय न पडिय, न परियद्वियं, न पुत्तियं, नाणु-
 पेहिय ॥ नाणुपादियं, संतेवदे, संतेवीरिए, संतेपुरसकार परकमे तरस्स आलोएमो ॥
 पक्किसामो, तिंदामो, गरिहमो, विउडेमो, विसोहमो ॥ अकरणयाए, अशुठेमो, अहा-

द्वियं, सतेवले, संतेवीरिण् संते पुरसकारपरकमे तरस आलोएमो ॥ पडिक्रमामो, निदामो, गरिहमो विउडेमो, विसोहेमो ॥ अकरणयाए, अश्रुठेमो, अद्वारिहं तवोकभमं, पायञ्जितं पडिवज्जामो, तरस भिज्जामि ड्कमं ॥ नमो तेसि खमासमणणं जेहि इमं वाइयं अंगवाहिरियं उक्कादिय, जगवंते, तं जहा ॥ इस्वेयाद्वियं, कप्पिया कप्पियं, चुद्धकप्पसुय । महाकप्पसुयं, उववाइयं, रायप्पसेणियं ॥ जिवात्तिगामो, पन्नवणा, महापन्नवणा, दंती, अणुज-गदारार्इं, देविदत्थज ॥ तंडववेयाद्विय, चंदाविजयं, पमायप्पमायं, । पोरसिमंजलं, मन्नवप्पवेसो, गणिविजा ॥ विजाचरण विण्णिवज आयविसोही, आयविज्जतीज्जणवि-साही, ज्जाणविज्जती, नरयविसोही नरयविज्जती मरणविसोही, मरणविज्जती ॥ संवेद्वणा-सुय । वीयरयसुय । विहार कप्पो । चरण विसोही ॥ आजर पञ्चकाणं । महापञ्चकाणं ॥ सर्वेसिपि एयमि अंगवाहिरिण् उक्कादिय जगवंते ससुत्ते सअत्थे सगन्धि ॥ सनिज्जुत्तीए, ससंगहणीए, जे गुणा वा ज्ञावा वा, अरिहंतोहिं, जगवंतोहिं, पन्नत्ता वा, परुविया वा, तं ज्ञावे सहदामो ॥ पत्तियामो, रोएमो, फासेमो, पावेमो, अणुपावेमो ते ज्ञावे सहदंतोहिं ॥ पत्तियंत-हि, रोयंतोहिं, फासेतोहिं, पावतोहिं, अणुपावतोहिं, अंतोपल्लस जंवाइयं, पडियं, परियाडियं, पुत्तिय, अणुपेद्वियं, अणुपाद्विय, तंडक्ककयाए ॥ कभ्भकयाए, मोहकयाए, बोहिवान्नाए सं-सारत्तारणाए, तिकइ उवसंपज्जिताणं विहरामि ॥ अंतोपल्लसस जं न वाइयं, नपडियं न परि-याडियं न पुत्तियं, नाणुपेद्वियं, नाणुपाद्वियं, संतेवले, सतेवीरिण्, संते पुरसकारपरकमे तरस आलोएमो ॥ पभिक्रमामो, निदामो गरिहमो, विउडेमो, विसोहेमो ॥ अकरणयाए अश्रुठेमो,

अर्हादिहं तवोकम्भ, पायञ्चितं पडिवज्जामो, तस्स मिजामि ड्कडं ॥ नमो तेसि खमासम-
 णाणं जेहिं इमं वाइयं अंगवाहिरियं कादियं जगवंतं, त जहा ॥ उत्तरज्जाणइं । दसो
 उक्कप्पो । ववहरो । इसिजासियाइं । निसीहियं । महानिसीहियं ॥ जंबूदीवपन्नती ।
 सूरपन्नती । चंदपन्नती । दीवसागर पन्नती ॥ खुडियाविमाणपविन्नती ॥ महद्वियाविमाणपवि-
 नती, अंगचूदीयाए, वंगचूदीयाए, विवाह चूदीयाए, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुतो-
 ववाए, वेसमणोववाए, वेदंधरोववाए, देविदीववाए, उठाणसुए, ससुठाणसुए, नागपरियाव-
 दियाणं । निरियावदियाण । कप्पियाउं ॥ कप्पवाडिं सियाउं । पुक्कियाउं । पुक्कचूदियाउं ।
 वएहीदसाउं । आसीविस ज्ञावणाउं ॥ दिठिविसज्जावणाउं । चारणसमणज्जावणाउं ।
 महासुविएज्जावणाउं । ते अग्निनिसग्गाण ॥ सर्वेसिं पि एयंमि अंगवाहिरए, कादिए,
 जगवत्ते, ससुत्ते, सअरथे, सग्गंथे, सन्निकुत्तिए ॥ ससंगहणीए, जे गुणा वा, ज्ञावा वा,
 अरिहंतोहिं, जगवंतोहिं, पन्नता वा परुविया वा ॥ ते ज्ञावे सहहामो पत्तियामो, रोएमो,
 फासेमो, पादमो अणुपादमो ॥ ते ज्ञावे सहहंतोहिं पत्तियंतोहिं, रोयंतोहिं, फासंतोहिं, पादं-
 तोहिं, अणुपादंतोहिं ॥ अंतोपरकस्स जं वाइयं, पडियं, परिपडियं पुत्तियं अणुपेहियं, अणु-
 पादियं, तंङ्कककयाए ॥ कम्मकयाए, मोहकयाए, बोहिलान्नाए, संसारुत्तरणाए, तिकइ
 उवसंपज्जिताणं विहरामि ॥ अंतोपरकस्स जं न वाइय न पडिय, न परिपडियं, न पुत्तियं, नाणु-
 पेहिय ॥ नाणुपादियं, संतेवदे, संतेवीरिए, संतेपुरसक्कार परकमे तस्स आलोएमो ॥
 पक्किसामो, निदामो, गरिहमो, विज्जेमो, विसोहमो ॥ अकरणायाए, अशुठमो, अर्हा-

रिहं तवोकम्मं, पायत्तितं पडिवज्जामो, तरस्स मिज्जामि डक्कन् ॥ नमो तेसिं खमासमणणाणं
 जेहिं इमं वाइयं ड्वावसंगं गणिपिन्नां । जगवंत, तं जहा ॥ आयारो ॥ सूअग्गमो ।
 गाणंग । समवात् । विहाइपन्नत्ती ॥ नायाधम्मकहात् । उवासग्गदसात्, अंतगडदसात्,
 अणुत्तरोववाइ दसात् पएहावागरणं, विवाग्गसूअं, दिठ्ठिवात् ॥ सर्वेसिंपि ए यंमि ड्वा-
 वसंगे गणिपिन्ने, जगवते, समुत्ते, सअत्थे, सग्गंथे, सनिज्जुत्तिए ॥ ससंगहणीए, जे गुणा
 वा, ज्ञावा वा अरिहतेहिं, जगवंतेहि पन्नत्ता वा ॥ परूवियावा ॥ ते ज्ञावे सहहामो, पत्तियामो,
 रोएमो, फासेमो, पावेमो अणुपालेमो ॥ ते ज्ञावे सहहतेहि पत्तियतेहिं, रोयनेहि फासंतेहि,
 पावंतेहि अणुपालंतेहि । अंतोपक्कस्स जं वाइयं, पडिय परियडियं, पुत्तियं अणुपेहियं अणु-
 पादियं, तं ड्क्ककयाए ॥ कम्मक्कयाए, मोहक्कयाए बोहिदान्नाए, संसारत्तारणाए, तिक्हडु
 जवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ अतोपक्कस्स जं न वाइयं, न पडियं न परियडियं न पुत्तियं
 नाणुपेहियं ॥ नाणुपादियं, संतेवले, संतेवीरिए, संते पुरसकारपरकमे तरस्स आत्तोएमो ॥
 पडिक्रमामो, निंदामो, गरिहमो, विजडेमो, विसोहेमो ॥ अकरण्याए अञ्जुठेमो, अहारिहं
 तवोकम्मं, पायत्तितं पन्निवज्जामो, तरस्स मिज्जामि डक्कडं ॥ नमो तेसिं खमासमणणाणं जेहिं
 इमं वाइयं ड्वावसंगं । जगवंतं, सम्मं ॥ काएण फासंति, पावंति, पूरंति, तीरंति किटंति,
 सम्मं अणाए आरहंति ॥ अहं च नारहेमि, तरस्स मिज्जामि डक्कडं ॥ सुयदेवया जगवर्द्ध ।
 नाणावरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेज सययं । जेसिं सुयसायरेज्जती ॥ १ ॥ इति श्री-
 पाक्किस्सुत्तं समाप्तं ॥ ॥ अथविधिः—पक्कीस्सुत्तं संपूर्णं यथावादं गुरुआदिक “सूअग्गदे-

वया " नी स्तुति केहे ते सांनट्या वाद सर्व साधुयें काजसगण पारवो. पवी वीर आसने
 हेला वेशी नवकार एक कहेवो. पवी " चत्तारीमंगल " तथा " इत्तामि पञ्चिकमीडं "
 तथा " इरियावही " अने " समणसूत्र " कहेवा. ते समणसूत्र संपूर्ण थयावाद. उन्ना
 थकांज " करेमिपंते " तथा " इत्तामितामि काजसगण " अने " तरसुतरी " तथा
 " अन्नवज ससिएण " कहीनि १९ वार लोणरसनो काजसगण करवो. पवी काजसगण
 पारीने प्रगट लोणरस कहेवो. पवी एक खमासणु देइने, तथा उन्नडक आसने हेला वेशीने
 " इत्ताकारेण संदिसह जगवन् पक्कीसुहपत्ति पडिदेहुं " एम कहीने पन्नास बोलोसहित
 सुहपत्तिनी पडिदेहणा करवी पवी एक खमासणुं देइने, तथा उन्ना थइने " इत्ताकारेण
 संदिसह जगवन् पक्कीवांइणा देउं " एम कहीने वांइणां देवां. पवी एक खमासणुं देइने
 तथा उन्ना थइने " इत्ताकारेण संदिसह जगवन् समासखामणेणं अञ्जुठिउमि अञ्जितर
 पक्कीयं खामेउं " एम कहीने पूर्ववत् अञ्जुठिउं खमाववो, पवी उन्ना थइने " इत्ताकारेण
 संदिसह पक्कीखामणा खामेउं " एम कही चार खामणा खामवा. ते नीचे प्रमाणे ॥

॥ अथश्री पादिक क्षामण विरच्यते ॥ इत्तामि खमासमणे, पियं च मे जंने, हठाणं,
 तुठाणं अप्पातं काणं, अन्नगण जोगाणं ॥ सुसीत्ताणं, सुवयाणं, आयरिय, उवज्जायाणं, ॥
 नाणेणं । दंसणेण । चरित्तेणं । तवसा । अप्पाणं त्रावे माणाणं ॥ बहुसुत्तेणं त्रे दिवसो
 पोसहो पक्को वइकंतो अन्नो त्रे कट्ठाणेणं. पञ्जुवठिउं तिकहुं सिरसा मणसा मज्जएण
 वंदामि (तुञ्जेदिं समं, इति गुरुवचनं) ॥१॥ इत्तामि खमासमणो पुढिं चेइयाइं वंदिता,

नमंसिता, तुञ्जहं पायमूदे विहरमाणेणं, जे केइ बहुदेसिया साहुणे दिछा समाणा वा,
 विसमाणा वा, गामाणुगामं दुइधमाणा वा, रायणिया संपुवति, उमरायणिया वंदंति,
 अछियाज वंदंति. सावया वंदंति सावयाज वंदंति ॥ पाजतर—(सावणाणं वंदंति, सावि-
 गाणं वंदंति,) अहंपि निसहो, निकसाज ॥ तिकहु सिरसा मणसा मजएण वंदामि ॥
 (अहमपि वंदामि चेइआई इति गुरु वचनं) ॥ इजामि खमासमणो जवठि जहं तुञ्जहं
 संतिअञ्जहा कएणं वा वत्थं वा ॥ पडिगहं वा कंबवं वा पायपुजंणं वा रयहरणं वा अरकर
 वा पयं वा गहं वा सिलोग वा॥सिलोगर्हं वा, अठं वा, हेज वा, पसिणं वा, वागरणं वा,॥
 तुञ्जेहि चिअत्तेणं दिहं, मए अविणएण पडिठिअ, तस्स मिजामि डुकमं ॥३॥ (आथ-
 रिय संतियं, इति गुरुवचनं.) ॥ इजामि खमासमणो अहमपुवाइं कयाइं च मे किइक-
 म्माइं।आथार मंतरे, विणयमंतरे॥सेहिउं, सेहाविउं, संगहिउं, जवगाहिउं, सारिउं, वारिउं॥
 चोइउं पन्निचोइउं, चिअत्ता मे पडिचोयणा, अञ्चुठिजहं॥तुञ्जहं तव ते असिरी ए इमाजं ।
 चाजरंत संसार काताराजं साहहु निवारिस्सामि ॥ तिकहु सिरसा, मणसा, मजएण वंदामि
 (निवारण पारणा होइ इतिगुरुवचनं) ॥ ४ ॥ इति पाठिकदशमणकानि समाप्तानि ॥
 ॥अथविधि॥—ए रीते चार खामणा खमाव्या वाद “नीवारणा पारणा होइ परकी पडीकमणं
 समत्तं, अवसेसं देवसियं पडिकमामि” एम कहीने एक खमासणु देवुं पवी जेम देवसिक
 प्रतिकमणमा “ समणसूत्र ” कहावाद गुरु आसातना निमित्त जे वांदणा देवाय ते,
 त्याथी मांडीने ठेक “द्वयु अजित शांतिस्तवन” सुधि सर्वाविधि देवसिक प्रतिकमणन,

पेजेज जाणवी तेमां एटलो विशेष ठेके “ सुध्यदेवीआ ’ नी स्तुतिनी जगोए “सुवनदेवी-
 याए करेमि काजसगं” एमकही एक नवकारनो काजस्सगण करवो अने स्तुति “ज्ञानादि-
 गुण युतानां” नी स्तुति केहवी अने “क्षेत्रदेवता” नी स्तुतिनी जगोए “जिसेवीतिसाहु”
 ए स्तुतिने वदवे “यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य” नी स्तुति केहवी ते नीचेसुजव “ज्ञानादिगुणयु-
 तानां ” तथा “यस्या क्षेत्रं समाश्रित्य” ए वे स्तुति नीचे सुजवजाणवी ॥ अथ सुवन
 देवतानीस्तुति ॥ ज्ञानादिगुण युतानां नित्यं स्वाध्याय संयमरतानां । विदधातु युवनद्वी,
 जिवं सदा सर्वसाधूनां ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ क्षेत्रदेवतानी वीजीस्तुति ॥ यस्याः क्षेत्रं
 समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥
 अथविधि ॥—अने नवकारनी जगोए वज्रपंजर स्तोत्र “परमेष्टीनमस्कारं” तथा स्तवननी
 जगोए “ अजितशांति स्तवन एटवे अजि अंजिअ सबन्नय” ए वे समरण केहवां ते आ
 पुरतकमां नव स्मरणनी अंदर दखेव ते तेथीआंही नथी दारव्या अने सबाय “ सुहम
 रवेसाणं” नीज केहवी ते नीचे प्रमाणे ॥ ॥ अथ द्वितीय स्वाध्याय नंदीसूत्रनी प्रारंभः॥
 परमेश्वरने अर्थ अविचेद परंपरायें करी आकादसूधी श्रीवीर जगवाननुं शासन
 र कर्त्तव्यतेनी आवाकिकाने स्तवे हे ते स्थविरवलि सुधर्मा स्वामीबीज वर्तेदी
 ठे, उ मा बीजा गणधरोने सत्तान प्रवृत्तिनो अन्नाव हे, माटे सुधर्मा स्वामीनेज प्रथम
 आगाव करीने स्तवे हे ॥ ॥ सुहमं अग्निवेशाणं जंबूनाम च कासवं ॥ पत्रवं कक्षायाणं
 सिंघवं सिंघांजरां तथा ॥ २ ॥ जसजदं तुंगियं ववे, सं सुव चैव मादरं ॥ नदबाहुं च पादभ,

धृत्वदं च गोयम ॥१॥ ए दावच्चसगोतं, वंदामि महानिरे सुद्विं च ॥ ततो कोसियगुतं
 बहुवस्स सिरीवय वदे ॥ ३ ॥ हारियगुत साइ च, वदीमो हारियं च सामज्ज ॥ वदे को-
 सियगोत, सडिह्व अज्जजीवधर ॥ ४ ॥ ति समुहखायकिति दीवसमुद्वेसु गदीय पेयाव ॥
 वदेअज्जसमुद, अरुकुञ्जियसमुह्वंतीरा५॥नणगं करगं ज्जरगं, पत्तावग णणदंसणगुणाणं॥
 वदामि अज्जमंगुं, सुयसानर पारगं धीरं ॥६॥ वंदामि अज्जधम्मं, वंदे ततो य च्हइशुतं च ॥
 ततोय अज्जवइरं, तव नियम गुणेहि वइरसमं ॥ ७ ॥ वंदामि अज्जरत्तिकय, खमणे रत्तिकय
 चरित्त सबस्से॥रयणकरंडग नूडं, अणुजगो रत्खिउजेदिं॥८॥नाणम्मि दंसणम्मिय, तव विणए
 णिच्च कावसुज्जुतं ॥ अज्जाणं दिवखमणं, सिरसावंदे पसन्नमणं ॥ ९ ॥ वड्डज वायगवसो,
 जसवंसो अज्जनाग दहीणं ॥ वागरण करण, नंगिय, कम्मपयभी पहाणाणं ॥ १०॥ जच्च
 जणधाजसम, प्पहाण महियकुवलय निहाणं ॥ वड्डज वायगवंसो, रेवइनकत्त नामाणं ॥
 ॥११॥अथवपुरा णिक्कंते, कात्तियसुय अणुजगिए धीरि ॥ वंनदीवगसीहि, वायगपयमुत्त-
 मं पत्ते॥१२॥जेसिं इमो अणुजगो, पयइ अज्जावि अह्नरदम्मि ॥ बहुनयर निगगयजस्स,
 तं वंदे खंदिवायरिए ॥ १३ ॥ ततो हिमवंत महंतविकमे, धिइपरकममणते ॥ सथायमण-
 तथरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ १४ ॥ कात्तियसुयअणुयोग, स्स धारए धारए य पुधाणं
 ॥ हिमवंतखमासमणं, वदेणगज्जुणायरिए ॥१५॥ मिजमद्वव संपन्ने अणुपुविं वायगत्तणं
 पत्ते ॥ उहसुय समायारे, नागज्जुण वायए वदे ॥१६॥ गोविदाणपि नमो, अणुजगो विजव
 धारिणंदाण ॥ निच्चं रकति दयाणं, परूवणे डच्चन्निदाणं ॥१७॥ ततो अ नूयदिव, निच्चं

तव संजसे अर्चनविष्णु ॥ पंडियजण सामस्य वंदामि य संजमविहन्तु ॥२८॥ वर कण्ठा तवि-
 य चपग, विमल वर कमल गज्जसिरिवसे ॥ त्रविय जण हियय दइए दयागुण विसारए
 धीरे ॥२९॥ अह्नररह प्पहाणे, वहु विह सिज्जाय सुसुणिय प्पहाणे ॥ अणुजणिय वर वसहे,
 नाइलकुल वसनंदिकरे ॥३०॥ त्रय हिय अप्पगन्धे, वदेहं नूयद्विन्न मायरिए ॥ तव त्रय-
 वुडेय करे, सीसे नागज्जुण रिसीण ॥ ३१ ॥ सुसुणिय निज्जानिच्चं, सुसुणिय सुतल धारए
 निच्च, ॥ वदेह लोहिच्च, सज्जावु त्रावणा तच्चं ॥३२॥ अह्नमहल खाणिं, सुसमण वरकाण
 कहण निष्ठाणिं ॥ पयइय महुर वाणिं, पयज पणमामि दूसगणिं ॥ ३३ ॥ तव नियम सच्च
 संजम, विणय ज्ञाव खंति महव रयाण ॥ सीलगुण गहियाणं, अणुजण जुगप्पहाणाण ॥
 ॥३४॥ सुकुमाद कोमलतवे, तेसिं पणमामि वरकाण पसहे ॥ पाए पावयणीण, पडिज्जग-
 सएहि पणिवइए ॥ ३५ ॥ जे अह्ने त्रगवते कावियसुय अणुजणिए धीरे ॥ ते पणमिज्जण
 सिरसा नाणस्स परूवणं वुहं ॥ ३६ ॥ शेरवाविय समान्ता ॥ आत्तिणिवोहियनाणं,
 सुयनाणं चैव उहिनानाणं च ॥ तह मण पज्जवनाणं, केवलनाणं च पंचमयं ॥ ३७ ॥ इति
 नंदि सूत्रस्य द्वितीय स्वाध्याय समाप्तः ॥ अथविधि-एरीते “ सुहम अण्णीवेसाणं ”
 नी सव्वाय कहेवी. अने “ वधू अजितशांतिस्तवन ” तथा “ वृहद अजितशांतिस्तवन ”
 एम वे कहेयां. बाकीनी विधि गुरु आसातना निमित्त वांदणाथी मांडी ठेक प्रतिक्रमएनी
 समाप्ति पर्यंत देवसिकनीज माफक जाणवी ॥ ॥ इतिविधि पद्मगहस्य अण्णगरस्य
 पादिक प्रतिक्रमणं समाप्तम् ॥ अथश्रीविधिपद्मगहस्य अण्णगरस्य चजमासी प्रतिक-

मणुविधि ॥ चउमासी प्रतिक्रमणनी विधि पादिक प्रतिक्रमणनीज माफक ठे. पण एटहुं विशेष ठेके, ज्यां ज्यां“पस्की” ॥ शब्द अर्धे, त्यां त्यां “चउमासी” ॥ शब्द कर्हेवो. अने वार लोगस्सना काउस्सगनी जगोए वीस लोगस्सनो, अने एक नवकारनो काउस्सग करवो. अने तपने ठेकाणे “ठजेणं वे उपवास, चार आंवीद, ठ नीवी, आठ एकासणा, शीलव वे-आसणा, अने चार हजार सत्थाय तप ” एम कर्हेवो. “ पस्की पफिक्रमणं समत्तं” नी जगोए “चउमासी पफिक्रमणं समत्तं” एम कर्हेवुं तथा त्यांज पाणी, सुवनी, मेवा विगेरेना काल संनारवा. वाकी विधि पस्कीप्रति क्रमणनी विधि माफकज जाणवी ॥ इति चउमासी प्रतिक्रमणविधि संपूर्ण ॥ ॥ अथश्री संवत्सरी प्रतिक्रमणविधि ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमणनी विधि पण पस्की प्रतिक्रमणनी विधि प्रमाणेज जाणवी. तेमां एटहुं विशेष ठेके, ज्यां ज्यां “पस्की” शब्दअर्धे, त्यां त्यां “सवत्सरी” शब्द कर्हेवो. अने वार लोगस्सना काउस्सगनी जगोए चावीस लोगस्स अने एक नवकारनो काउस्सग करवो. अने तपने ठेकाणे “अठमेणं त्रंतेणं त्रण उपवास, ठ आंवीद, नव नीवी, वार एकासणा चोवीस वीआसणां अने ठ हजार सत्थाय तप” एम कर्हेवुं. एटलोज फेर ठे वाकीनी सवली विधि पादिक प्रतिक्रमणनी विधि माफकज जाणवी ॥ ॥ इति संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि संपूर्णः ॥ अथ अष्टांगारस्य रायसंशारा पोरसि त्रणवानी विधि ॥ प्रथम देवसिक प्रतिक्रमण कर्था पढी पोहोर रात्रि सुधी तो त्रणहुं गणहुं तथा सत्थायध्यान करवु. पढी प्होर रात्रि वीत्यावाद् गुरु आदिक पासे अथवा स्थापनाचार्य सन्मुख आर्वीने एक खमासणुं देइ उत्रा अइने

एम कहे—“इडाकारेण संदिसह प्रगवन् बहुपति युवा पोरिखि राह्य संधाराए वाशम
 गुरु कहे “जोवेह” त्यारे शिष्य कहे “तद्वत्ति” अथ विधि—एम कही यत्न पूर्वक मंडासणधी
 त्रामि प्रमाजिने त्यां संधारो करवो पती संधारा उपर उनी एक खमासणुं देइने उजा थइने
 दरियावहीनी आडा मांगी पती “दरियावही” तथा “तस्स उत्तरी” अने “अन्न
 त्तससिएण ” कही एक लोगरसनो काजस्सगा करवो. पती काजस्सगा पारी प्रगट
 लोगरस्स कहेवो. पती खमासणुं देइने “इडाकारेण संदिसह प्रगवन् चैत्यवदन करंजी
 एम कही नीचे प्रमाणे चैत्यवदन करवुं. ते नीचे प्रमाणे । अथ चउकसायनु चैत्यवं-
 दन. ॥ चउकसाय । पडिमहु हुरणु, डधयमयण वाणसुसु मूरणु ॥ सरसपि अंगु वहु ग-
 यगासिउ, जयउ पासु युवणत्तयसासिउ ॥१॥ ॥ जसु तणु कंति कण्णप्प सिणिएइउ, सोहइ
 फणिएणिए किरणए दिव्वउ ॥ नं नव जवहर तडित्तय दांविउ, सो जिणु पासु पयत्तउ वंविउ
 ॥ २॥ ॥ इति श्रीपार्थजिनस्य चैत्यवदन समाप्तः ॥ ॥अथविधि—एम वे गाथानुं चउकसा-
 यनुं चैत्यवदन करीने “जंकिचिनामतिहं” तथा “नसुत्थणं” अने “जे अइआसिखा”
 पती “जावंतीचेइ आइं” तथा “जावंत केविसाहु” कहेवा. पती वेतेज एक खमासणु
 देइने “इडाकारेण सदिसह प्रगवन् स्तवनत्रणुं” एम कहीने “उवसगगहरं” ॥ नुं स्तवन कहे-
 वुं. पती “जय वीयराय” संपूर्ण कहेवा पती एक खमासणुं देइने उजडक आसने हेगा
 वेसीने “इडाकारेण संदिसह प्रगवन् बहु पडिपुत्रा पोरिसि राह्य संधारा सुहपत्ति पडि-
 वेहुं” एम कहीने सुहपत्ति पडिवेहीने नवकार एक तथा करेमि तंते एम नवकार

पूर्वकत्रण वार करेमि जतैनो पाठ कहेवो श्रावक पोतेज पोतानी मेवे करेमि जतैनो
पाठ वोवे. पवी एक खमासणु द्दने " इहाकारेण संदिसह जगवन् राइय संथाराए
पाठजणुं" एम कहीने नीचे प्रमाणे राइय संथारानी वीज गाथा कहेवी ॥ अथ राइय
संथारानी वीसगाथा ॥ आसिज्ज, आसिज्ज, आसिज्ज निसिदी, निसिदी, निसिदी,
णमो खमासमणाणं गोयमार्दणं महासुणीणं ॥ अणुजाणह जिठिज्जा ॥ अणु-
जाणह परम गुरु, गुरु गुणरयणेहिं मनीअ सरीरा । बहुपडिपुत्ता पोरिसी राइअ
संथाराए जामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथार, वाहु वहाणेण वामपासणं ॥ कुक्कुडि पायप
सारण अंतरत पमज्जाए जूमि ॥ २ ॥ संकोइअ संमासा, उवटंते य कायपडिवटा ॥ द्वाइ
उवजगं, ऊसास निरुज्जाण वोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाज, इमरस देहस्सिमाइ रयणीए ॥
आहार सुवहि देह सव तिविहेण वोसिरिअ ॥ ४ ॥ पाणा इयाय मदिपं, चोरिक मेहुण
दविणसुह ॥ कोह माण मायं, वोच पिज्जं तहा दोसं ॥ ५ ॥ कजहं अन्नकाणं, पेसुन्न, रइ
अरइ समाजत्त ॥ पर परिवायं माया, सोस मिज्जत्तसद्ध च ॥ ६ ॥ वोसिरिसु इमाइ सुक्क
मग्ग ससग्ग विग्घ जूअाइ ॥ जगइ निवधणाइ, अठारस पावठाणाइ ॥ ७ ॥ ए गोहं नडि
मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाण मणु सासइ ॥ ८ ॥ एगो मे
सासजं अप्पा, नाण दसण सजुजं ॥ सेसा मे बाहिरा नावा, सव्वे सजोगावरकणा ॥ ९ ॥ सजो-
गमूला जीवेण पत्ता उक्कपरपरा ॥ तम्हा सजोग संवध, सव्व तिविहेण वोसिरियां ॥ १० ॥ अरि-
हत्तो महदेवो, जावजीव सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं इय सम्मत्त मए गहियं ॥ ११ ॥

चत्वारि मगलं, अरिहता मंगल, सिद्धा मंगलं, साहु मगलं, केवलपणतो धम्मो मंगल ॥ १५ ॥
 चत्वारि दोगुत्तमा, अरिहता दोगुत्तमा, सिद्धा दोगुत्तमा, साहु दोगुत्तमा केवलपणतो धम्मो
 दोगुत्तमो ॥ १६ ॥ चत्वारि सरणं पवज्जामि, अरिहते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि,
 साहु सरणं पवज्जामि, केवलपणत्त धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ १७ ॥ चउरंगो जिणधम्मो,
 नकउ चउरग सरणं मवित्तकयं ॥ चउरंगो उववेउउ, न कउ हा हारिउं जम्मो ॥ १८ ॥
 अरिहंत सिद्ध साहु, केवलपि कहिउ सुहावउ धम्मो, एए चउरो चउगइ, हरणा सरणं उइइ
 धत्तो ॥ १९ ॥ एगो वच्चइ जीवो, एगो च वज्जइ ॥ एगस्स होइ मरणं, एगो सिउइ नी-
 रउ ॥ २० ॥ ज ज मणेण वरुं ज जं वायाय ज्ञासिय पाव ॥ काएण विउठकयं, भिउामि
 उक्कए तस्स ॥ २१ ॥ सब्बे जीवा कम्मवस, चउदइ रज्ज उमंत ॥ ते मे सब्ब खमाविय, सुउवि
 तेइ खमंत ॥ २२ ॥ खमी खमावी मइखमी, उइइ जीव तिकाय ॥ शुद्ध मने अज्ञातोवतां,
 सुउ मन वेरन थाय ॥ २३ ॥ इति ॥ अथविधि-एवी रीतनो पाठ कइया पवी सात नवकार
 मनमां कहेवा. पवी शिल्प कहेके “ इत्ताकारेण संदिसइ उगवन् किंकायवं ” त्पारे
 गुरु कहे “ सज्जायपाठ उणिय उणियवं नो पमाएयवं ” त्पारे शिल्प कहे “ यथा ज्ञाकिं ”
 पवी “ सर्वं मंगल मंगलत्वं ” ए गाथा संपूर्ण कहेवी. पवी धर्म ध्यान चिंतवहुं अने उयारे
 निजा आवे त्पारे मात्रा वीगेरेनी बाधा टादीने “ इरियावही ” पडीकमीने करेव संथारा
 पर विश्राम करवो. डवे पडखे हाथनुंज उत्रीकुं करी विश्राम करवुं. अने सुहपत्ति तथा
 रजोहरण जमणी वाजुए राखवा. एक हाथथी उपरांत रजोहरण वेगहुं न राखवु ॥

॥ इति राइ संथारा पोरिसि त्रणवानी विधि संपूर्णं ॥ ॥ अथ आणगारस्य रायपडि
 वेहण विधि. ॥ ॥ सुहपत्ति रयहरणं, जवहि चोवपड गुरुवगरणाइं ॥ वसही दंभग
 पत्ता, सज्जाज पनाइ किच्चाइं ॥ १ ॥ प्रथम राइ पडिकमणुं कर्या पवी एक खमासमणुं देइ
 तथा जना थइने “ इज्जाकारेण संदिसह त्रगवन् राइ पडिवेहण संदिसाहुं ” तयारे गुरु
 कहे “ संदिसावेह ” तयारे त्रिष्यकहे “ इहं तहत्ति ” ववी एक खमासणुं देइने जना
 थइने “ इज्जाकारेण संदिसह त्रगवन् राइ पडिवेहण करुं ” तयारे गुरु कहे “ करेह ”
 तयारे त्रिष्यकहे ‘ इहं इरिहावही ” तथा “ तरस जत्तरी ” तथा “ अन्नव उससिएणं ”
 कहीने एक लोणस्सनो काजस्सग्ग करवो. पवी काजस्सग्ग पारीने त्रगट लोणस्स
 कहेवो. पवी एक खमासणुं देइने तथा जन्नडक आसने हेवा वेसीने “ इज्जाकारेण संदि-
 सह त्रगवन् राइ पडिवेहण सुहपत्ति पन्निवेहुं ” एम कहीने सुहपत्तिनी पच्चास वोवस-
 हित पडिवेहण करवी. पवी उंथानी पडिवेहणा करवी, दशवोवथी उंथानी नांडीनी
 पन्निवेहण करवी. तथा उंथाना दोरानी दश वोवथी पडिवेहण करवी. तथा उंथारीयानी
 पच्चीस वोवथी पडिवेहण करवी तथा सूत्रना वखनी पण पच्चीस वोवथी पडिवेहण
 करवी तथा उंथानि दश वोवथी पडिवेहण करवी. एरीते उंथानी पडिवेहण करवी. (जे
 जे जग्घाए पडिवेहणाना वोवोनी सूचना आवे त्यां सुहपत्तिना पच्चास वोवमांथी प्रथ-
 मना पच्चीस वोवोमाथी समजी देवा) पवी वेवा थकांज “ इज्जाकारेण संदिसह त्रगवन्
 अंगपन्निवेहणा करुं ” एम आइजा मागीने पहेवां दशवोवथी कंदोरानी पडिवेहणा

करवी. पती पच्चीस वोढोथी चोवपट्टा नी पडिवेहणा करवी. पती चोवपट्टो पहेरीने
 कंदोरो बांधवो. पती पच्चीस वोढोथी कटासणा (पाथरणा) नी पडिवेहणा करवी. पती
 न्नीस प्रमाजीने कटासणुं पाथरी उपर उनीने एक खमासणुं देडने तथा उन्ना थडने
 “डरियावही ” पती “ तरसजतरी ” तथा “ अब्रह उससिएणुं ” कही एक दोगरसनो
 काजससणा करवो. पती काजससणा पारी प्रगट दोगरस कहेवो पती एक एक खमासणुं
 देडने तथा उन्नाथडने “ इत्ताकारेण संतिसह जगवत् पसाय करी पडिवेहणा पडिवेह-
 रावोजी ” एम आझा मांगवी, त्यारे गुरुकहे “ पडिवेह ” त्यारे शिष्य कहे “इहं तहत्ति”
 एम कहीने खजानी कामती पडिवेहीने तथा कामती संकेतीने, अने तेने पाथरीने, तेना
 उपर स्थापनाचार्यजीने पथरावीने उपरनी वे सुहपत्ति पच्चीस वोढे पडिवेहीने तेर
 वोढथी स्थापनाचार्यजीनी पडिवेहणा करवी. ते तेर वोढो नीचे प्रमाणे जाणवा ॥ ॥
 अथ स्थापनाचार्यनी पडिवेहणा तेर वोढ ॥ (१) ॥ सुद्ध स्वरपना धारक (२)
 ज्ञानमयी (३) दर्शनमयी (४) चारित्रमयी (५) शुद्ध श्रद्धामयी (६) शुद्ध
 प्ररूपणामयी (७) ॥ शुद्ध स्पर्शनाथी (८) पंचाचार पावे (९) पंचाचार पदावे
 (१०) पंचाचार अनुमोदे (११) मनोगुप्ति सहित (१२) वचनगुप्ति सहित (१३)
 कायगुप्ति सहित ॥ इति सपूर्ण ॥ ए रीते स्थापनाचार्यजीनी पडिवेहणा करवी. (शिष्य
 होय तैणे गुरुना वखोनी पडिवेहणा पच्चीस पच्चीस वोढोथी करवी.) पती स्थापनाचार्यजीनी
 वाकीनी सुहपत्ति विगेरेनी पच्चीस पच्चीस वोढोथी पडिवेहणा करवी. पती स्थापनाचार्य-

जिने उवणी उपर पधरावी पती एक खमासणु देइने “ इडाकारेण संदिसह उगवन् उपधि सुहपत्ति पडिवेहुं ” गुरु कहे “ पन्धिवेह ” त्यारे शिष्य कहे ‘ इडं ” कही सुहपत्ति पडिवेही, पती एक खमासणु देइने तथा उना थइने “ इडाकारेण सदिसह उगवन् उपधि पन्धिवेहण सदिसाहुं ” त्यारे गुरु कहेके “ संदिसावेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इडं-तद्वत्ति ” वती एक खमासणु देइने तथा उना थइने “ इडाकारेण संदिसह उगवन् उपधि पडिवेहण करं ” गुरुकहे ‘ करेह ’ त्यारे शिष्य कहे “ इडं तद्वत्ति ” एम कहीने बाकीना पोताना वख विरेरेनी पच्चीस पच्चीस बोदोथी पन्धिवेहण करवी. पती दशबो-दोथी डंडानी पडिवेहण करवी. पती एक खमासणुं देइने “ इडाकारेण संदिसह उग-वन् वस्ती पडिवेहुं ” एम कही वस्तीनी पडिवेहण करवी एटवे उपासराभाथी काजो कादवो पती काजो एकवो करीने तपासवो. सच्चितादिक जे काइ निकवे ते यतनाथी एक कोरे मूकवो पती काजो निरवथ जग्यामां परजवो एने परजवती वखते “ अणुजा-णह जसग्गो ” एम कहीने परजवयो परजव्यापती “ बोसिरे ” एम उणवार कहेहुं का-जो परजववा जाती वेलाए “ आवरसही ” एम कहीने उपाश्रयनी वहार जावुं तथा पावा उपाश्रयमां आवती वेलाए ‘ निरिसही ’ एम कहीने अंदर आववु. पती एक खमा-सणुं देइने तथा पावा उना थइने ‘ इरियावही ’ तथा ‘ तरस उतरी ’ तथा ‘ अन्नव उससिएण ’ कही एक लोगरसनो काउरसग्ग करवो. पती काउरसग्ग परीने प्रगट बो-गरस कहेवो पती एक खमासणुं देइने उना थइने “ इडाकारेण सदिसह उगवन्

सवाय संदिसावेहूँ” त्यारे गुरुकहे “संदिसावेह” त्यारे शिष्य कहे “इहंतहत्ति” वली एक
 खमासणुं देइने ‘इहाकारेण संदिसह जगवन् सवायकरुं’ त्यारे गुरु कहे ‘करेह’ त्यारे शिष्य
 कहे ‘इहं तहत्ति’ एम कहीने एक नवकार गणीने ‘अरिहंता मंगलं मुख’ एसवाय कहेवी
 ते आज पुस्तकमां आगल सीवाय संप्रहमां लखेल वे मारे आंहीं लखी नथी. (जो
 विहार करवो होय तो “धम्मो मंगलं” नी सवाय कहेवी.) पती एक नवकार कहेवो पती एक
 खमासणुं देइने, तथा जना थइने “इहाकारेण संदिसह जगवन् उपयोगनिमित्तं करेमिकाउ-
 रस्सगं अब्रहं उमसिएणुं” कही एक नवकारनो काउरस्सग करवो पती प्रगट नवकार कहेवो ॥
 अथ उपयोग करवानी विधि. ॥ ॥ पती शिष्य गुरुने एम कहे “ इहाकारेण संदिसह
 जगवन् लाभ कहां वेयुं ” त्यारे गुरु कहे “ जह पूणएसहू ” त्यारे शिष्य कहे “ आव-
 र्सिअए ” त्यारे गुरु कहे “ जहजोगो ” त्यारे शिष्य कहे ‘ शरयातर धर कोनुं करशुं ’
 त्यारे गुरु कहे ‘ वसति दातारनुं धर शरयातर ’ त्यारे शिष्य कहे “ इहं तहत्ति ” इति
 संपूर्ण एम कहीने पती स्थापनाचार्यने वे खमासणां देइने पती “ इहाकार सुहराइ ”
 एम सुखशाता पुती “ अश्रुतिउ ” खमाववो. पती एक खमासणुं देइने जनाथइने “ इ-
 हाकारेण संदिसह जगवन् बहु वेज संदीसाहुं ” त्यारे गुरु कहे ‘ सदिसावेह ’ वली बीजुं
 खमासणुं देइने ‘ इहाकारेण संदिसह जगवन् बहु वेज करुं ’ त्यारे गुरुकहे ‘ करेह ’ पती
 (शिष्यादिक बहुवेजना वे खमासणा गुरु आदिकने पासे आपे अने गुरु आदिक रथाप-
 नाचार्यने पासे आपे.) एक खमासणु देइने जना थइने ‘इहाकारेण संदिसह जगवन् राइ

पडिवेहण करतां जे कांड अविधि आशातना हुइ होय ते सवी हुं मनें वचनें कार्यायें करी मित्रामि इकडं' पवी प्रथमवन्निज गुरुने वांदवा, पवी सर्वसाधुत् ए पोताथी वडिवने अनुक्रमे वांदवा॥ इति प्रजातनी पडिवेहण विधि संपूर्ण ॥ ॥ अथ जिन मंदिरे चैत्यवदन विधि ॥ ॥ प्रथमतो उपश्रयमाथी निकलता " आवरसही " कहीने पवी " नीरसही " कहेवी पवी वीजी " नीरसही " जिन मंदिरने पणथीये चडतां कहेवी पवी त्रण प्रदिक्रिणा देवी. तेमा जो कांड पण आशातना विगेरे दीजामां आवे तो श्रावकोने उपदेश करीने ते आशातना विगेरे टवाववी. पवी रंगमंरुपमा आवी " निरसही " कहीने एक खमासणुं देइने जना शइने " इजाकारेण संदिसह जगवन् दरियावहियं पडिक्रमामि " तयारे गुरु आदिक होय ते आदेश आपे तयारे शिष्यादिक " इहं इजामि पडिक्रमिडं " एम कही ' दरियावही " तथा " तस्स उत्तरि " तथा " अन्नन्न उरससिएणं " कही एक लोगरसनो काजरसगण करवो. पवी काजरसगण पारीने प्रगट लोगरसस कहेवो. पवी त्रण खमासमणां देवा पवी जमणो दीचण नूमिए राखवो. तथा जवो दीचण जनी राखी कमजना जोडानी पेठे दश आंगुली एकठी करी वे कोणी पेठउपर राखी ए रीते " योगसुजाथी रहेवुं (प्रजुथी पुरुषने जमणी वाजु अने स्त्रीने प्रजुथी डावी वाजु वेसवुं अने अवग्रह सहीत वेसवु उरुकुष्ठ अवग्रह साठ दाखनो अने जगन्ध नव दाखनो. साठ दाखने महिदी कीरे अने नव दाथथी उपर ते मध्यम अवग्रह जाणवो. ए अवग्रह प्रजु विराजमन ठे त्यांथी गणवो एम अवग्रह सहित रहेवुं) पवी " इजाकारेण संदिसह जगवन् चैत्य-

वंदन करुं ” ए रीते कहीने ‘ अशोक दृक्षसुरपुष्पवृष्टि ’ कहीने चैत्यवंदन कहेवुं
 पवी ‘ जंकिचि ’ कहेवी पवी ‘ नमस्थुणं ’ तथा ‘ जावंती चेइयाइं ’ अने ‘ जावंति
 केवीसाहू ’ कहीने पवी “ इहाकारेण संदिसह नगावन स्तवनत्रणुं ” एम कही एक नव-
 कार कहीने अरिहत गुण गर्भित स्तवन कहेवो. पवी ‘ जवसग्गहूरं ’ कहेवुं पवी
 “ जयवीयराय ” कहीने तथा उत्राथइने “ सबदोए अरिहत चेइआणं करेमि काजसग्गं
 अनुत्त जससिएण ” कहीने एक नवकारनो काजसग्ग करवो. पवी काजसग्ग पारीने
 एक नवकार प्रगट कहीने सारा स्वरथी एक स्तुति कहेवी. पवी “ जयातिजयरा ” कहेवा.
 पवी एक खमासणुं देइ उत्राथइने यथाशक्ति पञ्चखाण करवुं. पवी वदी एक खमासणुं
 देइने “ आवरसहि ” कहीने जिनचैत्यधरमांथी वाहार आववुं ॥ आ विधि संक्षेपे वे,
 विजेप विधि जोवी होय तो “ प्रवचन सारोशर ” आदिक ग्रंथोथी जाणी देवी तथा गुरु-
 मुखथी जाणी देवी. ॥ इति जिनमंदिरमां चैत्यवंदन करवानी विधि संपूर्णः ॥ अथ अण-
 गारस्य उधाडापोरिसी नणवानी विधि ॥ उ धमी दीवस चड्या पवी प्रथम गुरु समीपे
 आवीने एक खमासणुं देइने तथा उत्रा थइने “ इहाकारेण संदिसह नगावन उधाभा
 पोरिसी श्रिया वहियं पडिक्कसुं ” एम कहे त्पारे गुरु कहे “ पक्किमेह ” त्पारे शिष्य कहे
 “ इहं इहामि पडिक्कमिउं श्रियावहियाए ” तथा “ तस्सजत्तरी ” “ अन्नत्त जससिएणं ”
 एम कहीने एक लोगरस्सनो काजसग्ग करवो पवी काजसग्ग पारीने प्रगट लोणस्स
 कहेवो. पवी एक खमासणुं देइने उत्राडक आसने वेसीने “ इहाकारेण संदिसह नगावन

उवाचा पोरिसेी सुहृपत्ति पक्रितेहूं ” एम कहे त्यारे गुरु कहे “ पडितेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इहं तहत्ति ” एम कहीने पञ्चास वोलोथी सुहृपत्ति पडितेहवी (ज्यां सुधी गुरु आदिक सुहृपत्ति पडितेहे, त्या सुधी शिष्यादिक उत्रा रहे) पवी ज्यारे गुरु आदिक सुहृपत्ति पडितेही रहे त्यारपवी शिष्यादिक खमासणुं देइने आज्ञा मागीने सुहृपत्ति पडितेहे (जो व्याख्यान वंचातुं होय, तो सूत्र वंचाईं रह्या पवी श्राविका गहुंवी गाय, त्यारे ए विधिथी सुहृपत्ति पडितेहेवानी विधि करवी.) ॥ इति अणगारस्य उवाडा पोरिसि त्रणवानी विधि. ॥ ॥ अथ अणगारस्य त्रंडाद्युपकरण पडितेहण विधि ॥ ॥ प्रथम कामती पडितेहीने, ते पाथरीने पवी पात्रा जोडी ते उपर राख्वा. पवी उत्रा थइने एक खमासणुं देइने तथा उत्राथइने “ इत्राकरेण संदिसह त्रणवन् इरियावहि पडिकसुं ” त्यारे गुरुकहे “ पक्रिकमेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इहं इत्रामि पडिकमीत्र ” एम कहीने “ इरियावही ” पवी “ तस्स उत्तरी ” तथा “ अत्रत्र उससिएणं ” कहीने एक लोणस्सना काउस्सण करवो पवी काउस्सण पारी प्रगट लोणस्स कहेवो. पवी एक खमासणु देइने तथा उत्राथइने “ इत्राकरेण सदिसह त्रणवन् त्रंरु त्रणरण पडितेहण करु ” एम कही आज्ञा मांगीने त्रंडोपकरण (एटवे पात्रा विणेरे) नी पक्रितेहण करवी. एम वधे काळ त्रंडोपकरणनी पडितेहण करवी. ॥ ॥ इति अणगारस्य त्रंरुद्युपकरणनी पक्रितेहण विधि. ॥ ॥ अथश्री अणगारस्य गोचरीनी विधिः ॥ ॥ प्रथम ज्यारे गोचरी वेलाथाय त्यारे गुरु महाजने नमस्कार करीने एटवे रथुत्रवंदना करी गोचरी

जवान्नी आझा मागी संघाडा सहित एटवे (साधु जंगमां जंग वे अग्ने साधवी जंगमां
जुली त्रण ए रीते संघाडा सहित.) वोहोरवा जावुं. जपासरामांथी नीकवती वेलाए गुरु
मदारजने वांटीने तथा “ आवरसही ” एम कहीनि नीकवतुं. रस्तामां आधु अवतुं जोवुं
नहीं, इर्यासमिति सोधतां थकां चावतुं. चावतां वोवतुं नहीं, नीचजाति तथा सुतकी
घर अथवा जगंठी घर जोडीते गृहस्थना घरमां पसतांज “ धर्मदान ” एम शब्द कहीने
उपयोग सहित वेतादीस तथा चोपन्न एम मली वहुं दोष सर्वथा टाववानो खप करवो.
ते दोषोनां नाम कहेते, ते नीचे प्रमाणे—॥ अथ आहारना वेतादीस तथा चोपन्न
एम सर्व मली वहुं दोष ॥ ॥ तीहां प्रथम शोल उज्जम दोष, ते आहार सिक्करता
श्रावकथी उपजे ते कहेते ॥ (आहार कम्म के०) १ जे साधुने अर्थे उकायनो आरंभ
करी आहार निपजावे ते “ आधा कर्मादोष ॥ (२ जे उरुसिय के०) कुटुंबार्थे पाक
करतां तेमांज साधुने अर्थे अधिक आहार रंधावे जे साधु आवशे तेने आपशुं ते
“ उद्देशीक दोष ” ॥ (३ पूइकम्म के०) आधा कर्मि आहारनो एक दाणे शुद्ध आहा-
रमां मेववे, ते “ पूतिकर्म दोष ” ॥ (४ मिस जाण्य के०) काई साधुने काजे काई
पोताने काजे रंधावे आहार ते “ मिश्र जातिदोष ” ॥ (५ ठवणा के०) साधुने
अर्थे आहारमांथी जुदो काठीराखे ते “ स्थापना दोष ” ॥ (६ पाहुडियाए के०)
साधुनो योग मेवववाने अर्थे तथा तेमने नेट तरीके कांडक मिष्ट चीज आपवा अर्थे
आखडी तथा विवाहादिकनी तिथि आधी पावी करे ते “ प्रायुतीक दोष ” ॥ (७ पाउ-

रके०) साधुने अर्थे अंधारामांशी उपानीने अजवांतामां दावी मूके ते “ छःकृत दोष ”
 ॥ (८ कीयके०) वेचाती चीज आणी साधुने आपे ते “ क्रत दोष ” ॥ (९ पामीचे
 के०) जलीनुं लडने आणि आपे ते “प्रामित्य दोष” ॥ (१० परियद्विय के०) आहार
 पढटायीने ठीक ठाक करीने साधुने आपे ते “पारिवर्तिक दोष” ॥ (११ अत्रिहडे के०)
 आपणा कोड स्वजनने आपेहुं अन्न साधुने आपे अथवा आपणा कोड स्वजनने माटे
 तेथार करेहुं अन्न ते कोड पण कारणशी न दीये तो, ते साधुने आपहुं. किंवा साधुनी
 सामे जडने आहारनुं आपहु तथा उपश्रये देवा जाय ते “आच्यगता दोष” ॥ (१२ त्रिने
 के०) कमान ताहुं अथवा मोहुं बंध करेहुं वासण उघामीने आपे ते “उन्निय दोष” ॥
 (१३ मातोहडे के०) उंचा स्थानशी जतरी दावीने आहार आपे ते “मादापहत
 दोष ” ॥ (१४ त्रोमा मातोहडे के०) त्रोयसमाहिशी वाहिर आणि आपे ते
 त्रभ्याहत दोष ” ॥ (१५ अविजे के०) वीजा पसेशी जोंटी लडने आपे ते “आवे-
 द्य” दोष ॥ (१६ आणि सितेय के०) धणी धणी सहीयारीए अनेक जनने आपवा
 माटे तेथार करेहुं जे त्रोजन होय तेसांशी ते धणी जाणतां अथवा अजाणतां जे
 साधुने आपे ते “अनिश्रष्ट दोष ” (१७ अन्नोपररे के०) आज्ञे आपणा गामसां साधु
 आव्या वे माटे तेने आपवा सारु जोशे एहुं जाणी आधरण उकलतुं होय तेसां वली
 वीजु कातुं पाणी रेडे ते “अध्यवपूरक दोष” कहीये ॥ ए दोष श्रावकशी उपजे,
 (सत्तरसस के०) ए सत्तर दोष गृहस्थशी उपजे ते टाळवा ॥ हवे शोच दोष साधुशी

उपजे ते कहे ठे- ॥ १ (धाड के०) गृहस्थनां वाक्यक रमाग्नीने आहार दीये ते “धात्रीक
 दोष” ॥ २ (उड के०) कासीदनी पेठे गाम परगामना सदेशा कहीने आहार दीये ते
 “दूतीक दोष” ॥ ३ (निमित्ते के०) आहारने अर्थे जोतिष निमित्त प्रांखी दीये ते
 “निमित्त दोष” ॥ ४ (आजीव के०) आहारने अर्थे आपणी जातिने प्रकाशीने दिये ते
 “अजीविका दोष” ॥ ५ (वणी मग के०) गृहस्थ आगाद दीनपणुं प्रांखी दीये ते
 “वनीपक दोष” ॥ ६ (तिगिठे के०) आहारने अर्थे नाडी जोड औषध करे ते
 “चिकित्सा दोष” ॥ ७ (कोहे के०) आहारने अर्थे क्रोध करीने दीये ते “क्रोधपिंड
 दोष” ॥ ८ (माण के०) आहारने अर्थे गृहस्थने मान आपे पोते मान करे ते “मान
 पिंड दोष” ॥ ९ (मायके०) आहारने अर्थे रुप पराहत करे ते “माया पिंड दोष”
 ॥ १० (लोचके०) जोसे करी आहारदिक् घणुं दीये ते “लोत्रापिंडदोष” ॥ ११ (पूष्विपत्रा
 संघवर के०) आहारने अर्थे गृहस्थने आहार दीया प्रथम अथवा पावड संस्तवे एटवे
 वखाणे ते “पूष्वपत्रा संस्तव दोष” ॥ १२ (विजा के०) आहारने अर्थे मंत्र तंत्रादिके
 देवतानुं आराधन करे ते “विद्यापिंड दोष” ॥ १३ (मंत के०) आहारने अर्थे कामण
 मोहनादिक मंत्र प्रयुंजे ते मंत्रपिंड दोष ॥ १४ (चूण के०) आहारने अर्थे औषध
 एकटां मेळवी चूर्ण वनावी आपे ते “चूर्णपिंड दोष” ॥ १५ (जोगा के०) पाद प्रदेपा-
 दिके करी लोकोने रीकवी आहार दीये ते “योगपिंड दोष” ॥ १६ (गप्प के०)
 आहारने अर्थे गर्भ उपजाववानां, गर्भपातन करवानां औषध करे मूल अश्लेषाना

उपपन्न करे अथवा शांतिकर्म करे ते “मूलकर्म दोष” ॥ ए शौच दोष साधुश्री उपजे ते कल्या (वत्तीस नीसिद्दी चैव के०) ए वत्तीस दोष निश्चिथ सूत्रमां कल्यावे. ॥ हवे दशा दोष साधु तथा गृहस्थ वीहृथी उपजे ते कहेवे ॥ १ (सके के०) आहार दंतां कांश्क शंका आवे दोषनी ते शंकारहित आहार दीये ते “शंकिता दोष” ॥ २ (मखिय के०) अन्नश्च अयोग्य वस्तु दीये अथवा सचित्त अचित्त वस्तुयें करी खरभेजे हाथे आहार दीये ते “मुक्तिता दोष” ॥ ३ (निखते के०) माटी पाणी प्रमुख अनेरा सचित्ते संघट करेदी वस्तु दीये तथा परस्पर सघटथी अचित्त वस्तु दीये ते “निक्षिप्तदोष” ॥ ४ (पेहिय के०) एक अचित्त वस्तु सचित्तथी टांकेदी होय. वीजी सचित्त अचित्त वस्तुथी टांकी होय वीजी सचित्त सचित्तथी टांकेदी होय चोथी अचित्त अचित्तथी टांकेदी होय ए चार त्रागामांथी चोथो त्रांगो शुद्ध ठे अने शेष त्राण त्रांगे दीये तो “पिहितदोष” ॥ ५ (साहरिय के०) देवानां पात्रमां अयोग्य वस्तुने चरेदी देखी ते वस्तु वीजा पात्रमां नांखीने पठी तेज देवाना पात्रथी आहार आपे ते “संहत दोष” ॥ ६ (दायगा के०) नपुंसक, वातक, घरफो, आवधो, शीते कंपतो, वेडीये जड्यो, हेडमां घाट्यो, खांफतो, दलतो, कांततो, दोढतो, पींजतो, विखेडतो, वलोवतो, जमतो, तकायतो आरंज करतो, आवमासनी गर्जवती स्त्री हाथेथी, धावतो रोतो वातक मूकीने आपवा तैयार थाय एवी स्त्री; एटवा जणने हाथेथी आहार दे तो ते “दायकदोष” ॥ ७ (उमिशे के०) योग्य आहारने अयोग्य आहार साथे मिश्रित करी आपे ते “उन्मिश्रदोष” ॥ ८ (अप-

रिणिय के० (जेना वर्णं ग्रंथ, रस, रपर्वा एना परिणाम न थयो होय एटवे ते पाकुं न
 होय एतुं काचुं अनज, अथवा घरमां एक जणने आपवानो जाव होय अने वीजाने
 न होय तेवां आहार लीये तो ते “अपरिणीत दोष” ॥ ९ (लीत के०) जे साधुने
 आहार देतां धान्यनी साथे हाथ खरज्या होय, अथवा जाजन खरज्यां होय, तेवा हाथ
 तथा जाजनने सच्चित पाणीये धोईने तेवा हाथथी तथा जाजनथी आहार आप्ते; अथवा
 बोहराव्या पवी हाथ धोई नांवे. एम साधु निमित्त पूर्व कर्म पश्चात् कर्मनो आरंभ करी
 आहार आप्ते, अथवा तरतना लीपेलाने चांपीने आहार लीये ते “लेपकृतदोष” ॥ १०
 (लङ्घिय के०) साधुने आहार देनारो धान्यनी शीथ पाडतो तथा घृत दहिं, छायादिकनां
 टीपां पाडतो, दोळतो आप्ते ते “लहित दोष” ॥ (एसणा दोष दश ह्वांतिति के०) एरीते
 एषणाना दश दोष जाणवा. (बायालीसइमे पणते के०) एवं ४९ दोषने धारीने टाळ-
 वा ॥ तथा वली ह्मे मांजलीना पांच दोष टाळवा ते कहेले—॥ १ ॥ स्वादने माटे घणां
 डव्य एकटां मेळवी आहार करे ते “संयोजना दोष” ॥ २ ॥ वत्रीस कवळथी उपरांत जे
 आहार करे ते “प्रमाण दोष” ॥ ३ ॥ आहारने अथवा दातारने प्रशंसतो आहार करे
 ते “प्रशंसा दोष” ॥ ४ ॥ आहारने अथवा दातारने निंदतो आहार करे ते “धूवदोष”
 ॥ ५ ॥ विनय वेयावच्च १ ॥ संयम निर्वाह, २ कुधा वेदना उपशमाववाने, ३ इर्यासिमितिनी
 शुद्धि माटे, ४ जीवनी रक्षा माटे ५ शुभ्रधानने स्थिर करवा माटे योजन करवानी जरूरी-
 यात वे ६ ए. उ. कारणे सुनिने योजन करवुं. तेना अत्रावे योजन करे तो ते “कारणात्राव”

नामनो पांचमो दीप लागे. ए पाच मलीने सर्व सभतावीस दीप थया. ते टाळवा. ॥ १ ॥
 हवे बीजा पण आहारना चोपन्न दीष कहेंते ॥ प्रथम (उषान कथाड उषाडणाए के०)
 कमाड उषानी आहार आपे तथा अर्ध उषान होय ते उषाडीने आहार आपे ते दीष ॥
 ॥ १ ॥ ए आवाश्यक सूत्र मध्ये कहेंत ठे ॥ १ ॥ (मंडिय पाह्नुनियाए के०) जे जोजनेने
 टाकणी टांकी दीपी सुकेवी ते खोवी दीए तो दीष ॥ ३ ॥ (बलि पाह्नुडियाणं के०) वाकला
 उताळवाने काजे कीधाले, ते उताळया पहेलां दीए तो दीष ॥ ४ ॥ (अदित पाह्नुडि-
 याण के०) अदष्ट एटले जे जग्याए नजरथी काड पण न देखाय एवी जग्याएथी
 लावी आहार आपे ते दीए तो दीष ॥ ५ ॥ (पारितावणीयाए के०) निरस अन्न पाणी
 वोहर्या पवी गृहस्थ आप्त करे त्यारे तेनी दाक्षिणताने वीधे अथवा जगने अर्धे
 तेने घरेथी सरस आहार वेडने, अने प्रथमनो निरस आहार परठवे अथवा रस टाळचे
 निरस आहार परठवे ते दीष ॥ ए आवाश्यक सूत्र मध्ये कहेंत ठे. हवे दश वैकालिक
 सूत्र मध्ये कहेंत ठे ते देखामे ठे. ॥ ६ ॥ (दान के०) दानशाळानो आहार दीए तो दीष
 ॥ ७ ॥ (पूयणटा के०) सूतकने अर्धे पूठे खरचवुं माने एवो आहार दीए तो दीष ॥
 ॥ ८ (समण के०) श्रमणने आपवा कीधेवुं अन्न ते दीए तो दीष ॥ ९ ॥ (वणी-
 मगटा के०) रांकने अर्धे कीधेला आहारमाथी दीए तो दीष ॥ १० ॥ (नियाग के०)
 दिननी पेंठे अड अथवा दिनना घरनो आहार दीए तो दीष. ॥ ११ ॥ (सजाय के०)
 उपाश्रयना धणीना घरनो आहार दीए तो दीष ॥ १२ ॥ (रायय पिंडेय के०)

राजाना घरनो अश्ववा राजाने वास्ते निपनो ते आहार दीए तो दोष ॥ २३ ॥ (किमि-
 डि के०) आहार न मदे त्यारे रांकनी पेठे मांगी दीए तो दोष ॥ २४ ॥ (संघडे के०)
 सचितादिकने संघड सहित एवो आहार दीए तो दोष ॥ २५ ॥ (बहु उन्निय के०)
 खवुं थोमुं अने नाखवुं घणुं तेवो आहार दीये तो दोष ॥ २६ ॥ (पभिकुठ कुलेय के०)
 निषेध कुल ठे तेवा चारना, जुगारीना, मदेजादिकना घरनो आहार दीए तो दोष ॥ २७ ॥
 (मामग के०) जे गृहस्थ कहे के मारे घेर म अश्वशो अने जो एवा घरेथी आहार दीए
 तो दोष ॥ २८ ॥ (अचिपत कुलके०) अश्रीतिकारी या कुल ते गणीका प्रमुखना घरनो
 आहार दीए तो दोष ॥ २९ ॥ (पत्ता कम्मके०) जे गृहस्थ आहार वोहराव्या पवी जा-
 जन के दाथ पग थोइ नांखे ते दोष ॥ ३० ॥ (सूर के०) मदिरावावा आहार वोहरे
 तो दोष ॥ एवी रीतना ए दोषो दशवैकालिक नामना सूत्रमां कहेवा ठे ॥ ३१ ॥ (स-
 णय पिंन के०) पोतानां ज्ञाति जातिना घरनो तथा साहमा पोताना संप्रदायना घरनो
 आहार दीए तो दोष ॥ ३२ ॥ (मकराण के०) क्षुधादिक ठ कारणाविना आहार करे
 तो दोष ॥ ए बे दोष उत्तराध्ययन सूत्र मध्ये कहेव ठे ॥ ३३ ॥ (पाहुण के०) प्राहु-
 णाने काजे करेव जोजन ते जम्या पहेवां वहीरे तो दोष ॥ ३४ ॥ (मसंच के०) त्रस-
 जीवनो मांस वोहरे तो दोष ॥ ३५ ॥ (नियपिंड के०) नित्य प्रत्ये नीमेज घरथी परठ-
 वीने आहार दीए तो दोष ॥ ३६ ॥ (संखनीय के०) ज्ञाति जमती होय त्यांथी आहार
 वोहरे तो दोष ॥ ३७ ॥ (वाधाय के०) जे गृहस्थना घर अंगणे जौखारी जनेव तेने

अंतरायं पानीने आहार वीए तो दोष ॥ १८ ॥ (संभार वयणं के०) वायदा परतीने
 अटलोज वेशुं ए रीते वायदा परतीने आहार वखादिक वीए तो दोष ॥ ए सात दोष
 श्री आचाराग सूत्रमध्ये कहेल वे ॥ १९ ॥ (इंगाल के०) नोजन करतां आहारने व-
 खाणे तेने इंगाल दोष कहीए ॥ ३० ॥ (धुम के०) नोजन करतो आहारने निंदे तो
 दोष ॥ ३१ ॥ (संयोग के०) नोजन करती वखते र्यादने उपजावया सारु घणां इव्य
 एकठां करी जमे ते सयोजन दोष ॥ ३२ ॥ (खित्त के०) सूर्य उग्या पहेला गोचरी
 जाय अथवा आहार वापरे ते दोष ॥ ३३ ॥ (काल के०) पहेला पहोरनां आहारप्राणी
 वोहोर्यां ते चोथा पहोरमा वापरे तो दोष ॥ ३४ ॥ (मगा के०) वे कोस उपरांत मारग
 जळधीने आहार वापरे ते दोष ॥ ३५ ॥ (पमाण कतेय के०) वत्रीस कवलनी मर्या-
 दाथी अधिक आहार करे तो दोष ॥ ३६ ॥ (आह्य के०) प्राहूणा माफक नीतरीने
 आहार आपे ते वीए तो दोष ॥ ३७ ॥ (कतार के०) घणा दीवस अटवी जळघतां
 थया होय तेनी साथे जातु होय ते वोहरे तो दोष ॥ ३८ ॥ (इत्त्रिक के०) इकालमां
 राकने माटे करेल नोजन ते आहार वीए तो दोष ॥ ३९ ॥ (वदवीया के०) वरसाद
 थावा सारु रांकने आपता होय तेमांथी आहार वीए तो दोष ॥ ४० ॥ (गीलाणत्रत के०)
 रोगीयाने काजे करेल आहार ते जम्या पहेलां वीए तो दोष ॥ ए वार दोष नग-
 वती सूत्रमध्ये कहेला वे ॥ ४१ ॥ (रइए के०) साधुने वासते कुलहर प्रमुख करी आपे
 ते वीए तो दोष ॥ ४२ ॥ (पजव के०) दहीतुं कुर, करंबो करी आपे साधुनेज माटे

ते दीए तो दोष ॥४३॥ (सयगहिय के०) साधु साधवी पाणी विना जो आहार वोहोरे
तो दोष ॥ ४४ ॥ (अंतो बाहंच समणटा के०) साधुने अर्थे घरमाहिशी. काढी बाहेर
राखे अगजथी ते दीए तो दोष ॥ ४५ ॥ (मोहरच के०) चाट चारणनी माफक दा-
तारनी कीर्ति करीने आहार दीए तो दोष ॥ ए पांच दोष प्रश्रव्याकरण सूत्र मध्ये
कहेव ठे ॥ ४६ ॥ (बाल के०) बालकोने माटे नीपजावेव आहार तेमांथी दीए तो
दोष ॥ ४७ ॥ (गुविणठ के०) गर्जवंतीने काजे कीथेव आहार ते जन्मा पहेलां दीए
तो दोष ॥ (दशा सुए के०) ए वे दोष श्री दशाश्रुत स्कंध सूत्र मध्ये कहेव ठे ॥ ४८ ॥
(जत्रासीय के०) घणा माणस ज्यां जमणवारे जमता होय त्यां जडने कहे के कोड
दातार ठे एम कहीने आहार दीए तो दोष ॥ ४९ ॥ (अग्नी जत के०) एक दिनतुं
अटवीमां काष्ठादिक देवा गयानुं जातुं होय तेमांथी आहार वोहोरे तो दोष ॥ ५० ॥
(अनोडि के०) अन्य तीर्थ तथा वेपथारीनो गुरुनो आहार तथा ब्रह्मादिक दीए तो
दोष ॥ ५१ ॥ (पासव के०) जेणे संयम देडने मूक्युं ठे तेनुं तथा पासवानो तथा
वेपथारी मागी खाय ठे तेनो आहार दीए तो दोष ॥ ५२ ॥ (इगांवीय कुलेय के०)
डेड, चमार, चंडाव, वाधरी, खाटकी, कसाड, मालीमार एवा भदेवकुदमांथी आहार
दीए तो दोष ॥ ५३ ॥ (सगारीयनीसा के०) जे गृहस्थ साथे चावनि घर उवखावे
अने ते गृहस्थनी पीजाने जे आहार मवे ते आहार दीए तो दोष ॥ ए उ दोष निशीध-
सूत्र मध्ये कहेव ठे ॥ ५४ ॥ (पारसाय के०) रोगादिकनां कारण विना घणो काव घणी

वेला राखी आहार करे तो दोष. ए एक दोष श्री बृहद् कल्प सूत्र मध्ये कहेव ठे ॥ एवी रीते उपर कहा प्रमाणे सर्व मली वधु दोष थाय ठे ॥ उपयोग सहित वधु दोष करी रहित आहार पाणी ग्रहण करी उपाश्रयने विशेष आवहुं. तथा उपाश्रयमां पसतां “निस्सिद्धी” एम कहेहुं ॥ अथ गोचरी आलोचवानी विधि ॥ गुरु महाराजने स्थूत्रवंदना करीने तथा गुरु महाराज अथवा स्थापनाचार्यजीनी सन्मुख उन्नी फांडो डावा पगाना अंगूठा तथा आंगली वधे राखी “इरियावद्दी” तथा “तस्स उत्तरी” अने “अन्नवजससिएण” कही एक दोगस्सनी काजस्सग्ग करवो. पवी काजस्सग्ग पारी प्रगट दोगस्स कहेवो. पवी “भमणागमण” कही उन्ना थकाज “इवा करेण संदिसह जगवन् गोचरी आलोचवा निमित्तं करेमि काजस्सग्गं अन्नव जससिएणं” कहीने काजस्सग्ग करवो. काजस्सग्गमां गृहस्थने धेरथी जे गोचरी दीधी होय ते संत्रालवी. तथा दीष लाग्या होय ते पण संत्रारवा. सत्रालवी पवी “नमो अरिहंताणं” कहीने गुरु महाराज पासि जे रीते काजस्सग्गमां चिंतव्यो होय तेज माफक गोचरीनो प्रकाश प्रगट करवो. पवी “तेमां जाणतां अजाणतां जे कांड विसयुं होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मित्रामि सुकरं” पवी “इवामि पक्किमिडं गोचरी आए” एम पाठ कहीने, पवी “तस्स उत्तरी” तथा “अन्नव जससिएणं” कहीने काजस्सग्ग करवो. अने ते काजस्सग्गमां नीचे प्रमाणे गाथा कहेवी ॥ अथ गोचरी आलोचतां काजस्सग्गमां जे गाथा कहेवाय ठे ते गाथा ॥ अहो जिणेहि असावजा, विसि साहुण देसीया ॥ सुख साहुण हे जस्स, साहु देहस्स

धारणा ॥१॥ इति संपूर्णः ॥ अथ विधि—ए गाथा काजरसगमां चिंतवी पवी काजरसग
 पारीने एहीज गाथा प्रगट कहेवी. पवी “अविधि ए कांड प्रवर्ताणुं होय, ते सवि हुं मन,
 वचन, कायये कसी मित्रामि डकडं” एम कही आहार पाणी हेवो मूकवो ॥ इति
 गोचरी जावानी तथा गोचरी आर्तोवानी विधि संपूर्णः ॥ अथ पञ्चकाण पारवानी
 विधि. ॥ प्रथम सुगुरु अथवा स्थापनाचार्य आगल एक खमासणुं देइने तथा जना अइने
 “इहाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं पक्कमामि” इत्यादिक आज्ञा मागी
 “ इरियावही” तथा “तस्स उत्तरी” तथा “ अन्नव जससिएणुं” कही एक लोणस्सनी
 काजरसग करवो. पवी काजरसग पारीने प्रगट लोणस्स कहेवो. पवी एक खमासणुं
 देइने योग सुजायें वेसवुं. वेसीने “इहा कारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं,” एम
 कहीने “अशोक दृक्कः सुर पुण्य दृष्टि” आदिक काव्य एक कही पवी चैत्यवंदन कहे-
 वुं. “इहं जय जय महा प्रभु” ए चैत्य वंदन कहीने पवी “जिकंचि” तथा “नमुत्थुणुं”
 अने “जे अइ आ सिधा” पवी “जावंति चेइ आइं” तथा “जावंत केविसाहुं” कहीने
 पवी “इहाकारेण संदिसह जगवन् स्तवन जणुं” एम कहीने एक नवकार कहीने
 “जवसगहदरं” कहेवो. पवी “जय वीयरय” कहेवा. पवी जत्रभक आसने वेसीने
 “इहाकारेण संदिसह जगवन् पञ्चकाण पारवा सुहपत्ति पडिदेहुं” एम आज्ञा मागी-
 ने पवी पञ्चास बोल सहित सुहपत्ति पढि देहवी. पवी एक खमासणुं देइने तथा जना
 अइने “इहाकारेण संदिसह जगवन् पञ्चकाण पार्थ” त्यारे गुरु कहे “आराहियं

अप्यारो न सुतवो” त्पारे शिष्य कहे “इहं तद्वत्ति” एम कहीने जमणा दाखनी सुठी वादी उधा उपर स्थापी एक नवकार गणी नीचे प्रमाणे कहेवुं “एकासणुं, नीवी, आं-वीद, वीआसणुं पञ्चकाण कर्तुं तिविहार सुरे उगण् नमुक्कार सहिञ्चं, पोरिसिह्चिञ्चं, साह पोरिसिह्चिञ्च, पुरिसुह, सुठीसहिञ्चं पञ्चकाण कर्तुं चजविहार” एम कहीने नीचे प्रमाणे गाथा वे कहेवी. (ते वे गाथा आज पुस्तकमां दश पञ्चकाणना पाठमां दखे-त वे, तेथी आही नथी दखी.) पवी ए गाथा कहीने एक नवकार कहेवो. अने तिविहार उपचासनुं पञ्चकाण पारवुं होय तो नीचे प्रमाणे कहेवुं “सुरे उगण् अन्नतठं पञ्चकाण तिविहार कर्तुं पाणहार नमुक्कार सिह्चिञ्चं, साह पोरिसिह्चिञ्चं, पुरिसुह, सुठी सहिञ्चं पञ्चकाण कर्तुं चजविहार “फासीयं पाजीयं चैव” ए वे गाथा कहेवी. पवी एक नवकार कहीने तथा एक खमासणुं देइने, उजा अइने “इजाकारेण संदिसह उगवन् सखाय संदि साहुं” एम कहे. त्पारे गुरु कहे “संदिसावेद्” त्पारे शिष्य कहे “इहं तद्वत्ति” एम कहीने एक खमासणुं देइने तथा उजा अइने “इजाकारेण संदिसह उगवन् सखाय करुं,” एम कहीने उजडक आसने वेसीने नीचे प्रमाणे दशवैकातिकनां अथयन कहेवां. ते आज पुस्तकमां सखाय संग्रहमां दखेव वे तेथी आंही नथी दख्यां. पवी एक नवकार कहीने आणहारी जावना जाववी ॥ इति पञ्चकाण पारवानी विधि संपूर्णः ॥ ॥ अथ अणुगारस्य आहार वापरवानी विधि ॥ पञ्चकाण पार्या पवी आहार पाणी करवाथी प्रथम गुरु महाराज आदिक वडिवने ते दावेव आहार पाणी

नजर करवो अने निमंत्रणा करवी के हे पूज्य मुजजपर अनुग्रह करो. आपने आ मांहे-
थी जे खप होय ते लहो एम कहेवुं जो गुरु आदिक दीए तो बहु दरखथी ते अर्पण
करवो. अने बाकी रहैव आहार पाणी आइा मागिने पाथरणुं पाथरीने ते पर पूर्व
तथा उत्तर दिशा सन्मुख वेसीने (एक दक्षिण दिशा सासुं न वेसवुं.) हाथ मुख प्र-
मार्जिने ठ कारणे सुनि आहार करे ते आहारना सडतादीस दोषमां कहेवा आहार
पाणी वापरती वखते मांढलीना पांच दोषमां ठ कारणे दाखवैव ठे त्यांथी जाणी देवां.
ए ठ कारणे विना मुनि आहार न करे. करे तो दोष ठे. पढी आहार करतां पांच मां-
डलीक दोष टाळवा. ते दोष आज पुस्तकमां आगत लख्या ठे तेथी जाणी देवा. ए
रीते मांढलीना दोष टाळवा. ए रीते आहार करी पढी काप एक नक्त फल त्राणी पीए.
पढी मांढली जायामां परतववी, परतवतां “अणु जाणह जरसगो” एम कहीने काजो
परतववो ते परतवतां त्राण वखत “बोसरे” कहेवो. पढी गुरु समीपे तथा स्थापनाचार्य
समीपे आवीने एक खमासणुं देइने आइा मागिने तया थइने “इरियावही” तथा
“तस्सुतरी” तथा “ अन्नव उमसिएणुं ” कही एक लोगस्सनो काउसग करवो. पढी
काउससग पारी प्रगट लोगस्स कहेवो. पढी एक खमासणुं देइने योगमुजाने आसने
वेसीने “इवाकारेण संदिसह त्रगवन् चैत्य वदन् करं” एम कहीने चैत्य वंदन करवुं
तेनी विधि. पञ्चकाण पारति वखते जेम कराय ठे तेज माफकज जाणी देवो. (आपाढ
चोमासाथी करीने कार्तिक चोमासा सुधी वस्तिमांथी त्राण वार काजो काढवो. ते आहार

पाणी वापरी चैत्य वंदन कर्मा प्रथम वेवट मध्यान्है तो काढवोज) ॥ ॥ इति श्रमण-
 ने आहार मंढली तथा आहार कर्मा पवी चैत्य वंदन विधि संपूर्णः ॥ ॥ अथ स्थण्डिल
 जवानी विधिः ॥ ॥ प्रथम जवनी तरपणी देइने डगाव एटव हुगाडाना कडका देवा
 पवी संधना सहित उपासराथी निकवती वखते “आवस्सही” कहीने नीकवहुं. रस्ता-
 मां चावतां ईर्यासमिति तथा जाषासमिति सहित चावहुं. स्थण्डिल माटे नगरनी वाहार
 जवु ते अति वेगहुं न जवु तेम अति नजीक पण जवु नही. रस्तो मूकीने अनापात
 अर्वाक अचित स्थानके बाधा टाडवी. बाधा टाडवाने वेसती वखते “अणु जाणह
 जरसगो” एम कही वेसवु. ते वखते जे गाममां रहेतां होइए ते गामने तथा सूर्यने तथा
 पवनने एटवाने पूव न देवी. पवी म्गावथी प्रथम शरीरने शुद्ध करी पवी जवथी शरीर
 शुद्ध पवित्र करी जवती वखते त्रण वार “वोसिरे” एम कहेवुं. पवी नगरमां पेसतां गुरु महा-
 राज साथे होय तो तेमना पग प्रथम प्रमार्जवा. पवी पोताना पग प्रमार्जवा. तेमां आवस
 न करवुं. पवी उपासरामां पेसतां पण गुरु महाराजना तथा पोताना पग प्रमार्जवा. पवी
 “निस्सिहि” कहीने उपासरामां पेसवुं. पवी “श्रियावही” थी मांडीकेक प्रगट लोगरस सुधी
 पडिकमवी अने तेमां काउस्सग एक लोगरस्सनो करवो ॥ ॥ इति वभीनिति जवानी
 विधि संपूर्णः ॥ ॥ अथ सुनिने वधुनिति जवानी विधि ॥ ॥ वधुनित जावुं होय तो
 जव देइ मात्रीधानी कुंभी पडिदेहीने तेमां मावु करवो. पवी जवथी शरीर शुद्ध करी
 नजीव वारी नूमिने वटिथी जोइने (जेम गहरथ न देखे तेम) थोडो थोडो मावु पर-

तवो. परतवती वरते “अणु जाणहजसगो” कहेवो. पवी परतव्या पवी “वोसिरे”
 एम त्रणवार कहेवु. पवी जलथी मावीजं साफ करी राखवुं. अने जपासरथी नीकलती
 पेसती वरते “अवासदी” “निस्सिद्धि” कहेवी. पवी “इरियावदी”थी मांडीने ठेक प्रगट
 लोणस्स सुधी “इरियावहि” पडिकमवी. तेमां काजस्सगण एक लोणस्सनो करवो. ॥ ॥
 इति लघुनिति करवानी विधि संपूर्ण ॥ ॥ अथ अणुणारस्स चोथा पहोरनी पन्निवहेण
 विधिः ॥ गाथा-सुह चोल वसहि गुहण जवही उघोय गुरु वगरणाइं, दंडग पडिदे-
 लाइ, पडिमप्पहेरु क्कमसो ॥ १ ॥ प्रथम गुरु महाराज तथा स्थापनाचार्य सन्मुख
 उनीने एक खमासणुं देइने तथा उजा थइने एम कहेवुं “इहाकारेण संदिसइ नगवन्
 पडिपुत्ता पोरसी कठं” एम आजा मागीने “इरियावदी” तथा “तस्सुत्तरी” तथा “अन्न-
 जजससिएणं” कहीने एक लोणरस्सनो काजस्सगण करवो. पवी काजस्सगण पारी प्रगट लो-
 णरस्स कहेवो. पवी एक खमासणुं देइने उन्नडक आसने वेसीने ‘इहा कारेण संदिसइ
 नगवन् पडिपुत्ता पोरसि सुहपति पडिदेहुं” एम आजा मागीने पच्चास वोवो सहित
 सुहपति पडिदेवही. पवी कंदोरानी, पवी चोलपट्टानी, पवी कटरसणानी, तेना वोव
 प्रजातनी पन्निवहेणानी माफक जाणावा. पवी एक खमासणुं देइने “इरियावदी”नी आजा
 मागीने “इरियावदी” तथा “तस्सुत्तरी” तथा “अन्नज जससिएणं” कही एक लोणरस्स-
 नो काजस्सगण करवो. पवी काजस्सगण पारी प्रगट लोणस्स कहेवो. पवी एक खमासणुं
 देइने “ इहा कारेण संदिसइ नगवन् पसाठ करी पडिदेवहेण पन्निवहेरावोजी” एम

आ काजस्सग्ग करवो. प्रथम एक खमासणुं देइ तथा उप्पा अइने “इत्ताकरेण संदि-
सह नगवत् अचित्त रज उडाहवणुं करेमि काजस्सग्गं अन्नत्त जससिएण” एम कही
चार लोणस्सत्तो “सागरवर गंचीरा” सुधी काजस्सग्ग करवो पवी काजस्सग्ग पारीने
प्रगट लोणस्स कहेवो एम दर वरसे त्रण दिवस करवो. ॥ इति वार मासे काज-
स्सग्ग करवानी विधि संपूर्णः ॥ ॥ अथ सुनिने लोच करवानी विधिः ॥ ॥ लोच
करावनारा सुनिने प्रथम इरियावहीथी मानी यावत् प्रगट लोणस्स सुधि एमां एक
लोणस्सत्तो काजस्सग्ग करवो. पवी एक खमासणुं देइने उप्पा अइने “इत्ताकरेण संदि-
सह नगवत् सचित्त अचित्त रज (क्षुडोपज्व) उडावणार्थं करेमि काजस्सग्गं अन्नत्त
जससिएण” एम कहीने चार लोणस्सत्तो काजस्सग्ग “सागरवर गंचीरा” सुधी करवो
पवी काजस्सग्ग पारीने प्रगट लोणस्स कहेवो. पवी लोच कराववो ॥ ॥ इति सुनिने
लोच करवानी विधि संपूर्ण ॥ ॥ अथ असन्नाय विचार लिख्यते ॥ ॥ सुइय रज आ-
काश थकी ज्या लगे पडे त्या लगे असत्थाइ ॥ १ ॥ तथा धूरि जेटवी वार लगे पडे
त्यां लगी असत्थाइ ॥ जेह तणी धुयरी पवी सधलो क्षेत्र अपकयमय होवे ते वारे
साधु कवलो ओही ओरभामाही वेशी रहे, अंगोपाण सर्व टांके, मुख पण उवाप्ते नही,
कोइ अंगोपाण हवावे नही जीवनी दयामाटे धुयरी कित्यापवे सर्व क्रिया करे ॥ २ ॥
तथा आकाशो गधर्व नगर देवतानां कीधा दीसे, तथा जलका पडे, तथा कण्ण पडे,

उलका जे कहिं पड्या पठे रेखा दीसे, अजवालो होवे, कण्ठा ते कहीए जीहां
 रेखा अजवालो न होवे, तथा दिग्दाह एटवे दशे दिशा बलती दिसे, चिहूं दिसें
 राती अग्नि सरखी हुवे, ज्यां लग्ने गंधर्व नगर उलका, दिग्दाह, कण्ठा, विजली पडे त्यां
 लग्ने असद्याह ॥ ए असद्याय निवर्त्या पठी एक पहर असद्याय हुवे ॥ ३ ॥ अकावे
 गाजे तो वे पद्दोरनी असद्याय ॥ ४ ॥ अकावे विजली जवके तो एक ग्रहरनी असद्याय
 ॥ ५ ॥ चार महा पडवायें असद्याय, ते एवी रीते के, पहेलो वैशाख वदि पद्दयो, श्रावण
 वदि पडयो बीजो, त्रीजो मागशिर वदि पडयो, चोथो कार्तिक वदि पडयो. ए
 पूनमिया महिनाने हिसावे कहेव ठे, (अने अमावास्याने हिसावे तो चैत्रवदि,
 आषाढवदि, कार्तिकवदि, आशोवदि ए चार पडवा समजवा.) ए चार महा पडवानी
 असद्याय ॥ ६ ॥ आशोशुदि पंचमीना वे ग्रहर थकी आरंभीने कार्तिकवदि पडवा लग्नी
 असद्याय. (ए पण आशोवदि पडयो समजवो.) ॥७॥ एम चैत्रशुदि पांचमथी वैशाख
 वदि पडवा लग्ने (ए पण चैत्रवदि पडयो.) असद्याय ॥ ८ ॥ एम चैत्रशुदि ११ थी
 आरंभी ज्यां पूर्णिमा त्यां लग्नी त्रण दिवस अचित्त रज उडवणी करेमि काउरसगं
 लोगरस चार चित्तवीए. जो इग्यारस न सांन्नेर तो १२-१३-१४, जो वारस न सांन्नेर
 तो १३-१४-१५ लग्ने चार चार लोगरस चित्तवीए जो तेरसें न सांन्नेर तो आवता चैत्र
 लग्ने ज्यां शुद्धि न उडे त्यां लग्नी असद्याय ॥ ९ ॥ विहूं राजानो कवह ॥ १० ॥ तथा

म्नेत्रादिकनो त्रय ॥ ११ ॥ उपाश्रय दूकडो स्त्री पुरुष कूर्के ॥ १२ ॥ दौली पर्व रज उडै,
 एटलां ज्यां दग्नी वर्ते त्यां दग्नी असद्याय ॥ १३ ॥ राजार्थे काल कीधो अग्ने नवो राजा
 ज्यां दग्नी गादीए न वेसे त्यां दग्नी असद्याय ॥ १४ ॥ गाममांही कोड असमंजस प्रवर्ते
 ते जो न चांजे तो प्रहर आठ असद्याय ॥ १५ ॥ नगरमां कोड प्रधान पुरुष मृत्यु पामे
 तो प्रहर ८ असद्याय ॥ १६ ॥ उपाश्रय थकी सात घरमांही कोड प्रसिद्ध पुरुष मरे तो
 अहोरत्र असद्याय ॥ १७ ॥ तथा वीजा सामान्य पुरुषनो कलेवर उपाडवा सुधि, तथा
 आचार्य महर्षिक कृत अनसन, महा तपस्वी बहु स्वजन वलत्र मरणे दिन ३ असद्याय
 ॥ १८ ॥ १९-२० तथा तिर्यंचनो रुधिर पडे, इंफुं फ्रटे, गाय विघाणीहोय अग्ने जिहा
 जर पने त्यां सो द्वाथमां तो प्रहर ३ असद्याय ॥ २१ ॥ मनुष्यनुं रुधिर पड्युं होय तो
 अहोरत्रनी असद्याय ॥ तथा जो तिहां घणो वरसाद् थाय अग्ने जमीन धोवाड जाय
 तो थोडी वेलाए सुके ॥ २२ ॥ तथा घभीमात्र रात्रि उतां मनुष्य संबंधि रुधिर पड्युं होय,
 अग्ने तत्काल उर्युं होय तो सूर्य जगते सुके ॥ २३ ॥ तथा मनुष्यनो जिहां अस्थि
 पड्यो होय तो तिहां वरस १२ असद्याय ॥ २४ ॥ तथा दांत अथवा दाढ पभी घणे आ-
 दरे जोतां न लागी तो “ दंत उडावणीयं करेमि काउस्सगां ” एम कही एक नवकार
 चिंतवीयें तो सद्याय सुके ॥ २५ ॥ तथा जो विली जीवतो उंदर लड जाय तो असद्याय
 न श्याय, अग्ने जो विणासी लड जाय तो अहोरत्र असद्याय ॥ २६ ॥ तिर्यंचना अग्ने-

यव तथा रुधिर ६० हाथ लग्नी पडेदुं होय तो असखाय ॥ १७ ॥ मनुष्यना अथयवतुं
रुधिर पडेदुं होय ते १०० हाथ लग्ने तो असखाय ॥ परतु जो वच्चेथी गाडां वही जाय
एवो रस्तो होय तो असजाय नही ॥ १८ ॥ तथा स्त्रीने मास मास रतु आवे त्पारे दिन
३ असखाय, तेज स्त्रीने असखाय समजवी. अथवा किण्ही स्त्रीने प्रदर रोगने उदय
त्रिदुं दिवस उपरांत पण रुधिर फेरे तो असखाय उड्ढावणी एक दोगारसनो काजस्सग
कर्यापटी सखाय करवी सूफे. ॥ १९ ॥ तथा आर्जां नक्षत्र प्रारंभी स्वाती नक्षत्र लग्नी
गाजवीजनी असखाय न हूवे, उलकापातनी असखाय सदा हूवे ॥ ३० ॥ तथा नूमिकंप
थाय तो प्रहर ८ असखाय ॥ ३१ ॥ तथा दीपक ज्यां लग्नी रहे त्यां सुधि असजाय.
॥ ३२ ॥ अथ चंद्र तथा सूर्य ग्रहणनी असखाय विख्यते ॥ चंद्रग्रहणने लक्षुष्टी प्रहर
१२ नी असखाय. ते किम अने किण्ही कावे उत्पातरूप चंद्रग्रहण होवे तिवारे ग्रहोज
चंद्र जगे, अने सर्व रात्रने ठेहफे ग्रहोज चंद्र आथमे तो ए रात्रिना प्रहर ४ अने आगलो
अहोरत्रना प्रहर ८ एम प्रहर १२ असखाय थाय. अथवा प्रकारांतरे १२ कथा ते आ
प्रमाणे—कोइ साधु एम न जाणे के किण वेदाए चंद्र ग्रहो. पण एटदुं जाणे के, आज
पूनमनो चंद्रग्रहण हशे, तिण रात्रियें वादव त्राणी ग्रहण दिसे नहीं, तिवारें सधवी
रात्रियें सखाय न करे. प्रजात समय चंद्र ग्रहो आथमतो दीठो तिण कारणे ते रात्रिना
प्रहर ४ आगलो अहोरत्र ! तेना प्रहर ८ एम प्रहर १२ असजाय. जयन्य प्रहर ८

ते केमके पूनमनी रात्रिने ठेहडे चंद्रमा प्रह्यो आश्रम्यो तो अहोरत्र असजाय ए रीते
 प्रहर ८ एटला वधे मध्यम असजाय जाणवी तथा रात्रियें चंद्र प्रह्यो रात्रियें घडी एक
 थाकती होय, त्यारे मूकाणु तो तेटवीज रात्रिनी असजाय थाय, सूर्य उग्या पठी सजाय
 करवी सुके. ॥३३॥ अथ सूर्य ग्रहणें उत्कृष्टी प्रहर १६ नी असजाय ते केम ते कहेवे.
 ॥ उत्पत सूर्य उगती प्रह्यो ग्रह्योज आश्रम्यो तो ते दिवसना प्रहर ४ अने ते दिवसनी
 रात्रिना प्रहर ४ वीजा दिवसनी अहोरत्रिना प्रहर ८ एम १६ प्रहर थाय. अथवा कीद
 साधु एम न जाणे के कर्द वेला सूर्य ग्रह्यो हरो, परंतु एम जाणे के अत्राज अमावास्यानुं
 सूर्यग्रहण थरो, वादव ठे ते सूर्य उदय थकी सजाय टावे. अस्त वेला वादव तवे ग्रह्यो
 आश्रमतो दीगो तिवारे ते रात्रिना प्रहर ४ आगला अहोरत्रना ८ प्रहर, एम १९ प्रहर
 अने जघन्य प्रहर १९ ते किम सूर्य आश्रमतो ग्रह्यो ग्रह्योज आश्रम्यो तो रात्रिना प्रहर
 ४ अने आगला अहोरत्रना प्रहर ८ एम १९ प्रहर असजाय ॥ एटला वचाले मध्यम
 असजाय. जो दिवसनुज सूर्य ग्रहण मूकाणु तो रात्रिना ४ प्रहरनीज असजाय ॥ इति
 चद्र तथा सूर्यग्रहण असवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ तथा वारे मास हुंद, हुदासहित वरसे
 तो अहोरत्र उपहरी असजाय ॥ ३५ ॥ हुद, हुंदा रहित वरसे तो वे अहोरत्र उपहरी
 असजाय ॥३६॥ नानी कूसारे निरतर वरसे तो सात अहोरत्र उपहरी असजाय ॥३७॥
 सूर्योदय वेला, मध्यान्ह समय, सूर्यास्त वेलायें अने मध्य रात्रे ए चार संभार्यें असजाय

॥ ३८ ॥ तथा अजवाला पलवाडीयानो पन्वो, वीज, व्रीज दणों रात्रिने पहेले प्रहर
 असद्याय ॥ ३९ ॥ तथा पाखीनी राते पण सद्याय करवी न सूके. ॥ ४० ॥ सो हाथमां
 पुत्र जन्म थाय तो दिन ७ असद्याय ॥४१॥ पुत्री जन्मे तो दिन ८ नी असद्याय ॥४२॥
 ए वेतांलीस असद्याय जाणवी. ॥ अकावे र्वाध्याय करणे दूषणं ताणंगं चतुर्थ स्थानक
 द्वितीयोद्देशके प्रोक्तमस्ति ॥ ॥ इति असज्जाय विचार संपूर्णः ॥ ॥ अथ वस्तुनो का-
 लमान ॥ रोटीप्रहर ४। शीरो प्रहर ४। कांजीवनां प्रहर ॥ १४ ॥ अथाणुं दिन ३ ॥ घरा-
 णाकृत तेलयुक्त मास १ ॥ नात प्रहर ४ ॥ राव प्रहर १६ ॥ हलदर मिश्रराव प्रहर ४ ॥
 तकसंयुक्त घेस प्रहर १० ॥ तास प्रहर १४ ॥ घोडवाडा प्रहर ४ ॥ वाजरो प्रहर १ जु-
 वारनोरथेण तकयुक्त प्रहर ११ ॥ खीचडी प्रहर ४ ॥ आटोशियावे दिन १० उन्हावे
 दिन ८ वरसावे दिन ५ ॥ उपरांत अन्नक ॥ पाकवान शियावे मास १ ॥ उन्हावे दिन
 १० ॥ वरसावे दिन १५ ॥ उपरांत अन्नक ॥ पीस्यो निमक दीन ७ ॥ उन्हावे वरसावे
 दिन ३ ॥ शियावे दिन ५ ॥ उपरांत सचित्त ॥ घृत शियावे दिन ८ ॥ उन्हावे दिन ३ ॥
 वरसावे दिन ३ ॥ उष्णजल शियावे प्रहर ४ उन्हावे प्रहर ५ वरसावे प्रहर ३ ॥ घृयरी
 राधी प्रहर १६ ॥ पापडमास ८ तथा ११ ॥ वडी मास ४ ॥ सूकी तरकारी तवी प्रहर
 १६ ॥ एव सर्व चीज काळ उपरांत सचित्त जाणवी. अने ते वरजवी. ॥ इति वस्तु काळ
 प्रमाण संपूर्णः ॥

अथ वस्तुना काल माननु यंत्र ॥

वस्तुना नाम ॥	श्रापाढ चोमासा पटी ॥	कार्तिक चोमासा पटी ॥	फागण चोमासा पटी ॥
१ पाणी उष्णतो काल	प्रहर ३ नो काल दिवस १५ नो काल	प्रहर ४ नो काल दिवस ३० नो काल	प्रहर ५ नो काल दिवस २० नो काल
२ सुखमीनो काल	न कल्पे	न कल्पे	न कल्पे
३ कामती उढवानो काल	सांजनी ६ घडी	४ घनीनो काल	२ घनीनो काल
४ पान चाजीनु शाक	न कल्पे	कल्पे	न कल्पे
५ खजुरादिक	ताजां कोढेल कल्पे	कल्पे	कल्पे
६ वदाम पस्तां	कारणे कल्पे	कल्पे	कल्पे
७ विहार	कारण शिवाय न कल्पे	कल्पे	कल्पे
८ वज्रपात्र	कारण कल्पे	कारण शिवाय न कल्पे	कारण शिवाय न कल्पे
९ पाट पाटला	५	४	३
१० जोखीना पडला	न कल्पे	कल्पे	न कल्पे
११ काची खांड			

॥ ए वस्तुजनुं कल्पवुं न कल्पवुं, ए चोमासी पडिकमणुं कर्मा पटी जाणवुं. जो काल उपरांत पाणी राखवुं होय तो कवीचूनो नांखवो. उकाट्या पाणीनो काल पद्दोच्या प्रथम कवीचूनो जो पाणीमां न नंखाय तो उपवास ३ नो दंड लागे, माटे उकाट्या पाणीने काल पद्दोच्या प्रथमज कवीचूनो नांखवो ॥ ॥ अथ साधु निरवाण विधि ॥ ज्यारे साधु अथवा साध्वी काल करे त्यारे प्रथम तो संथारादिक जपधि होय ते वेगती वद देवी अने

जो कटि जीव जाय त्यां सुधि उपधि रद्दी होय तो पत्तारवी. श्रावक लोकें उन्हा पाणीमां
उपधी पत्तारवी, अने वीजी कांवाली विणोरे जननो वख होय तो तेने गौमुख वांटीने चो-
रखुं करवुं, अने जो कटि. उन्हा पाणीनी जोगवाइ न होय तो सर्व उपधिने गौमुख वां-
टीने पवित्र करे तोपण चांदे अने जो साधुयें रात्रें काल कर्यो होय तो वीजा साधुने प-
डिकमणानी क्रिया करवी होय तो स्थापनाचार्य लहीने वीजे स्थानके लहने करवुं, अने
काल करेदा साधुनी जो स्थापनाचार्यजी होय तो ते पण लह जावा वीजे स्थानके, अने
वीजा साधुजना पण स्थापनाचार्य त्याधी लहने वीजे स्थानके लह जावा. हेंच ज्यारे
जो सुनि पदवीधर होय तो ते गुरुना काल एटवे अंतसमयनी वखते उपयोगवत चतुर
लाह्या श्रावक होय ते ते गुरुने पदोठी वटावे, ते पदोठी वटावीने उत्तर के पूर्व दिशा
सन्मुख करी यत्तधी पकनीने वेसे, अने वीजा सामान्य साधुयें काल करेव होय तो
अने माथे गुरु आदिक मोटा साधु वेठा होय तो ते सुनिने पदांठी वटाववानी कांड
जरुर नधी केमके ते साधुना शरीरने मांवीमा वेसाडवानी जरुर नधी. तेने तो पाळ-
खीरूप टाठनी करवी अने मृतक सुनिने तेमां पधराववा अने वडील गुरु आदिक
पदवीधरने तो बाणा टाठवाली मांडवीमां पधराववा एम विधि ठे वाकी तो जे देशानी
जेवी प्रवरती ते प्रमाणे श्रावकने करवो. पण वडिल गुरु आदिक पदवीधर करतां सा-
मान्य साधु अथवा साध्वीनी मांडवी करवी तो ह्दकी करवी वडिल गुरुआदिक पदवी
धरनी मांडवी सामान्य साधु साध्वी करतां विशेष टाठवाली करवी. अने जो मांडवी

प्रथमथी करावेल होय तो ठीक नहीतर तासता प्रमुख लुगडे चीत अथवा आंजाने उथे मजवूत करीने वेसांफे त्यांसुधी तरत मांडवी तैयार करी देवी ज्यारे मांडवी तैयार थडं रहे एटवे थावक लोको गांयजाने एटवे नाडने बोलावीने मुंफ कराववी एटवे माथाना दाढीना केअ उतराववा अने लगारेक हाथ पगनी नानी अंगांदाीना मूलमां तरको करवो पवी सचित पाणी लडने नवराववा. पवी सुंवाला लुगफाएं करीने ते मृतक मुनिना शरीरने लुडु, पवी मृतक मुनिनी कमरने पावल मध्यजागे अथवा साथीथो करवो. अने कोटना पावल जागने विशे अथवा " कको " करवो (८५५) ने उंचे थ्रासे करवो ए साथीथो तथा कको केसरनो करवो पवी केसर, कस्तुरी, चीमसेनी वरास, अंवर विगेरेतुं विदेपन सारा शरीरे करवुं तेमज उत्तम अतरतुं विदेपन करवुं पवी नवो थोवो चाल पट्टो पहरेाववो पवी सूजनो कदोरो बांधवो पवी नवुं थोडुं कपडुं पहरेावी पवी नासिकानी डांभीजपर वेकाने सुहपत्ती परोववी, तेम न परोवाय तो दोरा वडे काने वाधवी. वखाएनी पेटे सुहपत्ती नाके बांधवी पवी हाथमां पातुं देवुं ते मुनिनो प्रथमनो उधो लड देवो तेने वदले एक चरवली एटवे जननी पोवणी देवी. पवी जोवी, पडला, ते पभला काल प्रमाणे जाणावा. अने एक फूटेलु पात्रु, ते पात्रमा एक मोदक तथा एक सुहपत्ती राखवी ते चोलपट्टादिक सर्व कपनामां अथवा साथीया करवा. तथा हांटाणा केसरनां करवां जे कहेल उपगरण सहित करेल मांडवीमां ते मृतक मुनिने व्याख्यान वांचवाज वेवेल होय तेवी रीते कोडपण उपाये वेसाडवा. पवी साधु साध्वी

श्रावक श्राविकाए ह्यथ जोडीने जावना जाववी. जे आपणा शासनपति महावीर स्वामि
 देसना देतां मुक्ति गया तो जाणीए केए अमारा गुरुपण तेमज मुक्ति के सद्गति पाभ्या
 एवी जावना जाववी. अने पूतळुं करवु ते तो नक्षत्र प्रमाणे जाणवुं ते कहे ते ॥ तेमां
 जेष्टा १, आर्जा २, स्वाति ३, सत त्रीषा ४, चरणी ५, अश्लेखा ६, ए ठ नक्षत्र माहेद्या
 कोइपण नक्षत्र होय तो पूतळु करवानी जरूर नथी, एटले न करवुं ॥ अने रोहिणी १,
 विशाखा २, पुनवसु ३, उत्तरा ४, ए चार नक्षत्र माहेळुं कोइपण नक्षत्र काळ करती
 वखते होय तो डात्रनां पूतळां वे करीने मांडवीमां साथे राखवां अने वाकीना नक्षत्रे एक
 पूतळु डात्रनुं करवुं. ते पूतळाना जमणा हाथमां नानी चरवलि अने मुद्दपति आपवी
 अने ते पूतळाना डावा हाथमां चांगेळुं पावुं तेमां एक दासु जोदी सहित आपवुं.
 अने जो वे पूतळा होयतो ते वेने जुदा जुदा दासु सहित जोदी आपवी. ते पूतळुं
 मांन्वीमां साथे राखवुं. पूतळा करवानु नक्षत्र ते काळधर्म पामे ते वखतनुं जाणवुं एरीते
 पूतळा करी मांडवीमां साथे राखवां ते नूळवुं नहि पवी मांडवीने जपाडनारा श्रावक
 सारा मजवूत होय ते जपाडे जे जगोए मृतक मुनिने काळ करती वखते वेसाडेव
 होय त्यां, तथा मांडवीमां वेसाभवानी जगोए मृतक मुनिने ते वे जगोएथी जपाडनी
 वेलाए तरतज ते जगोए दोढाना खीळा त्रूमिमा खोपी देवा पवी मांन्वी जपाडीने चाळवुं.
 ते वखते कोइने विवडकुल रभ्युं नहि अने सर्वे मनुष्योयें मुखथी “जय जय नंदा जय जय
 नंदा नंदं ते ” एम बोळवुं. अने अनेक जातनां वाजित्र आगळ वजभववां ॥ ते जे

वखत मुनि काल करे तेज वखतथी मांडीने ठेक रमशान त्रूमि सुधि वाजिन्न वज्रडाववां
 अने मांभवी उपाडती वेलाये वदाम, पैसा, प्राइज, अथेवीज, वे अानीज, रुपिया, जारनां
 फलां, तथा जारना दाणा एरीते एकटा करीने चारे तरफ उठाववा माडवी उपाडती
 वेलाथी ठेक रमशान त्रूमि सुधि अने मांभवी आगल घुतनी मजाल ४ चार करवी
 अने साथे चूआनी दिविज वेवी धूप इरसनो उखेवता चाववुं एरीते धूपनां कुंडा
 ४ चार करवां. एरीते मांडवी मोटा आडवर सहित रमशान त्रूमिमा प्रथम ते मृतक
 मुनिनो शिष्य निर्जीव वाटी त्रूमि प्रमार्जि होय त्यां (कदि ते मृतक मुनिनो शिष्य
 न होय तो वीजो कोइ मुनि प्रथमथी रमशान त्रूमि निर्जीव वाटी प्रमार्जी आवे. अने
 कदि ते वखते कोइ मुनि साथे न होय तो गृहस्थ पोतेज त्रूमि प्रमार्जीने त्यां) ते
 रमजाननी त्रूमि पासे आवीने सुखडनां दाकना निर्जीवांनो चय करी ते चयमां माडवी
 पथराववी पवी अग्नि देवी त्यारे सर्व कवेवर जवली जाय त्यारे जतनाथी स्नान करी
 उपाश्रमे आवे आवीने गुरु आदिक पासे जातिकरं स्तोत्र सात्रवे. “ लघुशांत तथा
 गृहदशांत ” सात्रवे कदि गुरु आदिकनो जोग न होय तो एक श्रावकज केहे अने
 वीजा सर्व सात्रवे. एरीते सात्रवली सर्व श्रावको घेर जाय, अने ते दिवसथी श्रावको जि-
 नमद्विरे अठाइ महोत्सव करे अमार पलावे, धर्मनो उचोत करे, एटवी श्रावकनी करणी
 जाणवी ॥ ॥ हवे मृतक साधुनी केडे वीजा साधु साध्वीने शुं विधि करवी ? ते कहे
 वे ॥ जे वखते मुनि संशारो करेल होय त्यारे ते मुनि आगल वीजा साधु पंचपरमेष्ठी

संभगाववातो जयम करे अने जे मुनिए संथारो करेल होय ते मुनिनुं मन शुभ ध्यानमां
 रई, तेरीत वर्तवुं, अने ज्यारे अंतसमय आवे त्यारे उधादिक उपधि केटवीक देवा योग्य
 होय ते लइ देवी. अने ज्यारे अल्प थासोथास रई त्यारे श्रावक हुशियार होय, तेने
 पासे राखवा. ज्यारे काल करे त्यारे सर्व साधुजए काजस्सग करवो. ते नीचे प्रमाणे—
 “कोटिक गण, वडरी शाखा, चंडकुल, अमुक आचार्य, अमुक उपाध्याय, अमुक स्थविर
 (अमुक महत्तरा साधी) अमुकनो शिष्य अथवा शिष्यणी महा परीजावणीया
 निमित्तं करेमि काजस्सगं अन्नं उस्सिएणं ” एम कहीने एक नवकारनो काजस्सग
 करवो. पवी काजस्सग पारी प्रगट नवकार कहेवो. पवी सर्व साधु होय ते वासकूप
 हाथमां लइने एम कहेके, “कोटिक गण, वयरीशाखा, चंडकुल, विधि पक्कणहे श्रीक-
 ल्याणसागर स्वरिना उपाध्याय श्रीरत्नसागरजी तस्यगणे श्रीमुनिस्वरुप सागरजी तस्य
 शिष्य अमुक, तस्य शिष्यणी अमुक वोसरे” एम त्रण वार दोसरवहुं. अने त्रणवार पाठ
 कहीने त्रणवार वासकूप करवो. पवी ज्यारे मांनवी लइ गया पवी अगाजथी श्रावके लइ
 राखेल गौमूत्र ते श्रावक जे जगोए मुनि काल करेल ते सर्व जगोए आखती पाखती
 गौमूत्र वाटे अने सोनावारुं पाणी पण वाटवुं अने उकावेल पाणीथी सृतक मुनिना
 संथारानी अथवा वेसाड्या होय ते जगोए जतनाथी श्रावक वीपी पवित्र करे अने
 ज्यां सृतक मुनिने वेसाडेल होय ते जगोए लोटनो अथवा साथीयो करवो. पवी ते सृतक
 मुनिनो शिष्य होय ते अथवा नहोय तो बीजो लखु साधु तथा बीजो कोइपण साधु

होय ते चौलपट्टो तथा कपडुं, ए दे अवलां पहरीने अवलो काजो वीए. पती चौलपट्टो
 तथा कपडु सवलां पहरीने सवलो काजो लेवो. ए रीते वेवार काजो लेवो. पती श्रावके
 नूमि उपर पांच साथीया ककुना करवा. पती तेउपर चौलाना साथीया करवा. पती ते उपर
 श्रीफल मूक्यां पती ते उपर मोहोर मूकवी पती ते साथीया उपर उपराउपर त्रण बाजोउ
 स्थापवा. पती ते उपर सिद्धासन स्थापवुं पती ते उपर चोमुख विष पथराववां पती चार
 खूणे घृतना दिपक ४ चार करवा. तथा धूप अखरु करवो पती प्रजुनें आगल एक
 बाजोउ उपर कंठुनो साथीयो करवो तेउपर एक श्रीफल मूकडु तेउपर मोहोर मूकवी.
 एरीते श्रावके चोमुखनी स्थापना करी वीधा पती जे मुनिये अवलो मवलो काजो काढे
 ते मुनिये प्रथम अवला देव वादवा. ते अवला देव वादवानी विधि नीचे प्रमाणे वे ॥
 अथ अवला देव वादवानी विधि ॥ ॥ प्रथम ' जयवीरराय ' आवा कहेवा. पती
 "उवसगाहरे" कहेवुं पती " जावति केवी साहु " कहेवी. पती " जावति चेइ आई "
 कहेवी पती "जे अइआसिखा" कहेवा. पती " नमुत्थुणुं " कहेवुं. पती " जकिचिनामा
 तिहं " कहेवु. पती " इह जय जय महाप्रभु " ए पाठनाथनु चेत्य वंदन कहेवु. पती
 प्रगट लोणस्स कहेवो. पती एक लोणरसनो काजस्सगा " चंदेसु निम्मलवरा " सुधि
 करवो पती काजस्सगा पारीने " अन्नउ उससिएणुं " कहेवु पती " तस्स उत्तरी "
 कहेवी. पती ' हरियावदी " कहेवी ॥ ॥ इति अवला देव वादवानी विधि संपूर्ण. ॥
 एरीते अवलादेव एक मुनि वादे. पती सर्व चतुर्विध संघ मलीने सवला देव वाद तेनी

विधि नीचे प्रमाण ॥ ॥ अथ सवदा देव वादवाना । वाधः ॥ ॥ प्रथम " शारथा
 वही" पन्क्तिमवाथी मांडीने यावत् दीगारस एकनो काजस्सगा करवो. पवी काजस्सगा
 पारी प्रगट दीगारस कही, पवी नीचे योगसुजाए वेसीने चैत्यवंदन कहेवुं. ते " इहं जय
 जय महाप्रभु " पवी " जिकिचि " तथा " नमुत्थुणं " अने " जे अइ आसिखा " पवी
 अणवमखंभा सुधि अर्धा " जयवीयराय " कहेवा. पवी खमासणुं दइने वली बीजुं
 चैत्य वंदन करी " जिकिचि नमुत्थुण " कही पवी " जेअइ आसिखा " पवी यावत् स्तुति
 चार कहीये, एक नवकारनुं काजस्सगा अने एक स्तुति एम चार स्तुतिव कहीये,
 पवी वली " जिकिचि " अने " नमुत्थुणं " तथा " जेअइ आसिखा " कही " अरिहंत
 चेइयाणं करेमि " थी यावत् वीजी वार चार स्तुति प्रथमनी माफकज कहीये. पवी
 " जिकिचि नमुत्थुणं " तथा " जेअइ आसिखा " पवी " जावंति चेइं आइं " तथा
 " जावंति केवि साहू " पवी " जवसगाहर " स्तवन कही, पवी " आत्तवमखंडा " सुधि
 " जयवीयराय " कहेवा पवी वली चैत्यवंदन कही पवी " जिकिचि अने " नमुत्थुणं " तथा
 " जेअअइ आसिखा " पवी " जयवीयराय " संपूर्ण कहेवा ॥ अने चैत्यवंदन सर्व
 पार्श्वनाथना कहेवा " इहं जयजय महाप्रभु " अने स्तुतिव " कट्याण कटनि " चार
 प्रथम कहेवी. पवी वीजीवार " सनातरया " नी कहेवी अने स्तवनेने ठेकाणे " अजी-
 संतो " कहेवो पवी " जवसगाहरं " कहेवो. ॥ ॥ इति सवदा देव वांदवानी विधि
 सपूर्णः ॥ ॥ हवे सवदा देव पूरा थया पवी एक खमासणुं दइने जना अइने " इजा

होय ते चौलपट्टो तथा कपडुं, ए दे अवलां पहेरीने अवलो काजो वीए पवी चौलपट्टो
 तथा कपडु सवला पहेरीने सवलो काजो देवो ए रीते वेवार काजो देवो पवी श्रावके
 न्रुमि उपर पांच साथीया कंकुना करवा पवी तेउपर चौखाना साथीया करवा. पवी ते उपर
 श्रीफल मूकवा पवी ते उपर 'मोहोर' मूकवी पवी ते साथीया उपरे उपराउपर त्रण वाजोव
 स्थापवा पवी ते उपर सिंहासन स्थापवु पवी ते उपर चौमुख विव पधराववां. पवी चार
 खूणे घृतना दिपक ४ चार करवा तथा धूप अखन करवो पवी प्रशुने आणव एक
 वाजोव उपर कंकुनो साथीयो करवो तेउपर एक श्रीफल मूकडु. तेउपर मोहोर मूकवी.
 एरीते श्रावके चौमुखनी स्थापना करी वीधा पवी जे मुनिये अवलो सवलो काजो काढेव
 ते मुनिये प्रथम अवला देव वांदवा ते अवला देव वांदवानी विधि नीचे प्रमाणे ते ॥
 अथ अवला देव वांदवानी विधि: ॥ ॥ प्रथम " जयवीरराय " आखा कहेवा. पवी
 "उवसग्गहरे" कहेवुं पवी " जावंति केवी साहू " कहेवी पवी " जावंति चेइ आई "
 कहेवी पवी "जे अइआसिखा" कहेवा पवी ' नसुरशुणं " कहेवुं पवी " जकिंचिनामा
 तिहं " कहेवु. पवी " इहं जय जय महाप्रभु " ए पार्श्वनाथनुं चेत्य वंदन कहेवुं. पवी
 प्रगट लोगरस कहेवो. पवी एक लोगरसनो काजस्सग्ग " चंदेसु निम्मलयर " सुधि
 करवो पवी काजस्सग्ग पारीते ' अन्नन्न उमसिएणं " कहेवु. पवी " तरस उत्तरी "
 कहेवी पवी " इरियावही " कहेवी ॥ ॥ इति अवला देव वांदवानी विधि संपूर्णः ॥
 एरीते अवलादेव एक मुनि वांदे पवी सर्व चतुर्विध संघ मदीने सवला देव वांदे तेनी

विधि नीचे प्रमाणे ॥ ॥ अथ सवला देव वाद्वानी विधिः ॥ ॥ प्रथम “ इरिया
 वही” पक्कमवाथी मांडीने यावत् लोगस्स एकनो काजस्सगा करवो. पवी काजस्सगा
 पारी प्रगट लोगस्स कही, पवी नीचे योगसुजाए वेसीने चैत्यवंदन कहेवुं. ते “ इहं जय
 जय महाप्रभु ” पवी “ जंकिंचि ” तथा “ नमुत्थुणं ” अने “ जे अइ आसिंशा ” पवी
 आत्तवमखंजा सुधि अर्था “ जयवीयराय ” कहेवा. पवी खमासणुं दर्शने वदी वीजुं
 चैत्य वंदन करी “ जंकिंचि नमुत्थुण ” कही पवी “ जेअइ आसिंद्वा ” पवी यावत् स्तुति
 चार कहीपें, एक नवकारनुं काजस्सगा अने एक स्तुति एम चार स्तुतिउं कहीपें,
 पवी वदी “ जंकिंचि ” अने “ नमुत्थुण ” तथा “ जेअइ आसिंशा ” कही “ अरिहंत
 वेइयाणं करेमि ” थी यावत् वीजी वार चार स्तुति प्रथमनी माफकज कहीपें. पवी
 “ जंकिंचि नमुत्थुणं ” तथा “ जेअइ आसिंशा ” पवी “ जावंति चेइं आइं ” तथा
 “ जावंति केवि साइ ” पवी “ उवसग्गहर ” स्तवन कही, पवी “ आत्तवमखंजा ” सुधि
 “अयवीयराय” कहेवा. पवी वदी चैत्यवंदन कही पवी “ जंकिंचि अने “नमुत्थुणं” तथा
 अअइ आसिंशा ” पवी “ जयवीयराय ” संपूर्ण कहेवा ॥ अने चैत्यवंदन सर्वे
 अना कहेवा “ इहं जयजय महाप्रभु ” अने स्तुतिउं “ कट्याण कदनि ” चार
 वी पवी वीजीवार “ सन्नातस्सा ” नी कहेवी अने स्तवनेने ठेकाणे “ अजी-
 र्हवो पवी “ उवसग्गहरं ” कहेवो ॥ ॥ इति सवला देव वाद्वानी विधि
 संपूर्णः ॥ इवे सवला देव पूरा थया पवी एक खमासणुं दर्शने उजा अइने “ इजा

संत

इहो पवी “ उवसग्गहरं ” कहेवो ॥ ॥ इति सवला देव वाद्वानी विधि

॥ इवे सवला देव पूरा थया पवी एक खमासणुं दर्शने उजा अइने “ इजा

करेण संदिसह नगवत् कुड्रोपडव उडवाणत्वं करेणि काजरसगं अत्रव उससिएण”
 कही चार व्हेमस्सनी काजरसग ' सागरवर गंतीरा ' सुधि करवो पठी काजरसग पारी
 प्रगट्ठ वीगरस्स कहेवो. पठी वुड्ढांति ' नीओ नब्बा ' कहेवा एरीते साधुनी करणी
 जाणवी ॥ ॥ वार गामथी स्वसमाचारीवाला साधु काल धर्म पान्याना समाचार आवे
 तो उपर प्रमाणे अ्याठ थोइए सबला देव वांटे तथा अजी संतो वुड्ढांति विणेरे उपर
 प्रमाणे कहेवा ॥ अने साध्वीनो काल थाय तो अथवा वाहारनो समाचार संत्रलाय तो
 केवल साध्वी तथा श्राविकाज्ज देववदन करे. ॥ ॥ इति मत्तक मुनि पावल साधु साध्वीने
 करणी करवानी विधि संपूर्ण ॥ ॥ अथ मत्तक साध्वीने वख पहरेाववानी विधि ॥
 प्रथम पहेंला नावा आकारे चउद पडवाहुं वख गुह्य प्रदेशे पहेंराववुं १ ते उपर दंगोट
 पहेंराववी २ पठी एक नानी काच पहेंराववी ३ पठी तेजपर जंघासुधी बीजी काच पगना
 गीरीया सुधी पहेंराववी ४ पठी नानो साडो गुना सुधी पहेंराववो ५ पठी तेजपर मोटो
 साडो पगनी पेनी सुधि पहेंराववो ६ तेजपर शील वंध पटो बांधवो ७ पठी त्रण कव्वा
 पहेंराववा ८ पठी तेजपर एकवीज पडवाहुं वख बांधवुं. ९ पठी त्रण कपडां अ्योटाडवां
 १० पठी जोडी पन्ना तथा कुट्टेहुं पावुं तेमां एक मोदक तथा नानी चरवडी तथा
 सुहपत्ति, तथा एक सुहपत्ति मोहे बांधवी बाकी पुतला विणेरेनी विधि मुनिनी जे वतावी
 ते सुजव उपर प्रमाणे जाणवी ॥ ॥ इति मत्तक साध्वीने कपडां पहेंराववानी विधि
 संपूर्णः ॥ ॥ इति मत्तक मुनिनी पूटे जे करवानी विधि ते संपूर्णः ॥ ॥ अथ गुरुम-

हाराजने साथे परकी, चोमासी तथा संवत्सरी प्रतिक्रमण न करेव साधु साध्वीने परकी,
 चोमासी तथा संवत्सरी संबंधी सुसुस्ने वंदन विधिः ॥ ॥ प्रथम शिष्ये काटासणुं
 ज्यथा कामवी पाथरवी (अथग्रह माटे) पवी एक खमासणु दइने तथा उत्रा थइने
 नीचे प्रमाणे कहेवुं—“ इत्राकारेण संदिसह जगवन् शरियावही पडिकसुं ” एम आझा
 मगाने पवी “ शरियावही ” तथा “ तसुत्तरी ” पवी “ अन्नत्र जससिएण ” नो पाठ
 सपूर्ण कहीने एक दोगस्सनो काजरसगा करवो. पवी काजरसगा पारीने प्रगट दोगस्स
 कहीने पवी एक खमासणुं दइने तथा हेठा उत्रफक आसने वेसीने नीचे प्रमाणे पाठ
 कहेवो. “ इत्राकारेण संदिसह जगवन् परकी सुहपत्ति पडिवेहूं ” एम कहीने पत्रास
 वोवो सहित सुहपत्ति पडिवेहवी. पवी एक खमासणुं दइने तथा उत्रा थइने “ इत्रा कारेण
 संदिसह जगवन् परकी वांदणां देवं ” एम कही वे वांदणां देवां (द्वादशावर्त वंदणं
 दत्ताति) पवी उत्रा थकांज “ इत्राकारेण संदिसह जगवन् संबुधा खामणेणं अशुठिजहं
 अत्रयंतर पक्खिअ खामेज ” त्यारे गुरु कहे “ खामेह ” त्यारे शिष्य कहे “ इहं खामेमि
 परकीय एक परकाणं, पन्नरसहिं दिवसाणं, पन्नरसहिं राइआण, जंकिंचि अपत्तिअं ”
 इत्यादिकनो पाठ सपूर्ण कहेवो. एरीते अशुठिज खामीने पवी उत्रा थइने “ इत्रा कारेण
 संदिसह जगवन् पक्खिअं आलोज ” एम कहे त्यारे गुरु कहे “ आलोवेह ” त्यारे
 शिष्य कहे “ इहं आलोएमि जोमे परकज अइआरो कज, काइज, वाइज, ” इत्यादिक
 पाठ सपूर्ण कहेवो. पवी ‘ वयसमाणधम्मे ’ आदिक गाथा ५ कहेवी. पवी “ गमाणा

गमणे ” नो पाठ कहेवो. पवी जना थकांज ‘इह सधस पक्रियस्स डिचिंतियरस’ इत्या-
 दिक पाठ पाठ संपूर्ण कहेवो ॥ एरीते चोमासी तथा सवरसरीनी विधि जाणवी. एमा एटहुं
 विशेष ठे क पखिनी जगोए चोमासी वादवा वरते चोमासी शब्द कहेवो. अने सवरस-
 रीनी जगोए सवरसरी शब्द कहेवो ॥ इति सुगुरुथी पखि, चोमासी तथा संवरसरी
 प्रतिक्रमण न्यारो करेल शिष्य शिष्यणीने सुगुरु वंदन विधि समाप्तः ॥ ॥ अथ
 स्थापनाचार्य राखवा विचार ॥ ॥ गुरुनी स्थापना वे प्रकारनी हे प्रथम एक सज्ञाव
 स्थापना अने वीजी असज्ञाव स्थापना, तेमा प्रथम जे सज्ञाव स्थापना ते गुरुनी
 मूर्ति, तथा काष्ट प्रमुखनी प्रतिमादिकनी आकार सहित ते सज्ञाव स्थापना जाणवी.
 अने असज्ञाव स्थापना ते आकार विनानी अक्रादिक जे स्थापना ते असज्ञाव स्थापना.
 एम वे प्रकारे स्थापनाचार्य स्थापी राखवानुं कहेव ते. ॥ अने सज्ञाव स्थापना राखवानो
 पण अधिकार श्रीअनुयोगाद्वार सूत्रमा लख्यो ठे ते पाठ नीचे प्रमाणे—“ से कित्त
 तवणणुणा जसुं वा अखे वा, वराणए वा, कठकम्मे वा, पोड कम्मे वा, वेपकम्मे वा,
 चितकम्मे वा, गंधी कम्मे वा, वेदिकम्मे वा, पुरिकम्मे वा, सघाति कम्मे वा, एणे वा
 अणोणे वा सज्ञाव वा, असप्राव वा, तवणणवविज्जति” अद्व ते चक्र, वराट ते त्रण दीटी
 वावो कोडा. कष्ट ते भाडो तथा डांडी प्रमुख चंदनादिकनी पाटवी आदिकनी, पुस्तकनी.
 गुरुनी मूर्ति देपवारी, चित्रवादी गुरुनी तवी अथवा काष्ट चंदननी मूर्ति एटवे प्रतिमा
 एवीरीते सज्ञावा असज्ञावा स्थापनाचार्यनो अधिकार जाणवो ॥ इति स्थापनाचार्य स्थापवा

संक्षेप विचार समाप्तः ॥ ॥ अथ प्रत्याख्यानाधिकार प्रारंभः ॥ ॥ प्रथम नमुकार
 सहिञ्चंनु पञ्चखाण क्षिरयते ॥ ॥ सूरे जगए नमुकार सहिञ्चं पञ्चखाद चजब्बिहंपि
 आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नहणा जोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ॥ १ ॥
 इति नमुकारसिनु पञ्चखाण संपूर्णः ॥ ॥ अथ वीजुं पोरिसि साहपोरिसिनुं पञ्चखाण
 प्रारंभः ॥ ॥ सूरे जगए पोरिसि साहपोरिसि पञ्चखाद चजब्बिहंपि आहारं, असणं,
 पाणं खाइमं साइमं अन्नहणा जोगेणं सहसागारेणं पन्नन्न कादेणं दिसा मोहेणं साहु
 वयणेणं सबसमाहि वत्तियगारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥ इति पोरिसि साह पोरिसिनु पञ्च-
 खाण संपूर्णः ॥ ॥ अथ वीजुं पुरिमहनुं पञ्चखाण प्रारंभः ॥ ॥ सूरेजगए पुरिमह
 पञ्चखाद, चजब्बिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नहणा जोगेणं सहसागारेणं
 पन्नन्न कादेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरगारेणं सबसमाहि वत्तियगारेणं वोसि-
 रइ ॥ ३ ॥ इति पुरिमहनुं पञ्चखाण संपूर्णः ॥ ॥ अथ चोशुं निविगइनुं पञ्चखाण ॥
 विगइउं निविगइअ पञ्चखाद अन्नहणा जोगेणं सहसागारेणं देवादेवेणं निह्वहसंसठेणं
 उक्कित्त विवेगेणं पद्दुच्च मक्किएणं पारिठवाणियगारेणं महत्तरगारेणं सबसमाहि वत्तिया
 गारेण वोसिरइ ॥ ४ ॥ अथ एज चोशुं निविगइनुं एकासण सहित पञ्चखाण ॥ सूरे जगए
 नमुकार सहिय पोरिसि साहपोरिसिं पुरिमहं पञ्चखाद चजब्बिहंपि आहारं असणं पाणं
 खाइमं साइम अन्नहणा जोगेणं सहसागारेणं पन्नन्न कादेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं म-
 हत्तरगारेणं सबसमाहिवत्ति आगारेणं निविगइ एकासणं पञ्चखाद तिविहंपि आहारं अ-

ब्रह्मणा त्रोगेणं सहस्रगारेण देवादेवेणं गिह्वसंसठेणं जक्रित विवेगेणं पृथुञ्च भक्तिण
 पारिष्ठावणियागारेणं महत्तरगारेणं सध्व समाह्वित्तियागारेणं पाणस्स देवेण वा अदे-
 वेण वा अत्रेण वा बहुदेवेण वा ससिञ्जेण वा वोसिरइ ॥ ४ ॥ अथ पाचमुं एकासणानु
 पञ्चखाण ॥ सूरे जग्गए नमुक्कार सहियं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमह्ण पञ्चखाइ ॥ चउ-
 धिद्वपि आहार असणं पाणं खाइमं साइम अन्नजणा त्रोगेणं सहस्रगारेणं पवन्न
 कादेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरगारेणं सध्वसमाहि वत्ति आगारेणं एकासणं
 पञ्चखाइ तिविदं पि आहार असणं खांइम साइमं अन्नजणा त्रोगेण सहसा गारेणं
 सागारि आगारेणं आउटण पसरेंणं गुरु अञ्जुठाणेणं पारिष्ठावणि आगारेण महत्त-
 रागारेणं सध्वसमाहि वत्तियागारेणं पाणस्स देवेण वा अदेवेण वा अत्रेण वा बहुदेवेण
 वा ससिञ्जेण वा असिञ्जेण वा वोसिरइ ॥ ५ ॥ अथ बहुदवाणानु पञ्चखाण ॥ सूरे जग्गए
 नमुक्कार सहियं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमह्ण पञ्चखाइ ॥ चउविदं पि आहारं असणं पाणं
 खाइमं साइमं अन्नजणा त्रोगेणं सहस्रगारेणं पवन्न कादेणं दिसामोहेण साहुवयणेणं म-
 हत्तरगारेणं सध्वसमाह्वित्तियागारेणं एगदवाणं पञ्चखाइ ॥ तिविदं मि आहारं अन्नजणा
 त्रोगेणं सहस्रगारेण सागारि आगारेणं गुरुअञ्जुठाणेणं पारिष्ठावणि आगारेणं महत्त-
 रागारेणं सध्व समाह्वित्तियागारेण पाणस्स देवेण वा अदेवेण वा अत्रेण वा बहु देवेण
 वा ससिञ्जेण वा असिञ्जेण वा वोसिरइ ॥ ६ ॥ अथ सातमुं आंविदनु पञ्चखाण ॥
 सूरे जग्गए नमुक्कार सहिञ्चं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमह्ण पञ्चखाइ, चउधिद्वपि आहारं

असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नवणा जोगेणं सहसगारेणं पन्नन्न कादेणं दिसामोहेणं
 साहुवयणेणं महत्तरगारेणं सब समाहि वत्तियगारेण आर्याविदं पच्चखाइ तिविहंपि
 आहारं अन्नवणा जोगेणं सहसगारेणं देवादेवेणं भिहन्नसंसठेणं उखित विवेगेणं पारि-
 ठावणियागारेणं महत्तरगारेणं सबसमाहि वत्तियगारेण पाणस्स देवेण वा अदेवेण
 वा अजेण वा बहुदेवेण वा ससिजेण वा वोस्सिरइ ॥ इति आर्याविद पच्चखाण
 समासः ॥ ७ ॥ अथ आवसुं चउव्हार उपवासनुं पच्चखाण ॥ सूरे उग्गए अन्नत्तं
 पच्चखाइ चउव्हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नवणा जोगेणं सहसगा-
 रेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरगारेणं सबसमाहि वत्तियगारेणं वोस्सिरइ ॥ ८ ॥ अथ
 आवसुं तिविहार उपवासनुं पच्चखाण ॥ सूरे उग्गए अन्नत्तं पच्चखाइ तिविहंपि
 आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नवणा जोगेणं सहसगारेणं पारिठावणि अगारेणं
 महत्तरगारेणं सबसमाहि वत्तियगारेणं पाणहार नमुक्कार सहिय पोरिसिं साहपोरिसिं
 पच्चखाइ ॥ चउव्हंपि आहारं असण पाणं खाइमं साइमं अन्नवणा जोगेण सहसा-
 गारेणं पन्नन्न कादेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरगारेणं सब समाहिवत्तियगारेणं
 पाणस्स देवेण वा अदेवेण वा, अजेण वा, बहुदेवेण वा, ससिजेण, वा, असिजेण
 वा वोस्सिरइ ॥ ८ ॥ अथ आवसुं चउव ठठ नत्तादिकनुं पच्चखाण आवी रीते कहेवुं ॥
 सूरे उग्गए चउवन्नत्तं अन्नत्तं पच्चखाइ ॥ सूरे उग्गए ठठन्नत्तं अन्नत्तं पच्चखाइ ॥
 सूरे उग्गए अठम नत्तं अन्नत्तं पच्चखाइ ॥ इत्यादि प्रकारे अगार सहित कहेवुं ॥ ८ ॥

अथ नवसुं रते चञ्चिदार करवो तेनु पञ्चखाण ॥ दिवस चरिमं पञ्चखाड चञ्चिद्विदं पि
 आहारं असणं पाण खाडमं साडम अन्नवण ञोगेणं सहसगारेणं महत्तरगारेणं
 सव समाह्वित्तियगारेण वोसिरड ॥ ९ ॥ अथ दशसुं गंतसहिय सुठसहियादि अत्रि-
 ग्रहोनु पञ्चखाण ॥ सुरे उगाए गंतसहियं सुठसहियं पञ्चखाड चञ्चिद्विदं पि आहारं
 असणं पाणं खाडमं साडमं अन्नवण ञोगेण सहसगारेण महत्तरगारेणं सवसमाहि
 वत्तियगारेणं वोसिरड ॥ १० ॥ इति दशसुं पञ्चखाण संपूर्ण ॥ अथ चउद तियम
 धारनारने देसावगासिकादिक अत्रिग्रहोनुं पञ्चखाण ॥ देसावगासिअ जवत्रोगं परित्रोगं
 पञ्चखाड अन्नवण ञोगेणं सहसगारेणं महत्तरगारेणं सव समाह्वित्तियगारेण वोसि-
 रड ॥ इति ॥ अथ साधुसुनिराजने पञ्चखाण पारवानी गाथा ॥ फासिय पादियं चैव,
 सोहिय तिरियं तदा ॥ किट्टियं आराहियं चैव, विसोहिज्ज जए जए ॥ १ ॥ फासुअं
 एसणिज्जं च, जं जिणेहिं पवेइयं ॥ तं च निग्गहिसामि, समणधम्मं पवत्तए ॥ २ ॥
 इति सुनिने पञ्चखाण पारवानी गाथा संपूर्ण ॥ अथ श्रावकने पञ्चखाण पारवानी
 गाथा ॥ फासिअ पादियं सोहियं तिरिअ किट्टियं आराहियं ॥ जं च न आराहियं,
 तस्स मिजामि डकडं ॥ १ ॥ इति श्रावकने पञ्चखाण पारवानी गाथा समाप्त ॥ अथ
 करेमिअते, सामाधिकसुं पञ्चखाण श्रावक माटे ॥ करेमिअते सामाडयं, सावज्जं, जोगं,
 पञ्चखामि, जाव निअमं पञ्जुवासामि, उविदं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न

करेमि, न कारवेमि, तस्स त्रंते पक्कमासि, निंदासि, गिरिहासि, अप्पाणं वोसिरासि
 ॥१॥ इति ॥ अथ पोसहंतुं पच्चखाण, करेमि त्रंतेतुं ॥ करेमि त्रंते पोसहं ॥ आहार पोसहं
 देसत्तं सव्वत्तं ॥ सरीर सकार पोसहं सव्वत्तं ॥ वंनचेर पोसहं सव्वत्तं ॥ अद्यावार पोसहं
 सव्वत्तं ॥ चउविहे पोसहं जाणमि ॥ जाव दिवसं, जाव अद्दोरत्तं जावरत्त पञ्जुवासासि ॥
 इविहं त्रिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स त्रंते पडिक्रमासि
 निंदासि गिरिहासि अप्पाणं वोसिरासि ॥ १ ॥ इति ॥ अथ पोषधमां सामापिक उच्चार
 करवानो पाल एट्ठे पच्चखाण ॥ करेमि त्रंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखासि जाव
 पोसहं पञ्जुवासासि इविहं त्रिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स
 त्रंते पक्कमासि निंदासि गिरिहासि अप्पाणं वोसिरासि ॥ इति ॥ अथ देसावगासिक
 पच्चखाण ॥ अहन्नं त्रंते तुह्माणं समिवे देसावगासियं पच्चखासि तं जहा दव्वत्तं खित्तत्तं
 कावत्तं, चावत्तं, दव्वत्तं, देसावगासियं, खित्तत्तं इत्तं वा अन्नत्तं वा कावत्तं सुट्ठत्तं
 परिमाणं जावधारणा प्रमाणं पञ्जुवासासि, चावत्तं जाव गद्दं न गहिजासि, जाव
 ववेणं न ठट्टिजासि अन्नेण केण रोगायं केण वा परिणामो न परिवड्ढ ताव मे अत्ति-
 गग्गो. अन्नत्तणा योगेणं सहसागारेणं महत्तरगारेणं सव्व समाह्वित्तियगारेणं वोसि-
 रासि ॥ १ ॥ इति देसावकासिक त्रत्त पच्चखाण संपूर्णः ॥ ॥ ह्ये दश पच्चखाणना आगा-
 रत्तुं यंत्र नीचे प्रमाणे जाणवुं.-

अथ नवसु रातें चञ्चिविहार करवो, तेनुं पञ्चखाण ॥ दिवस चरिमं पञ्चखाड चञ्चिविहंपि
 आहारं असणं पाणं खाडमं साडमं अब्रवणा ऋणेणं सहसगारेणं महत्तरगारेणं
 सब समाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ ९ ॥ अथ दशसुं गंतसहिय सुठसहियादि अत्रि-
 ग्रहोनु पञ्चखाण ॥ सुरे जगए गंतसहियं सुठसहियं पञ्चखाड चञ्चिविहंपि आहारं
 असणं पाणं खाडमं साडमं अब्रवणा ऋणेणं सहसगारेणं महत्तरगारेणं सबसमाहि
 वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ १० ॥ इति दशसुं पञ्चखाण संपूर्ण ॥ अथ चउद नियम
 धारतरने देसावगासिकादिक अत्रिग्रहोनुं पञ्चखाण ॥ देसावगासिअं जवऋणेणं परिऋणेणं
 पञ्चखाड अब्रवणा ऋणेणं सहसगारेणं महत्तरगारेणं सब समाहिवत्तियागारेणं वोसि-
 रइ ॥ इति ॥ अथ साधुसुनिराजने पञ्चखाण पारवानी गाथा ॥ फासियं पादियं चैव,
 सोहियं तिरियं तहा ॥ किडियं अराहियं चैव, विसोहिजा जए जए ॥ १ ॥ फासुअं
 एसणिजं च, जं जिणेहिं पवेइयं ॥ तं च निगगहिसामि, समणधम्मं पवत्तए ॥ २ ॥
 इति सुत्तिने पञ्चखाण पारवानी गाथा संपूर्ण ॥ अथ श्रावकने पञ्चखाण पारवानी
 गाथा ॥ फासिअ पादियं सोहियं तिरिअं किडियं अराहियं ॥ जं च न अराहियं,
 तस्स भिजामि डकडं ॥ १ ॥ इति श्रावकने पञ्चखाण पारवानी गाथा समाप्त ॥ ॥ अथ
 करेमिअते, सामायिकनुं पञ्चखाण श्रावक माटे ॥ करेमिअते सामाइय, सावजं, जोगं,
 पञ्चखामि, जाव निअमं पञ्जुवासामि, डविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न

॥ अथ प्रतिक्रमणमां कहेवा योग्य सत्वाय संप्रद-अथ प्रथम दशवैकान्तिके ड्रुम
 पुष्पिका नामक प्रथमाध्ययन सत्वाय ॥ धम्मो मंगल मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो ॥
 देवा वितं नमसंति, जरस धम्मं सयामणो ॥ १ ॥ जहा ड्रमस्स पुष्फेसु भमरो आविय-
 इ रसं ॥ ए य पुष्फ किलामेइ, सोय पीण्हेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता, जे दोए
 संति साहुणो ॥ विहंगमा व पुष्फेसु, दाण त्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वितंति वज्जामो,
 नय काइ जवहम्मइ ॥ अहागड्सु रीयंते पुष्फेसु त्तरा जहा ॥४॥ महंगार समावुश्वा,
 जे त्रवंति अणिसिया ॥ नाणा पिंइरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥ त्तिवेमि ॥ ५ ॥
 इति श्री दशवैकान्तिके ड्रुमपुष्पिकानामाध्ययन समाप्तः ॥ १ ॥ अथ श्री दशवैकान्तिके
 श्रामण्य पूर्वका द्वितीयाध्ययन सत्वाय ॥ कह तु कुच्चा सामाणं, जो कामे न निवारए ॥ पर-
 ए विसीदतो, संकप्परस वस गणं ॥ १ ॥ वड गंधमदंकार, इच्चिठं सयणा णिय ॥ अ-
 जदा जेन जुंजति, न से चाइति वुच्चइ ॥ २ ॥ जेय कंते पिए त्पोए, वरुं वि पिठि कुवइ ॥
 साहीणे चयई त्पोए, सेइ चाइति वुच्चई ॥ ३ ॥ समाइ पेहाइ परिवयंतो, सियामणो नि-
 रसरई वहिच्चा ॥ नसा महं नावि अहं वित्तीसे, इच्चेवताज विणइज्जरगं ॥४॥ आयावयवाही
 चयसोगमद्धं, कामे कमाहि कमियं खु डखं ॥ विदाहि दोसं विणएज्जरगं एवं सुही हो-
 विसि सपरए ॥ ५ ॥ परवदं जलियं जोइ, धूम केउं डरासयं ॥ नेजति वंतयं त्पोसुं, कुवे
 जाया अंगंधणे ॥ ६ ॥ थिरहु ते जसो कामी, जो तं जीविय कारणा ॥ वंतं इजसि आवेजं,
 सेयंते मरणं तवे ॥ ७ ॥ अहं च जोगरायस्स, तं चसि अंधणावहिणो ॥ मा कुवे गंधणा

॥ अथ दश पद्यरूपानां आचारसु यत्र ॥

श्लो०	दशपद्यरूपानां नाम	चार अक्षरानां नाम			पञ्चपद्यरूपानां आचारानां नाम			मन्त्र	१५ आचार छे	पद्यानां ६ आचार
		अक्षरं	पद्यं	रक्षितं	साधनं	अक्षरं	पद्यं			
१ ॥	सूरे उगण् नमुञ्जर भिरिश्च०	१	३	३	४	१	१	०	०	०
२ ॥	सूरे उगण् पारिषि माड योरिभि०	१	२	३	४	१	१	०	०	०
३ ॥	सूरे उगण् गुरिमदु०	१	२	३	४	१	१	०	०	०
४ ॥	विगाडो निविगाड अ०	०	०	०	०	१	१	०	०	०
५ ॥	निविगाड पणसण०	०	०	०	०	१	१	०	०	०
६ ॥	पणसण०	१	२	३	४	१	१	०	०	०
७ ॥	पर रक्षण०	१	२	३	४	१	१	०	०	०
८ ॥	आभवि०	१	०	०	०	१	१	०	०	०
९ ॥	सूरे उगण् भनसठ पञ्चसाह चउ रिहिरि०	१	२	३	४	१	१	०	०	०
१० ॥	सूरे उगण् भनसठ पञ्चसाह विरिहिरि०	१	०	२	४	१	१	०	०	०
११ ॥	दिवस भरिभि०	१	४	३	४	१	१	०	०	०
१२ ॥	सूरे उगण् पाठ स्रष्टिअ मुग्महिअ०	१	२	३	४	१	१	०	०	०
१३ ॥	प्राणजग नमुञ्जर सहिअ पारिषि०	१	२	३	४	१	१	०	०	०

(सूचना-उपला कोठामा " अन्नछ " नै वदस " अन्नछ " माचवो)

श्याण संज्ञितम् ॥ संज्ञायि

हरिउदंता, धृञ्जन्नाहा जिश्न सखाय ॥ धम्मो मंगल म्भोत्तं, अहिंसा संजमो तवो ॥
राइं करिनाण, डस्सदाइं सहेत्तु य ॥ केइ व देवलोएस्स, केइ सिक्खेसु भमरो आविय-
खविता पुषकम्माइं, संजमेण तवेण य ॥ सिद्धिमगमणुप्पत्ता, ताइणा णा सुत्ता, जे दोए
वेमि ॥ १५ ॥ इति दशवैकातिके खुभुयायार कइ झयणा तइयं ॥ ३ ॥ इति दशमां,
तिके चतुर्थीभयननी आदिनी ११ गाथानी सखाय पारत्तः॥ अजयं चरमाणो भगवुक्खा,
नूयाइं हिंसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइकमुअंफलं ॥ १ ॥ अजयं चित्तमाणोअ,
णनूयाइं हिंसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइकहुअंफलं ॥ २ ॥ अजयं आसमाणोअ,
पाण नूयाइं हिंसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइकमुअंफलं ॥ ३ ॥ अजयं सयमाणोअ,
पाण नूयाइं हिंसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कहुअंफलं ॥ ४ ॥ अजयं जुंजमाणोअ,
पाण नूयाइं हिंसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कहुअंफलं ॥ ५ ॥ अजयं चासमाणोअ,
पाण नूयाइं हिंसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कहुअंफलं ॥ ६ ॥ कइं चरे कइं चिते,
कइमास कइं सए, कइं जुंजंतो, चासंतो पावकम्मं न वंधइ ॥ ७ ॥ जयं चरे जयं चिते ज-
यमासे जयंसए ॥ जयं भुजंतो चासंतो पावकम्मं न वंधइ ॥ ८ ॥ सव्वनू अप्पनूअस्स,
सम्मं नू आइं पासइ ॥ पिहिया सव्वस्सइं तस्स पावंकम्मं न वंधइ ॥ ९ ॥ पढमं नाणं तवो
दया, एवं चितइ सव्वसंजए ॥ अन्नाणी से कि काइ, किंया नाही वे अपावगं ॥ १० ॥ सु-
जा जाणइ कइणाणं, सूव्व जाणइ पावगं ॥ उन्नयं पि जाणइ सूच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥

हेमो, सजमं निहुवचर ॥ ८ ॥ जइ तं काहिसि जावं, जाजा दिवसि नारिज ॥ वायाविहुं व
 ह्दो, अठिअप्या अविस्ससि ॥ ९ ॥ तीसे सो वयण सोआ, संजयाइ सुजासियं ॥ अकु-
 सेण जहा नागो, धम्मं सपडिवाइयो ॥ १० ॥ एवं करंति संबुद्धा, पन्थिया पवियवणा ॥
 विणियइति जोगेसु, जहासे पुरिसूतमो ॥ तिवेमि ॥ ११ ॥ इतिश्री दशवेकालिके सामाद्व
 पुधियप्रयण विचसमत्ता ॥ १ ॥ अथश्री दशवेकालिके शुद्धकाचार कथा नामकं तृतीयं
 अध्ययन नाम सथाय ॥ संजमे सटिप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइण ॥ ते सिमेयमणा इदं,
 निगंधाण महेसिएणं ॥ १ ॥ उद्रेसिय कीयगफ, नियागम त्रिहडाणिय ॥ राइअतेसिएण-
 णेय, गंध मद्धे य वीयणे ॥ २ ॥ सनिदी निहिसत्तेय, रायपिडे किमिजए ॥ संवाहण दंत
 पक्षीयणाय, समुवणे देह पलोयणाय ॥ ३ ॥ अवावए य नादीए, उत्तस्सय धारणवाए ॥
 तेगिठं पाहणापाए, समारअं च जोइणो ॥ ४ ॥ सिथायर पिडंअ, आसदीपदियं कर ॥
 गिहंतर निसिवाय, गायस्सुवहणाणिय ॥ ५ ॥ गिहिणो वे आवाफियं, जा य अजाविव व
 या ॥ तत्तानिधुफुओइत्त, आउरस्सरणाणिय ॥ ६ ॥ मूल ए सिग वेरेय, उहुरवेफे
 वुफे ॥ कदे मूलय सच्चित्ते, फले वीए य आमए ॥ ७ ॥ सो वच्चवे सिधवे वणे
 णेय आमए ॥ सामुदे पंसवारे य, कावा लोणेयआमए ॥ ८ ॥ धुवणेदि
 कम्मविरयेण ॥ अजणे दंतवणेय गायाअंग विअसणे ॥ ९ ॥ सवण
 आण महेसिएण ॥ संजमंमि

अ १ संजया ।

१ ॥ अथश्री दशवेकालिके शुद्धकाचार कथा नामकं तृतीयं

॥ १ ॥

॥ १ ॥

ध्याण महेसिणं ॥ संजमंमि वा योग्य सवाय सप्रह-^{अर्थः} ॥ १ ॥ दशवैकातिके डुम
 हरिजदंता, धूञ्चमाह । जशन सवाय ॥ धम्मो मंगुल भूमिं, अहिंसा संजमो तवो ॥
 गइं करिस्ताणं, डससहाइं सहेतु य ॥ केइ व देवलोएसू, केइ सिर्फेसु भमरो अणविय-
 खविता पुवकम्मइं, संजमेण तवेण य ॥ सिद्धिमग्गमणुपत्ता, ताइणां गा सुत्ता, जे दोए
 हेमि ॥ १५ ॥ इति दशवैकातिके खुभुयायार कइ झयणा तइयं ॥ ३ ॥ इति दशमो,
 त्रिके चतुर्थीथयननी आदिनी ११ गाथानी सवाय प्रारंभः ॥ अजयं चरमाणो भगवुक्ख,
 नूयाइं हिसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कफुञ्चं फलं ॥ १ ॥ अजयं चित्तमाणोञ्च,
 णनूयाइं हिसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कहुञ्चं फलं ॥ २ ॥ अजयं आसमाणोय,
 पाण नूयाइं हिसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कफुञ्चं फलं ॥ ३ ॥ अजयं सयमाणोञ्च,
 पाण नूयाइं हिसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कफुञ्चं फलं ॥ ४ ॥ अजयं जुंजमाणोञ्च,
 पाण नूयाइं हिसइ ॥ वंधई पावयं कम्मं, तंसे होइ कफुञ्चं फलं ॥ ५ ॥ अजयं त्रासमाणोञ्च,
 कइभासे कइं सए, कइं जुंजतो, त्रासंतो पावकम्मं न वंधइ ॥ ७ ॥ जयंचरे जयंचिते ज-
 यमासे जयंसए ॥ जयं भुजंतो त्रासंतो पावकम्मं न वंधइ ॥ ८ ॥ सबनू अणपनूअरस,
 समंनू आइं पासइ ॥ पिडिया सबससदंतसस पावंकम्मं न वंधइ ॥ ९ ॥ पढमं नाणं तवो
 दया, एवं चिवइ सबसंजए ॥ अज्ञाणी से कि काइ, किंवा नाही हे अणवगं ॥ १० ॥ सु-
 ज्ञा जाणइ कइजाणं, सब्ब जाणइ पावगं ॥ ज्ञयंपि जाणइ सूच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥

इति दशवैकालिके सखाय संपूर्णे ॥ ४ ॥ अथ निंदी सूत्रनी प्रथम सखाय आज पुरस्त-
 कमा आगल लखेल वे, माटे अर्दी नथी लखेल ॥ ५ ॥ अथ नंदी सूत्रनी द्वितीय सखाय
 आज पुरस्तकमां आगल लखेल वे, माटे आही लखेल नथी ॥ ६ ॥ अथ श्री नरहेसर
 वाह्वलीनी सखाय आज पुरस्तकमां आगल लखेल वे, माटे आही लखेल नथी ॥ ७ ॥
 अथ श्री नमस्कारनी सखाय ॥ अरिहंता मंगलं सुक, अरिहंता सुक देवया ॥ अरिहं-
 ताणं कित्थियताणं, वोसिरामि तिपावणं ॥ १ ॥ सिशय मंगल सुक, सिशय सुक देवया ॥
 सिशय कित्थियंताणं, वोसिरा तिपावणं ॥ २ ॥ आयरियामंगलं सुक, आयरिया सुक
 देवया ॥ आयरिया कित्थियंताणं, वोसिरामि तिपावणं ॥ ३ ॥ उवजाया मंगलं सुक, उव-
 जाया सुक देवया ॥ उवजाया कित्थियंताणं, वोसिरामि तिपावणं ॥ ४ ॥ माह्वय मंगलं
 सुक, माह्वय सुक देवया ॥ माह्वय कित्थियंताणं, वोसिरामि तिपावणं ॥ ५ ॥ ए पाचे मंगलं
 सुक, ए पाचे सुक देवया ॥ ए पाचे कित्थियंताणं, वोसिरामि तिपावणं ॥ ६ ॥ एसो पांच ए-
 कारो, सधपावप्पणासणो ॥ मंगलाणं च सर्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ ७ ॥ इति नमस्का-
 नी सखाय संपूर्णं ॥ ८ ॥ अथस्वाध्याय ॥ धण मिहुण सुर महव्वल, ललियंगो वयर-
 त्तंण मिहुणे य ॥ सोहम्म विद्यु, अहुअ, चकी, सधठ उसनेअ ॥ १ ॥ धण सत्तवाह
 १. जइगमण अन्नविवास टाणं च ॥ वदवो दीणे वासे, चित्तावय दाणमासी ताया
 उत्तर कुट्ट सेजया अजुत्ताहे अ महव्वलोराया ॥ इसाणे ललियंगो, महाविदेहे
 जंयो ॥ पंच निग दणा विदेहि तिगिडियस्स तव सुत्तं ॥ रायसुय सिद्धि-

मुखा, सडाह सुया वध्विह्रदिया ॥ ७ ॥ विवसुयस्सय गेहे, किमिकुलो बहुयं ययं दतुं ॥
 वितिय ते विजसुहं, कोहि एयस्स ते गिहं ॥ ८ ॥ तिह्वं तिगिहिसुठं, कंवलणं चंदणं च
 वाणियठं ॥ दाठं अत्रितिवंतो, तेणेव त्रवेण अंतगडो ॥ ९ ॥ साहुं तिगिहिकणं, सा-
 मयं देवलोण गमणं च ॥ पुंनरि गिणिए चूया, तेठं सुयावयर सेणस्स ॥ १० ॥ पढमिह
 ययरनाहो, बाहु सुवाहुअ पीढ महापीढे ॥ ते सिंपिया तिजयरो, निखंता तेवि तत्तेव ॥ ११ ॥
 पढमो चजदसपुढी, सेसा इकरसंगवी चजरो ॥ वीठ वेयावच्चं, किइ कम्मंतइ अज कारी
 ॥ १२ ॥ त्रोगफदं बाहुवदं पसंसणा जित इअर अचिअतं ॥ पढमो तिजयरत्तं, वीसइ
 ताणेहिं कारीय ॥ १३ ॥ अरिहंत सिधपवयण, गुरु थेर बहुसुए तवस्सेसु ॥ वडद्वयाय
 एसिं, अत्रिलनाणो वठं गेअ ॥ १४ ॥ दंसण विणए आवस्सइ सीडवए नर वर्इयारो ॥
 खण वव तवच्चि आए, वेआवच्चे समाहि य ॥ १५ ॥ अपुधनाणगहणे, सुयत्तति पव-
 यणपुत्रावणया ॥ ए एहिं कारणेहिं, तिजयरत्तं वहइ जीवो ॥ १६ ॥ इति ॥ १७ ॥ अथ
 पारणक वृश् स्वाध्याय प्रारंभः ॥ ॥ संवहरेण त्रिखा, वक्षा जसत्रेण लोगनाहेण ॥
 सेसेदिं वीथ दिवसे, वक्षाठं पढम त्रिखाठं ॥ १८ ॥ जसत्रस्स ज पारणए, इखुरसो आसि लोण
 नाहस्स ॥ सेसाणं परमन्नं, अमिअरस रसेवमं आसी ॥ १९ ॥ धुठं च अहो दाणं, दिव्वाणि-
 य आहयाणि तूराणि ॥ दिव्वाय सन्निवइया, वसुहारा चेव तुलाय ॥ २० ॥ गयपुर सिव्वंस
 इखुरस, दाण वसुहार पीढ गुरु पूआ ॥ तिख सिवाए गमणं, बहु वली निवेयणं चेव
 ॥ २१ ॥ इहिएपुरं अजजा सावडि तहय चेव सकेयं ॥ विजयपुर वंत्तवलयं, पाडवि संडं

पञ्चमसंढं ॥ ५ ॥ सिद्धपुरं रिटपुरं, सिद्धवृत्तपुरं महापुरं चैव ॥ धनकण्ड वक्ष्माणं सोमण
सं मंदिरं चैव ॥ ६ ॥ चक्रपुरं, रायपुरं, मिहिलाराय जिहिमेव बोधवं ॥ वीरपुरं बारवर्द्ध,
कोयगडं कुल्लगय गामो ॥ ७ ॥ ए एसु पढमत्रिखा, लक्ष्मण जिणवरोहिं सर्वोहिं ॥ दिग्नाज
जेहि पढमं, तेसि नामाणि बुज्जामि ॥ ८ ॥ सिक्खस वंज दत्ते, सुरिद दत्ते य इंददत्ते य ॥ प-
उमेय सोमदेवे, महिद तद् सोम दत्तेय ॥ ९ ॥ पुरसे पुण वसुपुण, नंद सुनंदे जए य वि-
जए य ॥ ततो य धम्मसीहे, सुमित तद् वय्य सीहे य ॥ १० ॥ अपराजिय विस सेणे, वीस
इमे दोइ वज्रदत्ते य ॥ दिग्ने वरदिग्ने पुण, धन्ने बहुलेय बोधवे ॥ ११ ॥ ए ए कयंजवि-
उडा, जत्ति बहुमाण सुक देसागा ॥ तकाव पढतमणा, पडिलानेसु जिणवरिंदे ॥ १२ ॥
सर्वोहिं पि जिणेहिं, जहियं लक्ष्मण पढमत्रिखाज ॥ त हियं वसुहरालं, बुज्जालं पुष्पवुठीजं
॥ १३ ॥ अश्वत्तेरस कोडीजकोसा, तज्ज दोइ वसुहरा ॥ अश्वत्तेरस लखा, जहन्निञ्जा दोइ
वसुहरा ॥ १४ ॥ सर्वोसिं पि जिणणं, जेहि दिग्नाज पढम त्रिखाज ॥ ते पयणु पिष्व दो-
सा, दिग्घरपरकमा जाया ॥ १५ ॥ केइ तेणेव जवेण, निवुया सबकम्म विसुकाय ॥ केइ
तइय जवेण सिद्धिस्सति जिण सगासे ॥ १६ ॥ कल्लंस विट्ठीए, पूए महददु धम्म चकंतु ॥
विहरइ सहस्स मेगं, उजमज्जो जारहे वासे ॥ १७ ॥ बह्वदी अडंबइह्ला, जोयणण वि
सउं सुवन्न जमीय ॥ आहिडिया जगवया, जसजेण तवं चरं तेण ॥ १८ ॥ बह्वदी जोयण
गाय, छगाय जे जगवया समणु सिद्धा ॥ अन्नोवि मिहिजार्द्ध, ते तइया जहणा जाया
॥ १९ ॥ तिग्घररणं पढमो जसन्न सिरि विहरिजं निरुवसगं ॥ अतावजं नगवरो, अग्गा

नमि जिणवरस्स ॥ १० ॥ उडमजोपरियाडं, वाससहस्सं तडं पुरिमतादे ॥ नगोहस्सप
 हिता, उप्पदं केवलं नाणं ॥ ११ ॥ फग्गुण बहुलिकारसी, अह अउभेण तत्तेण ॥ उ-
 प्पन्न मिअणंते महव्वायापंच पन्नवए ॥ १२ ॥ उप्पदं मिअणंते नाणे जर मरण विप्पसु-
 कस्स ॥ तो देवदाणविदा, करंति महिमं जिणंदस्स ॥ १३ ॥ इति ॥ १० ॥ अथ पारणक दधु
 स्वाध्याय प्रारंभ ॥ सारस्सयमाइच्च, वक्कि वरुणाय गहतोयाय ॥ तुसिया अद्वावादा, अ-
 जिच्चा चैव रिताय ॥ १ ॥ एए देवनिकाया, त्रवयं वोहंतु जिणवरं दिंतु ॥ सब जगजीव-
 हिययं, त्रवतं तिडं पवत्तेहि ॥ २ ॥ संवत्तरेण होही, अत्तिनिवमणं तु जिणवरिदाणं ॥
 तो अह संपयाणं, पवत्तए पुव्वसरमि ॥ ३ ॥ एगा हिरन्न कोडी, अउवेव अणुणगा सय-
 सहस्सा ॥ सरोदय माईयं, दिज्जर जा पायरामीडं ॥ ४ ॥ सिंघाडग तिग चउक चच्चर
 चउसुह महामहव्पदेसु ॥ दारेसु पुरवराणं, रत्तासुह मज्जपारेसु ॥ ५ ॥ वटवरिया घोसि-
 च्चइ, किमिडियं दिव्वएयं बहु विहियं ॥ सुर असुर देव दाणव, नरिंद महियाण निख-
 मणे ॥ ६ ॥ तिनेवय कोम्मिया, अठासीयंच दवांति कोडीडं ॥ असिअं चसय सहस्सा,
 एयं संवत्तरे दिव्वं ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥ अथ नियुक्ति स्वाध्याय प्रारंभ ॥ ते वांदि-
 ज्जण धिरसा, अहपुहत्तस्स तेहिं कहियस्स ॥ सुअनाणस्स त्रगवडं, निज्जुत्तिं कित्तइ-
 स्सामि ॥ १ ॥ आवरसगस्स दसका, विअस्स तह उत्तर ज्ञमायारे ॥ सूर्यगडे निज्जुत्तिं,
 बुज्जामि तद्दा दसाणंच ॥ २ ॥ कप्पस्सय निज्जुत्तिं ववहारस्सेव परम निउणस्स ॥ सूरिय
 पन्नतीए, बुडं इस्सि नासियाणंच ॥ ३ ॥ एएसिं निज्जुत्तिं बुज्जामि अहं जिणो वएसेणं ॥

पञ्चमसंढं ॥ ५ ॥ सिंहपुरं रिचपुरं, सिश्वत्रपुरं महापुरं चैव ॥ धन्नकड वक्ष्माणं सोमण
सं मंदिरं चैव ॥ ६ ॥ चक्रपुरं, रायपुरं, मिहिलाराय गिहिमेव बोधधं ॥ वीरपुरं वारवर्द,
कोयगडं कुङ्कणय गामो ॥ ७ ॥ ए एसु पढमत्रिखा, लशालं जिणवरेहिं सव्वेहिं ॥ दिन्नाल
जेहि पढमं, तेसि नामाणि वुत्तामि ॥ ८ ॥ सिवस वंच दत्ते, सुरिद दत्ते य इंददत्ते य ॥ प-
जमेय सोमदत्ते, महिद तद् सोम दत्तेय ॥ ९ ॥ पुस्से पुण धम्मपुण, नंद सुनंदे जए य वि-
जए य ॥ ततो य धम्मसीहे, सुमित तद् वग्ग सीहे य ॥ १० ॥ अपराजिय विस सेणे, वीस
इमे होइ वज्रदत्ते य ॥ दिन्ने वरदिन्ने पुण, धन्ने बहुल्लेय बोधधे ॥ ११ ॥ ए ए कयंजलि-
उडा, जति बहुमाण सुक वेसागा ॥ तकाव पढठमणा, पडिवात्तेसु जिणवरिंदे ॥ १२ ॥
सव्वेहिं पि जिणेहिं, जहियं लशाल पढमत्रिखाज ॥ त हियं वसुहाराजं, वुत्ताजं पुष्पवुत्ताजं
॥ १३ ॥ अश्वत्तेरस कोटीजकोसा, तज होइ वसुहारा ॥ अश्वत्तेरस लखा, जहद्विज्जा होइ
वसुहारा ॥ १४ ॥ सव्वेसिं पि जिणणं, जेहि दिन्नाज पढम त्रिखाज ॥ ते पयणु पिख दौ-
सा, दिववरपरक्कमा जाया ॥ १५ ॥ केइ तेणेव ज्ञेणे, निवुया सव्वक्कम्म विसुक्काय ॥ केइ
तइय ज्ञेणे सिन्निस्सति जिण सगासे ॥ १६ ॥ कळंस विट्ठीए, पूए महददु धम्म चकंतु ॥
विहरइ सहस्स मेगं, उजमजो चारहे वासे ॥ १७ ॥ बह्वी अडंबइल्ला, जोयणा वि
सठं सुवन्न ज्ञमीय ॥ आहिं डिया ज्ञावया, उसत्तेणे तवं चरं तेणे ॥ १८ ॥ बह्वी जोयण
गाप, झगाय जे ज्ञावया समणु सिखा ॥ अत्तेवि मिजिजार्ह, ते तइया जहणा जाया
॥ १९ ॥ तिजयराण पढमो उसत्त सिरि विहरिजं निरुवसगं ॥ अत्तावजं नगवरो, अग्गा

नमि जिणवरस्स ॥ १० ॥ उजमजोपरियाळ, वाससहस्सं तळं पुरिमताले ॥ नगोहस्सय
 हिठा, उप्पत्तं केवलं नाणं ॥ ११ ॥ फग्गुण बहुट्टिकारसी, अहं अउभेण उत्तेण ॥ उ-
 प्पन्नं मिअणुते महवथापंच पन्नवए ॥ १२ ॥ उप्पन्नं मिअणुते नाणे जर मरणे विप्पसु-
 कस्स ॥ तो देवदाणविंदा, करंति महिमं जिणंदस्स ॥ १३ ॥ इति ॥ १० ॥ अथ पारणक वधु
 स्वाध्याय प्रारंभ ॥ सारस्सयमाइच्चा, वह्नि वरुणाय गहतीयाय ॥ तुसिया अथावाहा, अ-
 णिच्चा चैव रिताय ॥ १ ॥ एए देवतिकाया, त्रययं वोहंतु जिणवर दिंतु ॥ सब जगजीव-
 हिययं, त्रयतं तिहं पवतेहि ॥ २ ॥ संवत्तरेण दोही, अत्तिनिखमणं तु जिणवरिदाणं ॥
 तो अह संपयाणं, पवत्तए पुव्वसूरमि ॥ ३ ॥ एणा हिरन्न कोडी, अत्तेव अणुणगा सय-
 सहस्सा ॥ सूरौदय माईयं, तिज्जर जा पायरसीठं ॥ ४ ॥ सिंघाडग तिण चउक चच्चर
 चउसुह महामहप्पहेसु ॥ दारेसु पुरवराणं, रत्तासुह मज्जयारेसु ॥ ५ ॥ वटवरिया घोसि-
 चइ, किमिच्चियं दिव्वएय बहु विहियं ॥ सुर असुर देव दाणव, नरिंद महियाण निख-
 मणे ॥ ६ ॥ त्रिनेवय कोसिसया, अठासीयंच हवति कोडीठं ॥ असिअं चसय सहस्सा,
 एयं संवत्तरे दिवं ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥ अथ निर्युक्ति स्वाध्याय प्रारंभ ॥ ॥ ते वदि-
 जण शिरसा, अहपुहत्तस्स तोहिं कहियस्स ॥ सुअनाणस्स जगवळं, निज्जुत्तिं कित्तइ-
 र्सासि ॥ १ ॥ आवरसगरस्स दसका, विअस्स तह उत्तर अमायारे ॥ सयगडे निज्जुत्तिं,
 बुजामि तहा दसाणंच ॥ २ ॥ कप्पस्सय निज्जुत्तिं ववहारस्सेव परम निजणस्स ॥ सूरिय
 पवतीए, बुहं इसि नासियाणंच ॥ ३ ॥ एएसिं निज्जुत्तिं बुजामि अहं जिणे वप्सेणं ॥

आहरण हेतुकारण, पयनिवहमिणं समसेणं ॥ ४ ॥ सामादश्च निद्युतिं बुहं जयएसियं
 गुरुजणेणं ॥ अययिय परंपरए, ए अणयं अणुपुव्विए ॥ ५ ॥ निद्युत्ता जे अज्जा जं
 वश तेण दोइ निद्युत्ति ॥ तह विअ अंगावेइ, विनासितं सुत्त परिव्याडी ॥ ६ ॥ तव नि-
 यमनाणरुखं, आरुढो केवदी अमियनाणी ॥ तो सुअइनाण बुत्ति, अविद्य जण विवोह-
 णताय ॥ ७ ॥ तं बुद्धिमएण पफएण, गणहरा गिह्वं निरवसेसं ॥ तिजयर नासियाइं,
 गंथंति तउ पवयणता ॥ ८ ॥ नितं च सुअ अमुइं, गणए धारणा दाउ पुत्तिअं चैव ॥ ए एहिं
 कारणेहि, जीयंति कयं गणहरेहिं ॥ ९ ॥ अहं नासइ अरहा, सुत्तगहंति गणहसा निजण ॥
 सासणस्स हिअठए, तउ सुत्त पवत्तई ॥ १० ॥ इति । ११ ॥ अथ निर्युक्ति स्वाध्याय
 प्रारभ ॥ सामादश्च माइय, सुअनाणं जाव विड सारउ ॥ तस्सवि सारो चरणं सारो चर-
 णस्स निवाणं ॥ १ ॥ असुनाणं भिवि जीवो, वटंनो सो न पाजणइ सुखं ॥ जो तव संजम
 दइए, जोए न चएइ वोहं जे ॥ २ ॥ जहणे अत्तइ निधा, मउवि वाणियगो इत्थियं न्नासिं ॥
 वाएण विणा पोउ, नचएइ महन्नवं तरितं ॥ ३ ॥ तहनाण त्तरु विधा, मउ वि सिद्धि
 वसहिं न पाजणइ ॥ निजणो वि जीव पोउ, तव संजम मारु अविह्वणो ॥ ४ ॥ संसार सा-
 नारउ, उच्चुडो मा पुणोनिबुद्धिआ ॥ चरणगुण विप्वहीणो बुद्धइ सुबुद्धं पि जाणंतो ॥ ५ ॥
 सुबुद्धं पि सुअ महियं. कि काहि चरण विप्वहीणस्स ॥ अंधस्स जह पवित्ता, दिवसय
 सहस्स कोडीवि ॥ ६ ॥ अपंपपिय सुय महियं, पणासगं दोइ चरण जुत्तस्स ॥ इकोवि
 जहप्वर्हयो, सच्चु अस्सय पणासेइ ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ जहा खरो चंदण चारवाही, चार-

स्सत्राणी नड चंदणस्स ॥ एवं खुताणी चरणेण दीणो, नाणस्सत्राणी नहु सुभाइए॥१॥
 हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणुं किया ॥ पासंतो पंगुवो दट्टो, धावमाणोवि अंधव
 ॥ ९ ॥ संयोग सिन्धीइ फलं वयंति, नहु एणञ्जेण र्हो पयाइ ॥ अंधो अ पंगूअ वणे स-
 मिच्चा तेसि पजता नयरं पविता ॥ १० ॥ नाणं पणासगं सो, हउं तवो संयमोय गुत्ति करो ॥
 तिइदंवि समाजगो मुखो जिणसासणे जणुं ॥ ११ ॥ इति तिर्युक्ति स्वाध्यायः ॥ १२ ॥
 अथ तिर्युक्ति स्वाध्याय प्रारंभ ॥ ॥ पुणरविद्य समोसरणे, पुजइ जिणंद चक्किणो चरहे ॥
 आणुतो अ दसरो, तिजगरो को इहं चरहे ॥ १ ॥ जिण चक्किदसाराणं, वन्नपमाणाइ-
 नाम गोताइ ॥ आउपुरमाइ पियरो, परिचाय गयं च साहीय ॥ २ ॥ जा रिसया दोग
 गुरु, चरहे वासंमि केवली तुझे ॥ एरिसया कइ अन्ने, ताया होहिति तिजयरा ॥ ३ ॥
 अइ चणइ जिण वरिंदो, चरहे वासंमि जारिसो अ अइ ॥ एरिसया तेवीसं, अन्ने होहिति
 तिजयरा ॥ ४ ॥ होही अजिउ संभव, अनिणंदण सुमइ सुप्पज सुपासो ॥ ससि पुष्फ
 दंत सीअत्त, सिज्जसो वासुपुवो अ ॥ ५ ॥ विमलमणत्तयधम्मो, संति कुंशुं अरो अ
 मल्लीअ ॥ सुण सुवय नमि नेमि, पासो तइ वक्षमाणोय ॥ ६ ॥ अइ चणइ नरवारिंदो,
 चरहे वासंमि जारिसो अ अइ ॥ एरिसया कइ अन्ने, ताया होहिति रायाणो ॥७॥ अइ
 चणइ जिण वरिंदो, जारीसो तं नरिंद सद्धवो ॥ एरिसया इक्कारस, अन्ने होहिति रा-
 याणो ॥८॥ होही सगरो मधवं, सण कुमारोय राय सद्धवो ॥ संती कुंशुं अ अरो, हवइ
 सुन्नूमी अकोरवो ॥ ९ ॥ नवमो अ महा पजमो, हरिसेणो चैवराय सद्धवो ॥ जयनामा

नरवद्, वारसमी वंचदंतोय ॥ १० ॥ द्वाहिति वासुदेवा, नव अन्ने नीलपीय कोसिवा ॥
 हृद सुसल चक्र जोही, सताल गरुड अया दोदो ॥ ११ ॥ तिवठ अ दिवहु अ, सयंतु
 पुरिसुत्तमे पुरिससीहे ॥ तद पुरिस पुंडरिए, दत्ते नारायणे कएहे ॥ १२ ॥ अयल वि-
 जये नहे, सुप्पये य सुदंसणे ॥ आणंदं नंदणे पउये, रामे आवीय पडिमे ॥ १३ ॥ अ-
 स्सग्गीवि तारएय, मेए महुकीडने निसुत्रेय ॥ वलि पहलाए रावणे नवमी अ जरासिधु
 ॥ १४ ॥ एए खलु पडिसत्तु, किती पुरिसाण वासुदेवाणं ॥ सर्वेवि चक्रजोही, सर्वेवि ह्या
 सचकेहि ॥ १५ ॥ पउमा नवासु पुजा, रत्ता ससि पुष्कदंत ससिगोरा ॥ सुधयनेमी कावा,
 पासो मल्ली पिय गात्रा ॥ १६ ॥ वर कएण तविय गोरा, सोलस तिठंकरा सुणेयवा ॥ एसो
 वन्न वित्रागो, चउवीसा ए जिणवराणं ॥ १७ ॥ इति ॥ १४ ॥ अथ निर्युक्ति स्वाध्याय
 प्रारंभः ॥ उसमी पंच धणुस्सय, नव पासो सत्तरयणित् वीरो ॥ सेसठ पंच अउय, पन्ना
 दस पंच परिहीणा ॥ १ ॥ पंचेव अरु पचम, चत्तारहुठ तहत्तिगचेव ॥ अट्टाइवा ड-
 न्निय, दिवहमेण धणुसयं च ॥ २ ॥ न उदं असिई सित्तरि, सती पन्नास दोइ नायवा ॥ प-
 णयाल चत्त पणत्तिस, तीस पण वीस वीसा य ॥ ३ ॥ पनरस दस धणुणिय, नव पासो स-
 त रयणित् वीरो ॥ नामा पवत्ता खलु, तिउयराणं सुणेयवा ॥ ४ ॥ सुणिसुधय अरहा,
 अरिउनेमी गोयम सगुत्ता ॥ सेसा तिउयरा खलु, कासवगुत्ता सुणेयवा ॥ ५ ॥ इत्वाग
 नूमी उजा, सावति विणिय कोसलपुरं च ॥ कोसवी वाणारसि, चंदापुरि तहय काकंदि
 ॥ ६ ॥ चहिलपुर सिहपुरं, चंपा कपिह उज्जरयणपुर ॥ तिन्नेव गयपुरंमि, मिहिला तह

चैव राय गिहं ॥ ७ ॥ मिहिदा सोरियनथरिं, वाणारसी तह्य दौय कुंडपुरं ॥ उसन्नाईण
 जिण्णं, जम्भण न्मि जहा संखं ॥ ८ ॥ मरुदेवा विजया सेणा, सिद्धतां सुमंगला सुसी-
 माय ॥ पुहवी दखण रामा, नंदा विण्हु जया सामा ॥ ९ ॥ सुजसा सुवय अइसा, सिरि
 देवी तह्य पत्तावई जता ॥ पजभावइय वप्पा, सिवा वामा य तिसलाय ॥ १० ॥ नापीअ
 जीअसत्तुअ, जिअारी संवेइय ॥ मेहेथरे पइजेय, महसेण्येय खत्तिये ॥ ११ ॥ सुग्गीवे
 दहरहे विण्हु वसुपुब्ब खत्तीए ॥ कय वम्मा सीह सेणे, नाणुअ विस्स सेण्येय ॥ १२ ॥ सूर
 सुदंसणे कुंभ, सुमित्त विजए समुह विजएअ ॥ रायाय अस्ससेणे, सिद्ध जैवीय खत्तिए
 ॥ १३ ॥ सब्बवि गया सुखं, जाइजरामरण वंधण विमुक्का ॥ तिजयरा जगवंतो, सामय सुखं
 निरा वाहं ॥ १४ ॥ इति ॥ १५ ॥ अथ आवश्यक निर्युक्ति स्वाध्याय प्रारम्भः ॥ ॥ जौय
 तवो अणुच्चिन्नो, वीरवरेणं महाणु नावेणं ॥ जजमज कादिअए अइकमं कित्तइस्सामि
 ॥ १ ॥ नव किरचा उम्भासे, उकिरदो मासिए जवासीय ॥ वार सय मासियाइं, वावत्तरी
 अइ मासाइं ॥ २ ॥ इकं किरत्तम्भासं दोकिर तिमसिए जवासीय ॥ अट्टाइवाय डवे, दो-
 चैव दिवह्ममासाइ ॥ ३ ॥ नइं च महा नइं, पडिमं ततोअ सवज नइं ॥ दो चत्तारि दसेवय,
 दिवसे वासीय मणुवइ ॥ ४ ॥ धोरमजिगह जुअं, खमाणं उम्भासियं च कासीय ॥ पंच
 दिवसेहि जणं, अइहिउं वज नयरीए ॥ ५ ॥ दस दौय किर महप्पा, ताइ सुणि इण रा-
 इयं पडिमं ॥ अठम नत्तेण जुअं, इक्कि चरम राइअं ॥ ६ ॥ दोचैव वय ठठ सए,
 अजणा तीसे जवासिउं नयवं ॥ न कयाइ निच्च नत्तं, चजल नत्तं च सेअसी ॥ ७ ॥ वारस

वासे अहिष्, उठ नत्तं जहन्नयं आसी ॥ सखं च तवो कम्मं, अप्पाणय आसि वीरस्स
॥ ८ ॥ तिन्निसए दिवसाणं, अउणापन्ने अपारणा कावो ॥ उक्कणु अनिसिच्चाणं, ठिय
पन्निमाण सए बहु ए ॥ ९ ॥ पव्वच्चाए दिवसं, पढमं इवंतु पखिवित्ताण ॥ संकदियं मिज-
संते, जंल-वंतं निसामेइ ॥ १० ॥ वारस चैवय वासा, मासा उच्चैव अद्धमासोअ ॥ वीरव-
रस्स जगवउ, एसो उउमउ परिआउ ॥ ११ ॥ एवं तवोगुणरउ, अणुपुव्वेणं सुणि विहर-
माणो ॥ धोर परिसइच्चसु, अहिअ्यासित्ता मइववीरो ॥ १२ ॥ उप्पन्नंपि अणते, नउमि
अ उउमउिए नाणे ॥ राईए संपत्तो, महसेण वणमि उक्काणे ॥ १३ ॥ अमर नरराय म-
हिउं, पत्तो धम्म वर चक वड्डितं ॥ वीवंमी समोसरणे, पावाए मज्जिमाएउ ॥ १४ ॥ तउ
किर सोमिवद्युति, माइणो तस्स दिख कालमि ॥ पउरा जण जाणवया, समागया जन्न
वांमि ॥ १५ ॥ एणंते अविचित्ते, उत्तर पासंमि जन्न वाग्गस्स ॥ तो देव दाणविंदा, क-
रति महिमं जिणंदस्स ॥ १६ ॥ इति ॥ १६ ॥ अथ निरुक्ति स्वाध्याय प्रारंभः ॥ आ-
त्रिणि बोहिय नाणं, सुअ नाण चैव उहिनाणं च ॥ तइ मए पव्व वनाण, केवल नाण च
पंचमयं ॥ १ ॥ उग्गाह ईहावाउय, धारणा एव हुंति चत्तारि ॥ आत्रिणि बोहियनाण,
स्स नेय वहु समासेण ॥ २ ॥ अउाणं उग्गाहणंमि, उग्गाहो तइ वियावणे ईहा ॥ वव-
सायमि अवाउं, धरण पुण धारणा विंति ॥ ३ ॥ उग्गाहइकं समयं ईहावाया सुहुत्त म-वंतु ॥
कालम संख संखं च धारणा होइ नायवा ॥ ४ ॥ पुठं सुणेइ सद, स्वं पुण पासई अपु-
तंतु ॥ गंध रस च फासं, च वरु पुठं वियागारे ॥ ५ ॥ भासा समसेदीउ, सद जं सुणइ

मीसियं सुणइ ॥ वीसेढी युण सद्धं, सुणेइ नियमा पराधाए ॥ ६ ॥ निह्इइय काइएणं नि-
 सिरइ तद्द वाइएण जोएणं ॥ एगंतरं च निह्इइ, निसिरइ एणं तरंचेव ॥ ७ ॥ तिविहंमि
 सरीरमि, जीव पएसा हवंति जीवस्स ॥ जेहिज निएहइ गहणं, तो चासइ चासउ चासं
 ॥ ८ ॥ उराणिय वैजविय, आहारो निएहइ मुअइ चास ॥ सच्चं सच्चाभोसं, भोसं च अ-
 सच्च भोसंच ॥ ९ ॥ कइहि समएहिं लोणो, चासाए निरंतरं तु होइ कुडो ॥ लोणस्सय कइ
 चाणे, कइ चाणो होइ चासाए ॥ १० ॥ चउहिं समएहिं लोणो, चासाए निरंतरं तु होइ
 कुभो ॥ लोणस्सय चरमंते, चरमंतो होइ चासाए ॥ ११ ॥ इहा अ पोहवी मंसा, मग्गणाय
 गवेसणा ॥ सत्ता सइ मइ पत्ता, सबं आत्तिणि वोहियं ॥ १२ ॥ इति ॥ १२ ॥ अथ निरुक्ति
 स्वाध्याय प्रारभः ॥ वाराणसी नथरीए, अएणगारे धम्मवोस धम्म जसे ॥ मासस्सय पारएणए,
 गोल गंगाइ अणुकंपा ॥ १ ॥ करकंडु कदिंगेसु, पंचादसे अडभमुहो ॥ नभिराया विदे-
 हेसु, गंधारेसु अ नगई ॥ २ ॥ वसत्रेय इंदकेजं, वलए अवेअ पुक्किए वोहि ॥ करकंडु
 उम्मुहस्सय, नभिस्स गंधार रणोअ ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ सेयं सुजायं सुविप्रत्ति सिंगं, जोपो-
 सि आवसहं गुठमन्ने ॥ इहिं अक्कीहिं समुपेहि आण, कदिंगराया विसमिखु धम्मं
 ॥ ४ ॥ गुठं गणस्स मन्ने, ढक्किअ सदेण जस्स प्रजाति ॥ दिता विहरिअ वसहा, सुतिल
 सिंगा समुत्तावि ॥ ५ ॥ पौराणय गय दूपो, गवंत नयणो चवंत वसत्रतो ॥ सोंचेव इमो
 जसत्रो, पमुअ परिघट्टणं सहइ ॥ ६ ॥ जो इंदकेजं मुअवं किअंतं, दवं पडंतं पवित्रुप्प-
 माणं ॥ इहिं अक्कीहिं समुपेहि आणं, पंचादराया विसमिखु धम्मं ॥ ७ ॥ बहु आणं

सद्वयं सुखा, एगस्सय अस्सद्वयं ॥ वलयाण नमिरया, निखंतो मिहिव्वाहिवो ॥ ८ ॥ जो
 चूअरु खंतु मणात्तिरामं, समंजरी पद्धव पुष्कचित्तं ॥ इहि अइहि समुपेहि आणं, गं-
 धार राया विसमिखु धम्मं ॥ ९ ॥ नयरमि खिइ पइजे, चउरो विपरुप्परं समुद्धावं ॥ अ-
 कइं सुत्तलजाउं, जखो तत्तिइ चउवयणो ॥ १० ॥ जयारजं चरठंच, पुरं अंतै उर तहा ॥
 सवमेअ परिच्चज्ज, सचय किकरोसिमं ॥ ११ ॥ जया ते पेइए रज्जे, कया किच्च करा बहु ॥
 ते संकिच्च परिच्चज्ज, अज्ज किच्च करोत्तव ॥ १२ ॥ जया सब परिच्चज्जं, सुखाय धउसि
 त्रवं ॥ पर गर हसी कीस, अत्त निस्सेस कारए ॥ १३ ॥ मुख मग्ग पवनेसु, साहुसु व-
 नयारिसु ॥ अहियहं निवारतो, न दोसं वतुमर्हसि ॥ १४ ॥ रूसउं वा परोमा वा विसं वा
 परिअत्तउं ॥ ना सिव वा हिया त्रासा, सपरक गुण कारया ॥ १५ ॥ पुष्कोत्तराउ चवाणं,
 पवजा होई एग समएण ॥ पत्तेय बुद्ध केवदि, सिद्धि गया एग समएणं ॥ १६ ॥ इति ॥
 ॥ १७ ॥ अथ उत्तराध्ययन स्वाध्याय प्रारभ ॥ ॥ असंखयं जीविय मापमायए, जरो
 विणीयस्सहि नडिताण ॥ एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, कएह विहसा अजया गहंति
 ॥ १ ॥ जे पावकम्मोहिं धणु मणुस्सा, समाययति अमयं गहाय ॥ पहाय ते पासुप्पन्णिण,
 ने, वेराणु वश नरय उविति ॥ २ ॥ तेणे जहा संधि सुहे गहीए मन्नाएण ईहा ॥ वव-
 वकारी ॥ एव पिया पिच्च इहं च दोए, कडाण कम्माण न मुख्य ईहावाया मत्तं ॥ ३ ॥
 परस्स अठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ॥ कम्मस्स ते तस्स उवेद कादि, न वंथवा वंथ
 वयं उविति ॥ ४ ॥ वित्तेण ताणं न वने पमत्ते, इमंमि दोए अइया परवा ॥ विवप्यणउवे

अणंत मोहे, नेयाजअं दतु मदतुमेव ॥ ९ ॥ सुतेसु आवी पाडदुच
 पिडिय आसु पत्ते ॥ दोरा सुहुत्ता अवदं सरीरं, नारड पकी व चरे पमत्तो ॥ ६ ॥ च
 पयाई परिसंक्रमाणो, जं किंचि फासं इहमन्नमाणो ॥ वायंतरे जीविय वूहइवा, पवा प-
 रिजायम दाव थंसि ॥ ७ ॥ षंडं निरोहेण जवेइ सुकं, आसे जहा सिखिय वम्मधारी ॥
 पुवाइ वासाइ चरे पमत्तो, तम्हा सुणि खिप्प सुवेइ सुकं ॥ ८ ॥ सपुधमेवं न दाहिजा पवा,
 एसोवमसासय वाइयाणं ॥ वीसीयई सीट्टितियाज अम्मी, कादारिणीए सरिरस्सनेए
 ॥ ९ ॥ खिप्पं न सक्केइ विवेगमेइ, तम्हा ससुजाय पदाय कामे ॥ समिच्च दोगं समय
 महेसि, अप्पाण रकी विचरे पमत्तो ॥ १० ॥ सुहू सुहू मोह गुणे जयंतं, अणेरुत्वा स-
 मणं चरंतं ॥ फासा फुसंति असमंजसं च, नतेसु त्रिखु मणसा पजरसे ॥ ११ ॥ मंदाय
 फासा बहुवोहणिवा, तहप्पगारे सुमणं न कुत्ता ॥ रक्किच्च कोहं विण इयमाणं, मायं न
 सेविच्च चइच्च दोहं ॥ १२ ॥ जे संवया तुव परप्पवाई, ते पिच्च दोसाणु गया परञ्जा ॥
 एए अहं सुत्ति ज्जांठमाणो, करेणुणे जाव सरीरजत तिथेमि ॥ १३ ॥ इति उत्तराध्ययन स्वा-
 ध्याय संपूर्ण ॥ १९ ॥ इति प्रतिक्रमणमां केवाजोग स्वाध्याय संप्रह समाप्त ॥ अथ नव
 स्मरण स्तोत्र प्रारंभ ॥ तत्र प्रथम परमेष्ठि नमस्कार स्तोत्र रूप ' वृहद् ' नमस्कार
 प्रारंभः ॥ परमेष्ठि नमस्कारं, सार नव पदात्मकम् ॥ आत्मरक्षाकरं वज्र, पंजरान्नं स्मरा-
 न्यहम् ॥ १ ॥ ॐ एमो अरिहंताण, शिरस्क शिरसि स्थितम् ॥ ॐ एमो सिद्धाणं, सुखे
 सुख पटं वरम् ॥ २ ॥ ॐ एमो आयरिञ्चाणं, अंगरक्षातिशायिनी ॥ ॐ एमो जवजा-

याण, आयुध हस्तयोर्दंडं ॥ ३ ॥ जं णमो दोए सध साहूणं, मोचके पादयोः शुभे ॥ एसो
 पंचणसुकारे, शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥ सधपावप्यणासणो, वज्रो वज्रमयी वहिः ॥
 मंगलाणं च सधेसिं, खादिरंगारखातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतं च पद द्वेयं, पदमं शोड मंग-
 लम् ॥ वज्रो परि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रनावा रक्षेयं, कुडोपज्व ना-
 शिनी ॥ परमेष्ठि पदोद्भूता, कश्चिता पूर्व सुरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः
 सदा ॥ तस्य न स्याद्भयं व्याधि, राधि श्रापि कदाचन ॥ ८ ॥ इति बृहन्नमस्कारः प्रथम
 स्मरणम् ॥ १ ॥ श्री अजित शांतिस्त्वनामक द्वितीय स्मरणस्य प्रारंभ ॥ ॥ अजिञ्चं
 जिञ्च सधत्रयं, संति च पसंत सधगयपावं ॥ जय गुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे प-
 णिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल नावे, तेदं विजल तव निम्मल सदावे ॥ निरुवम
 महप्पनावे, ओसामि सुदित सन्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सधङ्खलपसंतीण, सधपाप प्पसं-
 तिण ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिय संतिणं ॥ ३ ॥ सिदोगो ॥ अजिञ्च जिण सु-
 हप्पवतणं, तव गुरिसुत्तम नाम कितणं ॥ तह्य धिद मइप्पवतणं, तवय जिणुत्तम संति
 कितणं ॥ ४ ॥ मागहिया ॥ किरिञ्चा विहि संचिञ्च कम्म किदेस विसुक्करं, अजिञ्चं
 निचिञ्चं च गुणेहिं महासुणि सिद्धिगयं ॥ अजिञ्चस य संति महा सुणिणोवि अंसंति-
 कर, सययं मम निबुद कारण यं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आदिगणयं ॥ गुरिसा जइ डल वा-
 रणं, जइ अ विमगह सुक कारणं ॥ अजिञ्चं संति च नावलं, अन्नयकरे सरणं पवज्जइ
 ॥ ६ ॥ मागहिया ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिय सुवरय जर मरणं, सुर असुर गरुद शु-

यग वद् पयय पणि वद्दञ्च ॥ अजिञ्च महमविञ्च सुनय नय निजणम त्रयकरं, सरण
 सुव सरिञ्च जुवि दिविज महिञ्चं सयय सुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम सु-
 त्तम निसम सत्तधरं, अज्जव महव खंति विमुत्ति समाहि निर्दि ॥ संतिकरं पणमामि द-
 युत्तम तिजयरं, संति सुणि मम संति समाहिवरं दिसज ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावहि पुब
 पजिवं च वर द्दहि मज्जय पसह विजिन्न संधियं ॥ थिर सरिह वहं मयगव दीदायमाण
 वर गंधदहि पजाण पजियं संथ वारिदं ॥ द्दहि ह्व वाहुं धंत कण्ण रुअण तिरु व्हय
 पिंजरं, पवर लक्कणो वचिय सोम चारुखवं, सुइ सुह मण्णारिणम परम रमणिव वर देव
 डंडहि निनाय महुरयर सुह गिरं ॥ ९ ॥ वेहुत्तं ॥ अजिञ्चं जिआरिणं, जिअसव्वत्रयं
 त्रवो हरिजं ॥ पणमामि अह पञ्चत्तं, पावं पसमेत्तमे त्रवयं ॥ १० ॥ रासा दु-
 कुरुजण वय द्दहिणज्जर, नरीसरो पदमं तत्तं मद्दाचकवट्टि त्पोए महप्प त्रावा ॥ जो वा-
 वत्तरि पुरयर सहस्स वर नगर निणम जणवय वर्दं, वत्तीसा राय वर सहसाणु थायमणो ॥
 चवत्तस वर रयण नव मद्दा निहि चजसट्ठि सहस्स पवर जुवर्दंण सुंदरवर्दं, चुवसी ह्य
 गय रद्द सय सहस्स सामी, जण वर्दं गाम कोडि सामी आसिज्जो चारहम्मि त्रयवं ॥ ११ ॥
 वेहुत्तं ॥ तं संति संतिकरं, संतिणं सव्वत्रया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संति वेहेत्तं मे ॥ १२ ॥
 रासा नंदियं ॥ शुम्मम ॥ इक्कण विदेह नरीसर नर वसद्दा सुणि वसद्दा ॥ नव सारय ससि
 सकलाणण, विणय त्ता विहुअरया ॥ अजिजत्तम तेअ गुणेहिं, महसुणि अमि अ-
 वत्ता विजवकुत्ता ॥ पणमामि ते त्रव त्रय मूरण, जग सरणाम म सरण ॥ १३ ॥ चित्त-

देहा ॥ देव दाणविंद चंद सूर वंद हल तुल जिल परम ॥ लल रूव धंत रूप्य पट्ट सेय
 सुह निरु धवल ॥ दंत पंति संति सति किति सुति, जुति गुति पवर ॥ दित तेअ वंद
 धेअ सब दोअ नाविअ प्पनावणेअ प्पनावणेअ पइसमे समादिं ॥ १४ ॥ नारायणं ॥
 विमल ससि केलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर काराइरेअतेअं ॥ तिअसवइ गुणा इरेअ
 रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सते अ सया अजिअं, सारी
 रेअ वदे अजिअ ॥ तव संजमे अ अजिअ, एस अइं शुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥
 जुअग परिंजिअं ॥ सोमगुणेहि पावइ न तं, नव सरय ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ
 न तं, नव सरय रवी ॥ रूप गुणेहिं पावइ नतं, तिअस गणवई ॥ सारगुणेहिं पावइ
 न तं धरणिधर वई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तिअवर पवत्तयं तम रय रहियं धीर जणधुं
 अजिअं चुअकलिकजुसं ॥ संति सुहप्पवत्तय तिनरण पयणं संति महं महासुणिं
 सरण सुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअय ॥ विणणं एय सिरिरइ अंजलि रिसिगण संशुअ अि-
 मिअं ॥ विवुहाहिव धणवइ नरवइ शुय महिअजिअ बहुसो अइरुगय सरय दिवा-
 यर समहि असप्पनं तवसा ॥ गयणं गण वियरण समुइय चारण वंदिअं सिरसा
 ॥ १९ ॥ किसलयमाता ॥ असुर गरुड परिवंदिअं, किंनरो रगण मंसिअं ॥ देवकोडि
 सय संशुअ समण संघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नय अणइं अरयं अजियं अ-
 जिअं पयणं पणमे ॥ २१ ॥ विहु विवसिअं ॥ आगया वर विमाण, दिव्व कणग रइ तु-
 रय पइकर सपदिं डलिअं ॥ ससंनमो अरण, सुत्तिअ जुदिअ चव कुंडल गय तिरीर

सोढंत मज्जिमात्वा ॥ ११ ॥ वेह्वत् ॥ जं सुर संघा सासुर सघा, वेरविजता त्रिति सु-
 जुता ॥ आयर नूसिञ्च संत्रम पिंडिञ्च, सुतु सुविम्हिञ्च सब वदोघा ॥ उत्तम कंचण र-
 यण परुविञ्च, त्रासुर नूसण त्रासुरि अंग्गा ॥ गाय समोणय त्रितिवसागय, पंजलि पे-
 सिञ्च सीस पणामा ॥ १३ ॥ रयणमात्वा ॥ वंदिजण थोउण तो जिणं, तिगुण मेव य
 पुणो पयाहिणं ॥ पणमिजण य जिणं सुरा सुरा, पमुइञ्चा सत्रवणाइं तो गया ॥ १४ ॥
 खित्तियं ॥ तं महासुणि जुहंपि पंजवी, रागं दोस नय मोह वज्जिअं ॥ देव दाणव नरिद
 वंदिअं, संति सुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥ खित्तियं ॥ अंबरंतर विअरणिआहिं, व-
 जिञ्च हंस बहु गामिणि आहिं ॥ पीण सोणि थण सादिणि आहिं, सकल कमल दल
 दोअणि आहिं ॥ १६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थण नर विणमिञ्च गायल आहिं ॥ मणि
 कंचण पसिद्विद मेहव ज सोहिञ्च सोणित्ताहिं ॥ वर खिखिणि नेजर सतिदवय वदवय वि-
 नूसणि आहिं रइ कर चजर मणोहर सुंदर दंसणि आहिं ॥ १७ ॥ चित्तकरा ॥ देव
 सुंदरीहिं पाय वंदि आहिं वंदिया य जस्स ते सुविक्रमा कमा अप्पणो निनालएहिं पंडणो
 ङ्गणपगारएहिं केहि केहिदि वि अवंगतिलय पत्तवेह नाम एहिं चिद्ध एहिं संगयं गयाहिं
 त्रिति संनिवित वंदणा गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ १८ ॥ नारायत् ॥ तमहं
 जिणचदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुय सब किवेसं, पयत् पणमामि ॥ १९ ॥ नदिअयं ॥
 थुअ वंदि अयस्सा रिसिगाण देव गणेहिं, तो देव बहुहिं पयत् पणमिअस्सा ॥ जस्स
 जगुत्तम सासण यस्सा, त्रितिवसागय पिडि अयाहिं देव वरहरसा बहुयाहिं सुर वर रइ

गुणं पन्थि आहि ॥ ३० ॥ आसुरयं ॥ वंस सह तंति ताव मेति ए तिजकरानिराम स-
 दमीस ए कएअ सुह समणणे अ सुध सजा गीअ पाय जाव वंटी आहीं ॥ वलय मे-
 दवा कदाव नेजरात्रिराम सह मीस ए कएअ देव नडि आहिं हाव जाव विज्जमप्पगार
 एहिं ॥ नच्चिऊण अंगदार एहि वदिआ य जरस ते सुविक्रमा कमा तयं तिलोय सब
 सत सति कारयं ॥ पसंत सब पाव दोस मेस हं नमामि संति सुत्तमं जिण ॥ ३१ ॥ ना-
 रायजं ॥ वज चाभर पडाग जव जव मंडिआ ऊय वर मगर तुरय सिरिवह सुवंडणा ॥
 दीव समुद मंदर दिसा गय सौहिआ सच्चिअ वसह सीह रह चक वरंक्रिया ॥ पाठांतर ॥
 सिरिवह सुवंडणा ॥ ३२ ॥ वदिययं ॥ सहाव वता समप्प इवा, अंदोस इवा गुणेहि
 जिवा ॥ पसाय सिजा तवेण पुवा, सिरीहि इवा रिसीहिं जुवा ॥ ३३ ॥ वाण चासिया ॥
 ते तवेण थुय सब पावया, सब दोअ हिअ मूद पावया ॥ संथुया अजिअ संति पायया,
 हुं तुमे सिव सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एव तव वद विजवं, थुअं मए
 अजिअ संति जिण जुअवं ॥ वकगय कम्म रयमवं, गइगयं सासयं विजवं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥
 तं वहु गुण पसाय, सुक सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेज मे विसायं, कुणउ अपरिसा
 वि अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदि पावेज अ नंदिं सेण मत्तिनदिं ॥ प-
 रिसावि य सुह नंदिं, मम य दिसज संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पखिअ चाजम्मासे, संव-
 त्तरि ए अवस्स जणि अथो ॥ सो अथो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥
 जो पडइ जो अ निसुणइ, उज्जवं कावापि अजिअ संति थयं ॥ नहु हुंति तस्स रोगा,

पुष्टुपद्मा विना संति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥ वगणय कविकवुसाणं, वगणय निरुंत राग दी-
 साणं ॥ वगणय पुणञ्जाणं, नमोतु देवाहिदेवाणं ॥ ४० ॥ सबं पसमद पाव, पुणं व-
 ह्द नमंसमाणस्स ॥ संपुबं चंदं वयणस्स कित्णं अजिञ्च संतिसस ॥ ४१ ॥ जद
 इव्ह परम पयं, अहवा कितिं सुविहडं जयणे ॥ ता तिअलोपुश्चणे, जिण वयणे आ-
 यरं कुणह ॥ ४२ ॥ सर्व मंगल मागटयं, सर्व कट्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां,
 जेनं जयति शासनम् ॥ ४३ ॥ उपसर्गाःइय यांति, विद्यते विभवद्वयः ॥ मनः प्रसन्न
 तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता जवंतु ब्रूत-
 गणाः ॥ दोषा प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी जवतु लोकः ॥ ४५ ॥ स्मरण यस्य सत्वानां-
 तीव्रतापोपशांतये ॥ उक्कट्टणुणरूपाय, तस्मै श्री शांतये नमः ॥ ४६ ॥ इति श्री नंदि-
 षेण सूरी विरचित श्री अजिनशांति स्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ ॥ अथ श्री पादविप्त
 सूरि विरचित श्री वीर स्तोत्र तृतीय स्मरण प्रारंभः ॥ ॥ जयइ नव नदिण कुवलय,
 विञ्चसिय सय वत्त पत्तल दववो ॥ वीरो गयंदं मयगल, सुवाविञ्च गइ विकम्मो जयवं ॥
 ॥ १ ॥ अजावि वहइ सुतिहं, अखंडियं जस्स जरहवासम्मि ॥ सो वध्माण सामी, ति-
 अलुक दिवायरो जयज ॥ २ ॥ गाहा जुअवेण जिणं, मयमोह विवज्जिञ्चं जिञ्चक-
 सायं ॥ शोसामि तिसंजगं, तं निस्संगं, महावीरं ॥ ३ ॥ सुकुमाल धीर सोमा, रत्त कि-
 सन्न पंपुरा सिर निकेअ ॥ सीयं कुस गह नीरु, जल अल नह मंडणा तिन्नी ॥ ४ ॥ न-
 चयंति वीर दीवां, दाहं जे सुर हि मत्तपण्डिना ॥ पंकय गयंदं चंदा, लोअण चक्कम्मि

गुण पद्मि्य आहिं ॥ ३० ॥ नासुरयं ॥ वंस सद तति ताव मेतिए तिजकरानिराम स-
 द्मीसए कएअ सुइ समणाणे अ सुइ सज्ज गीअ पाय जाव वंटी आदीं ॥ वलय मे-
 हला कलाव नेजरात्रिराम सद मीसए कएअ देव नडि आहिं हाव नाव विअमएणार
 एहिं ॥ नच्चिऊण अंगहार एहि वदिआ य जरस ते सुविक्रमा कमा तयं तिलोय सब
 सत्त सति कारयं ॥ पसंत सब पाव दोस मेस हं नमामि संति सुत्तमं जिण ॥ ३१ ॥ ना-
 रायउं ॥ ठज चागर पढाग जव जव मंडिआ ऊय वर मगर तुरय सिरिवड सुवंडणा ॥
 दीव समुइ मंदर दिसा गय सोहिआ सच्चिअ वसइ सीहरइ चक्क वरंक्रिया ॥ पातातर ॥
 सिरिवड सुवंडणा ॥ ३२ ॥ ललियय ॥ सहव लता समएप इता, अंदोस डता गुणेहिं
 जिता ॥ पसाय सिता तवेण पुता, सिरीहिं इता रिसीहिं जुता ॥ ३३ ॥ बाण वासिया ॥
 ते तवेण धुय सब पावया, सब लोअ हिअ मूल पावया ॥ संधुया अजिअ संति पावया,
 हुं तुमे सिव सुहाण दावया ॥ ३४ ॥ अंपरांतिका ॥ एव तव वद विजदं, शुअं मए
 अजिअ संति जिण जुअदं ॥ ववगय कम्म रयमदं, गइगयं सासयं विजदा ॥ ३५ ॥ गाहा ॥
 तं बहु गुण एसाय, सुक्क सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेज मे विसाय, कुणउ अंपरिसा
 वि अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदि पावेउ अ नंदि सेण मज्जिनदिं ॥ प-
 रिसावि य सुइ नंदिं, मम य दिसज संजमे नंदि ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पखिअ चाउम्मासे, संब-
 डरिए अवरस ञणि अबो ॥ सो अबो संबेदि, उवसग्ग निवारणो एस्सो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥
 जो पढइ जो अ निसुणइ, उचउं कावपि अजिअ संति थय ॥ नहुं हुंति तस्स रोगा,

पुष्टुप्यद्वा विना संति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥ वगणय कलिकलुसाणं, वगणय निश्चंत राग दी-
 साणं ॥ वगणय पुणञ्चवाणं, नमोहु देवाहिदेवाणं ॥ ४० ॥ सर्वं पसमइ पावं, पुणं व-
 ह्दइ नमंसमाणरस ॥ संपुन्न चंद वयणरस कित्ताणं अजिअ संतिरस ॥ ४१ ॥ जइ
 इवइ परम पयं, अहवा कितिं सुविज्जइ प्रवणे ॥ ता तिअदोणुधरणे, जिण वयणे आ-
 परं कुणइ ॥ ४२ ॥ सर्वं मंगल मांगलयं, सर्वं कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्वं धर्माणां,
 जैनं जयति शासनम् ॥ ४३ ॥ उपसर्गाः क्षय यांति, विद्यते विप्रवक्ष्यः ॥ मनः प्रसन्न
 तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता प्रवंतु नूत-
 नाणाः ॥ दोषा प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी प्रवतु लोकः ॥ ४५ ॥ स्मरण यस्य सत्त्वानां-
 तीव्रतापोपशांतये ॥ उक्कट्टुणुरूपाय, तस्मै श्री शांतये नमः ॥ ४६ ॥ इति श्री नंदि-
 षेण सूरी विरचित श्री अजिनशांति स्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ ॥ अथ श्री पादलिस
 सूरि विरचित श्री वीर स्तोत्र तृतीय स्मरण प्रारंभः ॥ ॥ जयइ नव नदिण कुवलय,
 विअसिय सय वत्त पत्तव दवल्लो ॥ वीरो गयंद मयगल, सुलल्लिअ गइ विकम्मो प्रयवं ॥
 ॥ १ ॥ अज्जवि वदइ सुतिवं, अखंडियं जस्स अरहवासमि ॥ सो वध्माण सामी, ति-
 अदुक्क दिवापरो जयज ॥ २ ॥ गाहा जुअद्वेण जिणं, मयमोह विवज्जिअं जिअक-
 सायं ॥ थोसासि तिसंजागं, तं निस्संगं, महावीरं ॥ ३ ॥ सुकुमाद थीर सोमा, रत्त कि-
 सन्न पंफुा सिर निकेआ ॥ सीयं कुस गइ त्रीरु, जल थल नइ मंडणा तिन्नी ॥ ४ ॥ न-
 चयंति वीर वीलां, द्दणं जे सुर हि मत्तपण्डुआ ॥ पंकय गयंद चंदा, लोअण चकम्मि

अमुहाणं ॥ ५ ॥ एवं वीर जिणंदो, अहरणा संघ सशुभं त्रयवं ॥ पावित यमय महिं,
 दिसज खयं सध डरिआणं ॥ ६ ॥ इति पादविस सूरि विरचित वीरस्तव तृतीय स्म-
 रणं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ श्री नज्वाहु स्वामी विरचितं उपसर्गं हर स्तोत्र चतुर्थ
 स्मरण प्रारंभः ॥ जवसगहर पापं, पासं वंदासि कम्मघण सुक ॥ विसहर विसनिवास,
 मंगल कल्लाण अवासं ॥ १ ॥ विसहर फुंदिगमंतं, कंठे धारइ जो सया मणुज ॥ तरस
 गह रोग मारी, डउजरा जंति जवसामं ॥ २ ॥ चिउउ डरे मत्तो, तुख पणामोवि बहु-
 फवो दोई ॥ नर तिरिसु वि जीवा, पावति न डःख दोहग. ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लरु,
 चिंतामणि कप्पपाय वज्जहिर ॥ पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ
 संशुजं महायस, ततिअर निअरेण हि अरण ॥ ता देव दिज्ज वोहिं, त्रवे त्रवे पास जिण-
 चंद ॥ ५ ॥ इति श्री नज्वाहु स्वामी विरचित उपसर्गं हर नामक स्तवनं चतुर्थ स्मरणं
 संपूर्णं ॥ ॥ अथ नमिऊण नामक पंचमं स्मरणं लिख्यते ॥ ॥ नमिऊण पणय सु-
 रणा, बडामणि किरण रंजिअं सुणियो ॥ चदण जुअद महात्रय पणासणं संधवं वुवं
 ॥ १ ॥ सन्ध कर चरण नहं सुह, निबुड नासा विवव दायदा ॥ कुउ महारेणानव,
 फुंदिग निहड सधंगा ॥ २ ॥ ते तुह चदणाराहण सलिलंजलि सेय बुद्धि उहादा ॥ व-
 ण दवदहा गिरिपा, यव धपता पुणोवि दाहिं ॥ ३ ॥ डवाय शुन्धिय जलनिहि, उअरु
 कल्लोव त्रीसणारावे ॥ संत्रंत त्रय विसुद, निवामय सुक वावारे ॥ ४ ॥ अविददिअ
 जाणवता, खणेण पावंति इडिअं कुवं ॥ पास जिण चदण जुअदं, निअंविअ जे न-

मंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुश्च वणद्वय, जालावलि मिलिय सयल उम गदणे ॥ उभ्रंत
 मुख मयवहु, श्रीसणरव श्रीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग गुरुणो कमजुअव, निष्ठाविअ स-
 यव तिहुअणा नोदं ॥ जे संनरंति मणुअ, न कुणइ जलणो नय तेसिं ॥७॥ विलसंत
 नोण श्रीसण, फुरि आरुण नयण तरल जीहावं ॥ जगनुअंगं नवजल, य सजहं श्रीसणा-
 यारं ॥८॥ मन्त्रंति कीडसरिसं, डर परिहूद विसम विसवेगा ॥ तुह नामखर फुडसि, श्मंत गुरुआ
 नरा दोए ॥ ९ ॥ अश्वीसु त्रिद्व तकर, मुदिंद सहुव सहश्रीमासु ॥ नय विहुर बुन्न
 कायर, उद्धरी अ पद्विअ सजासु ॥ १० ॥ अविदुत्त विदवसारा, तुह नाह पणाम मत-
 वावारा ॥ ववगय विव्या सिग्धं, पत्ता हियइजियं ताणं ॥ ११ ॥ पज्जलि अणानल नयणं,
 दूर विचारिय सुह महाकायं ॥ नह कुतिसधायविअतिअ, गइंद कुंनव ताओअं
 ॥ १२ ॥ पणयससं नमपजिव, नहमणिमाणिक पडिअपनिमस्स ॥ तुह वयण पहर-
 णधरा, सिहं कुर्धपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि धवल दंत सुसवं, दिहकरुद्धाव बुद्धिउ-
 ज्जावं ॥ महु पिगनयण जुअवं, ससलिल नव जल हरा रावं ॥ १४ ॥ श्रीमं महा गइंदं,
 अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुह्म चवण जुअवं, मुणिवइ तुंगं समद्वीणा ॥ १५ ॥
 समसम्मि तिरकलणा, त्रिधाय पविशुअयक वंधे ॥ कंत विणिमिन्न करिकद, हसुक सिक्कार
 पउरंमि ॥ १६ ॥ नीजिय डप्पुअर रिज, नरिंद निवहा नडा जसं धवल ॥ पावंति पाव
 पसमिण, पासजिण तुह प्पनावण ॥ १७ ॥ रोग जल जदण विसहर, चोरारि मइंद ग-
 यरण नयाइं ॥ पास जिण नाम संकि, तणेण पसमंति सवाइ ॥ १८ ॥ एवं महा नय-

अमुदाणं ॥ ५ ॥ एवं वीर जिणंदी, अजरगण संघ सशुभं त्रयवं ॥ पातित यमयमहिं, द्विसज खयं सब डुरिआणं ॥ ६ ॥ इति पादलिस सूरि विरचित वीरत्तव रत्ततीय स्मरण संपूर्णम् ॥ ॥ अथ श्री त्रयवाहु स्वामी विरचित उपसर्गं हर स्तोत्र चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥ उवसगहर पापं, पासं वंदामि कम्मघण सुकं ॥ विसहर विसनिवास, मंगज कड्डाण अवासं ॥ १ ॥ विसहर फुदिगमंतं, कंठे धारंइ जो सया मणुजं ॥ तस्स गह रोग मारी, डवजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चित्तज डुरे मत्तो, तुब्ब पणामोवि बहु- फटो दोर्दं ॥ नर तिरिण्णु वि जीवा, पावति न डःख दोहगं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते वरुं,

— जिण ॥ पावंति अविघ्नेणं, जीवा अयरामरं जाणं ॥ ४ ॥ डअ

हरं, पास जिणिदस्स संश्ववसु आरं ॥ त्रविच जणाणदयरं, कड्डाण परं पर निदाणं ॥ ११ ॥ राय त्रय जक रत्तस, कुसुमिण डस्सजण रिक्क पीडासु ॥ सजासु दोसु पंथं, उ- वसगो तहय रयणीसु ॥ १२ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, नाण कइणो यमाणतुगत्तस ॥ पासो पावं पसमेज, सयव जुवण विअ चदणो ॥ १३ ॥ उवसगत्तं कम्मवा, सुरम्मि जणाल जो न संचलितं ॥ सुर नर कित्तव जुवइ, हिं संशुजं जयज पासजिणो ॥ १४ ॥ एअस्स मञ्जयारे, अठारस अकरेहिं जो मत्तो ॥ जो जाणइ सो जायइ, पासं परमसरं पयडं ॥ १५ ॥ तं नमह पास नाहं, धरणिंद णमसिय त्रयविणाडं ॥ जस्सप्पत्रावेण सया, नासंति उवहवा सब्बे ॥ १६ ॥

मंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुश्च वणद्वय, जात्वावति मिलिय सयत्न इम गदणे ॥ डञ्जत
सुद्ध मयवदु, श्रीसणरय श्रीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग गुरुणे कमजुञ्जत्वं, निष्ठाविञ्च स-
यत्न तित्तुञ्चणा नोहं ॥ जे संनरंति मणुञ्चा, न कुणइ जत्तणे त्रयं तेसिं ॥ ७ ॥ विवसंत
त्रोग श्रीसण, फुरि आरुण नयण तरत्त जीहात्वं ॥ जगत्तुञ्जं नवजत्त, य सत्तदं श्रीसणा-
यारं ॥ ८ ॥ मन्त्रंति कीडसरिसं, इर परिहृद्विसम विसवेगा ॥ तुह नामखर फुडसि, श्रमंत गुरुञ्चा
नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु त्रिहत्त तत्कर, सुदिंद सद्दत्त सद्द्रीमासु ॥ त्रय विहुर बुन्न
कायर, उद्धृसी अ पट्टिञ्च सत्तासु ॥ १० ॥ अविद्युत्त-विहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त-
वावारा ॥ ववगय विन्धा सिन्धं, पत्ता हियइत्तियं ताणं ॥ ११ ॥ पत्तत्ति अज्ञानत्त नयणं,
दूर विचारिय सुदं महाकायं ॥ नह कुत्तिसघायविञ्चत्तिञ्च, गहंदं कुंनत्त लानोञ्चं
॥ १२ ॥ पणयससं त्रमपत्तिव, नहमणिमाणिक पट्टिञ्चपत्तिमत्त ॥ तुह वयण पत्तर-
णथरा, सिहं कुर्क्षपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि थवत्त दंत सुसत्तं, दिहकरुत्तत्तत्त बुद्धिउ-
त्ताहं ॥ महु पिगतयण जुञ्जत्तं, ससत्तित्त नव जत्त हरा रावं ॥ १४ ॥ श्रीमं महा गहंदं,
अञ्चासत्तं पि ते नवि गणंति ॥ जे तुहत्त चत्तण जुञ्जत्तं, सुणिवत्त तुंगं समत्तत्तीणा ॥ १५ ॥
समरामि तिरक्खग्गा, त्रिघाय पविशुशुचक वंधे ॥ कुंत विणिमिन्न करिकत्त, हसुक सिक्कार
पत्तरमि ॥ १६ ॥ नीत्तिय उप्पुश्चर रिड, नरिद निवत्ता त्ता जसं थवत्तं ॥ पावंति पाव
पसमिण, पासत्तिण तुह पत्तत्तवेण ॥ १७ ॥ रोग जत्त जत्तण विसत्तर, चोरारि मद्दं ग-
यरण त्रयाइं ॥ पासत्तिण नाम संकि, तत्तणेण पत्तमंति सत्ताइ ॥ १८ ॥ एवं महा त्रय-

हरं, पास जिणिदस्स संश्ववसु अपारं ॥ त्रविद्य जणाणंदयरं, कद्धाण पर पर निहाण
॥१८॥ राय त्रय जक्क रत्तस, कुसुमिण डस्सजण रिक्क पीडासु ॥ सजासु दोसु पथे, उ-
वसणे तहय रयणीसु ॥१९॥ जो पढद जो अ निसुणद, नाणं कइणे यमाणंतुगरस ॥
पासो पारं पसमेज, सयव जुवण च्चिअ चवणो ॥ ११ ॥ जवसजते कमठा, सुरम्मि
जाणाज जो न संचविठं ॥ सुर नर किन्नर जुवद, हिं संशुठं जयज पासजिणो ॥ १२ ॥
एअस्स मञ्जयारे, अठारस अक्करोहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो जायद, पासं परमेसरं
पयडं ॥१३॥ तं नमह पास नाहं, धरणिंद णमंसियं त्रयविणडं ॥ जस्सप्पत्रावेण सया,
नासंति जवहवा सधे ॥ १४ ॥ जं समरंताण मणे, न दोइ वाही न तं महाडक्कं ॥ नाम-
पि य मंत समं, नाह थुणामि त्रतीए ॥ १५ ॥ इति श्रीमानतंग सूरी विरचितं त्र-
यहर स्तोत्रं पंचमं स्मरण समाप्तं ॥ अथ श्री जीरिका पद्धी पार्थनाथ स्तोत्रं षट्
स्मरणं प्रारभ्यते ॥ ॥ ॐ नमो देवदेवाय, नित्यं त्रगवतेऽर्हते ॥ श्रीमते पार्थनाथाय,
सर्वकल्याणकारिणे ॥ १ ॥ ह्रीं रूपाय धरणीं, पद्मावत्यर्चितांघ्रये ॥ शुद्धातिशय को-
टिनि, सहिताय महात्मने ॥ २ ॥ अइ मइ पुरोडष्ट, विघडे वणंपंक्तिवत् ॥ उष्टाव भेत
पिशाचादीन् प्रणाश्रयति तेऽत्रिधा ॥ ३ ॥ स्तंत्रय स्तंत्रय स्वाहा, शतकोटिनमस्कृत ॥
अधिमथ् कर्मणांदुरा, दापतंतीर्विडंबनाः ॥४॥ नात्रिदेशोन्नवबावे, ब्रह्मरंध्र प्रतिष्ठिते ॥ ध्यात
मष्टद्वे पद्मे, तत्त्वमेतत्फलप्रदम् ॥ ५ ॥ तत्वमत्र चतुर्वर्णी, चतुर्वर्णं विमिश्रिता ॥ पंच
वर्णं क्रमध्याता, सर्वकार्यकरी भवेत् ॥ ६ ॥ क्षिप ॐ स्वाहेति वर्णं, कृत भ्रंचांग रक्षणः ॥

योऽन्निध्यायेद्विदंतत्त्वं, वक्ष्यास्तस्याखिलाश्रियः ॥ ७ ॥ पुरुषं बाधते वाढं, तावद्धेज्यापरपराः ॥
 यावन्नमंत्रराजोऽयं, हृदि जागर्ति मूर्तिमान् ॥ ८ ॥ व्याधिबंधवधव्यादा, नद्यांश्च संत्रयं
 त्रयम् ॥ कथं प्रयाति श्रीपार्श्वनामस्मरणमात्रतः ॥ ९ ॥ यथा नादमयो योगी, तथा
 चेतनमयोत्रवेत् ॥ तदा न डुष्करं किंचित्, कथ्यतेऽनुत्रयादिदम् ॥ १० ॥ इति श्रीजीरिका-
 पद्धी, स्वामी पार्श्वजितः स्तुतः ॥ श्रीमेरुतुंगसूरेः स्तात् सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ ११ ॥
 जीरा पद्धी प्रभुं पार्श्वं, पार्श्वं पक्षेण सेवितम् ॥ अर्चितं धरणींङ्गण, पद्मावत्याप्रपूजितम्
 ॥ १२ ॥ सर्व मंत्रमयं सर्वं, कार्यसिद्धि करं परम् ॥ ध्यायामि हृदयांजोजे, नृत्तप्रेत प्रणा-
 शकम् ॥ १३ ॥ श्री मेरुतुंग सूरीं, श्रीमत्पार्श्वं प्रजोः पुरः ॥ ध्यानस्थितं हृदि ध्यायन्,
 सर्वं सिद्धिवशे भुवम् ॥ १४ ॥ इति श्री मेरुतुंग सूरि विरचितं प्रभुश्री जीरिकापद्धी
 पार्श्वनाथस्तवनं षष्ठं स्मरणं समाप्त ॥ ए वतुं स्मरण कथा पवी “जैकिंचि नाम तिष्ठं”,
 ए गाथा कहीने पवी “नसुहुणं” नामक सप्तम स्मरण कहेतुं. ते आ पुरतकमां अणाल
 लखाइ गएल वे, माटे अहि लख्युं नथो ॥ ॥ अथ श्री वीरगणिकृत लघु अजित श्रांति
 स्तवनं अष्टमं स्मरणं प्रारभ्यते ॥ गण्ड अवायार सोहम्म सुर सामीढं, जणणि जेय संशु-
 णइ नत्तिन्नर जाविढं ॥ ति जिण इक्काग कुरुवंस नूसण धरा, अजिय संतीय नंदंतु
 मंगलकरा ॥ १ ॥ जम्म कालम्मि जे असुर सुर चासुरे, न्हविय वतीसदं देहि सुरगिरि
 सिरे ॥ खयर नर अमर आणंद वक्षरया, जयज जगि अजिय संती य न्हारया ॥ २ ॥
 खविय रिजवग्न वररङ्गसुह माण्डं, पवर दाणेण जगसयल संमाण्डं ॥ जेहि मुखं करी

दिक्र कर्त्वी कथा, ताहि शुणि अजिय सतीय पय पंकया ॥ ३ ॥ वीर तव चरण उवसगु
 अहियासिउं, डङ्गाए पाइ कम्मइं निन्नासिउं ॥ जेहिनाणं समुत्पाडियं विमलयं, डइय
 सोलसम जिणति जणमह सुविणय ॥ ४ ॥ पवर देसणय तिहुंयणवि पन्धियोहियं, त्रवो-
 वग्गाहि कम्मइं मससूरिअं ॥ पवर सुह परम निवाण पुरि जेगया, हव ते नमह जिण
 अजिअसंती सया ॥ ५ ॥ कुविअ रिउवग्ग हरि सरह गय जोयणी, त्रूय वेयाव अहि
 ररकसी डायणी ॥ तासु उवसग्ग कीरिय नासेसयं, हियइ जो एहु समरेइ जिण जुअलयं
 ॥ ६ ॥ जइ न अहिदमह दाविइ दीहग्गयं, तुमह अहिल सह दाहि सोहग्गयं ॥ त्रवह
 जइ त्रीअ सिव सुहासतया, हवह एयस्स जिण ड्गाइ तो ततया ॥ ७ ॥ एय संववरिय
 पखिय चउमासिए, अजिय संतिजयं त्रणई जो निसुणई ॥ कइइ कवि वीरग्गि त्रविअ
 जण अग्गए, असुह तसु जाइ सुह सयल सपज्जाए ॥ ८ ॥ इति श्री वीरग्गिणकृत वहु
 अजित शांतिस्तव अष्टम स्मरणस्य समाप्त ॥ ॥ अथ श्री जयशेखर सरि विरचितं श्री
 बृहत् अजितशांतिस्तवनं प्रारभ्यते ॥ सकलसुखनिवहदानाय सुरपादपं, पाद पंकज
 नतानक नाकाधिपम् ॥ अचलाशिवनिलयमप्रलयगुणशोभित, नौमि जिनमजित महम-
 जित सुदितोदितम् ॥ १ ॥ शाति सुप्रशांतत्रवत्रिप्रयपरित्रवं, त्रुवनवनसुषनघनवारि
 वर वैत्रव ॥ परम शोभितसमसमसहिमोदधे, नंतु मीहामनं तामहं संदधे ॥ २ ॥
 पुण्यरथ सुपथ नयनाय वृषत्रक्ष्मौ, विपुल संसार सरिदोष पुलिनापमौ ॥ सिद्धि सी-
 मतिनी श्रुतिवतं साधितौ, सपदे जिनपति अजित ज्ञाति युतौ ॥ ३ ॥ च समूहो मुदाम-

जनि, जनकावयो, स्तारमवतारमवगम्यसम्यवयोः ॥ राज दृष प्रमुख सुरवप्त सुदर्शना,
तमत्वमवगंतु मन्ये न मन्ये जनाः ॥ ४ ॥ जनन समये ययोरसुरसुरनायका, नवनवा-
नेक नेपथ्य परिधायका ॥ विदधुस्सवमतुहं गिरौ मंदरे, वासये तौ जिनाँ निजमनो
मंदिरे ॥ ५ ॥ कोसला पुरवरे पूत विजयोदरं, नृपजितशत्रुकुलकमलवनदिनकरं ॥
द्विष्टण नवशतकर प्रमित वर नृषनं, नौमिकनकात्रमित्राचिन्हमजितं जिनम् ॥ ६ ॥
राज पुरे विश्वसेने शकुल नृषणं, रुचिरमचिरांगं रुहमनघ मृगालक्षणम् ॥ षष्ठाधिक
द्वस्तशत वपुप सुतम सुखं, शांतिनाथं च गणोय गेयत्विवम् ॥ ७ ॥ जलधिरसनावनीवि-
ततवरशासनं, चिंतितोपस्थितद्विरदतुरगासनं ॥ ललित ललनाजनावधु बहु वर्करं,
यौ चिरं राज्यमवतः स्म विस्मय करं ॥ ८ ॥ तदनु दनुजाहित प्रथित महिमोदयं, वर्ष-
दानेन परितुष्ट जन समुदयं ॥ जग्रहतुः स्वहित कामा व कामव्रतं, तौ नमस्कृत्य तोपं
त्रजेऽनवरतम् ॥ ९ ॥ तमसि जिने ययोरखिल दोषोदिते, निपुणनीरजवने निविडमामो-
दिते ॥ उदितवति केवलज्ञान जानौडुतं, दिक्सपतिनापि खद्योत पोतायितम् ॥ १० ॥
यपदानोज प्रजनाय जातवरैः, संघसंघदघनघष्ट नृषणत्रैः ॥ व्यूढमपि रुचिर चिर
रुहरस नित्रैः पाणितलमानमनमत्रवन्नो निर्जैः ॥ ११ ॥ त्ररित त्रव डरितद्व दहन
परितापिताः, सदसिष्यद्राचमतिपुण्यबुध्यापिता ॥ सत्यसंधाः सुधासारसेकं नरेशामर-
शा सुदा सर्वदा मेतिरे ॥ १२ ॥ अ्यातपत्र त्रयं चारवश्यामराः, कोटिसंख्यात्रजंतेऽत्रितः
श्यामरा ॥ अनुपहत डंडत्रिध्वनितमच्युतपदे, यदतिशय राजिरेषा न केषां मुदे ॥ १३ ॥

बोधयित्वाथ तत्त्वानि धीरं जनं, योगतो यो गतो धाम नीरजनम् ॥ तमहमजितं च
 शांति च चच्युतिं, सुचिर मर्चाभि पंचेषु विजयोद्यतम् ॥ १४ ॥ द्विपरिपु व्याल वेताल
 रोगानला, नीर चौरादयोऽन्येऽपि सकलाः खला ॥ तं न ह्युपंति कश्चुकिन इव वंजुलं-
 नमति यो विमद मिदमेव जिनयामलम् ॥ १५ ॥ पादिके किद चतुर्मासिके वार्षिके, पूर्व-
 णि प्रकृत्वर पुण्य नरनायके ॥ योऽमुमति सोममति रजितजातिस्तव, पठति निश्चुणो-
 ति वज्रते सुखं स ध्रुवम् ॥ १६ ॥ गुणराजिविराजितमरिपुपराजित, मजित शांति जिन युग-
 लाभिदम् ॥ मति शुभ्र सत्राजनमतिशय त्राजन, सुपजनयतु सधस्य सुदम् ॥ १७ ॥ इति
 श्री जयशेखर स्वरि विरचिते बृहद्दजितशांति स्तव. संपूर्णं ॥ ॥ अथ त्रकामर ना-
 मक प्रारंभः ॥ त्रकामर प्राणत मौलिमणि प्रमाणा, सुद्योतकं दलित पापतमो वितानं ॥
 सभयक् प्राणस्य जिनपादयुगं युगादा, वादवनं त्रवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः सं-
 स्तुत सकल वाद्यायतत्वबोधा, इहृत्तवुश्चिपदुन्निः सुरलोफनायैः ॥ स्तोत्रैर्जगन्नितय
 चित्तहरेरुदारैः, स्तोत्र्ये किदाढमपित प्रथम जिनंजम् ॥ २ ॥ बुश्या विनापि विबुधा-
 चित्तपादपीठ, स्तोत्रुं समुद्यतमतिविंगतत्रपोऽहं ॥ वाद विदाय जलसस्थितमिंश्चिवैव,
 मन्यः क इवति जन. सहसा गृहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तु गुणान् गुणसमुद्रशांकां कांतान्
 कस्ते दमः सुर गुरु प्रतिमोपि बुश्या ॥ कल्पात काव पवनोऽवत नक चक्रं, को वा तरि-
 तुमलमवुनिधिं शुजान्ध्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव त्रक्तिवगान्मुनीश, कर्तुं स्तवं
 विगतशक्तिरपि प्रवृत्त. ॥ श्रीत्यात्मवीर्यं प्रविचार्यं मृगो मृगोऽ, नात्यति किं निजप्रियाशो

परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नाक्तिरेव सुखरी कुरुते वदान्-
न्माम् ॥ यत्कोकिल किल मधो मधुरं विरोति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्संस्तवेन प्रवसंततिसन्निवर्धुं, पापं क्षणारक्षयमुपैति शरीरभ्राजां ॥ आक्रांत लोकम-
विनीलमशेषमाशु, सूर्याशुचिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वैति नाथ तव संस्तवनं
मयेदमारभ्यते तनुधियापि तवप्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीद्वेषु, मुक्ता-
फलद्युतिसुपैति ननुदर्वेडः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगता हरितानि दंति ॥ डरे सहस्रकिरणे. कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाराश्रां-
जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणं भूतनाथ, नूतैर्गुणैश्चुवि प्रवंतमन्निद्रुवंतः ॥ तुल्या
प्रवंति प्रवतो ननु ते न किवा, नूत्याश्रितं यद्दृढं नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा प्रवंत-
मनिमेषं विदोक्नीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति
इन्ध सिंधो, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क द्धवेत् ॥ ११ ॥ यैः शातरागस्त्रिभिः परमाणु-
त्रिस्व, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्सेस-
मानमपरं नदिरूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क ते सुरनरोरगनेत्रद्वारि, नि.शेष निर्जितजगन्नि-
तयोपमानम् ॥ विंश कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यदासरे प्रवति पांडुपदाशकटपम्
॥ १३ ॥ संपूर्णमंभ्रदशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये
सश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, करताद्विवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं कि-
मत्र यद्विदे त्रिदशागनाम्नि, नीतं मनागपि मनो न विकारमर्गम् ॥ कल्पान्तं कालं मरुता

चक्षिता चक्षेन, किं मंदरांश्चि जिखरं चक्षितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निःश्वमेवतिरपवाञ्जित
 तैलपूरः, कृत्स्न जगन्नयमिदं प्रकटी करोषि ॥ गम्यो न जातु मरुता चक्षता चक्षानां, दीपोऽ
 परस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाश ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिद्धपयासि नराहुगम्य, रप्टी करो-
 षि सहसा युगपज्जगति ॥ नाप्रोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव, सूर्यातिशायी महिमासि
 मुनीद लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दक्षितमोहमहांधकारं, गम्य न राहुवदनस्य न वारि-
 दाना ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनदपकाति, विद्योतयज्जगदपूर्वं शशांकविव ॥ १८ ॥
 किं शर्वरीषु शशिनान्नि विवस्वतावा, शुष्ममुखेण दक्षितेषु तमस्तुनाथ ॥ निष्पन्न शालि
 वनशालिनि जीवलोक, कार्यं किमज्जालधरैर्जलप्रारनध्व ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि वि-
 त्नाति कृतावकाशं, नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति तथा महत्त्वं,
 नैवं तु काचशकले किरणा कुर्वेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु
 हृदय त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन त्रक्ता श्रुवि येन नान्य, कश्चिन्मनो हरति नाथ
 त्रवांतरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणा शतानि शतशो जनयतिपुत्रान्, नान्या सुतं त्वङ्गपमं जननी
 प्रसूता ॥ सर्वां दिशो दधति त्रानि सहसरस्त्रिमम्, प्रात्त्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजादम्
 ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परम पुमांस, मादित्यवर्णममदं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव
 सम्यगुपलत्रय जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीद पंथा ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं
 विशुभचित्मसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण्मीश्वर मनंत मनंग केतुम् ॥ वागीश्वर विदित्तयोग मने-
 कमेकं, ज्ञानस्वरूपममदं प्रवदति संत ॥ २४ ॥ शुद्धः स्वमेव विबुधांचित्त बुद्धिबोधवत्,

त्वं शंकरोऽसि युवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमर्गं विधेर्विधातात्, ऽप्यक्तं स्व-
 मेव, त्रगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगत. परमेश्वराय, तुभ्यं नमोजितत्रयोदधि
 क्षितितलामलत्रूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगत. परमेश्वराय, तुभ्यं नमोजितत्रयोदधि
 शोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्व्यं संश्रितो निरवकाशात्तथा
 मुनीशः ॥ दोषैरुपात्तविधिथाश्रयजातर्गवै, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ १७ ॥
 जञ्जेरशोकरसंश्रितसुनमयूख, मान्नाति रूपममलं त्रवतो निनांतम् ॥ रपटोद्धसत्कि-
 रणमस्ततमोवितानं, विवं रेवरिव पर्योधर पार्थर्वति ॥ १८ ॥ सिंहासने मण्डिममूख
 शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वयुः कनकावदातम् ॥ विवं वियद्वितसदंशुवतावितानं,
 तुंगोदयाद्दि शिरसीव सहस्ररश्मे. ॥ १९ ॥ कुदावदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते
 तव वयुः कदधात कांतम् ॥ उच्चत्रशांक शुचि निर्जर वारिधार, सुञ्जैस्तटं सुर गिरेरिव
 शानकौत्रम् ॥ ३० ॥ तत्र त्रयं तव विभ्राति शशांक कात, सुञ्जैःस्थित स्थगित त्रानुकर
 प्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजातविट्-शशोत्र, प्रख्यापयञ्जिगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
 उच्चिद्वहेमनवपकजपुंजकांति, पर्युद्धसत्राखमयूखशिखात्रिरामो ॥ पादौ पदानि तव
 यत्र जिनेन्द धतः, पद्मानि तत्र विबुधा. परिकटपयन्ति ॥ ३२ ॥ इह यथा तव विभ्राति
 रत्रूजिनैड, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादक् प्रत्रादिनकृतःप्रहतांधकारा,
 तादृकुतो ग्रहणस्य विकासिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदा विद विदोव कपोव मूढ, मत्त
 त्रमद् त्रमरनादविट्-शकोपम् ॥ ऐरावतात्रमित्रसु-श्रतमापतंतं, दक्षा त्रय त्रवति नो

चक्षिता चक्षेन, किं मदराशि शिखरं चक्षितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निःश्ववर्तिरपवाञ्जित
 तैलपूरः, कृत्स्न जगन्नयमिदं प्रकटी करोषि ॥ गम्यो न जातु भरता चक्षता चक्षाना, दीपोऽ
 परस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिद्व्यासि नराहुगम्यः, स्पष्टी करो-
 षि सहसा युगपज्जगति ॥ नांभोधरोदरनिरुःश्वमहाप्रभाव, सूर्यातिशायी महिमासि
 सुनीड लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दक्षितमोहमहाधकारं, गम्य न राहुवदनस्य न वारि-
 दाना ॥ विभ्राजते तव मुखान्जमनदपकाति, विद्योतयज्जगदपूर्वं शशांकविवं ॥ १८ ॥
 किं शर्वरीषु शशिनाहि विवस्वतावा, शुष्ममुखेण दक्षितेषु तमस्सुनाथ ॥ निष्पन्न श्राद्धि
 वनश्राद्धिनि जीवलोकै, कार्यं कियज्जलधरैर्जलप्रारनयै ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि वि-
 प्राति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेज. स्फुरन्मणिषु याति तथा महत्त्वं,
 नैवं तु काचशकलै किरणा कुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरदय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु
 हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन प्रवता श्रुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ
 प्रवांतरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वह्वपमं जननी
 प्रसूता ॥ सर्वां दिशो दधति प्राति सहस्ररश्मिम्, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजादाम्
 ॥ २२ ॥ त्वामामनंति सुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमस. परस्तात् ॥ त्वामेव
 सम्यगुपलभ्य जयंति सद्युः, नान्यः शिवः शिवपदस्य सुनीड पंथा ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं
 विश्रुमच्चित्तमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण्णमीश्वर मन्तं मन्तं केतुम् ॥ वाणीश्वरं विदितयोग मने-
 कमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुध. स्वमेव विबुधाच्चैत बुध्विबोधात्,

वर्णविचित्रपुरुषा ॥ धृते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः
॥ ४४ ॥ ॥ इति प्रकामरनामकः स्तोत्र स्मरण ॥ ॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्र
नामकं आरत्न ॥ ॥ वसंततिलकादत्तम् - ॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यत्रेदि, त्रीता त्रय-
प्रदमनिदितमं द्विपथ ॥ संसारसागरनिमज्जादशेपजंतु, पोतायमानमत्रिनम्य जिने-
श्वरस्य ॥ २ ॥ यस्य स्वय सुरशुर्गारिमांशुराशौः, स्तोत्रं सुविस्तृतमति नं विजुर्विधातुं ॥
तीर्थेश्वरस्य कमठरमयधूमकेतो, स्तस्याहमेप किल सरतवनं करिष्ये ॥ १ ॥ शुभम् ॥
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वल्प, मस्मादशाः कथमधीश त्रवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोऽपि
कौशिकशिशुर्यादिव्वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरक्षमे ॥ ३ ॥ मोहकथादनुभ-
वन्नपि नाथ मर्त्यो, नून गुणात् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्यातवातप्रयसः प्रकटोऽपि-
यस्मा, न्मीयेत केन जलधे ननु रत्नाशिशिः ॥ ४ ॥ अत्रशुद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तव लसदंसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजवाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
कथयति स्वधियादुराशोः ॥ ५ ॥ ये योगीनामपि न याति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं त्रयति
तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पति वा निजगिरा ननु पक्षि-
णोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामंचित्य महिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि याति त्रवतो त्रवतो ज-
गति ॥ तीव्रातपोपहतपाथजनाश्रिदाथे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिवोऽपि ॥ ७ ॥
हृदसिनि त्वयि विप्रो श्रिधिदीत्रवंति, जंतोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो नु-
जंमममया-इव मध्यत्राग, मज्ज्यापते वनशिखांसिनि चंदनस्य ॥-८ ॥ सुच्यंत एव स-

त्रवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ त्रिनेत्रकुंभगलज्ज्वलशोणितक, मुक्ताफलप्रकरत्रुषित
 त्रुमिजाग ॥ बश्कम. क्रमगतं दरिणाधिपोऽपि नाक्रामति क्रमयुगाच्चलसंश्रितं ते ॥
 ॥ ३५ ॥ कटपांतकालपवनोश्चतवह्निकल्पं, दवानलं ज्वलित मुज्वल मुत्फुलिगम् ॥
 विश्व जिघत्सुमिव संमुखमापंततं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेष ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
 समदकोकिलकठनील, क्रोधोश्चत फणिनमुत्फणमापंततं ॥ आक्रामति क्रमयुगेन
 निरस्तशंक, त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंस ॥ ३७ ॥ बलात्तुरगगजगार्जितत्रीम-
 नाद्, मार्जौ बलं बलवतामपि त्रुपतीनां ॥ उद्यद्विवाकरमयूखशिखापविर्ध, त्वत्कीर्तना-
 तम इवाशुत्रिदासुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रत्रिभगजशोणितवारिवाह, वेगावताररणदु-
 रयोध त्रीमे ॥ शुद्धे जयं विजितहर्जयजेयपक्षा, स्वत्पाद् पकज वनाश्रयिणो लभंत
 ॥ ३९ ॥ अंत्रो निर्धौ क्षुत्रितत्रीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठत्रयदोत्वणवाडवाग्रौ ॥
 रगतर्गशिखरस्थितयानपात्रा, खासं विहाय त्रवतः स्मरणाद् व्रजति ॥ ४० ॥ उ-
 ह्रुतत्रीपणजलोदरत्रारत्रुभा, शोच्यां दशासुपगताभ्युतजीवितान्ना ॥ त्वत्पादपंकज
 रजोमृत्दिग्भवेद्वा, मर्त्या त्रवति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंतसुरुशं-
 खलवेष्टितांगा, गाढं दृढनिगडकोटिनिषुष्टजंघा ॥ त्वन्नाममंत्र मनिश मनुजाः स्म-
 रंत, सद्य स्वयं विगतबंधनया त्रवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विप्रेजभृगराजदवानलाहि, सं-
 ग्रामवारिधिमहोदरबधनोह ॥ तस्याशु नाशसुपयाति त्रय त्रियेव, यस्तावकं रतव-
 मिम मतिमान धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रज तव जितेड गुणैर्निबन्धां, तस्य मया त्रिचि-

सितोऽपि शखे, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये, सविधानुज्ञा-
 वा, दास्तांजनी ज्वति ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युजते दिनपती समहीरुहोऽपि, किं वा वि-
 बोधमुपयाति न जीवदोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विप्रो कथमवाङ्मुखव्यंतमेव, विष्वक् पतत्य
 विरवा सुरपुण्यदृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यद्विवा सुनीश, गहंति नूनमथ एव द्वि-
 वधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृद्योदधि संजवायाः पीयूषतां तव गिरः समुदीरयति ॥
 पीत्वा यतः परमसंमदसंगं प्राजो, जव्या ब्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वा-
 मिन् सुदूरमवनभ्य समुत्पततो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं वि-
 दधते मुनिपुंगावाय, ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुश्रवावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरसु-
 ज्वलद्भरल, सिंहासनस्थमिह जव्यशिरां न्निरस्तां ॥ आदोकयाति रजसेन न दंत
 मुखै, श्यामीकरादिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उज्वता तव शितियुति मंडवेत्त,
 द्रुसहद्वहविरशोक तरुर्वजूव ॥ सांनिध्यतोऽपि यद्विवा तव वीतराग, नीरागतां ब्रजति को-
 न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ त्रौत्रोः प्रमादमवधूय जजध्वमेन, मागत्यतिर्यतिपुरिप्रतिसार्ध-
 वाहम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगन्नयाय, मन्ये नद्वन्नान्नजः सुरडंडन्निरस्ते ॥ २५ ॥ ज्योतिरे-
 षु ज्वता ज्वनेषु नाथ, ताराचितो विधुरयं विद्वताधिकारः ॥ मुक्ताकवापकद्वितो च्छुसितातपत्र,
 व्याजान्निधा धृततनु ध्रुवमच्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वैन प्रपूरित जगन्नयापिंडितेन, कातिप्र-
 तापयशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहर्भरजतप्रवितिर्मितेन, सात्वत्रयेण जगवन्न-
 चितो विज्ञासि ॥ २७ ॥ दिव्यसृजो जिननमन्निदशाधिपाना, सुस्तुज्य रत्नरचितानपि

नुजा. सहसा जिनैड, रौडैरुपडवशतै स्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि
 दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशव. प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन कथं जविना त एव,
 त्वासुद्वंदंति हृदयेन यड्वतरंतः ॥ यद्वा दतित्तरतिथज्जालभेष नून, संतर्गतस्य मरुत.
 स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः
 कृपित. कृणेन ॥ विध्यापिता हुतजुजः पयसाथ येन, पीतं न कि तदपि ऊर्ध्व वाड्वेन
 ॥ ११ ॥ स्वाभिन्नतप्य गरिमाणमपि प्रपन्ना, स्वा जतव. कथमदौ हृदये दधानाः ॥ ज-
 न्मोदाधि लडुतरंत्यतिवाधवेन, चिंतयो न हंत महतां यद्विवा प्रन्नाव. ॥ १२ ॥ क्रोध स्वव्या-
 यद्वि विजो प्रथम निरस्तो, ध्वस्तास्तदा वत कथ किव कर्मचोराः ॥ श्लेषत्यमुत्र यद्विवा-
 शिशिरापि लोके, नीलजुमाणि विपिनानि न किं हिमानि ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन
 सदा परमात्मरूप मन्वेषयति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यद्विवा किमन्य,
 दक्षस्य संजवि पदं ननु कारुणिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाजिनेश जवतो जविनः कृणेन, देहं
 विहाय परमात्म दशां जजति ॥ तीव्रानलाड्डपलत्रावमपास्य लोके, चापीकरत्वमचिरा-
 दिव धातु त्रेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विनाढ्यसे त्वं, जव्यैः कथं तदपि ना-
 शयसे शरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनोहि, यद्विपदं ज्ञानमयंति महानुभाव्याः
 ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिचिरयं त्वदनेदद्बुद्ध्या, ध्यातो जिनैड जवतीह जवत्प्रन्नावः ॥
 पानीयमप्यमृतमित्यनुचित्यमानं, कि नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव
 वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विजो हरिहरादि धिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामविचित्रिष्य

सितोऽपि श्लो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये, सविधानुज्ञान-
वा, दास्तांजनो न्ववति ते तरुरप्यशोकः ॥ अन्त्युक्ते दिनपत्नी समद्वीरुहोऽपि, किं वा वि-
बोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्र विप्रो कथमवाङ्मुखवृत्तमेव, विष्वक् पतरय
विरला सुरपुष्पवष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यद्विवा सुनीश, गढंति नूनमथ एव हि
बधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गन्त्रीरुहदयोदधि संनवायाः पीयूषतां तव गिरः समुद्रीरयंति ॥
पीत्वा यतः परमसंमदसंगन्त्राजो, न्रव्या ब्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वा-
मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंती, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरीधाः ॥ येऽस्मै नतिं वि-
दधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुश्रवावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गन्त्रीरगिरसु-
ज्ज्वलद्देमरत्न, सिंहासनस्थमिदं न्रव्यशिखंनिरत्वां ॥ ज्वालोकर्यंति रत्नसेन न दंत
सुखै, श्यामीकराजिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उज्जता तव शितिक्षुति मंडलेन,
लुसत्तद्वहविरशोक तरुर्वन्य ॥ सास्त्रिभ्यतोऽपि यद्विवा तव वीतराग, नीरगतां ब्रजति को
न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ त्रौत्रोः प्रमादमवधूय न्रजध्वमेन, मागत्यनिर्द्यतिपुरिप्रतिसार्ध-
वाहम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगन्नयाय, मन्ये नदशन्नितनः सुरडंडन्निसते ॥ २५ ॥ उच्योतिते-
षु न्रवता न्यवनेषु नाथ, तारात्विती विधुरयं विद्वताधिकारः ॥ मुक्ताकटापकवितोच्छ्रुसितातपत्र,
व्याजात्रिधा धृतततु ध्रुवमन्त्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वैन प्रपूरित जगन्नयपिंडितेन, कातिप्र-
तापयशसाभिव संचयेन ॥ माणिक्यद्देमरजतप्रविनिर्मितेन, साक्षत्रयेण न्रगवन्न-
न्नितो विप्रासि ॥ २७ ॥ दिव्यसुजो जिननमस्त्रिदशाधिपाना, सुस्तुज्य रत्नरचितानपि

मौलिवधान् ॥ पादौ श्रुप्रंति त्रवती यदिवा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥१७॥
 त्व नाथ जन्मजलधोर्विपरहसुखोऽपि यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलभान् ॥ युक्तं हि पार्थिव
 निपस्य सतस्तवैव, चित्र विप्रो यदसि कर्मविपाकभूय ॥ १८ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपा-
 लक उर्गतस्त्वं, किं वाक्करप्रकृतिरप्यखिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्स्यपि सदैव कथंचिदेव,
 ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशाहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसभृतनत्रासि रजासि रोषा, उ-
 ज्ञापितानि कमठेन ज्ञातेन यानि ॥ वायापितैस्त्वव न नाथहता हताशो, भरत्स्त्वमीत्रि-
 रयमेव परं ह्यरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्जडजितधनौघमदन्नपीमं, त्रश्यत्तन्निमुसलभांसल
 धोरधारम् ॥ दैत्येनमुक्तमथह्यस्तरवारिदधे, तेनैव तस्य जिन ह्यस्तरवारिकृत्यम्
 ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड, प्रालवभृद्भयद्वक्त्रविनिर्घदक्षि ॥ भेत
 ब्रज प्रतिभवं तमपीरितोय; सोऽस्याप्रवत्प्रतिभवं त्रवह्यत्वेतु ॥ ३३ ॥ धन्यारतरएव
 शुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति विधिवद्विभूतान्यकृत्याः ॥ तत्रयोद्धसत्पुलक पद्भ्याल
 देह देशा. पादाद्रय तव विप्रो शुविजन्मत्राजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारत्रववारिनिधौ
 सुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ॥ आकाण्ठे तु तव गोत्रपवित्रभंत्रे, किंवा
 विपक्षिषधरी सविध समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेऽपि तव पादशुभं न देव, मन्ये मया महि-
 तमीहितदानदक्षमम् ॥ तेनेह जन्मनि सुनीश परात्रवानां, जातो निकेतनमहं मधि-
 ताश्यानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिराहृतलोचनेन, पूर्वं विप्रो सकृदपि प्रदितोकि-
 तोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्था, प्रोष्यत्प्रवध्नगतय कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥

अकार्षितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेत्सि मया विधृतोऽसि प्रत्त्या ॥
 जातोऽस्मि तेन जनबाधवङ्खपात्रं, यस्मात्किया. प्रतिफलंति न प्रावशून्याः ॥ ३८ ॥
 त्वंनाथ इःखिजनवत्सल हे शरण्य, कस्यैयपुण्यवसते वञ्चनां वरेण्य ॥ प्रत्त्या न ते
 मयि महेश दया विधाय, इ.खांकुरोहवनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ नि संख्यसारशरणं
 शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदात्म ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधान
 वध्या, वध्याऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्र वध विदिताखिववस्तु-
 सार, ससारतारक विप्रो-भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव कस्यैहृद् मां पुनीहि, सीदतमद्य
 त्रयद्व्यसनाधुरशो ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ प्रवर्द्धिसरोरुहाणां, प्रक्तेः फलं किमपि संतति-
 संचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य नूयाः, स्वामि त्वमेव भुवनेऽत्र प्रवांतरेऽपि
 ॥ ४२ ॥ इहं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांजोह्यसत्पुलककचुकितंगानागाः ॥
 त्वद्विनिर्मलमुखांबुजवर्ध्वलक्ष्या, ये सस्तवं तव विप्रो रचयंति प्रव्याः ॥ ४३ ॥ जन-
 नयन कुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते विगदितमलनिचया, अचिरा-
 न्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ भुभं ॥ इति श्री कल्याणमंदिरनामक स्तोत्रं संपूर्णं ॥ ॥ अथ
 लघुशांतिस्तवप्रारंभः ॥ ॥ शांतिं शांतिनिशांत, शांत शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोत्रुः
 शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तोमि ॥ १ ॥ ॐ इति निश्चितवचसे नमो नमो प्रग-
 वतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिताम् ॥ २ ॥ सकलाति-
 शेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शश्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांति-

मौलिवधान् ॥ पादौःश्रमंति जवतो यद्विवा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥१७॥
 त्वं नाथ जन्मजलधर्विपरह्मुखोऽपि यत्तारयस्यसुमतो निजपुष्टजगान् ॥ युक्तं हि पार्थिव
 निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विप्रो यदसि कर्माविपाकशून्यः ॥ १७ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपा-
 लक उर्गतस्त्वं, किं वाक्करप्रकृतिरप्यखिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथाचिदेव,
 ज्ञान त्वधि रफुरति विश्वविकाशहेतु. ॥ ३० ॥ प्राणप्रारसंभृतनत्रांसि रजासि रोषा, उ-
 ज्ञापितानि कमठेन भठेन यानि ॥ ठायापितैस्तव न नाथहता हताशो, प्रस्तस्त्वमीञ्चि-
 रयमेव परं ड्यात्मा ॥ ३१ ॥ यज्ञज्जडजितधनौषमदन्नानीं, अशयत्तन्निमुसलमासल
 धोरधारम् ॥ दैत्येनसुक्तमथडस्तरवारिदधे, तेनैव तस्य जिन डस्तरवारिकृत्यम्
 ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यसुंड, प्रालवभृद्भयदवक्रविनिर्द्यक्षि. ॥ भेत
 ब्रज. प्रतिप्रवं तमपीरितोष, सोऽस्थानवत्प्रतिप्रवं प्रवड खहेतु ॥ ३३ ॥ धन्यारस्तएव
 शुवनाधिप ये त्रिसंध्य,माराधयंति विधिवद्विधूतान्यकृत्याः ॥ प्रतयोह्यसत्पुत्रक पद्माल
 देह देशाः पादाद्वय तव विप्रो शुविजन्मभ्राज. ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपरत्रववारिनिधौ
 सुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ॥ आकार्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा
 विपद्विप्रधरी सविध समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेऽपि तव पादशुभं न देव, मन्ये मया महि-
 तमीहितदानदक्षमम् ॥ तेनेह जन्मनि सुनीश परात्रवानां, जातो निकेतनमह मधि-
 ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिभिरावृतलोचनेन, पूर्व विप्रो सकृदपि प्रविलोकि-
 तोऽसि ॥ मर्माविधो विधुर्यति हि मामनर्था, प्रोथार्थप्रवधानात्तया कथमन्यथ्येते ॥ ३७ ॥

इषाकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि प्रस्तया ॥
 जातोऽस्मि तेन जनयांथवडःखपावं, यस्मात्किम्याः प्रतिकर्तति न प्रावधून्याः ॥ ३८ ॥
 त्वनाथ ड. खिजनवरसल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिना वरेण्य ॥ प्रत्या न ते
 मयि महेश दया विधाय, डःखाकुरोद्वनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं
 शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदात्म ॥ त्वत्पादंपंकजमपि, प्रणिधान
 वधो, वधोऽस्मि चेद्भुवनपावन दा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्र वंश विदिताखिववरतु-
 सार, ससारसारक विप्रो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद् मां पुनीहि, सीदंतमथ
 प्रयद्व्यसनांबुरशो ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ प्रवर्दंघिसरोरुहाणां, प्रके. फल किमपि संतति-
 संचितयाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य प्रूयाः, स्वामि त्वमेव भुवनेऽत्र प्रवांतरेऽपि
 ॥ ४२ ॥ इह समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, साडोद्धसत्पुलककंचुकितान्गजागाः ॥
 त्वद्विनिर्मलमुखांबुजवश्लक्ला, ये सस्तवं तव विप्रो रचयंति प्रव्याः ॥ ४३ ॥ जन-
 नयन कुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते विगदितमदनिचया, अचिरा-
 न्मोक्षं प्रपद्यते ॥ ४४ ॥ भुभं ॥ इति श्री कल्याणमंदिरनामक स्तोत्रं संपूर्णं ॥ ॥ अथ
 लघुशांतिस्तवप्रारंभः ॥ ॥ शांतिं शांतिनिशांत, शांत शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोत्रुः
 शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ इति निश्चितवचसे नमो नमो प्रग-
 वतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलाति-
 शेषकम्हा, संपत्तिसमन्विताय शरण्या ॥ वैदोक्थ्यपूजिताय च, नमो नमः शांति-

देवाय ॥ ३ ॥ सर्वाभरससमूह, स्वामिक संपूजिताय निजिताय ॥ युवनजनपावनो
 धृत,तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितोघनाशन, कराय सर्वशिवप्रशमनाय ॥
 उदुप्रहृतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ पर्येति नाममंत्र, प्रधान वाक्योप-
 योगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शान्तिं ॥ ६ ॥ नवतु
 नमस्ते नगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जया-
 वहे नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्याऽपि च संघस्य, नद्रकल्याणमंगलं प्रदद ॥ साधूनां च सदा-
 भिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे, निर्बुतिनिर्वाण जननिसन्त्वानां ॥
 अत्रयप्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ नक्तानां जतूनां, शुभ्रावहे
 नित्यसुपद्यते देवि ॥ सम्यग् दृष्टीनां धृति, रति मति शुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासन
 निरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्री सपत्कीर्तियशो, वर्धनि जयदेवि
 विजयस्य ॥ ११ ॥ सखिवानल विषविषधर, उदुप्रहराजरोगणनयतः ॥ राक्षस
 रिपुगण मारी, चौरैति थापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च
 कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्वस्तिच कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ नग-
 वति गुणवति शिवशान्तिवृष्टीपुष्टीस्वस्तीह कुरु कुरु जनानां ॥ उमिति नमो नमो न्हं,
 न्ही ह ह. य. कः न्ही फुद् फुद् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यथामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया
 देवी ॥ कुरुते शान्ति नमता (पाठातरे कुरुते शान्तिनिमित्तं) नमो नमः शान्तये तस्मै
 ॥ १५ ॥ इति पूर्वस्वरिदक्षित, मंत्रपदविदक्षितः स्तव शान्तेः ॥ सखिवादिभ्यविनायी,

शांत्यादिकरश्च चक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति प्रावयति वा यथा-
 योग ॥ सहि शांतिपदं यायात् (पाठांतरे शिवशांतिपदं यायात्) सूरि श्रीमात् देवश्च
 ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्य यांति, विद्यते विभवद्वयः ॥ मनः प्रसन्नतामिति, पूज्यमाने जिने-
 श्वरे ॥ १८ ॥ सर्वभगवत्संगत्यं, सर्वकटयाणकारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति
 शासनं ॥ १९ ॥ इति श्री लघुशांति स्तवः संपूर्णः ॥ ॥ अथ बृहज्जांति स्तवनामकं प्रार-
 न्यते ॥ ओजो प्रव्याः शृणुत वचनं, प्रस्तुत सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिज्वनगुरोराहता
 चक्तिप्राजां ॥ तेषां शांतिर्भवतु चवतामहदादिप्रजावा, दारोग्य श्रीधृतिमतिकरी
 हेकाविध्वसहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ ओजो प्रव्यलोका इहहि प्ररतैरावतविदेहसंभवानां
 समस्ततीर्थकृता जन्मन्यासनप्रकपानंतरमवाधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा
 घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविनय मर्हद्भ्रदारकं गृहीत्वा गत्वा
 कनकाद्रिगुं विहितजन्माग्निषेकः शांतिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति
 कृत्वा महाजनो येन गतः स पंथा इति प्रव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय
 शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति मत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्य-
 तां निशम्यतां स्वाहा नृं पुण्याहं पुण्याहं प्रीयतां प्रीयतां जगवतोऽहंतैःसर्वज्ञा सर्वद-
 र्शिनस्त्रिवोकनाथा स्त्रिवोकमहिता स्त्रिवोकेश्वरा स्त्रिवोकोद्योतकराः ॥ ॥ ॐ
 ऋषमञ्जितसंप्रवञ्चनिन्दनं सुमतिपद्मप्रभ सुपार्श्वचन्द्रप्रभुविधिशीतल श्रेयांस वासु-
 पूज्य विमल अमंत धर्म शांति कुंचु अर मल्लि सुनि सुवत नमि नेमि पार्श्वं वर्द्धमानांता

जिनाः शाताः शातिकरा नवंतु स्वाहा ॐ सुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयञ्चिन्मिकांतारेषु
 ड्यर्माणेषु रक्षतु वो नित्य स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ङ्ही श्री धृतिमतिकीर्तिकातिबुद्धिद्वज्ज्मी
 मेधा विद्यासाधनप्रवेशननिवेशनेषु सुगदितनामानो जयतु ते जिनेजाः ॥ ॐ रोहिणी
 प्रकृति वज्रशूखला वज्राकुशी अग्रतिचक्रा पुरुष दत्ता काली महाकाली गौरी गायत्री
 सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरव्या अबुद्धा मानसी महामानसी षोडशविद्यादेव्यो
 रक्षतु वो नित्य स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य
 शातिर्नवंतु तृष्टिर्नवंतु पुष्टिर्नवंतु ॥ ॐ महाश्रजसूर्यांगारकबुधवृहस्पतिशुक्रशनी-
 श्ररराहुकतुसहितः सलोकपाला सोमयमवरुणकुबेरासवादित्यस्कन्दविनायकोपेताः ये-
 चान्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंता प्रीयंतां अक्षीण कोत्र कोष्टगारा
 नरपतयश्च नवतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्र सुहृद्स्वजनसवधीवधुवर्ग, स-
 हिता नित्य चामोद प्रमोद कारिणः अस्मिश्च तुमडलायतननिवासीसाधुसाध्वी
 श्रावकश्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधिङ्खञ्जनिद्वन्द्वोर्मनस्योपशमनाय शाति नवंतु ॥
 ॥ ॐ तृष्टिपुष्टिश्चिद्विदिगण्डयोत्सवाः सदा प्राड्युताति पापानि शामयंतु हरितानि
 शत्रवः पराङ्मुखा नवतु स्वाहा ॥ श्रीमते शातिनाथाय, नमः शाति विधाधिने ॥ त्रैलोक्य-
 न्यस्यामराधीश, सुकुटाभ्यर्चिताध्रये ॥ २ ॥ शातिः शातिकरः श्रीमान् शातिं दिशतु
 मे शुरुः ॥ शातिरेव सदा तेषां, येषा शातिर्भूद्वै भूद्वै ॥ १ ॥ उन्मष्टरिष्टङ्गष्टभङ्गति
 ङ्खःखप्रङ्गनिमित्तादि ॥ संपादितहितसंपन्नसम्पदण जयति शाते ॥ ३ ॥ श्री संघ जग-

ज्ञानपद, राजाधिपराज्यसन्निवेशानाम् ॥ गौष्टिकपुरसुरव्यानां, व्याहारेणैर्व्याहरेर्जांतिम् ॥४॥
 श्रीश्रवणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्री
 राजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगौष्टिकानां शांतिर्भवतु,
 श्रीपुरसुरव्याणां शांतिर्भवतु, श्रीब्रह्मदोकस्य शांतिर्भवतु, ईंस्वाहा ईंस्वाहा ईं श्रीपाश्व
 नाथायस्वाहा ॥ ॥ एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्त्रात्रायवसानेषु शांतिकदशं पटीत्या कुकु-
 मचंदनकर्पूरगारुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचि
 वयुः पुष्पवस्त्रचंदनात्ररणादकृतः पुष्पमातां कंठेकृत्या शांतिसुद्रघोषयित्वा शांतिपानीय
 मस्तके दातव्यमिति ॥ ॥ नृव्यंतित्यं मणिपुष्पवर्षं, सुजंति गायंति च मंगलानि ॥
 स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणमाजोहि जनात्रिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्व
 जगतः परहितनिरता नवंतु नृत्तगणाः ॥ दौषाःप्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीन्रवंतु द्योकाः॥५॥
 अहं तिष्ठयरमाया, सिवादेवी तुह्यनरय निवासिनी ॥ अह्यसिखं तुह्यसिखं असिखो वसम
 सिखं न्रवतु ॥ स्वाहा ॥३॥ उपसर्गाः द्यं यांति, विद्यंते विध्रवद्वयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,
 पुज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणं,
 जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ ॥ इति श्रीबृहज्जांतिनामकं स्मरणं संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्री
 कल्याणसागरसरिकृत माणिक्यस्वामि स्तवन प्रारंभः ॥ नमः सिद्धेन्द्र्यः ॥ स्त्रग्धरा टंडः॥
 १॥१॥माणिष्यपूर्वास्त्रियुवनतिलकश्चितश्रीसुरादि स्वैलोकोद्योतकर्ता प्रथिततरयश्चा
 ष्टत्रयशास्त्राभारः ॥ श्रीमद्बीनात्रिपूण्यगगनरविर्मंजुकल्याणकांति, राष्ट्रैसद्विक्लिणाल्ये

निरुपममहिमार्यातिकारिप्रतापः ॥ १ ॥ हुतविदंबित वंदः ॥ प्रवरधर्मधनार्पणका-
 मणौ रमृतवाग्गुणरंजितनागरः ॥ रिपुसमूहनिवारणकृटो वृषत्राचिन्हित पादकुश्रोशयः
 ॥ ९ ॥ हरिणी वदः ॥ शुभ्रमतिकरश्रंजदित्याधिकोत्तरप्रावर, स्त्रिशुवनमणिर्विश्वा
 धरो धरेश्वरकीर्तितः ॥ उपशमरसासकरस्यांतोऽप्यनतचतुष्टयी, गुणमणिल्वनिर्नष्टारिष्टा-
 मयाधिजरव्यथः ॥ ३ ॥ पंचचामर वदः ॥ अखर्वदेहराजितो यतीश्वरो घृणाप्रशीत-
 मानसः कदाधरः ॥ अनेकलब्धिमंडितोवृषाकरः त्रिवाधिवटश्चंद्रमा नतासुरः
 ॥ ४ ॥ सुजंगप्रयात वंदः ॥ प्रभुर्मारुदेवश्रिदाह्लादहीनः सदाचारवीलाविला-
 सातिशाही ॥ महामोहमातंगपंचारस्यकस्यो हितार्थी कदाशिल्वपविज्ञानप्रापी ॥ ५ ॥
 मादिनी वंदः ॥ जलधिनिप्रगन्धीरः सारसांरंगधोपो जितविषयविकारो ज्ञानबुद्धिप्र-
 दाता ॥ खलसमिरपृदाकुर्वदेवाधिराजः, समवसरणशोच्यसिंधुपुरोधमेवः ॥ ६ ॥ नाराच
 वंदः ॥ श्वेतातपत्रचामर, हुकोमनोहृपुजलैः ॥ नव्यांगिराशिवदितो, धर्मार्थमोक्षसा-
 धकः ॥ ७ ॥ अर्या वंदः ॥ देवैर्धर्यो विमलःसुंदरवंशोनुपूतरत्नाऽपि ॥ मान्यः सता-
 मजखं सदोदयो वरातिशयधरः ॥ ८ ॥ गीति वंदः ॥ त्रैलोक्यवासाविभुः, समस्तगुण
 रत्नकलितसाधुमनाः ॥ एनस्तमोनिशेषः, सुश्लोकैर्धवलिताश आशादः ॥ ९ ॥ नगरस्व-
 रूपिणी वंदः ॥ सदार्यमार्ग देशकोऽप्यभेयप्राण्यधारकः ॥ प्रभुतसत्वपादको, विवेक-
 नीतिकारकः ॥ १० ॥ माणवक वंदः ॥ छःखहरो नाकिनुत, स्वयक्तमहादोषप्रः ॥
 पारगतस्तीर्थकर, शीववालि ज्ञानधनः ॥ ११ ॥ तोटक वंदः ॥ कर्मज्ञाननमोहितसस्य-

जनः, समयार्थनिरूपणरम्यसुधीः ॥ नखिलीमुखखेलनतामरसः, पुरुषोत्तमपुण्यनि-
धिर्वरदः ॥ १२ ॥ मणिमध्य बंदः ॥ लक्षणपंतया सारतनु, निर्जितमायालोत्रकविः ॥
आहतसाध्याचाररतिः, सादरदेवाधीशपतिः ॥ १३ ॥ चंपकमाळा बंदः ॥ केवल्युग्ममा-
लोकितलोका, लोकविभागः संयमिसेव्यः ॥ इंद्रियबाणोद्दिचेता, श्रंपकमाळा मंडि-
तगात्रः ॥ १४ ॥ दंसी बंदः ॥ प्राप्तानंदो युवनसुकुट, रतीर्थस्वामी विरहृतनयनः ॥
सश्रीकालमा सुकृतनिवयो, योगीन्द्रो वै विजितकपटः ॥ १५ ॥ शादिनी बंदः ॥ आदेया-
रूपो मुक्तिजरफारसोरूप्यो, विश्वोत्तसो हृष्टकर्मारिहंता ॥ चक्रेश्वर्याराधितो गोमुखेशः, कां-
ताकारश्रोसधर्माधिकारः ॥ १६ ॥ केकिरव बंदः ॥ जगतीश पूज्यो जयताञ्जिनेशः, कुशला-
शर्वाहितति वारिधारः ॥ विशादवदातावविचिन्नामा, प्रवर्वाहपोतः कुलपाकनाथः ॥ १७ ॥
कुलकम ॥ इंद्रवज्राः बंदः ॥ एवं मायासंस्तुत आदिदेवो न्यूयात् सदासंघाणस्यनूत्यै ॥ हेमं
करो विश्वजगत्सुदीपः, कल्याणमंगल्यकलापकोशः ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ सूर्यपूरीयश्रीसं-
प्रवजिनस्तवनप्रारंभः ॥ वसंततिलका बंदः ॥ कामं नभोऽस्तु सततं जिनसंप्रवाय, चजान-
नाय कमलामल्लोचनाय ॥ देहप्रत्रारश्रजितलोकचमत्कराय, डूर्ध्वानपादपविनेदंन
सिंधुराय ॥ १ ॥ देवैःस्तुस्ताय प्रवसागरपरगाय, कीर्तिप्रसूनसुरनीकृतविष्टपाय ॥
सन्मूर्तिकांतितिरंजितमानवाय, सेनागकुक्षिवरशुक्तिकर्माक्तिकाय ॥ २ ॥ अंब्रजोप-
माय जिनशासनदीपकाय, सूर्यारथवंदरमनोरममंडनाय ॥ प्रव्याञ्जकाननवित्रासन्न
त्रारकराय, नानार्थदानहरिचदनसंश्रिन्नाय ॥ ३ ॥ आदेयनामकलिताय शुभ्राश्रयाय,

प्रथमं भाषितं कर्मपथं प्रथमं सुपाय ॥ गदान्नाहं कश्चनं नरकं विद्याम् । नेत्र-प्रभावयत्र-
 गणपतेश्चराम ॥ ४ ॥ अज्ञानमहान्तरयन्त्रं नयजाय, सातान्यदान्यगुणरत्नकरं देव्याय ॥
 अस्यापरा नोभुव्यांश्चिन्तयाय, निर्दोहहंमरनिष्वदनमानमाय ॥ ७ ॥ अन्धानसंजवि-
 न्ध्यांश्चिन्तयाय, कल्याणमगर नरं गमनाथराय ॥ इन्द्राच्चिक्लवणं बुधरोपमाय । वाचा
 शुभाश्वत्थपुष्पिंशोमगमाय ॥ ६ ॥ मन्त्रमार्गविधिद्वन्द्वनन्देनिकाय, इन्द्रोयवाणमुगुणपराक-
 माय ॥ द्यौमार्गिणामिन्द्राश्चिन्तयाय, शंभुवन्दनसुशोन्नितपक्कजाय ॥ ७ ॥ सस्वौ-
 चाम्बुजपत्न्याय निर्दोशियाय, शुभान्वयोनिकराय कृपालयाय ॥ मिथ्यात्वतापजाजिचंद्-
 राशाम्बुजाय, भुवर्गवायुजुजायाय नराधिनाय ॥ ८ ॥ संकल्प कल्पनविवर्जितमानसाय,
 वासीश्विंशत्वारिंशत्परं ह्यगमाय ॥ सुज्ञानशुद्धिवरदाय गुणाकराय, कौबाल्यवद्विपरिवर्द्ध-
 नाश्रुणाय ॥ १० ॥ ईशाना शंभु ॥ रतांशं चतुर्थं तन्वित्राकिसंयुतं ध्यायति ये संभवदे-
 रासिनाम् ॥ शिपिंशत्वारिंशत् श्रुताः समुदयः कल्याणसंपादनकामधेनवः ॥ १० ॥ शार्दू-
 लानामिहिरं येषु ॥ दायाभिन्तीपुष्टं सदावाचिनतं श्रीसंभवारख्यं जिनं, सन्मार्तण्डपुरामलाच-
 दाश्रीशोपत्रवाच्यतटं ॥ देवाश्चिक्षात्रेणोपेष्टद्वैः संसेवितं कामदं, मुक्तिस्त्री सुखरंजाली-
 नपतिषा संयसुदासिन्द्वे ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवन प्रारंभः ॥ इतविदं
 वित तदः ॥ सुविधिनाथजिनं नयनामृत, सुविधिनाथ जिनं महिमालयं ॥ सुविधिनाथजिनं
 नररंजनं, सुविधिनाथजिनं वरकेवलं ॥ १ ॥ सुविधिनाथजिनं कमलाकरं, सुविधिनाथजिनं
 स्वयं परं ॥ सुविधिनाथ जिनं ह्यतिवीरिदं, सुविधिनाथजिनं, सुविधिपदं ॥ २ ॥ सुवि-

धिनाथ जिनं रजतवर्षिं, सुविधिनाथजिनं जडतापहं ॥ सुविधिनाथजिनं मकराकितं,
 सुविधिनाथजिन जगदचितं ॥ ३ ॥ सुविधिनाथजिनं रजतां हितं, सुविधिनाथजिन
 परमेश्वरं ॥ सुविधिनाथजिनं श्रुतस्वरिणं, सुविधिनाथजिन शिवपारगं ॥ ४ ॥ सुविधि-
 नाथजिनं शुभदर्शनं, सुविधिनाथजिन जनतानतं ॥ सुविधिनाथजिनं वरदं विद्युं,
 सुविधिनाथजिनं नमितासुरं ॥ ५ ॥ अमुष्टुप् वदः ॥ सिततरपुराधीशः सुविधिर्नवमो
 जिनः ॥ संघस्य सुखदो न्यूयात्, कट्याणस्वरिण स्तुतः ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री
 शांतिनाथजिनस्तवनप्रारंभः ॥ इतविदं वित वंदः ॥ सकलदेवनरेश्वरवदितं, विबुध
 मानवसंस्तुतपूजितं ॥ कमलवदोचनरंजितनगरं, प्रविक्रपातकतामसप्रारकरं ॥ १ ॥
 निखिलवांजितदानसुरागमं, विदितशास्त्रविचारनयागमं ॥ कठिनकर्मदवानलनी-
 रदं, परमशांतिरदायत शांतिदं ॥ २ ॥ विविधलक्षणरंजितसंचरं, सुविधिमागंप्रका-
 शानतरपरं ॥ चपलमत्तमत्तंगजगामिनं कमलकोमलमांसलपाणिनं ॥ ३ ॥ दलित-
 दंप्रमदाधृतिविप्रहं, विहितमोहमदावलनिप्रहं ॥ दृढपरीषहवायुजुजंगमं, किल
 शुभ्रं शुभनीष्टसमागमं ॥ ४ ॥ प्रविचकोरसुखाय कदानिधिं, विनयधैर्यगुणोत्कर
 शोवाधिं ॥ सुनिषद्विनिवास कुशोशयं, विद्युशुधामधुसारतराशयं ॥ ५ ॥ कुसुमसंघ्निय
 दंतविराजित, सुभगनाग्यसुखाकरशोभितं ॥ निजजुजावलसाधितराष्ट्रक, जित-
 विपद्गणं नतराजकं ॥ ६ ॥ कुशलकोलविदासजुवंपरं, विशदकीर्तिविकाशिदिग-
 तरं ॥ कुमतासिंधुरसिंधुरैरिणं, सुमति कामितसजतिकारण ॥ ७ ॥ वरसुवर्णसवर्ण

सुवर्णकं, जितहृषीकमधर्मनिवारकं ॥ हरिणसेवितपादकजं जिनं, हितकरं स्तुत
 निर्जरसज्जनं ॥ ८ ॥ प्रवरवार्षिकदानगुणैर्वरं, हतदरिद्रपरं परमेश्वरं ॥ समधरीकृत
 मेरुसुरज्जुभेः, प्रचुरसर्वगुणादधिकोत्तमैः ॥ ९ ॥ विकटडर्जयमन्मथशंकर, जनकदा-
 पिषधनं विगातांतरं ॥ द्रपननिर्जितचञ्जसमंप्रशं, विगातदोषकलिं च मद्दौजसं ॥ १० ॥ अशिव
 विश्वनाथनमारुतं, विषयतापवशं जनतामतं ॥ शिववधूपरिंत्रणालुपुं, विमलके-
 वलिसाधुकुलाधिपं ॥ ११ ॥ यजतशांतिजिनं तु शिवंकरं, कुशलसागरवृद्धिकला-
 धरं ॥ अतुलरूपवशीकृतमानवं, प्रणतसादरकिन्नरदानवं ॥ १२ ॥ द्वादशाभिः कुल-
 कम् ॥ मादिनी वंदः ॥ युवननदिनभानोः शांतिदेवस्य चतुर्, प्रवजलनिधिसेतोर्द्धःख
 दारिद्र्यहर्तुः ॥ निजहृदयविशुश्रया स्तोत्रमेतत्पठति, प्रतिदिनमपि ये ते संपदः प्राप्नुवन्ति
 ॥ १३ ॥ इति अथ शांतिजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ॥ स्वधरा वंदः ॥ दद्याद्वीजातिदेवो वर
 कनकतनुः सारसौख्यानिशश्वङ्गकानां चक्रिभ्रजा त्रियुवननगरेस्फारकोटीरहरीः ॥
 चार्वाकारेः प्रणेत प्रणतहितकरः कामदो मारिवारः सर्वज्ञारथातनामाप्रकटितमहिमा
 प्राप्तकर्मारिपरः ॥ १ ॥ तोटक उदः ॥ सुरमानवपूजितपाणिकजः कमलोदयकारक धर्म
 धनः ॥ विगातामयदूषण जन्मततिः शुभ्रसागरसोमनित्रो विमलः ॥ २ ॥ इति प्रथमात
 त्रिभ्रकिकाव्य शुभं ॥ शुजंगप्रयात उदः ॥ अजस्यं विभुं विश्वपूज्यं प्रसन्नं, जिनं सत्प्रभं
 शंकरं देवदेवं ॥ सदा ज्ञानवद्वीततौ भेषभेकं, स्तुवे शांतिनाथं कदो कामकुंभं ॥ ३ ॥
 हरिणी वंदः ॥ कमलवदनं प्राप्तानंदं नताशुभ्रचंचदं जगपतिगतिं विश्वाधार

सुरेश्वरवन्दितं ॥ सद्यहृदयं त्यक्तातंकं विनिर्जित शोचनं परमपददं ज्ञातार्थीषं त्रिकाव-
 विदंचितं ॥ ४ ॥ इन्द्रवंशा वंदः ॥ अर्चति देवा त्रयपारणं जिनं, कट्याणकारं मुनिवृंदं
 सेवितं ॥ वत्रादिसद्वह्मणवक्रितं क्षितावानंदसंदोहकरं सुधामयं ॥ ५ ॥ इति द्विती-
 यांतत्रिकिकाव्यत्रिकं ॥ आदिनी वंदः ॥ प्राड्यं राज्यं चक्रवर्तिव्यसंगं त्यक्त्वा दत्त्वा
 स्वर्णरूप्यादि दानं ॥ श्रुत्वा वाक्यं बह्मलोकांतिकानां येनावातं संयमं मुक्तियोग्यं
 ॥ ६ ॥ इतविदंचित वंदः ॥ अमितपुण्यवता जनतावता कुगतिवारणतपरसद्मिना ॥
 नतनरामरकिन्नरशादिना त्रगवता त्रुधिशर्मविधायिना ॥ ७ ॥ इति तृतीयांतत्रिकिका-
 काव्यद्रयं ॥ इन्द्रवज्रा वंदः ॥ श्रीशांतिदेवाय नमोऽस्तुनेत्रे विभ्रौष हर्षे शिवमार्गं दात्रे ॥
 चक्रांकहस्ताय समस्तत्रयै शंखेन्द्रारोज्ज्वलशुक्लकर्षे ॥ ८ ॥ रथोऽहता वंदः ॥ दर्श-
 नामृतनिवीनजंतवे विश्वशास्त्रनयनीतिहेतवे ॥ लोत्रसागरसुवेतसेतवे द्रापरवलि-
 तमिस्त्रप्रानवे ॥ ९ ॥ इति चतुर्थीं त्रिकिकाव्य युग्मं ॥ उर्षेऽवज्रा वंदः ॥ अघानि
 नश्यति पुराकृतानि प्रशस्त नाम्नातिशय प्रसत्तेः ॥ अग्नेकसंसारनिबंधितानि प्रगाढ-
 वधस्थितिसंचितानि ॥ १० ॥ मादिनि वंदः ॥ त्रवति सुखमनंतं शांतिनाथप्रसादा-
 धरिणेशरणदातृविश्वसेनांगजातात् ॥ नतत्रविकज्जनां प्रीतिराजात्प्रकामं निरवधि-
 जिनरगो वदशसन्मानसानां ॥ ११ ॥ इति पंचमांत त्रिकिकाव्यद्रयं ॥ शिखरिणी वंदः ॥
 सदाध्यानं शान्तिरखिलगुणधात्रः शुभ्रवतो धरति श्रीकारं सुमतिमतिकारं त्रयह्वरं ॥
 नरा त्रव्याः शासत्या विगतमदंतडाः श्रुतपरा स्त्रिसंधं सध्यानं प्रवदत्तरत्राग्योदयमतः

॥ १२ ॥ विद्युन्माला वंदः ॥ शांतेः शांतेः पादध्रं नत्वा नत्वा सश्रीकारस्युः ॥ त्रौ त्रौः
श्राश्रा आद्युष्मंतं स्तुष्टयानंदं कृत्वा कृत्वा ॥ १३ ॥ इतिपष्ठि विप्रकि काव्यद्विकं ॥ वसंत
तिलका वंदः ॥ चेतोऽस्ति चैन्नवपयोनिधिपारमास, तीर्थकरे जिनपत्तौ किल जाति देवे ॥
त्रिकि कुरुष्व सततं विपुलासुदारा हत्वा प्रमादमपि कर्मविशेषजन्यं ॥ १४ ॥ दीधक
वंदः ॥ इगंतिसागरपीतसमुद्रे निश्चलसंयमपादनमेरौ ॥ शारदं शुश्रु सुधाकरवक्रं
शंखसमाननिरंजनचित्ते ॥ १५ ॥ नाराच वंदः ॥ कारुण्यरंगरंजिते कार्पण्यदोष
वर्जिते ॥ देवाधिपेऽचिरासुते लोकोपकारकर्मेते ॥ १६ ॥ इति सतमीचित्रकिकाव्य
त्रिकं ॥ वशस्थ वंदः ॥ स्वकीय वंशांवरत्नारकरप्रज्ञो, विशाल गंगाजल शुभ्रकीर्ते ॥
अपारसंसारत्रयाच्च सत्वरं कृपापरस्त्वं परिरक्ष सेवकान् ॥ १७ ॥ इति संबोधन वि-
त्रिकि काव्यमेकं ॥ मंदाक्रांता वदः ॥ कल्याणोक्त कुशलजननं सर्वसंधस्य नित्यं नाना-
दृत्तैः प्रकलितमिदं स्तोत्रमेतन्निकाव्यम् ॥ मुत्तवाऽऽलस्यं त्रणति मनुजो त्राविना त्रा-
वितारमा गेहेलक्ष्मीर्नवति दृढता तस्य दीर्घायुषश्च ॥ १८ ॥ शार्दूलविक्रीडित वंदः ॥
कल्याणोदधिचर्दनं कलिलहरं कौशल्यमालास्पदं, सौत्रार्णयोधकरं विप्रकिकलितं कार्ये-
विप्रिधैः परं ॥ श्रीजातेः स्तवनं पठति त्रविनः सत्पुण्यपण्यालया स्तेषां धाम्नि शुभे
निवासमनुजाः कुर्वति संपत्तयः ॥ १९ ॥ इति ॥ अथ श्री अंतरिक्षपार्थ्वं स्तवन प्रारंभः ॥
इंजवजा वंदः ॥ विश्वेश्वरं विश्वजनेशपूज्यं, सर्वार्थनिष्पादनकामकुंभं ॥ प्रख्याति-
मंतं महिमौवलक्ष्म्या, पार्थ्वं त्रजे संस्थितमंतरिक्षे ॥ २ ॥ कल्याणमालापृष्ठमंजि देव,

विद्याधराधीशानुतानिहृषद्वं ॥ सर्वत्रराष्ट्रेषु विशालकीर्तिं, पार्थं नजे संस्थितमंतरिक्षे ॥ १ ॥
 रोगाधिचिंतातिसमूहताप त्रैषज्यमाचारविचारसूरिं ॥ सद्गीतरलज्जविज्जपितानं, पार्थं ॥ ३ ॥
 संसारसिद्धौवरयानपात्रं, सुत्तयंगनासक्तहृदं शरण्यं ॥ वामांगजातं जगतीप्रदीपं, पार्थं ०
 ॥ ४ ॥ श्रीपार्थयद्वाधिपमद्वितीयं, श्रीशांतिनं सेरपुरावतंसं ॥ वाचासुधाकर्पितसन्धवलोकं,
 पार्थं ० ॥ ५ ॥ त्रैलोक्यकोटीरमनाथनाथं, दारिद्र्यवाताहिमनंतशक्तिं ॥ शास्त्रार्थनैपुण्यनि-
 धिं दयालुं, पार्थं ० ॥ ६ ॥ पद्मावतीसंवितपादयुग्मं, मंदोत्तरध्वंतदिनेशमशु ॥ लाव-
 ण्यसौत्राग्ययशोत्रिराढ्यं, पार्थं ० ॥ ७ ॥ ज्ञानादिधर्मत्ररणं वरेण्यं, सद्बोधदानादिकमार्गं
 पार्थं ॥ भ्रानंदवल्लीततिवारिधरं, पार्थं ० ॥ ८ ॥ कलशः ॥ स्रग्धरावदः ॥ इत्थं ये देव-
 वंशं विविधसुखकरं चातरिक्षारण्यपार्थं, नित्यंध्यायंतिन्नक्त्या हृदयरतियुजो प्राग्यवंतो न-
 रोऽपि ॥ दक्ष्मीरस्तेषानिकाय्ये, वसति दृढतया सर्वदा कामकर्त्री, कल्याणश्रेणिकर्तुर्भुवि वि-
 दिततरा सर्वसंपत्तिकाता ॥ ९ ॥ इति ॥ अथ श्रीगौडिकपार्श्वार्ष्टक प्रारंभः ॥ शार्दूलविक्री-
 न्ति वंदं ॥ वामेयं मरुदेशन्नूषणतरं श्रीपार्थयद्वाचितं, कल्याणावलिद्वीसिंचनघनं
 श्रीक्ष्वाकुवंशोद्भवं ॥ भ्राराज्राष्ट्रसमागतैर्नरवरैःसंसेवितं नित्यशः, श्रीमह्वीकरगौडिकात्रि-
 धधर पार्थसुपार्थंनजे ॥ १ ॥ नानासाधुजनौषधपंकजवने मातंडविवायितं, विद्वन्पूरुह
 निवारकं कलियुगे प्राप्तप्रतापालयं ॥ विश्वस्यां प्रथितावदाननिकरं निर्दोषपुण्योज्ज्वलं,
 श्रीमह्वीकरगौडिकात्रिधधरं पार्थसुपार्थंनजे ॥ २ ॥ संपन्नैरिस्तुदानकामकलशं त्रैलोक्य-
 चिंतामाणं, सद्वाचामृतरंजितामरनरं सद्भर्मबोधप्रदं ॥ सौत्राग्याश्रुतकातकीतियशसा संपू-

रिताशांतर, श्रीमञ्जी० ॥ ३ ॥ मार्गे चातरनीतिवारिनिचिते क्षेत्रंकरं सर्वदा, दारिद्र्यादिति-
 पातनात्कुलिशं चितार्तिरोगापहं ॥ इ खत्राससमीरणौघजुजगं नागाकर्मदोमयं, श्री-
 मञ्जी० ॥ ४ ॥ कारुण्याचितचारुचितकमलं सत्वेषु संसारिषु, सर्वैर्यादिगुणैरलकृततनुं
 लावण्यदीव्यारूपदं ॥ संसाराण्यर्णवीतवारिधिसमं मुक्तयंगनावह्वन्नं श्रीमञ्जी० ॥ ५ ॥
 शैलोक्ये तिलकायितं निरुपमं जव्यैर्नुत्तिः पूजित, इष्टाना निजसत्वदर्शनपरं क्षिप्रं सतां
 कामदं ॥ नाम्नाध्वस्तसमस्तवैरिनिचय राशंतनिर्देशकं, श्रीमञ्जी० ॥ ६ ॥ त्रयिष्टामलजकि-
 शक्तिकवितैर्देवैश्चतुर्थानंतं सर्वांशाकरणैककटपफलदं सर्वांगिचूडामाणि ॥ शिष्टानंत चतु-
 ष्ठीवरतरं श्रीभिरुतुंगं जिनं, श्रीमञ्जी० ॥ ७ ॥ स्फाराकारनिराजितगमतुलं सद्गुणैर्हृमाकरं,
 विश्वव्यासतरं प्रवाससदनं गत्रीरतासगरं ॥ त्रासोद्योतितविश्वविश्वमवनाकट्याणसि-
 धौविधुं, श्रीमञ्जी० ॥ ८ ॥ अष्टत्रिः कुलकं ॥ अनुष्टुप् वंदः ॥ त्रिन्नमात्वेसदाश्रेष्ठे, गुण-
 वज्रवद्वन्पिते ॥ पुष्पमादोऽतरात्रिभ्यं नेकवीहरसंयुते ॥ ९ ॥ श्रीमत. पार्थनाथस्वय,
 रत्नवनजगतोऽवनं ॥ कट्याणसागराधीशैः, सूरित्रीरचितं सुदा ॥ १० ॥ सगधरा वंदः ॥
 ध्येयं श्रीपार्थदेवं जगतकिलजनागोडिकग्रामराजं शश्वत्सर्वार्थासिद्ध्यैविहितशुभ्रहितं
 विष्टपेचैत्रपूर्वं ॥ सानंदोद्भासदाष्टा. कुशलगविद्युधाः सर्वलोकेविशिष्टा निर्दोषाचारपुष्टा
 जिनपपतिपुरता आसकट्याणतुष्टाः ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ श्रीगोपीपार्थनाथस्तवनप्रा-
 र्थः ॥ मादिनी वंदः ॥ जयति जगति चंद्र. पार्थनामा जिनेद्रो, विकचकमलदृष्टानंदिताम-
 ल्यमर्त्य ॥ अकलितमहिर्घोषस्तीर्णसंसारसिधु, सुंजगकलितपाद पुण्यपीयूषपुष्ट ॥ १ ॥

स्वधरा वदः ॥ श्रीपार्थ गौंकिारख्यं राजत त्रिगिणे कल्पवृक्षं सुगोत्रं, नानादेशेषु लब्धातिश-
 यमहिततावद्बृहवारं सुमूर्तिं ॥ श्रीमंतं नीलरत्नाधिकतरवपुषं रफारत्वावाण्यश्रावं, मोक्षात्रोग-
 शिकुंभोन्नवममरनुतं पार्थयद्वाचिंतांदिं ॥ ९ ॥ पंचचामर वंदं ॥ नमंति पार्थर्मगिनो
 नरावसा, धृतातपत्रचामरैः सुरैःस्तुत ॥ अतंतशक्तिमालिनं गतामयं, विवेकरत्नरोहणं
 दयाकरं ॥ ३ ॥ वसंततिलका वंदः ॥ ऊरीकृतं व्रतमनुत्तरमंनिनेत्रा, दत्त्वाऽशु येन वरवा-
 पिकंदानराशि ॥ वामोद्ध्वेन सुनिनायकनायकेन, कल्याणकेलिनिलयेन शुभ्राशयेन ॥ ४ ॥
 द्रुतविलंबित वंदः ॥ मम नमोस्त्ववते परमात्मने, जगवतेशिवशर्मविधायिने ॥ अमितशौर्यं
 तिरस्कृतमेखे, शुभ्रदेशेरकमंडलमोवये ॥ ५ ॥ हरिणी वंदः ॥ असुतरसताधिक्ययात्रीष्ट-
 न्नरोत्तमसंगता, ज्ञुवनसुजगात्पार्थात्रिर्याहिनश्यतिपातकं ॥ प्रसरति च वै कीर्तिर्दिक्षु प्रसू-
 नवहृज्ज्वला, प्रजवति पुनः शीघ्रं वीलाजयोन्नतिवर्धनं ॥ ६ ॥ शार्दूलविकीडित वंदः ॥
 आहृत्यानारद्वदेवमनुषां संतुष्टिकर्तुस्सदा, चेतोवहन्नकामसार्थददतः कर्मारिहर्तुर्नृशं ॥
 आनंदौघसरः प्रवृक्षकरणे पानीयदातुमुंदा, पार्थर्यासि नतिः समृद्धिजननी कल्याणवि-
 स्तारिणी ॥ ७ ॥ तोटक वंदः ॥ नरत्नक्षणभूषितवहृदुपुरे, सुखनीरजरंजितविश्वजने ॥
 श्रुतदेशनदर्शितधर्मपथे, जिननेतरि तिष्ठति प्राण्यरमा ॥ ८ ॥ भुजंगप्रयात वंदः ॥
 सुराधीशचक्रैः स्तुतः ज्ञानासिंधो, जगन्नाथ नेतः कृपालोकबंधो ॥ विप्रो पाहि मां सर्वदा त्र-
 क्तिजालं, स्मरंत चिरं त्वत्पदांजो जगुंगं ॥ ९ ॥ शार्दूलविकीडित वदः ॥ स्तोत्रं पार्थार्जिनेश्व-
 रय सततं ये प्राणिनो ज्ञावतः, महुःश्यापि पठंति ह्यमनसस्तेषां गृहे संपदः ॥ रघुनिर्दयं स्थिर

प्रावशोन्नतरा धर्मार्थनिष्पादिका, कल्याणार्णवसुरिनिर्विचरंतं मांगल्यमादाकरं ॥ १० ॥
 शिखरिणी वंदः ॥ सदा धार्यं चित्ते स्तवनमनवधं त्रयहरं, नरेर्नून सिद्धयै कुशलवनराजौ
 घननिभं ॥ अवंध्य प्रकानां जिनगुणरतानां स्मृतिमतां, समेषां प्रव्यानां प्रमुदकरणं
 कामितकरं ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ श्रीदादापार्थनाथस्तवन प्रारंभः ॥ इन्द्रवजा वंदः ॥
 कल्याणगेहं गुणरत्नराजं, सदेहकांत्याजितनीलरत्नं ॥ स्तोत्र्येमुदाशंकरमनिर्वधं
 दादात्रिध श्रीवरपार्थनाथं ॥ १ ॥ सधर्मवीनाशयमाशुविहं, कर्माष्टदावानल-
 वारिधारं ॥ संसारपाशोनिधिकर्णधारं, दादात्रिधश्रीवरपार्थनाथं ॥ २ ॥ आचारवह्नी-
 ततिवृद्धिनीरं, सत्कीर्तिपुष्पद्रुतवासिताश ॥ नानार्थराधांतविचारदहं, दादा ॥ ३ ॥
 वैराग्यरंगार्पितचारुचित्त, सद्बोधिदातारमनीहसेव्यं ॥ नागेंद्र संसेवितपादपद्मं, दादा ॥
 ४ ॥ त्रैलोक्यवृक्षमणिमृशिशोभं, सौभाग्यप्राग्यवद्विपूर्णदेह ॥ प्रव्यौघरज्जीवदिनेश
 मेक, दादा ॥ ५ ॥ सर्वोनिनेतारमन्त्रीपुत्राचं, विश्वेश्वरं रंजितसन्ध्यलोकं ॥ लोकार्तिचि-
 तामयङ्खवारं, दादा ॥ ६ ॥ ह्याकृतिं कृत्तजराधिदोष, नरामरेंद्रं स्तुतमर्त्यसधं ॥
 सनागचिन्ह कुशलार्थकारं, दादां ॥ ७ ॥ सर्वत्रविख्याततरप्रतापं, कारुण्यसत्रं श्रुवि-
 श्रिष्टगोत्रं ॥ अज्ञानमिथ्यात्वतमिस्रदीपं, दादा ॥ ८ ॥ अष्टत्रिःकुलकं ॥ शार्दूलवि-
 क्रीडित वंदः ॥ श्रीमह्वीवटपद्मजनगरे शृंगारहरोपमं, कल्याणहुंजत्रानुचंद्रमसमं वामां-
 गजात परं ॥ दादास्य जिनपार्थदेवमनघं धार्याति ये नित्यशस्तेपांधास्त्रि रमानिवासमनिश
 कुर्वति कल्याणतः ॥ ९ ॥ इति ॥ अथ श्रीकविकुंडपार्थाष्टकप्रारंभः ॥ विहुधादिराजेर्नत-

पादपद्मं, बहुत्रायसौत्रायलतौघमेघं ॥ कमतोपसर्गाचलधैर्यात्रिति, कालकुम्भपार्थ
 सुचिरं त्रजेऽहं ॥ १ ॥ कमलाप्रदाने हरिचन्दनगं, सपयोधिदेशाद्भुतलब्धकीर्तिं ॥ रुचि-
 राकृतोरंजितविश्वविश्वं, कलिकुम्भपार्थ सुचिरं त्रजेऽहं ॥ २ ॥ महिमावदातोत्तमनाममंत्रं,
 समतात्रिरामं कमलात्रिनेत्रं ॥ अत्रिवापदं सिद्धिविलासयंत्रं, कलिकुंड ॥ ३ ॥ छरितां-
 धकारारुणसन्निकाशं, करुणाशशयं डःस्ववनेषुदावं ॥ नरदेवपूज्यं सुखदंसुमूर्तिं, कलिकुंड ॥
 ४ ॥ कनकादिदातारमनंतशक्ति, वरनीलरत्नाधिकदेहवर्णं ॥ शिवशर्मराजं जनता-
 त्रिवधं, कलिकुंड ॥ ५ ॥ अनघं सदासङ्गुणकेलिपादं, शुभ्रलक्षणात्कृतवर्णगात्रं ।
 कुलनूपणं शत्रुतृणौघदात्रं, कलिकुंड ॥ ६ ॥ जगतीश्वरं कर्मविमुक्तसंगं, विषमशुभयालस्र
 मनः स्वरूप ॥ धरणेंद्रपार्थार्चितपादयुग्मं, कलिकुंड ॥ ७ ॥ शुभ्रसिंघुटश्रीशशिनं वरेण्य,
 वचसा सुधात्रेन सदर्पसन्धं ॥ श्रुतस्तरिणंपुण्यविराजमानं, कलिकुंड ॥ ८ ॥ अपृच्छि-
 कुलकं ॥ इंद्रवज्रा वद ॥ एवंस्तुत. श्रीकलिकुंडपार्थ; कल्याणनाम्नामयकानितांतं ॥ ये
 प्राणिनः स्तोत्रमिदं पठन्ति तन्नास्तिवक्ष्मीर्विलसत्यवश्यं ॥ ९ ॥ इति ॥ अथश्रीरावणपा-
 र्थाष्टक प्रारंभः ॥ इंद्रवज्रा वदः ॥ देवाधिदेवं कृतपार्थसेवं, नागाधिराजेन नतांहिपद्म ॥
 पद्मावतीसंस्तुतनामधेयं, सेवे सदा रावणपार्थनाथं ॥ १ ॥ आनंदकंदोदयट्टिमेषं, मेघ-
 ध्वनिध्वानविशेषराजं ॥ जितारिष्टदं विगताधिमोहं, सेवे सदा रावणपार्थनाथं ॥ २ ॥
 वामांगजातं कुलनंदिकारं, ध्वस्तोपसर्गात्कट्टुपुरोगं ॥ प्रख्यातिमतं त्रुवने प्रन्नाद्यैः, सेवे
 सदा ॥ ३ ॥ सद्बीजनासा दसितेन्द्रनीद, सत्कांतकांत्या रमणीयरूप ॥ प्रावीण्यनानाति-

शयै. प्रधानं, सेवे सदा० ॥ ४ ॥ सञ्जीतिहर्तारमनंत सौर्यं, विश्वेश्वरं द्योतितविश्वलोकं ॥
 पद्मार्धदाने सुररत्नद्वंद्वं, सेवेसदा० ॥ ५ ॥ अज्ञानमिथ्यात्वतमिस्त्रानुं, चामंडलावकृतमौ-
 लियुष्टं ॥ वाणीसुधामोदितसन्ध्यसंघं, सेवे सदा० ॥ ६ ॥ कौशल्यामंगल्यनिवासनेहं,
 पूर्णकृतात्रीष्टपदार्थराशिं ॥ त्रैलोक्यदीपं वरसिद्धिनाजं, सेवेसदा० ॥ ७ ॥ ससाररत्नाकर-
 यानपात्रं, नि.शेषदोषोद्धितधर्ममार्गं ॥ आदेयसोत्राग्ययश. सुपात्रं, सेवे सदा० ॥ ८ ॥
 अप्रतिः कुलकं ॥ मादिनी ठंद. ॥ अलवरपुररत्नं रावणं पार्थदेवं, प्रणतशुभ्रसमुद्भ-
 कामद् देवदेव ॥ अमितगुणनिधाना ये नरः संस्तुवंति, जगतिविदितसारा चाग्यवंतो न्रव-
 ति ॥ ९ ॥ इति ॥ अथ श्रीगोपीपुरपार्थजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ॥ रागेणगीयते ॥
 गौडिपुरप्रभुपार्थमसंद ॥ दर्शनदर्शनपरमानंद ॥ नमित सुरासुरद्वंदं ॥ १ ॥ श्रीजिनज्ञा-
 सनचारुशृंगारं ॥ अंतरंगरिपुष्टककुठारं ॥ सकलजगदाधारं ॥ २ ॥ निरूपमरूपविरा-
 जितदेहं ॥ विद्वदितनानाजनसंदेहं ॥ अमितगुणधननेहं ॥ ३ ॥ हरितकाननत्रेदन
 दात्र ॥ रुचिरलक्ष्णविभूषितगात्रं ॥ वारितकुमतकृपात्र ॥ ४ ॥ अनघजिनवरगोत्र
 सुगोत्रं ॥ कामकुंजमणिनिर्जरगोत्रं ॥ संयमददतगोत्र ॥ ५ ॥ ठेदितत्रयत्रयमरणारिष्ट ॥
 प्रकटितमहिमातिशयवरिष्टं ॥ जगदैश्वर्यगरिष्टं ॥ ६ ॥ विहिताखिलत्रविजनकट्याणं ॥
 पादितयथारथातकट्याणं ॥ दत्तमार्णकट्याणं ॥ ७ ॥ आधिबंधवधगादहर्तारं ॥ वादि-
 तकुशलसौख्यकर्तारं ॥ शुवनत्रयत्रतारं ॥ ८ ॥ विकटकष्टनिवारणार्णं ॥ आगामनयप्रका-
 शनसूरं ॥ चारसीगंगापुर ॥ ९ ॥ धृत्तिकीर्तिवृद्धिदक्षीणणविश्व ॥ केवलयुगवाद्योक्ति

विश्वं ॥ प्राप्तजिनेप्सितविश्वं ॥ १० ॥ सेवकमनोप्रीष्टदातारं ॥ रीजितदेवनरनेतारं ॥
 अतुन्नतकुलजातारं ॥ ११ ॥ इन्द्रनीलमणिवर्णसुवर्णं ॥ निखिलदेशविरय्यातसुवर्णं ॥
 वाक्सुधासारसुवर्णं ॥ १२ ॥ सुक्तिसीमांतिनीसंगमदुग्धं ॥ चंचलविषयसुखसंगादुग्धं ॥
 कर्मपराविप्रदुग्धं ॥ १३ ॥ वंदितामरमौलिकुटीरं ॥ विषमकषायदानलनीरं ॥ उत्कट
 परीषद्धीरं ॥ १४ ॥ अंचलगणीरथीसारंगं ॥ कीर्तिलतावर्धनसारंगं ॥ उर्जनशालन-
 सारंगं ॥ १५ ॥ वेदज्ञंतचतुष्टयिराजं ॥ पूजितसुरपतिमानवराजं ॥ प्रवरतीर्थीधिराजं
 ॥ १६ ॥ पोड्याग्नि-कुलकं ॥ श्रितातिपाथ्वरदवरपार्थं ॥ मोहतामिस्त्रसवितारं ॥ नाग-
 राजराजं त्रिभुवनपूज्यं लब्धन्नवोदधिपारं ॥ शुभसागरनित्यप्रश्रितगारिमाणं ये ध्यायंति,
 विद्युं सुदा लक्ष्मीस्तान्स्सुपैतिसत्वरमतुलासवार्थीसिद्धिप्रदा ॥ १७ ॥ इति अथ श्रीपार्थ-
 जिनस्तवनप्रारंभः ॥ तोटक वंदं ॥ त्रविकांबुजत्रासनत्रानुत्तिष्ठं, प्रवतापसमावनवारि-
 धरं ॥ रचितानगमशास्त्रविचारनयं, जयमंगलकीर्तियोगोनिचयं ॥ १ ॥ कमलाभवकेलिनृहं
 विमलं, लसदाशयसुश्चितसंतमसं ॥ शुभसागरवर्धनचंद्रमसं, सकलामरपूजितपादकजं
 ॥ २ ॥ विकटोत्कटकर्मभृगोत्तरिपुं, स्वभानगनरेश्वरदेवनतं ॥ तरसाजितमोहरिपुंविप्रयं
 यमसवरसहितसाधुहितं ॥ ३ ॥ शुभदक्षिणदक्षितहस्तयुग, गजराजगतिगतविद्वरजं ॥
 जलतामयत्रेपजमीशवरं, दयानद्यातिद्योतितचारुमुखं ॥ ४ ॥ कनकाचल धीरमप्रीष्टतरं,
 रसनारसरंजितसर्वसत्त्वं ॥ शुभनत्रयमंभलमोघतरं, रुचिराकृतिमोहितदेवजनं ॥ ५ ॥
 अरिहंतमनुतरतीर्थकरं, रचितंवरदुद्धिधनंजिनपं ॥ पुरुषोत्तमसस्त्रमर्थनिधिं, धृतिकांति

निकेतनमगितुतं ॥ ६ ॥ निजवंशवतंसकमातिहरं, रवनिर्जितमेधनदं शिवदं ॥ दधितं
 शुविविश्वजनीनतमं, नतत्रूतगणंजितलोत्रत्रदं ॥ ७ ॥ शरणाश्रितपादकमुक्तिपदं, दधत
 वरशातरसं नवमं ॥ महसंजमणिप्रभदेहधरं, धरणेन्द्रनिषेवितपार्थयुग ॥ ८ ॥ अमम
 तनुपार्थजिनं सततं, तपसाहृतसिद्धमनंतवद्य ॥ बलनाजनसंगविरक्तमदं, मलयर्जित
 सुत्तरसौख्यधरं ॥ ९ ॥ नवत्रि-कुलक ॥ सुरराजस्येचरनागपुरंदरधरणिराजसुसेवितं,
 श्रीपार्थजिनेश्वरं नमितसुरेश्वरपद्मावतीसंस्तुतं ॥ येऽनंतत्रक्त्या विशुद्धशक्त्या संस्तुवन्ति
 जिन सुदा, शुभ्रसगणरपठनाद्भविकरमासमेतं ते ब्रत्रंति सुखं सदा ॥ १० ॥ इति ॥ अथ श्रीम-
 हुरपार्थाष्टक प्रारंभः ॥ हुताविदां वित ठंदः ॥ विबुधमानवमानसनदनं, विप्रवदानविधौ ह-
 रिचंदनं ॥ निखिलसन्ध्यजनैः कृतवंदनं, नजतपार्थजिनं महुरात्रिधं ॥ १ ॥ युगलकौ-
 शिकसाम्भ्यतरशायं, शुवनत्रानुनिवासधनाश्रयं ॥ विषयिवारणकेसरिसंक्षिप्त, नजतपार्थ-
 जिनं महुरात्रिधं ॥ २ ॥ अरुणकोटीवित्राधिकत्रारुहरं, कुमुदवांधवशुभ्रतराननं ॥ वरग-
 नीरशुणोत्तमसागरं, नजत ० ॥ ३ ॥ न्रविक्रपद्मवित्रासनत्रारुकरं, जगतित्रावप्रकाशन-
 दीपकं ॥ नयनपाटवपावनतंत्रकं, नजत ० ॥ ४ ॥ रचितकामलवारिदसंचयै, रखिलधैर्य-
 समन्वितचेतसं ॥ विकटकर्मसमीरणत्रोगिनं, नज ० ॥ ५ ॥ कमलनिर्मितपाशुकदंबकैः, स्थिर
 तरोत्कटत्रावविराजितं ॥ जगतिडर्जनसर्पविपापहं, नजत ० ॥ ६ ॥ प्रशम न्रूपणन्रूपण-
 न्रूषनं, सुभ्रगत्रान्यशुणावलिमंदिरं ॥ धवत्वकीर्तियशोवरधासितं, नजत ० ॥ ७ ॥ सक-
 लसंधसमीहितकर्तकं, निश्चितविभ्रपरान्वदर्तक ॥ अतिशयाद्भुतचारुचरित्रकं नजत ० ॥ ८ ॥

हरिणी वंदः ॥ महुर जिनपं नित्यं वेदे श्रिवोदधिर्वर्धनं शशिनमनिशं किण्वध्यांते दिने-
 शमदोदय ॥ स्तवनत्राणने चिताल्हार्देः कृतादरसेवके विविधधनदं विश्वे विश्वे जिनेशनता-
 नने ॥ ९ ॥ हुतविदां वित वदः ॥ महुरपार्थजिनेश्वरसंस्तवं, पठति यः सुधियोषसि नि-
 त्यशः ॥ वसति तस्य गृहे कमलाऽखिला, स्थिरतरासुमतां वरदायिनी ॥ १० ॥ इति ॥ अथ
 श्रीसत्यपुरीय श्रीमहावीरस्तवनप्रारंभ ॥ हुतविदां वित वंदः ॥ त्वमसि सद्गुणनंदन मंदर,
 स्वमसिमेरुवतावादिमंडपः ॥ त्वमसिखेचरनाकिनरस्तुत, स्वमसिरूपवशीकृतविष्टपः
 ॥ १ ॥ त्वमसियोजिनोद्यश्रोमणि, स्वमसिकांतिविकाशितादिगणः ॥ त्वमसिप्राषित
 रजितनागर, स्वमसिसिध्वशारतिमोदितः ॥ २ ॥ त्वमसिप्रदकरः करुणावय, स्वम-
 सिप्रक्तचकोरनिशाकरः ॥ त्वमसिदर्शनहर्षितमानव, स्वमसिसंस्तुतिसागरपेतकः ॥ ३ ॥
 त्वमसिमोदमहीरुहसुजर, स्वमसिधर्मधनोधनकामदः ॥ त्वमसिसंशयवायुशुजंगम, स्वम-
 सिदर्शितजीवदयापथः ॥ ४ ॥ त्वमसिधारितशीलाविष्णुपण, स्वमसिकामितदामसुर-
 दुमः ॥ त्वमसिदेवनराधिपवांदित, स्वमसिजाड्यतमिसनन्नमणिः ॥ ५ ॥ त्वमसिकर्म
 वनावनिपावक, स्वमसिसेवकपूजितपकजः ॥ त्वमसिजन्मजरामृतिवारण, स्वमसि-
 शाश्वतमोक्षपदस्थितः ॥ ६ ॥ त्वमसिमंजुलसत्कुलदीपक, स्वमसिसर्वपदार्थविशारदः ॥
 त्वमसिदोकनतोनतवत्सल, स्वमसिदेवेशीमुखपुष्करः ॥ ७ ॥ त्वमसिनाथमनोहर-
 लक्षण, स्वमसिसंमतजीवगणःसदा ॥ त्वमसि संवरमार्गविधायक, स्वमसिदानगुणा-
 दिपतकल्पकः ॥ ८ ॥ त्वमसिचित्रकरातिशयांचित, स्वमसिसूरिततीश्वरसेवितः ॥ त्वमसि-

छःखिजनावनतत्पर, स्वमसिद्वारनित्रः क्तिमंफले ॥ ९ ॥ त्वमसिञ्चिष्टनरामरसगत
 स्वमसिलोकचमत्कृतनिर्ममः ॥ त्वमसिकेवलिसाधुनतोमुदा, त्वमसिकुग्रहदोषनिवारक.
 ॥ १० ॥ त्वमसिसद्गतप्रारदृषोपम, स्वमसिबीतमदोविडादाशयः ॥ त्वमसितीर्थपतेरुचि-
 राह्य, स्वमसिशुतिपवित्रितमानसः ॥ ११ ॥ त्वमसिबुद्धिपराजितगी पति स्वमसि-
 दाटकसन्नविग्रहः ॥ त्वमसिप्राग्धविनाबानिकेतन, स्वमसिलोत्रमहीधरवज्रकः ॥ १२ ॥
 त्वमसिसप्तत्रयाण्वतारक, स्वमसिडर्घटसत्यनयाध्वग. ॥ त्वमसिसंमटसंततिकारक,
 रत्वमसिसिद्धिकरोवरदायक. ॥ १३ ॥ त्वमसिविश्वजगज्जनवद्वन, स्वमसिरक्षितभूत
 कदवकः ॥ त्वमसिडर्भगडस्थहरोनिशं, त्वमसिद्विरतृत्वोचनरजकः ॥ १४ ॥ त्वमसि
 विश्वपतिश्रिसवाधव, रत्वमसिवक्रतिरस्कृतचजमाः ॥ त्वमसिर्वैरिसमुडघटोद्भव, स्वम-
 सितीर्थकरः प्रतिबोधयः ॥ १५ ॥ त्वमसिप्रव्यशिखंडिवलाहक, स्वमसिबंधुरमूर्तिध-
 रोऽजर ॥ त्वमसिसर्वविजुर्विगतातुर, स्वमसिसयममंफनमडितः ॥ १६ ॥ त्वमसिजां-
 तरसाश्रितचेतन, स्वमसिपौरुपनिजितकर्मणः ॥ त्वमसिडर्घत्रबोधिनिबंधन, स्वमसि
 कामडयाधिकदानद. ॥ १७ ॥ त्वमसिसचित्तपुरायनिधिः पर, स्वमसि विघ्नसरीसृपगा-
 रुड. ॥ त्वमसिशुत्रयजोत्ररसंदिर, स्वमसिसिबंधजयोद्वतिहर्षदः ॥ १८ ॥ त्वमसिसत्व-
 हितोमतिवर्धन, स्वमसिधर्मसरोजसरः समः ॥ त्वमसिचक्रिनतोत्रविशेखर, स्वमसिपर-
 गतः परमेश्वरः ॥ १९ ॥ त्वमसिसत्यपुरामवलभूण, स्वमसि संश्रितपादभृगाधिप. ॥
 त्वमसिकेवल्युभमविराजित, स्वमसिबीरजिनोजिननायक. ॥ २० ॥ त्वमसिशाखवपोव-

नियामक, स्वमसिसाधुदयाद्युल्लामकः॥त्वमसिसौख्यकरश्चिशालांगज, स्वमसिधशुगुरुः
 शुभ्रसागरः ॥ १२ ॥ हरिणी वंदः ॥ जयति सततं वीरः शंशुर्नवीरधिपारगो, जगति
 तिलकः पापध्वानेगत्ररितरनुतरः ॥ कुशालनिलयस्तीर्थस्थामीसुरासुरसंस्तुतो, विदितम-
 हित्नांविश्वेविश्वेश्वरार्चितपत्कजः ॥ ११ ॥ वंशस्थ वदः ॥ कुलावतंसं यतिधर्मदेशकं, कर्त-
 दिकापारगसंगिपाळकं ॥ नवीमि वीरं मतिदं हितावहं मनोर्थसंपादनकामकुंजकं ॥ १३ ॥
 शुजंगप्रयात वंदः ॥ प्रशु देववद्यं जिनं विश्वनाथं, जगत्कारुचूडामणि वीरनाथं ॥ स्तुवेऽहं
 जितारिं नतस्वर्णिनाथं, सदाशातिकारं नरेन्द्राधिनाथं ॥ १४ ॥ स्वधरा वंदः ॥ श्रीराजं
 वीरदेवं प्रणतसुरमणि देवमर्त्याधिराजं, कट्याणांप्रोधिटुक्षौविमदशशशधरं प्राण्यसौत्रा-
 न्यकारं ॥ ये प्रव्याःसंस्तुवांतिप्रतिदिनसनघ चारुजन्तया त्रिसंध्यं, प्रख्याति ते लज्जते त्रिभु-
 वनविदितां कीर्तिप्राग्ज्जारकर्त्री ॥ १५ ॥ अथ श्रीवीराष्टकं ॥ तुभ्यं नमः समयधर्मनि-
 वेदकाय, तुभ्यंनमस्त्रिभुवनेश्वरशेखराय ॥ तुभ्यंनमःसुरनरामरसेविताय, तुभ्यंनमो जिन-
 जनार्चितपत्कजाय ॥ २ ॥ तुभ्यंनमोऽन्निलपतेहरिचंदनाय, तुभ्यं नमोवरकुटांवरज्जा-
 स्कराय ॥ तुभ्यंनमः प्रणतदेवनराधिपाय, तुभ्यंनमः प्रवररूपमनोहराय ॥ १ ॥ तुभ्यं
 नमोहरिणनाथकनायकाय, तुभ्यं नमोयतिततिप्रतिपाळकाय ॥ तुभ्यं नमोविकचनीरज
 लोचनाय, तुभ्यंनमस्ततितनादविराजिताय ॥ ३ ॥ तुभ्यंनमः कुशालमर्गविधायकाय,
 तुभ्यंनमोविकटकट्टनिषेधकाय ॥ तुभ्यंनमोऽरितरोगचिकित्सकाय, तुभ्यंनमस्त्रिजगतो
 हृदिभूषणाय ॥ ४ ॥ तुभ्यंनमोददितमोहतमोत्रराय, तुभ्यंनमः कनकसन्नित्नुवननाय ॥

तुभ्यन्मोऽप्यखिलसद्गुणमंदिराय, तुभ्यंनमोमुखकलादितचंद्रिकाय ॥ ५ ॥ तुभ्यन्मोऽस्त-
 श्याजिविभूषिताय, तुभ्य नमः कुमतितापसुप्रजनाय ॥ तुभ्यन्मोमुखपयोधिवह्निकाय-
 तुभ्यन्मोविगतकैतवमत्सराय ॥ ६ ॥ तुभ्यंनमोविदितप्रव्यजनाशयाय, तुभ्यंनमोनि-
 खिलसंशयवारकाय ॥ तुभ्यंनमःप्रथितकीर्तियशोन्विताय, तुभ्यंनमोजितहृषीकसुनीश्वराय ॥
 ७ ॥ तुभ्यंनमोप्रमितपुत्रत्वनिर्मिताय, तुभ्यंनमः सकलवाङ्मयपारगाय ॥ तुभ्यंनमो
 प्रविक्रान्तकनीरदाय, तुभ्यन्मश्चरणैत्रवदायकाय ॥ ८ ॥ कुलकम् ॥ वीराष्टकं पठ-
 तियः सतत त्रिसंध्य, त्यक्त्वा सदा प्रव्रजमीहजङ्घःप्रमादं ॥ तस्मान्निमंशुकुरुतेकमलानिवास,
 कल्याणसागरभ्रुवामसतामप्रीष्ट ॥ ९ ॥ इति ॥ अथ श्रीदोडणपार्श्वनाथस्तवनप्रारंभः ॥
 श्रीकर कण्ठहस्तारं, विधवाद्प्रकाशकं ॥ धियातर्जितवागीशं, परमात्मानमन्वहं ॥ १ ॥
 क्षमागारं कृपापात्रं, गताधिव्याधिदूषण ॥ ठेकतुसर्वकार्येषु, श्रीप्रद दक्षितामय ॥ २ ॥
 धनधान्यकरं लोकै, रमाकेलिपदं परं ॥ मर्मतामदमातोष, मूर्खतादोषवर्जितं ॥ ३ ॥
 अर्तिसतापत्रेत्तार, सूरिश्रेणिशिरोमणि ॥ रिपुसारगसारण, मंगिनाथनिषेवितं ॥ ४ ॥
 तेजसां मंदिरंभ्यं, वारिताशेषध्वजनं ॥ निःसीमं सर्वगोत्राणां, श्रीमंतं गुणसागरं ॥ ५ ॥
 कथिताचारमार्गोषं, कल्याणकर्मदोविधुं ॥ प्रणताजोषदेवेशं, शासनं कांतभूषणं ॥ ६ ॥
 गदितागमसंदोहं, रसनामृतसुंदरं ॥ सूर्याधिकप्रतापादि, रिक्थदं दमितेन्द्रियं ॥ ७ ॥ नाग-
 द्दिविबुधैः सेव्यं, लोकाना आतिकारकं ॥ जडतायाविवेत्तारं, नयतादृहादकारणं ॥ ८ ॥
 पादक सर्वसत्वाना, पार्श्वयक्षेणपूजित ॥ नाकिमानवबंध्यांदिह, नाथनाथजगत्प्रभुं ॥ ९ ॥

क्रियासंततिनेतारं, त्रासितानेकदोषक ॥ कृतांतार्थाविचारङ्गं, तारतास्याप्यराजितं ॥ १० ॥
 संसारसगरेपोतं, धम्मराधिविजितं ॥ सर्वङ्गंभेषगन्धीरं द्वितंविश्वस्यसर्वदा ॥ ११ ॥
 तेजोनिधिसुदापार्थं, नवीमिदोडणात्रिधं ॥ कट्याणसागरारव्येन, संस्तुतं ह्यादिमाद्वैः
 ॥ १२ ॥ द्वादशात्रिःकुलकं ॥ श्रीमद्वोमणपार्थनाथमवनौ, विख्यातगोत्रात्रिधं, ये त्रय्या
 वरत्रावन्नक्रिसंहिताः पूजति सौरव्यार्थिनः ॥ ते सत्त्वाःसुखमानकीर्तिक्रिताः कट्याणतुंगाः
 परा, जायते नुवने प्रतापरुचिरा अादेयवाचः सदाः ॥ १३ ॥ इति ॥ अथ श्रीसेरीशापार्था-
 ष्टकप्रारम्भः ॥ कामौघकर्तारमशेषदेवा, धीशैस्सदाचर्चितपादपद्मं ॥ कट्याणकारं वर-
 नीदवर्णं, सेरीशापार्थंनुश्रवदोडणारव्यं ॥ १ ॥ सत्पुण्यवह्नीवनवारिधारं, निःशेषत्रय्याव-
 लिपूरिताशं ॥ त्रैलोक्यवज्रंनुवनाधिनाथं, सेरीशापार्थंनुश्रवदोडणारव्यं ॥ २ ॥ सारंगवाणी
 जितचिन्तदार्ढ्यं, सारंगगन्त्रीरनिनादकांतं ॥ सारंगसारावकशुभमराजं, सेरीशा० ॥ ३ ॥ विश्वेषु-
 सत्वेषुकृपानिधानं, सम्यक्स्वरत्नाप्रणांकितानं ॥ ड.स्वांगपर्दुदितारिवर्गं, सेरीशा० ॥ ४ ॥
 अणारसंसारसमुदपोतं, सर्वङ्गमाचारपवित्रवशं ॥ राधांतशास्त्रार्थरहस्यदत्तं, सेरीशा०
 ॥ ५ ॥ वाणीरसानंदिताविश्वविश्वं, तीर्थंकर नागपुरेशपूज्यं ॥ सर्वत्रविख्यातयशोत्रिरामं,
 सेरीशा० ॥ ६ ॥ तेजोनिधिं कामितकामकुंभं, सौजन्यसौहार्दविद्यासपात्रं ॥ कट्याणसू-
 र्यादिवितानहेतुं, सेरीशा० ॥ ७ ॥ अादित्यचंद्राधिकदेहनासं, सरप्रातिहार्याष्टकराजि-
 राजं ॥ रफारकृतौमोहितदेवदेवं, सेरीशा० ॥ ८ ॥ कदशः ॥ एवं कट्याणवंधं त्रिभुवन
 तिलकं दोडणार्हसुपार्थं, कृत्वैकाग्र्यंस्वचित्ते त्रवसफलकृते ज्ञानसपत्तिसिद्धये ॥ नित्यंध्याय-

तित्रय्याजिनसमयरताः शुभ्रदेश्यात्रिरामा, स्तेषांहर्षात्प्रकामं प्रवति च सद्ने मंजुपद्मा
 निवासः ॥ ९ ॥ इति ॥ अथ श्रीसंभवनाथाष्टकप्रारम्भः ॥ लावाण्यगेह कलहेमवर्णं, उभो-
 द्वितं सुदरवाहचिन्हं ॥ लक्ष्मीकलापार्णवधिण्यनाथं, देवैर्नतंसंभवनाश्वमीडे ॥ १ ॥
 श्येनागजदारुणकर्मशत्रौ, वीरं वरं पूतचरित्रशोभं ॥ कैमरपदंसद्गुणरत्नखानि, देवैर्नतंसं-
 भवनाश्वमीडे ॥ २ ॥ इक्ष्वाकुवंशं वरतिग्मरश्मि, राकेड्वक्त्र गतवक्रमाद्यं ॥ अज्ञानवे-
 श्यानरशांतिनीर, देवैर्नतं ॥ ३ ॥ ह्रःखोदधौपीतसम्बन्धिर्ह सत्यातिहार्याष्टकराजिराज ॥
 क्षमानिधिं विस्तृतपुण्यमूर्तिं, देवैर्नतं ॥ ४ ॥ नव्यैर्मुद्रासेवितपादपद्मं, सज्जानवज्राहत-
 मोहभूधरं ॥ संसारदावाकुलमर्त्यमेध, देवैर्नतं ॥ ५ ॥ सत्कीर्तिपात्रं हरितारिसेव्यं,
 गजानानदकरं शरण्यं ॥ कारुण्यसंयुक्तपद्मत्राचितं, देवैर्नतं ॥ ६ ॥ कुंदाहर्दंतं कज-
 नचनं वै वपुःश्रियातर्जितसूर्यकातिं ॥ पापक्षकारेऽमलदीपकं तं, देवैर्नतं ॥ ७ ॥ प्रसा-
 न्तरसेवकरस्येप्सितार्थादानेसुरदेवदक्ष ॥ सुरैरनेकैयुतचारदेहं देवैर्नतं ॥ ८ ॥
 ॥ इत्यष्टकं श्रीजिनसंभवस्य पठति त्रेमंजुलत्रावयुत्तया ॥ तेषां गृहे पुण्यनिधानत्रय्या-
 काराश्रयत्रवंतिक्रुद्धयः ॥ ९ ॥ इतिश्रमजिननायकस्य श्रीसूर्यपुराणस्य श्रीसं-
 याष्टकं संपूर्णं ॥ अथ श्रीमत्प न थस्तवनाष्टकप्रारम्भ ॥ १ ॥ श्रियं संततोः
 जीवेश

मोक्षपद्मीप्रदानेकहेतुं, महाकृत्स्नविवेदनेधूमकेतु ॥ क्रमदीवरालीननागांकनाथं, स्तुवे ० ॥ ४ ॥ सनीराहुदस्यामशिष्टांगकांतिं, सुविस्तारिताविष्टपाशेषशांति ॥ गतान्यूनदीर्षं वरं
 सुक्तिनाथ, स्तुवे ० ॥ ५ ॥ नरेन्द्रादिव्यंशदादावधयोगं, निशारत्नकंबाननं त्यकशोकं ॥
 कृपाप्राजनं विश्वदेवाधिनाथ, स्तुवे ० ॥ ६ ॥ जगत्तारकदायकं सज्जनानां, श्रियं वांदि-
 तार्थपाकं निर्धनाना ॥ सुरस्यस्यरुडनिर्जितानाधिनाथं, स्तुवे ० ॥ ७ ॥ कषयाग्रसंतर्पणे-
 वारिदान, जरात्रीरुमातगपचास्यशोभं ॥ विड्ढाष्टकर्मोरेणोपत्रिनाथं, स्तुवे ० ॥ ८ ॥
 इत्येवं श्रीमद्वीरचंद्रजिसुनामद्युक्चंद्रेणजयतुचिरंनुतः पार्थजिनवरोविजितमदरागः ॥
 इति श्रीमत्पार्थनाथस्तवनाष्टकं संपूर्णः ॥ अथ श्रीचिंतामणिपार्थनाथजिनस्तोत्र
 प्रारम्भः ॥ किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किंचिजरोचिर्मयं, किंलावण्यमयं महामणिमय
 कारण्यकेलीमय ॥ विश्वानंदमयं महोदयमयं शोत्रामयं चिन्मय, शुक्लध्यानमयं
 वपुर्जिनपतेर्नृयाज्ञावाहं ॥ १ ॥ पातालं कलयनधरा धवलनाकाशमापूरयन्, दिक्चक्रं
 क्रमयन्सुरासुरनरश्रेणिंचविरमापयन् ॥ ब्रह्मांडं सुपुवन्जलानिजलधेः फेनवहाह्योदयन्,
 श्रीचिंतामणिपार्थसंभवयशोहंसशिर राजते ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्तमोदिन्मणिः
 कामेनकुंजसुष्टिमोक्षेतिः सरणिः सुरेन्द्रकरणिज्योतिः प्रजरासरणिः ॥ दानेदेवमणिर्नतो-
 तमजनिश्रेणिकृपासारणि, विश्वानंदसुधाघृणिर्नवनिदे श्रीपार्थचिंतामणिः ॥ ३ ॥
 श्रीचिंतापार्थविश्वजनतासंजीवनं त्वंमया दृष्टस्तात ततः श्रियः समप्रवन्नाशक्रमाच्चक्रिणः ॥

सुक्तिः कीमतिहरतयोर्बहुविधं सिद्धमनोवांछितं डुर्द्वं हरितं च हर्दिनत्रयं कष्टं प्रणष्टं
 मम ॥ ४ ॥ यस्यप्रौढतमप्रतापतपनः प्रोधामधामाजगजधातः कदिकायकेलिवदनोमो
 द्वांधविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपरं समस्तकमलाकेदीपद्वं राजते सश्रीपार्श्वजिनोर्जनेहितक-
 तौचितमणिः पातु मां ॥ ५ ॥ विश्वव्यापितमोहिनस्तितरणिवार्त्तोऽपिकटपांकुरोदारिद्र्या-
 णिगजावदिं हरिशिशुःकाष्टानिवह्नेः कणः॥पीयूषस्यत्वोपिरेगनिवहं यद्धत्थातेविप्रोमूर्तिः
 स्फूर्तिमतीसतीत्रिजगतीकष्टानिहर्तुर्कमा ॥ ६ ॥ श्रीचितामणिमंत्रमोक्तियतंहीकारसारा-
 श्रित श्रीमर्दनमिञ्जणपासकवितं त्रैलोक्यवन्न्यावद्वं ॥ इधानूतविषापहं विषहरः श्रेय प्र-
 त्नावासाद् सोलासं वसुहांकितं जिनफुलिगानदन्देहिनं ॥ ७ ॥ हींश्रीकारवर नमोहरपर
 ध्यायंतियेयोगिनो हृत्पद्मविनिवेश्यपार्श्वमधिपं चिंतामणिसंज्ञकं ॥ त्रात्वेवामनुजेचनात्रिकर-
 योर्भूयोभुजेदक्षिणे पश्चादष्टदत्तवेपुतेशिवपदं कीत्रैत्रवैजैर्यदो ॥ ८ ॥ नोरोगानैवशोकान-
 कलहकलनानारिमारीप्रचाराः नैवांधंनसमाधानिचडरडरितेडष्टदारिद्रतानो नोश्राकिन्योप्र-
 हानोहरिकरिगणव्याववेतालजात्वा जायंतेपार्श्वचितामणिनतिव्यातः प्राणिनां त्रिकि-
 त्राजा ॥ ९ ॥ गीर्वाण्डमधेनुकुंभमणयः स्वस्यांगणैरंगीणो द्वादादनवमानवाः सविनयः
 तस्मैहितं ध्यायनः ॥ लक्ष्मीस्तस्यवशावशेवगुणिनां ब्रह्मांडसंस्थापिनी श्रीचितामणिपा-
 र्श्वनाथमनिशं संस्तौतियोध्यायसि ॥ १० ॥ इतिजिनपतिपार्श्वपार्श्वपार्श्वार्य्ययद्मः प्रद-
 लितहरितौघः प्रीणितः प्राणिसंधः ॥ त्रिभुवनजनवालादानचिंतामणिक. शिवपदतरुबीजं
 बोधददातु ॥ ११ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिनस्तुतिप्रारंभः ॥ लक्ष्मीर्मह-

स्तुत्यसतीसतीसती प्रवृश्कावोविरतोरतोरतो, जराकजापदमहताहताहता पार्थकणेश-
 मगिरौगिरौगिरौ ॥ १ ॥ अर्च्यमाद्यसुमनामनामना, यःसर्वदेशेषुविनाविनाविना ॥ सम-
 स्तविज्ञानमयोमयोमयो, पार्थकणेशमगिरौगिरौगिरौ ॥ २ ॥ व्यनिष्टजतोःशरणंरणंरणं,
 क्रमादितोयःकमठमठमठं ॥ नराभाराभक्रमक्रमक्रमं, पार्थकणेश ॥ ३ ॥ अज्ञानसत्का-
 मलतावतावता, यदीयसद्भावतानतानता ॥ निर्वाणसौर्यं सुगतागतागता, पार्थकणेश ॥
 ४ ॥ विवादिशाशेषविधिर्विधिर्विधिः, वन्नूवसर्वावहर्हरीहरी ॥ विज्ञानसंज्ञानहरोहरो-
 हरो, पार्थकणेश ॥ ५ ॥ यद्विश्रवोकेकगुरुं गुरु गुरुं, विशाजितायेनवरं वरं वर ॥ तमा-
 लनीलागन्नरं नरं नरं, पार्थकणेश ॥ ६ ॥ संरक्षितोदिग्नुवनं वनं वनं, विशाजितायेषु
 दिवैदिवैदिवै ॥ पादध्वनूतसुरासुरासुराः, पार्थकणेश ॥ ७ ॥ रराजनित्यंसकलाकलाकला,
 समारतृष्णोवृजिनोजिनोजिनो ॥ संहारपूज्यं वृष्यासत्रासत्रा, पार्थकणेश ॥ ८ ॥ तर्कव्याक-
 रणे च नाटकचये काव्याकुवे कौशले, विख्यातो ब्रुवि पद्मनंदिमुनिपस्तत्वस्यकोशं निधिः ॥
 गत्रिरं यमकाष्टकं त्रणति यः शं नूयसा लब्धयते, श्रीपद्मप्रजदेवनिर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मगलं
 ॥ ९ ॥ इतिश्रीपार्थञ्जिनस्तुतिःसंपूर्णं ॥ श्रीगौडिशपार्थप्रचुरतवनप्रारंभः ॥ सक-
 लत्रविकचतःकटपनाकटपवल्ली ॥ गहनवनवितानं प्रोद्भवद्वारिवाहं ॥ फणपतिकवितानं-
 हीचारुगौडीपुरेशमनणुणनिधानं पार्थनाथं नवामि ॥ १ ॥ विधुधनतविजोते पूवदीदार
 पाथा, सुगुग्निरपिसम्यक् देवतुहीवताया ॥ जिनतवपरिकर्मां अजहोताजकीमं, परिरम-
 तिमनोमं पासकीआसिकीमि ॥ २ ॥ शिरसिममसिनाचेद्जोहुवेदरततेरा, सुवनजनचम-

त्कृत् तौषुद्वैवप्तमेरा ॥ जयतिजपिप्रतांवःपासजीकाडनीमि, चतुरनिकरवक्रात् सिफ्रततेरी
 सुनीमे ॥ ३ ॥ त्रमसिममविधाता तूँहिमादरपिदरतुं, कुरुमडपरितुर्णं दोरस्तसीधीनिजर्-
 तु ॥ कलयतिमनुजन्मा यारतारीफ्रकेती, तवत्रिचुवनराजो जोचुजाएकसेति ॥४॥ अग्नि-
 मिषप्रणताहे मातवामाकेनंदा, स्वमसिममशरण्यरतेप्रजजीहुंवंदा ॥ त्वमपियदिमदीया
 अरज्द्विदमनद्व्यवै, प्रवतसकतमोन्यो दादजिस्पासजाव ॥ ५ ॥ नहिनद्विविहितारस्तेक-
 लुगुनहकीकमीमं, सहनजतत्वदाजो नांदिअस्मानजमीमे ॥ परमतमकृपावो गुनद्ववगसी-
 सकीजै, नृपतिमहिमजैत्री मौजमहाराजदीजै ॥ ६ ॥ स्थवपतिपुरतोहो अौरकोदेवकैसा,
 जनयतिकिववादं कथारुपैयसुपैसा ॥ वसतिचुवनत्रतुं नूरआफ्रताफ्रजैसा, रफुरतितवतर-
 स्ते मर्दगाजीहमेसां ॥ ७ ॥ समुदितनवतेजःश्रीधववलाधिगंदेवा, भुशसुपतनुतते नाथहरे-
 रोजसेवा ॥ मयिजिनपयनद्विद किजीइंऐसीनेकी, अलमदमिददद्या जैसीनौवत्फ्रतेकी
 ॥ ८ ॥ कवशः ॥ इहश्रीपुरुहूतवंदितपद्गेणौडीपुरादंकृति, वामाकृदिसरःसरोरूहसममः श्री
 पार्थनाथप्रभुः ॥ श्रीमत्पारकरारथराष्टसुदरीसिंहःकृपाणानिधि, विंशार्हर्माणिरश्वसेनतनु-
 न्दूर्विघार्णवःसंरतुतः ॥ ९ ॥ ॥ इतिश्रीगौडीशपार्थप्रभुस्तवनंश्रीविद्यासागरसूरिविरचि-
 तं संपूर्णं ॥ अथश्रीरत्नाकरपञ्चीसीप्रारम्भः ॥ ॥ श्रेयःश्रियांमंगलकविसध, नरेंद्र
 देवेंद्रनताद्विपद्य ॥ सर्वज्ञसर्वातिशयप्रधान, चिरंजयज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगन्नाया-
 धारकृपावतार, डवीरसंसारविकारवैद्य ॥ श्रीवीतरगल्यमिसुग्धनावा, द्विज्ञप्रजोविज्ञप्रया-
 निकिचित् ॥१॥ किवावलीवाकवितोनावाल, पिबोपुरोजल्पतिनिर्विकल्प. ॥ तथाप्यथार्थ-

कथयामि नाथ, निजाशयं सात्त्वशयस्तवाथे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परित्शीलितंच, न आदिशी-
 लं न तपोन्नितसं ॥ शुभ्रो न ज्ञावोप्यन्नवद्भवेऽस्मिन्, विभ्रो मयात्रांतमहोसुवैव ॥ ४ ॥
 दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, डष्टेन लोत्रारथ्यमहोरगेण ॥ अस्तोऽग्निमानाजगरेणमाया,
 जालेनव-दश्व कथंजजेत्वा ॥ ५ ॥ कृतंमयासुत्रहितंनचेह, लोकेऽपिलोकेशसुखंनमऽभूत् ॥
 अस्मादृशांकेवलमेवजन्म, जिनेशजङ्गेप्रवपूरणाय ॥ ६ ॥ मन्येमनोयत्नमनोज्ञदत्त, त्वदा-
 स्यपीयूषमयूखलात्रात् ॥ दुतंमहानदरसंकटोर, मस्मादृशादेवतदभ्रमतोपि ॥ ७ ॥ त्वतः
 सुडःप्राप्यमिदंमयाप्तं, रत्नत्रयद्वारित्रवन्नमेण ॥ प्रमादनिज्जवशतोगतंतत्, कस्यप्यतो
 नायकशूल्करोमि ॥ ८ ॥ वैराग्यरंगःपरवंचनाय, धर्मोपदेशोजनरंजनाय ॥ वादायविद्या-
 ध्ययनचमेऽभूत्, कियद्भुवेदहारस्यकरंस्वमीश ॥ ९ ॥ परापवादेनसुखंसदोषं, नेत्रंपरस्त्रीज-
 नवीक्षणैः ॥ चेतःपरापायविचिंतनेन, कृतंनविष्यामिकथांविप्रोह ॥ १० ॥ विडंबितं-
 यत्स्मरधस्मरार्तिं, दशावशास्त्वंविषयांधलेन ॥ प्रकाशितं तद्भवतोह्रियैवा, सर्वज्ञसर्वस्वय-
 मेवचेतिसा ॥ ११ ॥ ध्वस्तोन्वमंत्रैःपरमेष्ठिमंत्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागर्भोक्तिः ॥ कर्तुं-
 ध्याकर्मकुदेवसंगा, दवादिहीनाथमतित्रमोमे ॥ १२ ॥ विमुच्यदृग्लक्ष्णतंत्रवंतं, ध्याता-
 मयामूढधियाहदंतः ॥ कटाक्षवक्षोजगत्रीरनात्री, कटितटीयाःशुदृशांविलासाः ॥ १३ ॥
 लोलेक्षणवक्त्रानरीक्षणैः, योमानसेरागलवोविलस्रः ॥ ननु-दसि-शंतपयोधिमध्ये, धौतो-
 प्यगान्तरककारणंकिं ॥ १४ ॥ अंगंनचंगंनगुणोष्णानां, न निर्मलःकोऽपिकदाविलासः ॥
 स्फुरत्प्रधानप्रभुताचकापि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥ १५ ॥ आधुर्गलत्याशुनपापबुद्धे,

गतंवयो नो विपया त्रिधापे ॥ यत्तश्च त्रैष्वन्यविधौ न धर्मैः, स्वाभिन्महामोहविड्वनामे ॥ १६ ॥
 नात्मानपुण्य न त्रयो न पापं, मया विद्वानाकटुगीरपीय ॥ आचारिकर्णैस्त्वयिकेवलाकैः पुरस्कु-
 टेसत्यपि देवधिष्णं ॥ १७ ॥ न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥
 लब्ध्यापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयारण्यविद्यापतुल्य ॥ १८ ॥ चक्रे मया सत्स्वपिका-
 मधेनु, कल्पञ्चितामणिपुस्तुहार्तिः ॥ न जैनधर्मैस्फुटशर्मदैपि, जिनेत्रामपेक्ष्य विमूढप्रावं
 ॥ १९ ॥ सङ्गो गलीदानचरो गकीला, धनगमो नो निधनागमश्च ॥ दारा न कारानरकरस्य-
 चित्ते, व्यर्चितिनित्यं मयकाधमेन ॥ २० ॥ स्थितं न साधो हृदिसाधुदृत्या, परोपकारात्प्रय-
 जोदितं च ॥ कृतं न तीर्थोद्भरणादिकृत्यं मया सुधाहारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरगो-
 नशुरुदिनेषु, नडुर्जनानां वचनेषु जातिः ॥ नाध्यात्मवेजो मम कोऽपि देव, तार्यः कथं कारमयं
 त्रवादिषु ॥ २२ ॥ पूर्वोत्तरेकारिमयानपुण्य, मागाभिजन्मन्यपिनोकरित्ये ॥ यदीदृजोहं ममते-
 ननष्टा, तूतोत्तरेव द्रावित्रवत्रयीज ॥ २३ ॥ किवा सुधाहं बहुधा सुधासुक्रं, पूज्यत्वदप्ये चरित-
 स्वकीय ॥ जटपामियस्मात्त्रिजगत्स्वरूपनिरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥ २४ ॥ दीनोद्धारधुर-
 धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा, पात्रं नात्र जिने जिने श्वर तथाऽप्येतानया चेश्रियं ॥ कित्त्वहं-
 त्रिदमेव केवलमहोसहो धिरलशिव, श्रीरत्नाकरमंगलकै निलयश्रेयस्करं प्रार्थये ॥ २५ ॥
 ॥ इति श्रीसाधारणजिनस्तवनं श्रीरत्नाकरसूरिविरचितं संपूर्णं ॥ ॥ अथ नवकारनोवद-
 प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ वंदितपुरे विविधपरे, श्रीजिनभासनसार ॥ निश्चेश्रीनवकारनित,
 जपता जयजयकार ॥ १ ॥ सडसठ अक्षर अक्षिकफल नवपठनवे निधान ॥ वीतरागस्वयं

सुखवदे, पंचपरमेष्टिप्रधान ॥ १ ॥ एकज अक्षर एकचित्त, समर्थी संपत्ति थाय ॥ संचित
 सागरसातना, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकलमंत्रशिरसुकुटमणि, सहस्रजावितसार ॥
 सोत्रवियामनशुद्धं, नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ वेदहाटकीनवकारथकी श्रीपालनवे-
 शर ॥ पाम्योराज्यप्रसिद्ध ॥ समशानविषेशिवनामकुमरने, सोवनपुरिसोसिद्ध ॥ नव-
 लाख जपतां नरक निवारे, पासे नवनो पार ॥ सोत्रवियांत्रतेचोखंचिते, नित्यजपिये नवकार
 ॥ ५ ॥ बाधी वडशाखा ठिके वासि, हेठल कुंड हुताश ॥ तरकरने मंत्र समर्थी श्रावके, ऊड्यो
 ते आकाज ॥ विधिरित जप्यो विपथर विष टाढे, टाढे असुतधार ॥ सो ० ॥ ६ ॥ बीजोरां
 कारण राय महावल, व्यतर डट्ट विरोध ॥ जेणे नवकारे हत्या टाढी, पाम्योयक्षप्रतिबोध ॥
 नवलाखजपताथाएजिनवर दर्योठेअधिकार ॥ सो ० ॥ ७ ॥ पद्धिपतिजीख्योमुनिवर
 पासे, महाभजनशुद्ध ॥ परनवतेराजसिद्धपृथ्वीपति, पाम्योपरिगावकृद्ध ॥ एमंत्रअ-
 की अमरापुर पहेतो, चारुदत्तसुविचार ॥ सो ० ॥ ८ ॥ सन्यासीकाशीतपसाधतो, पंचा-
 न्नप्रजाव ॥ दीठोश्रीपासकुमारेपन्नग, अथवततोतेटाव ॥ संनलाव्योश्रीनवकारस्व-
 यंसुख, इंद्रशुवनअथवतार ॥ सो ० ॥ ९ ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रियसंयोग ॥
 इणध्याने कष्ट टट्युं उंवरतुं, रक्तपित्तना रोग ॥ निश्चैतुं जपतां नवनिधि थाये, धर्मतणो आ-
 धार ॥ सो ० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्णशुजंगम धाट्या, धरणी करवा घात ॥ परमेष्टिप्रना-
 वेहारफूलनो, वसुधामांहिविख्यात ॥ कमलावतीये पिंगाव कीधो, पापतणो परिहार ॥
 ॥ सो ० ॥ ११ ॥ गयणंणजतिराखीप्रहीने, पाडीवाणप्रहार ॥ पदपंचसुणंतांपाडुप-

तिवर, ते श्व कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमामंदिर, त्रवङ्गः खत्रंजणहार ॥ सो० ॥
 ॥ १२ ॥ कंबलनेसंबलकादवकाहया, शकटपाचत्रोमान ॥ दीधेनवकारे गया देवलोके, विद-
 से अमरविमान ॥ एमंत्रयकी सपति वसुधादत्ते, विदसेजेनविहार ॥ सो० ॥ १३ ॥
 अगों चोवीशी हुइ अनंति, दोशे वारअनत ॥ नवकारतणी कोइ आदि न जाणे, इम चाखे
 अरिहंत ॥ पूरवदित्रिचारे आदिप्रपंचे, समर्या सपतिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठिसुरपद
 ते पण पामे, जे कृतकर्मकठोर ॥ पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष परेयो, मण्डिर ने एकमोर ॥ सहशु-
 रुनेसन्मुखविधिसमरंता, सफलजनमसंसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपणतस्करकीधो
 दोहखरोपरसिद्ध ॥ तिहांशेतेनवकारमुणान्यो, पान्योअमरनीकृद्ध ॥ जेठने धर आवी
 विघ्ननिवार्या, सुरे करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्ठिज्ञानजपंचह, पंचदानचारित्र ॥
 पंचसद्यायमहादानपंचह, पंचसुमतिसमकित ॥ पंचप्रमादहविषयतजोपंच, पादोपंचा-
 चार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश लक्ष्य ॥ नितजपियेनवकारसारसंपतिसुखदायक ॥ शुद्धमंत्र
 ए शाश्वतो इम जेपे श्रीजगनायक ॥ श्रीअरिहंतसुसिद्ध, शुद्धआचार्यत्राणीजे ॥ श्रीजवद्या-
 यसुसाधु, पंचपरमेष्ठिशुणीजे ॥ नवकारसारससारवे, कुशलदात्र वाचक कहे ॥ एकचित्त
 आराधता, विविधकृष्टिवलितवहे ॥ १८ ॥ ॥ इतिश्रीनवकारवदसंपूर्णः ॥ ॥ अथ
 पंचपरमेष्ठिस्तोत्रप्रारंभः ॥ इहा ॥ सुपकारणत्रवियण । समरो नित नवकार ॥ जिनसा
 सप्रआगम । चउदपुरवनोसार ॥ १ ॥ इणे मंत्रे महिमा, कहितां न लहुं पार ॥ सुरतरुमन
 संचित, बलितफलदातार ॥ २ ॥ सुरदानवमानव, सेवकरेकरजोडी ॥ नृमंडलविचरे,

तारं च वियणकोडि ॥ ३ ॥ सुरवदेविवसें, अतिशयजासञ्चनंत ॥ पहिदेपदनमिदं,
 अग्निं जणअरिदंत ॥ ४ ॥ जेपंनरेभेदं, सिद्धयत्नगवंत ॥ पंचमिगतत्तिपोदता, अष्ट-
 करमकरिञ्चंत ॥ ५ ॥ कलअकलस्वरुपी, पंचानंदकदेह ॥ सिद्धपयप्रणसुं, वीजेपदव-
 लीपह ॥ ६ ॥ गजभारधुरंधर, सुंदरससीहरसोम ॥ करसाधारणवारण, गुणवित्तिसय-
 तोम ॥ ७ ॥ सुतजाणसिरोमणि, सायरजेमगंतीर ॥ वीजेपदनमीडं, आचारजगिरधीर
 ॥ ८ ॥ सुतधरगुणधरअगाव, शुभ्रप्रणवेंसार ॥ तपविधरसुंजोवें, प्रांखेअरथविचार
 ॥ ९ ॥ सुनिवरगुणजुता, तेकिहिडंजवञ्चाय ॥ चउथेपदनमीडं, अहनिजतेहनापाय
 ॥ १० ॥ पंचाश्रवतादे, पादेंपंचाचार ॥ तपसीगुणधारी, वारिविषयविकार ॥ ११ ॥
 त्रसथावरपीहर, लोकमांहिजेसाध ॥ त्रिविधेतेप्रणसुं, परमारथजिणेंलाध ॥ १२ ॥
 अरीकरीहरीडायणी, सायणीत्रूवेताव ॥ सर्वेपापपणसे, थासेंमंगलमाव ॥ १३ ॥
 इणेंसमरणसंकट, कष्टदवेंततकाव ॥ जेजंपेइमजिनप्रभु, सुरवीरसीसरसाव ॥ १४ ॥
 ॥ इतिश्रीपंचपरमेष्ठिरतोत्रसंपूर्ण ॥ ॥ अथगौतमस्वामीनोरसप्रारंभः ॥ प्रथमप्राया ॥
 वीरजिणेंसरचरणकमल, कमलाकयवासो ॥ पणमविपभणिसुंसामिसाल, गोयमशुरु-
 सारो ॥ मणतणुंययणएकंतकरवी, निसुणोत्रोत्रवियां ॥ जिमनिवसेतुहादेहगेह, गुणग-
 णगहाहिया ॥ १ ॥ जंबूदीवसिन्निरहखित, खोणीतलमंडण ॥ मधधदेशेसेणियनरेत्रा,
 रिउदवदखंडण ॥ धणवरशुधरगामनाम, जिहांजणगुणसजा ॥ विपवसेवसुत्रूइतव,
 जसुपुहवीत्रजा ॥ २ ॥ तांणपुत्तसिरिडंदनूइ, नूवलपसिधो ॥ चउदहविद्याविहिरुप

नारीरसविश्वे ॥ विनयविवेकविचारसार, गुणगणहमनोहर ॥ सातहाथसुप्रमाणदेह
 रूपरेखावर ॥ ३ ॥ नयणवयणकरचरणजिण, विपंकजलपीडीय ॥ तेजेताराचंदसूर,
 आकाशप्रभास्त्रिय ॥ रूर्वेमयणंभ्रनगकरवी, मेदिहलं निरघाडीय ॥ धीरमेमेरुगंभीरसिंधु
 चगमच्यचाडीय ॥ ४ ॥ पेल्विनिस्रवमरुवजास, जिणजपेकिचिय ॥ एकाकीकिलत्रीतइव,
 गुणमेदहासंचिय ॥ अहवानिश्रुंषुधजम्मजिणवरइणअंचिअ ॥ रंभापुजमगजरीगगा,
 रतिहाविधिवंचीय ॥ ५ ॥ नहिदुधनहिंशुरुकविनकोइ, जसुआगलरहिउं ॥ पंचासया-
 गुणपत्रालाहिदेपरवरिउं ॥ करेनिरंतरयज्ञकर्ममिथ्यामतिमोहिय ॥ इणललहोसेचर-
 मनाण, दंसणहविसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु वंद ॥ जंबूदीवहजंबूदीवहजरहवासंमि, खोणि-
 तलमंडणो ॥ मगधदेससेणीयनरेसर, वरशुधरगामतिहां ॥ विपवसेवसुभूइसुदर, तसु-
 नजापुहवीसयल ॥ गुणगणरुवनिहाण, ताणपुत्तविद्यानिदलं, गोयमअतिहिसुजाण
 ॥ ७ ॥ द्वितीयत्राषा ॥ चरमजिणेरकेवलनाणी, चजविहसंपपइटाजाणी ॥ पावा-
 पुरसामीसंपत्तो, चजविहदेवनिकार्येजुत्तो ॥ ८ ॥ देवसेमवसरणतिहाकीजे, जिणदीते
 मिथ्यामतिखीजे ॥ त्रियुवनशुरुसिंहासणवइटा, ततस्त्रिण मोहदिगंतेपइटा ॥ ९ ॥
 कोधमानमयामदपूरा, जायेनाटाजिमदिनचोरा ॥ देवडंडहिआकाशवाजी, धरमनरे-
 सरअ्याविजगाजी ॥ १० ॥ कुसुमट्टिविरचेतिहदेवा, चाशठइन्जसुमगोसेवा ॥ चामर
 ठासिरोवरिसोहे, रूपेजिणवरजगसहुमोहे ॥ ११ ॥ उवसमरसररररीवरसंता, जोजन
 वाणिवखाणकरंता ॥ जाणविव-धमाणजिणप्या, सुरनरकिन्नरअ्यावेराया ॥ १२ ॥

कतिसमूर्द्धजदहवकंता, गयणविमाणेरणणकंता ॥ पखवि इंद्रभूद मनाचिंते, सुरआवेअ-
 म्हजगन होवते ॥ १३ ॥ तीर तररुक जिम ते वहता, समवसरण पद्दोता गद्गहता ॥ तो अत्रि-
 मत्ते गोयमजंप्पे, इण अवरसरे कोपे तणु कंप्पे ॥ १४ ॥ मूढवोक अजाणीउ बोले ॥ सुर जाण-
 ता इम कांड डोले ॥ मू अणाल कोड जाण चण्णिजे, मेरु अवर केम उपमादीजे ॥ १५ ॥ वरतु-
 वंदः ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाणसंपन्न, पावापुरि सुरमहिषपत्तनाहसंसारतारण ॥ तिहिं-
 देवेहिं निमवियसमवसरणवहुसुककारण ॥ जिणवरजगज्जीयकरे तेजेकरिदिनकार ॥
 सिंहासणसाभिप्यवविउ हुउंसुजयजयकार ॥ १६ ॥ ततीयत्राषा ॥ तोचडिउधणमाण-
 गजे, इंद्रभूद भूयदेवतो ॥ हुंकारो करीसंचरिउ कवण सुजिणवरदेवतो ॥ १७ ॥ जोजन-
 भूमिसमोसरण पखवी प्रथमारत्रतो ॥ १८ ॥ मणिमयतीरणदंडधज, कोसीसेनवधाटतो,
 वयरविवर्जितजंतुगण, प्रातिहारजआठतो ॥ १९ ॥ सुरनरकिन्नरअसुरवर, इंद्रइंजा-
 णिरयतो ॥ चित्तचमक्रियचित्तोए सेवता प्रभुपायतो ॥ २० ॥ सहसकीरणसम वीरजि-
 ण पखवी रूपविसावतो, एहअसंनवर, साचोए इंद्रजावतो ॥ २१ ॥ तोबोलावेत्रिजग-
 गुरु, इंद्रभूदनामेणतो ॥ श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेदपणतो ॥ २२ ॥ मानमेदिह-
 मदुवलीकरे, जगतेंनामेसीसतो ॥ पंचसयासुं जतविजए, गोयमपहिवोसीसतो ॥ २३ ॥
 वधवसंजमसुणविकरे, अगिनिभूदआवेइतो ॥ नाम देइ आत्रापकरे, तंपुणप्रतिबोधइतो ॥
 २४ ॥ इणि अनुक्रमे गणहररण, आद्या वीर इंधारतो ॥ तोउपदेशें जुवनगुरुं, संजम-
 सुंजत वारतो ॥ २५ ॥ विहुं उपवासे पारणुंए, आपणपे विहरंततो ॥ गोयमसंजमजगस-

यत्, जयजयकार करंततो ॥१६॥ वस्तु वंद ॥ ॥ इंद्रद्रुइ इंद्रद्रुइ चदिय बहुमान, हुका-
 रोकरकंपतो समवसरण पुहती तुरंतो ॥ इह संसार सामी सवे, चरमनाहफेडेफुरंतो ॥ बोध
 वीजसजायमनेगोयमत्रवहविरत्त ॥ दिख देइ सिक्कासहिय, गणहरपयसंपत्त ॥ १७ ॥
 चतुर्थनाथा ॥ आजहुअसुविहाण, आजपचेदिमांपुष्पत्रो ॥ दीजा गोयमस्सामि, जो-
 नियनयणे अमियत्रो ॥ १८ ॥ सिस्त्रिगोयमगाहा, पंचसयामुनिपरवरिय ॥ त्रूमियकर-
 यविहार, त्रवियां जन पडिवोह करे ॥ १९ ॥ समवसरणमकार, जे जे संका उपजेए ॥ ते ते
 परउपगार, कारण पूजे सुनिपवरो ॥ २० ॥ जिहाजिहां दीजे दिक्क, तिहां तिहां केवल उपजेए ॥
 आपकन्हैअणहुंत, गोयम दीजे दान इम ॥ २१ ॥ शुरुजपरशुरुत्रत्ति, सामिगोयमउप-
 निय ॥ इणलवकवदानाण, रागजराखरंगत्ररं ॥ २२ ॥ जोअष्टापदशैल, वंदे चडि चउवि-
 सजिण ॥ आतमलदधिविसेण, चरमसरीरीसाइसुनि ॥ २३ ॥ इअदेसणनिसुणेइ,
 गोयमगाणहरसंचदिउ ॥ तापसपन्नरसएण, तोसुनिदीवोआवतोए ॥ २४ ॥ तवसोसि-
 यनियअंग, अहसकिनविउपजेए ॥ किम चढसे दढकाय, गज जिम दिसे गाजतोए ॥ २५ ॥
 गिरुउं ए अत्रिमान, तापस जो मन चितवेए ॥ तो सुनि चडिउवेग, आलंबविदिनकरकिरण
 ॥ २६ ॥ कंचणमणिनिप्यन्न, दंडकलसधजवडसहिय ॥ पेलवी परमाणंद, जिणहर त्र-
 रहेसर महिअ ॥ २७ ॥ नियनियकायप्रमाण, चउदेसिसंठिअजिणहविंव ॥ पणमवि
 मन उह्लास, गोयम गाणहर तिहांवासिय ॥ २८ ॥ वयरसामिनो जीव, तिर्यकर्जुंनकदेव
 तिहां ॥ प्रबोधे पुंस्त्रीक, कंडरीक अअधयन त्रणी ॥ २९ ॥ वलता गोयमस्सामि, सवि तापस

प्रतिबोधकरे ॥ वेद आपणे साध, चादं जिमजूथाधिपति ॥ ४० ॥ स्वीरखंडधृतआणि,
 अमिअ वूठ अंगुठ उवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ ४१ ॥ पंचसयासुत्र
 त्राव, उज्ज्वलं त्रींखीरमीसं ॥ साचा शुरु संजोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ ४२ ॥
 पंचसया जिणनाह, समवसरणप्राकारत्रय ॥ पेलवि केवलनाण, उपन्नो उज्जोय करे ॥ ४३ ॥
 जाणे जिणह पीयूष, गाजंति धणमेध जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया
 ॥ ४४ ॥ वस्तु वंदः ॥ इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे नाणसंपन्न ॥ पन्नरह सयपरवरियहरिय
 डरियजिणनाह वंदे ॥ जाणवि जगगुरुवयणतिह नाणअप्पाण निंदे ॥ चरमजिणेसर इम
 त्राणे, गोयममकरिसखेउ ॥ वेहजइआपणसहीहोसुं तुझावेउ ॥ ४५ ॥ पंचमत्राधा ॥
 सामीउंवीरजिणंद, पुनिमचंद जिम उझासिअ ॥ विहरिउं त्ररहवासमि, वरिस वहु-
 तर संवसिअ ॥ उवतोए कणयपउमेव, पायकमल संधे सहिअ ॥ आविउं नयणाणंद,
 नयरपावापुरि सुरमहिय ॥ ४६ ॥ पेलिउं गोयमसामी देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणए
 त्रिसलादेवी, नंदन पहेतो परम पए ॥ वलतोए देवआकास, पेलवि जाणिय जिणसमेए ॥
 तोसुनिए मनविखवाद, नादनेद जिम उपनोए ॥ ४७ ॥ कुणसमोए सामीयदेखि, आप-
 कन्हहुंटादिउंए ॥ जाणतोए तिहुअणनाह, लोकविवहर न पादिउंए ॥ अतित्रहुंए
 कीधतुं सामि, जाणीउं केवल मागसए ॥ चितविउंए वादक जेम अहवा केने दागसए
 ॥ ४८ ॥ हुंकिमए वीरजिणद, त्रगतें त्रोवो त्रोवविउंए ॥ आपणोए अविहव नेह
 नाहनसपे साचव्योए ॥ साचोए इहवीतराग, नेहनजेणे वादिउंए ॥ इणसमेए गोयमचित्त,

रणवैरगं वाविज् ॥ ४९ ॥ आवतोए जोऊलट, रहेतोरगंसाहिज् ॥ केवलए
 नाणउपत्त, गोयमसेहेजं उमाहिज् ॥ त्रिजुवनए जयजयकार, केवलमहिमासुरकरेए ॥
 गणधरए करयवत्थाए, त्रवियण त्रव इम निस्तरेए ॥ ५० ॥ वस्तु ठद् ॥ ॥ पढमगाण-
 हर पढमगाणहर वरस पंचास, गिद्विवासें संवसियतीसवरिससंजमवित्रूसिय ॥ सिरिकेवल
 नाण पुण बारवरिस तिहुयण नर्मसिय ॥ रायगिहिनयरिठविञ्चवाणवइवरिसाठ ॥ सामि
 गोयमगुणनिवो होसे सिवपुर ठाठ ॥ ५१ ॥ पपुत्राषा ॥ ॥ जिमसहकरं कोयल टहुके,
 जिम कुसुमवनेपरिमलवहके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंभाजल लहेरेहलके, जिम
 कणयाचल तेजं ऊलके, तिम गोयम सौत्रागतिधि ॥ ५२ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा,
 जिम सुरवरसिरिकणयवतंसा, जिम महुपरराजीववनी ॥ जिम रयणापर रयणें विलसे,
 जिम अंवर तारागणविकसे, तिमगोयमगुणकेलिवनी ॥ ५३ ॥ पूनिमनिसि जिम ससिहर
 सोहे, सुरतरुमहिमा जिम जगमोहे ॥ पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर
 राजे, नरवइधर जिम मयगल गाजे तिम जिनशासनसुनिपवरो ॥ ५४ ॥ जिम सुरतरुवर
 सोहेशाखा, जिम उत्तममखमधुरीत्राखा, जिम वनकेतकीमहमहेए ॥ जिमत्रूमिपतिजु-
 यवल चमके, जिम जिनमंदीर धंटरणके, तिम गोयमलब्धिहिगहगहेए ॥ ५५ ॥ चिंता-
 मणि कर चढिठं आज, सुरतरुसारेवंठितकाज ॥ कामकुंजसविवसहुआए ॥ कामगवी
 पूरेमनकामीय, अष्टमहासिद्धि आवे धामीय, सामिगोयम अणुसरोए ॥ ५६ ॥ पणवक्क-
 र पहेवो पत्रणीजे, मायावीजश्रवण निसुणीजे, श्रीमतीशोभा संत्रवेए ॥ देवहधुरिञ्च-

रिहंत नमीजं ॥ विनयपहुजववायशुणीजं, इण मंजं गोयम नमोए ॥ ५७ ॥ पुरपुरव-
 सतां कांड करीजं, देशदेशांतर कांड नमीजं कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम स-
 मरीजं, काज समग्रह (सुमगल) तत्खण सीजे, नवनिधि विलसे तास धरो ॥ ५८ ॥ चउदहस-
 यवारोत्तरवरसें, गोयम गणहर केवलदिवसें, “खंनयसरसिरेपासपसाये” किशुं कवित उपगा-
 रकरो ॥ आदंमगलएहपत्रणीजं, पवर महोवव पहिवो कीजे, रिच्छिच्छिकछाणकरो ॥ ५९ ॥
 धन्यमाता जिणें जयरें धरिया, धन्यपिता जिण कुल अवतरिया, धन्यसहगुरु जिणें दिस्विया-
 ए, विनयवंत विद्यात्रंडार, ॥ जसगुण पुहवी न दात्रेपार, वरुजिमशाखाविस्तरोए ॥ ६० ॥
 गौतमस्वामीनो रास त्रणीजं, चउद्विद संघ रदियायत कीजें सकलसंघआणंदकरो, कुंकम
 चंदनठोदेवरारो, माणकमोतीना चोक पूरावो, रयणसिंहासणवेसणोए ॥ ६१ ॥ तिहां
 वेशी गुरु देशना देशे, त्रविकजीवनां काज सरीशे, उदयवंतसुनिदम त्रणेए, गौतमस्वामी-
 तणो ए रास त्रणतां सुणतां वीलविलास, सासय सुखनिधि संपजेए ॥ ६२ ॥ एह रास जे त्रणे
 त्रणोवे, वरमंगल दाहि धरआवे, मनवंडित आया फलोए ॥ ६३ ॥ इति श्रीगौतमस्वा-
 मीनोरास संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीगौतमस्वामीनो लहुरास प्रारंभः ॥ ॥ श्रीगौतमगुरु
 परत्रातधुरें समरो त्रविकाजन चित्तखरे ॥ करकमलाकमलासुपरे, श्रीवीरजिनेश्वरशीशाशिरै
 ॥ १ ॥ अष्टापद चडिआ दाधिवले, जिनपडिमा वंदि अकलकलें ॥ तापस पन्नरसें तिन-
 मले, प्रतिबोधा वयणरसें निश्रवते ॥ २ ॥ अक्षीणमहानसी दाधि घणी, पंचामृतपरिणल
 अन्नसुणि ॥ करिय पारणुं वातवणी, केवलसिरेआविद्यतसत्रणी ॥ ३ ॥ जसशिर-

गौतम द्वाथ द्विये, सोय केवलपदवी ताम द्विये ॥ वाणीसुधारस जेद् द्विये, उत्तमफलसुगति
 तरत द्विये, ॥ ४ ॥ प्रणवअक्षर पहिलो राजे, मायावीजमंत्र महिमाकाजे ॥ श्रीकरगौतम
 गुरुगुणगजे, जपतां जुगतें संकट प्रांजे ॥ ५ ॥ कामधेनुसुरतरसगे, चिंतामणिचिंतितदे
 रणे ॥ नामाक्षरगौतमचंगें ध्याताहोयदिनप्रतंसुखचंगें ॥ ६ ॥ इंद्रभूति जस नाम कर्हो,
 वसुभूति पिता तुझे चतुरवहो ॥ पृथ्वीमाता गुण संप्रहो, गौतमगुरुगोव्नीनी आणवहो
 ॥ ७ ॥ अरिकरि हरि सवि वश थाए, वलीरानवेवाजवसुभद्राय ॥ रोगशोकआपद् जाए,
 गौतमगुरुना जें गुण गाए ॥ ८ ॥ आकाणडावण दूर टवे, वीठ्ठियां प्रीतम आवी मवे ॥ भूत
 भेत कवहीं न ठवे, गौतमनामें सवि आश फवे ॥ ९ ॥ श्रीगौतमनामें रूपकवा, गजरथ
 वरपावकद्वयसुभला ॥ रामराम जस मान प्रदां, मृगनयणी गयगमणी महिदा ॥ १० ॥
 मृगामद् चदन वल्लधरे, सुतसोहग सुंदर सुजस वरें ॥ कंचन मणिमोतीय रयणत्ररे, गौतम
 नामें सब काज सरे ॥ ११ ॥ वचन विदास विद्या आवे, मनरुचतां प्रोजन सवि पावे ॥ इःख
 दारिद्र कवहीं नावे, गौतमगुरु जस हिवडे प्रावे ॥ १२ ॥ पाप सकल वेगें नासे, नितध्यान
 धरो मनजड्दासें ॥ श्रीगौतमगुरु पूजो वासें, गणीविजयशेखर कहे सुविदासें ॥ १३ ॥ इति
 श्रीगौतमस्वामीनो वधुरास संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक ठंड प्रारभ ॥ चोपाइ ॥
 वीरजिणेभ्रकरो शिष्य, गौतमनाम जपो निशदाश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घरदिवसे
 नवेनिधान ॥ १ ॥ गौतमनामै गिरिवर चंदे, मनवांजित हेला संपजे ॥ गौतमनामै नावे रोग,
 गौतमनामै सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरीविरुआ वंकड, जसनामै नावे हुकडा ॥ भूत भेत नवि मंडे

प्राण, ते गौतमनां करं वखाण ॥३॥ गौतमनामं निर्मलकाय, गौतमनामे वधे अप्राय ॥ गौत-
 म जिणशासनशिणगार, गौतमनामे जयजयकार ॥ ४ ॥ शाळदाळसुरदांघृतगोव, मनवं-
 ठिकापफ्तंबोव ॥ धरे सुधरणी निर्मलचित्त, गौतमनामे पुत्रविनीत ॥ ५ ॥ गौतम जदयो
 अविचल प्राण, गौतमनाम जपो जगजाण ॥ मोटां मंदिर मेरुसमान, गौतमनामे सफल
 विहाण ॥ ६ ॥ धर मयगळ धोफानी जोड, पहेचे वारु वंठितकोड ॥ महियलमानेमोहीटा
 राय, जो तूढे गौतमना पाय ॥७॥ गौतमप्रणन्यां पातिक टवे, उत्तम नरनी संगति मवे ॥
 गौतमनामे निर्मलज्ञान, गौतमनामं वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरुगौत-
 मना गुण ठे बहु ॥ कहे जावण्यसमय कर जोफ, गौतम तूढे संपत्तकोड ॥ ९ ॥ इति
 गौतमाष्टक संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक प्रारंभ ॥ रागप्रजाती ॥ मातपृथ्वी सुत
 प्रात उठी नमो, गणधर गौतम नाम गेलें । प्रहसमय प्रेमसुं जेह ध्यातां सदा, चढतीकळा
 होय वंशवेले ॥ मात० ॥ १ ॥ वसुत्रतिनंदन विश्वजनवंदन, डरितनिकंदननाम जेनुं ॥
 अत्रेदवुश्करी यविजन जे जजे, पूर्ण पौतंसहिनाग्य तेहनुं ॥ मात० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह-
 चिंतामणि सुरतरु, कामितपूरण कामधेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेह्यकी अधिक
 नहि महत्स्य केनुं ॥ मात० ॥ ३ ॥ प्राणवञ्चार्द धरी मायाबीजवकरी, स्वमुखंगौतम नाम
 ध्यायें ॥ कोडमनकामना सफलवेगें फलें, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मात० ॥ ४ ॥ ज्ञानबल
 तेजस सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पोमा ॥ अखंडप्रचंडप्रताप होय अवनिमा, सुरनर
 जेहने श्रीश नाम ॥ मात० ॥ ५ ॥ डष्टदुरेटलेस्वजनमेवो मवे, आधिजपाधि ने ध्याधि नासे ॥ चत-

नां भेतनां जोर प्रागे वली, गौतमनाम जपतां जह्वसां॥मात०॥६॥तीर्थं आष्टापर्दं आप लब्धं
 जह्, पन्नरसेत्राणने दीरूक दीधी ॥ अठमपारणे तापसकारणे, क्षीरलब्धं करी अष्टकदीधी
 ॥ मात० ॥ ७ ॥ वरस पञ्चासत्तर्गो भृहवासं वरस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ वार वर-
 सांलग्ने केवल त्रोगन्धुं, त्रकि जेनी करे नित्य देवा ॥ मात० ॥ ८ ॥ महियल गौतम गौत्रमहिमा
 निधि, गुणनिधि सिद्धिने सिद्धिदायी ॥ जदय जस नामथी अधिक दीवा लहे, सुजस सौत्रा-
 न्य दीवत सवाइ ॥ मात० ॥ ९ ॥ इति गौतमाष्टकं संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीगौतमस्तुति
 प्रारंभः ॥ श्रीरुद्रभूतिवसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीत्रवं गौतम गौत्र रत्नं ॥ स्तुवंति देवाऽसुरमानवंजाः,
 स गौतमो यत्तु वां वितं मे ॥ १ ॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मंत्रं महानंदसुखाय वरस्य ॥
 ध्यायंत्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौतमो यत्तु वां वितं मे ॥ २ ॥ श्रीवर्धमाना त्रिपदी भवाप्य,
 सुहृत्समात्रेण कृतानि येन ॥ अंगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौतमः ० ॥ ३ ॥ अष्टापदाङ्गौ
 गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवंदनाय ॥ निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौतमः ० ॥ ४ ॥
 त्रिपंचसंख्याशततापसानां, तपःश्रदानामपुनर्नवाय ॥ अक्षीणलब्ध्या परमाद्भुता,
 स गौतमः ० ॥ ५ ॥ सदक्षिणं त्रोजनमेव देयं, साधर्मिकं संघसपर्ययेति ॥ कैवल्यवक्त्रंपददौ
 सुनीनां, स गौतमः ० ॥ ६ ॥ परस्या त्रिधानं मुनयोऽपि सर्वे गृह्णाति त्रिधा त्रमणस्य कावे ॥
 मिष्टान्नपानांवरपूर्णकामा, स गौतमः ० ॥ ७ ॥ शिवं गते तर्तेरि वीरनाथे, युगप्रधानत्वमि-
 दैव मत्वा ॥ पट्टा त्रिको विदधे सुरेभ्यः, स गौतमः ० ॥ ८ ॥ श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रत्या-
 तकावे मुनिपुंगवा यो ॥ पठंति ते स्वरिपद च देवानंदं व्रजंते नितरां क्रमेण ॥ ९ ॥ इति श्री

गौतमस्यामिस्तोत्र समाप्तं ॥ ॥ अथ श्रीगौतमस्यामिस्तोत्र प्रारभ्य ॥ ॥ आर्तुद-
 विक्रीडितं दत्त ॥ स्वर्णाष्टाप्रसहस्रपत्रकमले, पद्मासनस्थं मुनिं । स्फूर्जद्ब्रह्मिधिविभूषितं
 गणधरं, श्रीगौतमस्यामिनं ॥ देवेंद्राद्यमरावलीविरचितोपास्तिंसमस्ताद्भव । श्रीवास-
 तिशयप्रन्नापरिगतं, ध्यायामि योगीश्वरं ॥ १ ॥ किं ज्वाधंभुविगर्भगौरसतीद्वै श्रंजोपलां-
 तर्दलैः । किं किं श्वेतसरोजपुंजसुचित्रिः किं ब्रह्मरोचिकणैः ॥ किं शुक्लस्मितपिंफकैश्चघटिता,
 किं केवलाचासुतै । मूर्तिस्ते गणनाश्वगौतम हृदि ध्यानाधिदेवी मम ॥ ९ ॥ श्रीखंडादिप-
 दार्थसार्थकणिकां, किं वर्तयित्वासतां । किचेतांसि यथासि किं गणत्रता निर्यार्यतद्वाक्यमुधां ॥
 स्थानीकृत्य किमप्रमत्तकमुनेः सौस्थानिसंबुधैर्ष्यं किं । मूर्तिस्तेविदुषे ममस्मृतिपथाऽधिष्टा-
 यिनीगौतमः ॥ ३ ॥ नीरागरस्य तपस्विनोऽङ्गुतसुख, ज्ञाताद्गृहित्वादत्वं । तस्याप्यहशमां-
 बुधरसतर, श्रीजैनमूर्तेर्महः ॥ तस्याएवहिरामणिकगुणं सौत्रान्यत्रान्योद्भवं । मञ्जा-
 नांबुजहंसिकासुनिकृतामूर्तिः प्रजो तेऽमला ॥ ४ ॥ किं ध्यानानलगाहितैशुचिदत्तैरसा-
 त्रिसन्नावना । स्मोद्दृष्टः किमुशीलचदनरसैरावेऽपि मूर्तिरतव ॥ सम्यग्दर्शनपारदैः कि-
 सुतपःशुद्धैरसोधिप्रजो । मच्चित्तमिति जिनैः किमुशमेन्द्रभावतश्चाघटी ॥ ५ ॥ किं वि-
 श्वोपकृतिस्त्रयोधममयी, किं पुण्यपेटीमयी । किंवात्यटपमयी किमुत्सवमयी, पावित्र्यपिं-
 डिमयी ॥ किं कटपद्ममयी मरुन्मणिमयी, किं कामदोषधीमयि । या धत्ते तव नाश मे हृदिततः
 कां कांतरूपश्रियं ॥ ६ ॥ किं कर्पूरमयी सुचंदनमयी पीयूषतेजोमयी । किं चूर्णैकृतचंद्रमडल-
 मयी किं चडलङ्गीमयी ॥ किं वाऽऽनंदमयी कृपारसमयी, किं साधुसुजा मयी । त्वंतर्मेहृदि

नाथमूर्तिरमला नो प्राति किंकिमयी ॥७॥ अंतःसारमपासुपास्यकिमुकिं प्रार्थयन्नतानां रसं ।
 सौत्राग्य किमुकामनीयसुगुणश्रेणे सुंषित्वा च किं ॥ सर्वस्वंशंभशीतगोःशुचरुचेरोज्ज्वल्य-
 माडिद्य किं । जाता मे हृदि योगमार्गपथिकीमूर्तिःप्रभोतेऽमला ॥ ८ ॥ ब्रह्मांडोदरपूरणा-
 धिकयशःकर्पूरपारीरजः । पुत्रैःकिं धवलीकृता तव तनु र्मध्यानसद्मस्थिता ॥ किं शुक्लस्मि-
 तसुजरे हंतदद्व डःकर्मकुत्रक्षरः । ध्यानाच्चासृत्ववेणित्रि ह्रुततरा श्रीगौतम भ्राजते ॥ ९ ॥ किं त्रै-
 लोक्यरमाकटाह्वलहरीलीलात्रिराविगिता । किं चोत्पन्नकृपासमुद्रमकरोजारोत्करंवीकृता ॥
 किं ध्यानानलदह्यमाननिखिलातःकष्टकष्टावली, रक्षात्रि धवलीकृता मम हृदि श्रीगौतम त्वत-
 नुः ॥ १० ॥ इह ध्यानसुधासमुज्ज्वलहरीचूडाचलांदोवन । क्रीडानिश्रवरोचिरुज्ज्व-
 लवपुःश्रीगौतमो मे हृदि ॥ त्रित्वा मोहकपाटसपुटमिति प्रोह्लासितातःस्फुरज्ज्योतिर्मुक्तिन-
 तविनी नयतु मा सन्नहतामात्मनः ॥ ११ ॥ श्रीमज्जौतमपादवदनरुचिःश्रीवाङ्मयस्वामि-
 नी । मर्त्यक्षेत्रनगेश्वरी त्रिभुवनस्थस्वामिनी श्रीमती ॥ तेजोराशिरुदासविश्रुतिभुजोयक्षा-
 धिपश्रीसुरा, धीशाःशासनदं वताश्च ददतां श्रेयासि नूयासि न. ॥ १२ ॥ ॥ इति श्री-
 गौतमस्वामिनःस्तवन संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीगौतमशुरुनी चोपाह प्रारंभः ॥ ॥ जयो
 जयो गौतमगणधार, मोटी लडिधतणो वंडार । समरे वंदितसुखदातार, जयो जयो गौतम
 गणधार ॥ १ ॥ वीर वजीर वडो अणगार, चौद हजार सुनि शिरदार ॥ जपता नाम होयजय-
 कार, जयो जयो गौतमगणधार ॥ २ ॥ गयगमणीरमणीजगिसार, पुत्र कलत्र सजन परि-
 वार ॥ अवे कनककोडी विस्तार, जयो जयो गौतमगणधार ॥ ३ ॥ घरे घोडा पायक नहि

पर, सुखासन पादखी उदार ॥ वयरीविकटश्चाए विसराज, जयो जयो गौतमगणधार ॥ ४ ॥
 प्रह उठी जपीयें गणधार, कृद्धिसिद्धिकमवादातार ॥ रुपरेखमयणअवतार, जयो जयो
 गौतमगणधार ॥ ५ ॥ कविरूपचंद्रगणिकरोशिष्य, गौतमगुरु प्रणमं निशदिश ॥ कहें
 चंद्रसुमतागार, जयो जयो गौतमगणधार ॥ ६ ॥ इति गौतमगुरुनी चोपाद् संपूर्ण ॥
 अथ गणधरस्तवन प्रारंभः ॥ ॥ एकादशगणधरनां नाम, प्रह उठीने कंठं प्रणाम ॥ इंद्र-
 न्रूति पहेवो ते जाण, अग्निन्रूति वीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुन्रूति त्रीजो जगत्सार, गणधर चो-
 थो व्यक्तउदार ॥ शासनपतिसुधर्मासा, मंडितनामं ठठो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो
 जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ सुनिवरमाहे जे परधान, अचलत्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥
 नामथकी होय कोडीकल्याण, दशमोमेतारज अविरलवाण ॥ एकादशमो प्रजास कहैवाय,
 सुखसंपति जसनामं थाय ॥ ४ ॥ गाथा वीरतणा गणधार, गुणमणिरयणतणा चंडार ॥
 उत्तमविजयगुरुनो शिष्य, रत्नविजयवंदेतिसदिश ॥ ५ ॥ इति गणधरस्तवनसमाप्तः ॥
 ॥ अथ श्रीप्रजातसमये मंगलाचार प्रारंभः ॥ ॥ श्लोक ॥ मंगलं जगवान् वीरो, मंगलं
 गौतमःप्रभुः ॥ मंगल रघूवलज्जाद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥ सर्वादिप्रणेशाय,
 सर्वादिप्रार्थनायिने ॥ सर्वलविधितिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ २ ॥ अक्षीणमहान-
 सीलविध केवलश्रीकरांबुजे ॥ नामवलक्षीमुखेवाणी, तंश्रीगौतमं स्तवे ॥ ३ ॥ दोहरा ॥
 एकजवू जगजाणीयें, वीजा नेमकुमार ॥ त्रीजा वयर वलाणीयें, चोथा गौतमस्वाम ॥ १ ॥
 अंगुठे अमृत वसे, लविधतणो चंडार ॥ ते गौतमगुरु समरीयें, वांछितफलदातार ॥ २ ॥

नाथमूर्तिरमला नो जाति किंकिंमयी ॥७॥ अंतःसारमपासुपास्य किमुकिं प्रार्थयंतानां रसं ।
 सौत्राण्य किमुकामनीयसुगुणश्रेणे सुं धित्वा च किं ॥ सर्वस्वंश्रमश्रीतगोःशुभ्ररुचेरोज्ज्वलय-
 माड्विष किं । जाता मे हृदि योगमार्गपथिकीमूर्तिः प्रभोतेऽमला ॥ ८ ॥ ब्रह्मांडोदरपूरणा-
 धिकथशःकर्पूरपारीरजः । पुत्र्यैः किं धवलीकृता तव तनु मं ध्यानसद्यस्थिता ॥ किं शुक्लस्मि-
 तसुगरे हंतदद्व. डः कर्मकुत्रक्षरः । ध्यानाच्चासृतेवै णिः शुततरा श्रीगौतम भ्राजते ॥ ९ ॥ किं त्रै-
 लोक्षपरमाकटाक्षवहरीदीवात्रिरादिगिता । किं चोत्पन्नकृपासमुद्रमकरो जारोत्करं वीकृता ॥
 किं ध्यानानलदह्यमाननिखिलांतःकटकप्रवली, रक्षात्रि र्धवलीकृता मम हृदि श्रीगौतम त्वत्त-
 नुः ॥ १० ॥ इहं ध्यानसुधासमुद्रवहरी चूडचवांदोलन । क्रीडानिश्चवरो चिरुज्ज्व-
 लवपुःश्रीगौतमो मे हृदि ॥ त्रित्वा मोहकपाटसंपुटमिति प्रोद्धासितांतःस्फुरज्ज्योतिर्मुक्तिन-
 तंविनी नयतु मा सब्रह्मतामात्मनः ॥ ११ ॥ श्रीमगौतमपादवदनरुचिः श्रीवाङ्मयस्यामि-
 नी । मर्त्यक्षेत्रनगेश्वरी त्रिभुवनस्यस्यामिनी श्रीमती ॥ तेजोरात्रिरुदासविशतिभुजोपक्षा-
 धिपश्रीसुरा, धीशाःशासनद्वताश्च ददतां श्रेयासि न्यूयांसि न. ॥ १२ ॥ ॥ इति श्री-
 गौतमस्यामिनःस्तवनं संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीगौतमगुरुनी चोपाद् प्रारंभः ॥ ॥ जयो
 जयो गौतमगणधार, मोटी लडिधतणो चंडार । समरे वंदितसुखदातार, जयो जयो गौतम
 गणधार ॥ १ ॥ वीर वजीर वडो अणगार, चौद हजार मुनि शिरदार ॥ जपता नाम ह्येयजय-
 कार, जयो जयो गौतमगणधार ॥ २ ॥ नयनमणीरमणी जगिसार, पुत्र कलत्र सजन परि-
 वार ॥ अथे कनककोडी विस्तार, जयो जयो गौतमगणधार ॥ ३ ॥ धरे घोडा पायक नडि

पार, सुखासन पादस्त्री उदार ॥ वयरीविकटथाए विसराज, ज्यो ज्यो गौतमगणधार ॥ ४ ॥
 प्रहृ जठी जपीयें गणधार, शक्तिस्त्रिकमवादातार ॥ रुपरेखमयण अचतार, ज्यो ज्यो
 गौतमगणधार ॥ ५ ॥ कविरूपचन्द्रगणिकरोशिव्य, गौतमगुरु प्रणमं निशदिश ॥ कहे
 चंद्रसुमतागार, ज्यो ज्यो गौतमगणधार ॥ ६ ॥ इति गौतमगुरुनी चोपाद् संपूर्ण ॥
 अथ गणधरस्तवन प्रारंभः ॥ ॥ एकादशगणधरनां नाम, प्रहृ जठीने करं प्रणाम ॥ इंद्र-
 त्रूति पहेलो ते जाण, अश्रित्रूति वीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुत्रूति त्रीजो जगसर, गणधर चो-
 थो व्यक्तजदार ॥ शासनपति सुधर्मासा, मंडित नामें ठठी धार ॥ २ ॥ सौर्यपुत्र ते सातमो
 जेह, अर्कंपित अष्टम गुणगेह ॥ सुनिवरमहिजे परधान, अचलत्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥
 नामथकी होय कोडीकल्याण, दशमोमेतारज अविरलवाण ॥ एकादशमो प्रनास कहेवाय,
 सुखसंपति जसनामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीरतणा गणधार, गुणमणिरयणतणा त्रंडार ॥
 उत्तमविजयगुरुनो शिव्य, रत्नविजयवदेनिसदिश ॥ ५ ॥ इति गणधरस्तवनसमाप्त ॥
 ॥ अथ श्रीप्रनातसमये मंगलाचार प्रारंभः ॥ ॥ श्लोक ॥ मंगलं त्रगवान् वीरो, मंगलं
 गौतमप्रभुः ॥ मंगलं रथूलत्रजाया, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥ सर्वादिप्रणामाया,
 सर्वादिप्रणामाया ॥ सर्वदधिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ २ ॥ अक्षीणमदान-
 सादधि केवलश्रीकरांबुजे ॥ नामलक्ष्मीमुखेवाणी, तंश्रीगौतमं स्तवे ॥ ३ ॥ दोहरा ॥
 एक जवू मगा जाणीयें, वीजानेमकुमार ॥ त्रीजा वयर वखाणीयें, चोथा गौतमस्वाम ॥ १ ॥
 अंगुठे अमृत म्मे लधितणो त्रंडार ॥ ते गौतमगुरु समरीयें, वांलितफलदातार ॥ २ ॥

पुंडरिकगोयमप्रसुह, गणहर गुणसंपन्न ॥ प्रह उठी नित्य प्रणमीयं, चउदहसैवावन्न ॥ ३ ॥
 वोरस किमरस किनरस, चोथा जसोत्रजसुरि ॥ त्रिणे कार्दे समरतां, डरिय पणसे दूरि ॥ ४ ॥
 जे चारित्रं निर्मला, ते पचायणसिंह ॥ विषयकपायने गजिया, ते समरो निशदिह ॥ ५ ॥
 गामतणे पैसारणे, गौतमगुरसमरंत ॥ इजात्रोजनधरकुशल, लडिदीलकरत ॥ ६ ॥
 ॥ इति मंगलाचारसमाप्त ॥ ॥ अथ सरस्वतीस्तोत्र प्रारंभ ॥ ॥ प्रथम प्रारती नाम,
 द्वितीयं च सरस्वती ॥ तृतीयं शारदादेवी, चतुर्थं हसगामिनी ॥ १ ॥ पंचम जगद्धिष्पाता,
 षष्ठं वागीश्वरी तथा ॥ कुमारी सप्तम प्रोक्तं, अष्टमं ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥ नवमं व्यङ्ग्यांमता,
 दशम ब्रह्मचारिणी ॥ एकादशं च ब्रह्माणी, द्वादशं चरदायिनी ॥ ३ ॥ वाणी त्रयोदश नाम,
 त्राषाचैवचतुर्दश ॥ श्रुतदेवी पंचदशं, षोडश गौर्निगद्यते ॥ ४ ॥ एतानि शुभ्रनामानि,
 प्रातरुत्थाय यःपठेत् ॥ तस्य संतुष्यते देवी, शारदा वरदायिनी ॥ ५ ॥ इति सरस्वतीस्तो-
 त्रसमाप्तः ॥ ॥ अथ सतीर्जनात्म प्रारंभ ॥ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ ब्राह्मीचंद्र-
 नवाक्षिका जगवती, राजीमति ज्यौषदि । कौशल्यया च मृगावती च सुलसा, शीता सुत्रजा शिवा ॥
 कुंति शीलवती नलस्यदयिता, चूलाप्रजावत्यपि । पद्मावत्यपिसुंदरी दिनमुखे, कुर्वतुवो
 मंगलं ॥ १ ॥ अहिम गोहिम गोधरणीसुतो, दुधःबृह्मरूपतिदानवपूजिताः ॥ रविज राहु
 सकेतुनवग्रहाविदधता सतत मम संपदं ॥ १ ॥ श्लोक ॥ सर्वमंगलमंगलयं, सर्वकल्याणका-
 रणं ॥ प्रधानसर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ १ ॥ ॥ इति सतीर्जना नामसमाप्त ॥ ॥
 ॥ अथ शीलसतीनोदं प्रारंभ ॥ ॥ आदिनाथ आर्दे जिनवर वदी, सफल मनोरथ कीर्जी-

चं ॥ प्रजाते उठी मंगलिक कामे, शौल सतीनां नाम वीजीचं ॥ १ ॥ वाळकुमारि जग-
 हितकारी, ब्राह्मीनरतनीवेहेनडीए ॥ घटघटव्यापकअकररूपे, शौल सतीमांही जेवडीए ॥ १॥
 बाहुवलप्रगिनी सतीष शिरोमणि, सुंदरी नामे रूपप्रसुताए ॥ अंगस्वरूपी त्रिभुनमाहि,
 जेह अनुपमगुणजुताए ॥ ३ ॥ चदनवाला वातपणाधी, शीलवती शुद्धश्राविकाए ॥
 अडदना बाकुला वीरप्रतिवाच्या, केवल लही ब्रतत्राविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेनधुत्राधारिणी
 नंदनी, राजिमतीनेमवल्लत्राए ॥ जोवनवेशे कामने जीत्ये, संयमलेहृदवडल्लत्राए ॥ ५ ॥
 पचत्ररतारी पांडवनारी, दुपदतनया वलाणीए ॥ एकसोअघाठे चीर पूराणां, शिथलमहिमा
 तस जाणीए ॥ ६ ॥ द्वाशयनूपनी नारी निरुपम, कौशलया कुलचंद्रिकाए ॥ शिथलस-
 लूणी रामजनेता, गुण्यतणी परनाविकाए ॥ ७ ॥ कौशंविकटामे संतानिकनामं, राज्य
 करंरंगराजियोए ॥ तस धर धरणी मृगावती सती, सुरशुवनेजश गाजीयोए ॥ ८ ॥ सुवसा साची
 शिथलेनकाची, राची नहिं विषयारसें ॥ सुखकुं जोतां पाप पलाये, नाम देता मन उल्लसेए
 ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सतीए ॥ जगसहुजाणैधी जकरंतां, अम-
 लगीतल थयो शिथलशीए ॥ १० ॥ कांचे तांतणे चावणी बांधी, कुवाथकी जल काढीवुंए ॥
 कलंक उतरया सतीय सुत्रजा, चंपा वार उबाडीवुंए ॥ ११ ॥ सुरनरवंदित शिथलअखलित,
 शिवा शिवपदगामिनीए ॥ जेहने नामें निर्मलथदं, वलीहारी तस नामनीए ॥ १२ ॥ द्वास्ति-
 नागपुरे पंशुरायनी, कुंतानामे कामिनीए ॥ पाडवमातादेशेदशारनी, वेहिनपतिव्रतापक्षि-
 नीए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रतधारिणी, त्रिविधे तेहने वंदिये ॥ नामजपंतांपातक

जाए, दरिसण डरित निकंटीए ॥ १४ ॥ निषिधानगरी नलहनरिंदनी, दमयती तस गेहि-
नीए ॥ सकट पडतां शीवज राखुं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनीए ॥ १५ ॥ अगनाअजिता जग-
जनपूजिता, पुष्पचूडानेप्रजावतीए ॥ विभ्विख्याता कामितदाता, शोवमी सती पद्मा-
वतीए ॥ १६ ॥ वीरे जाली शास्त्रे साखी, उदयरतन भाखे मुदाए ॥ वाहाणुं यातां जे नर जणो,
ते वेशे सुखसंपदाए ॥ १७ ॥ इति शोवसतीनावंद संपूर्ण ॥ ॥ अथ स्तोत्रप्रारंभः ॥ जय
जगततरण डःखवारण सुखकरण जगधणी, परमजावविवासी सहेजानंदसिद्धमहानुणी ॥
जिन नाम जपीये पाप स्वपीये बहिये कमला अतिधणी, प्रभु अरज अमर निकलंक निरुपम
आत्मशुद्धितणाधणी ॥ १ ॥ उत्पादव्ययध्रुव जावजावित उज्यपट जगमां रह्या, ते सकल केवल
ज्ञानदर्शन जावधी परगट बह्या ॥ त्रोभयत्रोक्ताजाव ताहारेआत्मजावे अतिधणो, तुलज्ञान-
ज्ञयाकार प्रणमे पार बहे कुण तेतणो ॥ २ ॥ षट्ज्वयना पर्याय तुझा स्वपरज्ञेय जे ताहरा, जे
कह्या प्रतिपर्यवि द्वाणपरे कटपत्राब्धमहि बह्या ॥ जे ज्ञेयाकारे ज्ञान प्रणमे एह पण तुज परि-
णति, नयपदजावे तास चर्चा कोण जाणे तनुमति ॥ ३ ॥ समयांतर वर ज्ञानदर्शन रमण जे प्रभु
तु करे, तेहधी चिद्ब्रह्मानदसंतति, सादिनंतस्थिति धरे ॥ अकलरूप कवी शकें कोण ताहरं
त्रिभुवनधणी ॥ तिणे प्रथमअंगे अपदने पद निषेधे गणधर गणी ॥ ४ ॥ तुं नहि अरूपी न-
हिं रूपी रूपारूपी पण नहि, तुं नहि वाच्य अवाच्यजावे वाच्यावाच्यें टे सदी ॥ ताहरा पदपुण्य
सेवि विजय ते जगमा बहे, दम पासप्रभुनो सुजस रगे, कविहेमसिधु कहें ॥ ५ ॥ इतिस्तोत्र
संपूर्ण ॥ ॥ अथ सिद्धचक्रस्तोत्र लिख्यते ॥ ॥ केवल कमलापति विभ्वधणी, सिद्ध-

चक्र प्रतीधरी त्रिकिषणी ॥ मंदिरज्योत्स्नाबहुवेदिमणी, वली पार्श्वे मृगतयणी रमणी ॥ १ ॥ शुण
 गावं तेहनी वरतरुणी, तस तेज हुवे नितनतरुणी ॥ अनुकृत्वा होय सधदी धरणी, मानुं के-
 वल कमलांतिणेः परणी ॥ १ ॥ तिण करीयें मनवंठित करणी सिश्चक्रत्रजे जसुषसरणी ॥ संसा-
 रे एहज देवमणि, एहनी जग कीरतिसहसगणी ॥ ३ ॥ एहधी श्रीजिनवर चक्रतणी, संप-
 ति हुवेंवहुपुन्यतणी ॥ अरिहंत नमो नमो सिश्चनमो, श्रीसूरिनमो जवजायनमो ॥ ४ ॥
 सविसाहूनमो दंसणप्रणमो, वदि नाण चरणचारित्रनमो ॥ एह नवपद अहतिस रंग जपो,
 श्रीपालतणी परिज्युं प्रतपो ॥ ५ ॥ तप पणइहां आंविद अवधारो, इणि परे निजजडबंधादिद
 वारो ॥ ए सिश्चक्रसम अवर नहिं, इसमन इम नासंदूर सही ॥ ६ ॥ महिमंडलते अनुकृत्
 सदा, सह सेवा सरे अधिक सुदा ॥ कलियुगमे देव सर्वे दीसे, सिश्चक्र नमत हीयुं द्विसे
 ॥ ७ ॥ एह सेव करंता सुष घणां, वली रंग विनोदह कोडीगणा ॥ विजेदेवसूरि सरपाटधणी,
 विजेसिंहसूरि सरलीव धणी ॥ ८ ॥ सिश्चक्र जयो नर रदियावा, नित उदय महोवव जयमावा
 ॥ ९ ॥ इति सिश्चक्रस्तोत्र सपूर्णः ॥ अथ श्रीऋष्यस्तुतिस्तोत्र प्रारंभः ॥
 मनोहरंत जगतोनिरंतरं, निरंतरंगारित्रयं स्वप्नावतः ॥ स्वप्नावतः स्वर्गसदानतसदा,
 नतंसदात्रं दृषत्रं स्तुते न कः ॥ १ ॥ स्तुते न कः सर्वविदा सुधीरतः, सुधिरतत्वे रमते न सादरं ॥
 नसादरं कुःकुरुते कलंकनं, कलांकनं तस्य मनो निसाकरं ॥ २ ॥ निशाकरंडस्तमसांनवासरो, नवा-
 सरो जे कमलाभलायतः ॥ मलायताकिरमते परमते परमते सीसमनो निशायिते ॥ ३ ॥ निशा-
 यिते मोहत्रटे स्मरे हते, स्मरे हते कश्चतुरो प्रवानल ॥ प्रवानलं यच्चतुतं शिवालयं, शिवालय

यत्र सुखावलीगता ॥४॥ वलीगतापङ्क्तिरसन्महात्रवान्, महात्रवान् मासववारणादि ॥ वर
 णादिव प्रेष्य मिम विना त्वया, विना त्वयादाससकेन वार्यतां ॥५॥ नवार्यतां त्रकिरसामनोरमा,
 मनोरमादौ कुरु मित्र पावनं ॥ त्रपावनं ह्येनमकपनायकं, पनायकं विद्वु उन्महास्तवः ॥ ६ ॥
 महास्तवस्युधिरकं प्रसादतः, प्रसादतस्त्रस्तपरात्रवानवा ॥ त्रवानवशीयदनेन सांप्रतं,
 नसाप्रत डःषकथादिशकर ॥ ७ ॥ दिशंकर श्रीकलितं दिवाकरो, दिवाकरोत्येकत एव श्रा-
 वकः ॥ वशावकत्वं कलयन् स केवलं, सकेवलं त्रासयसे जगन्नय ॥ ८ ॥ जगन्नयं पर्यसि
 त्रूत्रिावना, त्रिावनाशैकविद्यासवत्सव ॥ सवत्सवक्ष्मीकुसलैसमंतत, समंततस्त्वं सम-
 यंनयरपदं ॥ ९ ॥ नयरपदं कारकलावित्रूपितं, वित्रूपितं किंतुवचोमसानिशं ॥ मसानिश
 तेन महामहोदय, महोदयं संजवतान्मनोहरं ॥ १० ॥ कलश ॥ पूज्यश्रीजयशेषरन्व-
 सुगुरो प्रौढप्रसादान्मया । माणिक्योत्तरसुंदरे णविदितः सिंहावलोकस्तवः ॥ देवश्रीऋष-
 तस्य तस्य पठने प्रीति परां तत्वतां । त्रव्याना त्रवतुप्रसन्नमनसां मांगल्यवक्ष्मी सदा ॥ ११ ॥
 ॥ इति श्रीऋषयस्त्वृत्तिस्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ अथ श्रीवृंदावकारप्रारंभः ॥ ॥ जयति ज-
 गति चंद्रः पार्श्वनामा जिनेजो । विकचकमलदृष्टानदितामर्त्यःमर्त्यः ॥ अकलितमधिभौव-
 स्तीर्णससारसिधु । त्रुंजगकलिव्यादःपुण्यपीयूषपुष्ट ॥ १ ॥ मादिनी वंद ॥ श्रीपार्श्व
 गौडिकारव्यं त्रजति त्रविगणे कटपट्टकं सुगोत्रं । नानादेशेषु लब्धातिशयमपितताव्युहवारं
 सुमूर्ति ॥ श्रीमंत नीलरत्नाधिकतरवपुषं स्फुरत्वावाण्यभावं । मोहांत्रोरशि कुंभोद्भवममरतु-
 तंपार्श्वयक्षाचिंताहर्षी ॥ २ ॥ स्वभया वद ॥ नमंति पार्श्व मग्निनो मिरावसा धृतातपत्र

चामरै सुरै रतुतं अन्तंशक्ति मादिनं, गतामय विवेक रत्नरोहण दयाकरं ॥ ३ ॥ वसंतचामर
 वदः ॥ उरीकृतं व्रतमनुत्तर मंगि नेत्रा, दत्त्वा तु येन वर वार्षिक दानरासिं ॥ वामोद्भ
 देन सुनिनायक नायकेन, कल्याण केद्वि नित्येन शुभ्रासयेन ॥ ४ ॥ वसंततिलका
 वंदः ॥ ममनमोस्त्ववते परमात्मने, नगावते शिवशर्म विधायिने ॥ अमित सौर्य तरेस्कृत
 मेखे, शुभ्रद सेरक मंडल मौलये ॥ ५ ॥ इतविदं वित्तवंद ॥ अश्रुत रसताधिक्यान्निष्टा
 न्नरोत्तमसंगताङ्गुवन सुभ्रगात्पार्श्वे त्रिव्याद् विनस्यति पातक ॥ प्रसरति चर्वै कीर्ति
 दिक्षु, प्रसुनव ह्रज्जला, प्रयवति पुनः, ग्रीध्रं नीला जयोन्नति वर्धनं ॥ ६ ॥ हरिणि
 वद ॥ आकृत्या नरदेवदेव मनसां सतुष्टि कर्तुं सदा, चेतोवद्वन्न काम सार्धं ददतः कर्मारि
 हर्तुर्भूरां ॥ आनदोष सर प्रवृष्टि करणे पानीय दातुर्मुदा, पार्श्वः स्यास्ति नति सप्तर्षि
 जननी कल्याण विस्तारिणी ॥ ७ ॥ शार्दूलविकीर्णित वंदः ॥ नर लक्षण नूषित वाटशु-
 पुरे सुषनीरज रंजित विश्वजने ॥ श्रुत देशन दर्शित धर्मपथे जननेतरी तीष्टति प्राण्यरमा
 ॥ ८ ॥ तोटक वंद ॥ सुराधीशचक्रैस्तुत ज्ञानसिंधो, जगन्नाथ नेतः कृपालोक बंधो ॥
 विप्रोपाहिमां सर्वदा त्रकिन्नाजां, स्मरंतं चिरं त्वत्पदांप्रोजनृगं ॥ ९ ॥ नृजंगप्रयात
 वंदः ॥ स्तोत्रं पार्थ जिनेश्वरस्य सततं जे प्राणिनो ज्ञावतः। सद्वृद्ध्यापि पठंति हृद्यमनस
 स्तेपा गृहे संपदः ॥ सूर्गित्य स्थिरत्वाव सोन्नतरा धर्मार्थं निस्स्यादिका, कल्याणार्णव
 सूरिनि विरचितं मांगल्यमादाकरं ॥ १० ॥ शिखरिणि वंदः ॥ सदा धार्थं चित्ते स्तवन
 मनवद्यं त्रयहरं, नैर्भूतं सिद्धै कुशल वनराजो धननित्रं ॥ अवंध्यं त्रक्तानां जिनगुणर-

तानां स्मृतिमतां, समेषां ज्ञानानां प्रमुद करणं कर्मितकरं ॥ ११ ॥ इति श्रीतंडादंकार
 संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र प्रारंभः ॥ कस्तूरी तिलकं युवः परित्रव त्राणैक
 कल्पद्रुमः, श्रेयस्कंद नवांबुद खिजगति वैदूर्य रत्नागदः॥ विघ्नां ज्ञो जमतं गजः कुवलयोः
 तंसस्ववशाश्रियां, नेत्राणाममृतांजन विजयते श्रीपार्श्वनाथ प्रभुः ॥ १ ॥ उत्सर्पन्नय
 मगलैक निलय त्रैलोक्य दत्तात्रय, प्रथ्वस्तामय विस्व विस्मितदयः स्याद्वादाविद्यालयः ॥
 जहामातिशय प्रसिद्ध समय प्रद्वीण कर्मोच्चय, प्रोन्मुक्तस्मयज्वल्य कैरव वनी चंद्रोदयत्वं
 जय ॥१॥ जे मूर्ति तव पश्यत. शुभ्रमयी ते लोचने लोचने याते वकि गुणावलि निरु-
 पमां सात्रारती त्रारती जातेन्यं चति पादयोर्वरदयोः साकंधरा कंधरा जते श्चयायति नाथ
 दत्तमनष तन्मानस मानश ॥ ३ ॥ किंस्त्रात्रैरव मंगरग विधिभैः कार्यं किमन्यच्चैर्न,
 पर्याप्तं स्तुतिभिः कृत प्रणितिभिः पूर्णं लगोजीतिभिः ॥ वक्त्रेदौ तव चेच्चकोर युवति प्रीति
 शृशौ विभ्रतः, स्वांतं चेतव पादपंकजयुगे धत्ते लिढालाधितं ॥४॥ कांतिः कापि कपोलयो
 विमलयोः श्रीकापि सौम्ये सुखे, वायाकाशि विशालयोर्नयनयो श्रॉकापि कंठे नद्येः ॥
 सोभा काप्पुरसिस्थिरे सरलयो वाह्नोः किमप्यूर्जितां, त्रैलोक्यैक शरण्योश्चरणयोस्ते
 देव किं द्रुमदे ॥ ५ ॥ किं पीयूषमयी किमुन्नतिमयी किं कल्पवल्लीमयी, किं सौत्राग्य-
 मयी किमक्षरमयी किं विश्वमैत्रीमयी ॥ किंवा शल्पमयी किमुजव मयी किं लविध
 लक्ष्मीमयी, दृष्टेख्यं विमृशंति ते सुकृतिनो मूर्ति जगतपावनीम् ॥ ६ ॥ स्वाभिन् ऊर्जय
 मोहराज विजय प्राण्यताजस्तव, स्तोत्र किं कमठोरुद्वपदवने श्रीपार्श्व विश्वप्रभोः ॥

निर्गमांशो र्थदि वास्फुरद्ब्रह्महः संदीह रोहडुहः खद्योत द्युति संधृति स्तुतिपदे वर्त्येत्
किं कीविदः ॥ ७ ॥ सश्रीकात्तवक्त्रक ड्भधजलधे रुभ्रूत मत्यञ्जुतं, मोहेदक तत्व सप्त कवचः
पीयूषत्या धृतः विश्वेन्द्र्यः फणिभृद् विद्युर्मणि धृणि व्याजात्प्रफुल्लफणा, पात्रांनिष्ट
शुचि विंजाति परितः स्वामिन् प्रयत्नद्वि ॥ ८ ॥ किं मर्तेर्मणिचि किमौषधगणैः किं
किं रसस्फातिचिः, किं वासंवनने किमंजनवरैः किं देवताराधने ॥ जंतुनामिह पार्थ्वनाथ
इतिचेत् त्रित्यं मनो मंदिरे, कल्याणी चतुरक्षरा निवसति श्रीसिद्धि विद्याञ्जुता ॥ ९ ॥
त्रास्वतं परमेष्टितं स्मररिपुं बुधंजिनं स्वामिनं ॥ क्षेत्रज्ञं पुरुषोत्तमं गण विद्युं सौम्यं कला-
शाविनं ॥ योगिदं विबुधाधिपं फणिपतिं श्रीदं गिरामीभ्यरं, ज्योतिरूप मनंत मुत्तमधियं
स्वामेवशं जानते ॥ १० ॥ रुपादौ विषये विदन् गुणवतां त्वन्याय विद्यागुक, ब्रह्माद्वैत
मुदाहर द्विह प्रवान्मीमांशक ग्रामणी ॥ प्रावानां परित्रावयन् क्षणिकतां वौश्राधि-
परस्वं विदं, स्व कर्मप्रकृति पृथक् पुरुषतः कैवल्यमासि श्रियः ॥ ११ ॥ त्वं कारुण्य निधि
स्वमेव जनक स्वंबोधवरस्वं विद्यु, स्ववं सास्त्रात्वमांचित चिंतितमणिः स्ववं देवता
त्वंगुरुः ॥ त्वं प्रत्यह निवारकरत्तम मदकार स्वमालंबनं, तत्किं ह्यर्थमुपेक्षसे जिनपदं
श्रक्षालुमेनं जनं ॥ १२ ॥ शिष्यस्ते तव सेवकरतव विजो प्रेष्यो ज्ञुजिष्यस्तव,
दारश्चस्त तव माधधस्तव शिशुः स्तेदेव सौस्त्रातिकः ॥ पतिः पार्थांजनेश तेन तुतवा
यातोऽस्मिमासां दिशः, स्वामिन् किंकरवाणि पाणिगुणदे मद्युज्य विज्ञापये ॥ १३ ॥
स्वश्रीरिचति चक्रवर्तिं कमला त्रैदितिः सेवते, कीर्तिं श्लिष्यति संस्तुते शुभ्रगता

प्रीणाति नीरोगता ॥ नित्यं वांछति खेचरत्व पदवी तीर्थेश लक्ष्मीरपि, त्वन्यादापुरजः
 पवित्रित तनुः सप्रसन्नं वीक्षते ॥ १४ ॥ नो कीर्तिं त्रिदिवाधिमत्यमपिनो नोचक्र
 वर्ति श्रियं, सौंदर्येन नपाटवं नवित्रवं नोविष्टप प्राप्तवं ॥ नो सर्वोषधि मुख्य नदिध
 निवहं नो सुक्तिमन्त्र्यर्थये, किंतुत्वच्चरणारविद्, युगलं त्रक्तिं जिन स्वयेयसि ॥ १५ ॥
 इहं त्रूमिन्द्रस्वसेन तनयः श्रीपार्श्व विश्वप्रभोः, श्रीवामात्मज सुप्रवर्ति तनय श्रीधर्म
 घोषस्तुतः ॥ जे कुर्वति तवस्तव नवनवं प्रतुङ्घसन्मानसा, तेत्रस्त्वंनत वञ्चदो निजयदं
 दद्या खिदोकी विभोः ॥ १६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीगौडी
 पार्श्वनाथस्तोत्र प्रारम्भः ॥ श्रीगौडीपुर प्रभु पार्श्वममंदं दर्शन दर्शन परमानंदं नमित सुरासुर
 तंदं ॥ १ ॥ श्रीजिनशासन चारु श्रुगारं, अतरंग रिपु दह कुगारं, सवद जगदाधारं
 ॥ २ ॥ निरुपम रूप विराजित देहं, विदलित नानाजन संदेहं, अमित गुण धन गेहं
 ॥ ३ ॥ डरित कानन त्रेदन दात्रं, सचिर लक्षण विभूषित गात्रं, वारित कुमति कुपात्रं
 ॥ ४ ॥ आनघ जिनवर गोत्र सुगोत्रं, कामकुंजमणि निर्जर गोत्रं, संजम दहता गोत्रं
 ॥ ५ ॥ वेदित त्रय त्रय मरणारिष्ट, प्रकटित महिमातिशयवारिष्टं, जगदीश्वर यगारिष्टं
 ॥ ६ ॥ विहिता खिल त्रविजनकल्याण, पादित यथा ख्यातकल्याण, दत्तमार्गण कल्याणं
 ॥ ७ ॥ आधि वध वध गद् हतारिं, वावित कुशदौ सैख्य कतरिं, युवन त्रय त्रतरिं ॥ ८ ॥
 विकट कष्ट निवारण शूरं, आगम नयप्रकाशन शूरं, चारती गंगापूर ॥ ९ ॥ धृति
 कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी गण विश्व, केवल युगला लोकित विश्वं प्रतजनेप्सित विश्व ॥ १० ॥

सेवक मनोत्रिष्ट दातारं, रंजित देव नर नेतारं, अनुभूत कुलत्रातार ॥ ११ ॥ इन्द्र नील
 मणि वर्ण सुवर्णं, निखिल देया विख्यात सुवर्णं, वाक्रसुधासार सुवर्णं ॥ १२ ॥ मुक्ति
 श्रीमंतिनी संगम द्रुवधं, चंचल विषयसुख संगान्द्रुवधं, कर्मपरा विप्रद्रुवधं ॥ १३ ॥
 वंदिता मर मौलि कुटीरं, विपम कषाय दवानलनीरं, उत्कट परीषद् धीरं ॥ १४ ॥
 अंचलगण नीरधिसारंगं, कीर्तिं लता वर्धन सारंगं, उर्जन बालत्रसारंगं ॥ १५ ॥ वेदेऽनंत
 चतुष्टयीराजं, पूजित सुरपति मानवराजं, प्रवर तीर्थीधिराजं ॥ १६ ॥ कुलकं ॥ शिव-
 तातिपार्श्वं वरद्वयरपार्श्वं मोद तिमिर सवितारं नागराज राज्यं त्रिभुवन पूज्यं लवध त्रयो-
 दधिपारं शुभ्रसागर नित्यंप्रथित गरिमाणं ये ध्यायति विभुंसुदा लक्ष्मीस्तान् समुपैति ॥
 सत्वरमतुला सर्वार्थ सिद्धिप्रदा ॥ १७ ॥ इति श्रीगौडी पार्श्वनाथस्तोत्र संपूर्णं ॥
 ॥ अथ चोत्रीस अतिसयनो वंद प्रारंभः ॥ ॥ श्रीसुमति दायक, हरितदायक, ग्यान
 अनुभव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा चरण प्रणसुं, जुगमकर जोडीकरी ॥ १ ॥ बहुत्राव
 त्रगते शुण्या, जिनवर चोत्रीस अतीसे करी ॥ जेसुगुरु मुखषी सुण्या ते कहुं आगम
 श्राव्हे अणुसरी ॥ २ ॥ तिहां प्रथम अतीसय श्रीजिन केरा, रोमनष वाधे नहि ॥ नहि
 रोग निर्मलगात्र दृष्टी अतीये अतिसय ए सही ॥ ३ ॥ गौडभध सरिखो मांसवाही
 तृतीय तेअ वखाणीये ॥ चोथोते उतपज जगंध सरिखो, सासोखास ते जाणीइं ॥ ४ ॥
 आहार नेवली निहार प्रबन, ए अतिसय पांचमो ॥ आकावागत द्विजधर्म चक्र वठो
 गगनवज्र ए सातमो ॥ ५ ॥ रयाते अंखरे खेत चामर जुगम इष्ट मए कह्यो, फटक

सिंहासन सुनिर्मल नवमे अतिसय ए वह्यो ॥ ६ ॥ आकाशगतध्वज सहेस म्मंडीत,
 इंद्रद्वज आगत चले ॥ ए दशमो अतिसय कर्हो,स्तुतमा दधीपरम तखलत्र देइ ॥ ७ ॥
 इयारमे वली स्वीमी जगारहे, वली वेसे जिहा ॥ सुधवाइ सुयध्वज देव ततदाण अशोक
 तरुवर चेतीया ॥ ८ ॥ द्वादशम अतिसय प्रनामंभव, पुठरवीकर जीप्य ए ॥ रमणीक
 सुदर त्रोमी जगसो, तेरमो एजी कये ॥ ९ ॥ अधोमुख होइ सरव कंटक, चजदमे
 अतीसे वरु ॥ विपरीत यद्दने प्रणमे रतुं पंचदशसुं सुख करूं ॥ १० ॥ शंभ्रतप्यध्वने
 त्रोमी पुजे जोजन लग्गे ए सोलसु, सुगधवरसातिहावरसे ॥ प्रगट अतीसे ए सत्तरसुं,
 जानु प्रमाणे वीट नीचा, पंचवरण सुहामणा ॥ जलना ते यदनां फूव वरसे अठारमे
 अतीसे धरणं ॥ ११ ॥ अमनोगन शवदादि कही नासे जगणीसमे अतीसे वली ॥
 वीसमेते सुत्रइ थाए इम कहे प्रभु केवली, एकवीसमे प्रभुतणी अदेसना जोजन लग्गे
 सविजन सुणे ॥ १२ ॥ बावीसमे धरम अरध मागध त्रापाए प्रभुजी त्रणे, त्रैवीसमें
 जिनवाणी जिनने हितसवि त्रवि प्रणमइ, चौवीसमे प्रभुवरण मूवे इवरे जंतुना जप-
 समइ ॥ १३ ॥ अन्यदिंगी नमेइ जिननेइ पंचवीसती अतिसए अन्य तीर्थमोन थाइ,
 ठवीसमे प्रभुनिसचइ । पणवीस जोयण लग्गे जिनथी, इत्तने मारी नही ॥ १४ ॥ स्वचक्रने
 परचक्र नहीइ, त्रीस अतिसय ए सही, अतिवट्टि अनावट्टि डिभिंइ वन नवी जपजे ।
 चोत्रीसे वली व्याधि पीडा आदि ड्यप नइ सप्पजइ ॥ १५ ॥ चोत्रीस अतिसय एकह्या
 सूत्रसम वायांगमां, ते त्राणत गुणता इइए धरतां, रहे आत्मारंगमां निजमऽइ आत्मारूप

प्रगटइ नाव सुजोह्याइये, तो दर्शनादिक रत्न लहीए परम पद सुष पाइये ॥ १६ ॥
 अरहित जगवत तणा अतिसय, तणा आणी आसता, बहु पूज करीए ध्यान धरीइ
 सुख लहीइ शाश्वतां ॥ श्रीसुरि विद्या उदधि सेवक, शिष्य दण्डि परे इस्तवे ॥ सुनि
 ज्ञान सागर कहे, प्रभु पद सेव मागु नवो नवे ॥ १७ ॥ इति चोत्रीसें अतिसयनो उदं
 संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीचोत्रीस अतिसयनो उदं प्रारभ ॥ ॥ श्रीजिन प्रणसुं सुख
 दातार, नविजिन तारण जग हितकार ॥ चोत्रीसें अतिसयनोधणी, नविजिन सेव करे
 तसूतणी ॥ १ ॥ अद्भुत रूप प्रभुदेय सोवास, रोग प्रसेवो मेलणुं नाश ॥ सुगंध कमल
 जीम श्वासोश्वास, रुधिर मांस धवल सुप्रकाश ॥ २ ॥ आहार निहार नदेखे कोइ, जन्म-
 थकी ए चारें होय ॥ इयारें अतिसय हवे जोय, गातिक कर्म हणयाथी होय ॥ ३ ॥
 एक जोजननुं षेत्र मजार, मनुष्य देव तिर्थेच आपार ॥ कोडा कोड मट्यापण तिहां,
 अवाधा नवी होए तिहां ॥ ४ ॥ आप आपणी प्राषा समजाए, जोजन लग्गे सरखी
 संजलाय ॥ पूजे चामंडल होइ सही, जोजन सवासो एती जनही ॥ ५ ॥ रोग वेर
 नहिं तहां विचार अतिदृष्टि अनादृष्टि नीवार ॥ नहिं इकाद तणी एरीत, आप कटक
 पर कटक नत्रीत ॥ ६ ॥ देव तणा कीधा जगणीस, सांजलजो हवे धरीय जगीस ॥
 धर्मचक्र चाले आकास, चामर दोष हवे सुविदास ॥ ७ ॥ सिंहासण पाई पीठ ठवीस,
 उत्र त्रिन सिर उपर सिस ॥ धर्मधजा उची अतिसार पणतले कनक कमल श्रीकार,
 ॥ ८ ॥ त्रने गढ दीपे गुण निदा, चार सररी चारें सुख जला ॥ अशोक टक होई

सुखदाय, मार्गं काटा उधा श्राय ॥ ९ ॥ वृद्धनी दाव नमे वेहु पाए, देव डंडत्रियाजे
 आकाश ॥ अनुकुल वाय सदा तिहां वाय, प्रदक्षणा पंथी देइ जाय ॥ १० ॥ सुगंध
 कमलनी वट्टि अमुल, विविधवरणवहु वरसे फूल ॥ नखने केश न बाधेरति, अणुहुंते
 सुर कोडजलती ॥ ११ ॥ वक्रतुनां जे व फल फूल, एक स्तुमां जे प्रगटे अमूल ॥ जेनाए
 अतिसय चोत्रीस, चोसठ द्रुद्रनमे तिसदिस ॥ १२ ॥ ते जिन नाम जपु सुत्र प्राव
 प्रवसागर बुडता नाव ॥ इह दूरगत दूरे जाय, सुनि मतिवात्र नमे नित पाय ॥ १३ ॥
 इति चोत्रीस अतिसयनो वंदं संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीशांतिनाथनो वंदं प्रारभः ॥ ॥
 शारद माय नमु शिर नामी, हुंगुण गाढं त्रिभुवनके स्वामि ॥ शांति शांति जपे सब
 कोइ, ताघर शाति सदा सुष होइ ॥ १ ॥ शांति जपीजे कीजे काम, सोइ काम हुइ अत्रि-
 राम ॥ शांति जपी परदेश सीधावे, ते कुशवंकमला वेइ आवें ॥ २ ॥ गर्भ धकी प्रभु
 सारनी वारी, शांतिज नाम दीजं महितारि ॥ जे नरजांति तणा गुण गावें, रिध अचिती
 ते नर पावें ॥ ३ ॥ जा नरकु प्रभु शांति सषाइ, ता नरकुं कहा अरत माइ ॥ जो कहु
 वंते साइ पूरे, दाळीइ छव मिध्यामति चरें ॥ ४ ॥ अलप निरंजन ज्योति प्रकाशी,
 घट घट के चितर प्रभुवासी ॥ स्वामी स्वरूप कथ्यो नवीजाइं, कहेतां सो मन अच-
 रिज थाए ॥ ५ ॥ डार दिये सवही दक्षिणारा, जीत्या मोह तणा दल सारा ॥ ऋद्धि तजी
 शिवसुं रंगराचें, राजतजी पणिसाहिव साचें ॥ ६ ॥ महावल वंत कहीजे देवा, कापर
 कुंथु एक दणेवा ॥ रिद्धि सयल प्रभु पास कहीजे, नीक्षा आहारी नाम धरी जें ॥ ७ ॥

नंदक पूजक हें सम प्रायक, पणि सेवकही कूं सुखदायक ॥ तज्यो परिग्रह ने जगनायक,
 नाम अतीत सेवे वृथ दायक ॥ ८ ॥ शत्रुमित्र समचित्त कहीजें, नाम देव अरिहंत
 जणीजें ॥ सयल जीव हित वंत कहीजें, सेवक जाणी महापद दीजें ॥ ९ ॥ सायर ज्यंसा
 होय गंपीरा, दोष नहिं एक मांहि सरिरा ॥ मेरु अचल जीम अंतरकेयामी, पणि
 न रहें प्रभु एक ठामी ॥ १० ॥ लोक कहि जिनजी सब देखें, पणि शुपनां कवहु नवि पेंखें ॥
 रीस विना बावीस परीस परीसा, शेना जीती तें जगदीशा ॥ ११ ॥ मान विना जण आण
 मनाहं, माया वीना सबशुं दयलाह ॥ लोत्र विना गुण रास प्रहीजें, त्रिधु त्रिर्त्रीगडां
 सेवीजें ॥ १२ ॥ निग्रंथ पणें शिरवत्र धरावे, नाम जती पणि चामर दलावे ॥ अग्रयदान
 दाता सुख कारण, आगल चक्र चढें अरीभरण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजें,
 करम सर्वको मूढ खणिजें ॥ चौविह संग जतिरथ थापें, लवी घणी देखी नवी अप्रापें
 ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावे, न कोहिकुं शिस नमावे ॥ अकिंचनको वीरुद धरावे,
 पण सोवन पद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ तजी आरत्र निज अतमध्यावे, शिवरमणिको
 साथ चलावे ॥ राग नहिं पणि सेवक तारें, द्वेष नहिं नीगुणा संघ वारे ॥ १६ ॥ तेरो
 सहिमा अदश्रुत कहीहं, तोरा गुणको पार नलहीहं ॥ तुं प्रभु समरथ साहिव मेरा,
 हुं मन मोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुरे त्रैलोक्य तणो प्रतिपाल, हुंरे अनाथ हुंरे तुं
 दयाल ॥ तुं शरणगत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक तें वरवीरा ॥ १८ ॥ तुंही जसो वड
 प्रागज प्रायो, तो मेरो काज चढ्योरे सवायो ॥ करजोडी प्रभु विनवुं तोरसुं, करो कृपा

जिनवरजी मोर्यू ॥ १९ ॥ जन्म मरण निवारण तारो, नवसागर हेलां जतारो ॥ श्रीह-
 श्रीणजर मंडण सोहे, तिळां श्रीशांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ श्रीपद्मसागर गुरुराज
 पसाया, श्रीगुणसागर के मनत्राया ॥ जे नरनारी एकचित्तें गावें, ते नर मनवांजित शिव
 सुख पावें ॥ २१ ॥ इति श्री शातिनाथजीनो वंद संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री अंतरिक
 पार्थनाथ स्तुति वंद प्रारंभः ॥ ॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रिहुं लोकमां एटहुं
 सार दीतुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीतुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान वतुं ॥ १ ॥ मन
 तुह्य पास वसे रात दीसे, सुख पंकज निरखवा हंस हीसे ॥ धन्य ते बडी जे बडी नयण
 दीसे, नलि नक्ति नावें करी विनवीसे ॥ २ ॥ अहो एह संसार ठे डबल दोरी, इंद्र-
 जालमा चित लागी ठगोरी ॥ प्रभु मानीये विनति एक मोरी, सुक तार तुं तार बलि-
 हारी तोरी ॥ ३ ॥ सही सुपन जंजालमां सद्य मोह्यो, बडियालमां काल रमतो न जोयो ॥
 सुधा एम संसारमां जन्म खोयो, अहो धृत तणें कारणे जल विलोयो ॥ ४ ॥ एतो नम-
 रतो केसुआ त्रांति धायो, जइ शुकतणी चंचुमाहे नरायो ॥ शुकें जंबु जाणी गले डःख
 पायो, प्रभु लावचे जीवडो एम बाह्यो ॥ ५ ॥ नभ्यो नर्म नूलो रम्यो कर्म नारी, दयाधर्मनी
 शर्म में नवि विचारी ॥ तोरी नय वाणी परम सुककारी, त्रिहुं लोकनानाथ में नवि
 संनारी ॥ ६ ॥ विषय वेलनी सेवडी करीय जाणी, नजी मोह तूण्णा तजी तुज्ज वाणि ॥
 एयो नलो नंभो निज दास जाणी, प्रभु राखीये वांहिनी ठाहि प्राणी ॥ ७ ॥ मारा विविध
 अपराधनी कौडी सदीये, प्रभु नरण आव्या तणी लाज वदीये ॥ वली घणी घणी वीनति

एम कहीयें, मुक्त मानसरें परम हंस रहीये ॥ ८ ॥ कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी,
 मुगति गामी ध्याइयें, अति त्रक्ति त्रावें विपत्ति जावे, परम संपद पाइए ॥ प्रभु महिम
 सागर गुण विरागर, पास अंतरिक जे स्तवे, तस सकल मंगल जय जयारव, अ्यानंद-
 वर्द्धन दीनवे ॥ १ ॥ इति अंतरिक पार्थनाथ स्तुति वंद संपूर्ण ॥ अथ श्री पार्थनाथ
 गीत उद प्रारंभः ॥ सकल मुखाकर जिनवर राय, त्रवियण वंड पासजीना पाय ॥ नामे
 नवनिधि होए वली, पूजें पातिक जाये टली ॥ १ ॥ नयरी वणारसी अथसेनराय, वामा-
 देवी जिनी माय ॥ सतिअ शिरोमणि रुप निधान, जिणि जनम्या श्री पास प्रधान ॥ २ ॥
 अंगें अंगी अति दीपे सार, रत्नजडित सिर मुगट उदार ॥ कानें कुंडल बाहे वेरखा,
 दीये हार सोहे नवलखा ॥ ३ ॥ इन्जनील समु तनु दीपंत, तेजें ससिहर रवि जिपंत ॥
 वदन कमल जस पूनेमचंद, नयन कमल दीढे अ्यानंद ॥ ४ ॥ बाध सिंद गज त्रय सवि
 टले, नूत प्रेत व्यंतर नवी वले ॥ रोग सेग छव वारण हार, पासजी नामे नित जेजे-
 कार ॥ ५ ॥ श्रीअचल गठे उदयो त्राण, श्रीधर्म मूर्ति सूरि जगजाण ॥ तास तणा वाचक
 वरशीप, चड राज मूरति गणी मुख ॥ ६ ॥ तास शिष पंडित उलट धरी, तवन रचिउमे
 खातं करी ॥ विजय सागर सुनिय त्राणे मुदा, ए तवन त्राणे तसघर मुख संपदा ॥ ७ ॥
 इति श्रीपार्थनाथ गीतं समाप्तं ॥ ॥ अथ श्रीअंतरिक पार्थनाथ स्तोत्र प्रारंभः ॥ मुख
 संपति दायक सदा, प्रणमुं अंतरिक पास ॥ काया मन वचनें करी, गालं गुण उह्लास
 ॥ १ ॥ प्रभु प्रणमीयें प्रहसमे पार्थनाथं, सहु सत्वने जे करे ते सनाथं ॥ नीलारत्न सम

तन् सोढे प्राणनाथं, घणुं तेज दीपे जिपे वल्ल नाथं ॥ १ ॥ शूत्र सरस आनन आति सुख-
 कार, दृश्ये निर्मल मोतीनो चारु हारं ॥ तुम मूर्ति सारी जरी गुण उदारं, निशाकर थकी
 सौम्यता अधिक सारं ॥ ३ ॥ अहो नव्य लोको बूढा कां जर्मोवो, मनुअ जन्म पामी
 दया कां गमोवो ॥ जगदाथ जोडी वीजाने नमोवो, तेतो अंब मेदी अर्कफल जिमोवो
 ॥ ४ ॥ अजाने ग्रही अमर धेनु तजोवो, राज मार्ग वांडी उवाटे बजोवो ॥ सुक्ताफल
 मूकीने सुजाने दीजोवो, मुसने लह मत मातंग दीजोवो ॥ ५ ॥ एवुं जाणीने स्वामीनी
 सेव सारो, जिम आवातां पाप संताप वारो ॥ प्रयु पेसल गणतणो पापवारो, विश्व-
 लंज वचन रसना दातारो ॥ ६ ॥ कवश ॥ एह त्रिजग वंदन छल निकंदन, वदित सुर
 असुरा तणी ॥ बहु दिनी हुती आस पहेती, जाव कीधी प्रचूतणी, संवत गारव गज
 ऋषीश्वर, चंडवर्षे प्रीतशुं ॥ पयनामि सरिंद विद्या सुनींद, ज्ञान कहे शूत्र रीतशुं ॥ ७ ॥
 इति श्रीअंतरिह्य पार्श्वनाथ स्तोत्र संपूर्णम् ॥ अथ श्रीश्रावक करणीनी सखाय
 प्रारंभः ॥ ॥ चोपार्द ॥ ॥ श्रावक तुं ऊठे परजात, चार घटी दे पावली रात ॥ मनमां
 समरे श्रीनवकार, जिम पामे जवसायस पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण
 अमारुं ठे कुल कर्म ॥ कवण अमारो ठे व्यवसाय, एवु चिंतवजे मन मांय ॥ १ ॥
 सामायिक देजे मन शुरु, धर्मनी दृइडे धरजे शुरु ॥ पडिकमणुं करे रयणी तणुं, पातक
 आलोह आपणु ॥ ३ ॥ काया शर्के करे पञ्चकाण, सूधी पादे जिननी आण ॥ त्रणजे
 गुणजे स्तवन सखाय, जिण हुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित चोदे निम, पादे

दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्य भावथी करजे सेव ॥ ८ ॥ पूजा करतां
 दात्र अपार, प्रभुजी मोटा सुकि दातर ॥ जे उत्रापे जिनवर देव, तेने नव डंडकनी
 देव ॥ ६ ॥ पोशादे गुरु वंदजे जाय, सुणजे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दुषण सूर्जंतो
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ७ ॥ साहामिवत्सल करजे धणुं, सगणण मोटुं सदाभी
 तणुं ॥ इःखिया हीणा दीनेने देख, करजे तास दया सुविशेष ॥ ८ ॥ घर अनुसारें देजे दान,
 मोटाशुं म करे अत्रिमान ॥ गुरने सुख देजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ९ ॥
 वारु शुद्ध करे व्यापार, उठा अधिकानो परिहार ॥ म नरजे केनी क्कनी साख, कूडाजनशुं
 कथन म न्रांख ॥ १० ॥ अनंत काय कहा वगीश, अन्नक्ष्य वावीशे विश्वावीश ॥ ते
 प्रदण नवि कीजे किमे, काचां कुणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रात्री प्रोजनना बहु दोष,
 जाणीने करजे सतोष ॥ साजी सावू लोह ने गली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ १२ ॥ वली
 म करवे रंगणपास, दूषण घणां कहां ठे तास ॥ पाणी गलजे वे वे वार, अणगल पीतां
 दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीना करजे यत्न, पातक ठंभी करजे पुण्य ॥ गांणां इंधण
 चूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर
 म धोइश चीर ॥ वारें व्रत सूधां पावजे, अतिचार सधला टालजे ॥ १५ ॥ कहां पन्नरे
 कर्मादान, पाप तणी परहरजे खाण ॥ माथे म देजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म नरजे
 षिंड ॥ १६ ॥ समकित शुद्ध दृढे राखजे, बोल विचारीने नाखजे ॥ पांच तिथि म करो
 अरंज, पावो शीयल तजो मन दंज ॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दहिं, उघाडां मत

मेवो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपकार करो शुभ चित्त ॥ १८ ॥ दिवस
 चरिम करजे चोविहार, चारें आहारतणो परिहार ॥ दिवस तणां आद्योए पाप, जिम
 प्राजे सधदा संताप ॥ १९ ॥ संध्यायें आवश्यक साचये, जिनवर चरण शरण नव
 नवे ॥ चारें शरण करी दृढ होय, सागरी अणसण दे सोय ॥ २० ॥ करे मनोरथ मन
 एहवा, तीरथ शेत्रुजे जायवा ॥ समेत शिखर आवू गिरनार, त्रेटीजा हुं धन धन आव-
 तार ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी श्रायें नवनो ठेह ॥ आठें कर्म पडे पातलां,
 पाप तणा छुटे आसदा ॥ २२ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पासे शिवपुर
 ताण ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी झःख हरणी ठे एह ॥ २३ ॥ इति श्रावक
 करणीनी सवाय संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीगोनी पार्थनाथनो स्तोत्र प्रारभः ॥ नमो नित
 प्रतें अश्वसेनाजान्तं, जसो कीर्ति महिमा घणी गुण विख्यातं ॥ प्रभुसेव करतां टले
 कर्म द्रं, भिजे मुक्ति लीला जेहनुं मर्म कांत ॥ १ ॥ धर्म नायक स्वामीतुं ध्यान धरीं,
 नव त्रमणनी नावठ दूर करीं ॥ इष्ट चित्तनां आसथ सर्व हरीं, मन निर्मल करी-
 यने मुक्ति वरीं ॥ २ ॥ प्रजो वीतरागं तजो दृष्टिरागं, करो आर्य कार्य धरो स्नेहरागं ॥
 कीर्ते नय शशी त्रेद पूजा अभ्रंगं, वली स्नात्र महोत्सव करो चित्तरंग ॥ ३ ॥ त्रया
 सुगुणसागर प्रभु पासदेवा, त्रिहुं लोकने हित करे नित्यमेवा ॥ अहोरात्री सारुं प्रभु
 तुह्य सेवा, जपुं नाम तोरुं जिम हस्ति रेवा ॥ ४ ॥ तुह्य चरण विण चार गति मांहे
 नमिजे, जक देवदा देवीने ह ज नमिजे ॥ त्रें नाहर पासे आठ्योह भ्यामी कवा कमी

सुने कीजीइ सिङ्गामी ॥ ५ ॥ प्रभु अंचलगत पती तेज दीपें, कांति दिनमणिनें
 निशापति जीपें ॥ विद्यासागर सूरिजी अधिक राजे, सर्व पूज्यमां वासव तुल्य राजे
 ॥ ६ ॥ सुनि ज्ञान सागर नमे चित्त आणी, दयाभाव कीजे प्रभु दास जाणी ॥ मादरे
 आज अमृत तणा मेह वृठा, सुने आप गोडी प्रभू पास तूजा ॥ ७ ॥ इति श्रीगोडी
 पार्थनाथनो स्तोत्र संपूर्ण ॥

अथ श्रीनेमिनाथ गीत प्रारंभः ॥ ॥ जग गुल जारी बें, जित देखुं उत लाव ॥ जग
 गुल ० ॥ तीन लोक फूल फूलवारी, षट् दर्वातीनो अंग ॥ पच भयान परपंच रहित सो,
 पंच फूल पंचरंग ॥ १ ॥ जग गुल ० ॥ नव नव रंग हें फूल फूलमें, एसें फूल अनंत ॥
 बलिहारी जस फूलकी, जो सुंगत श्रीभगवत ॥ २ ॥ जग गुल ० ॥ मन मधुकर श्रुतभयान
 फूलकें, दिन दिन रहत हें पास ॥ ज्ञान सागर सद्गुरुप्रसादें, निसदिन देत सुवास
 ॥ ३ ॥ जग गुल ० ॥ इति गीतं संपूर्ण ॥ ॥ राग कल्याण ॥ मनतोता पढमन जिन
 नामरे, मनतोता वे जिन नामरे, नाम नाम नामरे ० ए टेक ॥ नाम विषंदा सेव करंदा,
 पावदा गुण धाम धाम धामरे ॥ १ ॥ मन ० ॥ नेक निजरसें साहिव देखत, लागत नहिं
 कछु दाम दाम दामरे ॥ २ ॥ मन ० ॥ ज्ञान मिवाहें साहिव मेढावें, वेगे वंजित काम काम
 कामरे ॥ ३ ॥ मन ० ॥ गोडी पारस देत महारस, तुंहिज आतम राम राम रामरे ॥ ४ ॥
 मन ० ॥ श्रीविद्यासागर सूरको सेवक, ज्ञान करे गुन ग्राम ग्राम रामरे ॥ ५ ॥ मन ० ॥
 इति गीतं संपूर्ण ॥ ॥ राग कल्याण ॥ कल्यान कारी दरस तोहि, कल्यान सम देह

सोहि, कल्यान सामि देह मोहि, कल्यान गोरी पासरी ॥ १ ॥ कल्यान० ॥ कल्यानकें
 जिनदराय, कल्यान पर्वतें सिशय, कल्यान कवससे नवाय, कल्यान सुरपति जारसी
 ॥ २ ॥ कल्यान० ॥ कल्यानको जुहे प्रकार, कल्यान तीन उत्र सार, कल्यान पाद् पीठ
 धार, कल्यान पूरें आसरी ॥ ३ ॥ कल्यान० ॥ कल्यान सूरको विनेय, कल्यान ग्यान नाम
 लेय, कल्यान मोहि बहुत देय, कल्यान दावि खासरी ॥ ४ ॥ कल्यान० ॥ इति
 श्रीगीतं ॥ ॥ मांजी सदीए नेम मनावनीया, मांजे वो अंगन एजन गेंलें, कपटी ज्ञाना
 जगवान ॥ १ ॥ माळी० ॥ नव जवची मी सामीची दासी, मांजा जीवन प्रान ॥ २ ॥
 मांजी० ॥ अमांसी टाकूनि सुकिसी गेंलें, लागला तुमासी ध्यान ॥ ३ ॥ मांजी० ॥ राजुन
 मनें सामी करुणा करुनी, यावा समकित दान ॥ ४ ॥ माळी० ॥ ज्ञान सागर सांगें
 नेम कृपानिधि, तु माजा सुवतान ॥ ५ ॥ मांजी० ॥ इति श्रीनेमिनाथ गीतं संपूर्णं ॥
 ॥ अथ श्रीसुतकनी सिंहाय प्रारंभः ॥ देशी चोपाइनी ॥ श्रीसरस्वती देवी समरुं माय,
 सहशुरुने वली दागुं पाय ॥ विचार सार ग्रंथथी हुं कहुं, ते परमारथ जाणो सहू ॥ १ ॥
 सुतक तणो हुं कहु विचार, सांजवजो नर नारी सार ॥ जेने धरे जन्म थाइ ते जाण,
 दश दिवसनो कह्यो परीमाण ॥ २ ॥ एतलो पुत्र जन्मनो सार, पुत्री जन्में दिवस इथ्यार ॥
 सत्युधरनो सुतक दिन वार, ते धरे साधु न वोहरे आहार ॥ ३ ॥ ते धरनो जव
 अग्नि जाण, जिन पूजा नवि सुके सुजाण ॥ इम निश्चिथ चूर्णो मंहे कह्यो, ए तत्वार्थ
 गुरु मुखथी बह्यो ॥ ४ ॥ निश्चिथ सोवमं जेसे सार, ए महंत सुनि कहे अष्टांगार ॥

जन्म तथा मरण धर जाणो सहु, ज्गलनीक गुरु सुखधी दाहु ॥ ५ ॥ इम विवहार ज्ञा-
व्यमां वली, इम ज्ञाखे सुधा साधु केवली ॥ मलयगिरि कृत टीका जाण, दस दिवस जन्म
सुतक प्रमाण ॥ ६ ॥ हवे सांजलो जिन वाणी सार, इम ज्ञाखे सुधा अणगार ॥ विचार-
सार प्रकरणे सार, इम ज्ञाखे श्रीजिनगणधार ॥ ७ ॥ मास एक स्त्रीने सार, प्रतिमा दर्शन
न करे विचार ॥ दिवस चावीस जिन पूजा सार, न करे स्त्री ए व्यवहार ॥ ८ ॥ साधु
पिण नवी दीड ज्ञाहार, तिहां सुतक कहे अणगार ॥ तेहना धरनां माणस होय,
जन्म मरणनो सुतक जोय ॥ ९ ॥ न करे पूजा दिन वार ते जाण, समठी करज्यो चतुर-
सुजाण ॥ मृत्युने अडकणहारा कहा, चौवीस प्रहर ते साचा सह्या ॥ १० ॥ वली
पडिकमणदिक न करे जाण, इम ज्ञाखे ठे त्रिभुवन ज्ञाण ॥ वेशना पावटहारा कहा,
ज्ञाठ पहारे ते साचा सह्या ॥ ११ ॥ कांध देहणहारा मृत्युने जाण, वली अन्य
ग्रंथमें जाणो सुजाण ॥ सोल पहारे पडिकमणो नवि कह्यो, ए जिन भांख्यो आगम-
धी दाह्यो ॥ १२ ॥ जन्मनो सुतक दश दिन सार, जन्मने थानक मास विचार ॥ धरनां
गोत्रीने दिन पांच, सुतक टाले गुरु ज्ञाखे साच ॥ १३ ॥ जनम हुज तेज दिन मरे,
वली देशातर फरतां मरे ॥ कंन्यासी अनेरो मृत्युक होय, ते दीन एक सुतक जाणो
सोय ॥ १४ ॥ दास दासी धरमें मृत्युक होय, दिन एक वे ज्ञाणो सुतक होय ॥
ज्ञाठ वरसधी तिचो मरे शिछु, तो दिन ज्ञाठनो सुतक दरुं ॥ १५ ॥ इम जनम
मरणनो सुतक कह्यो, अन्य ग्रंथ माहे इमज कह्यो ॥ वली विचारसार माहे सार,

सुतक-
सुतक-
सुतक-
सुतक-
सुतक-

कह्यो विचार, ओडा माँहे प्रांथ्यो सार ॥ सुतक-
वाही, जिनथर सुखथी शु-शो लह्यो ॥ १९ ॥ सोहम सुख परंपरा
जिम प्राण ॥ श्री अंचलगळे वांड अणगार, श्रीपुण्यसिंधु

२७ ॥ एणे सांचले जे नर नार, पावे ते तो सुधाचार ॥ अनुक्रम अमर-
वमान सोहाय, रयण आनुषण धरी मुक्ते जाय ॥ ३१ ॥ संवत् जगणीया वीजोत्तरा
सार, श्रावण कृष्णपचमी कही हितकार ॥ श्रीजर्षोर्विदर चोमासुं करी, चोपार्ह सुत-
कनी कही थीर करी ॥ ३२ ॥ श्रावक श्राविका पादस्ये जेह, श्रीजिन आणाइं चावे
तेह ॥ सब रिख सिख तणां सुख सार, वली मुक्ति तणां सुख लहेस्ये निरधार ॥ ३३ ॥
इति श्रीसुतकनी सिंहाय संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री सचित्त अचित्त विचार सहाय वि-
ख्यते ॥ ॥ प्रवचन अमरी समरी सदा, गुरु पयंपंजन प्रणमी सुदा ॥ वस्तु तणुं कहुं
काल प्रमाण, सचित्त अचित्त विधि जिम द्वियो जाण ॥ १ ॥ वेहु कुरु मली चोमासा मान,
पट् कुरु मलीने वर्ष प्रमाण ॥ वर्षा शीत जणु त्रिहुं काल, त्रिहुं चोमासे वर्ष रसाव ॥ १ ॥
श्रावण प्राज्वो अशो मास, कार्तिके वरसावो वास ॥ मागशिर पोष महा ने फाणण,
ए चारे शियाला लाग ॥ ३ ॥ चैत्र वैशाख ने जेठ आषाढ, जणुकाव ए चारे गाढ ॥
वर्षा शरद शिशिर हेमंत, वसंत ग्रीष्म पट् कुरु एम तंत ॥ ४ ॥ वर्षा पक्षर दिवस
पकवान, वीश दीवस शियावे मान ॥ वीश दीवस जनावे रहे, पती अनद्य श्री

जिनवर कहे ॥ ५ ॥ रांघुं विदल रहे चिहुं जाम, जदन आठ प्रहर अत्रिराम ॥ शौल
 प्रहर दहिं कांजी वास, पवी रहे तो जीवनिवास ॥ ६ ॥ पापड लोइया वटक प्रमाण,
 चार प्रहर पोलीतुं मान ॥ मात्र प्रमुख निविणय पक्यान, चवित रसें तस कादनुं
 मान ॥ ७ ॥ धान धोयण ठ घडी परमाण, दोय घडी जलवाणी जाण ॥ फल धोयण
 एक प्रहर प्रमाण, त्रिफला जल वे घडी मान ॥ ८ ॥ त्रण वार जकावे जेह, शुद्ध जण
 जल कहीए तेह ॥ प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण, वर्षा शीत उनावे जाण ॥ ९ ॥ श्रावण
 जलवडे दिन पंच, मिश्र लोट अण चवित संच ॥ आश्रो कार्तिक चिहुं दिन जाण,
 मगशीर पोष दिन तीन प्रमाण ॥ १० ॥ माहा फागणे वहा पण जाम, चैत्र वैशाख
 चिहुं पौर अत्रिराम ॥ जेठ असाड प्रहर त्रण जोह, तद उपरांत सचित ते होइ
 ॥ ११ ॥ अजसी कोजवा कांगने ज्वार, साते वरसें अचित विचार ॥ विदल सर्व तिल तूपरी
 वाल, पाचे वरसें अचित रसाळ ॥ १२ ॥ घडं शादि खडधान कपास, जव त्रिहुं
 वरसें अचित ते खास ॥ गीत ताप वर्षादिक जोह, सचित योनि अचित ते होइ
 ॥ १३ ॥ हरडे पीपर मरित वदाम, खारक जाल एला अत्रिराम ॥ शत जोषण जल-
 वटमां वहे, गाठ जोषण शलवटमां कहे ॥ १४ ॥ धूम अक्षि परियट्टण करी, अचित योनि
 तस धाए खरी ॥ सचित वस्तु प्रवहणनी जेह, धारु अचित प्रवचन कहे तेह ॥ १५ ॥
 गेरु मणशील दूण हरियाळ, आवे जलवट माहे रसाळ ॥ ते अचित दोये प्रवचन
 साख, पण देवानी नहिं तस जाल ॥ १६ ॥ योलो सिधव कहेो अचित, श्रावणविषे

अक्षर परनीत ॥ इत्यादिक ज्ञेया ज्ञेयाय, तेह अचित आपना नवि थाय ॥ १७ ॥ खोरं
 घृत जे काळतीत, पलटाए वरणादिक रीत ॥ काचुं ड्य विदल सयोग, थाय अत्रक्ष्य
 कहे सुनिवोग ॥ १८ ॥ वार प्रहर रहे जूगली राय, शोल प्रहर राइतुं अजाव ॥ दहि
 राइ विदलें देवाय, जण करे तो शुद्धज थाय ॥ १९ ॥ कडा विणय परि श्रेक्यु धान,
 सुदूर्त चोवीस गोसुत्रतुं मान ॥ दळणियादिक विदलनी दाव, श्रेक्यां धान परें तस काळ
 ॥ २० ॥ चार प्रहर शीरो लापसी, विदल परें ते प्रवचन वशी ॥ जिहां तेहनो काळ
 पूरो थाय, तिहां ते वस्तु अत्रक्ष्य कहेवाय ॥ २१ ॥ अथाणा प्रमुख सहु जाण, चळित
 रसें तस काळतुं मान ॥ वीलवणादिक केरो काळ, शाख माहे ठे तेह विज्ञाळ ॥ २२ ॥
 तेह त्राणी इहा नाण्यो एह, अटपवुधिने पडे संदेह ॥ आर्दधान अंकुरा निकर्दे, ते
 सहु वस्तु अत्रक्ष्यमां त्रले ॥ २३ ॥ ए वोल्यो लवलेश विचार, विस्तार प्रवचन सारो-
 थार ॥ धीर विमल पंडित सुपसाय, कवि नय विमल कीथी सखाय ॥ २४ ॥ इति सचित
 अचित विचार सखाय संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री अणाहार वस्तुनी सिंहाय लिख्यते ॥
 देशी चोपार्दनी ॥ जर्षोमण वीर जिणंद, जेदने सेवे सुर नर इंद ॥ तिहुनां इंड-
 जुति गणधार, ते प्रणसुं हुं वार हजार ॥ १ ॥ अणाहारी वस्तु त्रांवी जेह, तेहना
 नाम कहुं संखेव ॥ त्रिफला कफु किरिआतो जाण, ते साधुने कटपे मुजाण ॥ २ ॥ नइ
 कदने धमासो जेह, दीवपत्र वदी जाणो तेह ॥ दीवसली ने दीवज दाव, दीव-
 काठ ने दीवज मूल ॥ ३ ॥ डात्र मूल ने वोरज दाव, केसर एदीयो वावळ दाव ॥

वोरमूल ने कथेरीमूल, चीत्रे कुदरु पेरज मूल ॥ ४ ॥ खेरवाला ते जाणो सही, ए
 अणहारी वस्तुज कही ॥ अंगर तंगर ने मलियांगरु, अवर कस्तुरी ते कही सुख-
 करु ॥ ५ ॥ राख चूनो ने रोहणीवाल, वज हलदर ने साजीखार ॥ असांध चोपचीनी
 वली कही, अंगम मंहि गुरुर्ये सही ॥ ६ ॥ त्रांयरीगणी वली अफीण ते जाण,
 फिको दटाळादिक वलाण ॥ अतिविज ने पुआडज वली, अणहारी वस्तुज त्रांखी
 केवली ॥ ७ ॥ सुरोखार ने टकाणखार, मजीठ वोल कणयर जवखार ॥ अर्कादिक जे
 पचज कहां, खारो फिटकडी जे मेवह्या ॥ ८ ॥ चिमेड पिस्तांनां जे फूल, चीड
 उपलोट दजाणीमूल ॥ जेरी नावियेर ने जेरी गोटली, वोजगण फूल ते जाणो वली
 ॥ ९ ॥ ए अणहारी वस्तु ते जाण, ए साधुनें कल्पे सुजाण ॥ ए अंगममां वातज
 कही, सुक्ति साची गुरुमुखधी लही ॥ १० ॥ इति श्री अणहारी वस्तुनी सिंहाय
 संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री सन्धत्तवना सप्तसठ वोलनी सहाय प्रारभः ॥ ॥ दोहा ॥ सुकृत
 वल्ली काद्विनी, समरी सरसती मात ॥ समकित सडसठ वोलनी, कहीशु मधुरी वात
 ॥ १ ॥ समकित दायक गुरु तणे, पञ्चव्यार न थाय ॥ नव कोफा कोफे करी, करतां
 सर्व उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये, समकित विणे शिव शर्म ॥ ते माटे
 समकित वरु, जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाजधी, जे निर्मल गुण ठाण ॥
 ते निश्चय समकित कह्यो, तेहनां ए अहिवाण ॥ ४ ॥ दाव ॥ देद देद दरिसण
 आपणुं ॥ ए देखी ॥ चव सदहणा ति विंग वे, दश विध विनय विचारोरे ॥ त्रिण शुकि

पण दूषण, आठ प्रभाविक धारो रे ॥ ५ ॥ झुटक ॥ प्रभाविक अड पंच नूषण, पंच
 लक्षण जाणीयें ॥ षट जयण पट आगार जावन, वविहा मन आणीयें ॥ षट गाण, सम-
 कित तणा सडसठ, त्रेद एह उदार ए ॥ एहनो तत्व विचार करतां, लहीजे तव पार ए ॥ ६ ॥
 दाव ॥ चउविह सहहणा तिहां, जीवादिक परमजो रे ॥ प्रवचनमाहे जे प्राखिया, तीजे तेहनो
 अजो रे ॥ ७ ॥ झुटक ॥ तेहनो अर्थ विचार करीयें, प्रथम सहहणा खरी ॥ बीजी सह-
 हणा तेहना जे, जाण सुनिगुण जवहरि ॥ संवेग रंग तरंग जीवे, मार्ग शुध कहे
 बुधा ॥ तेहनी सेवा कीजिये जिम, पीजीये समता सुधा ॥ ८ ॥ दाव ॥ समकित जेणे
 प्रही वमिजं, निहव ने अहवंदा रे ॥ पासजाने कुशीदिया, वेष विडंबक मंदा रे ॥ ९ ॥
 झुटक ॥ मदा अनाणी दूर वंदो, बीजी सहहणा प्रही ॥ परदर्शनीनो संग तजीयें, चौथी
 सहहणा कही ॥ हिणा तणो जे सग न तजे, तेहनो गुण नवि रहै ॥ वुं जलधि जलमा
 तव्युं गंगा, नीर दूणपणुं लहे ॥ १० ॥ दाव ॥ कपूर होवे अति जजलो रे ॥ ए
 देशी ॥ त्राण विंग समकित तणां रे, पहिवुं श्रुत अत्रिवाष ॥ जेहथी श्रोता रस लहे रे,
 जेहवो साकर जाव रे ॥ प्राणी धरीयें समकित रंग, जिम लहीये सुख अत्रंग रे ॥ प्राणी ० ॥
 ए टेक ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परीवर्यो रे, चतुर सुणे सुर गीत ॥ तेहथी रगो अति
 धणो रे, धर्म सुणायानी रीत रे ॥ प्राणी ० ॥ १२ ॥ नूरयो अटवी जतर्यो रे, जिम द्विज
 वेवर चंग, इहे तिम जे धर्मने रे, तेहिज बीजुं विंग रे ॥ प्राणी ० ॥ १३ ॥ वैयावच्च
 गुरु देवनुरे, बीजुं विंग उदार ॥ विद्या साधक तणी परे रे, आवस नविय लगार रे ॥

प्राणी० ॥ १४ ॥ दाव ॥ प्रथम गोवाला तणे त्रवेजी ॥ ए देशी ॥ अरिहंत ते जिन
 विचरताजी, कर्म खपी दुआ सिध ॥ चेइय जिन पडिमा कहीजी, सूत्र सिधंत
 प्रसिध ॥ चतुर नर समको विनय प्रकार, जिम दाहियें समकित सार ॥ चतुर० ॥
 ॥ १५ ॥ धर्म खिमादिक जालिजंजी, साधु तेहना रे भेइ ॥ आचारज आचारना जी,
 दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ जपाधाय ते शिष्यनें जी, सूत्र त्रणावणहार ॥
 प्रवचन संघ वखाणिये जी, दरिसण समकित सार ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ त्रकि बाह्य
 प्रतिपत्तिथी जी, हृदय प्रेम बहुमान ॥ गुण श्रुति अथगुण दांकवाजी, आशातननी
 दाण ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ पांच त्रेद ए दश तणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सिचे तेह
 सुधारसें जी, धर्म दक्षनु मूल ॥ चतुर० ॥ १९ ॥ दाव ॥ धोबीडा तुं धोये मननुं धोति-
 युं रे ॥ ए देशी ॥ त्रण शुधि समकित तणी रे, तिहा पहिली मन शुधि रे ॥ श्रीजिनने
 जिनमत विना रे, श्रुत सकल ए बुधि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए अंकाणी
 ॥ २० ॥ जिन त्रगते जे नवि श्रयुं रे, ते वीजाथी नवि श्राय रे ॥ एवुं जे मुख जालियें रे,
 ते वचन शुधि कहेवाय रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ देवो त्रेवो वेदना रे, जे सहेतो अनेक
 प्रकार रे ॥ जिन विण पर सुर नवि नमे रे, तेहनी काया शुधि उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥
 दाव ॥ सुनिजन मारगानी देशी ॥ समकित दूषण परिहरो, तेमां पहिली ठे त्रंका ॥ ते
 जिन वचनमां मत करो ॥ जेहनें सम नृप रका, समकित दूषण परिहरो ॥ ए अंकाणी
 ॥ २३ ॥ कंखा कुमतनी वाडना, बीजु दुपण तजिये ॥ पामी सुरतर परगडो, किम

बाजल त्रजीयें ॥ सम० ॥ १४ ॥ संशय धर्मना फल तणो, वित्तिगिहा नामें ॥ त्रीजें दु-
 पण परिहरो, निज शुभ परिणामें ॥ सम० ॥ १५ ॥ सिध्यामति गुण वर्णनो, टावो चोथो
 दोष ॥ उन्मार्गीं शुणतां हुवे, उन् मारग पोष ॥ सम० ॥ १६ ॥ पांचमो दोष सिध्यामति,
 परिचय नवि कीजें ॥ एम शुभमति अरविंदनी, तवी वासना लीजें ॥ सम० ॥ १७ ॥
 दाव ॥ त्रोटिडा हंसारे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥ आठ प्रभाविक प्रवचनना कहा,
 पावयणी धुरि जाण ॥ वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो, पार लहे गुणखाण ॥ धन धन
 जासन मंडन सुनियरा ॥ ए आंकणी ॥ १८ ॥ धर्मकथी ते बीजो जाणीयें, नंदिषेण
 परि जेह ॥ निज उपदेशें रे रजे लोकने, तंजे हृदय संदेह ॥ धन० ॥ १९ ॥ वादी त्रीजो रे
 तर्क निपुण त्रयो, महवादी परि जेह ॥ राजकारें रे जय कमलावरे, गाजंतो जिम मेह
 ॥ धन० ॥ ३० ॥ त्रजवाहु परि जेह निमित्त कहे, परमत जीपण काज ॥ तेह निमिती रे
 चोथो जाणीये, श्री जिनशासन राज ॥ धन० ॥ ३१ ॥ तप गुण उपर रोपे धर्मने, गोपे
 नवि जिन आण ॥ आश्रव लोपे रे नवि कोपे कदा, पचम तपसी ते जाण ॥ धन० ॥ ३२ ॥
 वठो विद्या रे मंत्रतणो बलि, जिम श्री वयर सुणेंद ॥ सिद्ध सातमो रे अंजन योगथी,
 जिम कातिक सुनिचंद ॥ धन० ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मधुर अर्थ त्रयो, धर्म हेतु करे
 जेह ॥ सिद्धसेन परे नरपति रीजवे, अठम वर कवि तेह ॥ धन० ॥ ३४ ॥ जब नवि दोष
 प्रभाविक एहवा, तव विधि पूर्व अनेक ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रभाविक
 ठेरु ॥ धन० ॥ ३५ ॥ दाव ॥ सतिय सुप्रजानी देशी ॥ सोहे समकित जेहथी, सखि

प्राणी० ॥ १४ ॥ दाव ॥ प्रथम गोवाला तणे प्रवेजी ॥ ए देशी ॥ अरिहंत ते जिन
 विचरताजी, कर्म खपी हुआ सिध ॥ वेश्य जिन पडिमा कहीजी, सूत्र सिधांत
 प्रसिध ॥ चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिन लहियें समकित सार ॥ चतुर० ॥
 ॥ १५ ॥ धर्म खिमादिक जाखिजंजी, साधु तेहना रे गेह ॥ आचारज आचारना जी,
 दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ जपाधाय ते शिष्यनें जी, सूत्र त्रणावणहार ॥
 प्रवचन संघ वखाणिये जी, दरिसण समकित सार ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ त्रकि बाह्य
 प्रतिपत्तिशी जी, हृदय प्रेम बहुमान ॥ गुण श्रुति अथगुण टांकवाजी, आशातननी
 दाण ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ पाच त्रेद ए दश तणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सिंचे तेह
 सुधारसें जी, धर्म टक्नु मूल ॥ चतुर० ॥ १९ ॥ दाव ॥ धोबीडा तुं धोये मननुं धोति-
 दुं रे ॥ ए देशी ॥ त्रण शुद्धि समकित तणी रे, तिहां पहिदी मन शुद्धि रे ॥ श्रीजिनने
 जिनमत विना रे, जुठ सकल ए बुद्धि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए आंकाणी
 ॥ २० ॥ जिन जगत जे नवि श्युं रे, ते बीजाथी नवि श्या रे ॥ एतुं जे सुख जाखियें रे,
 ते वचन शुद्धि कहेवाय रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ वेधो त्रेधो वेदना रे, जे सहेतो अनेक
 प्रकार रे ॥ जिन विण पर सुर नवि नमे रे, तेहनी काया शुद्धि उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥
 दाव ॥ सुनिजन मारगानी देशी ॥ समकित दूषण परिहरो, तेमां पहिदी वे शंका ॥ ते
 जिन वचनमां मत करो ॥ जेहनें सम नृप रका, समकित दूषण परिहरो ॥ ए आंकाणी
 ॥ २३ ॥ कखा कुमतनी वाचना, बीजु दूषण तजियें ॥ पामी सुरतर परगडो, किम

वाजल नजीयें ॥ सम० ॥ १४ ॥ संशय धर्मना फल तणे, वित्तिनिवा नामें ॥ त्रीजूं दु-
 पण परिहरे, निज शुभ परिणामें ॥ सम० ॥ १५ ॥ मिथ्यामति गुण वर्णनो, टाळो चोश्रा
 दोष ॥ उन्मार्गी शुणतां हुवे, उन् मारण पोष ॥ सम० ॥ १६ ॥ पांचमो दोष मिथ्यामति,
 परिचय नवि कीर्जे ॥ एम शुभमति अरविंदनी, नदी वासना लीर्जे ॥ सम० ॥ १७ ॥
 टाल ॥ त्रोटिडा हसारे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥ आठ प्रभाविक प्रवचनना कह्या,
 पावयणी धुरि जाण ॥ वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो, पार लहे गुणखाण ॥ धन धन
 शासन मंडन सुनिवरा ॥ ए आंकणी ॥ १८ ॥ धर्मकथी ते वीजो जाणीयें, नंदिषेण
 परि जेह ॥ निज उपदेयें रे रजे लोकने, नंजे हृदय संदेह ॥ धन० ॥ १९ ॥ वादी त्रीजो रे
 तर्क निपुण नणयो, मझवादी परि जेह ॥ राजद्वारें रे जय कमलावरे, गाजंतो जिम मेह
 ॥ धन० ॥ ३० ॥ नजवाहु परि जेह निमित्त कहे, परमत जीपण काज ॥ तेह निमिती रे
 चोथो जाणीये, श्री जिनशासन राज ॥ धन० ॥ ३१ ॥ तप गुण उपर रोपे धर्मने, गोपे
 नवि जिन आण ॥ आश्रव लोपे रे नवि कोपे कदा, पंचम तपसी ते जाण ॥ धन० ॥ ३२ ॥
 वठो विद्या रे मंत्रतणो वलि, जिम श्री वयर सुणिद ॥ सिध सातमो रे अंजन योगधी,
 जेह ॥ सिध सातमो रे अंजन योगधी, जिम श्री वयर सुणिद ॥ सिध सातमो रे अंजन योगधी,
 प्रभाविक एहवा, तव विधि पूर्व अनेक ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रभाविक
 ठेक ॥ धन० ॥ ३५ ॥ दाव ॥ सतिय सुनजानी देशी ॥ सोहे समकित जेहधी, सखि

जिम आत्रणें देह ॥ नृपण पांच ते मन वसां, सखि मन वसां तेहमां नदीं सदेह, मुळ
समकित रंग अचव होजो ॥ ए आंकाणी ॥ ३६ ॥ पहिजुं कुजावपणुं तिहां, सखी वंदन ने
पद्मखाण ॥ किरियानो विधि अतिघणो, सखी आचरे तेह सुजाण ॥ मुळ ० ॥ ३७ ॥ वीजुं
रीष्ट्रसेवना, सखी तीरथ तारे तेह ॥ ते गितारथ सुनिवरा, सखी तेहसुं कीजे नेह ॥ मुळ ०
॥ ३८ ॥ जगति करे गुरु देवनी, सखी वीजुं नृपण होय ॥ किणहि चलावयो नवि चचे, सखी
चोथुं नृपण जोय ॥ मुळ ० ॥ ३९ ॥ जिन शासन अनुमोदना, सखी जेहथी बहु जन
हुंत ॥ कीजे तेह प्रजावना, सखी पांचसुं नृपण खंत ॥ मुळ ० ॥ ४० ॥ दाव ॥ इम
नवि कीजे हो ॥ ए देशी ॥ लक्षण पांच कहां समकित तणां, धुर उपयाम अनुकूद ॥
सुगुण नर ॥ अपराधीसुं पण नवि चित थकी, चितविषं प्रतिकूद ॥ सुगुण नर ॥ श्री जिन
जाषित वचन विचारिये ॥ ए आंकाणी ॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे डख करी देखवे, वंते
शिव सुख एक ॥ सुगुण ० ॥ वीजुं लक्षण ते अंगी करे, सार संवेग सु टेक ॥ सुगुण ० ॥
श्रीजिन ० ॥ ४२ ॥ नारक चारक सम नव जगयो, तारक जाणनि धर्म ॥ सुगुण ० ॥ चाहे
निकलवुं निवेदते, वीजुं लक्षण मर्म ॥ सुगुण ० श्रीजिन ० ॥ ४३ ॥ जव्य थकी जखि-
यानी जे दया, धर्म दीणानी रे जावि ॥ सुगुण ० ॥ चोथुं लक्षण अनुकंपा कही, निज
शक्तें मन ट्यावि ॥ सुगुण ० ॥ श्रीजिन ० ॥ ४४ ॥ जे जिन नारयुं ते नदीं अन्याथा,
एहयो जे दह रंग ॥ सुगुण ० ॥ ते आस्तिकता लक्षण पांचसुं, करे कुमतिनो ए रंग ॥
सुगुण ० ॥ श्रीजिन ० ॥ ४५ ॥ दाव ॥ जिन जिन प्रति वंदन दिसे ॥ ए देशी ॥ पर

तीर्थं परना सुर तेणे, चैत्य ग्रहा वली जेह ॥ वंदन प्रमुख तिहां नवि करवुं, ते जयणा
 षट् त्रेपरे, त्रिका समकित पतना कीजे ॥ ए आंकणी ॥ ४६ ॥ वंदन ते करजोडन
 कहियें, नमन ते शीश नमने ॥ दान इष्ट अन्नादिक देवुं, गौरव त्रिकि देवार्ने रे ॥ त्रिका ०
 ॥ ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहीये, वार वार जे दान ॥ दोष कुपात्रें पात्र मतिर्ये ॥
 नहि अनुकंपा मान रे ॥ त्रिका ० ॥ ४८ ॥ अण बोलावे जेह पांखवुं, ते कहीये आलाप ॥
 वार वार आलाप जे करवो, ते कहीये संलाप रे ॥ त्रिका ० ॥ ४९ ॥ ए जयणाथी सम-
 कित दीपे, वली दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी जयणा, तेह अनेक प्रकार रे ॥
 त्रिका ० ॥ ५० ॥ दाढ ॥ लवनानी देशी ॥ शुरु धरमथी नवि चवे, अति दृढ गुण
 आधार ॥ लवना ॥ तो पण जे नवि तेहवा, तेहने एह आगार ॥ लवना ॥ ५१ ॥ बोदुं
 तेवुं पावीये, दंति दंत सम बोद ॥ लवना ॥ सज्जनने डर्जन तणा, कडप कोटीने तोद ॥
 लवना ॥ बोदुं ० ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अत्रियोग ॥ लवना ॥
 तेहथी कार्तिकनी परें, नहि मिथ्यात्व संयोग ॥ लवना ॥ बोदुं ० ॥ ५३ ॥ मेवो जननो गण
 कथो, वद चौरादिक जाण ॥ लवना ॥ क्षेत्रपालादिक देवता, तातादिक गुरु जाण ॥
 लवना ॥ बोदुं ० ॥ ५४ ॥ दत्ति डर्जन आजीविका, ते त्रीषण कंठार ॥ लवना ॥ ते हेते
 द्रपण नहि, करतां अन्य आचार ॥ लवना ॥ बोदुं ० ॥ ५५ ॥ दाढ ॥ राग मदहार ॥
 त्राविजे रे समकित जेहथी रुअहुं, ते चावना रे चावो मन करि परवहुं ॥ जो समकित
 रे ताजुं साजुं मूव रे, तो व्रततरु रे दीपे शिवपद अनुकूद रे ॥ ५६ ॥ त्रुटक ॥ अनु-

कृत्वा मूल रसात् समकित, तेह विण मति अध रे ॥ जे करे किरिया गर्व भरिया, तेह
 जूरो धंध रे ॥ ए प्रथम जावना गुणो रुच्यनी, सुणो बीजी जावना ॥ बारणुं समकित,
 धर्मपुरनु, एहवी ते पावना ॥ ५७ ॥ दाढ ॥ बीजी जावना रे समकित पीठ जो दढ
 सही, तो मोटा रे धर्म प्रासाद डगे नही ॥ पाइए खोटो रे मोटो मंडाण न शोनीये,
 तेह कारण रे समकितशुं चित्त शोनीये ॥ ५८ ॥ झटक ॥ शोनीये चित्त तित एम जावी,
 चौथी जावना जाविये ॥ समकित निधान समस्त गणतुं, एहवुं मन दाविये ॥ तेह
 विण वटा रत्न सरिखा, मूल उत्तर गुण सर्वे ॥ किम रहे ताके जेह हरवा, चोर जोर
 जवे जवे ॥ ५९ ॥ दाढ ॥ जावो पचमी रे जावना शमदम सार रे, पृथ्वी परे रे
 समकित तसु आधार रे ॥ ठडी जावना रे समकित जाजन जो मले ॥ श्रुत शीलनो
 रे तो रस तेहमां नवि दले ॥ ६० ॥ झटक ॥ नवि दले समकित जावना रस, अमिय
 सम संवर तणो ॥ षट जावना ए कही एहमां, करो आदर अति घणो ॥ इम जावता
 परमार्थ जलनिधि, होय नित ऊकजोल ए ॥ धन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे ॥ चिदा-
 नंद कह्योव ए ॥ ६१ ॥ दाढ ॥ जे सुनि वेध सके नवि ठंडी ॥ ए देखी ॥ ठरे जिहा
 समकित ते धानक, तेहना षट विध कहीये रे ॥ तिहां पहेवुं धानक ठे चेतन, दक्षण
 आतम लहीये रे ॥ खीर खीर परे पुकव मिश्रित, पण एहथी ठे अलगो रे ॥ अनुभव
 हंस चंच जो लागे, तो नवि दिसे बलगो रे ॥ ६२ ॥ बीजुं धानक नित्य आतमा,
 जे अनुभव संचारे रे ॥ बालकने स्तनपान वासना, पूरव जव अनुसारे रे ॥ देव

मनुज नरकादिक तेहना, ते अनित्य पर्याय रे ॥ उच्य शर्की अविचक्षित अखंडित,
 निज गुण आतम राय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं थानक चेतन कर्ता, कर्म तणे ते योगे रे,
 कुंजकार जिम कुंज तणो जे, दग्धादिक संयोगे रे ॥ निश्चयथी निज गुणानो कर्ता, अनुप
 चरित व्यवहारें रे ॥ इच्य कर्मनो नगरादिकनो, ते उपचार प्रकारें रे ॥ ६४ ॥ चौथुं
 थानक ते ते त्रोक्ता, गुण्य पाप फलकेरो रे ॥ व्यवहारें निश्चय नय दष्टें, जुंजे निज गुण
 नेरो रे ॥ पंचम थानक ते परमपद, अचल अनंत सुख वासो रे ॥ आधि व्याधि तन
 मनथी दक्षिणें, तसु अत्रावे सुख वासो रे ॥ ६५ ॥ उहुं रथानक मोक्षतणुं ते, संयम ज्ञान
 उपायो रे ॥ जो सहिजे दक्षिणें तो सधवे, कारण निःफल आयो रे ॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज
 साचुं, ते विण जूठी किरिया रे ॥ न दवे रूपु रूपु जाणी, सीप त्राणी जे फरियारे ॥ ६६ ॥
 कहे किरिया नय किरिया विण जे, ज्ञान तेह जुं करशे रे ॥ जल पेसी कर पद न द्वावे,
 तारु ते किम तरशे रे ॥ दूषण तूषण ते इहां बहुदां, नय एकेकने वादें रे ॥ सिद्धांती ते
 वेहु नय साधे, ज्ञानवंत अप्रमादें रे ॥ ६७ ॥ इणी परे सप्तसठ बोद विचारी, जे
 समकित आराहे रे ॥ राग द्वेष टाळी मन वाळी, ते समसुख अयगाहे रे ॥ जेहनुं
 मन समकितमां निश्चल, कोइ नहीं तस तोळे रे ॥ श्री नयविजय विदुष पय सेवक,
^{आयक} जस इम बोळे रे ॥ ६८ ॥ ॥ इति श्री सम्यक्तवना सडसठ बोदनीसव्वाय
 सपुष्प ॥ ॥ अथ श्री रात्रि त्रोजननो सव्वाय प्रारंभ ॥ ॥ पुण्य संयोगे नर त्रय
 लाधो, साधो आतम काज ॥ विषय रस जाणो विष सरखो, एम त्रांळे जिनराज रे ॥

प्राणी रात्रि जोजन वारो ॥ अगाम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे ॥
 प्राणी रात्रि जोजन० ॥ १ ॥ ए. अंकाणी ॥ अत्रदृश्य बावीशमां रथणी जोजन, दीष
 कद्या परधान ॥ तेषु कारण राते मत्त जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ प्राणी० ॥
 ॥ २ ॥ दान शान आद्युध ने जोजन, एटवां राते न कीजे ॥ ए. करवां सूरजनी साखे,
 नीति वचन समजीजे रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंथी पण राते, टावे जोजन टाणो ॥ तुम
 तो मानवी नाम धरावो, किम संतोष न आणो रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ माखी जू, कीडी
 कोवी आवडो, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपार्थ
 रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ बड्डु नव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं ॥ एक तलाव
 फोडतां तेदुळुं, दूषण सुगुरु वतायुं रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर नव सर फोड्या सम,
 एक दव देता पाप ॥ अवलोत्तर नव दव दीधा जिम, एक कुवाणज संताप रे ॥
 प्राणी० ॥ ७ ॥ एकसो चुम्माळीश नव लगे कीधा, कुवाणजना जे दीष ॥ कुडुं एक
 कलंक दिवंतां, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥ एकसो एकावन नव लगे दीधां,
 कुडां कलक अपर ॥ एक वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्राणी० ॥
 ॥ ९ ॥ एकसो नवाणुं नव लगे खंड्या, शीयल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिजो-
 नमां, कर्म निकचित बंध रे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ रात्रिजोजनमां दीष घणा ठे, शो
 कहीधे विस्तार ॥ केवटी कहेतां पार न पावे, पूरव कोडी मऊर रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥
 एवु जाणीने उत्तम प्राणी, नित्य चोविहार करीजे ॥ मासे मासे पास स्वमणनो, दात्र

एणे विधे वीजें रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पावे नर
नारी ॥ सुर नर सुख विलसीने दोवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥
इति राजिज्जोवननो सखाय समाप्त ॥ अथ श्री निंदावारक सखाय प्रारंभः ॥
निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे, निंदानां बोल्यां महापापरे ॥ वैर विरोध बाधे घणोरे,
निंदा करतो न गणे माय वापरे ॥ निंदा० ॥ १ ॥ दूर वदंती कां देखो तुझरे, पगमां
वदती देखो सहु कोयरे ॥ परना मेवमां धोयां तुगभारे, कहे केम ज्ञजळां होयरे ॥
निंदा० ॥ १ ॥ आप संभावो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पढी टेवरे ॥ शोडे घणे
अवगुणें सहु रया रे, केहनां नवियां चूवे केहनां नेवरे ॥ निंदा० ॥ ३ ॥ निंदा करे
ते थाये नारकीरे, तप जप कीधुं सहु जायरे ॥ निंदा करो तो करजो आपणोरे, जेम
छटक्यारो थाय रे ॥ निंदा० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणा रे, जेहमां देखो एक
विचार रे ॥ कृष्णपूरें सुख पामयो रे, समय सुंदर सुखकार रे ॥ निंदा० ॥ ५ ॥ इति
निंदावारक सखाय संपूर्ण ॥ अथ श्री निजडीनी सखाय प्रारंभः ॥ निजडी वेरण हुइ
रही, किम कीजें हो सा पुरुष निदान के ॥ चोर फरे चिहुं पासथी, किम सुता हो कांड
दिन ने रात के ॥ निजडी० ॥ १ ॥ वीर कहे सुणो गोयमा, मत करजो हो एक समय
प्रमाद के ॥ जरा आवे यौवन गवे, किम सुता हो कांड कवण सवाद के ॥ निजडी०
॥ १ ॥ चजद पुरवधर मुनिवरा, निजा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो
अनंत काल तिहां रहे, दम वगडे हो कांड धरमनो मोद के ॥ निजडी० ॥ ३ ॥

जोरावर घणा जाळमी, यमराजा हो कांड सवल करर के ॥ निज सेना लह चिहुं दिशें,
 किम जागता हो नर कधीयें शूर के ॥ निजडी० ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नहिं, उतरायें
 हो नर सत्तो नेट के ॥ सूतारिणी पाजा जणया, किम कीजें हो शा पुरुषनी भेट के ॥
 निजडी० ॥ ५ ॥ श्री वीरें एम चांखीयुं, पंखी नारंरु हो न करे परमाद के ॥ तेह तणी
 परे विचरजो, परिहरजो हो गोयम परमाद के ॥ निजडी० ॥ ६ ॥ वीर वचन एम
 सांजली, परिहरियो हो गोयमें परमाद के ॥ वीवा सुख वीधां घणां, थिर रहियो हो
 जगमां जसवाद के ॥ निजडी० ॥ ७ ॥ निंद निजनी मत आणजो, सुह रहेजो हो
 सहको सावधान के ॥ ध्यान धरम हिये धारजो, इम चांखे हो मुनि कनक निदान
 के ॥ निजडी० ॥ ८ ॥ इति निजडीनी सखाय संपूर्ण ॥ अथ श्री पद्मावतीनी आरा-
 धना प्रारंज ॥ ॥ हवे राणी पद्मावती, जीवरशि स्वमार्गे ॥ जाणपणुं जग ते जहुं,
 इण वेवा आवे ॥ १ ॥ ते सुज मिजामि ड्कडं, अरिहंतनी साख ॥ जे में जीव विरा-
 धिया, चजरशी लाख ॥ ते सुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा, साते अप्काय ॥
 सात लाख तेजकायना, साते वली वाय ॥ ते सुज० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति,
 चउदह साधार ॥ बी, ती, चउरिंदी जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते सुज० ॥ ४ ॥
 देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चौराशी ॥
 ते सुज० ॥ ५ ॥ इण जर्वे पर जर्वे सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविध करी
 परिहरूं, इर्गतिनां दातार ॥ ते सुज० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोड्या मृषावाद ॥

दोष अदत्ता दानना, मैथुन जन्माद् ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारिमो, कीधो
 क्रोध विशेष ॥ मान माया लोत्र में कीयां, वली राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ कलह
 करी जीव दूहन्था, दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥ ते
 मुज० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चोत्तरे, कीधो आपण मोसो, कुशुर कुदेव कुधर्मनो, त्रलो
 आणयो त्ररोसो ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ खाटकीने त्रवें में कीया, जीव नानाविध घात ॥
 चिमीमार त्रवें चरकलां, मार्यां दिनरात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ काजी सुह्जाने त्रवे, पटी
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक ऋश्रे कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते मुज० ॥ १२ ॥
 मातीने त्रवे मावलां, जाट्यां जलवास ॥ धीवर त्रील कोली त्रवे, सृग पाड्या पात्र ॥ ते
 मुज० ॥ १३ ॥ कोटवालने त्रवें में कीयां, अकराकर दंड ॥ वदीवान मराविधा, कोरडा
 लडी दंड ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमाधामीने त्रवें, दीधा नारकी झःख ॥ वेदन त्रेदन
 वेदना, ताडन अति तिरक ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंभारने त्रवें में कीया, नीत्राह पचा-
 न्या ॥ तेली त्रवें तिल पीलिया, पार्वे पिंड त्राट्या ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ दाली त्रवें
 हल खेमीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट ॥ सूड निदान घणां क्रिया, दीधा वलद् चंपेट ॥
 ते मुज० ॥ १७ ॥ मातीने त्रवें रोपिया, नानाविध दृक् ॥ मूल पत्र फल फूलनां, लाग्ना
 पाप ते लक् ॥ ते मुज० ॥ १८ ॥ अधोवाईर्याने त्रवें, भर्या अधिका नार ॥ पोती पूंते
 कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ वीपाने त्रवें हेतर्या, कीधां
 रणण पास ॥ अग्नि अरंज कीधा घणा, धातुवाद् अन्त्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥

शूर पणें रण जूकता, मार्यां माणस तंद ॥ मदिरा मांस माखण नख्यां, खाधां मूत्र ने
 कद ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उद्धेच्यां ॥ अरंज कीधा अति
 घणा, पोते पापज संच्यां ॥ ते मुज० ॥ १२ ॥ कर्म अगार कीधा वली, धरमें दूव
 दीधा ॥ सम खाधा वीतरगना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ विद्धी नवे
 उंदर वीधा, गरोली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे नवे, में जू वीखमारी ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥
 चाड जुंजा तणे नवे, एकेजिय जीव ॥ ज्वारी चणा घडं शेकीया, पाडंता रीव ॥ ते मुज०
 ॥ १५ ॥ खांडण पीसण गारना, अरंज अनेक ॥ रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप
 उदक ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग
 पाड्या कीधा, रुदन विषवाद ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत वहीने
 न्रांध्यां ॥ मूत्र अने उत्तर तणां, सुक दूषण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ १८ ॥ साप वीडी
 सिंह चीतरा, शकरा ने समली ॥ हिसक जीव तणे नवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते
 मुज० ॥ १९ ॥ सुवावडी दूषण घणां, वली गर्न गलाव्या ॥ जीवाणी होड्या घणां,
 शील वत न्रांध्यां ॥ ते मुज० ॥ ३० ॥ नव अनंत प्रमतां धकां, कीधा देह संबंध ॥
 त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ नव अनंत
 प्रमतां धकां, कीधा कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते
 मुज० ॥ ३२ ॥ इण परे इह नव परनवे, कीधा पाप अखज ॥ त्रिविध त्रिविध करी
 वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥ एण विधे ए अराधना, नावे करशे

जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, वली बुद्धो तेह ॥ ते सुज० ॥ ३५ ॥ राग वैरामी जे
 सुणे, एह ब्रोजी दाव ॥ समय सुंदर कहे पापथी, बुटै तत्काल ॥ ते सुज० ॥ ३६ ॥
 इति पद्यावती आराधना संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभः ॥
 दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशें जिनराय ॥ सहगुरु सामिनि सरस्वति, प्रेम
 प्रणसुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवन पति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंजौर ॥ शासन नायक
 जग जयो, वर्धमान वरु वीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥
 प्रविक जीवना हित जणी, पूजे गौतम स्वाम ॥ ३ ॥ सुक्ति मार्ग आराधियें, कही
 क्लिण परें अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, भांखे श्रीनगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार
 आलोइयें, ब्रत धरिये गुरुसाख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चौराशी दाख
 ॥ ५ ॥ विधिजुं वली वोसिरावियें, पापस्थान अढार ॥ चार बारण तिरय अनुसरो,
 निंदो डरित आचार ॥ ६ ॥ शुभकरणी अनुमोदियें, नाव जलो मन आण ॥ अण-
 सण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभ गति आराधन तण, ए दे
 दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो जवपर ॥ ८ ॥ दाव पहेंवली ॥ ए
 विडि किदां राखी ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥
 एह तणा इह जव पर जवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुण
 खाणी ॥ वीर वदे एम बाणी रे ॥ प्राणी ज्ञान० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु उदवीये नहिं
 गुरु विनयें, कावें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तडजय करी सूत्रां, जणीयें वही जपधान

श्वर पणै रण जूकता, मार्यां माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण प्रख्यां, खाधां मूल ने
 कद ॥ ते सुज० ॥ ११ ॥ खाण खणायी धातुनी, पाणी उद्धेच्यां ॥ अारंप्र कीधा अति
 धणा, पोते पापज संच्यां ॥ ते सुज० ॥ १२ ॥ कर्म अंगार कीधा वली, धरमें दव
 दीधा ॥ सम खाधा वीतरगना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते सुज० ॥ १३ ॥ विद्धी त्रवे
 उंदर लीया, गरोली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे त्रवे, में जू लीख मारी ॥ ते सुज० ॥ १४ ॥
 नाड जुंजा तणे त्रवे, एकेंद्रिय जीव ॥ ज्वारी चणा घडं शेकीया, पाडंता रीव ॥ ते सुज०
 ॥ १५ ॥ खाडण पीसण भारता, अारंप्र अनेक ॥ रांधण इंधण अन्नानां, कीधां पाप
 उदेक ॥ ते सुज० ॥ १६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग
 पाड्या कीया, रुदन विषवाद ॥ ते सुज० ॥ १७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत वहीने
 त्राण्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुक दूषण दाण्यां ॥ ते सुज० ॥ १८ ॥ साप वीढी
 सिह चीतरा, शकरा ने समली ॥ हिंसक जीव तणे त्रवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते
 सुज० ॥ १९ ॥ सुगावडी दूषण घणां, वली गर्ज गलाव्या ॥ जीवाणी दोड्या घणां,
 शील व्रत संजाव्यां ॥ ते सुज० ॥ ३० ॥ त्रव अनंत त्रमतां शकां, कीधा देह संबंध ॥
 त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते सुज० ॥ ३१ ॥ त्रव अनंत
 त्रमतां शकां, कीधा कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते
 सुज० ॥ ३२ ॥ इण परे इह त्रव परत्रवे, कीधां पाप अखत ॥ त्रिविध त्रिविध करी
 वोसिरुं, करुं जन्म प्रविध ॥ ते सुज० ॥ ३४ ॥ एण विधे ए अाराधना, त्रवे करशे

जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, वली तुट्ये तेह ॥ ते सुज० ॥ ३७ ॥ राग बेरानी जे
 सुणे, एह बीजी टाल ॥ समय सुंदर कहे पापथी, तुटे तत्काल ॥ ते सुज० ॥ ३६ ॥
 इति पद्मावती आराधना संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभः ॥ ॥
 दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशें जिनराय ॥ सहशुरु सामिति सरस्वति, प्रेमें
 प्रणसुं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवन पति त्रिशला तणे, नंदन गुण गंपीर ॥ शासन नायक
 जग जयो, वर्धमान वन वीर ॥ ९ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥
 त्रविक जीवना हित त्रणी, पूढे गौतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्ति मार्ग आराधियें, कहो
 किण परें अरिहत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, भांखे श्रीनगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार
 आलोइयें, ब्रत धरियें गुरुसाख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरायी टाख
 ॥ ५ ॥ विधियुं वली वोसिरावियें, पापरथान अटार ॥ चार शरण निरय अनुसरो,
 निंदो इरित आचार ॥ ६ ॥ शुभकरणी अनुमोदियें, त्राव त्रलो मन आण ॥ अण-
 सण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभ गति आराधन तणा, ए ठे
 दश अधिकार ॥ चित्त आणीति आदरो, जिम पामो त्रवपार ॥ ८ ॥ टाल पहेली ॥ ए
 विडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥
 एह तणा इह त्रव पर त्रवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान त्रणे गुण
 खाणी ॥ वीर वदे एम चाणी रे ॥ प्राणी ज्ञान० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु उंबवीधे नहिं
 गुरु विनयें, काळें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तडत्रय करी सूधां, त्रणियें वही उपधान

रे ॥ प्राणी ज्ञान० ॥ १ ॥ ज्ञानोपकरण पटी पोथी, ठवणी नोकर वादी ॥ तेह तणी
 कीथी आजातना, ज्ञान त्रिकि न संजादी रे ॥ प्राणीज्ञा० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीत
 पणार्थी, ज्ञान विराधुं जेह ॥ आत्रव परत्रव वलिय त्रवोत्रव, मित्रा डकड तेहरे ॥
 प्राणीज्ञा० ॥ ४ ॥ प्राणी समकित द्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिन वचनें रांका
 नवि कीजे, नवि परमत अत्रिलाख ॥ साधु तणी निदा परिहरजो, फल संदेह म रा-
 खरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ मूढ पणुं ठंडो परशांमा, गुणवंतने आदरिये ॥ साहामीने धर्म करी
 थिरता, त्रिकि प्रजावना करीये रे ॥ प्राणीस० ॥ ६ ॥ संव चैत्य प्रासाद तणो जे, अर्वाण-
 वाद मन वेरयो ॥ डव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेरयो रे ॥ प्राणीस० ॥ ७ ॥
 इत्यादिक विपरीत पणार्थी, समकित खंड्यु जेह ॥ आत्रव० ॥ मित्रा० ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥
 चारित्र द्यो चित्त आणो ॥ ए आंकणो ॥ पांच समिति त्रण सुति विराथी, आते
 प्रवचन माय ॥ साधु तणे धर्म प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्राणी० चारित्र०
 ॥ ९ ॥ श्रावकने धर्म सामायिक, पोसहमा मन वादी ॥ जे जयणा पूर्वक जे आते,
 प्रवचन माय न पादी रे ॥ प्राणी० ॥ चारित्र० ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी,
 चारित्र डोहोड्युं जेह ॥ आत्रव० ॥ मित्रा० ॥ प्राणी० ॥ चारित्र० ॥ ११ ॥ वारें जेदे तप नवि
 कीथो, तते योगे निज त्रकें ॥ धर्म मन वच काया वीरज, नवि फोरविणं त्रगतें रे ॥
 प्राणी० ॥ चारित्र० ॥ १२ ॥ तप वीरज आचारें एण परें, विविध विराध्या जेह ॥
 आत्रव० ॥ मित्रा० ॥ प्राणी० ॥ चारित्र० ॥ १३ ॥ वदीय विशेषें चारित्र केरा, अति-

चार आलोइयें ॥ वीर जिनेसर वयण सुणीने, पाप मेळ सवि धोइयेंरे ॥ प्राणी० ॥
 चारित्र० ॥ १४ ॥ हाव बीजी ॥ पामी सुगुरु पसाय ॥ ए देयी ॥ पृथ्वी पाणी तेव, वाड
 वनस्पति ॥ ए पांचे थावर कहां ए ॥ करि करसण आरंभ, खेव जे खेनियां ॥ कुवा
 तलाव खणवीयाए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टाकां जोंयरां, मेडी माळ चणवीयाए ॥
 तींणण घुंपण काज, इणी परें परपरें, पृथ्वी काय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण
 पाणी, जोडण अप काय ॥ तोती धोति करी दूहव्यां ए ॥ जातीगर कुनार, दोह
 सोवनगरा ॥ नाड जुंजा विहावनगरा ए ॥ ३ ॥ ताणण शेकण काज, वख निखारण,
 रंणण रांथण रसवती ए ॥ इणिए परें कर्मादान, परें परें केववी, तेज वाड विराधिया ए
 ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावि वनस्पति ॥ पान फूद फल चूटीयां ए ॥ पोर्होक पापडी
 शाक, शेक्यां सूकव्यां ॥ तुंयां टेयां आश्यायां ए ॥ ५ ॥ अवसीने एरंड, घाणी घातीने ॥
 घण तिवादिक पीवीया ए ॥ घाती कोडु मांदि, पीती शेलनी ॥ कंद मूळ फल वेचीयां
 ए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हणया हणवीया ॥ हणतां जे अनुमोदीयां ए ॥ आनव
 परभव जेह, वलीय नवो नवें ॥ ते सुक मिजामि डकडं ए ॥ ७ ॥ कुमी सरमीयां कीडा,
 गाडर गंडोला ॥ इयल पूरा अवसीयां ए ॥ वाता जलो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वती
 अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ एम वे इंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते सुक० ॥ उधेदी जू
 लीख, मांकड मंकोडा ॥ चाचड कीडी कुंशुआ ए ॥ ९ ॥ गहदीयां धीमेळ, कान खजू-
 रडा ॥ गर्गोडा धनेरीयां ए ॥ एम तेइंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते सुक० ॥ १० ॥

माखी मडर डांस, मसा पतंगीयां ॥ कंसारी कोलीया वडा ए ॥ टीकण विटु तीरु, नमरा
 नमरीयो, कौता वण खड मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिदिय जीव, जे मे दूहव्या ॥ ते
 सुक्र० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥
 पीड्या पंखी जीव, पाडी पात्रमां ॥ पोपट धाव्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंदिय जीव, जे मे
 दूहव्या ॥ ते सुक्र० १३ ॥ ढाल त्रीजी ॥ प्रथम गोवालातणे त्रवे जी ॥ एदेशी ॥ क्रोध
 लोत्र त्रय दासथी जी, बोलयां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह
 अदत्तरे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मित्रा डकड आज, तुम साखे महाराजरे ॥ जिनजी ॥ देइ सारु
 काजरे ॥ जिनजी ॥ मित्रा० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यचनां जी, मैथुन सेव्यां
 जेह ॥ विपयारस वंपटपणें जी, घणुं विटंथ्यो देहरे ॥ जिनजी ॥ मित्रा० ॥ २ ॥ परि-
 ग्रहनी ममता करी जी, त्रव त्रव भेदी आथ ॥ जे जिह्वांनी ते तिहा रही जी, कोइ न
 आवे साथरे ॥ जिनजी ॥ मित्रा० ॥ ३ ॥ रयणी नोजन जे कर्थां जी, कीधां नद्व
 अन्नक्ष्य ॥ रसना रसनी लावाचेंजी, पाप कर्थां प्रत्यक्षरे ॥ जिनजी ॥ मित्रा० ॥ ४ ॥ व्रत
 देइ विसारियांजी, वली नान्यां पञ्चव्याण ॥ कपट हेतु किरियाकरीजी, कीधां आप वखाण रे ॥
 जिनजी ॥ मित्रा० ॥ ५ ॥ त्रण ढाल आठें दूहे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति
 आराधन तणोजी, ए पहेवो अधिकार रे ॥ जिनजी ॥ मित्रा० ॥ ६ ॥ ढाल चोथी ॥ साहे-
 लडीनी ॥ देशी ॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेदडीरे ॥ अथवा टयो व्रत वार तो ॥
 यथाजक्ति व्रत आदरी ॥ साहेदडीरे ॥ पावो निरतिचार तो ॥ १ ॥ वन न्नीधां मंटा-

रीषे ॥ साहेवढीरे ॥ हियडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥ साहेवढीरे ॥
 ए वीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सर्वे खमाविये ॥ साहेवढीरे ॥ योनि चोरशी दाख
 तो ॥ मन शुद्ध करो खामणां ॥ साहेवढीरे ॥ कोडशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र
 करी चितवो ॥ साहेवढीरे ॥ कोड न जाणो रावु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ जे
 साहेवढीरे ॥ कीर्जे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमाविये ॥ साहेवढीरे ॥ जे
 उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ साहेवढीरे ॥ ए जिन शासन रीति
 तो ॥ ५ ॥ खमीषे अने खमावीषे ॥ साहेवढीरे ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति
 आराधन तणो ॥ साहेवढीरे ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृधावाद हिंसा चोरी ॥
 साहेवढीरे ॥ धन मूढा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ साहेवढीरे ॥ प्रेम द्वेष
 पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कवह न कीर्षी ॥ साहेवढीरे ॥ कुडां न दीर्जे आवत तो ॥
 रति अरति मिथ्या तजो ॥ साहेवढीरे ॥ माया मोस जंजाव तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध
 बोसिरावीये ॥ साहेवढीरे ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥
 साहेवढीरे ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ दाव पांचमी ॥ हवे सुणो इहां आवीया
 ए ॥ ए, देशी ॥ जनम जरा मरणे करीए, ए संसार असार तो ॥ कर्मां कर्म सहु
 अनुभवें ए, कोड न राखण हार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध
 जगवंत तो ॥ शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह
 सवि परिहरी ए, चार चरण चित धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो

अधिकार तो ॥ ३ ॥ आश्रय परश्रव जे कर्था ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखें
 ते नितियें ए, पडिकमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्तावियांए, जे त्रांख्यां
 उत्सृज तो ॥ कुमति कदाग्रहनेवशें ए, वली थाप्यां उत्सृज तो ॥ ५ ॥ धव्यां घडाव्यां जे घणां
 ए, वंटी हव हृषियार तो ॥ श्रव श्रव भेली मूकीया ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥
 पाप करीनें पोषिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जन्मांतर पोहोता पटीए, कोइ न
 कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आश्रय परश्रव जे कर्था ए, इम अधिकरण अनेक तो, त्रिविध
 त्रिविध बोसिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डःकृत निंदा एम करीए, पाप
 कर्थां परिहार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए ठवो अधिकार तो ॥ ९ ॥ दाद
 वती ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥ धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीथो
 धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी ॥ टाट्यां डुक्कर्म ॥ धन धन ॥ १ ॥ श्रेत्रुंजादिक
 तीर्थनी, जे कीधी यात्रा ॥ शुगातें जिनवर पूजीया, वली पोल्यां पात्र ॥ धन धन ॥ २ ॥
 पुरतक ज्ञान लखावीयां, जिनहर जिनचैत्य ॥ संब चतुर्विध साचव्या, ए सातें खेव ॥
 धन धन ॥ ३ ॥ पक्कमणां सुपरें कर्थां, अनुकंपादान ॥ साधु स्मरि उवकायने, दीधा
 बहुमान ॥ धन धन ॥ ४ ॥ धर्म कारण अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आरा-
 धन तणो, ए सातमो अधिकार ॥ धन धन ॥ ५ ॥ श्राव श्रवो मन आणीयें, चित्त
 आणी ठाम ॥ समता चावें चावीयें, ए आत्मराम ॥ धन धन ॥ ६ ॥ सुख डुख
 कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचर्यां, त्रोगवियें सोय ॥ धन धन ०

॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ वार उपर ते दीपणुं, फांखर
 चित्राम ॥ धन धन ॥ ८ ॥ नाव नदीपरें नावीधें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन
 तणो, ए आत्मो अधिकार ॥ धन धन ॥ ९ ॥ दाव सातमी ॥ रेवत गिरि उपरें ॥ ए
 देवी ॥ हवे अवसर जाणी, करधें संक्षेपण सार ॥ अणसण आदरीधें, पच्चारी चार
 आहार ॥ दडुता सविमूकी, वाडी ममता अंग ॥ ए आत्मखेदे, समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥
 गति चारे कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लावचीड रंक ॥
 डव्हो ए वदी वदी, अणसणनो परिणाम, एहथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥
 धन धना शालिपद, खंधो भेवकुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या नवनो पार ॥
 शिव मंदिर जाधो, करी एक अवतार, आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे
 अधिकारें, महामन नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां
 जाए, जगति दोष विकार, सुपरें ए समरो, चडद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां, जो
 पामे नवकार, तो पातक गावी, पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरिखो, मंत्र न को सं-
 सार, इहजव ने परत्रवें, सुख सपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुड नीव ने नीवडी, राजा राणी थाय ॥
 नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी रत्नवती वेड, पाम्यां ठे सुरजोग, एक न-
 वथी देशे, सिध्वधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वदी, मंत्र फलयो तत्काल, फणिधर
 फीटीने, प्रगट भद्र फूलमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोवन पुरुषो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज
 घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारें, वीर जिनेसर नांख्यो ॥ आराधन केरो, विधि

जिणें चित्तमा राख्यो ॥ तिणें पाप पलाव्ही, त्रव त्रय दूरें नाख्यो, जिन विनय करतां
 सुमति असुत रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ दाव आठमी ॥ नमो त्रवि त्रावशु ए ॥
 ए देवी ॥ सिंशरथ राय कुवतिवो ए, त्रिशवा मात मदहर तो ॥ अवनितवें तुम अ-
 वतर्या ए, करवा अम उपकार ॥ १ ॥ ज्यो जिन वीरजी ए ॥ ए अंकणी ॥ में अपराध
 कर्मा धणा ए, कहेतां न लहु पार तो ॥ तुम चरणे आव्या तणी ए, जो तारे तो तार
 ॥ ज्यो ० ॥ २ ॥ आश्र करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्यानें जवेख-
 शो ए, तो किम रहेशे लाज ॥ ज्यो ० ॥ ३ ॥ कर्म अद्वुजण आकरा ए, जन्म मरण जं-
 जाल तो ॥ हुं छुं एदधी जत्रयो ए, वोडावो देव दयाव ॥ ज्यो ० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ
 सुज फल्या ए, नागा इख दडोव तो ॥ त्रूवो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कडोव
 ॥ ज्यो ० ॥ ५ ॥ त्रव त्रव विनय तुमारडो ए, त्राव त्रगति तुम पाय तो ॥ देव दया करी
 दीजिये ए, बोध वीज सुपसाय ॥ ज्यो ० ॥ ६ ॥ इति ॥ कवच ॥ इय तरण तारण सुगति
 कारण, इख तिवारण जग ज्यो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण शुणतां, अधिक मन उवट
 थयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव सुरिंद पटधर, तीर्थ जंगम इणि जगे ॥ तप गडपति श्री
 विजयप्रज सूरि, सूरी तेजें जगमगे ॥ २ ॥ श्री हीर विजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्ति
 विजय सुर गुरु समो ॥ तस त्रिष्य वाचक विनय विजयें, शुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥
 सय सत्तर सवत् जगणत्रीशे, रही रदिर चोमास ए ॥ विजय दशमी विजय कारण, कीयो
 गण अन्थास ए ॥ ४ ॥ नर त्रव आराधन सिदि माधन मकन तीव्र किनाव ॥

निर्जरा हेते स्तयन रचियु, नामें गुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्री आराधना रूप गुण्य
 प्रकाश स्तवनं सपूर्ण ॥ अथ श्री वैकुण्ठ पंथ प्रारंभः ॥ वैकुण्ठ पथ वीहामणो, दो-
 हिलो ठे घाट ॥ आपणनो तिहां कोइ नहिं, जे देखाने वाट ॥ १ ॥ मार्ग वहे रे जतावलो,
 उडे जीणेरुी खेह ॥ कोइ कोइने पडखे नहिं, बांडी जाय सनेह ॥ मार्ग ० ॥ २ ॥ एक
 चाट्या वीजा चावशे, वीजा चावणहार ॥ रात दिवस वहे वाटडी, पडखे नहिं लगार
 ॥ मार्ग ० ॥ ३ ॥ प्राणीने परियाणुं आवीयु, न गणे वार कुवार ॥ जडा जरणी भोगिणी,
 जो हेथ सामो काव ॥ मार्ग ० ॥ ४ ॥ जम रूपे विहामणो, वाटें दीये रे मार ॥ कृत क-
 माइ पूवशे, जीवनो किरतार ॥ मार्ग ० ॥ ५ ॥ दोभें वाह्यो जीवडो, करतो ब्रहु पाप ॥
 अंतरजामी आगळे, केम करीश जवाप ॥ मार्ग ० ॥ ६ ॥ जे विण बडी सरतो नहीं,
 जीवन प्राण आधार ॥ ते विण वरस वही गयां, शुध नहि समाचार ॥ मार्ग ० ॥ ७ ॥
 आंव्यो तुं जीव एकलो, जाता नहिं कोइ साथ ॥ गुण्य विना तुं प्राणिया, घस्ततो जाइश
 हाथ ॥ मार्ग ० ॥ ८ ॥ मग कोरी माहिं पेशीये, तोहि न मेवे मोत ॥ चेतण द्वारा चेतजो,
 जात्रे भोफण गोळा सोत ॥ मार्ग ० ॥ ९ ॥ ठत्रपति नूप केइ गया, सिध साधक लाख ॥
 क्रीड गमे करण आवड्या, अमर कोइ जीव दाख ॥ मार्ग ० ॥ १० ॥ आपण देखतां
 जग गयो, आपणें पण जाण ॥ रुदि मेटी रहेशे नहिं, मोहोटा राय ने राण ॥ मार्ग ०
 ॥ ११ ॥ दाहाडे पहाते आपणे, सहु कोई जात्रे ॥ धर्म विना तुमें प्राणिया, पडशो
 नरकावासे ॥ मार्ग ० ॥ १२ ॥ संवळ होय तो खाइये, नहितो मरीयें नूख ॥ आपणने

तिहां कोइ नहिं, जेहने कहीयें छःख ॥ मार्ग० ॥ १३ ॥ आगल द्वाट न वाणीया, न करे
 कोइ उधार ॥ गाठे दोय तो खाइयें, नहि कोइ देअणहार ॥ मार्ग० ॥ १४ ॥ निश्चल
 रहेहुं ठे नहिं, म करो मोडा मोड ॥ परखी प्रीत न माडियें, ए तो महोटी खोड ॥ मार्ग०
 ॥ १५ ॥ वस्तु पीयारी मत लीयो, म करो तात पियारी ॥ धर्म विना जग जीवने, होशे
 अंते खुआरी ॥ मार्ग० ॥ १६ ॥ कूड कपट तमें मत करो, जीव राखजो ठाम ॥ जीव-
 दया प्रतिपालजो, जो होय वैकुल काम ॥ मार्ग० ॥ १७ ॥ मोहोटा मंदिर मावीयां, घर
 पण घणैरी आथ ॥ दीरा माणेक अति घण, पण काइ नावे साख ॥ मार्ग०
 ॥ १८ ॥ कोडी गमे कुकर्म क्रियां, केतां कहुं तुम आगल ॥ लखे क्किणपरें पोहोन्नीयें
 प्रभुजीहुं कागल ॥ मार्ग० ॥ १९ ॥ आगल वैतरणि वहे, तिहा कोइ न तारे ॥ धर्मा
 तरी पार पामशे, पापी जशे पायावे ॥ मार्ग० ॥ २० ॥ दीठे मारग चावीयें, न चरीयें
 कूडी साख ॥ काल काया पडी जायशे, मशाणें उडशे राख ॥ मार्ग० ॥ २१ ॥ जतन
 करतां जायशे, उडी जशे सास ॥ माटी ते माटी थायशे, ऊपर उगशे घास ॥ मार्ग०
 ॥ २२ ॥ माय वाप ए केहनां, केहनां परिवार ॥ पुत्र पीजादिक केहनां, केहनी घरनार
 ॥ मार्ग० ॥ २३ ॥ कोइ म करशो गारवो, धन जोवन केरो ॥ अंते उगयो कोइ नदी, आ-
 पणथी जलेरो ॥ मार्ग० ॥ २४ ॥ महारु महारुं करतो थको, पढ्यो मायाने मोह ॥ दोचन
 वे मीचाणडां, (तव) घणै अनेराइ होय ॥ मार्ग० ॥ २५ ॥ जे तिहांते तिहां रह्यु, चाढ्यो
 एकवो आप ॥ साधं संगते बे अथां, एक पुण्य ने प्राप ॥ मार्ग० ॥ २६ ॥ सगर ससाध

वंदिये, मंत्र महोदो नवकार ॥ देव अरिहृत्तने पूजीये, जेम तरीये संसार ॥ मार्गो ॥ १७ ॥
 शालिन्द्र सुख जोगव्यां, पात्र तणे अधिकार ॥ खीरखांग घृत वहोरवीयां, पोहोता
 सुक्ति मज्जर ॥ मार्गो ॥ १८ ॥ तस घर घोडा दाखीया, राजा दीये बहुमान ॥ दान
 दया करी दीजीये, चावे साधुने मान ॥ मार्गो ॥ १९ ॥ धर्मे पुत्रज रूअडा, धर्मे रूमी
 नार ॥ धर्मे लक्ष्मी पामीये, धर्मे जय जयकार ॥ मार्गो ॥ ३० ॥ नव नंद मत्ता मेदीगया,
 मंगर केरा पाणा ॥ समुद्रमां थया शंखदा, राजा नंदनां नाणां ॥ मार्गो ॥ ३१ ॥ पूंजी
 मेदी मरि जायशे, खावे खरचवे खोटा ॥ ते कडाह ऊपर थद्द, अवतर्या मण्डिधर महोटा
 ॥ मार्गो ॥ ३२ ॥ माळ मेदी करी एकठा, खरचे नवि खाय ॥ देइ जंडारे नूमिमा,
 तिहां कोइ काढीजाय ॥ मार्गो ॥ ३३ ॥ मूंजी लक्ष्मी मेवशे, केहने पाणी न पाय ॥
 धर्म कार्य आवे नही, ते धूव थाणी थाय ॥ मार्गो ॥ ३४ ॥ जीवतां दान जे आपशे,
 पोते जमणे दाख ॥ श्री जगवान एम जॉखियुं, सह्यु आवशे साथ ॥ मार्गो ॥ ३५ ॥ दया
 करी जे आपशे, जवटे अन्ननुं दान ॥ अडसठ तीर्थ इहां अवे, वली गंगास्नान ॥ मार्गो
 ॥ ३६ ॥ जोगी जंगम घणा थायशे, झखिया इण संसार ॥ खीचडी खाये खांतशुं, साचो
 जिन धर्म सार ॥ मार्गो ॥ ३७ ॥ खांडानी धारे चाववुं, सुणजो ए सार ॥ परखी मात
 करी जाणवी, दोत्र न करवो लगार ॥ मार्गो ॥ ३८ ॥ कनक कामिनी जेणे परिहरी, ते तो
 कर्मथी वटा ॥ जीखारी जमे घणा, बीजा खीचड खुटा ॥ मार्गो ॥ ३९ ॥ पाथरणे ध-
 रती चवी, उदण चवुं आकाश ॥ शणगारे शीयव पहरेवुं, तेहने सुक्तिनो वास ॥ मार्गो

॥ ४० ॥ उपवास आवील नित करे, नित अरिहंत ध्यान ॥ काम क्रोध दोष परिहरे,
 तेहनें सुक्ति निधान ॥ मार्ग० ॥ ४१ ॥ मनुष्य जन्म पामी करी, जे करशे धर्म ॥ सुख
 सखलां ए सपजे, छूटे सर्वे कर्म ॥ मार्ग० ॥ ४२ ॥ धर्म धनज पामीये, धर्म सवि सुख
 थाय ॥ अरिहत नाम आराधिये, पाप परजे जाय ॥ मार्ग० ॥ ४३ ॥ खाट पथरणे सुई
 रही, खाल नित्य खाणां ॥ एक अरिहंत नाम संभारतां, कथां बेसे तुऊ नाणां ॥ मार्ग०
 ॥ ४४ ॥ मनसा वाचा कायथी, दीजे जगवंत नाम ॥ सुख स्वर्गना संपजे, सीके बंजित
 काम ॥ मार्ग० ॥ ४५ ॥ खातां पीतां खरचता, दृडडा म करे खलखंच ॥ काया माया का-
 रमी, जीवन दहाडा पंच ॥ मार्ग० ॥ ४६ ॥ केही सुचंगी वादीयो, केही सुचंगी नार ॥ केते
 माटी दोई रही, केते तए अंगार ॥ मार्ग० ॥ ४७ ॥ हंसराजा जव उडीयो, तव कोइ न
 करे सार ॥ सगां कुटुंब सहू एम तणे, वही काढो वार ॥ मार्ग० ॥ ४८ ॥ मित्र मंत्रा-
 दिक तिहां लग्ने, तिहां लग्ने स्नेह प्ररपूर ॥ हंसराजा जव चादीया, तव थया सहू दूर
 ॥ मार्ग० ॥ ४९ ॥ जेवो जाण्यो तेवो काढियो, नवि मानीयो जाग ॥ आगल खोरखर हां-
 डवी, महि अधवतती आग ॥ मार्ग० ॥ ५० ॥ पतित पावन प्रयुजी तमे, सुणो हो
 दिननाथ ॥ संसार सागर मांहि बुडतां, देजो तुमें हाथ ॥ मार्ग० ॥ ५१ ॥ सांजवो
 स्वामी शामला, मोरी अरदास ॥ हुं मायं प्रयु एटहु, देजो वैकुण्ठ वास ॥ मार्ग० ॥ ५२ ॥
 अहंकार चित्त न आणिये, केहने गाल न दीजे ॥ काम क्रोध दोष मारिये, तो अपमरफल
 दीजे ॥ मार्ग० ॥ ५३ ॥ करत कमाइ जोडिये, केहने दोष न दीजे ॥ विपनां फल जो वा-

विधे, तो अमृत फल केम लीजें ॥ मार्ग० ॥ ५४ ॥ तति रुर्ध खरचे नहिं, ते पण मूरख
 महेटा ॥ ठालो आढ्यो न्रलो जायशे, आगल पडशे सोटा ॥ मार्ग० ॥ ५५ ॥ चौराशी
 लख जीव जोनिमां, फिरिया वार अनंत ॥ सुनि त्रीम त्रणे अरिहंत जपो, जिम पामो
 त्रव अंत ॥ मार्ग० ॥ ५६ ॥ संवत् शोच नबाणुंयें, वीजने बुधवार ॥ आसो मासें गा-
 इयो, वीकारी नगरी मजार ॥ मार्ग० ॥ ५७ ॥ त्रीम त्रणे सहु सांत्रलो, मत संचो
 दाम ॥ जिमणे दाशे वावरो, तो सहि आवरो काम ॥ मार्ग० ॥ ५८ ॥ त्रीम त्रणे सहु
 सात्रलो, नवि कीजें पाप ॥ उलो अधिको जे में कह्यो, ते तमे करजो माफ ॥ मार्ग०
 ॥ ५९ ॥ इति वैकुण्ठ पंथ संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री श्रीयल विषे पुरुषने शीखामणनो सव्वाय
 प्रारंभः ॥ ॥ चाल ॥ सुण सुण कांता रे, शीख सोहामणी ॥ प्रीत न कीजें रे, पर नारी
 तणी ॥ उथलो ॥ पर नारी साथे प्रीत पिडडा, कह्यो किए परें कीजिये, उंघ वेची आपणी,
 जजानरो किम लीजियें ॥ काढी वटो कह्ये लंपट, लोक महिं दाजियें ॥ कुल विषय
 लंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पहेलां वीहीजीयें ॥
 रखे कोइ जाणे रे, मनशुं धूजीयें ॥ उथलो ॥ धूजीयें मनशुं ऊरीयें पण, जोण मदवो ठे
 नहीं ॥ रात दिन किलपंतां जाणु, अवटार्इ मरवुं सही ॥ निज नारिशी सतोष न वल्यो,
 परनारिशी कह्यो शुं दशे ॥ जो त्रे त्राणे तति न वली, तो एउ चाटे शुं दशे ॥ २ ॥
 चाल ॥ मृग तृणाशी रे, तृणा नवि टले ॥ वेळु पील्यां रे, तेव न नीसरे ॥ उथलो ॥ न
 नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेझ मांखणनो वली ॥ वूडता वाचक त्रयां केणे, ते त्रयां

वात न सात्रवती ॥ तेम नार रमता परतणी, संतोष न वटयो एक घडी ॥ चित्त चटपटी
 उच्चाट लागे, नयणे नावे निजडी ॥ ३ ॥ चाव ॥ जेवो खोटी रे, रंग पतंगनो, तेवो चट-
 को रे, परस्त्री संगनो ॥ उथवो ॥ पर त्रिया केरो प्रेम पिजडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन
 चार रंग सुरंग रूडो, पवी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथे नेह माडे, वांड तेहशुं
 प्रीतडी ॥ एम जाणी म म कर नाहवा, परनारि साथे प्रीतभी ॥ ४ ॥ चाव ॥ जे पति
 वहावो रे, वचे पापिणि ॥ परशुं प्रेमे रे, राचे सापिणी ॥ उथवो ॥ सापिणी सरस्वी वेण
 निरखी, रखे शीघ्र थकी चव ॥ आंखने मटके अग वटके, देव दानवने ववे ॥ ए मांहे
 कादि अति रसावी, वाणी मीठी शेरभी ॥ सांत्रवती प्रोवा रखे प्रवो, जाणजो विषवेवडी
 ॥५॥ चाव ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मलवा तणो ॥ उथवो ॥
 शोक शाने करो फोकट, देखवुं पण दोहिवु ॥ क्षण मेडिये क्षिण शरीये, प्रमतां न लागे सोहिवु
 ॥ उहासनेनिःश्वास आवे, अंग प्राजे मन प्रमे ॥ कामिनी देखी देह दाके, अब्र दीतुं नचि
 गमे ॥६॥ चाव ॥ जाये कलामी रे, मनशुं कल मले ॥ जन्मत्तथइने रे, अलव पलव ववे
 ॥ उथवो ॥ ववे अलव पलव जाणे, मोहवेवो मन रडे ॥ महा मदन वेदन कठिन जाणी,
 मरण वारु नेवडे ॥ ए दश अवस्था काम केरी, कंत काथाने दहे ॥ एम चित्त जाणी तजे
 प्राणी, परकी ते सुख वहे ॥ ७ ॥ चाव ॥ परनारीनारे, परात्रव सांत्रवो ॥ कता कीजें रे,
 प्राव ते निर्मवो ॥ उथवो ॥ निर्मवे प्रावे नाह समजो, पर वधू रस परिहरो ॥ चांपीठ कीचक
 नीमसेने, झिवा हेउव सांत्रवो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक, रडवज्यां ग्रंथे कथां ॥ तिम

मुंजपतिङ्खल पुंज पान्थो, अप्पजश जगमहे लहा ॥८॥ चाल ॥ शीयल सबूणा रे, माणस
 सोदीयें ॥ विण आत्ररणे रे, जगमन मोदीयो ॥ उथलो ॥ मोदिये सुर नर करे सेवा, विप अमिय
 थद संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाए, अनल अति शीतल करे ॥ साप थाए फ़लमाला,
 लही घर पाणी तरे ॥ परनारि परिहरि, शीयाल मन धरि, मुक्तिवयू हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥ ते
 मटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाय लागीने रे, मथुर वयणे चवुं ॥ उथलो ॥ वयण माहारु
 मानीयें, परनारीथी रहो वेगला ॥ अप्पाद माथचढे मोटा, नरकें थदयें दोहिदा ॥ धन्य
 धन्य ते नर नारि जे जग, शीयाल पावे कुल तिलो, ते पामथे यश जगत मांदि, कुमुद
 चंद सम जजलो ॥ १० ॥ इति शीयाल विषे पुरुषने शिखामणो सव्वाय संपूर्ण ॥ ॥
 अथ श्री शीयाल विषे नारीने शिखामणो सव्वाय प्रारंभः ॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखा-
 मण खरी ॥ समजी लजो रे, सघटी सुंदरी ॥ उथलो ॥ सुंदरी सेहेंजे, हृदय हेजे, पर सेजे नवि
 वेसीयें ॥ चित्त थकी चूकी लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींढी नार
 निर्लज, शाखें पण तजवी कही ॥ जेम प्रेत दटुं पड्यं ओजन, जमवुं ते जुगतुं नही ॥ १ ॥
 चाल ॥ परशुं प्रेमे रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उथलो ॥
 गुह्य धरतुं परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे विपरीत नासे, तेहथी दूर
 नारीयें ॥ असुर सवारा अने अधोचर, एकलां नवि जाइये ॥ सहसातकारे कार्य करता,
 सहेंजे शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग
 जातां रे, आहुं ओदियें ॥ उथलो ॥ आहुं ते ओढी वात करतां, घणुंज रूढां ओनीयें ॥

जी, जिहां गयां चल चित्त होय, हिंसक कुल पण तेम तजो जी, पाप त्यां प्रत्यक्ष जीप
 ॥ सुजता० ॥ ४ ॥ निज दाखे वार उवाडीने जी, पेसीयें नवि धरमांहि ॥ वाळ पशु
 त्रिभूक प्रसुखने सधदेंजी, जडयें नहिं धरमांहि ॥ सुजता० ॥ ५ ॥ जळ फळ जलण कण
 दूणयुं जी, जेटतां जे दिये दान ॥ ते कल्पे नहिं साधुनें जी, वरजवुं अन्न ने पान
 ॥ सुजता० ॥ ६ ॥ स्तन अंतराय वाळक प्रत्यें जी, करीनें रडतो ठवेय ॥ दान दिये तो
 जळटपरी जी, तोहि पण साधु वरजेय ॥ सुजता० ॥ ७ ॥ गर्भवती वढी जो दिये जी,
 तेह पण अकल्प होय ॥ माळ निशरणी प्रसुखें चढी जी, आणि दीये कल्पे न सोय
 ॥ सुजता० ॥ ८ ॥ मूढ्य आणुं पण मत दीयो जी, मत दीयो कशी अंतराय ॥ विहरतां
 थंन खंजादिकें जी, न अडो थिर ठवो पाय ॥ सुजता० ॥ ९ ॥ एणीपरें दीप सवें
 वांडतां जी, पामीयें आहार जो शुध् ॥ तो लहियें देह धारण जणी जी, आणलहेतो
 तप दुखि ॥ सुजता० ॥ १० ॥ वयण लजा तया नदना जी, परिसदृशी स्थिर चित्त ॥
 गुरु पासें हरियावही पडिकमी जी, निमंजी साधुनें नित्य ॥ सुजता० ॥ ११ ॥ शुध् एकांत
 ठामें जई जी, पडिकमी हरियावही सार ॥ ज्ञोयण दीप सवि वांडीने जी, स्थिर अइ
 करवो आहार ॥ सुजता० ॥ १२ ॥ दुर्जवैकादिकें पांचमे जी, अध्ययनें कह्यो ए आचार
 ॥ ते गुरु दात्रविजय सेवतां जी, दुखि विजय जयकार ॥ सुजता० १३ ॥ इति ॥ ॥
 अथ श्री षष्टाध्ययन सत्वाय प्रारंभः ॥ ॥ म म करो माया काया कारमी ॥ ए देशी ॥
 गणधर सुधर्म एम उपदिसे, सात्रवो मुनिवर वंद रे ॥ स्थानक अठार ए उवखो,

जेह ते पापना कंद रे ॥ गणधर० ॥ १ ॥ प्रथम
 वयण रे ॥ तण पण अदत्त नवि वीजीयें, तजीयें
 मूर्तां परिहरो, नवि करो जोयण राति रे ॥ व
 प्राति रे ॥ गणधर० ॥ ३ ॥ अकटप आहार नाव लाजाय, उपज दोष जे माहि रे ॥
 धातुनां पात्र मत वावरो, गृही तणां मुनिवर प्राहि रे ॥ गणधर० ॥ ४ ॥ गादीयें मांचीयें
 न वेंसीयें, वारियें शक्या पदंग रे ॥ रात रहियें नवि ते स्थले, जिहां होवे नारि प्रसंग
 रे ॥ गणधर० ॥ ५ ॥ स्नान मज्जन नवि कीजीयें, जिणे हुवे मनतणो कोत्र रे ॥ तेह
 शणगार वलि परिहरो, दंत नख केश तणी शोत्र रे ॥ गणधर० ॥ ६ ॥ ठठे अथ्ययन
 एम प्रकाशीयो, दशवैकातिक एह रे ॥ लात्र विजय गुरु सेवतां, दुषि विजय लह्यो
 तेह रे ॥ गणधर० ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ श्री सप्तमाध्ययन सधाय प्रारंभः ॥ कपूर हुवे
 अति कुजलो रे ॥ ए देशी ॥ साचुं वयण जे चांखियें रे, साची चाषा तेह ॥ सखा मोसा
 ते कहियें रे, साचुं मूषा होय जेह रे ॥ १ ॥ साधुजी-करजो चाषा शुध्, करी निर्मल
 निज बुधि रे ॥ साधु० ॥ ॥ करजो ॥ ए अंकाणी ॥ केवल जूठ तिहां होवे रे, तेह
 असखा जाण ॥ साचुं नदीं जूठं नहिं रे, असत्या असूषा जाण रे ॥ साधु० क० ॥ १ ॥
 ए चारे महि कही रे, पहेली चाषा होय ॥ संयमधारी बोलवी रे, वचन विचारी जोय रे ॥
 साधु० क० ॥ ३ ॥ कठिन वयण नवि चांखियें रे, तुंकारो रेकार ॥ कोइना मर्म न बोलियें
 रे, साचा पण निर्धार रे ॥ साधु० क० ॥ ४ ॥ चोरनें चोर न चांखियें रे, काणाने न कहें

जूठ नवि चांखियें
 धर० ॥ १ ॥ परिग्रह
 जेद्द समजी सहु

काण ॥ कर्दीये न अंधो अंधने रे, साचुं कठिन ए जाण रे ॥ साधु० क० ॥५॥ जेहथी
 अन्नरथ जपजे रे, परने पीडा थाय ॥ साचुं वयण ते चांखतां रे, लात्रथी त्रोटो जाय रे
 ॥ साधु० क० ॥ ६ ॥ धर्म सहित हितकारीया रे, गर्व रहित समतोल ॥ थोडला ते पण
 मीठडा रे, बोल विचारी बोल रे ॥ साधु० क० ॥७॥ एम सवि गुण अंगीकरी रे, परहरि दोष
 अशेष ॥ बोलतां साधुनें हुवे नहिं रे, कर्मनो बंध लव लेश रे ॥ साधु० क० ॥८॥ दश-
 वैकालिक सातमे रे, अग्रयने ए विचार ॥ लात्र विजय गुरुथी लहे रे, दुर्दि विजय
 जयकार रे ॥ साधु० क० ॥ ९ ॥ ॥ अथ श्री अष्टमाध्ययन सवाय प्रारंभः ॥ ॥ राम
 सीताने धीज करावे रे ॥ ए देगी ॥ कहे श्रीगुरु सांजलो चेला रे, आचारज ए पुण्यना
 वेला रे ॥ उक्ताय विराहण टालो रे, चित्त चोखे चारित्र पालो रे ॥ १ ॥ पुढवी पाषाण
 न जेदो रे, फल फूल पत्रादि न जेदो रे ॥ बीज कुंपल वन मत फरजो रे, जीव विराध-
 नथी डरजो रे ॥ २ ॥ वली अग्नि म जेटओ चार्द रे, पीजो पाणी जुनुं सदाई रे ॥ मत
 वावरो काचुं पाणी रे, एवी ते श्री वीरनी वाणी रे ॥ ३ ॥ हिम धूअर वड उंबरां रे, फल
 कुंथुआ कीडी नगरा रे ॥ नील फूल हरि अंकुरा रे, इडाल ए आठे पूरा रे ॥ ४ ॥
 सेहादिक जेदें जाणी रे, मत हणजो सूक्ष्म प्राणी रे ॥ पडिदेहि सवि वावरजो रे, जपक-
 रणे प्रमाद म करजो रे ॥ ५ ॥ जयणायें डगलां नरजो रे, वाटे चावतां वात म करजो
 रे ॥ मत ज्योतिप निमित्त प्रकाशो रे, निरखो मत नाच तमासो रे ॥ ६ ॥ दीठुं अणदीठुं
 करजो रे, पाप व्यसन न श्रवणे धरजो रे ॥ अणसूजतो आहार तजजो रे, राते सखिध

सवि वरजो रे ॥ ७ ॥ बावीस परिसह सहैजो रे, देह ड.खें फल सहहजो रे ॥ अण
 पामे कार्पण्य म करजो रे, तप श्रुतनो मद नवि धरजो रे ॥ ८ ॥ स्तुति गति समता
 ग्रहेजो रे, देज काव जोईरंरहेजो रे ॥ गृहस्थयुं जाति सगाइ रे, मत काढजो मुनिवर
 कांड रे ॥ ९ ॥ न रमडो गृहस्थना वाव रे, करो क्रियानी संत्राव रे ॥ यंत्र मंत्र औ-
 वधनो त्रामो रे, मत करजो कुगति कामो रे ॥ १० ॥ क्रोधें प्रीति पूरवली जाय रे,
 वली मनैं विनय पदाय रे ॥ माया मित्राइ वणसाहे रे, सवि गुण ते दोत्र नसाहे रे
 ॥ ११ ॥ ते मटे कषाय ए चार रे, अनुक्रमें दमजो अणगार रे ॥ उपशमशुं केवल त्रावे
 रे, सरवाइ संतोप सत्रावे रे ॥ १२ ॥ ब्रह्मचारीने जाणजो नारी रे, जैसी पोपटने मांजारी
 रे ॥ तेणे परिहरो तस परसंग रे, नव वाड धरो वली चंग रे ॥ १३ ॥ रसवोद्युप थइ
 मत पोषो रे, निजकाय तप करीने शोषो रे ॥ जाणो अशिर पुजव पिंड रे, व्रत पावजो
 पंच अखंड रे ॥ १४ ॥ कहुं दशवैकालिके एम रे, अध्ययने आठमे तेम रे ॥ गुरु
 लात्र विजयथी जाणी रे, बुध टुडि विजय मन आणी रे ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥
 अथ श्रीनवमाध्ययन सव्हाय प्रारंभः ॥ ॥ श्रेतुंजे जइयें लावन, शो० ॥ ए देशी ॥ विनय
 करेजो चेला विनय करेजो ॥ श्रीगुरु आणा शीश धरेजो ॥ चेला० शी० ॥ ए आंकणी ॥
 क्रोधी मानी ने परमादी, विनय न शीखे वली विषवादी ॥ चेला० व० ॥ १ ॥ विनय रहित
 आशातना करतां, बहु त्रय तटके दुर्गति फरतां ॥ चेला० ॥ ड० ॥ अग्नि सर्प विष
 जिम नवि मारे, गुरु आसायण तेथी अधिक प्रकारे ॥ चेला० ॥ अ० ॥ २ ॥ अविनये

दृष्टियो बहुल संसारी, अविनयी मुक्तियो नहि अधिकारी ॥ चेटा० ॥ न० ॥ कोह्या
काननी कूतरी जेम, हांकी काढे अविनयी तेम ॥ चेटा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ विनय श्रुत
तप वली आचार, कहीयें समाधिना ठाम ए चार ॥ चेटा० ॥ ता० ॥ वली चार चार
त्रेद एकेक, समजो गुरुमुखधी सविवेक ॥ चेटा० ॥ थी० ॥ ४ ॥ ते चारेमां विनय
ते पहेलो, धर्म विनय विण त्राखे ते दोलो ॥ चेटा० ॥ त्रां० ॥ मूद थकी जिम शाखा
कहियें, धर्म क्रिया तिम विनयधी लहिये ॥ चेटा० ॥ वि० ॥ गुरु मान विनयधी लहेसो
सार, ज्ञान क्रिया तप जे आचार ॥ चेटा० ॥ जे० ॥ गरथ पखें जिम न होये हाट, विण
गुरु विनय तेम धर्मनी वाट ॥ चेटा० ॥ थ० ॥ ६ ॥ गुरु नान्हो गुरु महोटी
कहियें, राजा परें तस आणा वहियें ॥ चेटा० ॥ अ० ॥ अटपश्रुत पण बहुश्रुत
जाणो, शास्त्र सिधते तेह मनाणो ॥ चेटा० ॥ ते० ॥ ७ ॥ जेम शशी ग्रहणण
विराजे, मुनि परिवारमां तेम गुरु गाजे ॥ चेटा० ॥ ते० ॥ गुरुधी अलगा मत रक्षो
नाइ, गुरु सेव्ये लहेयो गौरवाइ ॥ चेटा० ॥ शो० ॥ ८ ॥ गुरु विनयें गीतारथ
थाशो, वलित सवि सुख लक्ष्मी कमशो ॥ चेटा० ॥ ल० ॥ श्रांत दात विनयी लजावु,
तप जप क्रियावंत दयावु ॥ चेटा० ॥ वं ॥ ९ ॥ गुरुकुलवासी वसतो ज्ञान्य,
पूजनीय होये विसवा विशा ॥ चेटा० ॥ वि० ॥ दशवकालिक नवमे अध्यायने,
अर्थ ए प्राख्यो केवली वषणे ॥ चेटा० ॥ के० ॥ एणि परें दात्र विजय गुरु सेवी,
लखि विजय स्थिर लखमी लहेवी ॥ चेटा० ॥ ल० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ अष्ट

श्री दशमाध्ययन सहाय प्रारम्भः ॥ ते तरीया त्राई ते तरीया ॥ ए देशी ॥ ते सुनि
 वंदो ते सुनि वंदो, उपनाम रसनो कंदो रे ॥ निर्मल ज्ञान क्रियानो चंदो, तप तेजें जेहवो
 दिणदो रे ॥ ते० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पंचाश्वनो करि परिहार, पंच महावत धारो
 रे ॥ पटकाय जीव तणो आधार ए, करतो जय विहारो रे ॥ ते० ॥ २ ॥ पंच
 समिति त्रण गुप्ति आराधे, धर्म ध्यान निरावाधे रे ॥ पंचम गतिनो मारग साधे, शुभ्र
 गुण तो इम वाधे रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ क्रय विक्रय न करे व्यापारह, निर्मम निरहंकार
 रे ॥ चारित्र पावे निरतिचारें, चावंतो खड्गनी धार रे ॥ ते० ॥ ४ ॥ ज्ञानने रोग करी
 जे जाणे, आपे पुण्य वखाणे रे ॥ तप श्रुतनो मद नवि आणें, गोपवी अंग ठेकाणे
 रे ॥ ते० ॥ ५ ॥ ठांडी धन कण कंचन गेह, शड तिःसेही निरीह रे ॥ खेह
 समाणी जाणी देह, नवि पोसे पापें जेह रे ॥ ते० ॥ ६ ॥ दोष रहित आहार जे
 पामे, ते दूखे परिणामे रे ॥ वंतो देहनुं सुख नवि कामे, जागतो आठेड जामे रे ॥
 ते० ॥ ७ ॥ रसनारस रसियो नवि आवे, निर्वाँति निर्मार्य रे ॥ सहे परिसह स्थिर
 करी काया, अविचल जिम गिरियाय रे ॥ ते० ॥ ८ ॥ राते काजस्सग करी शमशाने,
 जो तिहा परिसह जाणे रे ॥ तो नवि चूके तेहवे टाणे, त्रय मनमां नवि आणे रे ॥
 ते० ॥ ९ ॥ कोई उपर न धरे क्रोध, दिये सहुने प्रतिबोध रे ॥ कर्म आठ कीर्पवा
 जोध, करतो संयम शोध रे ॥ ते० ॥ १० ॥ दशवैकालिक दशमाध्ययने, एम त्राख्यो
 आचार रे ॥ ते शुरु लात्र विजयथी पामे, वरि विजय जयकार रे ॥ ते० ॥ ११ ॥

इति ॥ अथ श्री एकादशाध्ययन सहाय प्रारंभः ॥ नमो रे नमो श्रीशत्रुंजय गिरिवर
 ॥ ए देशी ॥ साधुजी संयम सूधो पादो, व्रत दुषण सवि टादो रे ॥ दशार्थैकादिक
 सूत्र संज्ञादो, सुति मारग अज्जुवादो रे ॥ साधु० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ रोगादिक
 परिसह संकट, परसंगे पण धार रे ॥ चारित्रशी मत चूको प्राणी, इम त्रांखे जिन
 सार रे ॥ साधु० ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी मुंफो कदावे, इहन्नव परन्नव हार रे ॥ नरक
 निगोद तणा डःख पामे, प्रमती बहु ससार रे ॥ साधु० ॥ ३ ॥ चित्त चोखे चारित्र
 अप्राधे, उपशम नीर अप्राधे रे ॥ कीदे सुंदर समता दरिखे, ते सुख संपत्ति साधे
 रे ॥ साधु० ॥ ४ ॥ कामधेनु चिंतामणि सरिखुं, चारित्र चित्तमं आणो रे ॥ इहन्नव
 परन्नव सुखदायक ए सम, अप्रवर न कांड जाणो रे ॥ साधु० ॥ ५ ॥ सिद्धांनव
 सरिखे रचीयां, दश अध्ययन रसादा रे ॥ मनक पुत्र हेतु ते त्रणतां, दहीधे
 मंगल मादा रे ॥ साधु० ॥ ६ ॥ श्री विजय प्रन्न सरिने राज्जे, बुध दाप्र विज-
 यने शिष्ये रे ॥ दक्षिविजय विबुध आचार ए, गायो सकल जगीशो रे ॥
 साधु० ॥ ७ ॥ इति दशार्थैकादिक सहाय संपूर्ण ॥ अथ श्री जावविचारनुं
 स्तवन प्रारंभः ॥ दाव ॥ श्री सरस्वती जी, वरसति वचन विदास रे ॥ शुणशुं
 विबुधन जी, तारण श्री जिन पास रे ॥ सुणो समरथ जी, सुंदर श्रीजिन देव रे ॥
 मुज देजो जी, प्रवन्नव तुम पय सेव रे ॥ १ ॥ नुटक ॥ तुज सेव पाखे सहिज त्रमियो,
 तु निगामीयो जिनवर ॥ वक्राय मांहि जीव सहियो, वेदन नेदन आकरं ॥ उक्त

आयु अन्नगाहना जे, ईणें जीवें जोगवी ॥ दाख चोरग्री जीवा-भोनि, तेह पण
 इम जोगवी ॥ २ ॥ ॥ दाख ॥ मणि रफटिक जी, हिंगलो रयण प्रवाख रे ॥ पारो
 अन्नख जी, गेरु खडी हरियाख रे ॥ ओस सुरमो जी, माटी पाषाण सात धात
 रे ॥ दूणादिक जी, पृथिवी त्रेद बहु जात रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अनेक त्रेद वलि
 पाणी त्राणियें, कुप सरोवर धूअरू ॥ ओसा हिम घणोदधी करा कहियें, समुद्र
 अनेक पाणी खरू ॥ अंगाळ जाळ सुभूर विजदी, जळकापात अन्निकणा ॥ सिधांत-
 माहे ठे विशेषें, त्रेद अनेक अन्नितणा ॥ ४ ॥ दाख ॥ एक वायरो जी, हलुच
 हलुच वाय रे ॥ गुजारय जी, करतो चिहुं दिशि धाय रे ॥ पाडे उत्कली जी,
 वदी बंटोदीधो एक रे ॥ घनवार्ते जी, वायु त्रेद अनेक रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ एम
 दोय त्रेद वनस्पति केरा, साधारण प्रत्येक तरू ॥ कंद कोमळ फळ अकूरा,
 फूल सेवाळ सेखरू ॥ अनेक त्रेद साधारण सुणीयें, लक्षण तस शाखें सही ॥ एहथी
 जे दोष विपरीत, तेह प्रत्येक वनस्पति कही ॥ ६ ॥ दाख ॥ पृथिवी पाणी जी,
 तेज वाळ काय रे ॥ वणसद्द पांचमी जी, आवर काय कहेवाय रे ॥ विकर्दोदी जी,
 नारकी तियेंच मानवी ॥ वदी देवता जी, ठठी त्रसकाय पाळवी ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥
 पहेली पृथिवी काय आयु, वरस सहस वावीश ए ॥ सात सहस अपकाय त्राणियें,
 अन्न त्राण दीन दीस ए ॥ वरस सहस त्राण वायु सुणीयें, वणसद्दे दस सहस
 जाणियें ॥ नारय देव विण जघन्य आयु, अंतर सुहूर्त प्रमाणीयें ॥ ८ ॥ दाख ॥

अंगुल तणो जी, प्राग असंख्यातमो प्राणुं ॥ स्वाभाविक जी, जघन्य हुवे सहुनो
 तनु ॥ चार थावर जी, गुरु लघु सम तनु जोय रे ॥ वनस्पति जी, सहस योजन
 जाती होय रे ॥ ए ॥ शुक ॥ इम होय समूर्धिम मनुष्य साधारण, सूक्ष्म जेह
 निगोद ए ॥ तस आयु अंतर सुहृत् होवे, चौद राज अनेद ए ॥ पांच थावर कहिये
 एक इन्दी, शाखें नेद तस वे घणा ॥ एम कहे कवियण सुणो नवियण, नाम मात्रज
 ए प्राया ॥ १० ॥ दोहा ॥ प्रव साढा सतर कहा, थार्सोत्वास मऊर ॥ एकेंदी
 प्रव प्रोगवी, वलतो विगल विचार ॥ ११ ॥ ढाल वीजी ॥ वे कर जोडी ताम रे,
 प्रजा विनवे ॥ ए देशी ॥ शंख तीप कोडा सरमीयां रे, मेहर थापना सार ॥ जलो
 पूरा ने अलसीयां रे, ए वेइदी विचारो रे ॥ धन जिन वयणनां, उतारे प्रव पारो
 रे, ते जगमा वडा ॥ ए आंकणी ॥ १२ ॥ कानखजूरा माकडि जूआ रे, गहहीयां
 मिल ॥ कीडी गिंगोडा कातरा रे, गोकीड मंकोडा चूडेव रे ॥ धन० ॥ १३ ॥
 वा जूवा धान कीडला रे, ईवी अने इंडगोप ॥ उहेही ने वली कुंशुआ रे, म
 करो तेंडीनो तोप रे ॥ धन० ॥ १४ ॥ वीठी कसारी खडमांकडी रे, नमरा नमरी
 ने तीड ॥ प्रावी मसा डंसा पतंगीया रे, टावी चौरिंदीनी पीड रे ॥ धन० ॥ १५ ॥
 वेंडी वरसज वारतुं रे, हवे तेंडी प्रकाश ॥ दीवस अगणपंचासनो रे, चौरिंदी षट्
 मास रे ॥ धन० ॥ १६ ॥ अंख प्रमुख जे वेइदी रे, तस तनु जोयाण तव ॥

रे, ए विगलेंडी रे नाम ॥ कहे कवियण तुमे सांयलो रे, हवे पचेंडी अत्रिराम रे ॥
 धन० ॥ १८ ॥ दोहा ॥ नहि विवेक विकलपणे, नहि तस तत्व विचार ॥ नव नवांतरें
 योगव्या, जपनो नरक मऊर ॥ १९ ॥ ढाल त्रीजी ॥ जंबूद्रीप मऊर रे ॥ ए देशी ॥
 रत्नप्रजा पहेली जेह रे, सागर एकनु ॥ एकत्रीश हाथ ठ आंगुला ए ॥ अक्रप्रजा
 बीजा होय रे, त्रण सागर तिहां ॥ हाथ वासठ वार आंगुला ए ॥ २० ॥ बाहुप्रजा
 पुहवी बीजी रे, सात सागर आधु ॥ एकत्रीश धनुष एक हाथनु ए ॥ पकप्रजा चौथी
 नाम रे, दश सागर सही ॥ वासठ साढा धनुष तनु ए ॥ २१ ॥ पंचमी धूमप्रजायें
 रे, सत्तर सागर सुणो ॥ धनुष सवासो जाणियें ए ॥ तमप्रजा ठवी जाणो रे, बावीश
 सागर ॥ धनुष अढीसें नाणियें ए ॥ २२ ॥ तमतमा सातमी नाम रे, तेत्रीश सागर ॥
 धनुष पांचशें देह रचे ए ॥ पांच कोडी अफसठ दाख रे, सहस नवाणुं ए ॥ रोमं
 नारकी नित्य पचे ए ॥ २३ ॥ परमाधामी पचावे रे, वली दश वेदना ॥ कीधां कर्म ते
 योगवे ए ॥ राज राज प्रत्यें पोहवी रे, इम सात राजनी ॥ सातमी पृथिवी योगवी ए
 ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ सात प्रकारं नारकी, वोल्यो तास विचार ॥ जलचर थलचर खेचरु,
 तिर्यंच त्रण प्रकार ॥ २५ ॥ ॥ ढाल चौथी ॥ त्रिपदीनो देशी ॥ जरपरी जुजपरी
 गर्मज थाय, गर्त समूर्डिम मड कहेवाय ॥ वरस पूरव कोमी आय हो ॥ त्रविका ॥ वरस
 पूरव कोडी आय ॥ २६ ॥ सहस योजन तस काया दीसे, जुजपरि कोश पृथक्त वली
 कहीसे, जिन वचनें चित्त हीसे हो ॥ त्रविका ॥ जिन० ॥ २७ ॥ त्रेपन सहस समूर्डिम

व्याव, शुजपरि सर्प सहस बायाव, योजन पृथक तनु जाल हो ॥ त्रिका ॥ यो ० ॥ १८ ॥
 गर्ज त्रिपंच चतुष्पदनी जात, त्रण पद्योपम आद्यु विख्यात ॥ काया त कोश सुणो
 ज्ञात हो ॥ त्रिका ॥ काया ० ॥ १९ ॥ चतुष्पदसंमूर्धिम कर्दीयें जास, आद्यु सहस चोरशी
 वास ॥ कोश पृथक तनु तास हो ॥ त्रि ० ॥ कोश ० ॥ ३० ॥ पंवी गर्ज अग्रानो
 मण, पद्योपम असंख्यातमो त्रण, धनुष्य पृथक तनु जाण हो ॥ त्रि ० ॥ धनु ० ॥ ३१ ॥
 संमूर्धिम पवी बहुतेर सहस, ए पदेवे अरे कदेश, चजपद विवरी लदेश हो ॥ त्रि ० ॥
 चज ० ॥ ३२ ॥ जेणे अरे जे मानव आद्यु धार, तेह तणा त्रण कीजे जदर, त्रण
 चोधे अथ सर हो ॥ त्रि ० ॥ त्रण ० ॥ ३३ ॥ अज आद्यु त्रण अग्रमे वखाणुं, गाय
 त्रंस ने जंट खरादिक जाणु, पांचमे त्रण प्रमाणुं हो ॥ त्रि ० ॥ पांच ० ॥ ३४ ॥ श्रानादिक
 त्रण दशमे कर्दीयें, हस्ति आद्यु मानव पदे लदीयें, जिन आणा शिर वदीयें हो ॥
 त्रि ० ॥ जिन ० ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ पशुअपणे परवश पड्यो, पाम्यो डःख अपार ॥ कर्म
 केतां तिहा निर्जरी, धरीयो मनुज अवतार ॥ ३६ ॥ ढाल पांचमी ॥ कपूर होवे अति
 जजलो रे ॥ ए देशी ॥ चार कोडकोडी सागरू रे, सुसम सुसमा नाम ॥ त्रण पद्योपम
 आजसुं रे, त्रण गाज अत्रिराम रे ॥ प्राणी मानव त्रव अवतार ॥ त्ररीयें सुकृत त्रडार
 रे ॥ प्राणी ० ॥ ३७ ॥ ए आकणी ॥ सागर कोडकोडी त्रणनो रे, सुसम बीजो जेह ॥
 दोय पद्योपम आजसुं रे, ~~युगल गाज दोय देह रे ॥ प्राणी ० ॥ ३८ ॥~~ त्रीजो सुसम
 डसमा रे, सागर कोडकोडी दोय ॥ एक पद्योपम युगवनो रे, कोश काया एक होय रे ॥

प्राणी० ॥ ३९ ॥ पहेले तुअर बीजे वीर समो रे, बीजे आमल धार ॥ अठम ठठ
 एकांतरो रे, सुरतर पूरे आहार रे ॥ प्राणी० ॥ ४० ॥ इसम सुसम कोडाकोडीनो रे,
 सहस वेंआदीश जण ॥ पूर्व कोडी वरस मानथी रे, पांचशें धनुष प्रमाण रे ॥ प्राणी०
 ॥ ४१ ॥ वरस सहस एकवीशनो रे, इसमा कदियुग नाथ ॥ एकसो वीस वर्ष आउखुं
 रे, मानव काया सात द्वाथ रे ॥ प्राणी० ॥ ४२ ॥ ठठो सहस एकवीशनो रे, इसमा
 इसम अपार ॥ वीस वरस दीष हाथना रे, मडाहारी नर नार रे ॥ प्राणी० ॥ ४३ ॥
 ए ठ आरे अवसर्पिणी रे, उत्सर्पिणी विपरीत जाण ॥ कादचक्र ए दीष मदी रे,
 वार आरे प्रमाण रे ॥ प्राणी० ॥ ४४ ॥ पांच तरत पांच ऐरवतें रे, तिहां सदा सरिखो
 काद ॥ पांच विदेह परंपरा रे, चोथो आरो सुविशाद रे ॥ प्राणी० ॥ ४५ ॥ दोहा ॥
 दश दष्टांतें दोहिलो, मानवनो अवतार ॥ शुभ रावे सुकृतपणे, जपनो देव मऊर ॥ ४६ ॥
 दाद ठठी ॥ नंदनकु त्रिसदा हुदरावे ॥ ए देशी ॥ दश प्रकारें जवनपति कहीयें, व्यंतर
 आठ प्रकारो रे ॥ ज्योतिषी पांच प्रकारे सुणजो, दीष विमानिक सारो रे ॥ दशा० ॥ ४७ ॥
 असुरकुमार साधिक एक सागर, सात द्वाथ तस काय रे ॥ देशें जणा दीष पद्योपम,
 नव निकाय कहेवाय रे ॥ दशा० ॥ ४८ ॥ दाख सहस वरस एक पद्योपम, चंड सूर्य
 विचार रे ॥ व्यंतर आष्टु एक पद्योपम, तनु सम असुरकुमार रे ॥ दशा० ॥ ४९ ॥
 नारकी जवनपति ने व्यंतर, दश सहस जघन्य रे ॥ ज्योतिषी पद्योपम अड रागें, पद्योपम
 विमान रे ॥ दशा० ॥ ५० ॥ शुभ सौधर्म ने इज्ञानेड, इहांथी होय एक राजे रे ॥

सागर वे वीजे वे जाजा, सात हाथ विराजे रे ॥ दश० ॥ ५१ ॥ सनतकुमार जुगम माहेई,
 दोय राज हवे जाणो रे ॥ वीजे सात चौथे सात जाजा, व हाथ काया प्रमाणो रे ॥
 दश० ॥ ५२ ॥ पाचमे वह्न आधु दश सागर, दातक ठे चौदू रे ॥ पांच हाथ तस
 काया कहीये, त्रण राज अत्रेदू रे ॥ दश० ॥ ५३ ॥ शुक्र सातमे सत्तर सागर, वली
 सहसारे अदार रे ॥ चार हाथ तनु सुरदेह सोहे, राज हीवे तिहां चार रे ॥ दश० ॥ ५४ ॥
 नवमे आनत उगणीज सागर, प्राणत दशमे वीज रे ॥ एकादशमे आरण्य एकवीज,
 वारमे अच्युत वावीज रे ॥ दश० ॥ ५५ ॥ ए चारे त्रण हाथनी काया, पांच राज द्हां
 सोहे रे ॥ नव प्रैवैयक एक जपर जेणे, दीजे त्रवि मन मोहे रे ॥ दश० ॥ ५६ ॥ दोहा ॥
 वार स्वर्ग सोहे सदा, तिहां राज्य नीति प्रधान ॥ त्रेदू वीजो वैमाननो, नव प्रैवैयक विधान
 ॥ ५७ ॥ दाद सातमी ॥ माइ धन सुपन तुंधन ॥ जीवो तोरी आश ॥ ए देशी ॥ सुदर्शन
 पहेदे, सागर तिहां त्रैवीश ॥ सुप्रतिबंध चोवीश, मनोरमे पचवीश ॥ ५८ ॥ सर्वत्रयं त्रवीज,
 सुविशाल सत्तावीश ॥ सुमनस अठावीश, हवे त्रिक वीजे जगीश ॥ ५९ ॥ अयोगत्रिस
 सोमनसें, त्रियकर आठमे वीश ॥ आदित्ये एकत्रीश, दोय हाथ तनु दीश ॥ ६० ॥ ए
 नव प्रैवैयक, ठए राज प्रधान ॥ सातमे सिद्ध देहदे, हवे अनुत्तर विमान ॥ ६१ ॥ विजय
 विजयते, जयंत अपराजित ॥ सरवारशसिद्ध, नदी तिहा राजनी नीत ॥ ६२ ॥ सागर
 आधु त्रैवीश, काया कर एक वारू ॥ एका अवतारी, मुख अनत तस चारू ॥ ६३ ॥
 तिहाथी वार योजन, सिद्धशिवा महंत ॥ योजनेने अत, सिद्धहुवा अनत ॥ ६४ ॥ आधु

अथगाहना, कहि सामान्य प्रकार ॥ जघन्य संक्षेपे, वोढ्या तास विचार ॥ ६५ ॥ दोहा ॥
 त्रवस्थिति इणी परं त्रोगवी, तुज विण त्रिभुवन देव ॥ कुण स्थानक काया स्थिते,
 रथो कहुं सुण देव ॥ ६६ ॥ दाव आढमी ॥ नरत नृप त्रावशु ए ॥ ए देशी ॥ सात हे-
 वत सात उपरं ए, चउद राजलोक त्राव ॥ त्रविक जिन त्रावशुं ए ॥ पुरुषाकार लोक
 पुरियो ए, पट पदारथ त्राव ॥ त्रविक ० ॥ ६७ ॥ नयर त्रवनपति देवता ए, अधो लोक
 निःशक ॥ त्रविक ० ॥ व्यंतर नर तिरि गिरिवरु ए, द्वीप समुद्र असंख्य ॥ त्रविक ० ॥
 ॥ ६८ ॥ अग्नि विकर्दंडी ज्योतिषी ए, ए सवि तीर्थं लोक ॥ त्रविक ० ॥ स्वर्ग त्रैवेयक पांच
 अनुत्तरु ए, सर्व सिद्ध ऊर्ध्वं लोक ॥ त्रविक ० ॥ ६९ ॥ असंख्याती उत्सर्पिणी ए, सर्व
 एकडीय स्थिति काय ॥ त्रविक ० ॥ काव अनंतो अनंतकायमां ए, उपजे ने वली जाय ॥
 त्रविक ० ॥ ७० ॥ गिगल संख्या वरस सहस्सनी ए, नर तिरि त्रव सात आठ ॥ त्रविक ० ॥
 नारकी देव चवीथ न उपजे ए, जघन्य आयु परिपाठ ॥ त्रविक ० ॥ ७१ ॥ सात सात दाख
 चार थावरु ए, वनस्पति दश दाख ॥ त्रविक ० ॥ अनंतकाय चौद दाख सुणो ए, विगर्दंडी दो
 दो दाख ॥ त्रविक ० ॥ ७२ ॥ नारकी तिर्यंच देवता ए, चौद दाख होये तेह ॥ त्रविक ० ॥ चौद
 दाख वली मानवी ए, संख्या जीवायोनि एह ॥ त्रविक ० ॥ ७३ ॥ इंडी पांच त्रण वद कहां
 ए, आसोह्रास वली आय ॥ त्रविक ० ॥ दश प्राण होये सत्रिया ए, नव असत्रिया थाय
 ॥ त्रविक ० ॥ ७४ ॥ उ सात आठ विकर्दंडिय तणा ए, एकंडी प्राण चार ॥ त्रविक ० ॥
 नर तिर्यंच त्रण वेद सुणो ए, देवता दोय वेद सार ॥ त्रविक ० ॥ ७५ ॥ थावर विकर्दंडी

ने नारकी ए, एक नपुंसक वेद ॥ त्रविक ० ॥ पञ्जमणुं अधिक वादर अग्नी ए, वैमानिक-
 शुवणेंद ॥ त्रविक ० ॥ ७६ ॥ निरय व्यंतर ज्योतिषि चजरिंडी ए, तिर्यंच वि ति इंडिक ॥
 त्रविक ० ॥ पृथिवी पाणी वायु वणसई ए, एक एक जीवथी अधिक ॥ त्रविक ० ॥ ७७ ॥
 चिहुं गति त्रमी त्रमी उपनो ए, संप्रति प्रभु पद दीध ॥ त्रविक ० ॥ शास्त्रथकी जे
 विरुध कहुं ए, ते पंडित करजो शुध ॥ त्रविक ० ॥ ७८ ॥ द्वार दर्दये हेम रयणनो ए, धरजो
 चतुर सुजाण ॥ त्रविक ० ॥ त्रणे गणे जे सांप्रते ए, तस धर कोडि कल्याण ॥ त्रविक ०
 ॥ ७९ ॥ ढाल नवमी ॥ कडखानी देशी ॥ चउद राज माहे जीव केइ जुग त्रभ्यो, सूक्ष्म
 वली वादर अनंती वारु ॥ कर्मनी कोड त्री अकाम निर्जर करी, पामीय पास त्रिभुवव
 तारु ॥ ८० ॥ त्रेट रे त्रेट प्रभु पास चिंतामणि, एहिज सुकिनो मार्ग साचो ॥ कुशुरु
 कुदेव कुधर्मनें परिहरो, मोह मिथ्यातमें केम राचो ॥ त्रेट ० ॥ ८१ ॥ नयर गुण दीव
 गुण वेवी वाधे सदा, पुष्करावर्त पास भेष देवा ॥ श्री संघ मंडप तले वेवी ते विस्तरे,
 उपजे आनंद सुकृत भेवा ॥ त्रेट ० ॥ ८२ ॥ संवत शशी सायर चंद्र लोचन (१७१२)
 स्तव्यो, आशो शुदि दशमी रविवार राजे ॥ सूरि शिरताज गुरुराज आणंदजी, तस
 पटें सूरि विजय राज बाजे ॥ त्रेट ० ॥ ८३ ॥ धन धन दर्ष गुरु विबुध चूडामणि, जास
 दीक्षित जणें कीर्ति सारी ॥ रत्न विजय बुध सत्य विजय तणो, दण्डि विजय त्रणे आनं-
 दकारी ॥ त्रेट ० ॥ ८४ ॥ इति सपूर्ण ॥ ॥ अथ नव तत्त्वतुं स्तवन प्रारंभः ॥ ॥
 दोहा ॥ सरस्वतिने प्रणसुं सदा, वरदाता नित्य भेव ॥ सुज सुख आवी तुं वसे, करुं निरतर

सेव ॥ १ ॥ आदिसर अरिहंत नसुं, जुगला धर्म निवार ॥ गुरु श्रुतेदेवी चंदवो, एहिज
 सुज आधार ॥ २ ॥ जासतणां पद युग नमी, वर्णवु तत्व विचार ॥ त्रवियण एक चित्त
 करी, नाम कहुं हित कार ॥ ३ ॥ जीव अजीव पुण्य पाप ने, संवर आश्रव जेद ॥ निर्जारा
 बंध ने मोक्ष जे, जिनजीयें भारंया एह ॥ ४ ॥ एहना जेद, वे नवनवा, आगममां अनुप
 ॥ गुरुसुखशी ते सांप्रती, तांहुं एह स्वरुप ॥ ५ ॥ दाढ पहेती ॥ सोढमा श्री जिनराज
 ओढग ॥ सुणे अम तणी लवना ॥ ए देखी ॥ जीवतत्वना जेद ते, चउदें जाणीयें ॥
 लवना ॥ चउद अजीवना जेद, ते मनमां आणीयें ॥ लवना ॥ जेद बहेतावीस पुण्यना,
 त्रवियण चित्त धरो ॥ लवना ॥ व्यासी जेद ते पापना, मनशी संवरो ॥ लवना ॥ १ ॥
 आश्रवना बहेतावीश, जेद ते त्रावियें ॥ लवना ॥ संवरना सत्तावन, चित्तमां दावीयें
 ॥ लवना ॥ बार जेदें ठे निर्जारा, कर्म ते निर्जारे ॥ लवना ॥ जेहशी प्राणी मोक्ष, रमणी
 सुखने वरे ॥ लवना ॥ २ ॥ बंधतत्वना चार, ते बंधने तोडीयें ॥ लवना ॥ मोक्ष तत्वना
 नव, ते सुखशी जोडीयें ॥ लवना ॥ सर्व मदी नव तत्वना, जेद ते जाणजो ॥ लवना ॥
 वसें ने तौर ते, मनमां आणजो ॥ लवना ॥ ३ ॥ तेमां अथाशी अरुपी, जेद ते
 सुखकरु ॥ लवना ॥ एकसो अथाशी रूपी, कहे ते जिनवरु ॥ लवना ॥ ४ ॥ फंगर
 गुरु ध्यानशी सुखने अनुसरे ॥ लवना ॥ विवेक कहे त्रविलोक, ते त्रवसायर तरे ॥
 लवना ॥ ५ ॥ दीहा ॥ हवे प्रथम जीवतत्वना, जेद कहुं हितकार ॥ विवरीने ते वर्णवु,
 एक एक सुखकार ॥ १ ॥ दाढ वीजी ॥ नदी यमुनाके तीर, जेदे दोय पंखीयां ॥ ए देखी ॥

एक त्रेदं कश्यो जीव, इविध त्रेदं वती ॥ त्रण प्रकारे जाण, चउ विह कहे केवती ॥
 पच पट विध जीव ते, तए त्रांखीया ॥ अरिहा जिनवर एह के, मुखशी दाखीया ॥ १ ॥
 चेतना लक्षण जीव ते, एक अत्रेद ते ॥ अस अने वीजो स्थावर, इहां नवि खेद ते ॥
 स्त्री पुरुष नपुंसक, वेद त्रणे सही ॥ देव गड मनुष्य तिर्यंच, वती नारक कही ॥ २ ॥
 पाच प्रकारे जीव, पर्चेद्विय परखीये ॥ त प्रकारे जीव, त कायने निरखिये ॥ इणे विध
 त त्रेदं जीव, धारो तुमे एक मना ॥ हवे आगाद दश प्राण, कहे त्रिगुवन जिना ॥ ३ ॥
 पांच इंद्रि त्रण बल, श्वासोवासा आउखुं ॥ ए दश प्राणीनें होय, विवरी कहुं पारिखु ॥
 एकेंदीने चार प्राण, वेंदीने त कथा ॥ तेंदी सात जाणो, चौरिंदीयें आत लहा ॥ ४ ॥
 असस्त्री पर्चेदीने नव, संझी दश धारजो ॥ ए विना अवर न होय, संदेह मन वारजो ॥
 हवे एकेद्विय सूक्ष्म, वादर होय ते ॥ पर्चेद्विय संझी असंझी, होय त्रेद जोय ते ॥ ५ ॥
 वेंदी तेंदी एक, चौरिंदी जाणजो ॥ ए साते त्रेद होय के, शुभ मन आणजो ॥ पज्ज अपज्ज
 ए होय, चउद त्रेद जीवना ॥ धारो चित्तमें जेह के, त्रविजन एक मना ॥ ६ ॥ आहार
 शरीरनें इंद्रिय, श्वासवचन सही ॥ मननी ठठी जाण, एकेंद्विय चउ कही ॥ वि ति चौरिंद्विय
 असस्त्री, ने होय पंच ए ॥ षट सस्त्रीने जाणवी, विशेष कहे संच ए ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥
 जीव तत्व पूरण अयुं, हवे अजीव विचार ॥ त्रिन्न त्रिन्न करीने कहुं, सांजवजो नर नार
 ॥ १ ॥ ॥ दाढ वीजी ॥ वीरजिने वचनें रे असत्त रस जरे रे ॥ ए देशी ॥ धर्मास्तिकाय
 खंघ देश प्रदेशे वे रे, तेम अधर्मारितकाय ॥ एहना पण ए त्रण त्रेदज कथा रे, एम

आकाशना त्रण थाय ॥ त्रवि तुमे जाणो रे अजीव तत्त्वना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
 ए त्रणना मली नव त्रेद सुंदरू रे, दशमो त्रेद ठे काव ॥ खंध प्रदेश प्रमाणुत्त रे,
 अजीवना चौद कथा सुविशाल ॥ त्रवि० ॥ २ ॥ धर्मास्ति अधर्मास्ति पुजवा रे, आकाश
 काव सुविहाण ॥ ए पांचे अजीव ते जिन कथा रे, कथा कथा त्रिचुवन त्राण ॥
 ॥ त्रवि० ॥ ३ ॥ चवण स्वत्राव धर्मास्ति कायमां रे, अधर्मास्ति थिर ताण ॥ अवकाश
 आपे पुजव जीवने रे, हवे पुजवना चार विभाण ॥ त्रवि० ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश
 प्रमाणुत्त रे, पुजवना ए चार त्रेव ॥ हवे आवलिका त्रेद तुमे लहो रे, असंख्य समय
 एक आवलि मेव ॥ त्रवि० ॥ ५ ॥ एक कोडी ने सइसठ लाख ठे रे, उपर सीतोत्तर
 सहस्सज जोय ॥ वसें ने शौल आवलिका कही रे, एटवी आवलियें एक सुहूर्त्त शौय
 ॥ त्रवि० ॥ ६ ॥ त्रीश सुहूर्त्त दिवस रात्रि कही रे, पदर अहोरत्रें एकज पक्क ॥ वे पक्के
 एक मासज त्रावियें रे, वार मासें एक वर्षज दक्क ॥ त्रवि० ॥ ७ ॥ एहवे वरसे हवे पूर्व
 कहुं रे, सितेर लाख कोडी वरसज त्राय ॥ उपन्न सहस्स कोडी वरस मान कहुं रे, पूर्व
 एटवे वरसे थाय ॥ त्रवि० ॥ ८ ॥ असंख्यात पूर्वें एक पद्य जाणीयें रे, दश कोडा
 कोडी पद्यें सागर एक ॥ सागर दश कोडा कोनी उत्सर्पिणी रे, अवसर्पिणी कोडा कोडी
 दश ठेक ॥ त्रवि० ॥ ९ ॥ वीश कोडा कोडी सागरें काव चक्र ठे रे, काव अनंते पुजव
 परावर्त जाण ॥ हुंगर सुत्तना पद शुच ध्यानशी रे, नित्य नित्य विवेक लहे कल्याण ॥
 त्रवि० ॥ १० ॥ दीदा ॥ पुण्य तत्त्व तणां कहुं, त्रेद वर्हेतावीश जेह ॥ एकमना थइ सांन-

लो, आणी अधिको नेह ॥ १ ॥ दाव चोथी ॥ साहेवजी श्री विमलाचल ॥ नेदीयें हो
 दाव ॥ ए देशी ॥ वहेतालीश नेद पुण्य तत्वना हो दाव, शाला वेदनी उंच गोत्र ॥
 साहेवजी ॥ मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वा हो दाव, चार नेद ए युक्त ॥ साहेवजी ॥ पुण्य
 तत्व हवे सांजलो हो दाव ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साहेवजी सुर झग पचेंदियपणुं हो
 दाव, पाच देह मनोहार ॥ साहेवजी ॥ औदारिक वैक्रिय आहारकें हो दाव, अंगोपंगो
 युक्त धार ॥ साहेवजी ॥ पु० ॥ २ ॥ सा० ॥ प्रथम संवयण संस्थानशुं हो दाव, शुभ
 वरण शुभ गंध ॥ सा० ॥ शुभ रस शुभ स्पर्शने हो दाव, अगुरु लघु अदंभ ॥ सा० ॥
 पु० ॥ ३ ॥ सा० ॥ पराधात आसोवृत्तसेन हो दाव, वेवाने जेहनी शक्त ॥ सा० ॥ आ-
 ताप नेद पचवीशमो हो दाव, ज्योत कर्मनी व्यक्त ॥ सा० ॥ पु० ॥ ४ ॥ सा० ॥ शुभ-
 खगई शुभगति करे हो दाव, निर्माण नाम अगर्व ॥ सा० ॥ त्रस दशको दश नेदनी
 हो दाव, अणाले कहे ते सर्व ॥ सा० ॥ पु० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सुर नर तीरि आजखुं हो
 दाव, तीर्थकर नाम कर्म ॥ सा० ॥ हवे त्रस दशको वर्णवुं हो दाव, जेहथी वहे शिव
 शर्म ॥ सा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ सा० ॥ त्रस वापर पर्यासा हो दाव, प्रत्येक स्थिर शुभ नाम
 ॥ सा० ॥ सौभाग्य नाम कर्मथी हो दाव, जीव वहे शुभ ताम ॥ सा० ॥ पु० ॥ ७ ॥
 सा० ॥ सुस्वर आदय जस नामथी हो दाव, जीव वहे मुख नित्य ॥ सा० ॥ डंगर
 गुरु पद सेवतां हो दाव, विवेक वहे जग जीत ॥ सा० ॥ पु० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पाप
 तत्वथी डख होथे, पापे नरक द्वार ॥ ते माटे चेतन तुमे, मनथी एह निवार ॥ २ ॥

ढाल पांचमी ॥ सुरति महीनानी देशी ॥ आवरण पंचने तिम वली, अंतराय ठे पंच ॥ पंच
 निजा कही दर्शन, चारे ते खल खंच ॥ नीच गोत्र आशातना, तेम वली मिथ्यात्व ॥
 थावर दशको आगल कहे, सात्रलो एह विख्यात ॥ १ ॥ नरक त्रिक अने वली, पणवी-
 स कषाय ॥ तिरिय डग मली कहां, नेद वासठ ए थाय ॥ ईंग वि ति चड जाई, कुलगई
 उषघात ॥ होये प्राणने ते सही, नीच कर्मनी रघ्यात ॥ १॥ अशुत्र वरण अशुत्र रस,
 गंध अशुत्र तेम जाण ॥ फरस अशुत्र तेमज कहां, आगममां जिन प्राण ॥ पहम संघयण
 विनाहिज, मूकी पहम संस्थान ॥ वहंतरे नेद ए थया, जाणो एहनूं मान ॥ ३ ॥ थावर सुहुम
 अपज्ज, साधारण अस्थिर ॥ अशुत्र डग डःस्वर, अनादेय अपजस थीर ॥ आगममां पाप
 तत्वना, नेद ए व्याशी जाण ॥ इंगर गुरूनो सेवक, तेहने नित्य कट्याण ॥ ४ ॥ दोहा ॥
 पाप तत्वने ए कहुं, हवे आश्रवनु ठाम ॥ पाप आवे जे जीवने, आश्रव एहनूं नाम
 ॥ १ ॥ ढाल ठठी ॥ देखी कामिनी दोय के, कामें व्यापीयो रे के ॥ कामें व्यापीयो ॥ ए
 देशी ॥ पांच इंडी कषाय चार के, अव्रत पण कहां रे के ॥ अव्रत ० ॥ त्रण योग त्रण
 नेद के, गुरुमुखशी लहा रे के ॥ गुरु ० ॥ हवे किरिया ते जोय के, पणवीश अनुक्रमें रे
 के ॥ पण ० ॥ तजीये जेहशी होय के, पुण्य सुसंक्रमे रे के ॥ पुण्य ० ॥ १ ॥ पहेली
 कायिकी जाण के, बीजी अधिकरणकी रे के ॥ बीजी ० ॥ बीजी परेक्षकी होय के, चौथी
 पारितपनकी रे के ॥ चौथी ० ॥ प्राणतिपातनी पांचमी, ठठी आरंभकी रे के ॥ ठठी ० ॥
 परिग्रहकी कही सातमी, आवमी कायिकी रे के ॥ आवमी ० ॥ २ ॥ मिथ्यादंसण अप-

चक्राणकी, नव दस एक कही रे के ॥ नव० ॥ दिति पुति पापुचकी, त्रयोदश ए लही रे
 के ॥ त्रयोदश० ॥ सामंतोनपात निःजस्र, स्वहस्तकी ओलमी रे के ॥ स्वहस्त० ॥ सतरमी
 आणवणी, विदारण अढरमी रे के ॥ विदारण० ॥ ३ ॥ अणान्तोग अणवकंख के, वे
 मदी वीज थई रे के ॥ वे० ॥ अणजपयोग समुदायकी, वावीश ए लइ रे के ॥ वावीश० ॥
 त्रेवीजमी ते रगकी, चोवीजमी द्वेषकी रे के ॥ चोवीश० ॥ पणवीशमी ईर्यापथिकी, कही
 विशेषकी रे के ॥ कही० ॥ ४ ॥ त्रेद वहैतावीस आश्रव, तत्त्वना ए कहा रे के ॥ तत्त्व० ॥
 सम्यक्दष्टि जीव के, मनथी सहहा रे के ॥ मन० ॥ हुंगर गुरु शुभधानथी, आश्रवने
 तजो रे के ॥ आश्रव० ॥ विवेक कहे त्रिविीक के, शिव रमणी तजो रे के ॥ शिव० ॥
 ॥ ५ ॥ इति ॥ ढाढ सातमी ॥ प्राणी वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥ संवर तत्त्व ते सांजलो,
 संवरिये आतमा नित्य रे ॥ अरिहा जिनवरें त्रांखियो, अगममांहे शुभ रीत रे ॥ अग-
 ममांहे शुभरीत सूचित, सुनित जगत गुरु त्रासियो सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद
 आनंद ॥ जगत गुरु त्रासीयो सुख कंद रे ॥ ए अंकणी ॥ १ ॥ पाच समिति त्रण
 गुति जे, परिसद वावीश निवारो रे ॥ दश विध सुनिवर धर्म जे, ते सुनिजन
 नित्य तुमें धारो रे ॥ ते सुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १ ॥ पांच समिति विवरी कहुं,
 ईर्या समिति प्रथम वखाण रे ॥ लकाय रक्षा जे कोरे, ईर्या कही तेह सुजाण रे ॥
 ईर्या० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ३ ॥ त्राषा समिति बीजी हवे, सहुने सुख उपजे सोय
 रे ॥ एपणा वहैतावीश दोष वे, सुनिने आहार एम होय रे ॥ मनि० ॥ म० ॥ म० ॥

ज० ॥ ४ ॥ अदान निक्षेपणा, समिति दे भूके योग रे ॥ परिष्ठापनिका कही, मल
सूत्र नाखे उपयोग रे ॥ मल० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ५ ॥ त्रण गुति हवे चित्त धरो,
मन वचन काया करे शुद्ध रे ॥ आठ प्रवचन मात जे, मुनि धारे तेहिज बुद्ध रे ॥
सुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ६ ॥ क्षुधा पिपासा जीत जे, उष्ण डंसा परिसह चेल
रे ॥ रती स्त्रियादिक ते वली, चरिया निसिद्धियादिक भेल रे ॥ च० ॥ सु० ॥ सु० ॥
ज० ॥ ७ ॥ सधा आक्रोश वह जायणा, अलाज रोग तण फास रे ॥ मल सकार परिसह
जे, पन्ना अन्नाण संमत रे ॥ पन्ना० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ८ ॥ खंति मद्धव अज्ञव,
मुत्ति तव संजम मेह रे ॥ सखं सोहं अकिंचण, ब्रह्मचर्य ए दश विध जेह रे ॥ ब्रह्म० ॥
सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ९ ॥ प्रथम अनित्यह नावना, अशरण संसार एकरव रे ॥ अन्यत्व
नावना पंचमी, अशुचि नावना तत्व रे ॥ अशुचि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १० ॥
आश्रव संवर निर्जरा, लोक बोधि डर्वन प्राव रे ॥ धर्म ध्यान ते बारनी, ए ठे नवजल
जंतु नाव रे ॥ ए ठे० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ११ ॥ पांच त्रेद चारिजना, सामाधिक
वेदोपरिधान रे ॥ परिहार सूक्ष्म चारिज जे, यथाख्यातथी मोक्ष निदान रे ॥ यथा० ॥
सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १२ ॥ यथाख्यात चरण जे अचरे, ते पामे सुक्तिनुं ताण रे ॥
फार गुरुना ध्यानथी, विवेक वहै बहु नाण रे ॥ विवेक० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १३ ॥
दोहा ॥ वार प्रकारें तप तपें, निर्जरा जेहनुं नाम ॥ आत्म प्रदेहाह ते यकी, कर्म पुजव
खिरे राम ॥ १ ॥ दाव आठमी ॥ दुष्प्रो चारिज युत्तो समितिने गुत्तो विश्वनो तारुजी ॥

ए देशी ॥ पहेडुं अनशन ते अन्न पाणी लेवे नही ॥ सोत्राणी ॥ वली ठव ने अतम
 तप तेह जाणे सही ॥ सो० ॥ पुरुषने वत्रीश्र कवल खी अठावीश्र लहे ॥ सो० ॥
 नपुंसकने चोवीस कवल जिनवर कहे ॥ सो० ॥ १ ॥ डव्य क्षेत्र काव ने चाव अत्रिग्रह
 जे वरे ॥ सो० ॥ जेम चंदन वाळा वीरनो अत्रिग्रह पूरण करे ॥ सो० ॥ वृत्ती संक्षेप
 पण तप ए त्रीजो कह्यो ॥ सो० ॥ खट रसनो करे त्याग ए चोथो लह्यो ॥ सो० ॥ १५ ॥
 लोच करावे ने अणुवाणे पणे संचरे ॥ सो० ॥ इत्यादिक त्रती त्रातशुं काय कष्ट तप
 आदरे ॥ सो० ॥ पांच इंद्रि चार कषाय योगने शोधवा ॥ सो० ॥ स्त्रीयादिक संसर्ग ते
 सर्वथी रोधवा ॥ सो० ॥ ३ ॥ षटविध बाह्य ए तप तुमें जाणवो ॥ सो० ॥ गुरुमुख्यथी
 लही चाव संदेह मन नाणवो ॥ सो० ॥ हवे षटविध अन्वंतर त्रवि तुमें सांचवो ॥
 सो० ॥ धरीधें चित्तमां ए मूकीने मन आमलो ॥ सो० ॥ ४ ॥ पीतानी कीथी वातने
 लोक ते नवि लहे ॥ सो० ॥ हेलासाहे ते बहु कर्मने खेपवे ॥ सो० ॥ पाप लागं होय
 ते गुरुमुख्यथी आलवे ॥ सो० ॥ इणि विध प्रायश्चित तपने जालवे ॥ सो० ॥ ५ ॥
 नाण दसण चारित्रनो विनय धणो करे ॥ सो० ॥ अरिहंत सिध चैत्य विनय मनसां धरे
 ॥ सो० ॥ वैयावच्च तप त्रीजो प्रश्रव्याकरणे कह्यो ॥ सो० ॥ चौदे त्रेंदें वैयावच्च गुरुमु-
 ख्यथी लह्यो ॥ सो० ॥ ६ ॥ हवे चोथुं तप सध्याय ध्यानने मन खरे ॥ सो० ॥ सिधांत
 वांचे पूजे सिधांतने नित्य गाणे ॥ सो० ॥ चित्तवे धर्मोपदेश दिखे त्रवि चित्तने ॥ सो० ॥
 जेहथी पामे सध्याय तप वित्तने ॥ सो० ॥ ७ ॥ समता चावं मनने आणे ध्यान्मे ॥ सो० ॥

निरामय निराकार अवरथा ज्ञानमे ॥ सो० ॥ शुक्लध्यानने ध्यावे रौजने परिहरे ॥ सो० ॥
 ए पांचसुं तप त्रिविण्य चित्तं धरे ॥ सो० ॥ ८ ॥ ठहुं ह्वे काजसग्ग, तपने आदरे ॥ सो० ॥
 क्रोध अने मान माया, लोभने परिहरे ॥ सो० ॥ ए अच्यतरषट् जेदने प्राणी मन धरो
 ॥ सो० ॥ विवेक कहे त्रिविण्य, त्रवसायर तरो ॥ सो० ॥ ९ ॥ दोहा ॥ बंधतत्व दूरें तजो,
 बंधन ते नित्यमेव ॥ गतिनां डख पासे घणा, कहे इम जिनवर देव ॥ १ ॥ दाद नवमी
 ॥ कपूर ह्ये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ बंधतत्व ह्वे सांजलो रे, त्रिविण्य तुमे जमेद
 ॥ चार प्रकारें बंध ते रे, त्राखे जिन अवेद रे ॥ प्राणी सांजलो तेह सुजाण ॥ १ ॥ ए
 अंकणी ॥ ॥ प्रकृति बंध पहेलो कह्यो रे, सहावा कहेतां स्वभाव ॥ स्थिति ते कावने
 जाणजो रे, एहिज एहनो जाव रे ॥ प्राणी सां० ॥ २ ॥ अनुभग बंध ते शुं कहिये
 रे, कटुक मिष्ट जेम रस ॥ प्रदेश बंध चोथो ह्वे रे, दद संचय जाणो तास रे ॥ प्राणी
 सां० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी कर्मनुं रे, चक्षुबंधन जेह ॥ दर्शन ते कहीथें बीजुं रे, पोवीया
 सरिखुं एह रे ॥ प्राणी सां० ॥ ४ ॥ वेदनी वित्त असि सरिखुं रे, मोहनी मदिरा समान
 ॥ हृद सरिखु आधु जाणिये रे, चितारा सरिखुं नाम रे ॥ प्राणी सां० ॥ ५ ॥ गोब ते
 कुंजार जेहवु रे, जंडारी सम अंतराय ॥ आव करम जाव जाणजो रे, जेहथी डर्गति
 जाय रे ॥ प्राणी सां० ॥ ६ ॥ नाण दंसण वेयणी अंतरायनुं रे, त्रीश कोडा कोडी मान ॥
 मोहनी सितेर कोडाकोडीनुं रे, सागर एह निदान रे ॥ प्राणी सां० ॥ ७ ॥ वीश कोडाकोडी
 नाम गोबनुं रे, आधु अयर तेजीब ॥ काद उक्कष्ट पुरो थयो रे, त्राखे श्री जगदीश

रे ॥ प्राणी सां० ॥ ८ ॥ जघन्य काल हवे कहु रे, आठ करमनो जेह ॥ वेदनी कर्मनो
जाणियें रे, चार सुहृत् कहे एह रे ॥ प्राणी सां० ॥ ९ ॥ नामकर्म गोत्र कर्मनो रे, आठ
सुहृत् तिम होय ॥ पांच कर्मनो अगाव कहे रे, जघन्य काल स्थिति जोय रे ॥ प्राणी
सां० ॥ १० ॥ ज्ञानावरणी कर्मनी रे, दर्शनावरणी अंतराय ॥ मोहनी आधु कर्मनी रे, अंतर
सुहृत् कहेवाय रे ॥ प्राणी सां० ॥ ११ ॥ आठ कर्मशी अदगा रहो रे, जिम लहो सुख
निरवाण ॥ कंगर गुरुना पदधकी रे, विवेकने कोडी कट्याण रे ॥ प्राणी सां० ॥ १२ ॥
दोहा ॥ बंध तत्व पूरण थयुं, मोक्ष तत्व सुविचार ॥ ते माटे त्रवियण तुमें, आराधो
हितकार ॥ १ ॥ दाव दशमी ॥ त्रविका सिद्ध चक्र पद बंदो ॥ ए देशी ॥ उता पदनुं
प्रथम प्ररूपण, डव्य प्रमाण ए वीजु ॥ खेव प्रमाण ते वीजु जाणो, फरसना दारें रीजो
रे ॥ प्राणी ॥ सुक्ति पद आराधो ॥ आराधो शिव साधो रे ॥ प्राणी ॥ सुक्ति० ॥ ए आंकणी
॥ १ ॥ काल द्वार ते पांचसुं शुणीयें, अंतर ठहुं धीर ॥ सातसुं रागने आठसुं नाव, अटप
द्वार कहे वीर रे ॥ प्राणी ॥ सुक्ति० ॥ २ ॥ चार गतिमाहे मनुष्य गतियें, मोक्ष होवे
निरधार ॥ पांच इंद्रिमाहे पंचेंद्रीधी, शिवपद लहे सुखकार रे ॥ प्राणी ॥ सुक्ति० ॥ ३ ॥
शुश्रुवी आदि पांचे थावर, एहने मोक्ष न लहीये ॥ त्रसकायधी मोक्षे जावे, एह आणा
सहदीये रे ॥ प्राणी ॥ सुक्ति० ॥ ४ ॥ त्रव्य अने अत्रव्य ए दो विध, त्रव्यने होय शिव
टाण ॥ सत्री असत्री वे पदमाहे, सत्रीयो लहे निर्वाण रे ॥ प्राणी ॥ सुक्ति० ॥ ५ ॥ चारित्र
पाच प्रकारे त्रार्यां, श्रीजिन अगापमाहि ॥ पथारव्यात चारित्रि ते मोक्ष, वीजे चरणे

मोक्ष नाहि रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥ पांच प्रकारें समकित जाणो, पंचांगीनां जाण ॥
 वीजे समकितें नवि वहीयें, द्वायिके मोक्ष होय नाण रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥
 आहार ते जवमाहि जमाडे, अणाहार दीये मोक्ष ॥ दर्शन चार कहां जिनराजें, केवल
 मोक्षने मांडि रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ८ ॥ मति अने श्रुत अवधि ज्ञानह्, मनःपर्यव ते
 जोवे ॥ केवल ज्ञानथी केवल ज्योति, प्रथम द्वार एम होवे रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ९ ॥
 सिधना जीव डव्य अनंता, अनंता जीव सिधि पाभ्या ॥ लोकने असख्यातमे ज्ञानें,
 सिध ते सवि डःख वाभ्या रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ १० ॥ क्षेत्रथी फरसना अधिकी
 जाणो, एक आकाश प्रदेशें ॥ एक सिध आश्रित आदि वे, अनंतें अनादि रे ॥ प्राणी
 ॥ मुक्ति० ॥ ११ ॥ पन्वाना अज्ञावथी जाणो, अंतर सिधने नही ॥ सर्व जीवने अनं-
 तमे ज्ञानें, सिध रह्या शुचि सही रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥ द्वायिके ने परिणा-
 मिक ज्ञानें, वे ज्ञाने होवे सिध ॥ सर्व थकी थोडा नपुंसक, संख्यातगुणी स्त्री सिद्ध रे ॥
 प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ तेहथी संख्याता पुरुषज जाणो, समयें नपुंसक दश ॥ स्त्री
 सीके एक समयें वीश, पुरुष अष्टोत्तर ईश रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥ अटप बहुत्व
 ए नवसुं द्वार, कहुं गुरुसुखथी में आज ॥ भ्रंगार गुरु पद कमजनी सेवक, विकेकनां
 सिधां काज रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ १५ ॥ ॥ दाव अगीपारमी ॥ राग धन्याथी ॥
 गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥ हवे पंदर जेद सिधना, वणवुं ते सुखकारी रे ॥
 जिण सिध ते अरिहंतजी, पुंनरिक अजिण वतिहारी रे ॥ वारी जावं हुं सिधनी ॥ ए

आंकणा ॥ २ ॥ विहरमान ते तीर्थं सिद्धं, अतिर्थं सिद्धं मरुदेवी माय रे ॥ गृहस्था-
वासं कूर्मापुत्र सिद्धा, अन्यथादिगे वलकत्व शिव जाय रे ॥ वारी० ॥ १ ॥ स्वदिगं साधु
ते सिद्धं कक्षा, स्त्रीदिगं चंदन बाढा रे ॥ पुरुषदिगे गौतम जाणवा, नपुंसकदिगं गांगेया
रे ॥ वारी० ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुद्ध ते नामि थया, पोतानी मेढं स्वयबुद्ध रे ॥ बुद्ध बोधित
सिद्ध ते उपदेशे, नरतादिक बुद्धबोधि रे ॥ वारी० ॥ ४ ॥ एक जीव ते एक सिद्ध ते,
घणा सिद्धे अनेक रे ॥ इम पंदर त्रेद सिद्धना, वरणव्या सुविवेक रे ॥ वारी० ॥ ५ ॥
जीवादिक नव तत्त्वने, प्राणी सद्वहे जे ज्ञावे रे ॥ ते नर समकित सुरतरु, पामीने शिव
जावे रे ॥ वारी० ॥ ६ ॥ जीव संवर निर्जास मोह, ए चारे होवे अरूपी रे ॥ वंध आ-
श्रव पुण्य पाप जे, एहने कहीये रूपी रे ॥ वारी० ॥ ७ ॥ मिश्र ज्ञावे अजीव ते, वंध आ-
श्रव पुण्य पाप रे ॥ ए चारेने वाडवा, जेहथी वहे प्राणी संताप रे ॥ वारी० ॥ ८ ॥
जीव अजीव वे जाणवा, संवर निर्जास मोह रे ॥ आदरवां ए त्राण तत्त्वने, प्राणी वहे
शिव शर्म रे ॥ वारी० ॥ ९ ॥ काळ अनंत गये जिन मार्गे, सिद्धनी पुजा उद्धास रे ॥
गोदाने अनेतमें ज्ञाने, सिद्ध थया सुविलासे रे ॥ वारी० ॥ १० ॥ ए नव तत्व तणा
गुण गाथा, दिन दिन चढत सवाया रे ॥ श्री विजय हंगर गुरु सुपसाथा, विवेके नित
सुख पाया रे ॥ वारी० ॥ ११ ॥ कलश ॥ जगजंतु तरण छ.ख निवारण, आदि जिनवर
मे श्रुयो ॥ सबत अडार वहेतिरा वर्षे, जविक हित हते ज्ञायो ॥ दमण पूरव विजय
दशमी, आश्विन मास मपक व ॥ सर गजवार म्हा तपने ॥ १५३ ॥

तपणञ्च राजे वडदीवाजे, श्रीविजय दया सुरीसरू ॥ तस चरणं सेवी मुक्ति विजये, त्रिविक
 जन मन सुखकरू ॥ तस शिष्य सुंदर गुण पुरंदर, पंडित मुंगर सुणेंद ए ॥ तस शिष्य
 सेवक त्रणे त्रये, विवेक लहे आणद ए ॥१॥ इति नव तत्व स्तवनं समाप्तम् ॥ ॥अथ
 चोवीश दंडकनुं स्तवन प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ वंदी जिन चोवीशने, तसु त्राषित श्रुत-
 नेद ॥ दंडक पद कही तस शुणुं, अहो त्रवि सुणो जमेद ॥ १ ॥ दाव पहेली ॥ देशी
 त्रटीयाणीनी ॥ सातें नरकें एक, त्रवनपति दस दंभक हो ॥ पुढवी आदि पंच जाणीया,
 विकलेंडीना त्रण ॥ गर्भज तिरियंच ने नर हो, वधंतर जोइस वेमाणीया ॥ १ ॥ दाव
 बीजी ॥ तादरा मेहेला उपर मेह, ऊरुखें बीजली ॥ हो दाव ऊरुखे ॥ ए देशी ॥ जीव
 दंडाए ज्यांहि, दंडक नाम जेहनो ॥ हो दाव ॥ दंडक ॥ सहेपें लवलेश, संग्रह करूं
 तेहनो ॥ हो दाव ॥ संग्रह ॥ नरकादिक चोवीश, दंडक पद जे लहे ॥ हो दाव ॥
 दंडक ॥ दंडाये नही तेह, वाचक ऊदय कहे ॥ हो दाव ॥ वाचक ॥ १ ॥ दाव
 बीजी ॥ गौतम समुद्र कुमार रे ॥ ए देशी ॥ शरीर ने शरीरनुं मान रे, संग्रहण ने संज्ञा,
 संस्थान कपाय देश्या वली ए ॥ इडिय ने समुद्रघात रे, दृष्टि नें दरिसन्न, ज्ञान अने
 योगावली ए ॥ १ ॥ उपयोग ने उपपात रे, चवन स्थिति पर्यापति, आहार ने संज्ञा
 त्रिक ए ॥ गति आगति वेद अटप रे, द्वार चोवीश ए, दंडक प्रत्ये त्रणो त्रवि ए ॥१॥
 द्वार पहेलुं ॥ दाव चोधी ॥ सिद्धचक्र पद वंदो ॥ ए देशी ॥ गर्भज तिर्यंच वाडकायने,
 शरीर कहाा ठे चार ॥ आर्दारिक वैक्रिय तैजस कर्मण, नर ने पांच निरधार रे, श्रोता

द्वार एणी परं जाणो ॥ वीजा सर्वेने त्रण जाणो, आगम मनमां आणो रे ॥ श्रोता०
॥ १ ॥ द्वार वीजुं ॥ दाढ पांचमी ॥ सोरठी चाढमां ॥ वनस्पति विण थावर चार, तनु
जधनोत्कट्ट विचार ॥ अंगुलनो अस्पख्यातमो प्राग, वदे मान एहहुं वीतराग ॥ १ ॥
बीजे पण दंडक बीजे, जधन्य एमज कस्यो जगदीशें ॥ उत्कट्ट कहुं हवे आगें, धनुष
पांचशें नारकी प्रागें ॥ २ ॥ सुरने सात हाथ वलाणुं, जोयण सहस गर्भज तिरिय
जाणुं ॥ वनस्पतिनें जाजेंह, त्रण गाड नर तेंडि चलेहं ॥ ३ ॥ वेंडी चौरिडि वार एक,
जोयण जाणो सुविवेक ॥ देह उंचपणे ए त्रणियो, वैक्रिय सत्रें इम शुणियो ॥ ४ ॥
अंगुलनो अस्पख्यातमो प्राग, प्रांरज समय लक्षो जाग ॥ सुर नरने साधिक लाख,
जोयण नवशें तिरिय सुत्राख ॥ ५ ॥ मूलथी नारकीनें वमणु, अंतर सुहूर्त रहे एम
पत्रणुं ॥ तिरि नरने सुहूर्त चार, देवने एक पक्ष उदार ॥ ६ ॥ दार वीजुं ॥ दाढ ठठी
॥ रह्यो रे आवास छवार ॥ ए देशी ॥ वज्ररूपन नाराच, रूपननाराच रे, नाराच अर्ध
नाराच ठे रे ॥ कितिका ठेवतुं ए सत्रें, जिनवर देवें रे, संघयण ठ नारख्यां अथे रे ॥ ११ ॥
थावर नारकी देव, अस्पंघयणा रे, ठेवता विकर्तेंडिया रे ॥ मतुल्य अने तिर्यंच, ठ संघ-
यणा रे, समय विषे निवेडिया रे ॥ २ ॥ द्वार चोथुं ॥ दाढ सातमी ॥ टुपत्रानु चर्वनें
गई दूती ॥ ए-देशी ॥ चार दश संज्ञा ए सहूनी, आहार त्रय मेशुन परिग्रहनी ॥ क्रोध
मान माया लोभ लोक, उष दशमी संज्ञा शोक ॥ १ ॥ द्वार पाचसुं ॥ दाढ आठमी ॥
सेवा मारुनी देशी ॥ समचतुरस्र क्षेत्र च्यप्रोध निसादिक. वामन कला क्षेत्र दंडक न

कहा ॥ सर्व सुरने हो पहेंडुं होय संस्थान, नर तिर्यंचमां हो सघलां ए लह्यां ॥ ९ ॥
 विकलेंदीनि हो नरकमां हुंडक होय, नानाविध धज हो सूर्द्ध बुब्बु वणसर्द्ध ॥ वाज तेज
 हो अपचउकें ए चार, पुढवी मसुर हो चंदाकरें कही ॥ ९ ॥ ॥ द्वार वटुं ॥ दाव
 नवमी ॥ सिरोइनो सेलो होके ॥ ए देशी ॥ कोध मान माया हो के, वली लोच सूर्वे
 लह्या ॥ दंडक चोवीशे हो के, कषाय ए चार कहा ॥ १ ॥ ॥ द्वार सातसुं ॥ दाव
 दशमी ॥ देखी कामिनी दोय ॥ ए देशी ॥ कृण नीद कापोत तेजो, पद्म शुक्ल कही ॥
 के पद्म ॥ ए व देश्या नर तिर्यंच, गर्भजमां लही ॥ के गर्भ ॥ १ ॥ नारक तेज
 वाज, के विनाद वेमाणीया ॥ के वि ॥ त्रण त्रण देश्यावंत, के नीच उच्च जाणीया ॥ के
 नीच ॥ ९ ॥ ज्योतिषी पांचे माहे, तेजो देश्या वणी ॥ के तेजो ॥ वाकी चउद
 दंडके चार, देश्या सूर्वे त्रणी ॥ के देश्या ॥ ३ ॥ द्वार अठसुं ॥ दाव अगीयारमी ॥
 विंडलीनी देशी ॥ अठसुं श्रिया द्वार ठे, सुगम तेहनो विचार हो ॥ त्रो त्रवि त्रवे
 लहो ॥ जेहने श्रिय होय जेती, तेमज गणी तेजो तेती हो ॥ त्रो त्रवि ॥ १ ॥ द्वार
 नवसुं ॥ दाव बारमी ॥ फलमलनी देशी ॥ वेदना कषाय ने मरण, वैक्रिय तेजस वली
 ॥ आहारक ने केवली सात, ए लहो मननी रली ॥ १ ॥ संझी नरने होय सात, तिरि
 सहु सुर पर्दे ॥ आहारकने केवल वजित, पांच अणम वदे ॥ ९ ॥ नारक वाजमां
 पहेंदां चार, वाकी सात दंडके ॥ वेदनादि पहेंदां त्रण होय, कहां श्रुतमां जिके ॥ ३ ॥
 द्वार दशसुं ॥ दाव तेरमी ॥ प्रजु तारो प्रजु तारो महेर करी सुने जी ॥ ए देशी ॥ विक-

दंडी विकलंडीमाहे दृष्टि वे वदी जी ॥ समकितने समकितने मिथ्यादृष्टि सोय हो ॥ पाच
 शार पाच शार मित्रदिठि कहा जी, वीजा सर्वे वीजा सर्वे त्रिदृष्टि होय हो ॥ विक-
 लेंद्रि ॥ १ ॥ ॥ द्वार अग्नीधारसुं ॥ दाव चौदमी ॥ देशी सुरती महिनानी ॥ पंच
 शार वि तिहंडीने, अचक्षु दर्शन एक ॥ चक्षु अचक्षु चउरिडीने, वे जाणो सुविवेक
 ॥ १ ॥ चक्षु अचक्षु अवाधि, केवल दर्शन चार ॥ नरमां वीजे सर्व दंडके, केवल विण
 त्रण धार ॥ २ ॥ द्वार वारसुं ॥ दाव पंदरमी ॥ कोई सुध दावे दिनानाथनी ॥ ए देशी ॥
 त्रण त्रण सुर तिरि निरयमां, ज्ञान अने अज्ञान ॥ शारमां अज्ञान वे, विकलें द्रो द्रो
 मान ॥ १ ॥ अज्ञान ज्ञान द्यो उवखी, त्रण पंच प्रधान ॥ अनुक्रमें मनुजना कहा ॥
 समजो सावधान ॥ अज्ञान ० ॥ २ ॥ द्वार तेरसुं ॥ दाव शोलमी ॥ शारद बुधदायी
 ॥ ए देशी ॥ सत्य असत्य ने मिश्र, असत्य मृषा संयोग ॥ मन वचनने योगे, आठ
 थया ए योग ॥ वैक्रिय ने आहारक, औदारिक मिश्र सोय ॥ तैजस कर्मण सति, काय
 तणा योग होय ॥ नारक सुर सहुने, अनुक्रमें योग श्यार ॥ तेर तिर्यंचने जाणो,
 नरने पंदर निरधार ॥ विकलंडीने चार वदी, वायुकायने पंच ॥ त्रण शारमां जो जो,
 सिध्दति ए सच ॥ १ ॥ द्वार चौदसुं ॥ दाव सतरमी ॥ सोहमपति जी ॥ ए देशी ॥
 त्रण अज्ञान जी, ज्ञान पाचनी आवदी ॥ चार दर्शन जी, उपयोग वार सहु मदी ॥
 मानवमा जी, वारे लहो मननी रवी ॥ देव तिरियेने जी, नव नारकने कहा वदी ॥
 उषवो ॥ वदी पाच कहा विकलेंद्री माहे, चउरिडीमा वो कहा ॥ पांच शारमां त्रण

प्रकाश्यां, सूत्र मार्गे सहस्रा ॥ १ ॥ ॥ द्वार पनरसुं उपपातनुं ॥ तथा शीलसुं च्यव-
 ननुं ॥ दाल अदरमी ॥ एक अनोपम शीलामण खरी ॥ ए देशी ॥ गर्भज तिरिय,
 विगल सुर नारकी ॥ ॥ असख्य संख्याता, द्यो तमे पारखी ॥ नर संख्याता, असर्धी
 असंख्याता ॥ तेमज थावर, हवे वणसई रयाता ॥ ॥ दाल ॥ वनरपतिमां विख्यात
 जाणो, अनंता उपजे चवे ॥ उपजे जेता चवे तेता, वीजो नेद-नहीं नवे ॥ १ ॥ द्वार
 सतरसुं ॥ दाल अणोणीसमी ॥ कालवानी देशी ॥ पुढवी अप ने वायु, वनरपति माहे
 हो, उत्कृष्ट आद्यु दहो ॥ वरस वावीस ने सात, त्राण दश सहस हो साचुं सहहो ॥ १ ॥
 त्राण दिवस तेजकाय, नर तिरि केरुं हो, त्राण पद्य सारिखो ॥ सुर निरय सागर तेजीश,
 व्यंतर आद्यु हो, पद्य एक पारिखो ॥ २ ॥ साधिक पद्य चंद सर, असुर निकाये हो,
 सागर जाजेरुं ॥ पद्य होये देशण, निश्रय जाणो हो, निकाय नव केरुं ॥ ३ ॥ वेई-
 डियनुं वरस वार, तेंडियनुं दिन हो उगणपञ्चास वे ॥ चजरेडियनुं उ मास, अनुक्रमे
 आद्यु हो, उत्कृष्ट एह वे ॥ ४ ॥ जघन्य आद्यु एक सुहूर्त, पुढवी आदे हो दंडक दशमां
 कह्यो ॥ दस सहस वरस प्रमाण, नवनपति नरके हो, व्यंतर गति दह्यो ॥ ५ ॥ एक
 पद्योपम मान, वैमानिक सुरनुं हो, ज्योतिपीनो जाणजो वली ॥ पद्योपमनो आठमो
 त्राण, आगममाहे हो, कहे एम केवली ॥ ६ ॥ द्वार अदरसुं ॥ दाल वीसमी ॥ वृठा
 दल वादल ॥ ए देशी ॥ आहारनें अरीर इंडिय हो, सासोसास त्रासा मण ॥ सुर नर
 तिरि निरयने हो, ए उ पर्याति गण ॥ १ ॥ पाचे थावरमाहे हो, पर्याति चारे कही ॥

वली पंच पर्यासि हो, विकर्षेदीयमाहे वही ॥ ९ ॥ ॥ द्वार अगणीसमुं ॥ दाव एक-
 वीशमी ॥ रामचंद्रक वाग ॥ ए देगी ॥ पट दिशिनो वे आहार, सघला जतु सदाइ ॥
 लोकने खूणे जीव, पंच चार त्रण दिशि तांड ॥ २ ॥ द्वार वीशसुं ॥ दाव बावीशमी ॥
 राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देगी ॥ हवे संज्ञा त्रण कहेशे रे, दीर्घ कालिकी
 पहेली दीसे ॥ हितोपदेशिकी वीजी रे, दृष्टिवादोपदेशिकी वीजी ॥ २ ॥ देवताना दंडक
 तेर रे, तिर्यंच नारक नहिं फेर ॥ संज्ञा ए पहेली दाखी रे, दीर्घकालिकी सूत्र ठे साखी
 ॥ ९ ॥ विकर्षेदियमां हितोपदेशा रे, संज्ञा रहित थावर अशेषा ॥ नरने पहेली वे त्राखी
 रे, कोर्दकने वीजी पण दाखी ॥ ३ ॥ द्वार एकवीशसुं तथा बावीशसुं ॥ गति आग-
 तिनुं ॥ दाव त्रेवीशमी ॥ धण समरथ पीयु नानमो ॥ ए देगी ॥ पर्यासा पंचेदिय जेह,
 तिर्यंचने मानव मरी तेह ॥ चार निकायमाहे उपजे, सुरनी योनि जाणो ससनेह
 ॥ २ ॥ गति आगति वहेो जीवनी, असंख्याता आजलावंत ॥ पंचेदिय पर्यास, तिरि-
 यंचने नर ए वे तंत ॥ गति ० ॥ ९ ॥ तिम पर्यासा वली, नू जव ने जे तरु प्रत्येक ॥
 अमर मरीने अघतरे, समजो ए पांच पदं सुविवेक ॥ गति ० ॥ ३ ॥ संख्या आशु
 पर्यासा, गर्भज नरने तिर्यंच जेह ॥ साते नरकं उपजे, तिहांधी आवे नर तिरियमां
 तेह ॥ गति ० ॥ ४ ॥ नू जव वणसई योनिमां, नारकीने वर्जी सर्व जीव ॥ आषी
 वणसइना जीव जाय ॥ वली ने दडा दंडक निज के

॥ ६ ॥ तेव वाड तिम वली, पुथिव्यादिक नव दंडकें जंति ॥ दश पदना विगळ्दिय-
 महि, विगळ्दी दश पद उपजंति ॥ गति० ॥ ७ ॥ गर्जज तिरिचंच उपजे, मरी चोवीशे
 दंडकमाय ॥ चोवीश पदना जीव ते, गर्जज मरी तिरिचंच थाय ॥ गति० ॥ ८ ॥ चोवीश
 पदने शिव पदें, मानव मरी सधवे जाय ॥ तेजने वाऊ विना, वावीश पदना मानव
 थाय ॥ गति० ॥ ९ ॥ ॥ द्वार त्रेवीशसुं ॥ दाव चोवीशमी ॥ थां पर वारी ॥ महारा
 साहेवा ॥ ए देशी ॥ गर्जज नर तिरि योनिमा, वेद त्रण वखाण्या ॥ स्त्री पुरुष वेद ते
 देवमां, नव नपुंसक जाण्या ॥ १ ॥ द्वार चोवीशसुं ॥ अटप बहुत्वनुं ॥ दाव पच्चीशमी ॥
 शुं करीयें जो मूलज कुरु ॥ ए देशी ॥ सहु जीवथी थोडा संसारी, पर्याता मानव निर्धारि ॥
 वादर अग्नि वैमानिक देवा, सुवनपति व्यंतर नारक देवा ॥ १ ॥ ज्योतिषी चौरिडी
 पंचेदी तिरिया, वेंदी ते नू जल वाड कहीया ॥ चढते पदे एक एक थकां, असख्य गुणा
 लहो अधिका अधिका ॥ २ ॥ सहुथी वधता वनस्पति जीव, अनंतगुणा जाणो सदीव ॥
 जिनजीयें कहा जाव में जोया, तुम खिज मत विना नव खोया ॥ ३ ॥ दाव तवीशमी ॥
 सुण करुणानिधि हंसदा ॥ ए देशी ॥ एणी परें चोवीश दंडकें, नवमाहे प्राणी नमियो
 रे ॥ अनंत चोवीशी वही गर्ह, पण जिन मारण नवि गमियो रे ॥ धन धन दिन महारे
 आजुनो ॥ मुने त्रिभुवन नायक नूवो रे ॥ श्री जिनजासन पामीथो, आज भेह अमी-
 रस वूवो रे ॥ धन० ॥ १ ॥ सतर एक्याशियें चैत्रमां, वारु वदि ठठ मंगल वार रे ॥
 वीतराग एम विनव्या, सूर्य पुर नगर मोकार रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ श्री वासुपूज्य पसा-

उदे, हीरल सूरि सानिधे रे ॥ वाचक उदय रतन वदे, रुद्रि रुद्रि वाधि सर्व सिद्धे
 रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ राग धन्याश्री ॥ रूपत्र अजित संत्रव अत्रिनदन, सुमति पद्म सुपास
 जी ॥ चंद्रप्रत्र सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य विमल जिन खास जी ॥ अनंत धर्म
 गाति कुशु अर, मद्धि सुनिमुवत नमी नेम जी ॥ पार्श्व वीर चोवीशे प्राणसुं, परम उदय
 लही प्रेम जी ॥ १ ॥ ॥ इति चतुर्विंशति दंडक गत्रित श्री चतुर्विंशति वीतराग
 स्तवन ॥ ढाल सत्यावीश ॥ गाथा चोशत ठे ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ नारकीनुं षट्
 ढालीयु विरच्यते ॥ दूहा ॥ श्री त्रिशला नंदन प्राणमीये ॥ आसन नायक वीर ॥ सिंघारथ
 नुप कुल तिलो ॥ वलवंत साहस धीर ॥ १ ॥ चरण अंगुठे चांपीयो, जेणे मेरु गिरींद
 ॥ सवि सुर संशय उपनो, जाण्या त्रिभुवन चद ॥ २ ॥ बाल लीला सुख जोगवी, पठे
 लीइ संजमचार ॥ केवल ज्ञान पामी करी, करे त्रिकिनें उपकार ॥ ३ ॥ समवसरण
 वेसी करी, गौतम आगल वीर ॥ नरक तणां डःख वर्णवे, सात्रदे वीर वजीर ॥ ४ ॥
 विविध प्रकारनी वेदना, सहेता नारकजीव ॥ सात्रलतां हियो थरहरे, त्रांखे शासन वीर
 ॥ ५ ॥ ढाल ॥ १ ॥ त्रिपदीनी ठे ॥ पहेली नरके जाण रे, सागर एकनो, आयु त्रांखे
 वीरजी ए ॥ १ ॥ वीजी नरके जोय रे, सागर त्रणनुं, आयु एटहुं जाणीये ए ॥ २ ॥
 सागर सातनो आयु रे, त्रीजीये कह्यो ॥ केवली वचन ते सहहो ए ॥ ३ ॥ वदे दुस
 सागर जाण रे ॥ गुणवत सात्रलो ॥ एह वचन जिन वीरनां ए ॥ ४ ॥ गणधर त्रांखे
 तास रे ॥ पाचमी नरकनो ॥ सत्तर सागर आउखो ए ॥ ५ ॥ ठजी नरके गुणवंत रे ॥

सागर बावीसनो ॥ एणी परे गुरुमुखे सांत्रल्यो ए ॥ ६ ॥ सांतमीधे जाणे संत रे ॥
सागर तेवीसनो ॥ आयु वीरजी प्ररुपता ए ॥ ७ ॥ ए साते नरके आयु रे ॥ जाणो
शाखथी ॥ नरक वेदन अति आकरी ए ॥ ८ ॥ कहे सुक्ति वीर जिणंद रे ॥ किम मसे
वेदना ॥ धर्मे सुक्ति जस वहे ए ॥ ९ ॥ दूहा ॥ रत्नप्रना पहेवी कही, सकरप्रना तुं
जाण ॥ बाहुकप्रना वीजी सुणी, सांत्रलो चतुर सुजाण ॥ १ ॥ चौथी पंकप्रना सुणो,
धूमप्रना पांचमी जाण ॥ तमः प्रना ठठी कही, तमतमा सातमी माण ॥ २ ॥ ढाव
वीजी ॥ मनडुं ते साहरु भोकडुं ॥ ए देखी ॥ काल अनंती वेदना ॥ गुणवंता जी रे ॥
घणुं शुं नाखुं एह ॥ सुगुण जन सांत्रलो ॥ गुणवंता जी रे ॥ शौर वकोर नारकी करे
॥ गुण ० ॥ केवली जाण तेह ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ १ ॥ पंवार वेदना देवता ॥ गु ० ॥ वेदना
उपजावे प्रचंड ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ खंडो खंड ते प्राणना ॥ गु ० ॥ उपरे सुजर दड ॥ सु ०
॥ गु ० ॥ २ ॥ एहवा शब्द कुण सांत्रले ॥ गु ० ॥ एक सांत्रले श्री जिनराज ॥ सु ० ॥
गु ० ॥ पाप करीने प्राणीयो ॥ गु ० ॥ जइ वसे नारकी पांत ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ ३ ॥ कर्कश
नापा वोवता ॥ गु ० ॥ वर्ण कुवर्ण जाण ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ मांहोमाहे सांत्रले ॥ गु ० ॥
सहे वली डःखनी खाण ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ ४ ॥ शीतल जोनिधे उपजे ॥ गु ० ॥ रहेता
तिणेज ठाम ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ रधिरमां खुंच्या बापडा ॥ गु ० ॥ वे तस घोर अंधार
॥ सु ० ॥ गुण ० ॥ ५ ॥ कीच नक्षण करे नारकी ॥ गु ० ॥ घणां नरकमां डःख ॥ सु ०
॥ गु ० ॥ मननी वात मनमां रहे ॥ गु ० ॥ परवदा नारकी जीव ॥ सु ० ॥ गु ० ॥ ६ ॥

दिश नवि सूजे तेहनें ॥ गु० ॥ परमाधामी ऊना जेह ॥ सु० ॥ गु० ॥ नाशीनें जाये
 किहा ॥ गु० ॥ एहवो धानक नही जेह ॥ सु० ॥ गु० ॥ ७ ॥ सात्रली हैडा कमकमे
 ॥ गु० ॥ एहवां नारकी डःख ॥ सु० ॥ गु० ॥ जीव जनमारे प्राणियो ॥ गु० ॥ किम
 लहे सुकिना सुख ॥ सु० ॥ गु० ॥ ८ ॥ दुहा ॥ दश प्रकारनी वेदना ॥ सहता नारकी
 जीव ॥ अन्योअन्यें कूकता, सहता डःख सदैव ॥ १ ॥ अशुन्रवधन अशुन्रगति ॥
 अशुन्र संस्थान ते हुंड ॥ वेदन अशुन्र वर्ण ते ॥ सहता डःख प्रचड ॥ २ ॥ अशुन्र
 गंध ते जाणवो, अशुन्र रस वली जोय ॥ मातो फरसवजी कह्यो, मातो अगुरु लखु
 ते होय ॥ ३ ॥ मातो शब्द वली लह्यो ॥ ए वेदन दर्शें प्रकार ॥ त्रैलोक्यदीपकशी
 जाणजो, चांखी सूत्र मऊर ॥ ४ ॥ टाल ॥ ३ ॥ मनडो अडे रह्यो अत्रिमानें ॥ ए
 देशी ॥ साते नरकमां जाणे, वेदन श्री वीर वखाणे रे ॥ मारा नरकतणा डख सुणजो
 ॥ ए आंकणी ॥ नहीं सूरज नहीं चदा ॥ नहीं पाणी न पवन प्रचडा रे ॥ १ ॥ मारा०
 ॥ न० ॥ महा घोर अथकार, धानक पण नहि सार रे ॥ मारा० ॥ वीहामणी योमी
 जाणो ॥ तस फरस खांडा धार रे ॥ मारा० ॥ २ ॥ सातें नरके जाणो, तस वेदन कही
 नवि जावे रे ॥ मारा० ॥ माहाक्रोध धरीनें तिहां, दृष्टियार धरीनें आवे रे ॥ मारा० ॥
 ॥ ३ ॥ कातरणीयें करी देह, एम चुरण करता तेह रे ॥ मारा० ॥ महा रौरव शब्द ते
 जाणो ॥ केवली जाणे तेह रे ॥ मारा० ॥ ४ ॥ परमाधामी पचावे, वली डंधे मस्तके
 अंगे रे ॥ मारा० ॥ देहने कृणमा मरोडे. वली तेहनी पंजे होडे रे ॥ मारा० ॥ ५ ॥

वैतरणी नदीमा देह आवे, वली पाणीसां ऊवकावे रे ॥ मारा० ॥ ए कर्म तणा विपाक ॥
 माहो माहे मली जावे रे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ करे कोहाना राखे, वली वचन विहांमणां त्रांखे
 रे ॥ मारा० ॥ वेदून जेदून करता, वली पापनी रासें बधता रे ॥ मारा० ॥ ७ ॥ समदीने
 रूपें आवे ॥ वली वायस रूप सोहावे रे ॥ मारा० ॥ वाघ सिंहनां रूपज करता, थई
 चित्ता रूपें ताडुकता रे ॥ मारा० ॥ ८ ॥ एम अनेक हिंसारि जीव, एम परमाधामी रूप
 रे ॥ मारा० ॥ वीर त्रांखे पत्रे जेदें, कहे सुक्ति धर्मथी सुख वेदे रे ॥ मारा० ॥ ९ ॥ दूहा ॥ इम
 दश प्रकारनी वेदना, कही नरकें जिनराय ॥ शीत जळणी वेदना, केवलीयें कही न जाय
 ॥ १ ॥ जुख तपा तस वेदना, खरज वेदना अत्यंत ॥ परवशता ज्वर तापणुं, दाघ ज्वर
 पामे अनत ॥ २ ॥ त्रय शोक तेहनें वणो, इम ते नारकी जाण ॥ वीरजिन इणी परें
 त्रांखता, सुणता गोयम स्थाम ॥ ३ ॥ टाव ॥ ४ ॥ हो सुण सहिवजी परमात्म पूजानुं
 फल सुज आपो ॥ ए देशी ॥ हे सुणो गौतमजी ॥ वीर पर्ये नरकनां डखनी वारता ॥
 परनरीतणी संगत जे करता, वली पाप थकी प्राणी नवी डरता ॥ जमरायनी डांका
 नवी धरता ॥ १ ॥ सुणो श्रोताजी नरकनां डख सांजवतां हैडां थरहरे ॥ हो सुणवं-
 ताजी वीरतणी वाणी सांजवतां धर्म खजानो ते तरे ॥ ए आंकणी ॥ दोह तणी
 पूतली तपावे वे, अति अक्षि मय करावे वे ॥ तस आदिंगन तेह करावे वे ॥ सु० ॥
 हो सुण० ॥ २ ॥ पांचसं जोयण उंचा जवावे वे, तेहनें ते नूद पवावे वे, फरी तेहनी
 देह ते वावे वे ॥ सु० ॥ हो सुण० ॥ ३ ॥ थानने रूपें करडे वे, जादी नारकी अंग

ते मरडे थे, वली तेहनी वांसे ते दीडे थे ॥ सु० ॥ हो गुण० ॥ ४ ॥ मृगवां जिम
 पासमां पारुं थे, वली करवते करी फाडे थे, एम उंचा पकडी जमारे थे ॥ सु० ॥ हो
 गुण० ॥ ५ ॥ वली तस झूली आरोपे थे, वली कान नाक तस कापे थे, विरुआ तस
 तेहनां विपके थे ॥ सु० ॥ हो गुण० ॥ ६ ॥ वली ताता तेलमां घावेंते, आसडमां
 तेहने वावेंते, वली खाल जतारी जावेंते ॥ सु० ॥ हो गुण० ॥ ७ ॥ आसिष तस
 आहार करावे थे, एम नारकी डखने पावे थे, बहु शब्द करतां काद गमावे थे ॥ सु० ॥
 हो गुण० ॥ ८ ॥ वली तनुमां खार मेलावे थे, परमाधामी डख देखवावे थे, प्रजु वीर
 वाणीयें शीतल थावे थे ॥ सु० ॥ हो गुण० ॥ ९ ॥ दूहा ॥ जूमिं ते तिहां आकरी, वन
 जेशी तल जाण ॥ आवी वेंसे तरु वांहडी, पडतां जाले प्राण ॥ १ ॥ विरुआ विपय
 विलास तस, सुख थोडो डख बहु जाण ॥ नरक तणां डख सांचवो ॥ जांखे वीर वर्द्ध-
 मान ॥ २ ॥ ढाल ॥ ५ ॥ सुनें सप्रव जिनशुं प्रीत ॥ ए देशी ॥ कुंजीमां करता पाक,
 देह ते जाणो रे ॥ तेल घाणीमा तेह, घावें जमराणो रे ॥ १ ॥ महेर न आवे तास,
 गल प्रही जाले रे ॥ रस काडे तस तंतुथी, वली वली वावें रे ॥ २ ॥ नावा जाए तेह,
 मन प्रयत्रांते रे ॥ परमाधामी तेह, जाले एकांते रे ॥ ३ ॥ आली परोवे जेह, दांतमा
 लेंवे रे ॥ वली मारी करे शत खंड, घणु डख देवे रे ॥ ४ ॥ फिरि फिरि लागे पाय,
 वेदना सहेता रे ॥ एम काल अनंतो त्याहे, सहे डख मरता रे ॥ ५ ॥ हवे तो सहिया
 न जाय, नारकी डखटा रे ॥ कोय न पुठे सार. नारकी मगधरं रे ॥ ६ ॥

तस क्रोध, अशरण मरता रे ॥ परमाधामी जेह, बहु छल देता रे ॥ ७ ॥ सांजवी अर
 हर देह, थारें प्राणी रे ॥ कहे सुक्ति महाराज, कहे प्रभु नाणी रे ॥ ८ ॥ ॥ दूहा ॥
 ॥ पाप कर्म कीथा थाणां, बहु जीव सहार ॥ पीडा न जाणी परतणी, जीवडा वडो
 गमार ॥ १ ॥ अतीक वचन सुख सांखीयां, परका चोर्यां माव ॥ सेवि परनार निःशंक-
 पणे, अरज कीथा अपार ॥ २ ॥ बहु परिग्रह भेदव्यो, निशि योजन अंधार ॥ बहु
 जीव विणारया तिरा कणे, अत्रक्ष अथाणानो नहिं पार, कजोवमां रास ते जेववी ॥
 जभ्यो आहार निशक, लाव जोगें बहु जीवडा ॥ उपजे ते न देखंत ॥ ४ ॥ अलगी
 थार्द नार तस, अत्रडवेट निवार ॥ ताणणे प्रगट पाठ ए, जाणो तमे निर्धार ॥ ५ ॥
 दाव ॥ ६ ॥ वीसरामी रे ॥ ए देशी ॥ मात पिता गुरु ओवव्या, गुण रागी रे ॥ कीथां
 क्रोध अपार ॥ सुणो तुमे रागी रे ॥ मन माया दोनथी ॥ गुण ॥ बुद्धि रही नहिं काई
 ॥ सुण ॥ १ ॥ नरक तणां जे वारणां ॥ गुण ॥ पापे उधाड्यां तेह ॥ सुण ॥ एम परमा-
 धामीनी वेदना ॥ गुण ॥ सखी कटी वज्र ॥ सुण ॥ २ ॥ जदेरी जदेरी देहनें ॥ गुण ॥ पठे
 पळडे तेह ॥ सुण ॥ तरस वर्यो कसी तेहने ॥ गुण ॥ उकादि कथीर ते पाय ॥ सुण ॥
 ॥ ३ ॥ सुखमां नांखे तेहनें ॥ गुण ॥ करे वेदन वली ताम ॥ सुण ॥ बहु कीडा पडे देहमां
 ॥ गुण ॥ वली अपा करे शत खंड ॥ सुण ॥ ४ ॥ निश्रियोजन तस वारणुं ॥ गुण ॥
 जाणो पाप अखंड ॥ सुण ॥ जतो ने अति आकरो ॥ गुणवता रे ॥ नीर आणे प्रचंड
 ॥ सुण ॥ ५ ॥ ते धावे निज आवमा ॥ गुण ॥ श्रवणमां जरे कथीर ॥ सुण ॥ सदा

कावा वीहामणा ॥ गु० ॥ महा वीरत्स चित धार ॥ सु० ॥ ६ ॥ दिन दयामणां जाणवा
 ॥ गु० ॥ नरकना जीव अतीव ॥ सु० ॥ वीर जिणंद एम देसना ॥ गु० ॥ सुणे ते
 सुक्ति वर कत ॥ सु० ॥ ७ ॥ ॥ दूहा ॥ नरकतणां डख सांजवी, कपे तास शरीर ॥
 तव गोयम ते इम कहे, सांजव गुण गंजीर ॥ २ ॥ प्रभुचरणे शिर नामीने, पूवे गौतम
 न्यामि ॥ अंतरयामी माहरा, सरस कह्यो संबंध ॥ १ ॥ ए वेदना में बहु सही, वसियो
 काव अनंत ॥ कोइक पुण्य कह्योवथी, मुज मल्या जगवंत ॥ ३ ॥ पंच महाव्रत जे धरे,
 पाले पंचाचार ॥ पांच सुमति जे आदरे, ते लहेशे जवनो पार ॥ ४ ॥ ॥ दाव ॥
 ॥ ७ ॥ आसणरा रे योगी ॥ ए देशी ॥ एणीपरं बहु वेदना अही आसी ॥ हवे आव्यो
 वरणे निवासी रे ॥ वीरजी गुणवंता ॥ वसतां नरक मांहे जिन राज, गयो काव अनंत
 महाराज रे ॥ १ ॥ वी० ॥ इानी विना कृण जाणे प्राणी, कहेतां नावे पार रे ॥ सु०
 संजम रागी ॥ दश दष्टते दोहिवो ज्ञांत्यो ॥ नरजव पुण्य संयोगे रे ॥ सु० ॥ १ ॥
 सुधा सजमनो खप करयो, टावी विषय विकार रे ॥ सु० ॥ पांचे इदीने वश करयो, तो
 शिवरमणीने वरयो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ निचा विकथा दूर निवारो, श्रीजिन धर्म चित धारो
 रे ॥ सु० ॥ समकितरव हैड धारो, तो नरकतणां डख वारो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ज्ञांजे
 सर्वे मिथ्या ज्ञरम, एहवो जिनशासन धर्म रे ॥ सु० ॥ श्रीचिंतामण चरण पसार्ये,
 संकट विकट ते जाए रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जुजपुर सहरे गुरुनी महरे, कर्षो चोमास
 उह्यास रे ॥ सु० ॥ संवत् अगणीस सतवातेरा वरस ॥ पोख तणी ज्ञाट उजामे रे

॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री अंचल गङ्गे पूज्य पटोदर ॥ श्री गुण्यसिधु सूरिरायां रे ॥ सु० ॥
 संघनी साखे मित्रामि डक्कडं, दोज्यो अधिक सावया रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ जे कोई चणयो
 श्रवणें सांजलशे, तस घर मंगल माव रे ॥ सु० ॥ नरकतणां डख वीरे चांख्यां, वीर
 वचन रस चाख्यां रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कहे मुक्ति कमला तस वरज्यो, सदहज्यो वीरनी
 वाणी रे ॥ सु० ॥ मिथ्यात परमाद तजो सवी चाई, जिन आणा चित लाई रे ॥ सु०
 ॥ ९ ॥ ॥ इति श्री नारकीनो षट ढावीठि संपूर्णें ॥ अथ श्री दया उत्रीशी प्रारंभः ॥
 दोहेरा वंदं ॥ चरण कमल गुरु देवके, सुरत्री परम सुरंग ॥ दुग्ध्यो रहत सदा तिहां,
 चिदानंद मन नृगं ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष चितामणी, देवहु प्रत्यक्ष जोय ॥ सतगुरु सम
 ससारमे, उषकारी नही कोय ॥ २ ॥ सुरतरु चितामणि रत्न, वांछित फलके हेत ॥ नि-
 वांणि फल गुरु विना, बीजो कोज न देत ॥ ३ ॥ रसना एक करी कहे, गुरुमहिमा
 केम थाय ॥ शेषनाग मुख सहसथी, वर्णन करत लजाय ॥ ४ ॥ गुण उत्रीशी करी सदा,
 शोभत हे गुरु देव ॥ प्रोत्रविषण कीजे सुमन, त्रिकर्ण तिनकी सेव ॥ ५ ॥ प्रीत करो
 गुरुकी सदा, धरि हैडे आणंद ॥ मगन चकोरी चित्तमें, होत निरख तिम चंद ॥ ६ ॥
 घन गरजारव सांजली, मगन होत जिम मोर ॥ तिम सदगुरु वाणी सुणी, सुख जप-
 जत चिज ओर ॥ ७ ॥ गुरु किरपा करि कहतहुं, दया उतीसी रुप ॥ दयाधर्म संसा-
 रमें, साधन परम अदुप ॥ ८ ॥ दया धर्मको मूल हे, दया मूल जिन आण ॥ आण
 मूल विनयें कह्यो, ते सिधतें जाण ॥ ९ ॥ वंदं सोरवा ॥ सादवाद जिनवाण, हिरि-

दामां हि विचारके ॥ करो न मन मत ताण, एही सार सिद्धातको ॥ १० ॥ पूजा करतां
 कोए, कहजु हिंसा होत हे ॥ प्रगट मिथ्याति सोए, तत्व त्रेद तेणे नवि वह्यो ॥ ११ ॥
 कूप खणन दृष्टात, प्रज्वाहु स्वामी कह्यो ॥ तहहुं तांकु प्रांत, नाहि मिटे तो मांति
 मिटो ॥ १२ ॥ पूजामां हे सरूप, हिंसाकी गणती नाहिं ॥ एम दख तत्व अत्रुप, अंका
 नवि चित्त आणजे ॥ १३ ॥ सर्वथा एकत्रीसा ॥ सर्वथा जीव हिंसा, त्यागको विरत
 ग्रही ॥ नदीया उतरता, वियाधक जाणीए ॥ नारिको संघट्टो नांदि, करे तोज साधवीकुं ॥
 पाणीमां हि बुडतां जों, बाही ग्रहि ताणीए ॥ कारण विशेष त्रेख, त्याग तोज सुनिराज ॥
 अंग तिजे ताहुकुं, आराधक वखाणीये ॥ आणाहुमे दया, नाहिं अ्योर तोर कहुं ॥
 एसो जाण प्यारे जु, कुमत नाहिं ठाणीए ॥ १४ ॥ देव जिनराज केरी, सेव जिनराज
 सम ॥ रायपसेणीमां ज्युं, प्रगट वताइये ॥ प्रभवती मां हि जिन, चैत्यकी सरण कहि,
 केतोहिक अधिकार कवेकु जववाइ हे ॥ एसो अधिकार तोर, तोर तोहु नाहिं माने ॥
 तेतो सठ केरो चित्त, कुमति जुठाइ हे ॥ कुमति कुं दूर करी, सुमतिसु नेह धरे ॥
 चिदानंद प्यारं एम, बहु सुख पाइ हे ॥ १५ ॥ समकिति देव तिहु, करे जिन विंव सेव ॥
 एका प्रोवतारि इंद्र, धितिसु नमतु हे ॥ हियाए सुहाएवी, मानि सेवादि बहुविध ॥
 पुजाफल कहे जिन, दीयते गमतु हे ॥ विद्या जंघाचारण जु, जात रुचकादि दीप ॥
 वांदि जिनचैत्य चित्त, मोदकु समतु हे ॥ जिनविब महरूप, महको आकार देख ॥ संगी
 ज्ञान पायते, मिथ्यातकु वमतु हे ॥ १६ ॥ दयाहुमे धरम, धरमहुमे दवाप्राव ॥ दया

झरु धरम ज्युं, त्रिभ्र नांहि जाणीए ॥ वेठके सत्रामें मित, धार गुरुगम रीत ॥ परम
 पुनित दया, धरम वखाणीयें ॥ एतो हे सिशंत सार, कोटी ग्रंथको विचार ॥ हिरदेमां
 धार पर, तीत गाढी टाणीए ॥ यतिं पर प्राण निज, प्राणके समान जाण ॥ चिदानंद
 प्यारे चित, दया नाव आणीए ॥ १७ ॥ उपजे ज्युं सिध आंए, जिव कोज विख खायें ॥
 अचवे चवे सुमेरु, एहु व्यत मानिए ॥ जवट न्यु धरणी या, काम नास होए तोहुं ॥
 हिंसाके करत धर्म कबहु न मानिए ॥ वतावे हिंसामें धर्म, बांधे वन घातिकर्म ॥ हिंसामें
 प्रगट प्यारे, पाप पएजानिए ॥ याते पर प्राणी निज, प्राणके समान जाण ॥ चिदानंद
 प्यारा चित, दयानाव आणीए ॥ १८ ॥ दयाके दोए नेव, इतर ज्युं कहियो देव ॥
 सोतो नेव सतगुरु, किरपायी पाइए ॥ ताते सतगुरु सेव, कीजीए सुनित मेव ॥ धार
 एशी देव प्रेम, परम लगाइए ॥ सोतो देव धर्म गुरु, घटमें निकट तेरे ॥ ताकुं खोजवेंकु
 तेरे, ओर काहां जाइए ॥ तिहु तत्व एक जोए, डवभ्यान धरें कोज ॥ जोतरुप होए
 सुध, जोतमां समाइयें ॥ १९ ॥ ॥ सर्वैया एकजीसा ॥ दयाके समान जग साधनां न
 आन जान, दयाहु प्रधान जग सतहु कहतुं हे ॥ जीवदया काज . सहु त्याग राजको
 ससाज, देव जिनराज पंच व्रत ज्युं गहतु हे ॥ प्रवल प्रचंड धोर बावीसा परिसा चोर,
 तिनहुको त्रास वदी चांतसु सहतु हे ॥ वाड जग जाव निज सकति संजावतें तो,
 चिदानंद प्यारे सिव रमणीकुं वहतु हे ॥ २० ॥ अत्रय प्रधान दान कह्यो जगत्राण ते
 तो, एसो निको ज्ञान मुनिराज धर पाइए ॥ मुनिपद धारे सुसंचारे आपाआप ते तो,

करुणाको सागर सिन्धत माहे गाइए ॥ तिनके पदारविंद पूजतें शुरिदाविंद, आनंदके
 कद ते तो निसदिन ध्याइए ॥ तिनहुको ध्यान धर उत्तम विवेक वरी, चिदानंद आप
 रूप आपसे समाइए ॥ ११ ॥ दया दयात्रांखे विण राखे नहिं विवेक दइए, ते तो
 नर प्रगट पशु समान कह्या हें ॥ पावे ना विवेक जोलों, सिजे नहीं काज तोलों ॥ दया-
 रूप धर्म तो विवेक माहिं रह्यो हे ॥ जाके हिरिदे विवेक सोइ ज्ञान अतिरेक, तिनहु
 सुतत्वका सरूप साचा दया हे ॥ तत्व सरूप दिन जाणे पक्षपात ताण, ते तो माहा
 मोहरूप नदीधामे वह्या हे ॥ १२ ॥ पढ्यो तुं तो वेद पण जाण्यो नहिं साचो त्रेद,
 देवमें अहिंसा रूप परम धर्म कथा हे ॥ लक्ष अहिंसा जु ए ता ए हे धर्म केरो, तेहुतो
 वचन प्रागवतमाहिं रह्यो हे ॥ जग्य जो वतायो ते तो प्रावरूप जाण्यो नहिं ॥ तुं तो
 पशुघातको जु गाढो पक्ष गह्यो हे ॥ तत्व सरूप विन जाणे पक्षपात ताणें, ते तो माहा
 मोहरूप नदीधामे वह्यो हे ॥ १३ ॥ सवैया वजीसा ॥ ॥ आरज केव लहे कुल
 उत्तम जोग सदा सत संवत केरो ॥ दीरघ आधु अरोग दसा सुख रीधी पवार भिंदे
 जु घनेरो ॥ कीरत होए विद्वान दहुदस वेग भिंदे त्रव त्राव विपेरो ॥ या विध होए
 माहा फल जाकु जु एसी दयामे वस्यो मन मेरो ॥ १४ ॥ इंद निरंद करे एम सेव
 सुं जे अहे को उदामीक केरो ॥ अष्ट माहा सिद्धि निधि विराजत, तेज प्रताप चढे जु
 घनेरो ॥ प्रगटे ज्ञान रवि घट अंतर, होए मिथ्यात्व चिद्रस अंधेरो ॥ या विधि होए
 माहा फल जाकु जु, एसी दयामे वस्यो मन मेरो ॥ १५ ॥ कोड अज्ञान करे द्विव

साधन जाण विना बहु जीव सतावे ॥ उरध बाहु अधोमुख ऊवत जार हुतासन अंग
 जरावे ॥ कोड करे फल फल को नरक्षण, अणुगल पाणीमां निन्हावे ॥ करणी कर-
 णान्नाव विनिकर, ब्रह्म सरुपताने कहो कीम पावे ॥ १६ ॥ आप समान देखे सहु
 जीवकुं, पीडा नहिं परकु उपजावे ॥ समधाता धारते ममता ज्ञान सरोवरमें नित नाहावे ॥
 अल्प आहार करे निरदूषण जोग हुताशन श्रुटन तावे ॥ करणी करुण नाव एम
 करे ब्रह्म सरुप कहा विध पावे ॥ १७ ॥ थावर जंगम जीव चराचर ब्रह्म सरुप वेदांत
 वयाणे ॥ व्यापक रुप सेवे घट अंतर एसो विवेक हिये निज आणे ॥ त्याग विरोध
 निरोध करे मन धार खीमा पर पीड पीडाणे ॥ या विध पुरण ब्रह्म आराधन पूरण ब्रह्म
 कृपाको जाणे ॥ १८ ॥ धारके त्रेष विवेक विना सठ नाहक लोगनकुं नरमावे ॥ जीवके
 घातमें धर्म अह उह पापको कारण कहावे ॥ देखो माहा परपंच जु मोहको एसो
 विवेक द्रष्टर नवि आवे ॥ नांहि डरे करतो अघ ते नर सुधो रसातलकुं चढ्यो जावे
 ॥ १९ ॥ आरंभके करतां हिरदें दया नांहि रहे जवलेष पीयारे ॥ हृदय विचारकुं धार
 हिए सुनिराज नए जग जालसु न्यारे ॥ अंतर जोत जगी घट जाकुं सु ताकुं तो लोक
 देखावे सुक्यारे ॥ कारज सिध त्रया तिनका जिन अंतर मुंड मुंडाए तीया हें ॥ ३० ॥
 ॥ सर्वेया एकत्रीया ॥ जैसे कोड रुधिरको रंगयो ज्युं मधलीन पट ॥ रुधिरको धोज
 कज उजलो न होत हे ॥ तेसे हिंसा करणीधी पाप दूर कीया चाहें, ते तो सठ कृत
 माहा मोह मिथ्यातो होत हे ॥ निरमल नीरमे पखावत मलिन चीर, सुरुप देखपरें

जेसो जाको पोत हे ॥ ३१ ॥ कचन सुमेर सज तूमिदान देवे एक, एक जु एकको जजी-
 वचकुचायो हे ॥ कनक सुमेर महिदानथी बहूत वीधू, जीवदया अधीको पुराणनमं
 गायो हे ॥ इण विध नाव जाण हिरदं विवेक आण, याते यामें मेरो मन अधिको
 दोनायो हे ॥ सुख भेद वशु जो बखाणे ते तो साचो भेद सतगुरु किरणथी पायो हे ॥
 ॥ ३२ ॥ सहु जीव जीवकेही इजा मन मांहे राखे ॥ मखुं अनीष्ट सहु प्राणीकु लगतु हे ॥
 सो जु अकाल महा डरको समाज सुढ जिन मोह वस अधिकु पगतु हे ॥ पाव जु
 नरक ड.ख सुत्र काजथी सिमुख हिसाके करत अति क्रोध ज्यु जगतु हे ॥ यातें आत-
 मारथी पुरस एसे काजसेंथी दाख गाड प्रथमहि डर ज्युं नजतु हे ॥ ३३ ॥ दया रुप
 तरुणी विवेक वाजामें डवेध सुतपरुपे वेवट लगार्हये ॥ पावे शुत्र ध्यान मताणके
 तयार कीजे शुत्र परिखाण केरी तोष ज्युं दगार्हए ॥ चिदानंद प्यारे एरी नावमें सवार
 होए, मोहमय सरिताकु वेग पार पाइये ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥ सर पूर्ण निधि चडमा,
 संवहर सुखकार ॥ गौतम केवल ज्ञानको, मास दिवस चित धार ॥ ३५ ॥ ज्ञावनगर
 जेथ्यो सही, श्री गवडी प्रभु पास ॥ चिदानंद तस कृपाथी, सकल फली मन आश
 ॥ ३६ ॥ इति श्री माहाराज श्री कपूरचंदजी कृत दयावतीश्री संपूर्ण ॥ ॥ अथ क्रमा
 वतीश्री प्रारंभ ॥ ॥ आदर जीव क्रमागुण आदर, म करीज राग ने द्वेष जी ॥
 समतापे शिव सुख पामीजे, क्रोधे कुगति विरोप जी ॥ आदर ० ॥ १ ॥ समता संजम
 सार सुणीजे, कल्पसूत्रनी साख जी ॥ क्रोध पूर्व कोडि चारित्र बाळे, जगवंत एणी परे

ज्ञाख जी ॥ आदर ० ॥ १ ॥ कृण कृण जीव तयां उपशमथी, सात्रव तुं हट्टांत जी ॥
 कृण कृण जीव प्रभ्या प्रवमद्वि, क्रोध तणे विरतंत जी ॥ आदर ० ॥ ३ ॥ सोमिव
 ससरे शीज प्रजादयुं, बांधी माटीनी पाव जी ॥ गजसुकुमाव क्रमा मन धरतो, सुगति
 गयो तत्काव जी ॥ आदर ० ॥ ४ ॥ कुववाद्युओ साधु कदातो, कीधो क्रोध अपर जी ॥
 कोणिकनी गणिका वरा पडियो, रडवडीयो संसार जी ॥ आदर ० ॥ ५ ॥ सोवनकार
 करी अति वेदन, व्याधशुं वीद्युं शीशजी ॥ मेतारज ऋषि सुगतें पोहोतो, उपशम एह
 जगीश जी ॥ आदर ० ॥ ६ ॥ कुरुड अकुरुड वे साधु कदाता, रह्या कृणावा खाव जी ॥
 क्रोध करी कुगतें ते पदोता, जनम गमायो आवा जी ॥ आदर ० ॥ ७ ॥ कर्म स्वपावी
 सुगतें पदोता, खंधक सुरिना शिष्य जी ॥ पावक पापीयें घाणी पीड्या, नाणी मनमां
 रीस जी ॥ आदर ० ॥ ८ ॥ अलंकारी नारी अहुंकी, ओज्यो पीयुशुं नेह जी ॥ वव्व-
 रकुव सहां डःख बहुवां, क्रोध तणां फल एह जी ॥ आदर ० ॥ ९ ॥ वाधणे सर्व
 शरीर वदुयुं, तद्वरण ओज्या प्राण जी ॥ साधु सुकोशाव शिवसुख पान्या, एह क्रमा
 गुण जाण जी ॥ आदर ० ॥ १० ॥ कोण चंडाव कहीजें विहुमें, निरती नदी कहे देव जी ॥
 ऋषि चंडाव कहीजें वदतो, टावो वेदनी देव जी ॥ आदर ० ॥ ११ ॥ सातमी नरक
 गयो ते ब्रह्मदत्त, काढी ब्राह्मण आंख जी ॥ क्रोध तणां फल कडवां जाणी, राण द्वेष
 यो नांख जी ॥ आदर ० ॥ १२ ॥ खंधकऋषिनी खाव उतारी, स सह्यो परिसह जेण
 जी ॥ गर्जावासना डवथी बूढ्यो, सवल क्रमा गुण तेण जी ॥ आदर ० ॥ १३ ॥ क्रोध

करी स्वधक आचारज, दुर्ज अश्रिकुमार जी ॥ टंडक नृपनो देव प्रजाद्यो, नमत्रो नवह
 मज्जर जी ॥ आ० ॥ १४ ॥ चंड रोड आचारिज चलता, मरनक दीध प्रहार जी ॥
 द्रमा करंतो केवल पाम्यो, नव दीक्षित अणगार जी ॥ आदर० ॥ १५ ॥ पाच वार
 नं सनाप्यो, आणी मनमां देप जी ॥ पच नव सीम दह्यो नंदनादिक, क्रोध तणा
 देख जी ॥ आदर० ॥ १६ ॥ सागर चंदनु श्रीज प्रजात्वी, निशि नत्रसेन नरिद
 ॥ समता नाव धरी सुरलोकं, पदोंतो परमानंद जी ॥ आदर० ॥ १७ ॥ चंदना
 वणु निचंठी, धिग् धिग् तुज आचार जी ॥ मृगावती केवल सिरि पामी, एह
 ाकार जी ॥ आदर० ॥ १८ ॥ सांव प्रयुझ कुमारें संताप्यो, कृष्ण हंपायन
 । क्रोध करी तपतुं फल हार्यो, कीधो कारिका दाह जी ॥ आदर० ॥ १९ ॥
 ारण मूठी उपाही, बाह्रवल वलवत जी ॥ उपजस रस मनमोहे आणी, संजम
 मतिमंत जी ॥ आदर० ॥ २० ॥ काजसगमां चमीयो अति क्रोधें, प्रसनचंद श्वि-
 र जी ॥ सातमी नरक तणां डख मेढ्यां, कडुआं तेण कपाय जी ॥ आदर० ॥ २१ ॥
 हारमोहे क्रोधें रूपि भुंजो ~~वरा~~ चित्रानंद जी ॥ कूरगपुर्ये केवल पाम्युं, द्रमा-
 तणे परनाव जी ॥ ~~आदर० ॥ २२ ॥~~ पार्थनाथने उपसर्ग कीधा, कमल नवातर धीठ
 जी ॥ नरक तिर्थेच तणा डख दाधा, क्रोध तणा फल दीठ जी ॥ आदर० ॥ २३ ॥
 द्रमावंत दमदत सुनीथर, वनमा रह्यो काजसगजी ॥ कौरव कटक ह्यो इटाव,
 सोव्या कर्मना वर्ग जी ॥ आदर० ॥ २४ ॥ सज्यापाखक काने तरुव, नाम्यो क्रोध उदीर

जी ॥ विट्ट कानें खीला ठोकाणा, नवि वटा महवीर जी ॥ आदर ० ॥ १५ ॥ चार
 हत्यानो कारक हुंतो, दृढप्रहार अतिरेक जी ॥ क्रमा करीने मुके पहीतो, उपसर्ग सहा
 अनेक जी ॥ आदर ० ॥ १६ ॥ पोहोरमहि जपजंतो दार्यो, क्रोध केवल नाण जी ॥ देखो
 श्रीदमसार मुनीसर, सूत्र गुण्यो जटाण जी ॥ आदर ० ॥ १७ ॥ सिंह शुक्रवासी ऋषि कीधो,
 शुद्धिजड उपर क्रोध जी ॥ वेदशा वचन गयो नेपादें, कीधो संजम दोप जी ॥ आदर ०
 ॥ १८ ॥ चंद्रावतंसक काजसग रहियो, क्रमा तणो जंडार जी ॥ दासी तेल चर्यो निशि
 दीवो, सुरपदवी लही सार जी ॥ आदर ० ॥ १९ ॥ एम अनेक तर्या त्रिभुवनमें, क्रमा-
 गुणें जवि जीव जी ॥ क्रोध करी कुगतें ते पहीता, पाडता सुख रीव जी ॥ आदर ०
 ॥ ३० ॥ विप हवाहल कहीधे विरुठ, ते मोरे एक वार जी ॥ पण कषाय अनंती वेदा,
 आपे मरण अपार जी ॥ आदर ० ॥ ३१ ॥ क्रोध करंतां तप जप कीधां, न पडे काई
 ताम जी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं केहो काम जी ॥ आदर ० ॥ ३२ ॥ क्रमा
 करतां खरच न लागे, जागे क्रोड कलेश जी ॥ अरिहंत देव अपाराधक थाये, व्यापे सुजस
 प्रदेश जी ॥ आदर ० ॥ ३३ ॥ नगरमाहे नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासाद
 जी ॥ श्रावक लोक वसे अति सुखिया, धर्मतणे परसाद जी ॥ आदर ० ॥ ३४ ॥ क्रमा
 त्रीशी खातें कीधी, आत्म पर जपार जी ॥ सांजलता श्रावक पण समज्या, उपशम
 धर्यो अपार जी ॥ आदर ० ॥ ३५ ॥ जुगप्रधान जिणचंद सुरिसर, सकलचंद तसु
 शिष्य जी ॥ समयसुंदर तसु शिष्य तणे दम, चतुर्विध संघ जगीश जी ॥ आदर ०

॥ ३६ ॥ ॥ इति क्षमा त्रीशी संपूर्णै ॥ ॥ अथ पुन्य त्रीशी विलयते ॥ ॥
 पुन्यतणा फल परतक्ष पेखो, करो पुन्य सहु कोय जी ॥ पुन्य करंतां पाप पलाये, जीव
 सुखी जग होय जी ॥ पुन्य० ॥ १ ॥ अन्नयदान सुपात्र अनोपम, वली अहुकंपा दान
 जी ॥ साधु श्रावकधर्म तीरथ जात्रा, शील धरम तप ध्यान जी ॥ पुन्य० ॥ २ ॥ सामा
 धिक पोसो पडिकमणुं, देवपूजा गुरु सेव जी ॥ पुन्यतणा ए नेद प्ररुष्या, अरिहंत
 वीतरण देव जी ॥ पुन्य० ॥ ३ ॥ शरणागत राख्यो परेयो, पूरव नव परसिद्ध जी ॥
 शानिनाथ तीर्थकर पदवी, पामी चकट्टर रिद्ध जी ॥ पुन्य० ॥ ४ ॥ गजनेवं शयालो
 जीव जगार्यो, अधिक दया मन आणी जी ॥ मेघकुमार हुवो महात्रोगी, श्रेणिकपुत्र
 सुजाण जी ॥ पुन्य० ॥ ५ ॥ साधुतणो उपर्देश सुणीने, मूक्या मातला जाल जी ॥
 नदिनीगुल्म विमान थकी थयो, एवती सुकमाव जी ॥ पुन्य० ॥ ६ ॥ पांच मव राख्या
 मावी नव, पांच जक्ष दीयो राज जी ॥ राजकुवरी दीला सुख दाधा, सुन्नट कटक गया
 नाग जी ॥ पुन्य० ॥ ७ ॥ धनधन सारशवाह ते धन्नो, दीधुं धृतनु दान जी ॥ तिर्थकर
 पदवी तिणे पामी, आदीसर अत्रिधान जी ॥ पुन्य० ॥ ८ ॥ उत्तम पात्र प्रथम तीर्थकर,
 श्रेयांस कुमर दातार जी ॥ सेलडीरस सूकतो वहिराव्यो, पान्यो नवनो पार जी ॥ पुन्य०
 ॥ ९ ॥ चंदनवाला चढते नाये, पडिवाच्या महावीर जी ॥ देवतणी डंडनि तिहां वागी,
 सुदर थयो शरीर जी ॥ पुन्य० ॥ १० ॥ सगमे साधुनणी वहिराव्यो, खीरखांड धृत
 सार जी ॥ गोजबड शैव तणो धार न्नीजे

ससुख नामे गाथापति सुणीयें, दीधुं सुपात्रे दान जी ॥ दुष्प्रो सुबाहु कुमर ते त्रोगी,
 वधता सुख विमान जी ॥ पुन्य० ॥ १९ ॥ मूलदेव सुनिवर पडिवान्यो, मासखमण
 अणगार जी ॥ राजरिश्द तत्स्त्रिण ते पामी ॥ इहां कोइ नहि उक्षर जी ॥ पुन्य०
 ॥ २३ ॥ मोटा ऋषि वलदेव सुनीश्वर, प्रतिबोध्या पशु वर्ण जी ॥ दान सुपात्रे दीधुं रथ-
 कारे, पाम्यो पांचसुं स्वर्ण जी ॥ पुन्य० ॥ २४ ॥ चंपकशेठ कीधी अत्रुकंपा, दीधुं दान
 इकाल जी ॥ कौडिवज्जु सोनईया केरी, बिलसे रिश्द विशाल जी ॥ पुन्य० ॥ २५ ॥ सुव्रत
 स्वामी समीपे कार्तिक, दीधो संजम तार जी ॥ बत्रीस लाख विमान तणो धणी, इंड
 शयो ए सार जी ॥ पुन्य० ॥ २६ ॥ सनतकुमार सहि अति वेदन, सातसे वरसा सीम
 जी ॥ देवलोक त्रीजे सुख दीधा, निश्रव पान्या निम जी ॥ पुन्य० ॥ २७ ॥ रुपथकी
 अनरथ देखीनें, गयो बलत्राइ वनवास जी ॥ तप संजम पादीने पहोतो, पांचमे सुर
 आवास जी ॥ पुन्य० ॥ २८ ॥ नडवाहू स्वामी पूरवधर, सिज्जत्रव जसत्रड जी ॥ साधु
 आचार थकी सुख लाधां, वयरसामी भूलत्रड जी ॥ पुन्य० ॥ २९ ॥ महावीरथी नवसे
 एसीयें, सवला सूर सिधंत जी ॥ पुस्तकारुड कीथा देवडिगणि ॥ मोटा साधु महंत जी
 ॥ पुन्य० ॥ ३० ॥ आणंद कामदेव दज्ञ श्रावक, दत्ति रुडी परें राखी जी ॥ प्रथमदेव-
 लोक तणों सुख पाम्या, सूर जपासक साखी जी ॥ पुन्य० ॥ ३१ ॥ साडिवारह सेतुंजे
 जात्रा, कीधी एणे कलिकाल जी ॥ संघपति थई सुरलोकें सीधा, वस्तुपाल तेजपाल जी
 ॥ पुन्य० ॥ ३२ ॥ पाट्यो शील कष्टे पणि पाडीयें, कुलधज नामें कुमार जी ॥ इरत परत

सुख दाधां उत्तम, जस दहीजें संसार जी ॥ पुन्य० ॥ २३ ॥ चंपानगरी पोल उधाडी,
 सतिव सुत्रजा नारी जी ॥ काचे तांतणें पाणी काड्यो, जिनशासन जयकारी जी ॥ पुन्य०
 ॥ २४ ॥ काकंदी नगरीनो वासी, धन धन्नो आणगार जी ॥ श्रेणिक आगळ वीर
 वखाण्यो, उग्रतप अधिकार जी ॥ पुन्य० ॥ २५ ॥ हुं तिर्यंच कीसुं वहिराहुं, रथकार-
 कर्नें सहु शोक जी ॥ मृगलो ज्ञावना मन ज्ञावंतो, गयो पांचमे देवदोक जी ॥ पुन्य०
 ॥ २६ ॥ शिर सामाधिक क्रीधो शिवरा, राजकुंभी रंग जी ॥ जोग संजोग तिहा धणा
 जोगवी, सुख दाधां शिव संग जी ॥ पुन्य० ॥ २७ ॥ संखश्रावकें पोसो मुख पाड्यो, वीर
 प्रभंसे तेह जी ॥ तीर्थंकर पदवी ते लहेंशे, पुन्यतणा फल एह जी ॥ पुन्य० ॥ २८ ॥
 सागरचंद्र कीयो वली पोसो, रह्यो काजसर्गे विराज जी ॥ निसिनजसेन तणो सह्यो जप-
 सर्ग, लीधी रिद्धि अधाग जी ॥ पुन्य० ॥ २९ ॥ तुंगीयानगरी श्रमणोपासक, सुख
 क्रीया सावधान जी ॥ उन्नयकाल पडिकमणु करतां, पामी मृगति परधान जी ॥ पुन्य०
 ॥ ३० ॥ पूरव नव तीर्थंकर पूज्या, दाधा आढारह राज जी ॥ पद्मनानात्रनो गणधर
 धाशे, कुमारपाल सार्थो काज जी ॥ पुन्य० ॥ ३१ ॥ राणो रावण श्रेणिक राजा,
 अरच्या अरिहत देव जी ॥ विहु गोत्र तीर्थंकर बाधु, सुरनर करसे सेव जी ॥ पुन्य०
 ॥ ३२ ॥ केजीगुरु सेव्या परदेशी, सुर जपनो सुरियात्र जी ॥ चार हजार वरस एक
 नाटिक, आपे अनंता दात्र जी ॥ पुन्य० ॥ ३३ ॥ एम अनेक विवेक धरंता, जीव
 सुखी थया जाण जी ॥ संपत्ति जे सुखीया वली धाशे, पुण्य तणा परमाणु जी ॥

॥ पुन्य० ॥ ३४ ॥ सवत निधि दरसण रस ससीहर, सिधपुर नगर मऊर जी ॥
 शानिनाथ सुप्रसादे कीधी, पुन्य ठत्रीशी सार जी ॥ पुन्य० ॥ ३५ ॥ युगप्रधान सवाई
 जिण संघ, सूरि सकलचंद्र शिष्य जी ॥ समयसुंदर वाचक एम बोदे, धरम फल पर-
 तक्ष जी ॥ पुन्य० ॥ ३६ ॥ ॥ इति श्री पुन्य ठत्रीजी संपूर्ण ॥ ॥ श्री ॥ ॥ अथ
 करम ठत्रीशी दिल्थते ॥ ॥ कर्मधी को वूटे नहीं प्राणी, कर्म सवल डख खाणि जी ॥
 कर्मतणे वश जीव पड्या सह्य, कर्म करे ते प्रमाण जी ॥ कर्म० ॥ १ ॥ तीर्थकर
 चक्रवर्ती अतुलीवल, वासुदेव वलदेव जी ॥ ते पण कर्म विटंढ्या कहीयें, कर्म सवल
 नितमेव जी ॥ कर्म० ॥ २ ॥ सुगति त्राणी उठ्या जे सुनिवर, ते पण चूका जेय जी ॥
 सतियां माही पड्यां ड.ख सवलां, मन को पाप करेय जी ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ कुण
 जीव विटंढ्या करमें, तेह तणां कहुं नाम जी ॥ कर्म विपाक घणुं अति कहुआ, धर्म
 करो अनिराम जी ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ आदीश्वरजी आहार न पाभ्या, एक वरस कहिवाय
 जी ॥ खातां पीतां दान देयतां ॥ मत को करो अंतराय जी ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ मद्धीनाथ
 तीर्थकर दाधो ॥ खीनो अवतार जी ॥ तप करतां माया तिणे कीधी, करम ए न गणे कार
 जी ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ गोसावे संगमे गोवाले, कीधो उपसर्ग अघोर जी ॥ महा वीरने
 चीस पनवी, कर्महुं केहेरो जोर जी ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ साठ सहस सुत समकादे, लागो
 सवलो ड.ख जी ॥ सगरराय शयो सुरांगत, कर्मतणे वशें सुख जी ॥ कर्म० ॥ ८ ॥
 वदी संयुम अति सुख योगवतो, षट खंन दीव विवास जी ॥ सातमी नरग मांदि दे

नारथो, कर्मनो किरयो विश्वास जी ॥ कर्म० ॥ ९ ॥ ब्रह्मदत्तनें आधो कीधो, दीठां
 डःख अपार जी ॥ कुरुमति कुरुमति पड्यो पुकारे, सातमी नरग मोजार जी ॥
 कर्म० ॥ १० ॥ इंद्र बलाण्यो रूप अनोपम, ते विणठो ततकाव जी ॥ सातसें वरस
 सही बहु वेदन, सनतकुमार विकराव जी ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ कृष्णे कृष्ण अक्वस्था पामी,
 दीठो द्वारिका दाह जी ॥ मातपिता पण काठी न शक्या, आप रह्या वनवास जी ॥
 कर्म० ॥ १२ ॥ राणो रावण सवल कदाणो, नवग्रह कीधा दास जी ॥ लक्ष्मण लंका
 गढ दूटाव्यो, दशश्रीर ठेव्यां तास जी ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ दशरथ राय दीधो देशवटे,
 राम रह्या वनवास जी ॥ वली विजोग पड्यो सीतानो, आठे पहेर जदास जी ॥ कर्म०
 ॥ १४ ॥ चिरप्रतिमाव्युत्तरि चारित्रि ठोडी, वीधो वाधव राज्य जी ॥ कुंडरीकने कर्म विटंभ्या,
 काई न सय्यां काज जी ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ कोणिके काठ पंजरमांहि दीधो, श्रेणिक
 आपणो वाप जी ॥ नरकें गयो नाकियें मारंतो, प्रगढ्यो हिंसा पाप जी ॥ कर्म० ॥ १६ ॥
 जसु अडार सुगढवध राजा, सेव करे करजोड जी ॥ कोणिकथी वीहंतो राय चेडो,
 कृप पड्यो वल जोड जी ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ लवधो मुंज मुंडालवतीशुं, जजेणीनो राय
 जी ॥ वीख मंगावी सूवी दीधो, करणाट राय कदाय जी ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ वाचना
 पाचसे साधुनें देतो, जोगीवटें थयो गध जी ॥ अनारजदेशें सुमगल जपनो ॥ जोगी-
 वटे इ सबंध जी ॥ कर्म० ॥ १९ ॥ कृष्णपिता ने शुरु नेमीसर, द्वारिकां रिद समुद
 जी ॥ वंदणकृपि तिहा आदार न पामे, पुरव कर्म प्रसिद जी ॥ कर्म० ॥ २० ॥

प्रतिक०
सामा०

॥ १६३ ॥

अण्डकुमार महंत सुनीश्वर, व्रत कीधो वयरग जी ॥ श्रीमतिनारि संघातें दुव्यो,
 अइ अइ कर्म विपाक जी ॥ कर्म० ॥ २१ ॥ सिदगनामै आचारज मोटो, राजपिंड
 थयो गूढ जी ॥ मद्यपान करीने सुतो, नहिं पडिकमणां शुद्ध जी ॥ कर्म० ॥ २२ ॥
 कमलप्रभउं तज थकी थयो, साविथा चारिज जी ॥ तीर्थकर दव मेवी गमाड्या, ए
 देखो अचरिज जी ॥ कर्म० ॥ २३ ॥ नदिषेण श्रेणिकनो वेटो, महा वीरनो शिष्य जी ॥
 वार वरस वेर्याहुं दुव्यो, कर्मनी वात अदक जी ॥ कर्म० ॥ २४ ॥ जगवंतनो ज्ञाणेज
 जमाई, वीरशुं कीधी ठेफ जी ॥ तीर्थकरनां वचन उथाप्यां, हुयो जमादि सुर देह जी ॥
 कर्म० ॥ २५ ॥ रङ्गसाधवी रोग ऊपनो, विणुओ कोढे शरीर जी ॥ जव अनंत प्रमी डख
 सहती, दोष देवाड्यो नीर जी ॥ कर्म० ॥ २६ ॥ सीदसनाह धणुं समजावी, तोहि न
 मूका साल जी ॥ रुपीराय रुवी जव सीमा, नूँहे धणुं दवाव जी ॥ २७ ॥ डख अनंत
 लह्यां वदी लखमण, कुवचन बोड्या एम जी ॥ तीर्थकर परिपीडी जाणी, मैथुन वार्यो
 केम जी ॥ कर्म० ॥ २८ ॥ मूर्ई जाणी मूकी वनमां, सुकमातिका सरुप जी ॥ सारधवाह
 धर धरणी कीधी, कर्मनो अकल सरुप जी ॥ कर्म० ॥ २९ ॥ रोहिणी साधु ज्ञाणी वहि-
 राव्यो, कडवो तुंवफो तेडि जी ॥ जव अनंत प्रमी चजगतिमें, करम न मूके केड जी ॥
 कर्म० ॥ ३० ॥ एम मृगांकरेखा मृगावती, सुतानिकनी नारी जी ॥ कष्ट पडी कमला
 रतिसुंदर, कहेतां न आवे पार जी ॥ कर्म० ॥ ३१ ॥ कर्म विपाक सुणि अति करुआ,
 जीव करे नित धर्म जी ॥ जीव अवे तुं कर्ममें जीत्यो, हवे जीप तुं कर्म जी ॥ कर्म० ॥

॥ ३१ ॥ श्रीसुलतान नगर सुल नायक, पार्श्वनाथ जिन जोय जी ॥ वासपूज्य श्री
सुमत प्रसादे, लोक सुखी सह कोय जी ॥ कर्म० ॥ ३३ ॥ श्रीजिणचदसरी जिण
सिद्धसूरी, गहपति गुण नरपूर जी ॥ सिंधु जेसलमेरी श्रावक, खरतर गह पंडूर
जी ॥ कर्म० ॥ ३४ ॥ सकलचंद्र सदगुरु सुप्रसाये, सोलेसे अडसठे जी ॥ कर्म ठत्रीसी
ए में कीधी, पोसतणी शुरु ठठे जी ॥ कर्म० ॥ ३५ ॥ कर्म ठत्रीशी काने सुणीने,
करजो ब्रत पञ्चकाण जी ॥ समयसुंदर कहे शिवसुख लदेशे, धर्मतणो परभाव जी ॥
कर्म० ॥ ३६ ॥ ॥ इति श्री कर्म ठत्रीसी संपूर्ण ॥ ॥ अथ शिक्षा ठत्रीसी विखयते
॥ सांजल रे तुं सुजनी सोरी ॥ ए देशी ॥ सांजलजो सज्जन नर नारी, हेत शिखा-
मण सारी जी ॥ रीस करे देता शीखामण, जाग्यदशा परवारी ॥ सुणजो साजनो रे
॥ १ ॥ लोक विरुध नीवार ॥ सु० ॥ जगत बडो व्यवहार ॥ सु० ॥ ए टके ॥ सुरख वालक
जाचक व्यसनी, कारु ने वली नारु जी ॥ जो संसार सदा सुख वंगे, चोरनी समात
वारु ॥ सुणजो ० ॥ १ ॥ वेदया साधे वणज न करीये, नीचसुं नेह न धरीये जी ॥ खंपण
आवे धर धन जावे, जीवितने परिहरीये ॥ सु० ॥ ३ ॥ काम विना पर धर नवि जईये,
आवे गाव न दीजे जी ॥ वलीया साधे वाथ न चरीये, कुटुंब कलह नवि कीजे ॥
सु० ॥ ४ ॥ इद्रमनशु परनारी साधे, तजीए वात एकाते जी ॥ माता वेनशुं मारगा
जाता, वात न करीये राते ॥ सु० ॥ ५ ॥ राजा रमणी धरनो सोनी, विश्वास नवि रदीये
जी ॥ मात पिता गुरु विण बीजने ॥ शुह्यनी वात न करीये ॥ सु० ॥ ६ ॥ अणजाणयाशु

गाम न जइए, छाड तवे नवि वसीयें जी ॥ हाथी घोडा गाडी जातां, डरजनथी
 दूरे खसीयें ॥ सु० ॥ ७ ॥ रमत करतां रीस न करीए, प्रय मारग नवि जइयें जी ॥
 वे जण वात करे जिहां वानी, तिहां उत्रा नवि रहीये ॥ सु० ॥ ८ ॥ हुंकारा विण
 वात न करीयें, इडा विण नवि जमीयें जी ॥ धन विधानो मद् परिहरीयें, नमता सायें
 नमीयें ॥ सु० ॥ ९ ॥ मुख जोगी राजा पंडित, हांसी करी नवि हसीयें जी ॥ हाथी
 वाघ सरप नर वढतां, देखीनें दूर वसीयें ॥ १० ॥ कुवा कांठे हांसी न करीयें, केफ करी
 नवि प्रमीयें जी ॥ वरो न करीयें घर बेचीने, जूगटे कदि नवि रमीयें ॥ सु० ॥ ११ ॥
 नणतां गणतां आवस तजीयें, लखतां वात न करीयें जी ॥ परहस्ते परदेशा डकाने,
 आपणुं नाम न धरीयें ॥ सु० ॥ १२ ॥ नासुं मांडो आवस गांडी, देवादार न थइये
 जी ॥ कष्ट प्रयादिक धानक वरजी, देशावर जई रहीये ॥ सु० ॥ १३ ॥ धनवंतो ने
 मदिनता, पगहुं पग धसी घोवे जी ॥ नापिक घर जइ रीर सुंडावे, पाणीमां मुख
 वे ॥ सु० ॥ १४ ॥ नावण दातण सुंदर न करे, बेजो तरणां तोडे जी ॥ त्रोंयें चित्रा-
 मण नागो सुर, तेने लक्ष्मी तोडे ॥ सु० ॥ १५ ॥ माता चरणे शीश नमावी, वापने
 करीय सलामो जी ॥ देव गुरुने विधियें बांदी, करे संसारनां कामो ॥ सु० ॥ १६ ॥ वे
 दार्थें माथु नवि खणीयें, कान नवि खोत्तरीयें जी ॥ उत्रा केडे हाथ न दीजे, सामें पूरे
 न तरीयें ॥ सु० ॥ १७ ॥ तेव तमाकु दूरे तजीयें, अणगव जव नवि पीजें जी ॥ कुब-
 वंती सतिने दिखामण, दवे नर जेगी दीजें ॥ सु० ॥ १८ ॥ ससरो सासु जेठ जेगाणी,

नणदी विनय न सुको जी ॥ श्राणपणे शैरी संचरतां, चतुरा चाल म चूको ॥ सु०
 ॥ १९ ॥ नीच साहेदी सग न कीजे, परमदिर नवि जमीए जी ॥ रात पने घर वाहार
 न जइए, सहुने जमानी जमीए ॥ सु० ॥ २० ॥ धोवण मालण ने कुंभारण, जोगण संग न
 करीये जी ॥ सेहेजे कोइक आल चढावे, एवहुं शाने करीये ॥ सु० ॥ २१ ॥ निज
 प्ररतार गयो देशावर, तव श्राणगार न करीए जी ॥ जमया नात विचे नवि जइए, डरि-
 जन देखी डरीए ॥ सु० ॥ २२ ॥ परशैरी गरवो गावाने, मेवे खेले न जइए जी ॥ नावण धोवण
 नदी कीनारे, जातां निरखज थइए ॥ सु० ॥ २३ ॥ उपन्ते पण चाल चादीए, हुन्नर सहु
 सीखीजे जी ॥ खान सुवखे रसोइ करीने, दान सुपवे दीजे ॥ सु० ॥ २४ ॥ शोक्य
 तणां लघु वालक देखी, म धरो खेद दर्दअमि जी ॥ तेहनी सुख शीतल आशीवे,
 पुत्रतणां सुख पामे ॥ सु० ॥ २५ ॥ वार वरस वालक सुर पडिमा, ए वे सरखां कहीए
 जी ॥ त्रिकि करे सुख लीला पामे, खेद करे डख लइए ॥ सु० ॥ २६ ॥ नर नारी वेजने
 शिखामण, सुख लवरी नवि हसीये जी ॥ नात सगानां घर टाडीने, एकलडां नवि
 वसीये ॥ सु० ॥ २७ ॥ वमन करीने चिता जावे, नचवे आसन वेशीजी ॥ विदिश दक्षण
 दिश अंधारे, बोटयु पशुए पेशी ॥ सु० ॥ २८ ॥ अणजाणे श्रुतुवंती पावे, पेट अजीरण
 वेलाजी ॥ आकाजे योजन नवि करीए, वे जण वेशी जेला ॥ सु० ॥ २९ ॥ अति ऊनुं
 खारुं खाहुं, शाक वणुं नवि खावु जी ॥ सोनपणे उंठीगण वरजी, जिमवा पहेजा
 नाहुं ॥ सु० ॥ ३० ॥ धान बखाणी बखोमी न खावु, तडके वेशी न जमवं जी ॥

मांदा पासे रात तज्जिने, नरणे पाणी न पीवुं ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कंद मूल अन्नक्षने बोवो,
 वाशी विदल ते वरजो जी ॥ जूव तजो पर निंदा हिंसा, जो वली नर प्रव सरजो ॥ सु०
 ॥ ३२ ॥ व्रत पचक्काण धरी गुरु दार्थे, तीरथ जात्रा करीए जी ॥ पुण्य उदय जो माहोटी
 प्रगटे, तो संघवी पद धरीए ॥ सु० ॥ ३३ ॥ मारणमां मन मोकवुं राखी, बहुविध संघ
 जमाडो जी ॥ सुरलोकें सुख सधवां पासे, पण नही एवो दहाडो ॥ सु० ॥ ३४ ॥ तीरथ
 तारण शिवसुख कारण, सिंघाचल गिरनार जी ॥ प्रजु जगते गुणश्रेणे प्रव जल,
 तरीए एक अचतार ॥ सु० ॥ ३५ ॥ लोकीक लोकोत्तर हित शिक्षा, वत्रीसी ए बोवो
 जी ॥ पंडित श्री शुभ वीर विजय सुख, वाणी मोहन वेवी ॥ सु० ॥ ३६ ॥ ॥ इति
 श्री शिक्षा वत्रीशी संपूर्णः ॥ ॥ अथ अ्यातम वत्रीजी विरच्यते ॥ ॥ अ ए अ्यापणुं
 अ्यातम जे, असह करमना वसथी ते ॥ काल अनंत गयो ते जाण, तोए न पोतो शिव-
 पुर ठाम ॥ ए देशी ॥ कके कुवसन कहीए सात, तेहनुं म जालशो कोइ द्वाथ ॥ एने संगे
 नरकनी खाण, सींघाते जिन प्राखी जाण ॥ १ ॥ खखें चार गतिनी खाण, तेमां बहु वार
 प्रमीयो प्राण ॥ ते माटे तमो समठी चलो, ने पापथी निश दिन दूरे टलो ॥ २ ॥ गणे
 ग्यान ते पांच बखाण, श्रुति मति ने अचधि जाण ॥ मनपरजव ने केवल जे, गणे ग्यान
 नमो सहु ते ॥ ३ ॥ घघे घणधर गौतम ग्राम, नाम जपंतां सीजे सहु काम ॥ प्रह जवी
 गौतम समरे जे, रिंघ सिंघ नर पावे ते ॥ ४ ॥ नने नवपदनुं तप जे, अ सी अ्या ज सा नी
 तपसा ते ॥ प्रेमे एकाशी अ्यांवील करो, अ्याशो चैतरे तन मन धरो ॥ ५ ॥ चचे

गार वखाण, वली तीर्थकर चोवीस जाण ॥ नव वासु प्रतिवासु वलदेव,
 चरीत्र सुणेव ॥६॥ ठठे ठणु जिनवर नाम, वरत आद अनागत साम ॥ चार
 नीग वेर जे, रवि जगमते नमजो ते ॥ ७ ॥ जजे जिनवर अरिहंत देव,
 करजो सेव ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म जिन जाण, मिथ्यामतमां म प्रमजो
 ने जंवूद्वीप पेहेलो जे, बहु द्वीप समुद्रे ते ॥ ठेलो शंभुरमण वखाण,
 क पोहोलो जाण ॥ ९ ॥ नबे नव अतंता जाण, ठेले नही को पदारथ
 च ठ आठे प्रव, ४ अश्रवी ५ संब ६ संसारी ७ सर्व ॥ १० ॥ टका
 रहीश, वेला गये पशताव करीश ॥ मोक द्वार ए मनुष्य जनम, सेवो
 करी एक मन ॥ ११ ॥ ठठे ठालो आव्यो जेम, पुण्य विनानुं जासे तेम ॥
 णा जासे जे, फोकट महीत्रर थासे ते ॥ १२ ॥ डडे दश दृष्टाते वखाण, ड्डव्र
 व लह्यो जाण ॥ दया धरम नर नारी करो, डडे देवता सवि सुख वरो ॥ १३ ॥
 डील म करजो लगार, आतम साधनमां ठे सार ॥ ठठे डील न करसे जे, महाडख
 प्रवजल तरसे ते ॥ १४ ॥ णणे राज जग चौदनुं जाण, राज एकनुं तिहां कीजे मान ॥
 सोहम शुर जोर गोवो पडे, ते षट मास पतदी तरले नडे ॥ १५ ॥ तते
 त्रिभुवन नमजो साम, करजो घणां परमारथ काम ॥ मनमां धरजो केवली धर्म, जितो
 जेम सब आठे कर्म ॥ १६ ॥ थथा थिर मत जाण संसार, राज रमणी रिध् अथिर
 विचार ॥ श्रीर परसेष्टी मोक दत्तार लगे क...

करीए सार, अष्टाष्ट पद गिरनार ॥ समेत शिखर शैलुंजो जे, तीरथ पदमां दोए ते
 ॥ १८ ॥ धधे धरम करो नर नार, चार प्रकारे आए उधार ॥ दान शील वली तप ने
 जाव, ए चारे ठे त्रवजल नाव ॥ १९ ॥ नने नेम नमो गिरनार, जादव कुलमां शील
 शृणुगार ॥ धोवीनमे त्रमचारी जे, विनय सकल सुख पावो ते ॥ २० ॥ पपे पूजा जिन-
 वर तणी, द्रव्य चाव धकी जे गणी ॥ अनत जीव एहथी जाण, शिवपद लह्यो ठे
 परमाण ॥ २१ ॥ फर्फे फेरो त्रवनो जे, जनम मरण बार बार ते ॥ बहु तपसा दृढ सम-
 कित धरो, फर्फे फेरो त्रवनो टवो ॥ २२ ॥ ववे बार वरतनु मान, प्रति मृषा अदत्तादान ॥
 मेशुन परीग्रह आदि दर्द जे, अतथी सहु जन पावो ते ॥ २३ ॥ त्रने त्रगवति सूत्रनी
 वाण, जे जिनवरें त्राखी जाण ॥ चावे सुणजो एक चित्त सहु, विधन जीवथी
 टलझे बहु ॥ २४ ॥ ममे मंत्र मोटो नवकार, जेहनो न लह्यो कोने पार ॥ अथर जंत्र
 तत्र परहरी, शुद्ध मनें जपजो ए वे घडी ॥ २५ ॥ यथे या शुग संपन्न नर धार, मूको
 त्रविजन आलपंपाव ॥ नार सार वया जे नर रहे, आडकुमर सम ते छल लहे ॥ २६ ॥
 रेरे रत्नसार जे नाम, तेहसुं सज्जन राखो काम ॥ शुद्धमति ज्ञान दीये प्रतिबोध, आतम
 तारण मारण सोध ॥ २७ ॥ दावे लोक चउद राज जे, गोले बहु निगोड ते ॥ एक
 निगोदनो अन्तमो त्राग, हरकोइ काले शिवपुर दाग ॥ २८ ॥ ववे वीर जिणंद
 वखाण, वरस वडतेर आशु जाण ॥ चोवीसमो जिनवर जगपाव, ववे वीर वंदो तिडं
 काल ॥ २९ ॥ शत्रो साधु नमो निजदिन, पवित्र लेख वखाणो जिन ॥ पंच महाव्रत

पामे जे, शशे साधु कहीए ते ॥ ३० ॥ षषे सिख शिला वखाण, दाख विस्तावीस
 पोहोदी जाण ॥ एक जोजन जंच चोवीसमे नाग, सिखजीवे तिहां कीधी जाग ॥ ३१ ॥
 ससे शिवपुर सुखनु मान, जनम जरा मरण निरवाण ॥ केवली विना न जाणे जे,
 ससे शिव सुख पामे ते ॥ ३२ ॥ हहे होडा अखसरपणी वखाण, मध्यम आ काव
 ह्यो ते जाण ॥ तेहमा दश अठेरां जे, काव अनंते होवे ते ॥ ३३ ॥ दावे दक्षमी
 सुकृत जाण, नार सुता सुत रुडां वखाण ॥ जगमां जस वली देह न रोग, पूरव पुन्यहुं
 ए संयोग ॥ ३४ ॥ द्ये द्ये काम धरो नर नार, जेम पामो जवसायर पार ॥ द्ये द्ये कामानुण
 जेहमां होय, तेहने कदी नव शके कोय ॥ ३५ ॥ द्ये द्ये ज्ञाता सूत्रनी वाण, अगोणीस
 अथयन तेहमां जाण ॥ तन मन नावे सुणसे जे, मन वंठित फल देशे ते ॥ ३६ ॥ कको
 ए संपूरण थयो, हंस दधसुने एणी पुरे कह्यो ॥ नावे नणसे गणसे जे, सुख संपत्ति
 देशे ते ॥ इति श्री आत्मशिखा संपूर्णः ॥ ॥ अथ पुऊल गीता विरच्यते ॥ ॥
 कया धनमें गदा वे, एक दिन माटीमां मिव जाण ॥ ए देशी ॥ संतो देखीये वे, परगट
 पुऊल जाव तमासा ॥ संतो ॥ ए आकणी ठे ॥ पुदगल खाणो पुदगल पीणो, पुद-
 गल हुंति काया ॥ वर्षे गंध रस स्पर्श सहु ए, पुदगल हुंकी माया ॥ संतो ॥ १ ॥
 खान पान पुदगल वनावे, नहि पुदगल विन काय ॥ वर्षादिक नहि जीवमे वे, दीनो
 नेद वताय ॥ संतो ॥ २ ॥ पुदगल कावा नीवा राता, पीवा पुदगल होइ ॥ धवला
 चुन ए पंच वरणां, गुण पुदगल हुंका जोइ ॥ संतो ॥ ३ ॥ पुदगल विना कान्य नहि

वे, नील रक्त अरु पीत ॥ स्वेत वर्णं पुद्गल विना वे, चेतनमें नहि मित ॥ संतो० ॥ ४ ॥
 सुरत्रिगंध डुरत्रिगंध वतावे, पुद्गलहुंमें होय ॥ पुद्गलका परसंग विना ते, जीवमांहि
 नवि होय ॥ संतो० ॥ ५ ॥ पुद्गल तीखा कडवा पुद्गल, फुलि कषायला कहीये ॥
 खाटा मीठा पुद्गल केरा, रस पांचुं सरदहीए ॥ संतो० ॥ ६ ॥ शीत जण अरु काटा
 कोमल, हलवा चारी सोय ॥ चिकणि रुषा आठ फरस ए, पुद्गलहुंमें होय ॥ संतो०
 ॥ ७ ॥ पुद्गलधी न्यारा सदा जे, जाण अफरसी जीव ॥ ताका अनुभव नेद ज्ञानधी,
 गुरुगम करो सदीव ॥ संतो० ॥ ८ ॥ क्रोधी मानी माइ लोत्नी, पुद्गलरागे होय ॥ पुद्गल
 विना चेतनए, शिवनाथक नित जोय ॥ संतो० ॥ ९ ॥ नरनारी नपुंसक वेदी, पुद्गलके परसंग ॥
 जाण अवेदी सदा जीव ए, पुद्गल विना अन्नग ॥ संतो० ॥ १० ॥ वूढा बाढा तरुण थया
 ते, पुद्गलका संग धार ॥ तिहु अवरथा नहि जीवमें, पुद्गल संग निवार ॥ संतो०
 ॥ ११ ॥ जनम जरा मरणादिक चेतन, नानाविध डल पावे ॥ पुद्गल निवारत तिण
 दिप्त, अजरामर होये जावे ॥ संतो० ॥ १२ ॥ पुद्गल राग करी चेतनकुं, होत कर्मको
 बंध ॥ पुद्गल राग विसारत मनधी, निरागी निरबंध ॥ संतो० ॥ १३ ॥ तन मन
 काय जोग पुद्गलधी, निपजावे नितमेव ॥ पुद्गल संघ विना अजोगधी, थाय लही
 निज नेव ॥ संतो० ॥ १४ ॥ पुद्गल पींड थकी निपजावे, जलां जयंकर रूप ॥
 पुद्गलका परिहार कीयाधी, होवे आप अरूप ॥ संतो० ॥ १५ ॥ पुद्गल राग थर्द
 धरत निज, देह गेहधी नेह ॥ पुद्गल राग जाव निज देहधी, लिनमें होत विदेह ॥

संतो० ॥ १६ ॥ पुद्गल पीड दौलपी चेतन, जगमे रांक कहावे ॥ पुद्गल नेह निवारक
 पलमें, जगपति विरुद् धरावे ॥ संतो० ॥ १७ ॥ पुद्गल मोह प्रसगे चेतन, चिहुं गतिमे
 ष्टके ॥ पुद्गल नेह तजी शिव जातां ॥ समय मात्र नहिं अष्टके ॥ संतो० ॥ १८ ॥
 पुद्गल रस रागी जग ष्टकत, काल अनंत गमायो ॥ काची दीय घडीमें निजगुण,
 राग यति प्रगटायो ॥ संतो० ॥ १९ ॥ पुद्गल रागें वार अनंती, ताल माल सुत अर्द्धया ॥
 किसका वेदा किसका जाया, वेद साचा जब लहीया ॥ संतो० ॥ २० ॥ पुद्गल संग
 नाटकें बहु नटवत, करता पार न पायो ॥ प्रवस्थिति परीपक थड जब, सहजे मारण
 जायो ॥ संतो० ॥ २१ ॥ पुद्गल रागें देहादिक निज, मान मिथ्याति सोय ॥ देह
 गहनो नेह तजीने, सम्यक् दृष्टि होय ॥ संतो० ॥ २२ ॥ काल अनंति निगोदधाममें,
 पुद्गल रागें रहीयो ॥ डख अनंत नरकादिकथी तुं, अधिक बहु विध सह्यो ॥ संतो०
 ॥ २३ ॥ पाय अकामनिरजराको बल, किंचित उंचो आयो ॥ वादरमां पुद्गल रस वसथी,
 काल असंख गमायो ॥ संतो० ॥ २४ ॥ लही क्योपसम मति ज्ञानको, पंचेंद्रि जब लाथी ॥
 विषयाशक राग पुद्गलथी, धार नरगति साधि ॥ संतो० ॥ २५ ॥ ताडन मारन वेदन
 वेदन, वेदन बहुविध पाई ॥ क्षेत्रवेदना आदि देहनें, वेद वेद रसाई ॥ संतो० ॥ २६ ॥
 पुद्गल सगे नरग वेदना, वार अनंति वेदी ॥ पुन्य संयोगे नरप्रव लाथी, अशुभ युगल
 गति वेदी ॥ संतो० ॥ २७ ॥ अति हर्षन देवनकुं नरप्रव, श्रीजिन देव वलाण ॥
 श्रवण सुणि ते वचन सुधारस, वास केम नवि आणे ॥ संतो० ॥ २८ ॥ विषयासक

राग पुद्गलको, धन नर जन्म गमाव ॥ काग उडावण काज विप्र जिम, डार मणि
 पवतावे ॥ संतो० ॥ १९ ॥ दस दृष्टाते दोहिवो नरनव, जिनवर आगम जारव्यो ॥
 पण तिणकुं किम खवर पडे जिण, कनकबीज रस चारव्यो ॥ संतो० ॥ ३० ॥ हारत
 वथा अनोपम नरत्रव, खेले विषयरस जूया ॥ पीठे पठे पवतावत मनमांदि, जिम
 सेमलका सूया ॥ संतो० ॥ ३१ ॥ कोइक नर एम वचन सुणिने, धर्मथकी चित्त लावे ॥
 पण जे पुद्गल आणंदी तस, स्वर्गताणां सुख पावे ॥ संतो० ॥ ३२ ॥ संजम केरां फल
 सिव संपत, अटपमति नवि जाणे ॥ विण जाणे नियाणा करीने, गज तज रासन
 आणे ॥ संतो० ॥ ३३ ॥ पुद्गलिक सुख रस रसिया नर, देव निधि सुख देखे ॥ पुण्य
 हिण थया डुर्गति पासे, ते देवा नवि देखे ॥ संतो० ॥ ३४ ॥ देवताणां सुख वार
 अनंति, जीव जगतमें पाया ॥ निजसुख विण पुद्गल सुखसेति, मन संतोप न आया
 ॥ संतो० ॥ ३५ ॥ पुद्गलिक सुखें सुवत अहरनिश, मन इंद्रिय थ्यावे ॥ जिम घृत
 मध आहति देता, आश्रि शांत न थावे ॥ संतो० ॥ ३६ ॥ जिम जिम अधिक विषय-
 सुख सेवे, तिम तिम तूण्णा दीपे ॥ जिम अपेय जलपान कीयाथी, तूषा कहे किम ठिपे
 ॥ संतो० ॥ ३७ ॥ पुद्गलिक सुखना जे स्वादी, एह मरम नवि जाणे ॥ जिम जात-
 अथा पुरुष दिनकरनी, तेज नवि पहिचाणे ॥ संतो० ॥ ३८ ॥ इंजीजनित विषयरस
 सेवित, वर्त्तमान सुख ताणे ॥ पण किंपाक तणां फलनी परे, नवि विपाक तस जाणे
 संतो० ॥ ३९ ॥ फल किंपाक थकी एकज नव, प्राण हरत छख पावे ॥ इंद्रिजनित

विषयस ते ते, चिहुं गतिमें नरमावे ॥ संतो० ॥ ४० ॥ एहवा जाण विषय सुखसेति,
 विसुख रूप नित रहीये ॥ त्रिकरण जोगे शुध्द नाव धर, नेद यथारथ लहीये ॥ संतो०
 ॥ ४१ ॥ पुन्य पाप दोय सम करी जाणो, नेद म जाणो कोई ॥ जिम वेडी कंचन
 दोहानी, बंधन रुपी दोई ॥ संतो० ॥ ४२ ॥ नल बल जल जिम देखो संतो, उंचा
 चढत आकाश ॥ पाजा दल नूमी पडे तिम, जाणो पुन्य प्रकाश, ॥ संतो० ॥ ४३ ॥ जिम
 साणसी दोहनी परे, खिण पाणी खिण आग ॥ पाप पुन्यनो इण विध नेह ठे, फल
 जाणो महानाग ॥ संतो० ॥ ४४ ॥ कंपरोगमें वर्तमान इख, अकमही आगामी ॥ इण
 विधि दीऊ इख कारण, नांखे अंतरजामी ॥ संतो० ॥ ४५ ॥ कोऊ कूपमें पडी मुदे
 जिम, कोऊ गिरि जंपा खाय ॥ मरण सरिखां जाणीयें पण, नेद दीऊ कहेवाय ॥ संतो०
 ॥ ४६ ॥ पुन्य पाप पुद्गल दशा एम, जे जाणे समतुल ॥ शुच किरिया फल नवि
 चहे, ए जाणे अध्यातम मूल ॥ संतो० ॥ ४७ ॥ शुच किरिया आचरण आचरे, धरे
 न ममता नाव ॥ न्युतन बंध दोयें नही इण विधि, प्रथम अरि शिर घाव ॥ संतो०
 ॥ ४८ ॥ वार अनंत चूकीया चेतन, इणि अथसर मत चूको ॥ मार निशाना मोहरा-
 यकी, तातिमे मत उको ॥ संतो० ॥ ४९ ॥ नदी गोल पाषाण न्याय करी, उर्द्वन अथ-
 सर पायो ॥ चिंतामण तज काच सकल सम, पुद्गलधरी दोनायो ॥ संतो० ॥ ५० ॥
 परवशाता इख पावत चेतन, पुद्गलधरी दोनायो ॥ त्रम आरोपीत बंध विचारत, मर-
 कट मूवी न्यायो ॥ संतो० ॥ ५१ ॥ पुद्गलधरी राग नाव चेतन, शिर स्वरूप नहि

होत ॥ चञ्च गतिमां प्रटकत निसदिन इम, जेम प्ररनिधिमां पोत ॥ संतो० ॥ ५२ ॥
 जड दक्षण परगट जे पुद्गल, तास मर्म नवि जाणे ॥ मदिरा पान उक्यो जिम मध्यप,
 स्व पर नवि पिवाणे ॥ संतो० ॥ ५३ ॥ जीव अरूपी रूप धरतते, परपरणित परसग ॥
 वञ्जरतनमां डक जोग जिम, दर्शत नानारंग ॥ संतो० ॥ ५४ ॥ निज गुण त्याग राग
 जपरथी, धरगहृत अशुभ दल थोक ॥ शुद्ध रूधिर तज गंधो दोहि, पान करत जिम
 जोक ॥ संतो० ॥ ५५ ॥ जड पुद्गल चेतनकुं जगमें, नाना नाच नचावे ॥ टावी खात वाधकु
 यारो, ए अचरिज मन आवे ॥ संतो० ॥ ५६ ॥ ज्ञान अनंत जीवनी निजगुण, ते
 पुद्गल आवरीड ॥ जे अनंत शक्तिनो नायक, ते इण कारण करीयो ॥ संतो० ॥ ५७ ॥
 चेतनकुं जे पुद्गल निसदिन, नानाविध डख आवे ॥ पण पिंजरगत नाहरनी परे,
 जोर कळू नवि चावे ॥ संतो० ॥ ५८ ॥ इतने पर त्री चेतनकुं, पुद्गलको संग सुहावे ॥
 रोगीनर जिम कुपथ्य करीने, मनमां हरवीत थावे ॥ संतो० ॥ ५९ ॥ जात पांत कुल
 न्यातनकुं, नाम गाम नवि कोय ॥ पुद्गल संगे नाम धरावत, निज गुण सधरो खोय
 ॥ संतो० ॥ ६० ॥ पुद्गलके वस दालत चालत, पुद्गलके वश बोले, कहुंक वेजा टंक
 टक जूए, कहुंक नयण न खोले ॥ संतो० ॥ ६१ ॥ मन गमता कहुं त्रोग त्रोगवे,
 सुख सिन्धामे सोवे ॥ कहुंक त्रुस्था तरस्या वाहर, पड्या गळीमें रोवे ॥ संतो० ॥ ६२ ॥
 पुद्गल वस एकेंडी वहु, पंचेंडी पण पावे ॥ तेइयावंत जीव जे जगमें, पुद्गल संग
 कदावे ॥ संतो० ॥ ६३ ॥ चवदे गुणथानक मारगणा, पुद्गल संगे जाणो ॥ पुद्गल

विषयरस ते ते, चिहुं गतिमें नरमावे ॥ संतो० ॥ ४० ॥ एहवा जाण विषय सुखसेति,
 विसुख रूप नित रहीये ॥ त्रिकरण जोगे शुध नाव धर, नेद यथारथ लहीये ॥ संतो०
 ॥ ४१ ॥ पुन्य पाप दोय सम करी जाणो, नेद म जाणो कोई ॥ जिम वेडी कंचन
 लोढानी, वधन रूपी दोई ॥ संतो० ॥ ४२ ॥ नल बल जल जिम देखो संतो, उंचा
 चढत आकाश ॥ पावा दल नूमी पडे तिम, जाणो पुन्य प्रकाश, ॥ संतो० ॥ ४३ ॥ जिम
 साणसी लोढनी परे, खिण पाणी खिण आग ॥ पाप पुन्यनो इण विध नेद ते, फल
 जाणो महानाग ॥ संतो० ॥ ४४ ॥ कंपरोगमें वर्तमान डख, अकमही आगामी ॥ इण
 विधि दोक डख कारण, नाखे अंतरजामी ॥ संतो० ॥ ४५ ॥ कोड कूपमें पडी सुदे
 जिम, कोड गिरि जंपा खाय ॥ मरण सरिखां जाणीयं पण, नेद तीज कहेवाय ॥ संतो०
 ॥ ४६ ॥ पुन्य पाप पुद्गल दशा एम, जे जाणे समतुल ॥ शुभ किरिया फल नवि
 चहे, ए जाणे अध्यातम मूल ॥ संतो० ॥ ४७ ॥ शुभ किरिया आचरण आचरे, धरे
 न ममता नाव ॥ न्युतन बंध होयें नही इण विधि, प्रथम अरि शिर घाव ॥ संतो०
 ॥ ४८ ॥ वार अनंत चक्रीया चेतन, इणि अथसर मत चक्री ॥ मार निशाना मोहरा-
 यकी, तातिमें मत उको ॥ संतो० ॥ ४९ ॥ नदी गोल पापाण न्याय करी, हर्दतन अथ-
 सर पायो ॥ चिंतामण तज काच सकल सम, पुद्गलथी लोनायो ॥ संतो० ॥ ५० ॥
 परवशता डख पावत चेतन, पुद्गलथी लोनायो ॥ त्रम आरोपीत बंध विचारत, मर-
 कट मूठी न्यायो ॥ भंतो० ॥ ५१ ॥ पुद्गलथी राग नाव चेतन, थिर न्यरूप नहि

होत ॥ चउ गतिमां चटकत निसदिन इम, जेम त्ररनिधिमां पोत ॥ संतो० ॥ ५१ ॥
 जड दक्षण परगट जे पुद्गल, तास मर्म नवि जाणे ॥ सदिरा पान लक्यो जिम मद्यप,
 ख पर नवि पिवाणे ॥ संतो० ॥ ५३ ॥ जीव अरूपी रूप धरतते, परपरणित परसग ॥
 वज्ररतनमां डक जोग जिम, दर्शत नानारग ॥ संतो० ॥ ५४ ॥ निज गुण त्याग राग
 उपरथी, धरगहत अशुभ दल थोक ॥ शुभ रुधिर तज गंधो लोहि, पान करत जिम
 जोक ॥ संतो० ॥ ५५ ॥ जड पुद्गल चेतनकुं जगमें, नानानाच नचावे ॥ जाती खात वाघकु
 यारो, ए अचरिज मन भावे ॥ संतो० ॥ ५६ ॥ इजान अनंत जीवनो निजगुण, ते
 पुद्गल आवरीड ॥ जे अनंत शक्तिनो नायक, ते इण कारण करीथो ॥ संतो० ॥ ५७ ॥
 चेतनकुं जे पुद्गल निसदिन, नानाविध डख आले ॥ पण पिंजरगत नाहरनी परे,
 जोर कळ नवि चाले ॥ संतो० ॥ ५८ ॥ इतने पर श्री चेतनकुं, पुद्गलको संग सुहावे ॥
 रोगीतर जिम कुपथ्य करीनें, मनमां हरखीत थावे ॥ संतो० ॥ ५९ ॥ जात पांत कुल
 न्यातनकु, नाम गाम नवि कोय ॥ पुद्गल संगे नाम धरावत, निज गुण सधरो खोय
 ॥ संतो० ॥ ६० ॥ पुद्गलके वस दावत चालत, पुद्गलके वजा बोले, कहुंक वेजा टंक
 टंक जूए, कहुंक नयण न खोले ॥ संतो० ॥ ६१ ॥ मन गमता कहुं जोग जोगवे,
 सुख सिद्ध्यामें सोवे ॥ कहुंक त्ररथा तरसा वाहर, पड्या गतीमें रोवे ॥ संतो० ॥ ६२ ॥
 पुद्गल वस एकेंडी चहु, पंचेंडी पण पावे ॥ देइयावत जीव जे जगमें, पुद्गल संग
 कदावे ॥ संतो० ॥ ६३ ॥ चवदे गुणथानक मारणा, पुद्गल संगे जाणो ॥ पुद्गल

विषयस ते ते, चिह्नं गतिमें प्ररमावे ॥ संतो० ॥ ४० ॥ एहवा जाण विषय सुखसेति,
 विस्व रूप नित रहीये ॥ त्रिकरण जोगे शुद्ध प्राव धर, नेद यथारथ लहीये ॥ संतो०
 ॥ ४१ ॥ पुन्य पाप दोष सम करी जाणो, नेद म जाणो कोई ॥ जिम वेडी कंचन
 दोढानी, वंधन रुपी दोई ॥ संतो० ॥ ४२ ॥ नल बल जल जिम देखो संतो, जंचा
 चढत आकाश ॥ पावा ढल नूमी पडे तिम, जाणो पुन्य प्रकाश, ॥ संतो० ॥ ४३ ॥ जिम
 साणसी दोहनी परे, खिण पाणी खिण आग ॥ पाप पुन्यनो इण विध नेद ते, फल
 जाणो महाभाग ॥ संतो० ॥ ४४ ॥ कंपरोगमें वर्तमान इख, अकमदी आगामी ॥ इण
 विधि दीज इख कारण, सांखे अंतरजामी ॥ संतो० ॥ ४५ ॥ कोज कूपमें पडी सुदे
 जिम, कोज गिरि जंपा खाय ॥ मरण सरिखा जाणीयें पण, नेद दीज कहेवाय ॥ संतो०
 ॥ ४६ ॥ पुन्य पाप पुद्गाव दशा एम, जे जाणे समनुल ॥ शुच किरिया फल नवि
 चहे, ए जाणे अथातम मूल ॥ संतो० ॥ ४७ ॥ शुच किरिया आचरण आचरे, धरे
 न ममता प्राव ॥ न्युतन वंध दोयें नदी इण विधि, प्रथम अरि शिर घाव ॥ संतो०
 ॥ ४८ ॥ वार अनंत चूकीया चेतन, इणि अवसर मत चूको ॥ मार निशाना मोहरा-
 यकी, गतिमें मत जको ॥ संतो० ॥ ४९ ॥ नदी गोव पापाण न्याय करी, उर्द्वन अव-
 सर पायो ॥ चिंतामण तज काच सकल सम, पुद्गावधी लोत्रायो ॥ संतो० ॥ ५० ॥
 परवयाता इख पावत चेतन, पुद्गावधी लोत्रायो ॥ द्रम आरोपीत वंध विचारत, मर-
 कट मूली न्यायो ॥ संतो० ॥ ५१ ॥ पद्गावधी

हीत ॥ चड गतिमां त्रटकत निसदिन इम, जेम त्ररनिधिसां पीत ॥ संतो० ॥ ५९ ॥
 जड लक्षण परगट जे पुद्गल, तास मर्म नवि जाणे ॥ सदिरा पान लक्ष्यो जिम मद्यप,
 स्व पर नवि पिवाणे ॥ संतो० ॥ ५३ ॥ जीव अरूपी रूप धरतते, परपरणित परसंग ॥
 वज्ररतनमां डक जोग जिम, दर्शत नानारंग ॥ संतो० ॥ ५४ ॥ निज गुण त्याग राग
 जपरथी, धरगहत अशुभ दल शोक ॥ शुद्ध रुधिर तज गंधो लोहि, पान करत जिम
 जोक ॥ संतो० ॥ ५५ ॥ जड पुद्गल चेतनकुं जगमें, नानानाच नचावे ॥ बावी खात वाधकु
 यारो, ए अचरिज मन आवे ॥ संतो० ॥ ५६ ॥ ज्ञान अनंत जीवनो निजगुण, ते
 पुद्गल आवरीड ॥ जे अनंत शक्तिनो नायक, ते इण कारण करीयो ॥ संतो० ॥ ५७ ॥
 चेतनकुं जे पुद्गल निसदिन, नानाविध डख आवे ॥ पण पिंजरगत नाहरनी परे,
 जोर कडू नवि चावे ॥ संतो० ॥ ५८ ॥ इतने परत्री चेतनकुं, पुद्गलको संग सुहावे ॥
 रोगीनर जिम कुपथ्य करीते, मनमां हरखीत आवे ॥ संतो० ॥ ५९ ॥ जात पात कुल
 न्यातनकुं, नाम गाम नवि कोथ ॥ पुद्गल संगे नाम धरावत, निज गुण सधरो खोय
 ॥ संतो० ॥ ६० ॥ पुद्गलके वस दावत चावत, पुद्गलके वश बोले, कडूक वेला टंक
 टंक जूर, कडूक नयण न खोले ॥ संतो० ॥ ६१ ॥ मन गमता कडूं जोग जोगेचे,
 सुख सिद्ध्यामें सोवे ॥ कडूंक तूर्या तरस्या वाहर, पड्या गलीमें रोवे ॥ संतो० ॥ ६२ ॥
 इद्रगल वस एकडी बडू, पंचेडी पण पावे ॥ लेख्यावंत जीव जे जगमें, पुद्गल संग
 ॥ संतो० ॥ संतो० ॥ ६३ ॥ चवदे गुणथानक मारणा, पुद्गल संगे जाणो ॥ पुद्गल

विषयराचतनमें, त्रेद नाव नवि आणो ॥ संतो० ॥ ६४ ॥ पाणी माहे गळे जे वस्तु,
 लिख अगन संयोग ॥ पुद्गल पिंड जाण ते चेतन, त्याण हरख अरु शोण ॥ संतो०
 ॥ ६५ ॥ वाया आकृति तेज द्युति सहु, पुद्गलके परजाय ॥ सडन पडन विक्रस धर्म
 ए, पुद्गलको कहेवाय ॥ संतो० ॥ ६६ ॥ मीढ्या पिंड जेदने बंधे, अरु काले विखर
 जाय ॥ चरम नयन करी देखीए ते, सहु पुद्गल कहेवाय ॥ संतो० ॥ ६७ ॥ चउद
 राजलोक घृत घट जिम, पुद्गल इव्ये त्रीये ॥ खंड देस परदेस त्रेद तस, परमाणु
 जिन करीये ॥ संतो० ॥ ६८ ॥ नित्य अनित्यादिक जे अंतर, पद समान विशेष ॥ स्वाद-
 वाद समऊणनी शैली, जिन वाणीये देख ॥ संतो० ॥ ६९ ॥ पुरण गलण धर्मधी पुद्ग-
 ल, नाम जिणद वखाणे ॥ केवलनाण परजाय अनंती, चार ज्ञान नवि जाणे ॥ संतो०
 ॥ ७० ॥ शुभ्रधी अशुभ्र अशुभ्रधी जे शुभ्र, सूख स्वभाव वाय ॥ धर्म पाळटण पुद्ग-
 लनो एम, सतगुरु द्वियो वताय ॥ संतो० ॥ ७१ ॥ अष्ट वर्गणा पुद्गल केरी, पामी
 तास संजोग ॥ त्रयो जीवकुं एम अनादी, बंधण रूपी रोग ॥ संतो० ॥ ७२ ॥ गहत
 वरगणा पुद्गल केरी, शुभ्र परिणामे जीव ॥ अशुभ्र अशुभ्र परिणाम जोगधी, जाणो
 एम सदीव ॥ संतो० ॥ ७३ ॥ शुभ्र संयोगे पुन्य संचवे, अशुभ्र संयोगधी पाप ॥ लहत
 विशुद्धभाव जव चेतन, समजे आपदी आप ॥ संतो० ॥ ७४ ॥ तीन चुवनमें देखीये
 सहु, पुद्गलका विवहार ॥ पुद्गल विण कोउ सिद्ध रूपमे, दूरसत नहि विकार ॥
 संतो० ॥ ७५ ॥ पुद्गलकुं महल मावीये, पुद्गलकुं सहेज ॥

नारको तेषी, सुख विवसत धर हेज ॥ संतो० ॥ ७६ ॥ पुद्गल पिंड धारके चेतन,
 नूपति नाम धरावे ॥ पुद्गल खलषी पुद्गल उपर, अहनिश हुकम चलावे ॥ संतो० ॥
 ॥ ७७ ॥ पुद्गलहुंके वख आनूषण, तेषी नूपित काया ॥ पुद्गलहुंका चामर वत्र,
 सिंहासन अजव वनाया ॥ संतो० ॥ ७८ ॥ पुद्गलहुंका किंदा कोट अरु, पुद्गल
 हुंकी खाई ॥ पुद्गलहुंका दारु गोला, रचय तोप बनाई ॥ संतो० ॥ ७९ ॥ पर पुद्-
 गल राग अह चेतन, करता महासंग्राम ॥ खेव बल कल करी इम चित्तें, राखुं आपणा
 नाम ॥ संतो० ॥ ८० ॥ ऋषि सिद्धि के गढ तोडी, जोडी अगम अपार ॥ पण ते पुद्-
 गल द्रव्यशुं नावे, विणसत लागे न वार ॥ संतो० ॥ ८१ ॥ अशिर वस्तु संयोग
 वियोगे, हरख शोक चित्त धारे ॥ अश्वीर वस्तु श्रीर होये किम, इणि विध नवि विचार
 ॥ संतो० ॥ ८२ ॥ जा तनको मन गर्व धरत है, दिनदिन रुप निहार ॥ तो ते पुद्गल
 पिंड पलकमें, जल बल होवे वार ॥ संतो० ॥ ८३ ॥ इणिविध ज्ञान द्वियेमें धारी,
 गरव न कीजे मित ॥ अशिर सत्ताव जाण पुद्गलको, तजो अनादी रीत ॥ संतो०
 ॥ ८४ ॥ परमात्माशी नेह निरंतर, लावो त्रिकरण शुध ॥ पावो गुरुगम ज्ञान सुधारस,
 पुरव परे अशिरुध ॥ संतो० ॥ ८५ ॥ ज्ञान ज्ञान पूरण घट अंतर, थया जिहां पर-
 कास ॥ मोह निसाचर तास ते देखो, नावा अई उदास ॥ संतो० ॥ ८६ ॥ नेदज्ञान
 अंतर दग धारी, परिहर पुद्गल राज ॥ खीर नीरकी त्रिभता जिम, दिनमें करत मराज
 ॥ संतो० ॥ ८७ ॥ एहवा नेद लखी पुद्गलका, मन संतोष धरीजे ॥ इण लाज

सुख इव अवसरमें, दुर्ष शोक नवि कीजे ॥ सतो० ॥ ८८ ॥ जो उपजे सो तुं नांहिं,
 अरु विणसे सो तुं नाहि ॥ तुं तो अचल अकल अविनाशी, समऊ देख दिवमांहि ॥
 सतो० ॥ ८९ ॥ तन मन वचनपणे जे पुद्गल, बाह्य अनंती धार्या ॥ वन्या आहार
 अज्ञान मोह्यी, फिरफिर लागत प्यारा ॥ सतो० ॥ ९० ॥ धन धन ते जगमें प्राणी,
 जे नित रहत उदास ॥ शुद्ध विवेक हियेमें धारी, करे न परकी आस ॥ सतो० ॥ ९१ ॥
 धन धन जगमें ते प्राणी, जे धट समता आणे ॥ वाद विवाद हिए नवि धारे, परमारथ
 पंथ जाणे ॥ सतो० ॥ ९२ ॥ धन धन ते जगमें प्राणी, जे गुरु वचन विचारे ॥ अष्ट
 दयाना मर्म लहीने, आत्मकाज सधारे ॥ सतो० ॥ ९३ ॥ धन धन ते जगमें प्राणी,
 जेह प्रतिज्ञा धारे ॥ प्राण जाये पण नवि मूके, शुद्ध वचन अनुसारे ॥ सतो० ॥ ९४ ॥
 एम विवेक हिरदेमें धारी, स्व पर जाव विचारो ॥ कया जीव ज्ञान दग देखत, अहि
 कंचुकी जिम न्यारो ॥ सतो० ॥ ९५ ॥ गत्रादिक इख वार अनंति, पुद्गल संगे पायो ॥
 पुद्गल संग निवार पदकमें, अजरामर कहेवायो ॥ सतो० ॥ ९६ ॥ राग जाव धारत
 पुद्गलधी, जे अविवेकी जीव ॥ पाय विवेक राग तजी चेतन, बंधण विगत सदीव ॥
 सतो० ॥ ९७ ॥ कर्मबंधनो हेतु जीवकुं, राग द्वेष जीन नाखे ॥ तजी राग अरु रोप
 दीयेथी, अनुभव रस कोउ चाखे ॥ सतो० ॥ ९८ ॥ पुद्गल संग विना चैतनमें, कर्म
 कलंक न होई ॥ जिम वायु संग विना जल, मांहि तरंग न होई ॥ सतो० ॥ ९९ ॥
 जीव अजीव तत्त्व त्रिभुवनमें, जुगल जिनेभर नाखे ॥ अवर तत्त्व जे सप्त रहे ते.

संजोगिक जिन दाखे ॥ संतो० ॥ १०० ॥ गुण पर्याय डव्य दीजेके, जूदा जूदा दरसाया ॥
 ये समग्रण के दीध उतरी, ते तो निजवर आया ॥ संतो० ॥ १०१ ॥ नेद पंच सत
 अधिक तरेसठ, जीव तणे जे कहीधें ॥ ते पुद्गल संजोगधकी, व्यवहारे सरदहीधे ॥
 संतो० ॥ १०२ ॥ निदचें नय चिडुप डव्यमे, नेद जाव नहि कोइ ॥ वंध अवंधक
 तीनय परबधी, इण विध जाणो दीय ॥ संतो० ॥ १०३ ॥ नेद पंच शत तास अधिक,
 रूपी पुद्गलके जाणो ॥ तिस अरूपी डव्य तणो जिन, अणमधी मन आणो ॥ संतो०
 ॥ १०४ ॥ पुद्गल नेद जाव इम जाणी, पर परख राग निवारो ॥ शूद्र रमणता रूप
 बोध ए, अंतरगत सदा विचारो ॥ संतो० ॥ १०५ ॥ रूप अरूप रूपांतर जाणी, आणी
 अतुल विवेक ॥ तद्गति देश विनता धारे, सो झाला अतिरेक ॥ संतो० ॥ १०६ ॥
 धार दीनता वव वव वार्द, खल जाव विसर्द ॥ अवागमन नहि जिण शानक,
 रहियु तिहां समार्द ॥ संतो० ॥ १०७ ॥ बाल ख्याल रचियो जे अनुपम, अल्पमति
 अनुसार ॥ बालजीवकु अति जपगारी, चिदानंद सुखकार ॥ संतो० ॥ १०८ ॥ इति
 श्री पुद्गल गीता संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्री आदीश्वर विनति प्रारंभः ॥ ॥ सुण जिन-
 वर शैवुंजा धणी जी रे, दास तणी अरदास ॥ तुज आगल बालक परें जी रे, हुं तो
 करु वेखास रे, जिन जी रे, मुज पापीने तार ॥ १ ॥ तुं तो करुणा रस चर्यो जी रे,
 तुं सहुने हितकार रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ हुं अवगुणो ओरडो
 जी रे, गुण तो नहिं वववेश ॥ परगुण पेखी नवि शकुं जी रे, किम संसार तेरेश

रे ॥ जीनजी रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ जीव तणा वध में कर्मा जी रे, बोट्या मृषा वाद ॥ कपट
 कसी पर धन हर्षा जी रे, सेव्या विषय सवाद रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हुं लंपट
 हुं दावची जी रे, कर्म कीयां केइ कोनि ॥ त्रण युवनमां को नहिं जी रे, जे अघे
 मुज जोड रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ विड परायां अहो निशें जी रे, जोतो रहुं जग-
 नाथ ॥ कुगतिनी संगति कसी जी रे, जोड्यो तेहशुं साध रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ कुमति
 कुटिल कदाप्रही जी रे, बांकी गति मति मुज ॥ बांकी करणी माहरी जी रे, शी संज-
 दाहुं तुज रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ पुण्य विना मुज प्राणीयो जी रे, जाणे मेहुं
 रे आथ ॥ उंचा तरुवर मोरिया जी रे, त्यांहि पसारे हाथ रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ७ ॥
 विण खाधा विण जोगव्या जी रे, फोगट कर्म वंधाय ॥ अर्तध्यान सिटे नहि जी रे,
 कीजे कवण जपाय रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ काजलथी पण श्यामला जी रे, मारा
 मन परिणाम ॥ स्वप्ना मांहे ताहरु जी रे, संजारं नहि नाम रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥
 १० ॥ सुभ्य लोक ठगवा जणी जी रे, करं अनेक प्रपंच ॥ कुड कपट हुं केजवी जी
 रे, पाप तणो करं संच रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १० ॥ मन चंचल न रहै किमे जी रे,
 राचे रमणीने रूप ॥ काय विटंवना शी कहुं जी रे, पडीया हुं उर्गति कूप रे ॥ जिनजी
 रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ किस्था कहुं गुण माहारा जी रे, किस्था कहुं अपवाद ॥ जिम जिम
 संजारु द्विये जी रे, तिम बाधे विख वाद रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ गिरुवा ते नवि
 देखे जी रे, निगुण सेवकनी वात ॥ नीच तणे पण मंदिरे जी रे, चंड न दाखे चात रे ॥

जिनजी रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ त्रिगुणो तोपण ताहरो जी रे, नाम धरावुं रे दास ॥ कृपा
 करी संत्रावजो जी रे, पूरजो मुज मन आश रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
 पापी जाणी मुज त्रणी जी रे, मत मूर्को रे विसार ॥ विष हवाहल आदर्शो जी रे,
 ईश्वर न तजे तास रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ उत्तम गुणकारी हुवे जी रे, स्वार्थ विना
 सुजाण ॥ कर्षण सिंचे सर त्रे जी रे, मेह न मार्गोदाण रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १६ ॥
 तु उपगारी गुणनिवो जी रे, तुं सेवक प्रतिपाव ॥ तुं समरथ सुख पूरवा जी रे, कर
 माहारी संत्राव रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ तुजने शुंकदीये घणुं जी रे, तुं सहु वाते
 रे जाण ॥ मुजने थाजो साहिवा जी रे, त्रव त्रव ताहरी आण रे ॥ जिनजी रे ॥ सु०
 ॥ १८ ॥ नात्रिरथ कुल चंदवो जी रे, मारुदेवीनोरे नंद ॥ कहे जिनदर्ष निवाजजो जी
 रे, देजो परमानंद रे ॥ जिनजी रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ ॥ इति आदिश्वर विनति संपूर्ण ॥ ॥ अथ
 द्वितीय आदिश्वरजीनी विनति प्रारभ्यते ॥ ॥ वे करजोडी विनहुं जी, सुण स्वामी
 सुविदीत ॥ कूड कपट मूर्की करी जी, वात करुं अपवित्त ॥ १ ॥ कृपानाथ, मुज
 विनति अवधार ॥ ए आंकाणी ॥ तुं समस्त त्रिगुवन धणी जी, मुजने इस्तर
 तार ॥ कृपा० ॥ १ ॥ त्रवसापर त्रमता थकां जी, दीठां डःख अनंत ॥ त्राप्य संयोगे
 त्रेटिया जी, त्रयत्रंजन त्रभवंत ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ जे डःख त्रांजे आपणां जी,
 तेहने कदीये डःख ॥ परडःख त्रंजन तुं सुएयो जी, सेवकने थो सुख ॥ कृपा० ॥ ४ ॥
 आलोपण दीधा परी जी, जीव रुवे संसार ॥ रूपी लखमणा महासती जी, एह

सुणो अधिकार ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ तिण तुज अणवल आपणुं जी, पाप आदोखं
 आज ॥ मा वाप अणवल वोदतां जी, वादक केही लाज ॥ कृपा० ॥ ६ ॥ जिनधर्म
 जिनधर्म सहु कहे जी, स्यापे आपणी वात ॥ समाचारी जूजूइ जी, संशय पडे
 मिथ्यात ॥ कृपा० ॥ ७ ॥ जाण अजाण पणे करी जी, बोध्या उत्सव्य वोव ॥ रत्ने काण
 उभावतां जी, हार्यो जन्म निटोव ॥ कृपा० ॥ ८ ॥ जगवंत ज्ञांर्यो ते किहां जी, किहां सुज
 करणी एह ॥ गज पाखर खर किम सहे जी, सबद विमासण एह ॥ कृपा० ॥ ९ ॥
 आप परहुं आकरो जी, जाणे लोक महंत ॥ पण न करुं परमादियो जी, मास शेष
 दृष्टांत ॥ कृपा० ॥ १० ॥ काद अनंतें में लहां जी, तीन रतन श्रीकार ॥ पण प्रमाद
 पाडिया जी, किहा जइ करु हुं पुकार ॥ कृपा० ॥ ११ ॥ जाणुं उल्कृष्टी करुं जी, जयत
 करुं विहर ॥ धीरज जीव धरे नहिं जी, पोतें बहुलसंसार ॥ कृपा० ॥ १२ ॥ सहज
 पड्यो सुज आकरो जी, न गमे रुडी वात ॥ परनिदा करतां भकां जी, जाये दिन ने रात
 ॥ कृपा० ॥ १३ ॥ क्रिया करतां दोहियो जी, आवास आणे जीव ॥ धर्मपखे धंधे पड्यो
 जी, नरकें करशे रीव ॥ कृपा० ॥ १४ ॥ अणहता गुण को कहे जी, तो हरखुं निशि
 दीस ॥ को हित शीख जली दिये जी, तो मन आणुं रीश ॥ कृपा० ॥ १५ ॥ वाद
 जणी विद्या जण्यो जी, पर रंजण उपदेश ॥ मन संवेग धर्यो नहिं जी, किम संसार
 तेरेश ॥ कृपा० ॥ १६ ॥ सुज सिद्धांत बखाणतां जी, सुणतां कर्म विपाक ॥ कृण एम
 मनमें उपजे जी, सुज मर्कट बैराग ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ जिविध जिविध करी उच्चरुं जी, जगवंत

तुमारी दृजूर ॥ वार वार नाजुं वली जी, बूटक वारो दूर ॥ कृपा० ॥ १८ ॥ आप काज
 सुख राचतां जी, कीधा अरंज कोडि ॥ जयणा न कीधी जीवनी जी, दीधी द्या परि ठोड
 ॥ कृपा० ॥ १९ ॥ वचन दीप व्यापक कहां जी, दारया जे अनर्थ दड ॥ कूड कपट
 बहु केलवी जी, बत कीधां शत खंड ॥ कृपा० ॥ २० ॥ अणदीधुं तीधुं जेहनं जी,
 तेह अदत्तादान ॥ ते दुषण लाग्यां घणां जी, गणतां न आवे ज्ञान ॥ कृपा० ॥ २१ ॥
 चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप ॥ काम विटवणा श्री कहुं जी, तुं जाणे एह
 स्वरूप ॥ कृपा० ॥ २२ ॥ माया ममता मांहि पड्यो जी, कीधो अधिको दोत्र ॥ परिग्रह
 मेल्यो कारिमो जी, न चढी सयम शोत्र ॥ कृपा० ॥ २३ ॥ लाग्या सुजने लावचे जी,
 रात्रि जोजन दोष ॥ में मन सूख्यं मोकडुं जी, न धर्यो मन संतोष ॥ कृपा० ॥ २४ ॥
 ए त्रव परत्रव दूहल्या जी, जीव चोरवाही लाख ॥ ते सुज मित्राडकूडं जी, त्रगवंत
 तोरी साख ॥ कृपा० ॥ २५ ॥ कर्मादान पनरे कहां जी, प्रगट अढारे पाप ॥ जे में
 सेव्यां ते हवे जी, वगसवगस मा वाप ॥ कृपा० ॥ २६ ॥ सुज आधार वे एटवो जी,
 सदहणा वे शुख ॥ जिनधर्म मीठो मन गमे जी, जिम साकरशुं दूध ॥ कृपा० ॥ २७ ॥
 कृपन देव तुं राजियो जी, शत्रुजय गिरि शणगार ॥ पाप आलोयां में आपणां जी,
 कर प्रभू मोरी सार ॥ कृपा० ॥ २८ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥
 मन शुख मित्रासि डकनं जी, देतां हरित पलाय ॥ कृपा० ॥ २९ ॥ तुं गति तुं मति
 तुम धणी जी, तुं साहिव तुं देव ॥ आणा धरं शीर ताहरी जी, त्रव त्रव मानुं तोरी सेव

॥ कृपा० ॥ ३० ॥ कलश ॥ एम चदिय शत्रुजय, चरण नेत्र्या, नात्रि नंदन, जिन
 तणां ॥ करजोडी आदि, जिनेंद्र आगे, पाप आलोयां, आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद्र, सुरी
 सहुरु, प्रथम शिष्य, सुजस घणे ॥ गणि सकल चंद्र सु, शिष्य वाचक, समय सुंदर,
 गुण धुणे ॥ ३१ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सुगुरु पच्चीशी प्रारंभः ॥ ॥ सुगुरु
 पीवाणो एणे आचारं, समकित जेहनुं शुध जी ॥ ए आंकणी ॥ कहेणी करणी एकज
 सरखी, अहर्निश धर्म विबुध जी ॥ सुगुरु० ॥ १ ॥ निरतिचार महाव्रत पावे, टावे
 सधला दोष जी ॥ चारित्र्यशुं लय लीन रहं नित्य, चित्तमां सदा संतोष जी ॥ सुगुरु०
 ॥ २ ॥ जीव सहुना जे ठे पीयर, पीडे नहीं खटकय जी ॥ आप वेदन पर वेदन सरखी,
 न दणे न करे घाय जी ॥ सुगुरु० ॥ ३ ॥ मोह कर्मने जे वश न पडे, निरागी निरमाय
 जी ॥ जयणा करतो हदुये चावे, पूंजी सूके पाय जी ॥ सुगुरु० ॥ ४ ॥ अरहो परहो
 दृष्टि न देखे, न करे चावलां वात जी ॥ दूषण रहित सृजतो देखे, तो विये पाणी ज्ञात
 जी ॥ सुगुरु० ॥ ५ ॥ नख दूषा पीड्या डख पीडे, वूटे जो निज प्राण जी ॥ तो पाण
 अशुध आहार न लेवे, जिनवर आण प्रमाण जी ॥ सुगुरु० ॥ ६ ॥ अरस निरस
 आहार गवेपे, सरस तणी नहीं चाह जी ॥ इम करतां जो सरस मवे तो, हरख नहिं
 मन मांह जी ॥ सुगुरु० ॥ ७ ॥ शीतकावें शीते तनु सूके, उनावे रवि ताप जी ॥ विकट
 परिसह घट अहीयासे, नाणे मन संताप जी ॥ सुगुरु० ॥ ८ ॥ मारे कूटे करे उपज्य,
 कोह कवक ये शीश जी ॥ कर्म तणा फल जाणी नहीं

सुगुरु० ॥ ९ ॥ मन वच काया जे नवि दंडे, वंडे पांच प्रमाद जी ॥ पंच प्रमाद संसार
 वधारे, जाणे ते नि.स्वाद जी ॥ सुगुरु० ॥ १० ॥ सरल स्वप्नाव प्राव मन रूडो, न
 करे वाद विवाद जी ॥ चार कपाय करमना कारण, वरजेमद जनमाद जी ॥ सुगुरु० ॥ ११ ॥
 पापस्थान अटारे वरजे, न करे तास प्रसंग जी ॥ विकथा सुखशी चार निवारे, समिति
 गुणतिशुं रंग जी ॥ सुगुरु० ॥ १२ ॥ अंग उपांग सिन्धांत वखाणे, शे सुथो उपदेश जी ॥
 सूधे मारगें चाले चलावे, पंचाचार विशेष जी ॥ सुगुरु० ॥ १३ ॥ दशाविध यति धर्म
 जिन चांख्या, तेहनां धारण द्वार जी ॥ धर्मथकी जे किमहि न चूके, जो दोषे कोडि
 प्रकार जी ॥ सुगुरु० ॥ १४ ॥ जीव तणी हिंसा जे न करे, न वदे मिरषावाद जी ॥
 तण मात्र अणदीधुं न दीधे, सेवे नही अवह्व जी ॥ सुगुरु० ॥ १५ ॥ नवविध
 परिग्रह मूल न राखे, निशि जोजन परिहार जी ॥ क्रोध मान माया ने ममता, न करे
 दोष लगार जी ॥ सुगुरु० ॥ १६ ॥ ज्योतिष आगम निमित्त न चांखे, न करावे अपारंज
 जी ॥ औषध न करे नाडी न जूवे, सदा रहै निरारंज जी ॥ सुगुरु० ॥ १७ ॥ डाकिणी
 शाकिणी नूत न काढे, न करे हलवो हाथ जी ॥ मंत्र यंत्रने राखमी करीते, नवि आपे पर-
 मार्थ जी ॥ सुगुरु० ॥ १८ ॥ विचरे गाम नगर पुर सधवे, न रहै एकण ठाम जी ॥
 चोमासा ऊपर चोमासुं, न करे एकण ग्राम जी ॥ सुगुरु० ॥ १९ ॥ चाकर नफर पासे
 न राखे, न करावे क्रोड काज जी ॥ न्हावण धोवण वेस वनावण, न करे शरीरनी
 साज जी ॥ सुगुरु० ॥ २० ॥ व्याज वटातुं नाम न जाणे, न करे वणज व्यापार जी ॥

धर्मं ह्यट मांडीने वेठा, वण्णिज ठे पर उपकार जी ॥ सुगुरु० ॥ १२ ॥ ते गुरु तरे अवराने
 तारे, सायरमा जिम जहाज जी ॥ काष्ट प्रसंगे दोहू तरे जिम, तेम गुरु संगते योग्य जी ॥
 सुगुरु० ॥ ११ ॥ सुगुरु प्रकाशक दोचन सरिखा, ज्ञान तणा दातार जी ॥ सुगुरु
 दिपक घट अंतर केरा, दूर करे अंधकार जी ॥ सुगुरु० ॥ १३ ॥ सुगुरु अमृत सरिखा
 शीवा, दिये अमरगति वास जी ॥ सुगुरु तणी सेवा नित्य करतां, वुटे करमनो पास
 जी ॥ सुगुरु० ॥ १४ ॥ सुगुरु पचीशी श्रवण सुणीने, करजो सुगुरु प्रसंग जी ॥ कहे
 जिनहरख सुगुरु सुपसाये, ज्ञान हरख उजरंग जी ॥ सुगुरु० ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री
 सुगुरु पचीशी समाप्त ॥ ॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ स्वधरा वृत्तम् ॥ सङ्गत्या
 देवलोके रविशशिनवने, व्यंतराणां तिकाये ॥ नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपदवे, तार
 काणा विमाने ॥ पाताले पद्मर्षे रफुटमणिकरणे, ध्वस्तसांडांधकारे ॥ श्रमतीर्थकराणां
 प्रतिदिवसमहं, तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताड्ये सेरुशृंगेरुचकगिरिवरे, कुंडले हस्तिदत्ते ॥
 वस्कारे कूटनंदीश्वर कनक गिरौ, नैपथे नीलवंते ॥ चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे,
 चक्रवाले हिमाडौ ॥ श्रीम० ॥ १ ॥ श्रीशैले विध्यशृंगे विमलगिरिवरे, ह्यवुंदे पावके वा ॥
 समंते तारके वा कुलगिरिशिखरे, ऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सहाडौ वोजयते विपुलगिरिवरे,
 गुर्जरे रोहणाडौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्लितितटमुकुटे, चित्रकूटे त्रिकूटे ॥
 लाटे नाटे च धाटे विटपिबनतटे, देवकूटे विराटे ॥ कण्ठि हेमकूटे विकट तरकटे, चक्रकूटे
 च जोटे ॥ श्रीम० ॥ ४ ॥ श्रीमले मालवे वा मलयजानिखले, मेखले पिबले वा ॥

नेपात्वे नाहत्वे वा कुवलय तिलके, सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलित
 मल्लि, जंगले वा तमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वगे कर्दिगे सुगतजनपदे, सत्स-
 यगे तिलगे ॥ गौडे चौडे सुरडे वरतरत्रविडे, उडियाणे च पुंडे ॥ आर्दे माई पुलिंडे
 जवड कुवलये, कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्रीम० ॥ ६ ॥ चंपायां चंडमुख्यां गजपुर मथुरा,
 पत्तने चोज्जविन्यां ॥ कौशांडया कोशलायां कनकपुरवरे, देवगिर्यां च काश्यां ॥ नाशिक्ये
 राजगहे दशपुरनगरे, त्रहिवे तामलिस्यां ॥ श्रीम० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्यैतरिके गिरि-
 शिखर वहे, स्याण्दीनीरतीरे ॥ शैलाये नागतोके जलनिधिपुदिने, प्ररुहाणा निकुंजे ॥
 ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे, दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्रीमन्मेरो
 कुलाडौ रुचकनगवरे, शाटमलौ जंबुदक्षे ॥ चौजान्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके, कौडले
 मानुषाके ॥ इक्षुकारेजिनाडौ दधिमुखचणिरौ, व्यंतरे स्वर्गलोके ॥ ज्योतिर्लोके प्रवति
 त्रिभुवनवलये (पाठांतरं त्रुवनमहत्तले) यानि चैत्यालयाति” ॥ श्रीम० ॥ ९ ॥ इहं श्री-
 जैन चैत्य स्तवन मतुदिनं, ये पठंति प्रवीणाः ॥ प्रोष्यत्कथाणहेतुं कलिसलहरणं,
 त्रक्तित्राजत्रिसंध्यं ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं, जायते मानवानां ॥ कार्याणां
 सिद्धिरुच्चः प्रसुदित मनसां, चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णं ॥
 अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ सुर किन्नर नागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिमज्जिनमजितं ॥
 संभवमज्जिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रभसुड्यवलयधीरमतिं ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्वजिनेज्जमहं,
 चंडप्रभमष्टकर्मदहं ॥ सुविधिप्रयुशीतल जिनयुगलं, श्रेयांसम संशयमतुलवचं ॥ २ ॥

प्रभुमर्चयन्पवसुपूज्यसुतं, जिनविमलमनंतमत्रिङ्गनतं ॥ नम धर्ममधर्मनिवारिणुणं, श्रीशां-
 तिमनुत्तर कांतिगुणं ॥ ३ ॥ कुंशु श्री अर मल्लीश्राजिनान्, सुनिश्रवतनमिनेमिस्तमसि दिनान्
 ॥ श्रीपार्श्वजितेंद्रमर्षेज्जतं, वंदे जिनवीरमन्त्रीरु तमं ॥ ४ ॥ कलश ॥ इति नागकिन्नरनर-
 पुरंदर, वंदितकमपंकजा, निर्जित महारिपु मोह मत्सर, मानभद्र मकरध्वजाः ॥ विद-
 संति सततं सकलमंगल, केतिकाननसन्निधाः ॥ सर्वोजिनामे हृदयकमले, राजहंससमप्रयाः
 ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णं ॥ ॥ अथ चैत्यवंदन प्रारभ ॥ ॥ श्रीसिद्ध चक्र
 आराधिये, आशो चैतर मास ॥ नव दिन नव आंविद करी, कीर्जे ओली खास ॥ १ ॥
 केसर चंदन घसी घणां, कस्तूरी वरास ॥ जुगते जिनवर पूजीया, मयणां मन उद्धास
 ॥ २ ॥ पूजा अष्ट प्रकारनी, देव वंदन त्रण काद ॥ संत्र जपे त्रण कादनो, गणुणुं तेर
 हजार ॥ ३ ॥ कष्ट टट्युं जवर तणुं, जपतां नवपद ध्यान ॥ श्री श्रीपाद नरींद थया, वाध्यो
 यमणो वान ॥ ४ ॥ सातसे महिपति सुख लह्या, पहेता जिन आवास ॥ पुण्ये मुक्ति
 वधू वर्या, पाम्या लील विवास ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ ॥ अथ चैत्यवंदन प्रारभः ॥
 वार गुण अरिहंतना, तेम सिद्धना आव ॥ ठत्रीश्रा गुण आचार्यना, ज्ञान तणा त्रंडार
 ॥ १ ॥ पचविश गुण जवचायना, साधु सत्यावीश्रा ॥ श्याम वर्णं तनु शोचता, जिन-
 शासनना ईश ॥ २ ॥ नाण नसुं एकावने, दर्शणना सडसड ॥ सितेर गुण चारित्रना,
 तपना वार प्रधान ॥ ३ ॥ एम नवपद, जुगते करी, तिन शत अड गुण थाय ॥ पूजे
 जे त्रविं प्रावशुं, तेनां पातक जाय ॥ ४ ॥ पूज्या मयणां सुंदरीधे, तेम नरपति

श्रीपाल ॥ पुण्ये मुक्ति सुख लक्षां, वरत्यां मंगलमल ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री
 वीरजिन चैत्यवंदन प्रारभः ॥ सिंशरथ सुत वंदिष्ये, त्रिशला देवी माय ॥ इत्री कुलमां
 ज्यवतर्था, प्रभु परम दयाल ॥ १ ॥ उजली ठठ आपाढनी, उत्तराफाल्गुनी सार, पुष्पो-
 तर वैमानथी, चविया श्रीजिन प्राण ॥ २ ॥ लक्षण अमहिय सहस ए, कचन वरणी
 काय ॥ मृगपति लंवन पाजले, वीर जिणेशर राय ॥ ३ ॥ चैत्र शुदि तेरश दिने,
 जनम्या श्री जिनराय ॥ सुर नर मली सेवा करे, प्रभुनु जनम कल्याण ॥ ४ ॥ मागशिर
 वदि दशमी दिने, विषे प्रभु संयम तार ॥ चजनाणी जिनजी श्या, करवा जग उपकार
 ॥ ५ ॥ साडवार वरसां लग्गे, सह्या परिसह घोर ॥ धनघाती चज कर्म जे, वज कर्षा
 चकचूर ॥ ६ ॥ वैशाख शुदि दशमी दिने, ध्यान सुकल मन ध्याय ॥ शाढी वृक्षले
 प्रभु, पाभ्या पंचम नाण ॥ ७ ॥ संघ चतुर्विध थापावा, देशना दे महावीर ॥ गौतम आदे
 गणधरु, कर्षा वजीर हजूर ॥ ८ ॥ कार्तिक कृष्ण अमवास दिन, श्रीवीर लहं निर्वाण ॥
 प्रभाते इज्जुतिने, आप्यु केवल ज्ञान ॥ ९ ॥ ज्ञानगुणे दीवा कर्षा, कीर्त्ति कमला सार ॥
 पुण्ये मुक्ति वधू वर्या, वरत्यां मंगलमल ॥ १० ॥ ॥ इति दीवादी चैत्यवंदन ॥ अथ
 श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन प्रारभः ॥ शांतिकरण प्रभु शांति जी, अचिरा राणीनो नंद ॥
 विश्वसेन रायकुलतिलक, अमिय तणो ए कद ॥ १ ॥ धनुष चादिशनी देहनी, लाख
 वरषनुं आय ॥ मृगलंवन विराजता, सेवन सम काय ॥ २ ॥ शरणे आप्यो परेवडो,
 जीवदया प्रतिपाल ॥ राख राख तुं राजवी, मुजने सिंचाणो खाय ॥ ३ ॥ जीवथी अधिक

पारवडो, राख्यो तें जूनाथ ॥ देवमाया धारण समे, न चल्या मेघरथ राय ॥ ४ ॥ दयाशी
 दो पदवी लही, शोलमा शांतिनाथ ॥ पुण्यें सिद्धि वधू वर्धा, सुक्ति हाथो हाथ ॥ ५ ॥
 ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ ॥ अथ क्षमादात्रजी कृत नवपदनां नव चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥
 तत्र प्रथम अरिहतपद चैत्यवंदन प्रारभ्यते ॥ उषन्न सन्नाण महो मयाणं, सव्यानि-
 हरा सण संठियाण ॥ सदेसणाणं दिवस ज्ञाणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥
 नमोनंत संत प्रमोद प्रधान, प्रधानाय त्रव्यात्मने त्रास्वताय ॥ शया जेहना ध्यानशी
 सौख्यत्राजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कर्षो कर्म छःकर्म चकचूर जेणें,
 त्रजा त्रव्य नवपद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना त्रव्य त्रावें त्रिकावें, सदा वासियो
 ज्ञातमा तेण कावें ॥ ३ ॥ छिके तीर्थकर कर्म उदयें करीने, दिये देशना त्रव्यने हित
 धरीने ॥ सदा ज्ञात महापाणिहरें समेता, सुरेशें नरेजें स्तव्या ब्रह्मपुता ॥ ४ ॥ कर्षो
 वातियां कर्म चारे अलगा, त्रवोपग्रही चार जे ठे विदग्धां ॥ जगत् पंच कल्याणके
 सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थकरा मोदू कामें ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ द्वितीय सिद्ध-
 पद चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ सिद्धाण माणंद रमाजयाणं, नमो नमोऽणंत चउकयाणं ॥
 करी ज्ञात कर्मदयें पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि त्रय जेणें वाम्या ॥ निरावरण जे
 ज्ञात्म रूपे प्रसिद्धा, शया पार पामी - सदा सिद्ध हुद्धा ॥ १ ॥ त्रिभगोनेदेहा वगा-
 दात्मदे शा, रहा ज्ञानमय जातिवर्णादि वेडा ॥ सदान्त सौख्या श्रिता ज्योतिरूपा.
 अनायाथ अपुनर्जवादि अज्ञान ॥ ॥ ॥ ॥

वंदन प्रारब्धते ॥ सूर्येण दूरीणकथ कुम्भहाण, नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥ नसु सूरराजा
 सदा तत्त्व ताजा, जिनेन्द्रागमे प्रौढ साम्राज्यभ्राजा ॥ षड् वर्ग वर्णित गुणे शोभमाना,
 पचाचारने पादवे सावधाना ॥ १ ॥ त्रविप्राणीने देशना देशकादें, सदा अग्रमत्ता यथा
 सदा आदें ॥ ठिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा, जर्णे ते चिरंजीवजो शुद्ध जल्पा ॥ २ ॥
 ॥ इति ॥ ॥ अथ चतुर्थं श्री उववाप्यपदस्य चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ सुतत्र विहारण
 तत्परणं, नमो नमो वायग कुजराणं ॥ गणस्स साधारण सारयाण, सबरुक्काण वज्जिय
 महराण ॥ १ ॥ नहिं सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमुं वाचका त्यकमदमोहमाया ॥
 वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने, ठिके सावधाना निरुद्धात्रिमाने ॥ २ ॥ धरे पंचने वर्ण
 वर्णित गुणौघा, प्रवादि द्विपोहेदने तुल्य सिंघा ॥ गुणी गढ संधारणे रथ्यन्न्यूता,
 उपाध्याय ते वंदियें चित्प्रभूता ॥ ३ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पंचमः श्री साधुपदस्य
 चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ सादूण संसाहिय संजमाणं, नमो नमो सुद्ध दयादमाणं ॥ तिगुत्त
 गुत्ताण समाहियाणं, सुणीण माणंद पयाहियाणं ॥ १ ॥ करे सेवना सूरि वायग
 गणिनी, करं वर्णना, तेहनी शी सुणिनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुत्ता, त्रिगुत्तें
 नहिं काम जोगेषुत्तिता ॥ २ ॥ वलि बाह्य अर्यंतर ग्रंथि टाढी, हुवे सुक्तिनें योग्य
 चारित्र पाढी ॥ शुभ्राष्टागयोगे रमे चित्त वाढी, नमो साधुने तेह निज पाप टाढी ॥ ३ ॥
 ॥ इति ॥ ॥ अथ षष्ठ श्री दर्शनपदस्य चैत्यवंदन स्तवनानि प्रारंभः ॥ ॥ जिणुत्त
 तसे रुद्ध लक्काणस्स, नमो नमो निम्मल दसणस्स ॥ विपर्यास दूढ वासना रूपमिध्या,

दत्ते जे अनादि अठे जे मपथ्या ॥ जिनोके होये सहजथी श्रद्धधानं, कहियें दर्शनं तेह
 परमं निधानं ॥ १ ॥ विना जेहथी ज्ञान महानरूपं, चरित्रं विचित्रं त्रवारण्यकूपं ॥
 प्रकृति सातने उपशमे कथ ते होये, तिहा आप रूपें सदा आप जोये ॥ १ ॥ इति ॥ ॥
 ॥ अथ सतम श्री ज्ञानपदस्य चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ अत्राण संमोह तमोहरस्स, नमो
 नमो नाए दिवायरस्स ॥ १ ॥ होये जेहथी ज्ञानशुद्ध प्रबोधें, यथा वरण नासे विचि-
 त्रावबोधें ॥ तेषें जाणीयें वस्तु षड्व्य त्रावा, न हुवे वितत्ता (वाद) निजेत्ता
 स्वत्रावा ॥ १ ॥ होये पंचमत्यादि सुज्ञान भेदें, गुरुपास्तिथी योग्यता तेह वेदें ॥
 वली होये हेय जपादेयरूपें, लहे चित्तमा जेम ध्यांतप्रदीपें ॥ ३ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ
 अष्टम श्री चारित्रपदस्य चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ आरादि अखांडिय सक्रियस्य, एमो
 एमो सं जम वीरि अस्स ॥ वली ज्ञान फल चरण धरियें सुरंगें, निराश्रसता द्वारोध-
 प्रसंगे ॥ त्रवात्रोधिसतारणे यान तुल्यं, धरुं तेह चारित्र अत्रासमूल्यम् ॥ १ ॥ होये
 जास महिमाथकी रंक राजा, वली द्वादशांगी त्राणी होय ताजा ॥ वली पापरूपोऽपि
 निःपाप थाये, थर्द सिद्ध ते कर्मने पारजाये ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ अथ नवम श्रीतपःपद
 चैत्यवदन प्रारंभः ॥ ॥ कम्महुमोम्मूलण कुंजरस्स, नमो नमो तिथ तद्यो जरस्स ॥ १ ॥
 त्रिकातिकरणे कर्मकषाय टाले, निकाचितरणे वाधियां तेह वाले ॥ कह्युं तेह तप वाह्य
 अंतर्भेदे, कमा युक्त निर्देहु डध्यान वेदें ॥ १ ॥ होये जास महिमाथकी लडिय सिद्धि,
 अत्रावकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होये सिद्धि सिद्धि-

तिनी जिम संकेतें ॥ ३ ॥ इस्या नवपद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रुपता तेह
पावे ॥ वदी ज्ञानविमलादि गुणरत्न धामा, नसुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥४॥ इति ॥
॥ अथ श्रीपूर्णानंदमयंतुं चैत्यवदन प्रारम्भः ॥ ॥ पूर्णानंदमयं महोदयमय कैवल्य-
चिद्वनमय, रूपातीतमयं स्वरूपरमण स्वानाविकीश्रीमयं ॥ ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमय
स्याद्वादविद्यालयं, श्रीसिद्धाचलतीर्थराजमनिशं वदेहमादीश्वरं ॥ १ ॥ श्रीमद्युगादिश्वर
मातररूपं, योगीजगम्यं विमलाब्जसंस्थं ॥ सद्ज्ञानसच्चिष्टि सुदृष्ट लोकं, श्रीनात्रिसूनुं
प्रणमामि नित्यं ॥ २ ॥ राजादनाधस्तन त्रूमित्रागे, युगादिदेवांश्च सरोजपीठं ॥ देवेंद्र
वंशं नर राज्य पूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्द्धयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभोर्दाक्षिण दिग्-
विभागो, सहस्र कूटं जिनराजमूर्तिं ॥ सौम्याकृतिः सिद्धितती नित्राश्व, शत्रुंजयरथाः
परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रभोर्वक्त्रसरोरुहाश्च, विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ॥ योद्वाद-
शागी विदधे गणेशः, स पुंडरीको जयताडिवाद्गौ ॥ ५ ॥ चडहसाणं सयसंखगाणं,
वाक्सा सहिआण गणादि वाणं ॥ सुपाऊआ जह विसयमाणा, शत्रुंजयं त पणमामि
णिचं ॥ ६ ॥ चतठकम्मा परिणामरम्मा, दक्षपधम्मा सुगुणेहि पुणा ॥ चत्तारि अठा-
दस डद्धि देवा, अठावपे ताई जिणाइ वंदे ॥ ७ ॥ अणंतनाणीण अणंतदंसिणो, अणं-
तसुक्काण अणंतवीरिणो ॥ वीसं जिणा जह सिवंपवणा, संमेअसेवं तमहं शुणामि ॥८॥
जज्जेव सिधो पढमो सुनिंदो, गणाविहो पुंडरिजं वसिठो ॥ अणेणसाहू परिवार संजुळ,
तं पुंडरिआचलमंचयामि ॥ ९ ॥ विमलगरिवतंसः सिद्धिगंगावुवंशः, सकलसुखवि-

धाता दर्शनज्ञानदाता ॥ प्रणतसुरनरेंद्रः केवलज्ञानचंद्रः, स्रजतु सुद सुदारं नात्रिजन्मा-
जिनेंद्रः ॥ १० ॥ ॥ इति श्रीतीर्थधारिणस्तोत्रं महामहिमानिधानं गणधीशकृतं
संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्री जय जगतारण इक्ष्वाकुरण सुख० तुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ जय
जगत तारण इक्ष्वाकुरण सुखकारण जगधणी, परम ज्ञाव विदासि सर्वज्ञानन्द सिद्ध
महागुणी ॥ जिन नाम जपीयं पाप खपीयं लक्ष्मीयं कमला अतिघणी, प्रभु अजर अमर
निकलंक निरुपम आत्म क्रीडि तणा धणी ॥ १ ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव ज्ञाव ज्ञावित इव्य
पद जगमा रह्या, ते सकल केवल ज्ञान दर्शन ज्ञावे ते परगट लह्या ॥ ज्ञोभ्य ज्ञोक्ता
ज्ञाव ताहारे आत्मज्ञावे अति घणी, तुज ज्ञान ज्ञेयाकार प्रणमे पार लहे कुण तेह तणी
॥ २ ॥ पद्द्रव्यना पर्याय तुह्या स्वपर ज्ञेय जे ताहारा, जे कह्या प्रतिपर्यावि इणिपरे
कल्पनाप्य माहे लह्या ॥ जे ज्ञेयाकारे ज्ञान प्रणमे एह पण तुज परिणति, नयपदक ज्ञावे
तास चर्चा कोण जाणे तनुमती ॥ ३ ॥ समयान्तर वर ज्ञान दर्शन रमण जे प्रभु तुं
करे, तेहथी चिद् आनन्द संतति सादिनंत स्थितिधरे ॥ अकलरूप कवि शके कोण
ताहुरु त्रिभुवन धणी, तिणे प्रथम अंगे अपदने पद निषेधे गणधर गणी ॥ ४ ॥ तुं
नहि अरूपी नहिं रूपी रूपारूपी पण नहीं, तुं नही वाच्य अवाच्य ज्ञावे वाच्यावाच्य
ते सही ॥ ताहारा पद पुण्य सेवि विजय ते जगमां लहे, इम पास प्रभुनो सुजस रंगे,
कवि हेमसिधु करे ॥ ५ ॥ ॥ इति श्री पार्थनाथनुं चैत्यवंदन संपूर्णं ॥ ॥ अथ सिद्ध-
चलजीनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कवित त्रिभुवन हितकर ॥

सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंगा मंडण,
प्रवर गुणगण त्रूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ २ ॥
करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरावली नमो अहनिश, नमो ०
॥ ३ ॥ पुंडरिक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहर ॥ श्री विमलगिरिवर शृंगा
सिन्धु, नमो ० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर सुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ सुक्तिर-
मणी वर्धा रंगे, नमो ० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोकमांहि, विमलगिरिवर तो परं ॥ नहि
अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो ० ॥ ६ ॥ एम विमलगिरिवर शिखरमडण, इःखविह-
डण ध्याइये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति ने पाइये ॥ ७ ॥ जित मोह कोह
विजोह निजा, परम पद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहि-
तकरं ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ शत्रुंजय द्वितीय चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ श्री शत्रुंजय
सिद्धकेश, दीठे उर्गाति वारे ॥ त्राव धरीने जे चडे, तेने जवपार जतारे ॥ १ ॥ अनंत
सिन्धु एह ठाम, सकल तीर्थनो राय ॥ पूर्वनवाणु रिखनेदेव, ज्यां ठविआ प्रच्यु पाय
॥ २ ॥ सरज कुंड सोहामणो, कविड जक्क अत्रिराम ॥ नात्रिराया कुलमंडणो, जिनवर
करं प्रणाम ॥ ३ ॥ ॥ इति संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्रीपंचतीर्थतुं चैत्यवंदन ॥ आदिदेव
अरिहंत नसुं, समरुं तारु नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम
॥ १ ॥ शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नसुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजितनाथ, आहु
रिखन जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि उपरे, जिन चोवीशी जोग्य ॥ मणिमय मूरति मानसुं,

जरते जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिर तरिथवडुं, ज्यां विशे जिनपाय ॥ वैत्रारक गिरि
 जपरं, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजीयो, नामे देव सुपास ॥ रिखत्र
 कहे जिन समरता, पहेंचे मननी आश ॥ ५ ॥ ॥ इति सपूर्णं ॥ ॥ अथ चोवीस
 जिनना वर्णुं चैत्यवंदन ॥ पद्मप्रत्र ने वासुपूज्य, दोय राता कहीये ॥ चंद्रप्रत्रने सुवि-
 धिनाथ, दो उज्वल लहीये ॥ १ ॥ मल्लीनाथने पार्थनाथ, दो नीला निरख्या ॥ सुनिसु-
 वतने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥ २ ॥ शोले जिन कंचन समा ए, एवा जिन
 चोवीस ॥ धीरविमल पंडित तणो, ज्ञानविमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ ॥ इति सपूर्णं ॥
 ॥ अथ श्री चोवीश जिन समकित त्रवणतीनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ प्रथम तीर्थ-
 कर तणा हुवा, त्रव तेर कहीजे ॥ श्राति तणा त्रव वार सार, नव त्रव नेम लहीजे
 ॥ १ ॥ दश त्रव पाशजिणंदने, सत्तावीश श्री वीर ॥ शेष तीर्थकर त्रिहुं त्रवे, पाभ्या त्रव-
 जल तीर ॥ २ ॥ ज्याथी समकित फरसीहुं, त्याथी गणीए तेह ॥ धीरविमल पंडित
 तणो, ज्ञानविमल गुणगेह ॥ ३ ॥ ॥ इति सपूर्णं ॥ ॥ अथ श्री चोवीश तीर्थक-
 रनी राशीतनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ श्रांति नमी मल्ली मेप दे, कुंथु अजित वृष-
 त्राति ॥ संत्रव अत्रिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंद सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रत्र
 नेसि वीर, पास सुपास तुलाय ॥ शक्ती वृश्चिक धन रूपत्रदेव, सुविधि शीतल जिन-
 राय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए, वारमा घट मीन वील ॥ विमल अनंत अर-
 नामथी, सुखीया श्रीजुत्रवीर ॥ ३ ॥ ॥ इति सपूर्णं ॥ ॥ अथ श्री चंद्रकेवलीना

रासमांथी चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेसर जिनराज
 नमो ॥ प्रथम जिनसर प्रेमें पेलत, सिद्धां सधवां काज नमो ॥ अरिहंत ० ॥ १ ॥ प्रभु
 पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अपर अश्रुत अतिशय निधि,
 प्रभवत जलधि मयंक नमो ॥ अरिहंत ० ॥ २ ॥ तिहुयण प्रवियण जण मनवंतिय,
 पूरणदेव रसाव नमो ॥ ललि ललि पाय नसुं हुं प्रावि, करजीडीने त्रिकाव नमो ॥
 अरिहंत ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन, नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर
 नरवर नायक, सारे अहोनिश सेव नमो ॥ अरिहंत ० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिव,
 तुं निःकारण वंधु नमो ॥ शरणागत ज्वीने हितवत्सल, तुंही कृपारस सिंधु नमो ॥
 अरिहंत ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्श दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशित सकल
 कलक कलुषाण, डरित उपडव प्राव नमो ॥ अरिहंत ० ॥ ६ ॥ जगचितामणी जगगुरु
 जगहित, कारक जगजन नाथ नमो ॥ घोर अपर प्रबोद्धि तरण, तुं शिवपुरतो साथ
 नमो ॥ अरिहंत ० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीरग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥
 बोध दीज्जो अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अरिहंत ० ॥ ८ ॥ इति
 संपूर्णः ॥ ॥ अथ चौदसें वावन गणधरनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ गणधर चौराशी
 कहा, वली पंचाणु ठेक ॥ दोय अधिक द्वासय गणा, शील अधिक शत एक ॥ १ ॥
 शत सुमतिने गणधरा, एकसय अधिका सात ॥ पंचाणुं त्राणुं तथा, अडसी द्वास
 ब्रात ॥ २ ॥ दाहोतिरे दासव सगवन, पंचास त्रैतावीस ॥ वतीस पणतीस कुंश्चने, अर

गणधर तेवीस ॥ ३ ॥ अडवीश अष्टादश कल्या, नमि सत्तर गणधर ॥ एकादश दृग
 शिव गया, वीर तणा अग्नीधार ॥ ४ ॥ रिखजादिक चोवीशना, एक सहस सय चार ॥
 अधिकेरा वावन कल्या, सर्व मदी गणधर ॥ ५ ॥ अक्षयपद वरिया सवेए, सादि
 अनत निवास ॥ करीए शुभचित्त वंदना, जब लग घटमा थास ॥ ६ ॥ ॥ इति
 संपूर्णः ॥ ॥ अथ पंच परमेष्टीनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ वार गुण अरिहंत देव, प्रण-
 मीजं जावे ॥ सिद्ध आठ गुण समरता, दुःख दोहण जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण ठवीस,
 पचवीश उवजाय ॥ सत्तावीस गुण साधुना, जपता सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सय
 गुण मदीए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥ ३ ॥
 ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन प्रथम चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ श्री
 सीमंधर वीतराण, त्रिभुवन तुमे उपकारी ॥ श्री श्रेयास पिता कुले, बहु शोभा तुमारी
 ॥ १ ॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी ॥ दुपन्नवंतने विराजमान, वदे
 नर नारी ॥ २ ॥ धनुष पाचसे देहडीए, सोहिये सोवनवान ॥ कीर्तिविजय उवजायनो,
 विनय धरे तुम ध्यान ॥ ३ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्रीसीमंधर जिनहुं वीजुं
 चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ सीमंधर परमात्मता, शिवसुखना दाता ॥ पुखलवड विजये जयो,
 सर्व जीवना जाता ॥ १ ॥ पूर्वावेदेह पुम्नी गणि, नयरीये सोहे ॥ श्री श्रेयांस राजा
 तिहा, नवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल वही, सत्यकी राणी मात ॥
 कुधु अर जिन अतरे, श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अत्रुक्रमे प्रथम जननीया ननी को

पावे ॥ मातपिता हरखे करी, रूकमणी परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख ससारनां, संजम
 मन दावे ॥ सुनिसुवत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ धाती कर्मनो द्रय करी,
 पाम्या केवल नाण ॥ रिखन टांढने शोभता, सर्व प्रावना जाण ॥ ६ ॥ चौरासी जस
 गाणधरा, सुनिवर एकसो कोड ॥ त्राण भुवनमां जोयता, नहिं कोय एहनी जोड ॥ ७ ॥
 दश लाख कथा केवली, प्रभुजीनो परीवार ॥ एक समय त्राण काडना, जाणे सर्व
 विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाड जिनांतरेए, श्राधो जिनवर सिद्ध ॥ जसविजय गुरु प्राणमतां,
 शुभ्र वंदित फल वीध ॥ ९ ॥ ॥ इति संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री सीमंधर कैत्यवंदन
 त्रीजुं प्रारभः ॥ श्री सीमंधर जगधणी, आ नरतें आवो ॥ करुणावंत करुणा करी,
 अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल नक्त तुमो धणीए, जो होवे अम नाथ ॥ नवोत्तव हुं हुं
 ताहरो, नहीं मेहेहुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग ठंडी करीए, चारीत्र देइशुं ॥ पाय
 तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणोए, पुरो सीमंधर देव ॥
 दहांधकी हुं विनहुं, अघधरो मुज सेव ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री वीस
 स्थानकतुं कैत्यवंदन प्रारभः ॥ पहेंवे पद अरिहंत नसुं, वीजे सर्वे सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन
 मन धरो, चौथे आचारज रिद्ध ॥ १ ॥ नमो शेरणं पांचमे, पाठक गुण ठठे ॥ नमो
 दोए सब साहूणं, जे ठे गुण गरीठे ॥ २ ॥ नमो नाणरस आठमे, दर्शन मन प्रावो ॥
 विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो वंनवधधारिणं, तेरमे किरियाणं ॥
 नमो तवरस चउदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेए, नमो

तिष्ठस्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद् पद्मने, नमतां द्वेष सुखखाणी ॥ ५ ॥ इति संपूर्णः ॥
 ॥ अथ श्री वीस ध्यानक तपना काठस्सगानुं चैत्यवंदन प्रारंभ ॥ चोवीस पंदर
 पिरतावीसनो, ठत्रीसनो करीयें ॥ दश पचवीश सत्तावीसनो, काठस्सग मन धरीयें
 ॥ १ ॥ पंच सहसठ दश वली, सीतेर नव पणवीश ॥ बार अडवीश लोणस्सतणो, काठ-
 स्सग धरो गुणीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर इणवन्, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काठस्सग जो
 करे, तो जाये नव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काठस्सग मन धरो, गुणी देजो वीश ॥ वीश
 धानक एम जाणीयें, संद्वेषथी देश ॥ ४ ॥ नाव धरी मनमा धणोए, जो एक पद्
 धाराधे ॥ जिन उत्तम पद् पद्मने, नमी निज कारज साधे ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ संपूर्ण ॥
 अथ श्री विचरता जिननु चैत्यवंदन प्रारंभ ॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन
 वीस ॥ रिखजादिक वली वंदीयें, संपद् जिन चोवीस ॥ १ ॥ सिश्वाचल गिरनार अणु,
 अष्टापद् वली सार ॥ समेतशिखर ए पंच तीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व-
 लोकें जिनहर नमुं, ते चोरारशी लाख ॥ सहस सत्ताणुं उपरें, त्रेवीश जिनवर नांख ॥ ३ ॥
 एकसो वावन कोम वली, लाख चोरारणुं सार ॥ सहस चुम्मादी सातसें, साठ जिन
 पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिननवन नमुं, सात कोड वहाँतेर लाख ॥ तेरसें कोड
 न्यासी कोम, साठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंनर ज्योतिपिमां वलीए, जिननवन
 अपार ॥ ते नवि नित्य वंदन करो, जेम पासो नवपार ॥ ६ ॥ तिर्वा लोकें आश्वतां,
 श्रीजिननुवन विजाख ॥ बत्रीससें ने उगणसाठ, वंड अद् उजमाख ॥ ७ ॥ लाख गण

एकाणुं सहस्रं, त्रणसें वीस मनोहार ॥ जिनपङ्क्तिं ए शार्थती, नित्य नित्य करुं जुहार
 ॥ ८ ॥ त्रण शुवनमांही वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय
 पद दातार ॥ ९ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ बीजनु चैत्यवंदन प्रारंभः ॥
 इविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अत्रिनंदन (दिव) ॥ बीजें जनम्या ते प्रभु, त्रवङ्गःख
 निकंदन ॥ १ ॥ इविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोष ध्यान ॥ एम प्रकारुं सुमति-
 जिने, ते चविथा बीज दिन ॥ २ ॥ दोष बंधन राग द्वेष, तेहने त्रवि तजीयें ॥ सुजपरं
 शीतलजिन कहे, बीजदीन शिव तजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजिव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥
 बीजदिनें वासुपूज्य परें, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोष, एकांत न
 प्रदीयें ॥ अरजिन बीजदिनें चवी, एम जन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीयें,
 एम जिन कल्याण ॥ बीजदिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत
 चोवीशीयें, दुआ बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखखाण ॥ ७ ॥
 ॥ इति संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ त्रिगडे वेला
 वीर जिन, त्रांखे त्रविजन अणे ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोकजन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥
 आराहो त्रलीत्रातसें, पांचम अजुआवी ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एहज तिथि निहावी
 ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञान आराधनथी विषें, शिव-
 पद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काय कुसुम उपमान ॥ लोकालोक
 प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्वकोडी

वरसां जगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥
 ज्ञानतणो महिमा धणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावजीव
 उच्छुष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पचमी करो शुभ्रच्छुष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,
 काउरसग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणु करो जावशुं, टावे जव फेरो ॥ ८ ॥ एणीपरे पंचमी
 आराहीयेए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमजरी परे, रंगविजय लक्षो सार ॥ ९ ॥
 ॥ इति संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री अष्टमीतुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ माहेशुदि आठमने
 दिने, विजया सुत जायो ॥ तेम फागण शुदि आठमे, संजव चवि आयो ॥ १ ॥ चैतर
 वदनी आठमे, जनम्या ऋष्य जिणंद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम सुनि-
 चद ॥ २ ॥ माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्था दूर ॥ अग्निदंन चौथा प्रभु,
 पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली, जनम्या सुमति जिणंद ॥ आठ
 जाति कलशे करी, नवरवे सुर दंद ॥ ४ ॥ जनम्या जेत वदि आठमे, सुनिमुदत
 स्वामी ॥ नेम आषाड शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावणवदनी आठमे,
 नमि जनम्या जग ज्ञाण ॥ तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजिनु निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञाडवा
 वदि आठम दिने, चविया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिव वास
 ॥ ७ ॥ ॥ इति संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री एकादशीनु चैत्यवंदन प्रारंभः ॥ ॥ शासन
 नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन ज्ञायो ॥ १ ॥
 माधव मीत एकादशी, सोमलक्षिज यज्ञ ॥ इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥

एकादशसे चउगुणा, तंहना पारवार ॥ वेद अर्थ अर्वावदो करे, मन अनिमान अपार
 ॥ ३ ॥ जीवादिक सशय दरीए, एकादश गणधार ॥ वीरे थाप्या वंदीये, जिनशासन
 जयकार ॥ ४ ॥ मल्ली जन्म अर मल्ली पास, वर चरण विलासी ॥ ऋषन अजित सुमति
 नमी, मल्ली घनधाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन शिव वास पास, नवनवना तोडी ॥
 एकादशी दिन आपणी, ऋषि सवती जोडी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रें त्रिहूं कालनां, त्रणसे
 कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अग्नीयार अंग दखा-
 वीधें, एकादश पातां ॥ पूंजग्नी ठवणी विंटाणी, मसी कागल कांठां ॥ ८ ॥ अग्नीयार
 अन्नत ठांडवाए, वही पडिमा अग्नीयार ॥ खिमाविजय जिनशासने, सफल करो अव-
 तार ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदन संग्रह समाप्तः ॥ ॥ अथ देव वादणामां (वा) प्रातःकाल
 संध्याकाल प्रतिक्रमणमां कहेवा योग्य स्तुतिठ ॥ ॥ अथ श्री सीमंधरजीनी
 स्तुति ॥ महीमंडणं पुत्र सोवन्न देहं, जणाणदणं केवल न्नाण नेहं ॥ महा नद
 लवी बहु बुधिराय, सुसेवामि सीमंधरं तिन्नरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगाजेह जीवाण जाया,
 नवस्संति ते सध न्नाणताया ॥ तहा संपयं जेजिणा वडमाणा ॥ सुहं दिंतु तेमे तिवोय-
 प्पहाणा ॥ २ ॥ इरुत्तार संसार कुव्वारपोयं ॥ कलंकवली पंक पस्काळ तोयं ॥ मणोवं-
 विवहे सुमदार कप्पं, जिणदागमं वदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणं त्रोज-
 नीणा, कला रूप दावण सोहग्ग पीणा ॥ वहत्तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाण ॥ सिरी
 प्रारही देहिसे सुध्दनाण ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री सीमंधरजीनी स्तुतिः ॥ १ ॥ ॥ अथ

श्री वीस विहरमाण स्तुति ॥ पंच विदेह विषे विहरता, वीस जिनेसर जग जयवंता ॥
 चरणकमल तसु नामुं सीस, अह्निसि समरुं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंचमेरु पासे ऊलकता,
 सोहे वीस महा गजदता ॥ तिण उपरि ठे जिणवर वीस, ते जिणवर प्राणमुं निसि दीस
 ॥ २ ॥ गणहर कहिय ड्वावस अंग, धानक वीस जएया तिहां चंग ॥ तिण उपरि जे
 आणे रंग, ते नर पामं सुख अन्नंग ॥ ३ ॥ जिणसासण देवी चजवीस, पूरे सुजमन
 तणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे, तिहु आण जन मन वंठित सारे ॥ ४ ॥
 इति वीस विहरमाण स्तुतिः ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ सम दमोत्तमं
 वस्तु महापणं, सकल केवल निर्मल सद्गुणं ॥ नगर जेसजमेर विचूषणं, जजति पार्श्व-
 जिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुर नरेश्वर नम्र पदांबुजाः, स्मर महीरुह रंग मत्तं गजा. ॥
 सकल तीर्थकरा सुख कारका, इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती
 जिनशासनं, विधुल मंगलकेलि विनासनं ॥ प्रवाल पुण्य रमोदय धारिका, फलति तस्य
 मनोरथ मादिका ॥ ३ ॥ विकट संकट कोटि विनाजिनी, जिनमता श्रित सौख्य विकी-
 सिनी ॥ नर नरेश्वर क्लिष्ट सेवित, जयतु साजिन शासन देवता ॥ ४ ॥ इति श्री
 पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ अथ श्री आदिजिन स्तुतिः ॥ वर सुत्तियहार सुतारगण,
 परचित्त कवच सपत्तधणं ॥ पय पकय उप्पय देवगणं, श्रीअब्हुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥
 तिय लोप नमंसिय पायजुआ, घणमोह महीरुह सुत्तिगया ॥ परिपालिय निञ्चल जीव-
 दया, ममहुं तु जिणगम सुक्कसया ॥ २ ॥ पण्यंनि महात्तम रोरहर, कळाण पयोरुह

बुद्धिकर ॥ सुहृमग कुमग पयासकरं, पणमामि जिणगम महि करं ॥ ३ ॥ स्मिदिदं
 समुज्जल गायतया, सुहृजाण विणमिय एगलया ॥ अस्मिदिं सुरेंद सुरप्पणया, मम-
 गाणि सुहाणि कुण्णसुस्या ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री आदिजिन स्तुति ॥ ॥ ४ ॥ ॥
 अथ श्री ज्ञानपंचमी स्तुतिः ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान क्षम, पंचानुत्तर
 सीमदिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपसं ॥ येन प्रोज्ज्वल पंचमी वरतपो व्याहारी तत्कारिणां ॥
 श्रीपंचानन दांतत. सतनुतां श्री वर्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ येपंचाश्रव रोदसाधनपराः पंच-
 प्रमादी हराः, पंचाणुवत पंचसुवत विधि प्रज्ञापना सादराः ॥ कृत्वा पंचरूपीक निर्ज-
 यमथो प्रासागतिं पंचमी, तेमी संतु सुपंचमी व्रतचृतां तीर्थकराः शंकरा. ॥ २ ॥ पंचा-
 चार धुरीण पंचम गणाधीशेन ससन्नितं, पंचज्ञान विचारसार कवितं पंचेषु पंचत्वदं ॥
 दीपात्रं गुरु पंचमार तिमिरे ध्वेकादशी रोहिणी, पंचभ्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि
 जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां, न्रकानां न्रविना
 गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्लेपंचजने मनोमृत कर्तौ स्वारल पंचादिका,
 पंचभ्यादि तपोवतां न्रवतुसा सिद्धाधिका नायिका ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री ज्ञानपंचमी
 स्तुतिः ॥ ॥ ५ ॥ ॥ अथ श्री वीरजिन स्तुति ॥ वीरं । देवं । नित्यं । वंदे ॥ १ ॥
 जैनाः । पादा । शुष्मान् । पांतु ॥ २ ॥ जैनं । वाक्यं । न्रया । हृत्यै ॥ ३ ॥ सिद्धा ।
 देवी । दधात् । सौख्यं ॥ ४ ॥ ॥ इति लक्ष्मीस्त्रीतंदसी श्रीवीर स्तुतिः ॥ ॥ ६ ॥
 ॥ अथ श्री महावीरजिन स्तुतिः ॥ यदंछि नमना देव, देहिनः संति सुस्थिताः ॥ तरमे

नमोस्तु वीराय, सर्वं विद्व विधातिने ॥ १ ॥ सुरपति नत चरण शुगान्, नात्रेयजिनादि
 जिनपती श्रौमि ॥ यद्वचन पावनपरा, ज्वाजांजलिं ददतु डःखेन्ध्य ॥ २ ॥ वदंति वंदा-
 र्गणा प्रतोजिनाः, सदर्थतो यद्वचयंति सूत्रत ॥ गणाधिपा स्तीर्थ समर्थन कृणे, त-
 दांगिना मस्तु मतं नु सुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरा सुरवरै रसहदेवताभिः, सर्वज्ञ शासन
 सुखाय समुद्यताभिः ॥ श्रीवर्धमान जिनदत्त मतप्रवृत्तात्, त्रव्यात् जनान्नायतु नित्य
 ममङ्गलेन्ध्यः ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीमहावीर स्तुतिः अणोजारी ॥ ६ ॥ ॥ अथ श्री
 अजितनाथ स्तुतिः ॥ विश्वनाथक वायक जितशत्रु विजयानंद, पयजुग नितप्रणमै देव
 अने देविंद ॥ जावलाहिरि गहिरि सव मनधरीये अमंद, श्रीसूरतसहिरै वंदो अजितजि-
 णद ॥ १ ॥ आठ प्रातिहारज अतिसय वलि चौतिस, दिवरंजण देसन तेहना गुण
 पेतीस ॥ अगणित रिधधारी आचारीमां ईस, एहगुणना धारक वांडं जिन चौवीस
 ॥ २ ॥ सुध अरथ अनोपम जिन प्राधित सिधांत, स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्त नवि-
 त्रांत ॥ पाप कर दम पाणी सद्गतिनी सहिनाणी, सुणिये नित त्रविका आगमकेरी
 वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी, ड्रव कष्ट निवारण सेवीजे सुखकारी ॥
 साचे मन समरे ते सुख दात्र अपारी ॥ जिनदात्र पर्यपै होज्यो जय जय करी ॥ ४ ॥
 ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ १ ॥ ॥ अथ अप्टमीनी स्तुतिः ॥ चउवीसे जिन-
 वर प्रणसुं हुं नितमेव ॥ आठम दिनकरीये चंडा प्रजुनी सेव ॥ मूर्ति मनमोहे जाणे
 पुनिमचंद ॥ दीजा ड्रव जाये पासे परमानंद ॥ १ ॥ मिव चौसठ हंड पूजे प्रजुजीना

पाय, इंद्राणी अपहरा करजोडी गुणगाय ॥ नंदीश्वर द्वीपे मिल सुरवरनी कोड,
 अठाही महोवव करतां होडा होड ॥ ९ ॥ सेशुजा सिखरे जाणी वाय अपार, चौमासे
 रहिया गाणधर सुनि परिवार ॥ त्रवियणने तारे देइ धरम उपदेश, दूध साकरथी पण
 वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करीये व्रत पचखाण, आठम तप करतां
 आठकरमनी हाण ॥ आठमंगल थाये दिनदिन कोटि कल्याण, जिन सुखसरि कहे
 इम जीवत जन्म प्रमाण ॥ ४ ॥ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ॥ ८ ॥ ॥ अथ श्री
 महावीरजिन स्तुतिः ॥ मूरती मनमोहन कंचन कोमलकाय, सिंशरथ नंदन त्रिशला
 देवि सुमाय ॥ मृगनायक वंजन सात हाथ तनु मान, दिन दिन सुख दायक स्वामि श्री
 वर्धमान ॥ १ ॥ सुर नर वर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित नर पूरण अन्नितव सुर-
 तरुकंद ॥ त्रवियणने तारे प्रवहण समनिसि दीस, चोवीसे जिनवर प्रणसुं विसवावीस
 ॥ ९ ॥ अरथे करि आगम त्रांख्या श्रीनगावंत, गाणधर ते गुंथ्या गुणनिधि ग्यान
 अनन्त ॥ सुरगुरु पण महिमा कही न शके एकन्त ॥ समरुं सुखदायक मनशुर्ष सूत्र
 सिधन्त ॥ ३ ॥ सिन्हायिका देवी वारे विघन विशेष, सहु संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥
 अह्निसि करजोडी सेवे सुर नर इंद, जंणे गुणगाण इम श्रीजिनतात्र सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥
 इति श्री महावीर जिन स्तुतिः ॥ ॥ ९ ॥ ॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तुति ॥ अश्व-
 सेन नरेसर वामा देवी नंद, नवकर तनु निरुपम नीलवरण सुखकंद ॥ अह्निलंबण सेवित
 पजमावद् धराणंद ॥ प्रहजवी प्रणसुं नितप्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ कुलजिरि वेयह्द

कण्ठ्याचक्ष अत्रिराम, मानुषोत्तर नंदि रुचिक कुंडल सुखधाम ॥ त्रयणेसर व्यंतर
जोइस वेमाणिय धाम, वरते जे जिनवर पूरो सुज मनकाम ॥ १ ॥ जिहां अंग इग्यारे
बारे उपांग ठवेद, दसपइथा दारया मूल सूत्र चउनेद ॥ जिन आगम पटव्य सत्त
पदारथ जुत्त, सात्रादि सरददतां तूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥ पउमावइ देवी पार्श्वयक्र पर-
तद्ध, सहु सधनां संकट दूरकरेवा दह ॥ ते समरो जिनत्राकि सूरि कहे इकचित्त, सुख
सुजस सवायो पुत्र कलत्र बहुवित्त ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ १० ॥
॥ अथ मौनेकादशी स्तुतिः ॥ अरस्य प्रब्रज्या नमिजिनपते ज्ञानमतुलं, तथा मद्धे जन्म
व्रत मपमलं केवलमलं ॥ वलद्वै कादश्यां सहस्रिलस इदाम महसि, कितौ कल्याणानां
द्वपतु विपद. पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपूर्वैइ श्रण्या गमन गमने र्भूमिवलयं, सदा स्वर्ग-
त्यैवा ह्महमकया यत्र सदयं ॥ जिनानामप्यापु क्ण मति सुखं नारकसदः ॥ कितौ ०
॥ १ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजग इरात्मीय समये, फल यत्कर्तुणा मित्तिच विदितं सुध
समये ॥ अनिष्टा रिष्टाना किति रनुत्रवेयु र्बहुमुदः ॥ कितौ ० ॥ ३ ॥ सुरारसेजा र्ससर्वे
संकल जिन चंद्र प्रमुदिताः, तथाच ज्योतिष्का खिल त्रवननाथा समुदिताः ॥ तपो
यत्कर्तुणां विदधति सुखं विस्मितहृद. ॥ कितौ ० ॥ ४ ॥ ॥ इति मौनेकादशी
स्तुति ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्री शीतलजिन स्तुति ॥ सुख समकित दायक कामित
सुरतरुकंद, ददरथ तप राणी नंदा केसो नद ॥ त्रद्वलपुर सामी फेडे त्रवनाफद, चित्त-
चोखे नमिष श्रीशीतल जिनचंद्र ॥ १ ॥ अतीत अनगत हुआ होओ अनंत, संभव-

तिकावे जे देव विदेह विचरत ॥ त्रिहुं प्रवणे तवणा सासय असासय संत, ते सवला
 त्रिकरण प्रणसुं श्री अरिहंत ॥ ९ ॥ कातिक उत्कातिक अंग अनंग पविठ, नय त्रंग
 निरुकेपा र्याद वाद मित सिठ ॥ प्रविजन उपकारि तारि जिन उपदेश, श्रुत श्रवणे
 सुणतां नासे कोडिकदेश ॥ ३ ॥ ब्रह्म जक्ष अश्रीका सासन सुरि सुविचार, संघ सानि-
 धकारी निरमल समकितधार ॥ चिंता डःखचूरे पूरय मनह जगीस, ध्यान तेहनो धरियें
 कहें जिनलाज सरीस ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री श्रीतलजिन स्तुतिः ॥ ॥ १९ ॥ ॥ अथ
 समवसरण प्रावणार्थित स्तुतिः ॥ मिल चौविह सुरवर विरचे त्रिगडो सार, अढी गाड
 जंचो पडुवो जोयण पार ॥ विच कनक सिंहासण पद्मासन सुखकार, श्रीतीरथनायक
 वेसे चौसुखधार ॥ १ ॥ तीनवज शिरोवरि चामर दावे इंद, देव डंडजि वाजे त्राजे
 कुमतिकंद ॥ त्रामंडल पूंते जलके जाण दिणंद ॥ तिहुअण जन मन मोहे सयल
 जिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य त्रावसु तवणा नाम निरुकेपा चार, जिण गणहर त्राख्या सत्रसि-
 शंत मऊर ॥ जिनवरनी पडिमा जिनसारिखी सुखकार, शुभत्रावे वंदो पूजो जग जय-
 कार ॥ ३ ॥ डखहरणी मंगल करणी जिनवर वाणी, जववेद कृपाणी मीठी अमीय
 समाणी ॥ मनशुभे आणी प्रतियूजो त्राविप्राणी ॥ सुयदेवी पसायें पामे जयति सुनाणी
 ॥ ४ ॥ इति श्री समवसरण प्रावणार्थित स्तुति ॥ ॥ १३ ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन
 स्तुतिः ॥ देवकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धर धप धोरवं ॥ दोंदोंकि दोंदों दाडिदि
 दाडिदिकि डमकी डणरण डेणवं ॥ ऊऊऊँकि ऊँऊँ ऊणरण एणनिजकी निज जन

रंजनं । सुरशैल शिखरे प्रवति सुखदं पार्थं जिनपति मङ्गलं ॥ १ ॥ कट रेंगिनि
 धोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि धुट नट पाटवं ॥ गुण गुणण गुण गण रणकि
 णेणं गुणण गुण गण गौरवं । क्राकि क्राकि क्रेक्रे क्राणण रण रण निजकी निज जन
 सङ्गना । कल यंति कमला कवित कलमल मुकलमीस महैजिनाः ॥ ९ ॥ ठकि ठेकि
 ठेवं ठकि ठकि ठकिपडा ताड्यते ॥ तलवाकि वांवां त्रैपि त्रैपि डेपि त्रैपिनि
 वाद्यते ॥ उंकि उंकि शुंगि शुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे । जिन मत मनंतं महिम
 तनुता नमति सुर नर सुज्वे ॥ ३ ॥ षुदांकि पुदां पुपुडदि पुदां पुपुडदि दोदां अंवेरे ।
 चाचपट चचपट रणकि णेणं डणण डेडं डंवेरे ॥ तिदां सरग मपधुति निधप मगरस
 सस ससस सुर सेवता । जिन नाट्यरंगे कुशालमुनिसं दिसतु शासन देवता ॥ ४ ॥
 इति श्रीजिन कुशाल स्मरिजी कृत पार्थजिन स्तुतिः ॥ ॥ १४ ॥ ॥ अथ श्री चैत्री-
 पुनम स्तुति । ॥ सेत्रुंज गिरि नभिये रूप्रज देव पुंडरिक, शुत्रतपनी महिमा सुणि गुरु
 मुख निरत्नीक ॥ शुधमन उपवासे विधिसु चैत्यवंदनीक, करिये जिन अगल टालि वचन
 अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दश वीस, अकृत गिण तीसे चढता
 तिम चालीश ॥ पंचासनी पूजा त्राये दम जगदीस, तेहिज नित प्रणसुं, स्वामी जिन
 चउवीस ॥ ९ ॥ सुदि पद्दनी पूनम चैत्रमास शुत्रवार, विधिसेति लदीये अगम साख
 विचार ॥ इम सोलवरस लग धरीये ध्यान उदार, करता नरनारी पामे नवनोपर ॥ ३ ॥
 सोवन तनचरणे नयणे तिम अरविद, चक्रेसरी देविष्य सेविष्य नर सुर टंद ॥ कामित सुख

दायक पूरयमन आणंद, जंणे गणनायक श्रीजिनवात्र सूरिंद ॥ १४ ॥ इति
 श्री चैत्रीपूनिम स्तुतिः ॥ १५ ॥ अथ श्री नवपद स्तुतिः ॥ निरुपम सुखदा-
 यक जगनायक दायक शिवगति गामी जी ॥ करुणासागर निजगुण आगर सुप्र
 समता रस धामी जी ॥ श्री सिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्याये जे मन रंगे जी ॥ ते
 मानव श्रीपाद तणीपरि पामे सुख सुर संगे जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक
 साधु महा गुणवंता जी ॥ दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जय वंता जी ॥
 एहनो ध्यानधरंता वहीये अविचव पद अविनासी जी । ते सधवा जिननायक नमीये
 जिन ए नीति प्रकासी जी ॥ २ ॥ आसुमास मनोहर तिम वदी चैत्रमास जगीसे जी ॥
 जजवादी सातमशी करिये नव आंविद नव दिवसे जी ॥ तेर सहस्र वदी गुणिये गुणणे
 नवपदकेरो सारो जी ॥ इण परि निरमल तप आदरिये आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥
 विमल कमलदद लोचण सुंदर श्री चक्रेसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक त्रविजनेकरा
 विघनहरो सुर सवी जी ॥ श्रीखरतरगढ नायक सदगुरु श्रीजिनत्रकि सुणिंदा जी ॥
 तासु पसाये इणपरि पत्रणें श्रीजिनवात्र सुरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्री नवपद स्तुतिः
 ॥ १६ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ वदि वदी हुं ध्यावुं गाढं जिनवरवीर ॥ जिण
 परव पजूसण दाख्या धरमनी सीर ॥ आपाढ चोमासे हुंति दिनपंचास ॥ पक्रिमणे
 संवहरी करीये त्रिण उपवास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूज्या सतर प्रकार ॥ करीये
 त्रदे त्रोवे त्ररीये गुण्य त्रंडार ॥ वदि चैत्यप्रवाडे फ्रितां दात्र अनंत ॥ इम परव पजू-

सण सहस्रं महिमावंत ॥ १ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनार्थे वंचाय ॥ श्रीकटपसूत्र जिह्वां
सुणता पाप पुत्राय ॥ प्रतिदिन परत्रावना धूप अणर उक्तेवो ॥ इम त्रवियण प्राणी
परव पञ्जसण सेवो ॥ ३ ॥ वली साहमी वज्जल करीये वारंवार ॥ केइ त्रावना त्रावे
केइ तपसी सीलधार ॥ अइदीह पञ्जसण इम सेवत आणंद ॥ सुयदेवी सानिध केहे
जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्युषणापर्व स्तुतिः ॥ १७ ॥ ॥ अथ गिरनार
मंडण श्रीनेमिजिन स्तुतिः ॥ सुर असुर वंदिय पायपंकज मयण मद्ध अर्द्धोन्नितं ॥ घन
सुघन इयाम शरीर सुंदर शंख वंजन शोन्नितं ॥ सिवा देवी नंदन त्रिजग वंदन त्रिविक
कमल दिनेश्वरं ॥ गिरनार गिरिवर शिखर वंडं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदं श्री
आदि जिनवर वीर जिन पावापुरे ॥ वासुपूज्य चंपापरियसीधा नेमि रेवय गिरिवरे ॥
सम्मते शिखरे वीस जिनवर मुक्ति पहुता मुनिवरू ॥ चउवीस जिनवर तेह वंडं सयल
संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इयार अंग जपंग वारे दसपयत्ता जाणीये ॥ उ वेद ग्रंथ प्रसव
अत्राचार मूल वलाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइये ॥ इह उचि
चूरणि त्राप्य पेंतावीस आगम ध्याइये ॥ ३ ॥ इहुं दिसं वातक दीय जेहनं सदात्र-
वियण सुखकरू ॥ इशवहरे अंवा दुंव सुंदर हरिय दीहण अप हरू ॥ गिरनार मंडण
नेमि जिनवर चरण पकज सेविये ॥ श्रीसंघ सहस्रं सदाभंगल करो अंवा देविये ॥ ४ ॥
इति गिरनार मंडण श्रीनेमिजिन स्तुति ॥ १८ ॥ ॥ श्रीदेवार्थे ॥ विश्वेवर्षे ॥
पूर्णानंदं । तत्स्यार्थे ॥ २ ॥ तीर्थावीद्या । शुभवेद्या । सर्वेस्वीर्षे । कं कुर्वन्व ॥ २ ॥

अर्द्धहाचो । वाचोयुतया । कृसाः सङ्घिः । पापं धनु ॥ ३ ॥ शांता कांता सिद्धा देवी ॥
 जांत्ये दात्ये । जग्धजूयात् ॥ ४ ॥ इति श्रीवीर प्रभु स्तुतिः ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्रीशीतलजिन
 स्तुतिः ॥ त्रिभुवन जन नायक दायक वलित दान ॥ त्रवि कमल विक्रासन शासन सूर
 समान ॥ प्रणसुं बहुत्रावे नंदाराणी नंद ॥ श्रीसूरत सहिरे शीतल नाथ जिणंद ॥ १ ॥
 उज्ज्वल गुण धारी अतिकारी अरिहंत ॥ त्रविजन हितकारी महिमावंत महंत ॥ उपकारी
 अविचल जयकारी जग दीस ॥ नित निर्मल चिते वंदो जिन चोवीस ॥ २ ॥ जिहां
 नैगम संग्रह आदिक नय सुविचार ॥ रयादस्ति प्रमुख बलि सप्तत्रंगी विस्तार ॥ पेंतीस
 गुणेकरि सोत्रे अति सुविज्ञात ॥ ते कठे ठविये जिनवाणी वरमात ॥ ३ ॥ कमलासन
 सोहे नील वरण तनुकात ॥ निज चार जुजे करी राजे अतिशय वंत ॥ श्रीदेवी
 अग्नोका शोक हरण सुखकंद ॥ इम त्रके पत्राणे श्रीजिनवात्र सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्री
 शीतल जिन स्तुतिः ॥ २० ॥ ॥ अथ रतुति संग्रह ॥ ॥ अथ कक्षाणकंदनी स्तुति
 प्रारंभः ॥ कक्षाण कंदं पदमं जिणंदं, संतिं तडं नेमिजिणं सुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगु-
 णिकवाणं, तनीइ वंदे, सिरि वक्षमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्रपारं, पता शिवं दिवु
 सुइकसारं ॥ सधे जिणंदा सुरविंदं वंदा, कक्षाणवल्लीण विशालकंदा ॥ २ ॥ निघाण-
 मरणे वर जाण कप्यं, पणासियासेस कुवाइदप्यं ॥ मयं जिणायं सरणं बुहाणं, नमासि
 निधं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदीड गोक्कीर तुसार वत्ता, सरोजहत्ता कमलेनिसत्ता ॥
 वाएसिरी पुत्तय वग्गहत्ता, सुहायसा अहसयया पसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्नात-

स्यानी स्तुति प्रारंभः ॥ स्नातस्याप्रतिमस्य सेरुशिखरे शान्त्या विप्रोः शैशवे ॥ रूपाद्यो-
 कनकिस्मया हतरस त्रांतया त्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रन्नाधवलितं क्षीरोदकाशंकया ॥
 वक्र यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहत पद्मरेणुकपिश-
 क्षीराण्वांत्रोन्नतैः कुंभैरप्सरसा पयोधरजरप्ररपीर्धन्निः कांचनैः ॥ येषांमंदर रत्नशैल-
 शिखरे जन्मात्रिषेक कृतः, सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वर गणैस्तेपां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥ अहं-
 दक्रप्रसृतं गणधर रचितं द्वादशांग विशालं, चित्रं बह्वर्धुक्त मुनिगणदृष्यैर्धारितं
 बुद्धिमन्निः ॥ भोक्ष्णप्रकारभूतं त्रतचरणकल द्वेयत्रावप्रदीपं, त्रसया नित्यं प्रपद्ये श्रुत-
 महमखिलं सर्वलोकैकसर ॥ ३ ॥ निष्पकव्योमनीलव्युतिमलसदृशं वावचजात्रदंष्ट्रं ॥
 मत्त धंटाखेण प्रसृतमदजलं पुरयंतं समंतात् ॥ आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने
 कामदः कामरूपी ॥ यक्रः सर्वानुजृतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ ॥
 इति संपूर्णं ॥ ॥ अथ संसारदावानी स्तुति प्रारंभः ॥ ॥ इन्द्रवज्रा वंदः ॥ ससार-
 दावानलदाहनीरं संमोहधूली हरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं
 निरिसार धीरम् ॥ १ ॥ वसंततिलका वंद ॥ त्रावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविद्यो-
 लकमलावलमालितानि ॥ संपूरितात्रिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजप-
 दानितानि ॥ २ ॥ बोधानाधं सुपदपदवी नीरपूरान्त्रिमं, जीवाऽहिंसा विरललहरी
 सेगमणाहृद्देहं ॥ चूलावेवं शुरुगमभणी संकुलं दूरपरं, सारं विरागमजलनिधिं सादरं
 सधु सेवे ॥ ३ ॥ स्त्रयथरा वंदः ॥ अमृतालोखचूलीबहुत्वपरिमवालीढलोकादिभावा ॥

ऊंकारारावसारामलदलकमलागारभ्रूमीनिवासे ॥ जायासंनारसारे वरकमलकरे तारद्वारा-
 त्रिरामे ॥ वाणीसंदोहदेहे त्रवविरहवरं देहि मे देविसारं ॥ ४ ॥ इति संसारदावानी
 स्तुति सपूर्णं ॥ ॥ अथ अध्यात्मोपयोगनी स्तुति प्रारंभः ॥ ॥ उठी सर्वे सामा-
 थिक कीधु, पण वारणुं नवि दीधुंजी ॥ कावो कृतरो धरमांहि पेठो, धी सधबुं तेणे
 पीधुंजी ॥ उठो वहुअर आवास मूर्को, ए धर आप सत्रावोजी ॥ निज पतिने कहो
 वीरजिनपूजी, समाकतने अजूआवोजी ॥ १ ॥ वदे विद्वाने जडपजडपावी, उत्रोडि
 सवि फोडीजी ॥ चंचल तैयां वार्यां न रहे, त्राक त्रांगी माल त्रोडीजी ॥ ते विण अर-
 द्दटीउं नवि चावे, मौन त्रहुं कुने कदीधेजी ॥ ऋषत्रादिक चजवीस तीर्थकर, जपीधे
 तो सुख लदीधेजी ॥ २ ॥ धर वासीडं करोने वहुअर, टावो उंजीसाबुंजी ॥ चोरटो
 एक करे ठे हेरान, उरडे धोने ताबुंजी ॥ लवधया प्राहुणा चार आवे ठे, तेने उत्रा
 नवि राखोजी ॥ श्रिवपद सुख अनंता लदीधे, जो जिनवाणी चाखोजी ॥ ३ ॥ धरनो
 खणो कोल खणे ठे, वहु तुमें मनमां लावोजी ॥ पोहोले पलंगे प्रीतम पोढ्या, प्रेम
 धरी जगावोजी ॥ त्रावप्रनसरि कहे नहि ए कथवो, अध्यात्म उपयोगीजी ॥ सि-
 थिक देवी सानिध्य धर्द, साधे ते सिध्पद जोगीजी ॥ ४ ॥ इति अध्यात्मोपयोगनी
 स्तुती सपूर्णः ॥ ॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तुति प्रारंभः ॥ सीमंधर जिनवर, सुख-
 कर साहेवदेव ॥ अरिहंत सकलनी, त्रावधरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर
 त्रांखितवाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणि ॥ १ ॥ ए धोय चार वखत

पण कहेवाय ठे ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमंधर जिननी चतुर स्तुति प्रारंभः ॥ ॥ श्री
सीमंधर देव सुदकर, सुति मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अर जिन अतर जनभ्या, तिहु-
अण जत्रपरशसाजी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरीदिका, त्रिदशा जगत निरसंजी ॥ उदय पेढाल
जिनातरमा मनु, जागे जिववहू पासंजी ॥ १ ॥ वत्रीश चउसठि चउसठि मलिथा,
इगसय सठि दिक्रिठाजा ॥ चउ अड अड मली मध्यमकालें, वीश जिनेश्वर दीवाजी ॥ दो
चउ चार जवन्य दश जनु, धायइ पुरकर मोकरेजी ॥ पूजो प्रणमो आचारणे, प्रव-
चन सारज-शरेंजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्तेंजी ॥
अर्थनी देशन वस्तु निवेगन, देतां सुणत विनीतेंजी ॥ द्वादश अंग पूरवयुत रचियां,
गणधर लडिध विकसीयांजी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसियाजी
॥ ३ ॥ आणा रणी समकित संगी, विविध तंगी व्रतधारीजी ॥ चउद्विहू संघ तीरथ
रखवाली, सहू उपडव हरनारीजी ॥ पंचांगुलि सूरि शासनदेवी, देती तस जस
क्रिडिजि ॥ श्री शुभ्रवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमा सिद्धिजी ॥ ४ ॥ इति
सपूर्णः ॥ ॥ अथ आदिजिन चतुष्क स्तुति प्रारंभः ॥ ॥ आदि जिनवर राया जास
सोवन्न काया, मरुदेवी माया धोरी लवन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया शुभ चारित्र
पाया, केवल सिरियाया मोक्ष नगरे सथाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी मोहमिथ्या
निवारी, इरगति इःख तारी शोक संताप वारी ॥ श्रेणि रूपक सुधारी केवलानंत धारी
नमीधें नर नारी जेह विश्वोपकारि ॥ २ ॥ समवसरण वेवा लागे जे जिनजी मीठा, करे

प्रणय पइटा इइ चंडादि दिहा ॥ हाइशांगी वरिठा गुंथता टावे रिठा, त्रविजन होय
 शिठा देखि पुण्ये गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता जेह रुहे महंता, जेह सुजनसंता
 टाविये सुठ चिंता ॥ जिनवर सेवंता विघ्न वारे डरंता, जिन उत्तम शुणंता पधने सुख-
 दिता ॥ ४ ॥ ॥ इति सपूर्ण ॥ ॥ अथ शाश्वत जिन चतुष्क स्तुति प्रारभः ॥ ॥
 रूप्र चदानन वंदन कीजे, वारिखेण छःख वारे जी ॥ वर्धमान जिनवर वली प्रणमो,
 शाश्वत नाम ए चारे जी ॥ प्ररतादिक खेवें मखि होवे, चार नाम चित्त धारे जी ॥
 तेषु चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीये नित्य सवारे जी ॥ १ ॥ ऊर्ध्व अधो तीठें लोके थइ,
 कोडि पन्नरथें जाणो जी ॥ उपर कोडि वेंतावीश प्रणमो, अडवन्न दख मन आणो जी ॥
 उत्रीश सहस एशी ते उपर, विंव तणो परिमाणो जी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमा,
 प्रणसुं ते सुविहाणो जी ॥ २ ॥ रायप्रसेणी जीवाग्निगमे, जगवत्सुखें नांखी जी ॥ जंबु
 हार प्रसुखें आखी जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहा बहु सूत्र वे साखी जी
 ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशानइइ कहाया जी ॥ तिम सूरियाज प्रसुख बहु
 सुरवर, देवीतणा समुदाया जी ॥ नंदीसर अठाइ महोत्सव, करे अति हर्ष प्रराया जी ॥
 जिन उत्तम कट्याणक दीवसें, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥
 अथ श्री सिश्चक चतुष्क स्तुति प्रारंभः ॥ जिन शासन वंजित, पूरण देव रसाव ॥
 त्रारें त्रवि त्रणीयें, सिश्चक गुण माव ॥ त्रिहुं कालें एहनी, पूजा करे उजमाव ॥ ते

अमर अमरपद, सुख पासे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वंदो, आचारिज उवजाय ॥
 सुनि दरिशाण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नवपद समुहित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥
 ए ध्यानं प्रविनां, प्रव कोडि डःख जाय ॥ २ ॥ आजो चैत्रीमां, शुदि सात्मशी सार ॥
 पूनम लग्ने कीर्जे, नव आंविद निरधार ॥ दोष सहस गणेंदुं, पद सम साडा चार ॥
 एकाशी आंविद तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेश्वर
 देव ॥ श्रीपाल तणी परें, सुख पूरे स्वयमेव ॥ डःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥
 श्रीसुमति सुगुरुनो, राम कहें नित्यमेव ॥ ६ ॥ इति संपूर्णः ॥ अथ द्वितीय, सिद्ध-
 चक्रनी चतुष्क स्तुति प्रारंभः ॥ अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु
 नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो तप, ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत
 श्या शशो, वली प्राव निखेपें गुण गशो ॥ पञ्चमणा देववंदन विधिंशुं, आंविदुं तप
 गणणुं गणो विधिंशुं ॥ २ ॥ वरिपाली जे तप करशे, श्रीपालतणी परें प्रव तरशो ॥
 सिद्धचक्रने कृण आवे तोले, एहवा जिन आगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साढाचारे वरसें तप
 पूरूं, ए कर्म विदारण तप शूरूं ॥ सिद्धचक्र मनमंदिर आपो, नय विमलेश्वर वर आपो
 ॥ ७ ॥ इति संपूर्णः ॥ अथ बीज तिथिनी चतुर स्तुति प्रारंभः ॥ दिन सकल
 मनोहर, बीज दीवस सुविशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र
 विमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणसुं आणी नेह ॥ १ ॥ अग्नि-
 नंदन चंदन, शीलव शीलव नाथ ॥ अरनाथ ममजित्तिय

जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुं वीज तणे दिन, प्राणसुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो
 वीजें, इविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमला कमला, विजल नयन विकसंत ॥ आगम
 अति अनुपम, जिहां तिश्य व्यवहार ॥ वीजें सवि कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥
 गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्रेसरि केसरि, सरस सुगंध शरीर ॥
 कर जोभी वीजे, हुं प्राणसुं तस पाय ॥ एम लविधविजय कहे, पुरो मनोरथ माय
 ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ पंचमी तिथिनी चतुर स्तुति प्रारंभः ॥ ॥
 श्रावण शुद्धि दिन पंचमी ए, जनम्या नेम जिणंद तो ॥ श्यामवरण तनु शोभतुं ए,
 सुखशारदको चंद्र तो ॥ सहस वरस प्रभु आवसुं ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट
 करम देवें हणि ए, पोहोता सुक्ति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टपद आदि जिन ए, पोहोता
 सुक्ति मोजार तो ॥ वासुपूज्य चंपपुरी ए, नेम सुक्ति गिरिनार तो ॥ पावापुरि नगरीमां
 वली ए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीज सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी
 आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, दाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण वेळडी
 ए, कीजें तास जतन तो ॥ मृषा न बोळो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत
 तीर्थकर एम कहे ए, परदरिद्र परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जक्र तलो ए, देवीश्री
 भाविका नाम तो ॥ शासन सानिध्य जे करे ए, करे वली धर्मनां काम तो ॥ तपगड
 सायक शुण नीळो ए, श्री विजयसेन सुरियाय तो ॥ रिखन दास पाय सेवतां ए, सफल
 करो अक्षतार तो ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ अष्टमी तिथिनी चतक मनदि

प्रारंभः ॥ ॥ मंगल आठ करी जस आगल, त्रावधरी सुर राज जी ॥ आठ जातिना कशाल करीने, न्हवरवे जिनराज जी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनु तप करतां अम धर, मंगल कमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वधरी गजगंजन, अष्टापदपरें वलीया जी ॥ आठमे आठ सुरूप विचारी, मद् आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गतिपरे पहोता जिनवर, फरस अरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनु तप करतां अम धेर, नित्य नित्य वाधे रग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिनराजे जी ॥ आठने आठ शो आगम त्रावी, त्रावि मन संशय त्राजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पावे निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव त्रयफल दीजे जी ॥ सिंहाड देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजे जी ॥ आठमनु तप करतां दीजे, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोड कल्याण जी ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ एकादशी तिथिनी चतुष्क स्तुतिः ॥ ॥ एकादशी अतिरुअडी, गोविंद पूढे नेम ॥ कोण कारण ए पर्यमहोदुं, कशो सुजशु तेम ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणां, एकशो ने पंचाश ॥ तेणे कारण ए पर्यमोहोदुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अग्निअर श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, नव गजा जिम रेव ॥ चौबीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंगनिर्मल नीर जेहदुं, करो जिनशुं रंग ॥ २ ॥ अग्नीअर अंग दखाविये,

अग्नीधर पाठां सार ॥ अग्नीधर कवली विटणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी
 विधिरगी, शाख तणे अनुसार ॥ एकादशी एम ऊजवो, जेम पाणिये त्रवपार ॥ ३ ॥
 वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजडंड चंड अखंड जेहने,
 समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शिष्य ॥ शासन देवी
 विधन निवारो, संघतणां निशादिश ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ वीश स्थान-
 कता तपनी चतुर स्तुति प्रारंभः ॥ ॥ पूढे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण वेठा सुख-
 कदा, पूजित अमर स्मरिदा ॥ केम निकाचे पद जिनचंदा, किण विध तप करतां त्रव-
 फंदा, टाले डरितह दंदा ॥ तव जाले प्रजुजी गतनिदा, सुण गौतम वसु त्रूतिनंदा,
 निर्मल तप अर विंदा ॥ वीश थानक तप करत मडिदा, जिम तारक समुदाय दंदा,
 तिम ए सवि तप इदा ॥ १ ॥ प्रथम पदे अरिहंत नमीजे वीजे सिद्ध पवयण पद वीजे,
 आचरज थीर ठविजे ॥ उपाध्यायने साधु ग्रहीजे, नाणदंसण पद विनय वहीजे ॥ अजि-
 अरमे चारिज लीजे ॥ वंजवय धारीणं गणीजे, किरियाणं तवस करीजे, गोयम जिणाणं
 लहीजे ॥ चारिज नाण श्रुत तिहसस कीजे, वीजे त्रव तप करत सुणीजे ॥ ए सवि
 जिन तप लीजे ॥ २ ॥ आदि नमो पद सधले ठवीश, वार पन्नर वार वली ठत्रीश,
 दश पणवीस सगवीस ॥ पांचने सदसठ तेर गणीश, सत्तर नव किरिया पञ्चवीश, वार
 अठावीस चडवीस ॥ सीत्तेर इगावन्न पीस्तालीस, पांच लोणस्स काठस्सग्ग रहीश,
 नोकारवालो वीश ॥ एक एक पदे उपवासज वीश, मास खटे एक उली करीश, इम

सिद्धांत जगीश ॥ ३ ॥ शक्ति एकासणुं तिविहार, बठ अठम मास खमण उदार, पडि-
 क्रमणां दोष वार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगमधार, एकपद आराधन प्रवपार ॥ उज-
 मणुं विविध प्रकार ॥ मातंग यक्ष करे मनोहार, देवीसिद्धाह सासन रखवाल, संघवि-
 धन अपहार ॥ खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ्रनवियण धर्मी आधार, वीर विजय
 जयकार ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ पर्युषणपर्वनी चतुष्क स्तुति प्रारंभः ॥
 ॥ सत्तर त्रेद्विजिन पूजा रचीने, साब महोत्सव कीजें जी ॥ दोल ददामा त्रेरी नफेरी,
 ऊह्वरी नाद सुणीजें जी ॥ वीरजिन आगल जावना प्रावी, मानव प्रव फल लीजें जी ॥
 पर्व पजूसण पूरव पूण्यें, आठ्यां द्दम जाणीजें जी ॥ १ ॥ मास पास वली दसम ड्वा-
 लस, चत्तारी अठ कीजें जी ॥ उपर वली दश दोष करीने, जिन चोवीश पूजीजें जी ॥
 वना कटपनो ठठ करीने, वीर बख्ताण सुणीजें जी ॥ पडवेने दिन जन्ममहोत्सव, धवल
 मगल वरतीजें जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगें अमारी पलावी, अठमनुं तप कीजें जी ॥
 नागकेतुनी परें केवल लहीयें, जो शुभ्र प्रावे रहीयें जी ॥ तेलाधर दिन त्राण कट्या-
 णक, गणधर वाद वदीजें जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, कृषत्र चरित्र सुणीजें जी
 ॥ ३ ॥ वारसें सूत्रने सामाचारी, संवत्सरी पडिकमीयें जी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिषुं कीजे,
 सकल जंतुने खामीजें जी ॥ पारणाने दिन सामीवत्सल, कीजें अधिक वडाईजी ॥ मान
 विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवि सिर्हाई जी ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥
 अथ रोहिणी नक्षत्रनी चतुर स्तुति प्रारंभ ॥ ॥ नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे,

अहोरेत पौषध करी शुभ्र ज्ञावे, चउ विदार मन लावे ॥ वासुपूज्यनी त्रिकि कीर्जे,
 गणुणु पणु तस नाम जपीर्जे, वरस सत्तावीश तीर्जे ॥ श्रीडी शक्ते वरस ते सात, जाव-
 जीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्मघात ॥ निजशक्ति उजमणुं ध्यावे, वासुपूज्यनुं
 धिब जरावे, दाव मणिमय जावे ॥ १ ॥ इम अतीत अग्ने वर्तमान, अनागत वंदो जिन
 बहुमान, कीर्जे तसगुणु गान ॥ तपकारकनी त्रिकि आदरीये, साधर्मिक वदी संघनी
 करीये, धर्म करी जव तरीये ॥ रोग सोग रोहिणी तपे जाय, संकट टवे तसु जस बहु-
 धाय, तस सुरनर गुणु गाय ॥ नीराशसपणे तप एह, शंका रहितपणे करो तेह ॥
 नवनिधि द्वेय जिम गेह ॥ २ ॥ उपधान धानक जिनकल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाणु,
 पंचमी तप मन आण ॥ पढिमा तप रोहिणी सुखकार, कनकावदी रत्नावदी सार, सुक्ता-
 वदी मनोहर ॥ आठम चउदश ने वर्धमान, इत्यादिक तप मांहे प्रधान, रोहिणी तप
 बहुमान ॥ इणीपरें ज्ञांखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमिय समाणी, सुत्रें तेह
 गुंथाणी ॥ ३ ॥ चंडा जदणी यदु कुमार, वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावणु
 दार ॥ रोहिणी तप करता जन जेह, इहजव परजव सुख लहे तेह, अनुकर्में जवनो
 वेह ॥ आचारी पंडित उपकारी, सत्य वचन ज्ञांखे सुखकारी, कपूरविजय वतधारी ॥
 खिमाविजय शिष्य जिनगुरु राय, तस शिष्य गुरु मुज उत्तम धाय, पद्मविजय गुणु
 गाय ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्री संखेश्वर पार्श्वजिन स्तुति प्रारंभः ॥ ॥
 शंखेश्वर पासजी पूजीये, नरजवनो दाहो दीजीये ॥ मनवांजित पूरणु सुरतरु, जय वामा-

सुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दीय राता जिनवर अति नला, दीय धोला जिनवर गुणनिवा ॥
 दीय वीला दीय सामल कहा, शोले जिन कंचनवर्ण लहा ॥ २ ॥ आगम ते जिनवरे
 नाखियो, गणधर ते हृद्दे राखीयो ॥ तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुळं शिवमुख
 साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती ॥ सहू संघना
 संकट चूरती, नयवीमलनां वंदित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्रीश-
 त्रुंजयनी स्तुति प्रारभः ॥ ॥ श्रीशत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार,
 तानुर राम अपार ॥ मंत्रमाहे नवकारज जाणुं, तारासां जेम चंड वखाणुं, जलधरमाहे
 जल जाणुं ॥ पंखीमाहे जेम उत्तम हंस, कुलमाहे जेम ऋष्यनो वंश, नात्रितणो जे
 अंश ॥ क्रमवतंमाहे जेम अरिहंता, तपसुरा मुनिवरमहता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥
 ऋष्य अजित संनव अग्निनदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्मप्रभु सुखकंदा ॥ श्रीसु-
 पार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि, शीतल श्रेयांस सेवो बहुबुद्धि, वासु पूज्य मति शुद्धि ॥ विमल
 अर्नंत जिन धर्म ए शांति, कुशु अर महि नसुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्धपंथी ॥ नमी
 पास ने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेयीश, सिद्धगिरि आख्या ईश ॥ २ ॥ नरत-
 राय जिन साखे बोले, स्वामी शत्रुंजयगिरि कुण तोले, जिनसुं वचन अमोले ॥ ऋष्य
 कहे सुणो नरतराय, वहरी पावतां जे नर जाय, पातक नूको थाय ॥ पशुपंखी जे
 इण गिरि आवे, नव त्रीजे ते सिद्धज आवे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमे श्रेष्ठं जो
 वखाण्यो, ते में आगम दिवमाहे आण्यो, सुणतां सुख जर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति

प्ररत नरेसर आधे, सोवनतणां प्रासाद करधे, मणिमय मूरति ठावे ॥ नात्रिराया मरु-
 देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी वेहेन विख्याता, मूर्ति नवाणुं ज्ञाता ॥ गौमुखने चक्रसरी देवी,
 शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगढ उपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरिश्वर राया, श्रीवि-
 जयदेवसुरि प्रणसुं पाया, ऋषभदास गुण गाया ॥ ४ ॥ ॥ इति शत्रुंजय स्तुति
 समाप्तः ॥ ॥ अथ श्रीशोचनस्तुति कृत चतुर्विंशति जिन स्तुति प्रारंभः ॥ धन-
 पाव पंडितनो शोचन नामे जे वंधु, तेणे रचेवा प्रत्येक जिनना चार चार एवा चोविस
 जिननी स्तुतिना वधु श्लोक मूल तेमां प्रथम युगादि जिननी स्तुति प्रारंभः ॥ ॥
 शार्दूलविक्रीडित वंदः ॥ ॥ प्रव्यांजोजविवोधनेक तरणे, विस्तारीकर्मावली ॥ रंजा
 सामज नात्रि नंदन महा, नष्टाप दा प्रासुरैः ॥ प्रत्यावंदितपादपद्म विडम्बां, संपादय
 प्रोक्षिता ॥ रंजा सामज नात्रि नंदन महा, नष्टापदा प्रासुरैः ॥ २ ॥ ते वः पांतुजिनोत्तमाः
 कृतरुजो नाचिक्षिपु र्धनमनो ॥ द्वारा विभ्रमरोचिताः सुमनसो मंदारवा राजिताः ॥
 यथादी च सुरोक्षिताः सुरप्रयांचकुः पतंर्यां वरा ॥ द्वाराविभ्रमरोचिताः सुमनसोमंदार
 वाराजिताः ॥ १ ॥ शांतिं वस्तनुता निमशो नुगमना द्यौगमाद्यैर्नयै ॥ रक्षोन्नं जन हेतुवां
 वितमदो दीर्णांगजावंकृतं ॥ तत्पूज्यै र्जगता जिनैः प्रवचनं हृष्यत्कुवाद्यावली ॥ रक्षोन्नं
 जनहेतुवां वितमदो दीर्णांगजावं कृतं ॥ ३ ॥ शीतांशुत्विवि यत्र नित्यमदधर्जं धाढ्य धुदि-
 कणा ॥ ना लीकेसर लाडसा समुदिता शुभ्रामरी प्रासिता ॥ पाया इः श्रुतदेवता निद-
 धती तत्राढकांतिक्रमौ ॥ नालिकेसर लाडसा समुदिताश्राभरीप्रासिता ॥ ५ ॥

इति ऋषयस्त्वितिः संपूर्णा ॥ ॥ अथतरण द्वे अजितनाथ जिनेश्वरनी स्तुति प्रारब्धः
 ॥ ॥ युष्पिताप्रावृत्तेन ॥ ॥ तम जित मन्त्रिनौ मियो विराजद्भन धनमेरु पराण मस्त
 कांतं ॥ निजजननमहोरसवेधित्पटा वनधन मेरु पराण मस्त कांतं ॥ १ ॥ स्तुत जिन
 निवहंत मर्तितसा ध्वनदसुरा मरवेण वस्तुवांति ॥ यममर पतयः प्रगाथ पार्श्व ध्वनदसुरा
 मरवेणवस्तुवांति ॥ २ ॥ प्रवितर वसतिं त्रिलोकबंधो गमनय योगततां तिमि पदे हे ॥
 जिनमत विततापवर्गवीथी गमनययो गततांति मे पदेहे ॥ ३ ॥ सितशकुनिगताशु मान
 सी शततति मिरं मद चासुरा जिताश ॥ वितरतु दधति पविं क्तो द्यतततिमिरं मद-
 चासुराजिता शं ॥ ४ ॥ ॥ इति अजितनाथ स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ संत्रवजिन
 स्तुतिः प्रारंभ ॥ आर्यर्गिति वृत्तेन ॥ निर्भ्रशशुत्रवत्रय शं त्रवकांतरतार तार ममा
 रं ॥ वितर ज्ञातजगन्नय शंत्रव कांतर तारता रममरं ॥ १ ॥ आश्रयतु तव प्रणत
 विप्रया परमा रमा र मानमदमरैः ॥ स्तुत रहित जिनकदंबक विप्रया परमार मारमान-
 मद मरैः ॥ २ ॥ जिनराज्या रचितं स्ता दसमाननयानया नयायतमानं ॥ शिवशर्मणैमतं
 दधं दसमाननयान यानया यतमानं ॥ ३ ॥ शृंखलवृत् कनकनिजा याता मसमानमान-
 मानवमहिता ॥ श्री वज्रशृंखलां कज याता मस मान मानमा नवमहि तां ॥ ४ ॥ ॥
 इति संत्रवजिन स्तुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ अत्रिनंदन जिन स्तुति प्रारंभः ॥ कुत-
 विदंबित वृत्तेन ॥ ॥ त्वमशुत्रान्यत्रिनंदन नंदिता सुरवधूनयनः परमोदरः ॥ रमर
 कर्षीद्विविदारण केसरिन् सुख धूनय नः परमोदरः ॥ १ ॥ जिनवराः प्रयत ध्वमिता

मया मम तमो हरणाय महारिणः प्रदधतो युवि विश्वजनीनता ममतमोहरणाय महा-
रिणः ॥ ९ ॥ अमुमतां मृतिजाल्य ह्रिताययो जिनवरगमनो न्रव मायतं ॥ प्रलघुतां नय
निर्मथितो ह्यता जिनवरा गमनोन्नवमाय तं ॥ ३ ॥ विशिषशंखजुषा धनुषा स्तसस्तुर-
त्रिया ततनुन्नमहारिणा ॥ परिगतां विशदा मिहरोहिणीं सुरत्रियाततनुं व्रम हारिणा
॥ ४ ॥ ॥ इति अजिनंदन जिन स्तुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ सुमतिनाथ जिननी
स्तुतिः प्रारभ्यते ॥ ॥ आर्यागीति वृत्तेन ॥ मदमदनरहित नरहितसुमते सुमते
नकनकतारेतारे ॥ दमदमपादव्यपादव्यदरादरातिक्षतिक्षपातःपातः ॥ १ ॥ विधुताराविधु-
तारा सदासदा नाजिनाजि ताधाताऽधाः ॥ तनुतापातनुतापा हितमाहितमानवनव विन्नवा
विन्नवा ॥ २ ॥ मतिमतिजिनराजिनराहितेहिते रुचितरुचित मोहेऽमोहे ॥ मतमत
नूनं नूनं रमराऽस्मरा धीरधीर सुमतः सुमतः ॥ ३ ॥ नगदाऽमा नगदाऽमा महोमहो
राजिराजि तरसा तरसा ॥ धनधन कालीकाली वतावतादूनदूनसन्नासन्ना ॥ ४ ॥ इति
सुमतिजिन स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ पद्मप्रपन्न जिननी स्तुति प्रारभ्यः ॥ वसंततिलका
वृत्तेन ॥ पादरुचीददितपद्मपृष्ठःप्रमोद, सुसुजतामर सदामलतातपात्री ॥ पाद्मप्रपन्नी
प्रविदधातुसतां धितीर्ण, सुसुजतामरसदामलतांतपात्री ॥ १ ॥ सामेमतिं वितनुता जिन-
पकिरस्त सुजगताऽमर सन्नासुरमध्यगाऽद्यां ॥ रत्नांशुत्रिविदधति गगनातराल सुजग-
तामरसन्नासुरमध्यगाद्यां ॥ २ ॥ श्रांतिविदं जिनवरगमममाश्रयार्थ, मारासमानमलसंतम
संगमानां ॥ धामा प्रिमंन्नवसरिपतिसेतुमस्त, मारास मानमल संतम संगमानां ॥ ३ ॥

गांधारि वज्रसुसले जयतः समीर, पातालसत्कुवलयया वलिनीवनेते ॥ कीर्तिः करप्रण-
 विनी तवयेनिरुद्ध, पातालसत्कुव लया वलिनी वनेते ॥ ४ ॥ ॥ इति पद्मप्रन्नाजिन
 स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ श्रीसुपार्श्व जिननी स्तुति प्रारंभः ॥ मादिनी वृत्तेन ॥ ॥ कृत-
 नतिकृतवान् योजंतुजातंनिरस्त, स्मर पर मद माया मान वाधायशस्तं ॥ सुचिरमवि-
 चलयं चित्तवृत्ते. सुपार्श्व, स्मर पर मद माया मान वाधायशस्तं ॥ १ ॥ ब्रजतु जिन
 ततिः सगोचरेचित्तवृत्तेः, सदमर सहिताया बोधिकामानवानां ॥ पद्मसुपरिदधाना वारि-
 जानांव्यहार्धीत् सदमर सहिताया बोधिकामानवानां ॥ २ ॥ दिशडपशम सौर्यसंय,
 तानांसदैवो, रुजिनमतसुदारं काममायामहारि ॥ जननमरणरीणान् वासयन् सिद्धिवासे-
 रुजिनमतसुदारं काममायामहारि ॥ ३ ॥ दधतिरविसपत्नरत्नमात्रास्तत्रास्य, ब्रवपनत-
 रवारि वारणा रावरीणां ॥ गतवतिविकिरत्या दीमहामानसीष्टा, नवधनतरवारि वारणा-
 रावरीणां ॥ ४ ॥ इति सुपार्श्व जिन स्तुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ चंद्रप्रन्नाजिननी स्तुति
 प्रारंभः ॥ मंदाकांता वृत्तेन ॥ ॥ तुच्यंचंद्रप्रन्नाजिन नमस्तामसो ज्जुंभितानां ॥ हाने
 कांतानलसमदया वंदितायासमान ॥ विश्वंपंतया प्रकटितपृथुरपट्ट दृष्टातहेतु ॥ हाने
 कांतानल समदया वंदिताया समान ॥ १ ॥ जीयाडाजी जनित जनन ज्यानिद्वानिर्ज-
 नानां ॥ सत्या गारं जय दमितरुक् सारविंदावतारं ॥ नव्योधृत्याश्रुविकृत वतीया वद-
 धर्मचक्रं, सत्यागाण्डवर्त्मपुत्ररुक् सारविंदावतारं ॥ २ ॥ सिंघांतःस्तादहितहृतये
 रथ्यापयधं जिनेजः, सैद्धजीवः सकविधिषणापादनेकोपमानः ॥ दक्षः साकाड्वृणचुदकै-

शंभुमोदादिहाय, सदाजीवः सकविधिपणापादनेकोपमान ॥ ३ ॥ वज्राकुश्रयं कुशकुलिश
 नृत्वंविधस्त्वप्रयत्नं ॥ स्वायत्यागे तनुमद्वने हेमतारातिमत्ते ॥ अध्याख्ण्डे शशधरकर श्वेत
 प्रासिद्धिपेदे, स्वाय त्यागे तनु मद्वने हेम तारातिमत्ते ॥ ४ ॥ ॥ इति चंद्रप्रत्न जिन
 स्तुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ सुविधिनाथनी स्तुति प्रारम्भः ॥ उपजाति दुत्तेन ॥ तवाग्नि-
 शिष्व सुविधिविधेयात्, सत्रासुरादी नतपादयावत् ॥ योयोगिपंतया प्रणतो नम्रः सत्,
 सत्रासुरादीनतपादयावत् ॥ १ ॥ या जं तुजातायहितानिराजी, साराजिनानामलपक्ष-
 मालं ॥ दिश्यानुदं पादशुगं दधाना, साराजि नानामलपक्षमालं ॥ २ ॥ जिनेंद्र
 नगैः प्रसन्नगत्रीरा, शुभ्रारतिशस्य तमरत्वेन ॥ निर्वाशयंतिमभार्मदिश्यात् शुभ्राऽरति
 शस्य तमस्तवेन ॥ ३ ॥ दिश्यात्तवाशु ज्वलनायुवाटप, मध्यासिताकं प्रवराखकस्य ॥
 अस्तेन्द्रशस्यस्यरुचोरुपुष्ट, मध्यासिताकं प्रवरा खकस्य ॥ ४ ॥ ॥ इति सुविधिजिन
 स्तुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ जीतलनाथनी स्तुति प्रारंभः ॥ इतविद्वांशित दुत्तेन ॥ ॥
 जयतिशीतलतीर्थकृतः सदा, चलनतामर संसद लघनं ॥ नवकमं वरुहां पश्चिसंरपुश,
 षडनतामरसंसदलंघनं ॥ १ ॥ स्मर जिनान् परिनुद्यजरारजो, जननता नवतोदय
 मानत ॥ परमनिर्वृति शर्मकृतोयतो, जननता नवतोदयमानतः ॥ २ ॥ जयतिकटिपत कटप-
 तरूपमं, मतमसारतरागम दारिणा ॥ प्रथितमत्राजिनेनमनीपिणा, मतमसार तरागम
 दारिणा ॥ ३ ॥ धनरुचिर्जयता ह्युविमानवी, गुरुतराविहतामर संगता ॥ कृतकरास्त्रवरे
 फलपत्रत्रा, गुरुतराविहता मरसंगता ॥ ४ ॥ ॥ इति शीतलनाथनी स्तुतिः संपूर्णा

॥ अथ श्री श्रेयांसजिननी स्तुति. प्रारंभः ॥ हरिणी वृत्तेन ॥ कुसुमधनुषायस्मादन्य-
नमोहवज्रं वधु. ॥ कमलसदृशांगी तारावावलादयि तापितं ॥ प्रणमततराब्दाक् श्रेयांसं नचाह-
तयन्मनः ॥ कमलसदृशांगी तारावावलादयितापितं ॥ १ ॥ जिनवर तति जीं वादीनाम-
करणवरसत्वा ॥ समदम हितामारादिष्टा समान वराजया ॥ नमददृशतशुक्रंपंक्तया नृता
तनोतुभतिं ममा ॥ समद महितामारादिष्टा समानवराजया ॥ २ ॥ त्रवजलनिधिभ्रान्य
जंतुव्रजायतपोतद्दे ॥ तनुमतिमतासद्वाशानांसदानर संपदं ॥ समन्त्रिजपता मर्हन्नाथाग-
मानतन्नूपतिं ॥ तनुमतिमतांसद्वाशानासदानरसंपदं ॥ ३ ॥ धृतपविफलाद्वादीषंदेः करैः
कृतबोधित ॥ प्रजयति महाकावी मर्याधिपंकजराजिन्निः ॥ निजतनुजतामभ्यासीनादध-
त्यपरीक्षितां ॥ प्रजयति महाकावी मर्याधिपंकज राजिन्निः ॥ ४ ॥ इति श्रेयांसजिन
स्तुति संपूर्णा ॥ अथ श्री वासुपूज्य नामे जिननाथनी स्तुति प्रारंभः ॥ स्वग्धरा
वृत्तेन ॥ ॥ पूज्यश्रीवासुपूज्या ऽटुजिनजिनपते नूतनादित्यकांतेऽ ॥ मायासंसार वासा-
वनवर तरसादीनवादानवाहो ॥ ध्यानघा त्रायतां श्रीप्रन्नवन्नवन्नया द्वित्रतीत्रकिन्नाजा ॥
मायासंसार वासा वनवर तरसा दीन वादानवाऽर्हो ॥ १ ॥ पूतोपपादपांसुः शिरसि
सुरते शचरञ्चूर्णजोत्रा ॥ यातापत्राऽसमाना ऽप्रतिमदमवती हार तारा जयंती ॥ कीर्त्तैः
कांत्याततिः साप्रविकिरतु तराजैरराजीरजस्ते ॥ यातापत्रासमाना ऽप्रतिमदमवती हार-
ताराजयंती ॥ २ ॥ नित्यहेतूपपत्तिप्रतिहत कुमत प्रोक्षतध्यांतबंधा ॥ ऽपापायाऽसाध-
माना मदन्तवसुधा सारहृद्याहितानि ॥ वाणी निर्वाणमार्गप्रणयि परिणतातीर्थ नाथ

क्रियान्मे ॥ उपायासाध्यमाना मदन तव सुधा सारह्याहितानि ॥ ३ ॥ रक्षुञ्ज्यद्वादि
 प्रतिहृत्तिशमिनी वाहितश्वेतनास्य ॥ रसन्नालीकासदातापरिकर मुदितासाङ्गमावात्रवतं ॥
 शुभ्राश्रीशांतिदेवी जगति जनयतात्कु डिकात्रातिथस्याः ॥ सन्नालीकासदातापरिकर
 मुदिता साङ्गमावात्रवतं ॥ ४ ॥ इति वासुपूज्यजिन स्तुतिः संपूर्णा ॥ अथ
 श्री विमलनाथजिननी स्तुति प्रारंभः ॥ पृथ्वी वृत्तेन ॥ अपापदम वंघनं शमित
 मानमा मोहितं ॥ नतामर सत्रा सुरं विमल मादयामोहितं ॥ अपापदमदंघनं शमित-
 मान मा मोहितं ॥ नतामरसत्रासुरंविमलमादयाऽमोहितं ॥ १ ॥ सदानवसुराजिता
 असमरा जि नात्रीरदाः ॥ क्रियासु रुचितासुते सकलत्रारतीरायताः ॥ सदानवसु राजिता
 असमराजिनानीरदाः ॥ क्रियासुरुचितासुतेसकलत्रारतीरायताः ॥ २ ॥ सदायतिगुरोर-
 होनमतमान वैरं चितं ॥ मतंवरदमेनसारहितमायता त्रावतः ॥ सदायतिगुरोरहो नमत
 मान वैरं चितं ॥ मतंवरदमेन सार हितमायता त्रावतः ॥ ३ ॥ प्रजाजितनुतामदंघन-
 मचापलारोहिणी ॥ सुधावसुरन्मिनामयिसत्राङ्गमादेहितं ॥ प्रजाजितनुताऽमदंघनमचा-
 पलाऽरोहिणी ॥ सुधा व सुर त्रीमना मयिसत्राङ्गमादेहितं ॥ ४ ॥ इति विमलजिन
 स्तुतिः संपूर्णा ॥ अथ श्री अनंतजिन नाथनी स्तुति प्रारंभः ॥ दुतविदंबित वृत्तेन
 ॥ सकल धौतसहा सनमेरव ॥ स्तवदिशंत्यन्निपेकजलाह्वयाः ॥ मतमनंतजितःस्त्रापितो
 ह्यसत् ॥ सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥ ममरतामर सेवित तेक्षण ॥ प्रदनिहंतु जिनेंद्र
 कदंबक ॥ व रदपादशुभंगतमङ्गता ॥ ममरतामरसेविततेक्षण ॥ २ ॥ परमतापदमान-

सजन्मनः ॥ अथपदंजवतोत्रवतोऽवतात् ॥ जिनपतेर्मतमस्तजगत्रयी ॥ परमता पदमान स
 जन्मनः ॥ ३ ॥ रसितसुच्च तुरं गमनायकं ॥ दिशतु काचन काति रिताच्युता ॥ धृत
 धनुःफलकासिशराकरै ॥ रसित सुच्च तुरंगमनायकं ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री अन्नतजिन
 रतुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ श्री धर्मनाथजिननी स्तुति प्रारंभः ॥ अनुष्टुप् वृत्तेन ॥ नमः
 श्रीधर्मनिष्कर्म, दयाय महि तायते ॥ मर्त्यामरेड नगोडै, दयायमहितायते ॥ १ ॥ जीया-
 जिनीधोधातात, ततानवसमानया ॥ नामंडवत्विपायः स, ततानवसमानया ॥ २ ॥
 चारतिजाक्र जिनेजाणं, नवनौरकृत्तारिके ॥ संसारात्रो निधावस्मा, नवनौरकृत्तारिके ॥ ३ ॥
 केकरिथाव-क्रियावक्ति, करावाजानयाचिता ॥ प्रकृतिर्नूतनांज, करावा जानयाचिता
 ॥ ४ ॥ इति श्री धर्मजिन स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ श्री श्रातिनाथ जिननी स्तुतिः
 प्रारंभ ॥ शार्दूलविकीडित वृत्तेन ॥ ॥ राजंत्या नवपद्मरागरुचिन्निः पादैर्जिताष्टापदा ॥
 डेऽकोपद्भुतजातरूपवित्रया तन्वार्थधीरक्षमा ॥ वित्रत्यामर सेव्यया जिनपते श्रीश्राति
 नाथाऽस्मरो ॥ डेकोपद्भुतजातरूपवित्रयातन्वार्थधीरक्षमां ॥ १ ॥ ते जीया सुर विद्विपो-
 जिनवया मावा दधानारजो ॥ राज्यामेडरपरिजा तसुमनः संतान कातां चिताः ॥ कीर्त्या
 कुंद सम त्विषेधद् पियेनप्राप्त लोकरथी ॥ राज्यामेडरपरिजातसुमन. संतानकांतां-
 चिता. ॥ २ ॥ जेनेडंमतमतनोतुसततं सम्यकृदभांसद्गुणा ॥ वीलात्रंगमदारिचिन्न-
 मदन्तापापहृद्यामरं ॥ डनिर्नेदनिरंतरंतरतमोनिर्नाशपशुद्धस ॥ व्हीलात्रंगमदारि चिन्न-
 मदन्तं तापापहृद्यामर ॥ ३ ॥ दंभत्रकर्मरद्वुनिकलयन् स ब्रह्म श्रातिः क्रियात् ॥ संत्य-

ज्यानिशमीक्षणेनशामिनोमुक्ताक्षमादीहितं ॥ तदाष्टापदपिंडपिण्डरुचिर्योऽधारयन्मूढतां ॥
 संत्यज्यानिशमीक्षणेनशामिनो मुक्ताक्षमादीहितं ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री शांतिजिन स्तुति-
 संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री कुशुनाथनी स्तुति ॥ मादिनी वृत्तेन ॥ ॥ त्रवतुममनमः श्री
 कुशुनाथायतरमा ॥ यमितशमितमोहायामितापायहृद्य ॥ सकलजिनपतिभ्यः पावनेभ्यो-
 क्षपाशा ॥ यमित शमित मोहा यामि तापाय हृद्यः ॥ १ ॥ सकलजिनपतिभ्यः पावनेभ्यो
 नमः स ॥ त्रयनरवरदेभ्यः सारवाद्रस्तुतेभ्यः ॥ समधिगतस्तुतिभ्योदेववृंदाजरीयो ॥ नय-
 नरवरदेभ्यः सारवाद्रस्तुतेभ्यः ॥ २ ॥ स्मरत विगतमुहं जैनचंद्रचकास ॥ त्कविपदग-
 मजग हेतुदंतकुतांतं ॥ द्विरदमिव समुद्यद्दानमार्गं धुताऽर्धै ॥ कविपदगमजगं हेतु दंतं
 कृतांतं ॥ ३ ॥ प्रचलदचिररोचिश्चास्नात्रेसमुद्यात् ॥ सदासिकलकरामेऽग्नीमहासेऽरित्रीते ॥
 सपदि पुरुषदत्ते तेत्रवतु प्रसादाः ॥ सदासिकलकरामेऽग्नीमहासेरित्रीति ॥ ४ ॥ ॥ इति
 कुशुनाथजिन स्तुति संपूर्ण ॥ १७ ॥ श्लोक संख्या ॥ ६८ ॥ ॥ अथ अरनाथ जिननी
 स्तुति प्रारंभः ॥ ॥ व्यसुचञ्चक्रवसिंदक्षमी मिहृदणमिवयः क्षणेनतं ॥ सन्नमद् मरमा-
 नससारमनेकपरा जितामर ॥ इतकलधौतकातमानमतानंदित त्रूरिनाकि नाक् ॥ सब्र-
 मदमर मानससारमनेकपराजितामरं ॥ १ ॥ स्तोतिसमंततः समवसरण त्रूमौयंसुरावलिः ॥
 सकलकला कलापकलिताऽपमदाऽरुणकरमपापदं ॥ तंजिनराजविसरमुध्यासितजन्मज-
 रंनमाभ्यर्हं ॥ सकलकलाकलाऽपकलितापमदाऽरुणकरमपापदं ॥ २ ॥ त्रीमहात्रवाधि
 त्रवत्रीतिवित्रोदि परारतविरस्फुरत् ॥ परमतमोहमानमतनूनमदंघनमघवतेऽहितं ॥ जिन

पतिमतमपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्म कारण ॥ परमत मोह मान मत नूनमदंघन मधवतेऽ-
 हितं ॥ ३ ॥ याऽत्र विचित्रवर्णवित तात्मजपृष्टमधिप्रिताहुता ॥ त्समतनुप्रागविकृतधी-
 रसमदवैरिवधामहारिभिः ॥ तडिदिवनातिसाध्यधनमूर्ध्वनिचक्रधरस्तुसामुद् ॥ समतनु-
 प्रागविकृत धीर समद वैरिवधाम हारिभिः ॥ ४ ॥ ॥ इति अरनाथजिन स्तुति
 संपूर्णा ॥ ॥ अथ मङ्गिनाथजिननी स्तुति प्रारंभः ॥ रुचिरा दृत्तेन ॥ ॥ नुदंस्तनुं-
 प्रवितरमङ्गिनाथमे ॥ प्रियंगुरोचिररुचिरोचितां वर ॥ विडंबयन् वररुचिमंडलोज्ज्वलः ॥
 प्रियंगुरोऽचिर रुचिरो चितावरं ॥ १ ॥ जवाजत जगदवतो वपुर्ध्वथा ॥ कदंबकैरवशातपत्रस-
 पदं ॥ जिनोत्तमान्स्तुतदधतःश्वजंरफुर ॥ त्कदंबकैरवशातपत्र संपदं ॥ २ ॥ ससपदं
 दिशतुजिनोत्तमाणमः ॥ शमावहन्नतनुतमोहरोदिते ॥ सच्चित्तनूःकतश्दहयेनयस्तप ॥
 शमावहन्नतनुतमोहरोदिते ॥ ३ ॥ द्विपंगतोहृदिरमतांदमश्रिया ॥ प्रजातिमेचकितहरि-
 द्विपन्नगे ॥ वटाह्वयेकृतवसतिश्रयकराद् ॥ प्रजातिमेचकित हरिद्विपन्नगे ॥ ४ ॥ ॥ इति
 श्री मङ्गिनाथजिन स्तुतिः संपूर्णा ॥ ॥ अथ श्री सुनिमुव्रत जिन स्तुति प्रारंभः ॥
 नदंटक दृत्तेन ॥ ॥ जिनसुनिमुव्रतः समवताज्जनतावनतः ॥ समुदितमानवाधनमदोन्न-
 वतोन्नवत ॥ अवनिविकीर्णमादिपतयस्थनिरस्तमनः ॥ समुदित मानवाधनमदोन्न-
 वतः ॥ १ ॥ प्रणमततंजिनव्रजमपारविसारिजो ॥ दलकमदाननामहिमधामप्रयास-
 मरुक् ॥ यमतितरसुरेज्वरयोषिद्विदामिदनो ॥ दलकमदाननामहिमधामप्रयासमरुक्
 ॥ २ ॥ त्वमवनतान् जिनोत्तमकृतांतप्रवाह्निजो ॥ ऽवसदनुमानसंगमनयाततमोदयितः ॥

शिवसुख साधक स्वप्निदधरस्तुधियांचरणं ॥ वसदनुमानसंगमनयाततमोदधितः ॥ ३ ॥
 अधिगत गोधिका कनकरुक्तवगोर्मुचितां॥कमलकशजितामरसत्रारयतुलोपकृतं॥ सुगमद
 पत्रप्रगतिलकैर्वंदंदधती ॥ कमलकशजितामर सत्रारयतुलोपकृतं ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री
 सुनिमुबत जिन स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ नमिनाथ जिननी स्तुति प्रारंभः ॥ शिख-
 रिणी वृत्तेन ॥ रफुरद्विचुम्भातेप्रविकरितन्यंतिसततं ॥ ममा यासंचारो दितमदनमे
 ऽधानिलपितः ॥ नमद्भव्यश्रेणीप्रवप्रयत्निदांह्यवचसा ॥ ममायासंचारोदितमदनमेवानि-
 लपितः ॥ १ ॥ नखांशुश्रेणिः कपिशितनमद्वाकिमुकुटः ॥ सदानोदी नानामयमलम-
 दारेरित तमः ॥ प्रचक्रेविश्वय. सजयति जिनाधीशनिवहः ॥ सदानोदीनानामयमलमदारे-
 रिततमः ॥ २ ॥ जलव्यालव्यध्रज्वलनगजरुकबंधनयुधो ॥ गुरुर्वाहोऽपातापदधनगरी-
 यानसुमतः ॥ कृतांतखासीष्ट रफुट विकटहेतु प्रभितिना ॥ गुरुर्वाहोपातापदधनगरी-
 यानसुमतः ॥ ३ ॥ विपद्द्व्यूहंवोदलयतुगदाहावलधरा ॥ समानावीकावीविशदचल-
 नानालिकवरं ॥ समध्यासी नांत्रोयूतधननित्रांत्रोधितनया ॥ समानावी कावी विशद
 चलनानालिकवरं ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री नमिनाथ जिन स्तुति संपूर्णा ॥ २१ ॥ श्लोक
 संख्या ॥ ८४ ॥ ॥ अथ श्री नमिनाथ जिननी स्तुति प्रारंभः ॥ शार्दूलविक्रीडीत
 वृत्तेन ॥ ॥ चिक्षेपोर्जितराजकं रणसुखे योलक्षसंख्यंक्षणा ॥ दक्षामंजन त्रासमानम-
 हसं राजीमती तापदं ॥ तंनमिनमनघनिर्वृत्तिकरं चक्रेयदूनांचयो ॥ दक्षामजनत्रासमान
 महस राजीमतीतापदं ॥ १ ॥ प्राव्राजीजितराजकारज द्रव्ययायोपिराज्यंजवा ॥ द्यासं-

सारमहादधाव पाहताशास्त्री॥वह्या॥दत्त ॥ यस्याः सर्वतएवसाहरतुनो राजीजिनाना-
 नवा ॥ यासंसारमहोदधाव पिहिताशास्त्रीविहायोदितं ॥ १ ॥ कुर्याणऽणुपदार्थदर्शन-
 वशाद्भास्वत्प्रनायाख्यपा ॥ मानत्याजनकृतमोहरतमे शस्तादरिजोहिका ॥ अक्षोन्प्रातव-
 न्प्रातीजनपते प्रोन्मादिनां वादिनां ॥ मानत्या जन कृतमोहर तमेशस्तादरिजोहिका ॥ ३ ॥
 हस्तावंबितचूतचुंबितिका यस्याजनोऽन्यागमत् ॥ विश्वासेवितताभ्रपादपरतां वाचारि-
 पुत्रासकृत् ॥ सात्रूतिवितनोतुनोर्जुनरुचिः सिधेऽधिरुडोहस ॥ द्विश्वासे वितताषपाद-
 परतां वाचारि पुत्राऽसकृत् ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री नेमिनाथ जिन स्तुति संपूर्णा ॥ ११ ॥
 ८८ ॥ अथ पार्श्वनाथ जिननी स्तुति प्रारंभः ॥ स्वग्धरा वृत्तेन ॥ ॥ मात्नामात्नवाहुर्द-
 धदधदरयासुदरारासुदरा ॥ ह्रीनाऽवीनामिहावीमधुरमधुरसासुचितोमाचितोमा ॥ पातत्पा-
 तात्सपार्श्वरुचिर रुचिरदोदेवरराजीवरराजी ॥ पञ्चाऽपत्रायदियात्तनुरत्तनुरवोनंदकोनोदकोनो
 ॥ १ ॥ राजी राजीव वक्रा तरल तरल सत्केतुरंगतुरंग ॥ व्याव व्यावप्रयोधाचितरचितरणे
 त्रीतिहयातिहया ॥ सारासाराजिनानामल ममल मतेर्बोधिकामाऽधिकामा ॥ दृग्पदव्याधि-
 कालाननजननजरत्रासमानाऽसमाना ॥ १ ॥ सद्योऽसद्योगत्रिभागमलगमवया जैनराजीन-
 राजी ॥ नूतानूतार्थ धात्रीहृतत हृततम. पातकः पातकमा ॥ शास्त्री शास्त्रीनराणा हृद-
 यहृदयशोरोधिका वाधिकावाऽ ॥ देयादेयान्मुदते मनुजमनुजरात्याजयंती जयंती ॥ ३ ॥ याता-
 यातारतेजाः सदसि सदसिनुक्कालकांतालकांताऽ ॥ पारिंपारिंड राजसुरवसुरवधू पूजितारं-
 जितारं ॥ सात्रासा त्रायतां त्वामविषमविषनूद्रूपणा त्रीपणात्नी ॥ हीनाऽहीनाप्रपत्नी कुव-

लयवलय श्यामदेहा.मदेहा ॥ ४ ॥ ॥ इति पार्थनाश्च जिन स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ
 महाविर जिननी स्तुति प्रारंभः ॥ दंभक वृत्तेन ॥ ॥ मयदमरशिरोरुद्धस्तरत्सामोद-
 निर्निदमंदरमावारजोरंजितांबोधरित्रीकृताऽ ॥ वनवरतमसंगमोदारतारोद्विताऽनंगना-
 र्थावलीलापदेहे क्षिताऽमोहिताक्षोत्रवात् ॥ ममवितर तुवीरनिर्वाणशर्माणिजातावतारोध-
 राधीजासिश्शार्थनाभिक्कमावंकृता ॥ वनवरतमसंगमोदारतारोद्विताऽनंगनार्थावलीलाप-
 देहे क्षितामोहिताऽक्षोत्रवान् ॥ १ ॥ समवसरणमत्रयस्थाःस्फुरत्केतुचक्रानकानेकपद्मे-
 डुरुक्चामरोत्सर्पिसालत्रयी ॥ सद्वनमदशोकपृथ्वीक्ष्णप्रायशोत्रातपत्रप्रत्राणुर्वरराट्परै-
 ताहितारोचितं ॥ प्रवितरतुसमीहितंसाऽहंतांसंततिर्भक्तिप्राजांत्रवांत्रोधिसंत्रांतप्रव्यावली-
 सेविताः ॥ सद्वनमदशोकपृथ्वीक्ष्णप्रायशोत्रातपत्रप्रत्राणुर्वरराट्परेताहितारोचितं ॥ १ ॥
 परमततिमिरोग्रत्रानुप्रत्रान्त्रूरिंत्रर्गेर्ग्रीराभ्रश्रांविश्ववर्षेनिकाद्येवितीर्यात्तरा ॥ महतिमति-
 मतेहितेशस्यमानस्यवासंसदाऽतन्वतीतापदानंदधानस्यसाऽमानितः ॥ जननमृदिततरंगनि-
 ष्णसंसारनीरकरंतनिंमज्जजनोत्तारनौररतीतीर्थकृत् ॥ महतिमतिमतेहितेशस्यमान-
 सवाससदातन्वतीतापदानंदधानस्य सामानितः ॥ ३ ॥ सरन्नसनतनाकिनारीजनोरोजपी-
 टीब्रुवत्तारद्वार स्फुरद्द्रिमसारकमंत्रोरोहे ॥ परमवसुतरंगजारावसन्ना शितायातित्राराजि-
 तेत्रासिनीद्वारतारावलक्रेमदा ॥ क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकंठोद्भटसंस्थिते
 प्रव्यलोकत्वमंवांडविके ॥ परमवसुतरंगजारावसन्नाशितारातित्राराजितेत्रासिनीद्वारताराव-
 लक्रेऽमदा ॥ ४ ॥ इति श्री महावीर जिन स्तुति संपूर्णा ॥ ॥ अथ विनयसागर कृत

वसत लिख्यते ॥ राग कल्याण ॥ ॥ वदनपर वारीजाडं ॥ नात्रिके नंदा ॥ वदन ० ॥
 ए टेक ॥ नात्रिके नंदा वारि प्रथम जिणंदा ॥ टुषत्र लंठन सुख कदा ॥ वदन ० ॥१॥
 त्रवीधनकमल विकास दिनंदा, नमतनरेंद सुर इदा ॥ वदन ० १ ॥ त्रवदवताप हरनकुं
 चंदा ॥ धीरज गुन ज्युं गिरिंदा ॥ वदन ० ॥ ३ ॥ असरन सरन चरन सुख कंदा, विनय
 नमत तुम वदा ॥ वदन ० ॥ ४ ॥ ॥ इति पद संपूर्ण ॥ १ ॥ अंगन बोले कागरी,
 आज पीया आवनको सुपन तयो, मेरे अंगन बोले काग ॥ ए देशी ॥ राग वसंत ॥
 जाई जुई गुलाव री, आजप्रभुपूजनको हरप तयो, मेरे जाई जुई गुलाव ॥ ए टेक ॥
 केतकी चंपक मरवो मोगरो, फुलको पगर तराव री ॥ आजप्रभुपूजनको ० ॥ १ ॥
 मुकुटकुडल शिर लजविराजे, आगी सोहे जडाव री ॥ आजप्रभु ० ॥ १ ॥ संतसवे
 सिद्धि त्रावना त्रावो, मादद ताल मिलाव री ॥ आजप्रभु ० ॥ १ ॥ संतसवे
 गुण गाढ, दावगुलाव जडाव री ॥ आजप्रभु ० ॥ ३ ॥ अनंत नाथजीके
 त्रवडखसें तोडाव री ॥ आजप्रभु ० ॥ ५ ॥ अतो पहोर हे नाम तुहारो, ध्यानधरो
 शुभ त्राव री ॥ आजप्रभु ० ॥ ६ ॥ आनंद हरप वधाई जनकुं, विनय सहित गुन गाव
 री ॥ आजप्रभु ० ॥ ७ ॥ इति पद संपूर्ण ॥ १ ॥ ॥ राग वसंत काफ़ी ॥ शिवशं-
 कर खेले होरी, माहादेव एसि ज्वालाकुंजनमे ॥ शिव ० ॥ शंकर खेले माहादेव खेले, खेले
 गणपत गोरी ॥ विच वीच सुरवीधर खेले, वाजत ताल टकोरी ॥ माहादेव एसी ० ॥ ए
 देशी ॥ हरी आवत वे कर जोरी, महावीर एसो जिनवर वंदनको, हरि आवत वे कर

जोरी ॥ ए टेक ॥ चोसठ सहस हस्ती बनाए, पंचसैं वार सुखो री ॥ सुख सुखे अपटदंतु-
सव सोई, वावरी आठ लहो री ॥ महावीर ० ॥१॥ वाव वाव विच आठ कमलहे, पांख-
डी लाख लहो री ॥ पांखडी पांखफी नाटक रचना, बेसरी वीणककोरी ॥ महावीर ० ॥२॥
कमलकमल विच इंद्र चुवन हे, आठ चक्रासन जोरी ॥ विचसिंहासन इंद्रविराजे, वीरनमत
कर जोरी ॥ महावीर ० ॥३॥ दशाणुप्रज देखत हरिर रचना, निज अत्रिमान गयो री ॥ रिश्रिडां
डके चारित्र दीनो, प्रभुके शरन रह्यो री ॥ महावीर ० ॥४॥ प्रभुकेचचन सुनि आनंद होवत,
वंदन सुनिपें कयों री ॥ विनयधरत बहु नक्ति करत हे, हरिनिज स्वर्ग गयो री ॥ महा-
वीर ० ॥ ५ ॥ ॥ इति पदं ॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ पीया प्यारेने मेरी शुद्ध नां लही,
पीयाके दरद में बाहुरी चई ॥ पीया ० ॥ जारे ननदीया तुं अपने विरजकुं, तिन मोसैं
एसी कही ॥ प्रीत करी कलु बेर वसायो, सो हसकर वात मोसैं कलु न कही ॥ पीया
प्यारे ० ॥ ए देशी ॥ आजसमोवसरनकी रचना चई, सोइइ चूति कं खबर चई ॥
आजसमो ० ॥ ए टेक ॥ तीन कोट विच तखत विराजे, रचना बहोत चई ॥ एसो
सुनके विचारी मनमें, अक्कोअव समजाजं चई ॥ आज ० ॥ १ ॥ मानधरत आए
प्रभु आगे, देखत चिंता चई ॥ हरिहर ब्रह्मा राम कोनहे, इनकी रीत तो सब हे
नई ॥ आज ० ॥ २ ॥ मेरा संसय कुं जो मिटावे, तो सब सिध चई ॥ तवप्रभु इंद्र
चूतिकुं बोलावे, ज्ञानविचार करो सुमई ॥ आज ० ॥ ३ ॥ आपसुखे पद वेदका बोले,
आनंद हरष चई ॥ अरथ सुन्यो प्रभुजीके आगे ॥ विनयधरत थिर चित्त चई ॥

अज्ञाज० ॥ ४ ॥ ॥ इति पदं ॥ ४ ॥ राग वसंत ॥ मोकुं एसो जेद वतायो, ज्ञानतो
 अब हुं पायो ॥ मोकुं० ॥ ए टैक ॥ एतादिन दिवसें दुं जानत, वेदको अरथ में पायो ॥
 पण प्रभुसुखसें अरथ सुन्यो जव, सोई अरथ ठेरायो ॥ ज्ञानतो० ॥ २ ॥ उही अरथ
 उही अजरमें, पण में कवहुं न पायो ॥ केवल ज्ञान विना सब एसो, जूठ कुं साच
 ठेरायो ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ इज्जति आदे सबहीको, संसय तिमिर हरायो ॥ द्वाथजोप
 प्रभुजीके आगे, विनयसु सीस नमायो ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ ॥ इति पदं ॥ ५ ॥ राग
 वसत ॥ ॥ जिनराज सदा जय कारी, जिनराज सदा जय कारी ॥ ए टैक ॥ शिवशंकर
 जगदीस चिदानंद, ज्योति सरूप उदारी ॥ अदख निरंजन वीत राग तुम, सकल जंतु
 हितकारी ॥ प्रभु तुमं करुणा धारी ॥ जिनराज० ॥ १ ॥ अज अविनाशी अकल अरूपी,
 दोपरहित अतिकारी ॥ परम पुरुष परमात्म तुंही, लोकादीक विहारी, परम पद के
 दातारी ॥ जिनराज० ॥ १ ॥ अनंत गुणगर साहेव जिनजी, शासन के शिरदारी ॥
 सुरनर सुनिजन ध्यान धरत नित ॥ वीरप्रभु उपगारी, जाके गौतम गणधारी ॥ जिन-
 राज० ॥ ३ ॥ उगणीस पांच माघ शुद्धि पंचमी, सोमवार सुखकारी ॥ जलकजवांदिर संघ
 मितव बहु, उजव हुं उदारि, आपना चर्ई मनुहारी ॥ जिनराज० ॥ ४ ॥ प्रावसहित
 करे पूजन वंदन, ज्युं पासे जवपारी ॥ इहजव कृष्टि टुष्टि यश कीरती, दिनदिन अधिक
 वधारी, विनय कहे जिन सुख कारी ॥ जिनराज० ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्ण ॥ ॥ राग
 वसंत ॥ हररथो मनमें रे सुरारि ॥ आ ए ब्रह्मचारी ॥ हररथो० ॥ ए टैक ॥ अद्वार

सहस्र सुति सहित फिरतहें ॥ आए वनह मफारी ॥ समीवसरन रचना सुर कीनी ॥
 सिंहासन मनो द्वारी ॥ वेठे प्रभु केवल धारी ॥ हरख्यो ० ॥ १ ॥ शिदि सहित यादव-
 पति आए ॥ वंदन विधि करे सारी ॥ सनमुख वेठो आय सत्रामां ॥ देव देवी नर नारी ॥
 सुण प्रभु वाणी प्यारी ॥ हरख्यो ० ॥ २ ॥ तव प्रभुजी प्राखे केसवकुं ॥ तुं होइस अद-
 तारी ॥ अमुमनामें द्वादशमो जिनपति ॥ एहिज तरत मफारी ॥ करमक्षयधी जव पारी ॥
 हरख्यो ० ॥ ३ ॥ परजपगारी जग हितकारी ॥ में जाडं बलि द्वारी ॥ विनय नमत प्रभु
 आगें अरजी ॥ ज्योत्रव सेव तुम्हारी ॥ होजो सेवकने सारी ॥ हरख्यो ० ॥ ४ ॥
 इति पदं ॥ ७ ॥ राग वसंत ॥ जिनेदा तेरे मुख निरखनसें ॥ नयन हृदय उलसंत ॥
 ए टेक ॥ प्रभुमुख निरखे पाप कटतहें ॥ पावत मुख अनंत ॥ जिनेदा ० ॥ १ ॥ श्रवन सफ़ल
 तुम कीरती सुनके ॥ मस्तक सफ़ल नमंत ॥ रसनासफ़ल प्रभुगुण गाए थें ॥ कर जिन-
 वर पूजत ॥ जिनेदा ० ॥ २ ॥ पाजचले तीरथ जई फरसे ॥ उजल ध्यान धरंत ॥
 मणुअजनम तस सफ़लो होवे ॥ विनयसुं प्राक्ति करंत ॥ जिनेदा ० ॥ ३ ॥ इति
 पदं ॥ ॥ ७ ॥ राग वसंत काफ़ी ॥ मतजाडैरे आजगोरी पानीयां तरनकुं ॥ मत ० ॥
 टापी विचमें कान ॥ एकरकुं मारत पिचकारी ॥ धकधक अवाजि न जाडैरे, आज-
 गोरी पानीयां तरनकुं ॥ ए देशी ॥ मंगइतिआज प्रभु समीवसरनकुं ॥ मंगइति ० ॥
 टाडो वीचमे साथ ॥ उनकुं नहीरे करमकी बाध ॥ धनधन दिन ज्योरे आज ॥ प्रभु
 समीवसरन ० ॥ ए टेक ॥ शीतपफ़त मोरी वहीयां उरतहें ॥ सीगति होसे तिद्वारी ॥

धन धन दिन० ॥ १ ॥ श्रेष्ठिक सुनकें विचारत मनमें ॥ किनसे लग्नी हें यारी ॥ धन
 धन दिन० ॥ २ ॥ महेल प्रजातो अन्नयकु वोली ॥ पूवण गयो जिन डुअरि ॥ धन
 धन दिन० ॥ ३ ॥ संसय मिटगयो वीरवचनथें ॥ हुकमकी चिंता धारी ॥ धन धन दिन०
 ॥ ४ ॥ जारे अन्नयन्नयो काम ए खोटो ॥ राणी मोहोव दीयो जारी ॥ धन धन दिन०
 ॥ ५ ॥ चिता मत करो किसी पिताजी ॥ घास धूम नन्नचारी ॥ धन धन० ॥ ६ ॥ अन्न-
 यकुमर तव दीक्षा लीनी ॥ विनय नमत व्रतधारी ॥ धन धन० ॥ ७ ॥ ॥ इति पदं
 ॥ राग वसंत काफ़ी ॥ आ व्रजमें होरी खेदे कामनी ॥ माथे सुकुट वाकुं दमके
 दासनी ॥ आ व्रजमें होरी० ॥ ए देगी ॥ आजसखी में मिलन जावरी ॥ महसेनवन
 महा वीर आवरी ॥ आज सखि० ॥ ए टेक० ॥ उर मिलनके बहुत ठामहें ॥ प्रयुक्तुं
 मिलन कही केंसें पाजरी ॥ महसेनवन महा वीर आवरी ॥ आजसखि० ॥ १ ॥ रागी
 विरागी मिलन कयुं होवे ॥ लोह कनक केंसें एक जावरी ॥ महसेन० ॥ आजसखि०
 ॥ २ ॥ परगुन ठोड उदास रहेजो ॥ जिनगुन अन्नप्रव प्रेम लावरी ॥ महसेन० ॥
 आजसखि० ॥ ३ ॥ प्रयुपद ध्यान धरसे मिलतहे ॥ विनय नमत निजसुख जावरी ॥
 महसेन० ॥ आजसखि० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ १० ॥ राग वसंत काफ़ी ॥ आतम तत्वशु
 विचारो ग्यानसे ॥ करम कटे ज्यु शुक्लध्यानसें ॥ आतम० ॥ ए टेक ॥ पुद्गल जीव
 सरूप पिजान्यो ॥ ममता मिटगई सारी जानसे ॥ करम कटे ज्युं शुक्लध्यानसे ॥
 आतम० ॥ १ ॥ क्रीडादिक अरि अंधकार सम ॥ नास नयो सब ग्यान जानसें ॥ करम

कटे ज्युं शुक्लध्यानसे ॥ आतम० ॥ १ ॥ परमात्म पद पावत सोई ॥ विनय नजत
 पद अचलध्यानसें ॥ करम कटे ज्युं शुक्लध्यानसें ॥ आतम० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ १२ ॥
 राग वसंत काफ़ी ॥ वात ए विसर गई ॥ कही जो ग्यानी पुरसें ॥ वात ए विसर गई ॥ ए
 टेक ॥ धन कारण करी जीवहिंस्या बहु ॥ परीग्रह ममता चई ॥ तोल माप सब कुड
 कमाया ॥ परधन आस थई ॥ कही जो ग्यानी पुरसे ॥ वात ए० ॥ १ ॥ क्रोध मान
 दो सुनिम बडे हे ॥ उनकी होत सही ॥ केवल पाप करम बंधाए ॥ आरत रौद्र मही
 ॥ कहीजो० ॥ १ ॥ कुड कपट विन पइसो न भिदे ॥ एसी समऊ चई ॥ सत्य कमावे
 जुहु न बोले ॥ सो नर गीनती नहीं ॥ कही जो० ॥ ३ ॥ धूरत उगकी कला बहु सीखी,
 विसरत कबहु नही ॥ बहु हुसीयारी कदावे उनकी, बाजी विगर गई ॥ कही जो०
 ॥ ४ ॥ नही समजाव नरम गुण नांही, सरल स्वभाव नही ॥ नहिं संतोष सत्य ब्रह्मचारी, तप
 जप ध्यान नहि ॥ कहि जो० ॥ ५ ॥ अशुभ करम उदयेथी चेतन, जडता बुद्धि लही ॥
 इरभति जावे बहुःख पावे, ग्यानी एसी कही ॥ कही जो० ॥ ६ ॥ ग्यानकी वातां
 सुखमें चरी हे, पण हृदयेमें नही ॥ विनय कहे कहो कैसें पावे, नवको पार यही ॥ कही
 जो० ॥ ७ ॥ ॥ इति पदं ॥ ॥ वसंत काफ़ी ॥ वातकी समऊ परी, कही जो ग्यानी
 पुरसे ॥ वातकी समऊ परी ॥ ए टेक ॥ क्रोधादिक खट वेरी हमारा, उसकी कल न परी ॥
 धर्मखजानो खावी कीयो सब, करज दार करी ॥ कही जो० ॥ १ ॥ जीवहिंसा ने जुव
 बोवणा, चोरी कुसील करी ॥ परीग्रहकी बसना ए पांचे, आया होंस धरी ॥ कही

धन धन दिन० ॥ १ ॥ श्राणक सुनक वचारित मनम ॥ कनस एग ॥ २ ॥ धन
 धन दिन० ॥ २ ॥ महल प्रजादो अत्रयकु बोली ॥ पूवण गयो जिन ड्यारी ॥ धन
 धन दिन० ॥ ३ ॥ संसय मिटगयो वीरवचनर्थे ॥ हुकमकी चिंता धारी ॥ धन धन दिन०
 ॥ ४ ॥ जारे अत्रयत्रयो काम ए खोटो ॥ राणी माहोव दीपो जारी ॥ धन धन दिन०
 ॥ ५ ॥ चिंता मत करो किसी पिताजी ॥ घास धूम नत्रचारी ॥ धन धन० ॥ ६ ॥ अत्र-
 यकुमर तव दीक्षा लीनी ॥ विनय नमत व्रतधारी ॥ धन धन० ॥ ७ ॥ ॥ इति पदं
 ॥ ॥ राग वसंत काफी ॥ आ व्रजमें दोरी खेले कामनी ॥ मधे सुकुट वाकुं दमके
 दामनी ॥ आ व्रजमें दोरी० ॥ ए देशी ॥ आजसखी में मिलन जावरी ॥ महसेनवन
 महा वीर आवरी ॥ आज सखि० ॥ ए टेक० ॥ उर मिलनके बहुत ठामहें ॥ प्रयुक्तु
 मिलन कही कैसें पावरी ॥ महसेनवन महा वीर आवरी ॥ आजसखि० ॥ १ ॥ रागी
 विरागी मिलन क्यु होवे ॥ दोह कनक कैसें एक नावरी ॥ महसेन० ॥ आजसखि०
 ॥ २ ॥ परगुन दोह उदास रहेजो ॥ जिनगुन अनुत्रय प्रेम लावरी ॥ महसेन० ॥
 आजसखि० ॥ ३ ॥ प्रयुपद ध्यान धरसे मिलतहे ॥ विनय नमत निजसुख नावरी ॥
 महसेन० ॥ आजसखि० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ १० ॥ राग वसंत काफी ॥ आतम तत्वशु
 विचारो ग्यानसें ॥ करम कटे च्युं शुक्लध्यानसें ॥ आतम० ॥ ए टेक ॥ पुदगल जीव
 सरूप पिदान्यो ॥ ममता मिटगई सारी जानसे ॥ करम कटे च्युं शुक्लध्यानसें ॥
 आतम० ॥ १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम ॥ नास त्रयो सब ग्यान जानसें ॥ करम

कटे जुं शुक्लध्यानसे ॥ आत्म० ॥ १ ॥ परमात्म पद पावत सोई ॥ विनय प्रजत
 पद अचलधानसे ॥ करम कटे जुं शुक्लध्यानसे ॥ आत्म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ १२ ॥
 राग वसंत काफ़ी ॥ वात ए विसर गर्द ॥ कही जो ग्यानी पुरसे ॥ वात ए विसर गर्द ॥ ए
 टेक ॥ धन कारण करी जीवहिंस्या बहु ॥ परीग्रह ममता चर्द ॥ तोल माप सब कुड
 कमाया ॥ परधन आस थर्द ॥ कही जो ग्यानी पुरसे ॥ वात ए० ॥ २ ॥ क्रोध मान
 दो सुनिम बडे हे ॥ जनकी होत सही ॥ केवल पाप करम बंधाए ॥ आरत रौड मही
 ॥ कहीजो० ॥ १ ॥ कुड कपट विन पइसो न मिले ॥ एसी समऊ चर्द ॥ सत्य कमावे
 जुतु न बोले ॥ सो नर गीनती नही ॥ कही जो० ॥ ३ ॥ धूरत उगकी कला बहु सीखी,
 विसरत कबहु नही ॥ बहु हुसीयारी कहेवे जनकी, वाजी विगर गर्द ॥ कही जो०
 ॥ ४ ॥ नही समत्राव नरम गुण नांही, सरल स्वभाव नही ॥ नाहिं संतोप सत्य ब्रह्मचारी, तप
 जप ध्यान नहि ॥ कहि जो० ॥ ५ ॥ अशुभ करम उदयेथी चेतन, जडता बुधि लही ॥
 इरागति जावे बहुङ्ख पावे, ग्यानी एसी कही ॥ कही जो० ॥ ६ ॥ ग्यानकी वातां
 सुखमें प्री हे, पण हृदयेमें नही ॥ विनय कहे कहो कैसें पावे, प्रबको पार चही ॥ कही
 जो० ॥ ७ ॥ ॥ इति पदं ॥ ॥ वसंत काफ़ी ॥ वातकी समऊ परी, कही जो ग्यानी
 पुरसे ॥ वातकी समऊ परी ॥ ए टेक ॥ क्रोधादिक खट वेरी हमारा, उसकी कल न परी ॥
 धर्मखजानो खावी कीयो सब, करज दार करी ॥ कही जो० ॥ १ ॥ जीवहिंसा ने जुत
 बोलणा, चोरी कुसील करी ॥ परीग्रहकी असना ए पांचे, आया होंस धरी ॥ कही

धन धन दिन० ॥ १ ॥ श्रेणिक सुनकें विचारत मनमें ॥ किनसे लगी हूं यारी ॥ धन
 धन दिन० ॥ २ ॥ महैल प्रजावो अन्नयकु बोली ॥ पूवण गयो जिन ड्यारि ॥ धन
 धन दिन० ॥ ३ ॥ संसय मिटगयो वीरवचनधें ॥ हुकमकी चिंता धारी ॥ धन धन दिन०
 ॥ ४ ॥ जारे अन्नयप्रयो काम ए खोटो ॥ राणी मोहोव दीयो जारी ॥ धन धन दिन०
 ॥ ५ ॥ चिंता मत करो किसी पिताजी ॥ घास धूम नन्नचारी ॥ धन धन० ॥ ६ ॥ अन्न-
 यकुमर तव दीक्षा लीनी ॥ विनय नमत ब्रतधारी ॥ धन धन० ॥ ७ ॥ ॥ इति पदं
 ॥ ॥ राग वसंत काफ़ी ॥ आ ब्रजमें होरी खेले कामनी ॥ माथे सुकुट वाकुं दमके
 दामनी ॥ आ ब्रजमें होरी० ॥ ए देशी ॥ आजसखी में मिलन जावरी ॥ महसेनवन
 महा वीर आवरी ॥ आज सखि० ॥ ए टेक० ॥ उर मिलनके बहुत ठामहें ॥ प्रयुक्त
 मिलन कही कैसें पावरी ॥ महसेनवन महा वीर आवरी ॥ आजसखि० ॥ १ ॥ रागी
 विरागी मिलन क्यु होवे ॥ दोह कनक कैसें एक चावरी ॥ महसेन० ॥ आजसखि०
 ॥ २ ॥ परगुन ठोड उदास रहेजो ॥ जिनगुन अनुभव प्रेम लावरी ॥ महसेन० ॥
 आजसखि० ॥ ३ ॥ प्रयुपद ध्यान धरेसे मिलतहे ॥ विनय नमत निजसुख चावरी ॥
 महसेन० ॥ आजसखि० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ १० ॥ राग वसंत काफ़ी ॥ आतम तत्वशु
 विचारो ग्यानसें ॥ करम कटे ज्युं शुक्लध्यानसें ॥ आतम० ॥ ए टेक ॥ पुद्गल जीव
 सरूप पिगान्यो ॥ ममता मिटगई सारी जानसे ॥ करम कटे ज्युं शुक्लध्यानसें ॥
 आतम० ॥ १ ॥ कोधादिक अरि अंधकार सम ॥ नास प्रयो सब ग्यान जानसें ॥ करम

कटे ज्युं शुक्लध्यानसे ॥ आतम० ॥ १ ॥ परमातम पद पावत सोई ॥ विनय नजत
 पद अचलध्यानसे ॥ करम कटे ज्युं शुक्लध्यानसे ॥ आतम० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ १२ ॥
 राग वसंत काफ़ी ॥ वात ए विसर गर्द ॥ कही जो ग्यानी पुरसे ॥ वात ए विसर गर्द ॥ ए
 टेक ॥ धन कारण करी जीवहिंस्या बहु ॥ परीप्रह ममता नई ॥ तोल माप सब कुड
 कमाया ॥ परधन आस थई ॥ कही जो ग्यानी पुरसे ॥ वात ए० ॥ १ ॥ क्रोध मान
 दो सुनिम बडे हे ॥ जनकी होत सही ॥ केवल पाप करम बंधाए ॥ आरत रौद्र मही
 ॥ कहीजो० ॥ १ ॥ कुड कपट विन पइसो न सिदे ॥ एसी समऊ नई ॥ सत्य कमावे
 जुतु न बोले ॥ सो नर गीनती नही ॥ कही जो० ॥ ३ ॥ धूरत उगकी कला बहु सीखी,
 विसरत कबहु नही ॥ बहु हुसीधारी कहावे जनकी, बाजी विगर गर्द ॥ कही जो०
 ॥ ४ ॥ नही समभाव नरम गुण नाही, सरल स्वभाव नही ॥ नहिं संतोष सत्य ब्रह्मचारी, तप
 जप ध्यान नहि ॥ कहि जो० ॥ ५ ॥ अशुभ करम उदयेथी चेतन, जडता बुद्धि वही ॥
 इरगति जावे बहुधःख पावे, ग्यानी एसी कही ॥ कही जो० ॥ ६ ॥ ग्यानकी बातं
 सुखमें नरी हे, पण हृदयेमें नही ॥ विनय कहे कहो कैसें पावे, नवको पार यही ॥ कही
 जो० ॥ ७ ॥ ॥ इति पदं ॥ ॥ वसंत काफ़ी ॥ वातकी समऊ परी, कही जो ग्यानी
 पुरसे ॥ वातकी समऊ परी ॥ ए टेक ॥ क्रोधादिक खट वेरी हमार, उसकी कल न परी ॥
 धर्मखजानो खावी कीयो सब, करज दार करी ॥ कही जो० ॥ १ ॥ जीवहिंसा ने जुत
 बोलण, चोरी कुसील करी ॥ परीप्रहकी नसना ए पांचे, आया होंस थरी ॥ कही

जो० ॥ १ ॥ ह्रम जान्यो छरगति त्रेजेगा, पांचे दूर करी ॥ तुमकुं आदरमान मिलेसो,
 उ अथ नाहें धरी ॥ कही जो० ॥ ३ ॥ समता गुण नरमासपणुं हे, सरल स्वप्नाव करी ॥
 सत्यशील संतोष ए आदे, इनसे काज सरी ॥ कही जो० ॥ ४ ॥ परत आदे बहु
 धरमे वेते, केवल ग्यान वरी ॥ विनय कहे धन उत्तम प्राणी, नमीयें जाव धरी ॥ कही
 जो० ॥ ५ ॥ ॥ इति पद संपूर्ण ॥ १३ ॥ ॥ वसंत काफ़ी ॥ गरज रहे दिन व्यासी,
 कुल माहण वासी ॥ गरज रहे० ॥ ए टेक ॥ इज अवधि जोई मन चिंतै, नीच गोत्र
 थ आसी ॥ कुल माहण वासी ॥ गरज रहे० ॥ १ ॥ त्रिशुक कुलमें जिनवर चक्री, राम
 हरी नवि आसी ॥ कुल माहण वासी ॥ गरज रहे० ॥ २ ॥ इज हुकमसे हरिण गमेपी,
 गरजकी वदवी आसी ॥ कुल० ॥ ३ ॥ राय सिन्धरथ त्रिसवारणी, कुर्वें आपे जवासी
 ॥ कुल० ॥ ४ ॥ चजद सुपन देखी मन हरखी, त्रिभुवनपति सुत आसी ॥ कुल० ॥ ५ ॥
 चैतर शुद्धि तेरसी मध्यरातें, जनम त्रयो शीववासी ॥ कुल० ॥ ६ ॥ मेरुशिखरपर
 जनम महोत्सव, सुरपति करत जवासी ॥ कुल० ॥ ७ ॥ अमृत अंगुठे धापीने, विनय
 नमत गुन गासी ॥ कुल माहण वासी, गरज रहे दिन व्यासी ॥ ८ ॥ ॥ इति पदं
 संपूर्ण ॥ १४ ॥ लाव तेरे नयनोकी गतिन्यारी, एतो उपयामरसकी क्यारी ॥ लाव० ॥
 ए टेक ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नेन त्रये अविकारी ॥ निजा सुपन दशा नहि
 यामें, दरसनावरण निवारी ॥ लाव० ॥ १ ॥ उर नेनमें कामक्रोध हे, वहीत प्ररी हे
 खुमारी ॥ परधनदेख हरनकी इजा, यामें हे हुसीयारी ॥ लाव० ॥ २ ॥ एसा तज्जव

हे नयनोंमें, क्यु पासे जव पारी ॥ उही विचार करो दिव अपने, होत कर्मसें नारी ॥
 लाव ० ॥ ३ ॥ धरम विना कोई सरना नहि हे, एसो निश्रय धारी ॥ विनय कहे प्रभु
 जजन करो नित, ओहि तारन हारी ॥ लाव ० ॥ ४ ॥ ॥ इति पदं ॥ १५ ॥ वसंत
 काफ़ी ॥ ॥ सांघरा मतमारो पिचकारी, मतमारो पिचकारी सांघरीया ॥ मत ० ॥ मत-
 मारो मरजादसुं रहियो ॥ में हुं कन्या कुंमारी ॥ तुमहो निर्वाज में नहि एसी, सुखसें
 देजंगी गारी ॥ फजेती होयगी तुमारी ॥ सांघरा मतमारो पिचकारी ॥ ए देखी ॥ मत-
 निरखो नारी पीछारी, जवाहो मतनिरखो नारी पीछारी ॥ ए टेक ॥ वेद पुरान की
 वात कहत हे, जाणे लोग लोगार्द ॥ राजादहे हुरमत जावे, लोकमांहि लघुताई, होयेगी
 कत तुमारी ॥ मतनिरखो नारी पीछारी ॥ १ ॥ काजलदोले ठवीकी सोत्रा, विगतर
 देखो विचारी ॥ तपजप दान पुन्य सब करनी, सुधरत कैसें खुमारी, रखोगे जलटी
 प्यारी ॥ मतनिरखो ० ॥ २ ॥ परनारी तज सत्यशील नज, जीवदया दिव धारी ॥
 सदगुरु संग गुनिजन सेवा, विनय कहे सुखकारी, सुनो ए अरजी हमारी ॥ मतनिरखो ०
 ॥ ३ ॥ ॥ इति पदं ॥ १६ ॥ राग वसत ॥ ॥ वाके मिरजाने धूममचाई, टाल-
 समसेरसें खेदुंगी होरी ॥ लखलख पतियां पुनेकुं नेजुं, सुनवे सिधुआ सवाई ॥
 हमजो हठेतो कसम नवीकी, तुमकुं रामडवाई ॥ टाल तरवारसें खेदुंगी होरी ॥ ए
 देखी ॥ सेसावनमें धूममचाई ॥ लाव जडपतिसें खेवत होरी ॥ ए टेक ॥ कुसुमके
 नेह कुसुमके नुपन, कुसुम मंडप मनोहारी ॥ कुसुमगिडक निज दाष दिवेहे, खेवत

सधरी नारी ॥ दाल ज० ॥ सेसावन० ॥ १ ॥ राधा रुकमिणि ने सत्यजामा, जंबुवती
 मिदि गोरी ॥ केसरकी पिचकारी वारत, अवील गुलाबकी जोरी ॥ दाल ज० ॥ से-
 सावन० ॥ २ ॥ नेमकुमरकुं धेर विण् हे, मिदिसव सखीवन टोरी ॥ व्याह्ननायो
 हरीकुं सुनायो, सादीराजुवसें जोरी ॥ दाल ज० ॥ सेसावन० ॥ ३ ॥ व्याह्नके मिस
 जान वेइने, मोहसेनकुं मोरी ॥ चारित्रवद् केवलपद् पाये, घातीकरमकुं तोरी ॥ दाल
 ज० ॥ सेसावन० ॥ ४ ॥ प्रजुको सीरपर हाथ धरायो, सिवमंदीर नई जोरी ॥ दिङ्गा
 केवल ज्ञान कल्याणक, विनय नमे करजोरी ॥ दाल ज० ॥ सेसावन० ॥ ५ ॥ इति
 पदं ॥ १७ ॥ राग वसत ॥ ॥ मोरे सामरे सबूनेसे लागी नेन, मोरे धरी अपलक नहि
 परत चेन ॥ मोरे सामरे० ॥ या सखी कोइ अन्नमिलवो, तपतप्यास मोरी जीअ्याकी बु-
 जावो, एतो नुन सखि मानु तिहारो, अक्के फाग मोरे पीयाकुं देअ्यावो, फेरवी सुनेगी
 वंसीकीविन ॥ मोरे सामरे० ॥ ए देशी ॥ मोरेप्रजुके दरसन लयलागी नेन, मोरे धरी अ-
 पलक बहु हरखचेन ॥ मोरेप्रजुके० ॥ ए टेक ॥ जगतप्रजु सो निरागी कहवो, बानी
 मोहतपतकुं बुजावो ॥ दोष अढार रहित हे देवा, इंद्रादिक सब करत इ सेवा, समज्यावी
 हे जिसका वेन ॥ मोरे० ॥ १ ॥ कहु आशुध हाथ न धारे, बाहनपर असवारी निवारो ॥
 ओरत संग नहि हे जाकुं, वसनजुषन सिणगार न ताकुं, जगतजीव सबहुके सेन ॥
 मोरे० ॥ २ ॥ जोगीसर जस ध्यान धरीने, जनममरण नय डरकरीने ॥ अजर अमरपद्
 पावत प्राणी, विनय कहे धन जयानीकी बानी, तारक एक हे धरमजेन ॥ मोरे० ॥ ३ ॥

इति पदं संपूर्णं ॥ १८ ॥ ॥ अथ श्री ज्ञानसागर कृत चोविशी विख्यते ॥ तत्र प्रथम
 श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥ माता कीर्ताते रे ॥ ए देशी ॥ सुरत रुढीरे ऋषभजिण्डनी,
 वालामारा सहने लागे प्यारी हो ॥ ओढाण करतां ए जिनजीनी, आवे संपत्तिसारी रे ॥
 मारं मन मोहुरे, देखी प्रभुसुख चंद ॥ मा० ॥ १ ॥ कामणगारो प्रभुरूप जोवाने ॥
 वा० ॥ हुं तु पूरण कामी रे, पूरव पुन्य पसाय करीने, सेवा तुमतणी पामी रे ॥ मारं०
 ॥ २ ॥ नात्रिराथा कुलकेरो दिनकर ॥ वा० ॥ मरुदेवीनो नंदारे ॥ तिनभुवनमां किरती
 जेहनी, गावे सुरनर इंदा रे ॥ मारं० ॥ ३ ॥ तुमगुण साथे मनहुं अमारं ॥ वाला० ॥
 अह्निस रहे वयवीन रे, गंगोदक माहे जीदंतो, मगनथाय जेम मीन रे ॥ मारं० ॥
 ॥ ४ ॥ श्रीविद्यासागर सूरिनो सेवक ॥ वाला० ॥ जिनगुणसुं रहे नीनो रे ॥ ज्ञानसागर
 कहे त्रक्ति तुमसुं, आव्हल नेह में कीनो रे ॥ मारं० ॥ ५ ॥ ॥ इति ऋषभजिन
 स्तवन ॥ १ ॥ अथ द्वितिय श्री अजितनाथजिन स्तवन ॥ ॥ दाव विशेषारी ॥
 प्रभुजीहे, अजीतजिणेर साहेवा, गुण अनत जगवंत ॥ प्रभुजीहे, वदनकमल
 तोरं निरखतां, त्रवत्रयनी गड त्रांत ॥ प्रभु० ॥ अ० ॥ १ ॥ प्र० सुलकर साहेव सेवियें,
 निसदिन वीजें नाम ॥ प्रभु० ॥ मनवंतित सुख आपवा, सुरतर ए अत्रिराम ॥ प्रभु०
 अ० ॥ २ ॥ प्र० कोसल देश सोहामणो, नयरी अयोध्यानो राय ॥ प्रभु० ॥ जीतसत्रु कुद
 मंडणो, विजयारणी माय ॥ प्रभु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ प्र० कंचनतनु अती दीपतो, गजवंतन
 सुख दाय ॥ प्रभु० ॥ बहुतेर दाख पूरवतणुं, प्रभुनुं जाणुं आय ॥ प्रभु० ॥ अ० ॥ ४ ॥

प्र० तुं वादेसर माहेरो, आणे अविचल ऋद् ॥ प्रयु०॥ विद्यासागर सुरिनो, ज्ञाने पामी
 नवनिध ॥ प्रयु०॥ अ० ॥ ५ ॥ ॥ इति अजित जिन स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ अथ तृती
 य श्री संभवनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ नयनरो नगिनो महारो हारनो हीरो, मारो नणदी-
 यरो वीरो ॥ माहारो साहेवो, वालामारा घडीएक करहो जूकाव हो ॥ ए देयी ॥ सन्नव
 जिनवर स्वामिजी, वालामारा, अरिहंत सुणो अरदास हो ॥ करजोडी वंदन करुं, वाला
 मारा, पूरण वंदित आस हो ॥ जिनमा नगिनो माहारो ज्ञानमां दीनो, माहारो समतामा
 नीनो, माहारो साहेवो, प्रयुमाहारा सेवकने सन्नार हो ॥ १ ॥ अक्तिवडव जिनराज जी
 ॥ वा० सेना नंदन देव हो, रायजीतारी कुल तिलो ॥ वा० ॥ नयरी सावहि सार हो ॥ जिन-
 मां ॥ ९ ॥ सुरलोकें जिम इदवो जी ॥ वाला० ॥ जिम मोरा मनमेद हो ॥ जिम चातुक
 चितें धरुं ॥ वाला० ॥ तिम साहेवसुं नेह हो ॥ जिनमां०॥३॥ रतन अमूदक जे प्रदीजी
 ॥ वाला० ॥ काच प्रहे कोण हाथ हो, सुरख कुण सुर तरु तजी ॥ वाला० ॥ कुण घावे
 वाडव बाष हो ॥ जिनमां०॥ ४ ॥ केसर चंदन घसी घणा जी ॥ वाला० ॥ पूजा रचियें
 सार हो, नार्वें सु स्तवना करी ॥ वाला० ॥ गार्ह्यें गीत रसाव हो ॥ जिनमा० ॥ ५ ॥ तुं
 प्रयु समरथ साहेवोजी ॥ वाला० ॥ तारण तरण जिहाज हो ॥ दरिसण दिजे जिनवरु,
 ॥ वाला० ॥ गुणनिधि गरीबनिवाज हो ॥ जिनमां० ॥ ६ ॥ अचवद गहनो राजवी जी ॥
 वाला० ॥ श्री विद्या सागर सुर हो ॥ ज्ञानसागर दम विनये ॥ वाला० ॥ देजो सुख चर-
 पुर हो ॥ जिनमां० ॥ ७ ॥ इति संभव जिन स्तवनं ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ श्री अचिनंदन

जिन स्तवन ॥ ॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ ॥ अग्निदंन जिन साचो देव, सुर-
 पति सारे जेहनी सेव ॥ साचो साहिवो ॥ वेठा जगप्रदयाल ॥ साचो ॥ मोपर धाजो
 मयाल ॥ साचो ॥ १ ॥ प्राति हार्य अनोपम अठ, सेवा सारे इंड चोसठ ॥ साचो ॥
 ॥ २ ॥ प्रयुजी वेठा तारण हार, चौबीस अतिसय जिनजी सार ॥ साचो ॥ ३ ॥
 दोष अहार रहित जगवंत, जिनजी माहे गुण अनंत ॥ साचो ॥ ४ ॥ वेठी परखदा
 वार मकार, प्रयुजी देसना दिये तिणवार ॥ साचो ॥ ५ ॥ चौथो जिनवर जक प्रधा-
 न, योप्रयु सुजने मोक निदान ॥ साचो ॥ ६ ॥ श्रीविद्या सागर सूरिनो शिष्य, ज्ञान-
 नमं ए वीसवा वीस ॥ साचो ॥ ७ ॥ इति श्री अग्निदंन जिन स्तवन ॥ ४ ॥ अथ
 पंचम श्री सुमतीनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ देशी पारधीयानी ॥ सत्तानिक राजा चटयो रे,
 सेना वड साथ रे ॥ ए देशी ॥ ॥ सुमति जिणंदनी सेवना रे, कीजे मननी कोडी रे ॥
 साहेवीया ॥ नकि करतां एहनी रे, आवे संपत्ति दोडी रे ॥ साहेवीया ॥ १ ॥ जिमजिम
 निज सुख निरखीयेरे, निरमल धाड्ये नेण रे ॥ साहेवीया ॥ रोमाचित थड देहडीरे, मि-
 लिया माहेरा सेण रे ॥ साहेवीया ॥ २ ॥ नंद सुमंगला मातनोरे, सांजली दिनानाथ रे ॥
 साहेवीया ॥ पुण्य संजोणे पासीयोरे, साहेव ताहेरो साथरे ॥ साहेवीया ॥ ३ ॥ जगजी-
 वन करुणा करीरे, आपो सुखनि रास रे ॥ साहेवीया ॥ श्रीज्ञान सागर सेवतारे, कुमति
 गड सवि नास रे ॥ साहेवीया ॥ ४ ॥ ॥ इति सुमतिजिन स्तवनं ॥ ५ ॥ अथ षष्ठ
 श्री पद्मप्रजिन स्तवन ॥ ॥ टंदावनमां कानकुमरजी, राधे विकल कीधीरे ॥ ए

देवी ॥ संगति पद्मप्रभुनी करतां, जगमां बाधे मानोरे ॥ ए प्रभु साथे त्रिकि मिलता,
 दीपे अधिको वानो रे ॥ संगति पद्मप्रभुजीनी कीजे ॥ १ ॥ दरिसण ताहरं देखी करीने,
 हररथो हयय मजारो रे ॥ मनमंदिर माहे वहेला आवो, ए विनति अथारो रे ॥ सं०
 ॥ २ ॥ दरिसण ताहेरं दीठा पवी, अवरदेव न सुहाय रे ॥ अमृत पानज मूकी करी,
 ने, अरस विरस कोण थाय रे ॥ संगति० ॥ ३ ॥ चाकरी ए जिनजीनी भेदी, बीजानी
 किम कीजे रे ॥ ज्ञान सागर कहे रत्नने पामी, काच कथीर किम लीजे रे ॥ संगति० ॥
 ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥ ६ ॥ अथ सप्तम श्री सुपार्थजिन स्तवन ॥
 कपूर होये अति जजलो रे ॥ ए देवी ॥ श्रीसुपास सोहामणो रे, अथारो अरदा-
 स ॥ तुंवे साहेव माहेरो रे, पूरजो मनडानी आस रे ॥ साहेव, तुंभहिरो नाथ, रहेजो
 मनझांनी पास रे ॥ साहेव० ॥ तुंवे मुक्तिपुरीनो साथ रे, साहेव० ॥ १ ॥ सुखडुं ताहरं
 देखीने रे, जपनो परमानंद ॥ आंखडी कमलनी पांखडी रे, मोह्या सुरनर टुंद रे ॥ सा-
 हेव० ॥ २ ॥ मीठी सुरत ताहेरी रे, कटपतरुनी वेव ॥ नित नित प्रभुगुण स्तवे रे, ते
 धर होये रंग रेव रे ॥ साहेव० ॥ ३ ॥ पडवनासे राजा जलो रे, पृथ्वी मातानु नाम ॥
 वणारसी नयरी जली रे, तिहाप्रभु जन्म सुताम रे ॥ साहेव० ॥ ४ ॥ श्रीअचवतगढे
 दिनकर जिरयो रे, श्रीविद्यासागर सरिंद ॥ ज्ञानसागर मोही रह्यो रे, देखी प्रभुसुख चंद
 रे ॥ साहेव० ॥ ५ ॥ इति श्री सुपार्थ जिन स्तवनं ॥ ॥ अथ अष्टम श्री चंद्रप्रभु जिन
 स्तवन ॥ ॥ वागनरो वासु हीरजी ॥ ए देवी ॥ चंद्रप्रभु जिन साहेवा, ओतगढी अ-

वधर ॥ माहेरा वाळा ॥ दरसण ताहेरुं देखवा, हररण्या नयन अपार ॥ माहेरा वाळा,
 चंडप्रभु जिन साहेबा ॥ १ ॥ हेत वणो मजवा तणो, ते कही न सकुं आप ॥ माहेरा
 वाळा ॥ नाग्यदशा तेहनी फली, नाळां पाप सताप ॥ माहेरा ० ॥ चंड ० ॥ २ ॥ सुख
 दीठे छःख विसर्थां, निसर्थां पाप अनत ॥ माहेरा वाळा ॥ शांति दिशामां निरखतां,
 राजी जावठ ज्ञात ॥ माहेरा ० ॥ चंड ० ॥ ३ ॥ दंतपंक्ति दाडिमकली, अधर विंव उपमान
 माहेरा वाळा ॥ चंडवलन तनु दीपता, जज्वल वर्ण प्रधान ॥ माहेरा ० ॥ चंड ० ॥ ४ ॥
 विद्यासागर सूरिस्वरु, विधिपद्मगड दिणद ॥ माहेरा ० ॥ ज्ञानसागर दम विनवे, दीजे
 शिवसुख कद ॥ माहेरा ० ॥ चंड ० ॥ ५ ॥ ॥ इति चंडप्रभु जिन स्तवनं ॥ ८ ॥
 अथ नवम श्री सुविधि जिन स्तवन । माली केरे बागमें दो नारंगी पके लो ॥ ए देशी ॥
 सेवा सुविधि जिणंदनी, अहोनिस हुं मांशुं लो ॥ अहोअहोनिस हुं मांशुं लो ॥ मन
 दड करी प्रभु तणे, चरणे कु लाशु लो ॥ अहो २ निस ० ॥ १ ॥ सूरत प्रभुनी जोयवा,
 आंखडी माहेरी तरसीलो ॥ अहो २ निस ० ॥ सुंदर वदन निहाववा, पातिक गयां लपसी
 लो ॥ अहो २ निस ० ॥ २ ॥ कमल वसे जिम वाडीमां, चंदो वसेले अकासे लो ॥ अहो २
 निस ० ॥ जेहना मनमां जे वसे, तेहने ते पासे लो ॥ अहो २ निस ० ॥ ३ ॥ तेमसुज
 मनमां तुं वसे, अती हरखित आडं लो ॥ अहो २ निस ० ॥ रात दीवस सूतां जागतां,
 तोरा गुण गाड लो ॥ अहो २ निस ० ॥ ४ ॥ बाहे प्रह्यानी दाज वे, प्रव साथर तारे लो ॥
 अहो २ निस ० ॥ ज्ञानसागर कहे साहेबा, सुने पार जतारे लो ॥ अहो २ निस ० ॥ ५ ॥ इति

देशी ॥ संगति पद्मप्रभुनी करतां, जगसां बाधे मानोरे ॥ ए प्रभु साथे त्रिकि मिलताः
 दीपे अधिको वानो रे ॥ संगति पद्मप्रभुजीनी कीर्जे ॥ १ ॥ दरिसण ताहरं देखी करीने,
 हरख्यो हयय मऊरो रे ॥ मनमंदिर माहे वहेला आवो, ए विनति अवधारो रे ॥ सं०
 ॥ २ ॥ दरिसण ताहेरुं दीठा पवी, अवरदेव न सुहाय रे ॥ अमृत पानज सूकी करी,
 ने, अरस विस कोण खाय रे ॥ संगति० ॥ ३ ॥ चाकरी ए जिनजीनी मेवी, बीजानी
 किम कीजे रे ॥ ज्ञान सागर कहे रत्ने पामी, काच कथीर किम तीजे रे ॥ संगति० ॥
 ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥ ६ ॥ अथ सप्तम श्री सुपार्थजिन स्तवन ॥
 कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्रीयसुपास सोहामणो रे, अवधारो अरदा-
 स ॥ तुंठे साहेव माहेरो रे, पूरजो मनडानी आस रे ॥ साहेव, तुंठे माहेरो नाथ, रहेजो
 मनमंती पास रे ॥ साहेव० ॥ तुंठे सुक्तिपुरीनो साथ रे, साहेव० ॥ १ ॥ सुखडु ताहरुं
 देखीने रे, उपनो परमानंद ॥ आंखडी कमवनी पांखडी रे, मोह्या सुरनर दुंद रे ॥ सा-
 हेव० ॥ २ ॥ मीठी सुरत ताहेरी रे, कल्पतरुनी वेव ॥ नित नित प्रभुगुण स्तवे रे, ते
 वर होये रंग रेव रे ॥ साहेव० ॥ ३ ॥ पडवनासे राजा जवो रे, पृथ्वी मातानुं नाम ॥
 वणारसी नथरी जवती रे, तिहाप्रभु जन्म सुताम रे ॥ साहेव० ॥ ४ ॥ श्रीअचवगवे
 दिनकर जिर्यो रे, श्रीविद्यासागर सुरिंद ॥ ज्ञानसागर मोही रह्यो रे, देखी प्रभुसुख चंद
 रे ॥ साहेव० ॥ ५ ॥ इति श्री सुपार्थ जिन स्तवनं ॥ ॥ अथ अष्टम श्री चंद्रप्रभु जिन
 स्तवन ॥ ॥ वागभरो वासु हीरजी ॥ ए देशी ॥ चडप्रभु जिन साहेवा, ओवगडी अ-

परमेस्वरु हो, नक्तिवज्रद जिनराय ॥ लक्षना ॥ श्रीविद्यासागर स्मरिनो हो, ग्यानसागर
 गुण गाय ॥ प्राणेशर ॥ ५ ॥ इति श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ अथ द्वाद-
 श श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥ ॥ ताहराने माहरा करहवा, वरसां एकण वार हामी-
 रा ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य जिन साहेवा, तुं मोटो महाराय ॥ साहेवजी ॥ पायो दरसण
 प्रभुतणो, सफद फळ्यो दिन आज ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ १ ॥ तुम दरिसण दीठे
 सदा, सकद फळे सविकाम ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ व्याधि विघ्न दूरे करो, सेवकने सुख
 धाम ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ २ ॥ वसुपूज्य राजा कुलतिवो, जयराणिनो नंद ॥ साहे-
 वजी ॥ वासु ॥ सेवक कुमुद विकासवा, उदयो अग्निव चंद ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥
 ॥ ३ ॥ नवसायर नव तारवा, समरथ पोत प्रधान ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ नवसर-
 णागत राखरे, सार्चो साहेव ध्यान ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ ४ ॥ मुजमन आशा पूर-
 जो, ए मासुं तुम पास ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ श्रीविद्या सागर स्मरनो, ज्ञान नमे ज-
 दहास ॥ साहेवजी ॥ वासु ॥ ५ ॥ ॥ इति श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥ १२ ॥
 अथ त्रयोदश श्री विमलनाथ जिन स्तवन ॥ निवडी वेरण हुं ह रही ॥ ए देशी ॥ विम-
 लनाथ नगवंतजी, तुमे वो हो प्रभु दिनदयालके ॥ सार करो प्रभु माहरी, चित्त चोखे
 हो मुज नयण निहालके ॥ विमल ॥ १ ॥ सद् स्वारथीयो जक्त ठे, विणस्वारथ हो
 डखनो कृण जाण के ॥ तुम विण बीजो को नही, परमारथ हो पदनो अहिटाण के ॥
 विमल ॥ १॥ सुगुणसोत्राणी नीरखंतां, हरखंतां हो हियानो हेज के ॥ कंचन तनु अती

दीपतो, जीपतो हो दिनकर जोडी तेज के ॥ विमल० ॥ ३ ॥ अकिवहव प्रभुजी तणो,
 एहवो सुणीयो हो इण काने नाम के ॥ तुं राजेसर राजतो, आसा परनी हो करवा
 सुकाम के ॥ विमल० ॥ ४ ॥ किकर प्रभुतो जाणीने, मन वंठित हो सुख दीजे देव के ॥
 श्रीविद्या सागर सुरतो, ज्ञानसागर हो प्रणमे नितमेव के ॥ विमल० ॥ ५ ॥ इति
 श्री विमलनाथ जिन स्तवनं ॥ १३ ॥ ॥ अथ चतुर्दश श्री अनंतनाथ जिन स्तवन ॥
 ढाल प्राहुणानी ॥ ए देशी ॥ जिनवरजीरे, अनंत जिनेसर देव, मीठी सुरत तुमतणी ॥
 जिनवरजीरे ॥ चंचल सुजमन हैव, दयाये जुओ जगथणी ॥ १ ॥ जिन० ॥ परमानंद
 पद थाय, ठगसम कर्मने टालवा ॥ जिन० ॥ नाम अनंत कहाय, रमणि सिवसुख मा-
 दिया ॥ २ ॥ जिन० ॥ यजनकर्म छटुकर्म, श्रीनगवान कृपा करी ॥ जिन० ॥ मुक्ति तणो
 थो रमं, निज सेवक चित्तमां धरी ॥ ३ ॥ जिन० ॥ ज्ञान तणा नंढार, नमत सुरासुर
 तुजने ॥ जिन० ॥ रमतां तुम गुण साथ, टाळिजे नय आपदा ॥ ४ ॥ जिन० ॥ विद्या-
 सागर सुरिराय, ज्ञाने पासी बहु संपदा ॥ ५ ॥ जिन० ॥ श्री अनंतनाथ जिन स्त-
 वनं ॥ १४ ॥ ॥ अथ पचदश श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ ए माहेरो प्रभु ब्रह्म-
 चारी ॥ ए देशी ॥ धर्म जिणंदने नामणे जाडं, देखीने सुख पाडं रे ॥ महारो प्रभु सो-
 नागी ॥ मनमोहुं तुम दरिसण देखी, मोर जिम जलधर पेखी रे ॥ महारो प्रभु सोना-
 नी ॥ १ ॥ सुंदर रूप अनोपम दीसे, जोतां हेहु हिसेरे ॥ महारो ॥ सुरनर साथे ताहरी
 सेवा, देवा मुक्तिना मेवा रे ॥ महारो ॥ २ ॥ मोहनी सुरत प्रभु जाणी, पूजो अविषण

प्राणी रे ॥ महारो० ॥ तुम सुख पेखी अति हरख्यो, साचो तुमहिज परख्यो रे ॥ म-
 हारो० ॥ ३ ॥ शांतस्वरुपी ताहेरुं रूप, देखी मोह्या नूप रे ॥ म० ॥ सुख संपति सुज
 दोवती व्यापो, निजसेवक करी व्यापो रे ॥ म० ॥ ४ ॥ अचवगचे चढते सनूर, श्रीविद्या
 सागर सूर रे ॥ म० ॥ ज्ञान सागर दिनकर तेजे, कहे हियाने हेजे रे ॥ म० ॥ ५ ॥ ॥
 इति धर्म जिणंदनो स्तवन ॥ १५ ॥ ॥ अथ षोडश श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥
 थारे माथे पचरंगी पाग सोनारो जोगवो मारु जी ॥ ए देखी ॥ शांति जिणेंसर देव सेव
 में जो वही ॥ सा हेवजी ॥ सिधां सधवां काज राज दरिसण वही ॥ सा हेवजी ॥ करुं
 विनति करजोड, सुणो प्रभु माहेरी ॥ सा हेवजी ॥ जे सेवक एकचित्त प्रभु सेवा करे ॥
 सा हेवजी ॥ धरी मन मांहे स्वामीनामे साता वरे ॥ सा हेवजी ॥ सेवक सुखीया सेज-
 विलासी जे सदा ॥ सा हेवजी ॥ ते साहेव सावासी के वारण सुदा ॥ सा हेवजी ॥ मुज
 मन चमरो तुजमन वेवनीधे रमे ॥ सा हेवजी ॥ स्वारथीया जे देव के तेहने कृण नमे ॥
 सा हेवजी ॥ श्रीविद्या सागर निसदिस जाडं नित चामणे ॥ सा हेवजी ॥ इति
 शांति जिन स्तवनं ॥ १६ ॥ ॥ अथ सप्तदश श्री कुशुनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ अरज
 अरज सुणोने रुडा राजीया होजी ॥ ए देखी ॥ कुंशु कुंशु जिणेंसर साहेवाहोजी, वसीयो
 सिवपुर पास ॥ सेवक सेवक जना आगवे होजी, खीजमत करे हो खास ॥ कुंशु० ॥ १ ॥
 सुंदर सुंदर वदन सोहामणो होजी, मुज मनहुं रे वीनाथ ॥ देवे देवे पांखडी दीधी नही
 होजी, पण ते केम मेलाय ॥ कुंशु० ॥ २ ॥ इणिनव इणिनव तुंहिज आदर्यो होजी,

नदीं सुज अवरसुं काम ॥ कहुंतुं कहुंतुं ते माटे प्रभु होजी, पण सुज संपति खाभि ॥
 कुशु० ॥ ३ ॥ घृतवर घृतवरने पामी करी होजी, कुकस ते कुण खाय ॥ अोलग ओलग
 सूकी तुमतणी होजी, अवरनी कहो किम थाय ॥ कुशु० ॥ ४ ॥ मनना मनना मनोरथ
 पूरवा होजी, महारे मन भेराण ॥ ज्ञान ज्ञान सागर प्रभु ध्यानथी होजी, पान्या परम क-
 द्याण ॥ कुशु० ॥ ५ ॥ ॥ इति कुंशु जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ अथ अष्टादश श्री
 अरनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ साहेवा मोती घो हमारो ॥ ए देशी ॥ अर नाथ जिन
 साहेव महारो, हुंतुं सेवक प्रभुजी तहारो ॥ साहिवा अरनाथ जिणंदा, जीवनना अर-
 नाथ ॥ १ ॥ तुं त्रिभुवनपति तात हमारो, महिर करी सेवकने सधारो ॥ साहिवा० ॥ १॥
 प्राणनाथ साहेवजी महारो, वाहे प्रही सेवकने तारो ॥ सा० ॥ ३ ॥ तुमेवो प्रभुजी
 दिन दयाल, अम उपर प्रभु थजो मयाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुज समोवड देव न कोइ,
 जाणुं रहीं सेवक दोइ ॥ सा० ॥ ५ ॥ विनतडी प्रभुजी अवधारो, करुणा करीने पार
 जतारो ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीविद्या सागर सूरिराया, ज्ञानसागर प्रणमै प्रभु पाया ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ ॥ इति अरनाथ जिन स्तवन संपूर्ण ॥ १० ॥ ॥ अथ एकोनविंशती तम श्री
 महिनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ करेलडा घड दे रे ॥ ए देशी ॥ महि जिणैसर मनवरयो,
 कुंभ नरेसर नंद ॥ नीलवरण तनु जेहनुं, ओगणीसमो जिण चद ॥ सेवीजे महिनाथ
 ॥ १ ॥ ए टिक ॥ सुज मन मानीतो मद्यो, मोहन वल्ली कद, लोचन सुज हरखीत थयां,
 देखी तुम सुखचंद ॥ सेवीजे० ॥ १ ॥ आदि अनादि लग वनी, जड साथे जे प्रीत ॥

तुं साजन मल्या पवी, तेह न आवे चित्त ॥ सेवीजे० ॥ ३ ॥ शांति सुधारस सिंचीये,
 सेवक तन मह राय ॥ त्रवत्रव पाप निवारीये, आपो अविचल टाय ॥ सेवीजे० ॥ ४ ॥
 सेवक जाणी आपणो, मेहेर करी जिन राय ॥ श्रीविद्यासागर सरनो, ज्ञानसागर गुण
 गाय ॥ सेवीजे० ॥ ५ ॥ ॥ इति मद्धि जिन स्तवनं ॥ १९ ॥ ॥ अथ विंशती तम श्री
 सुनीसुव्रत जिन स्तवन ॥ ॥ दोवत ह्नियां जोगवे रे, मन मोहनां संत ॥ ए देशी ॥
 पुन्य संजोगं पामीये रे, मनमोहन स्वामी ॥ सुनिसुव्रत जिनराय रे ॥ मन० ॥ सेवा क-
 रता तुमतणी रे ॥ मन० ॥ पातिक दूर पलाय रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तुजपद पंकज पामि-
 यो रे ॥ मन० ॥ ममतां त्रवनी कोडी रे ॥ मन० ॥ कुमति कदाग्रह टालवा रे ॥ मन० ॥
 कुण आवे तुज होडी रे ॥ मन० ॥ २ ॥ पतितपावन पद ताहरु रे ॥ मन० ॥ अविचल
 पद दातार रे ॥ मन० ॥ ज्ञानसागर हित कारो रे ॥ मन० ॥ प्रणमे वारं वार रे ॥
 मन० ॥ ३ ॥ ॥ इति सुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥ २० ॥ ॥ अथ एकविंशती तम श्री
 नमिनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ दाव ॥ अववेलाती ठे ॥ नमि जिणेशर साहेबा रे दाव ॥
 तुं साहेव सुवतान, सुख कारी रे ॥ अरज करं एक माहरी रे दाव ॥ तुमशुं दाणुं ध्या-
 न ॥ सुख कारी रे ॥ नमि० ॥ १ ॥ सुजमन मानस हंसवो रे दाव ॥ तुं सुज दिवनो
 हीर ॥ सुख कारी रे ॥ तुम गुण सह कारे रमे रे दाव ॥ हरखीत सुज मन कीर ॥ सुख
 कारी रे ॥ नमि० ॥ २ ॥ तुम दरिसण पाम्या पवी रे दाव ॥ हरिहर सुज न सुहाय ॥
 सुख कारी रे ॥ कटपट्टक सूकी करी रे दाव ॥ कुण वृद्धबाजव जाय ॥ सुख कारी रे ॥

नमि० ॥ ३ ॥ तुम सरिखो साहेब लही रे लाव ॥ जे नित करसे सेव ॥ सुख कारी रे ॥
 ते सुख संपदा पामरो रे लाव ॥ ज्ञान वंदे नित मेव ॥ सुख कारी रे ॥ नमि० ॥ ४ ॥
 इति श्री नमि जिन स्तवन ॥ १२ ॥ ॥ अथ द्वाविंशती तम श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥ ॥
 काची कवीया नारकी हो राज ॥ ए देखी ॥ सुगुण सनेही सांचवो हो राज, तुं मुज
 प्राणाधार ॥ वारी मोरा साहेबा ॥ रिसावे रथ फरीयो हो राज, पसुअ्यां देखी पोकार ॥
 वारी० ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति मंदिर जई हो राज, देई वरसी दान ॥ वा० ॥ श्रावणमां चा-
 रित ग्रहो हो राज, रैवत गिरि उद्यान ॥ वा० ॥ २ ॥ समुद्रविजय कुल चंदवो हो राज,
 सिवादेवी मात मदार ॥ वारी० ॥ वरस सहस एक आणखो हो राज, सोरी पुर अचतार
 ॥ वा० ॥ ३ ॥ काया धनुष दस दीपती हो राज, ब्रह्मचारी जगवान ॥ वा० ॥ राजुद
 मन वर वावहो हो राज, नेमजी जगत प्रधान ॥ वा० ॥ ४ ॥ श्रीअंचल गहनो मणि
 होराज, श्रीविद्या सागर सूर ॥ वा० ॥ ज्ञानसागर प्रभु ध्यानधी होराज, वाधे अधिका
 सनूर ॥ वा० ॥ ५ ॥ ॥ इति नेमिनाथतुं स्तवन ॥ १२ ॥ ॥ अथ त्रयोविंशती तम श्री
 पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ सिंधारथ नूपय दे तुम पर वारि वो ॥ ए देखी ॥ वामाको
 नंदन, जगतको वंदन ॥ तुमे ठो जगज हितकारी वो, अश्वसेन नूप अ्यादे ॥ तुम परवारी
 वो ॥ तुज सुरति प्रभु मोहनगारी, वामा जर अचतारि वो ॥ अ० ॥ १ ॥ चोसठ ईंद
 तुजने गयो, ववी गयो ठप्पन कुमारी वो ॥ अ० ॥ जीजीरे जोग धयो व्रतधारि, जिणें
 परणी संजम नारी वो ॥ अश्व० ॥ २ ॥ मीठी सुरत सुरत ताहारी, मोह्या सुरनर नारी

वो ॥ अश्व० ॥ अश्वसेन कुल कीरति कारी, सुर मानव कोडि तारी वो ॥ अश्व० ॥ ३ ॥
 तुज सुरतिनी हूं वहिहारी, जाडं तुजपर वारी वो ॥ अश्व० ॥ साहेव मवीयो ठे निरधारी,
 तोसुं कीनि एकतारी वो ॥ अश्व० ॥ ४ ॥ दीजे सिवमुख संपत्ति सारी, पूरजो आया
 हमारी वो ॥ अश्व० ॥ श्रीविद्यासागर सूरि सुविचारी, ज्ञानसागर जयकारी वो ॥
 अश्व० ॥ ५ ॥ ॥ इति श्री पार्थजिन स्तवनं ॥ १३ ॥ ॥ अथ चतुर्विंशती तम श्री
 महावीर जिन स्तवन ॥ ॥ देशी हुंवल्लनी ॥ वीर जिनेश्वर साहेवा रे, तुमे वो माहारा
 नाथ ॥ सुखांकर साहेवा ॥ अरज करुं तुज आगतें रे, जाणी सिवपुर साथ ॥ सुखांक०
 ॥ १ ॥ बिसवा राणीनो नंदवो रे, सिश्वरथ नूप ताथ ॥ सुखांकर० ॥ चोविसमो जिन-
 वर ब्रवो रे, सिंद दंठन सेवे पाय ॥ सुखांकर० ॥ २ ॥ जगजीवन जिन राजजीरे, संप-
 त्तिना दातार ॥ सुखांकर० ॥ महिर नजरसु निरखीयें रे, जिन दोह सुखकारी ॥ सुखां०
 कर० ॥ ३ ॥ वसंत वसुधा वसुवसु वरसे, संजम भेद तुं जाण ॥ सुखांकर० ॥ शुद्ध पदें
 कार्तिक मासे, त्रोम वार वखाण ॥ सुखांकर० ॥ ४ ॥ स्थंन तीरथ मांदि रतन्व्यो, चोवी-
 समो जिनराथ ॥ सुखांकर० ॥ अंचदगव महि सोन्नता, श्रीविद्यासागर सूरिराथ ॥
 सुखांकर० ॥ तास जिष्य हरखें त्रणे, ज्ञानसागर सुविचार ॥ सुखांकर साहेवा ॥ ५ ॥
 इति श्री कानसागरजी कृत चतुर्विंश जिन स्तवनं संपूर्णं ॥ ॥ अथ दर्शनसागरजी
 इति श्री पंचकट्याणकनी चोविसी दिख्यते ॥ ॥ अथ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥
 श्रीविंशतिनाम विनति अमारी ॥ ए देशी ॥ ऋषभजिणेश्वर साहेव साचो, परमानंदनो

ताम रे ॥ आषाढवदि चोर्धे प्रभु आढ्या, गरत्रपणं गुणधाम रे ॥ ऋषत्र० ॥ २ ॥ चैत्र
 वदि आठम दिन रूफो, जनभ्या आदि जिणंद रे ॥ धरधर महोत्सव रगवधाद्, प्रग-
 द्यो जित आणद रे ॥ ऋषत्र० ॥ ९ ॥ वदि चैत्रनी आठम दिवसे, दीक्षा ग्रहे जगवान
 रे ॥ फाल्गुनवदि एकादशी वरीया, उत्तम केवल ज्ञान रे ॥ ऋषत्र० ॥ ३ ॥ माघवदि
 तेरस श्रीकारे, मोक्ष लहे जगनाथ रे ॥ सादि अनंतत्रागेस्थिति प्रभुजी, कीधो करम
 प्रमाथ रे ॥ ऋषत्र० ॥ ४ ॥ पांचे नामे जिनवर प्रजीये, वारे ड.ख जंजाल रे ॥ उदय
 सागरसूरि बुध दरसनने, होजो मंगल माल रे ॥ ऋषत्र० ॥ ५ ॥ इति आदिजिन
 स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ अथ अजितनाथ जिन स्तवन ॥ ॥ किसके चेले किसके पूत ॥
 ए देशी ॥ अजित जिणे सर देवाधिदेव, जेहनी सारे सुरपति सेव ॥ जीनजी वंदीये ॥
 अयोध्या नयरीमा अवतार, रायजितशत्रु कुल दिनकार ॥ जिनजी० ॥ १ ॥ वैशाखसु-
 दनी तेरसे जाण, अजित प्रभुनो चवन कल्याण ॥ जिनजी० ॥ विजया उदरे सिंहास-
 मान, जेह निवारे कुमतिना मान ॥ जिनजी० ॥ २ ॥ माहाशुद अष्टमी दिनश्रीकार,
 जन्म कल्याणक होए जयकार ॥ जिनजी० ॥ गजवलन पद कंचनकाय, देखी हरखे सवि
 त्रविराय ॥ जिनजी० ॥ ३ ॥ माहाशुदि नवमी अजित जिणंद, दिक्षा कल्याणक होय
 सुखकंद ॥ जिनजी० ॥ पोषशुदि द्वादशसे ज्ञान, कल्याणक जाणो चतुरस्रजाण ॥ जि०
 ॥ ४ ॥ अश्रुतरूपे निर्जित काम, विजयानंदने जे करे वाम ॥ जिनजी० ॥ परमानंदमय
 प्रभुजीनी सेव, करता लक्ष्मी सुख ततखेव ॥ जिनजी० ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम निर्वाण,

पाभ्या जिनजी उत्तम ताण ॥ जिनजी० ॥ सादि अन्त प्रांगे मुख मस, परपाणित
 तत इखथी त्रस ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ अठ्या वाध दीर्घे प्रयु समे, जेथी पलाये त्रवइख
 त्रमे ॥ जिनजी० ॥ सरणा गत वहव जिनराज, वंदित मानव सुरवरराज ॥ जिनजी० ॥
 ७ ॥ बीजा जिनतुं धरजो ध्यान, जेमपामो सिव रमणी मान ॥ जिनजी० ॥ श्रीउदयसुरी
 गज प्रतिपाद, बुधदर्शन वहै मंगल माव ॥ जिनजी० ॥ ८ ॥ ॥ इती अजित जिन
 स्तवनं ॥ ९ ॥ अथ श्री सन्नवनाथ जिन स्तवन ॥ रामचंद्रके वाग चांपो मोरी रह्योरी
 ॥ ए देशी ॥ साचो संप्रवनाथ, दिवमां आय वस्यो री ॥ सुकल ध्यान सजोग, कर्मथी
 दूर खस्यो री ॥ १ ॥ केवल युगल जिणंद, लोका लोक जोये री ॥ अप्रतिपात
 ते नाण, देखी त्रव्य मोहे री ॥ २ ॥ देसना मंदिर वेस, जिनजी धर्म कहे री ॥
 सांप्रती सत्ता धर्म, स्वरूपने प्राणी वहै री ॥ ३ ॥ देस अने सर्ववती, धर्म ते
 त्रय कह्यो री ॥ जेहना मनमां जे इष्ट, तेणे तेह ग्रह्योरी ॥ ४ ॥ फागुनशुद्ध अष्टमी
 सार, प्रभुजी चवण ग्रहे री ॥ चउदस मागशिर श्वेत, संप्रव जन्म वहै री ॥ ५ ॥
 पुनम मागशिर मास, दिक्काकल्याण जयो री ॥ वदिकार्तिक पंचमी नाण, जग उ
 घोत तयो री ॥ ६ ॥ शुद्धपंचमी चैत्रमास, महोदय ताम वह्यो री ॥ जिनना पांच
 कल्याण, अनुक्रम एह कह्यो री ॥ ७ ॥ स्वरूप धर्ममां रक्त, सप्रव देव त्रजो री ॥ बुध
 दर्शन कहे अन्य, चितथी दूर तजो री ॥ ८ ॥ इति संप्रव जिन स्तवनं ॥ ३ ॥
 अथ अन्निनंदन जिन स्तवन ॥ लाववदे मात महार ॥ ए देशी ॥ श्रीअन्निनंदन

जिणेश, सेवा करे ठे सुरेश ॥ आजहो संवर नरपति कुले दिवा करू जी ॥ २ ॥ सिधारथा
जस मात, कपिलंवन अचदात ॥ आजहो सोहेरे, कंचनवरणीकाथ सोहामणीजी ॥ ९ ॥
मस्तके सुगट उदार, कुडल काने सार ॥ आजहो दीपेरे अतिसुंदर हार मो ती तणो
जी ॥ ३ ॥ सफल वीजोरुं हाथ, प्रभुजी सीवपुर साथ ॥ आजहो सिवमंदिर प्रकास
अरिहा वंदिये जी ॥ ४ ॥ वैशाखशुद्ध चोथे स्वाम, चवणकट्याणक अत्रिराम ॥ आजहो
माहाशुद्ध वीजे प्रभु जन्म हुआ जी ॥ ५ ॥ माहाशुद्ध धारसे चारित्र, कट्याणक सुपवित्र ॥
आजहो पोषशुद्धचउदसें कवल ऊपनो जी ॥ ६ ॥ वैशाखशुद्ध आठमे मोक्ष, पाम्या
सुखनो पोष ॥ आजहो स्वामिरे शिवगामी, बुधदरसने शुण्यो जी ॥ ७ ॥ इति
अत्रिनंदन जिन स्तवनं ॥ ८ ॥ अथ श्री सुमतीनाथ जिन स्तवन ॥ थारा मोहोला
उपर मेह जरूखे विजली हो लाव ॥ ज० ॥ ए देशी ॥ श्रीसुमतिजिनराज वंदो नवी-
जिनपति, होलाव वंदो नवी जिनपति ॥ मेघधराधववंस गणतले दिनमणि ॥ हो लाव
ग० ॥ श्रावणशुद्धनी वीज तिथे चवणग्रहो ॥ हो लाव ती० ॥ उपना उदर मऊर के शुद्ध
सुहणां वह्यो ॥ हो लाव के० ॥ ९ ॥ माधवशुद्धनी आठम मधरते जनमीया ॥ हो लाव
म० ॥ जिनना जन्म कट्याण के त्रिभुवन हरखीया ॥ हो लाव के० ॥ माता सुमंगला
कुंखे हंसोपम सोहे ॥ हो लाव कु ॥ प्रभुनो परमदिदार के जनमन मोहीये ॥ हो लाव
के० ॥ ९ ॥ कौंच लंबन पद संजुत के जिनवर वंदिये ॥ हो लाव के० ॥ त्रणसे धनु
षनी काय देखी आणदीये ॥ हो लाव दे० ॥ वैशाख शुद्धी नवमी दिवा सुखकसी ॥ हो

लाव दि० ॥ ब्रह्मी श्या प्रभुभुनिराज संतापनें पर हरी ॥ हो लाव सं० ॥ ३ ॥ चैत्र
 शुदी एकादशी केवल संपदा ॥ हो लाव के० ॥ सुरकृत त्रिगडे बेसी निवारि आपदा ॥
 हो लाव ति० ॥ जिननो उदधिक याव ते धर्मनो हेतु वे ॥ हो लाव ते० ॥ संसार
 सागर माहे के जिनवर सेतु वे ॥ हो लाव के० ॥ ४ ॥ चैत्रशुद नवमी दिने सिव नारी
 वर्या ॥ हो लाव दी० ॥ सादि अनंतो काल प्रभुसुख सुं चर्या ॥ हो लाव प्र० ॥
 पाचसा पारंगत पूजो सवि त्रवि जनां ॥ हो लाव पू० ॥ छट्ठावंबन प्रभुजी नमो तुमे
 एकमना ॥ हो लाव न० ॥ ५ ॥ अर्वासंवाद निमित्त प्रभुजी पूजना ॥ हो लाव प्र० ॥
 करतां सुखनी श्रेणी ते अपि वासना ॥ हो लाव ते० ॥ सेवाधी महोदय ठाण ते लहे
 त्रविजना ॥ हो लाव ते० ॥ दरसण कहे जिनदेव होजो मुज जयकरा ॥ हो लाव
 हो० ॥ ६ ॥ इति सुमति जिन स्तवन ॥ ५ ॥ ॥ अथ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥
 श्रीधर्म जिणंद दयाव ॥ ए देशी ॥ श्री पद्मप्रभु जि णंदा जी, जगगुरु वंदीए ॥ सेवा
 सारे सुरनर ददा जी ॥ पाप निकंदीये ॥ माघवद ठठने दिक्सें जी ॥ जग० ॥ प्रभुजी
 गर्जमा निवसे जी ॥ पाप० ॥ १ ॥ कार्तिकवद वारसें सार जी ॥ जग० ॥ जिनजन्म
 कल्याण जयकारजी ॥ पाप० ॥ पुरंदर चोसठ आवे जी ॥ जग० ॥ मंदिरगिरि महोवव
 आवे जी ॥ पाप० ॥ २ ॥ धरराजा जिनना तात जी ॥ जग० ॥ सुसीमा प्रभुजीनी मात
 जी ॥ पाप० ॥ अरविंदसुं वांगन पाय जी ॥ जग० ॥ अढीसो धनुपनी काय जी ॥
 पाप० ॥ ३ ॥ कार्तिकवदि तेरस दिने जी ॥ जग० ॥ दिक्कावीधी निर्मल मने जी ॥ पाप० ॥

चैत्रशुद्ध पुनर्मे नाणी जी ॥ जग० ॥ जिन पामी थया सर्व जाणी जी ॥ पाप० ॥ ४ ॥
 मागशरवद इयारसें मोक्ष जी ॥ जग० ॥ जिन जी पाम्या सुखनो पोष जी ॥ पाप० ॥
 ॥ ५ ॥ श्री उदयसागर स्वरिया जी ॥ जग० ॥ बुध दर्शने गुण गाया जी ॥ पाप० ॥
 ॥ ६ ॥ इति पद्मप्रभु जिन स्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ अथ श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥
 रामपुरा बाजार मे ॥ ए देशी ॥ श्री सुपास जिन राज जी, पूजीजें त्रवि नित ॥ भैरावाव ॥
 वदि चाडवा अष्टमी, चवनकल्याणक चित्त ॥ भैरावाव ॥ श्री० ॥ १ ॥ ज्येष्ठसुद्ध वारस
 तिथी, जन्मकल्याण सुखकार ॥ भैरावाव ॥ सकल चेतन सुखहेतु ठे, मिटे नरकें
 अंधकार ॥ भैरावाव ॥ श्री० ॥ २ ॥ जेठशुद्ध तेरस दिने, दिक्कालिये जगवान ॥ भैरा-
 वाव ॥ फागूनवदि ठेठे वरे, केवलज्ञान प्रधान ॥ भैरावाव ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वदिफा-
 गणने सातमे, महोदयवाण संपत्ति ॥ भैरावाव ॥ पंचकल्याणक जिन तणो, अोज्व
 कीजें बहुत्राफि ॥ भैरावाव ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अरिहंतजीने सेवतां, समकितनिर्मल थाय ॥
 भैरावाव ॥ अनुक्रमें सविगुण संपजे, बुधदर्शन गुणगाय ॥ भैरावाव ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 इति श्री सुपासजिन स्तवन ॥ ७ ॥ ॥ अथ श्री चडप्रभुजिन स्तवन ॥ ॥ देशी
 विंदवीनी ठे ॥ चंड दंडन चडप्रभुस्वामी, वर रत्नत्रय विसरामी हो, जिन वर सोत्रागी ॥
 चैत्र वदि पंचमी चवण, कल्याणक होय सुखकरण हो ॥ जिन० ॥ १ ॥ पोषवदिवारसें
 जात, महसेनरपति प्रभु तात हो ॥ जि० ॥ दखमणा राणी जिन माय, दीढसो धनु-
 पनी काय हो ॥ जिन० ॥ २ ॥ पोषवदि तेरसें दिक्का, लहीदिये जनने सिद्धा हो ॥

जिन० ॥ फागणवदि सातमे नाण, प्रगद्यो जिन गगनें चाण हो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ नाड
 वा वदि सातमे निर्वाण, वहे जिनजी गुणमणि खाण हो ॥ जिन० ॥ प्रभु सिद्ध-
 स्वरूप विलासी, सहुपूजो चित्त जलासी हो ॥ जिन० ॥ ४ ॥ श्री अंचल गहपति राजे,
 श्रीजदयसागर स्वरिाजं ॥ हो जिन० ॥ बुध दर्शन सागर बोले, प्रभुजीनेनावे कोइ तोले
 हो ॥ जिन० ॥ ५ ॥ ॥ इति चंडप्रभु जिन स्तवन ॥ ८ ॥ ॥ अथ श्री सुविधिनाथ
 जिन स्तवन ॥ ॥ देसी रसीथानी ॥ सुविधिजिणेसर बंड चित धरी, परमात्मसुख दाय
 रे ॥ त्रवीथा ॥ फागणवदि नवमी सुरलोकथी, जिनवरगर्भमां अाय रे ॥ त्रवि० ॥ १ ॥
 मागशिरवदि पंचमीदिने प्रभुजनमीथा, महोत्सव करे सुरनाथ रे ॥ त्रवि० ॥ चोसठसहस्र
 कलस जले त्री, अग्निषेक अच्युत नाथ रे ॥ त्रवि० ॥ २ ॥ मागशिरवद् वडिने वासरे,
 संजमदीये शुभ नाव रे ॥ त्रवि० ॥ मनपर्यवज्ञान तव उपजे, अज्ञत एह वनाव रे ॥
 त्रवि० ॥ ३ ॥ कार्तिक शुद्ध तृतीया दिनरूढो, कुलहल केवल ज्ञान रे ॥ त्रवि० ॥ संदेह
 प्रागे सकल प्राणीतणा, पान्या श्री जगवान रे ॥ त्रवि० ॥ ४ ॥ सुद्ध नवमी जादरवा
 मासनी, मोक्ष वहे जिन राय रे ॥ त्रवि० ॥ अव्यावाधसुख विलसे प्रभुसदा, पामी
 उत्तम ठाय रे ॥ त्रवि० ॥ ५ ॥ अचलगह नाथक वर राजतां, श्रीजदे सागर सूर रे ॥
 त्रवि० ॥ बुध दर्शनसागर एम विनवे, देजो सुख त्रर पूर रे ॥ त्रवि० ॥ ६ ॥ ॥ इति
 सुविधिनाथ स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ अथ श्री सीतलनाथ जिन स्तवन ॥ अनेहारे बावो
 जि वा ये वे वांसली रे ॥ ए देशी ॥ ॥ अनेहारे सीतलनाथ जी वंदीयें रे, त्रविषण

चैत्रशुद्ध पुनमे नाणी जी ॥ जग० ॥ जिन पामी श्या सर्व जाणी जी ॥ पाप० ॥ ४ ॥
 मगशरवद् इग्यारसें मोक्ष जी ॥ जग० ॥ जिन जी पाम्या सुखनो पोष जी ॥ पाप० ॥
 ॥ ५ ॥ श्री उदयसागर स्मरिगया जी ॥ जग० ॥ बुध दर्शने गुण गाया जी ॥ पाप० ॥
 ॥ ६ ॥ इति पद्मप्रभु जिन स्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ अथ श्री सुपार्थनाथ जिन स्तवन ॥
 रामपुरा बाजार मे ॥ ए देशी ॥ श्री सुपास जिन राज जी, पूजीजें आवि नित ॥ मेरादाव ॥
 वदि जाडवा अष्टमी, चवनकट्याणक चित्त ॥ मेरादाव ॥ श्री० ॥ १ ॥ ज्येष्ठसुद् वारस
 तिथी, जन्मकट्याण सुखकार ॥ मेरादाव ॥ सकल चेतन सुखदेतु ठे, मिटं नरकें
 अंधकार ॥ मेरादाव ॥ श्री० ॥ २ ॥ जेठशुद्ध तेरस दिने, दिक्कादिये जगवान ॥ मेरा-
 दाव ॥ फागूनवदि ठठे वरे, केवलज्ञान प्रधान ॥ मेरादाव ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वदिफा-
 गूणने सातमे, महोदयवाण संपत्ति ॥ मेरादाव ॥ पंचकट्याणक जिन तणो, ओढव
 कीजें बहुअकि ॥ मेरादाव ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अरिहंतजीने सेवतां, समकितनिर्मल थाय ॥
 मेरादाव ॥ अनुक्रमें सविगुण संपजे, बुधदर्शन गुणगाय ॥ मेरादाव ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 इति श्री सुपासजिन स्तवनं ॥ ७ ॥ ॥ अथ श्री चंडप्रभुजिन स्तवन ॥ ॥ देशी
 विद्वानी ठे ॥ चंड वंवन चडप्रभुस्वामी, वर रत्नत्रय विसरामी हो, जिन वर सोज्यागी ॥
 चैत्र वदि पंचमी चवण, कट्याणक होय सुखकरण हो ॥ जिन० ॥ १ ॥ पोषवदिवारसें
 जात, मद्सेननरपति प्रभु तात हो ॥ जि० ॥ दखमणा राणी जिन माय, दोढसो धनु-
 पनी काय हो ॥ जिन० ॥ २ ॥ पोषवदि तेरसें दिक्का, दहीदिये जनने सिखा हो ॥

जिन० ॥ फागणवदि सातमे नाण, प्रगढ्यो जिन गणनें प्राण हो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ चाड
 वा वदि सातमे निर्वाण, वहै जिनजी गुणमणि खाण हो ॥ जिन० ॥ प्रभु सिद्ध-
 स्वरूप विलासी, सडुपूजो चित्त उलासी हो ॥ जिन० ॥ ४ ॥ श्री अंचल गढपति बाजे,
 श्रीउदयसागर सूरिाजे ॥ हो जिन० ॥ बुध दर्शन सागर बोले, प्रभुजीनेनावे कोइ तोले
 हो ॥ जिन० ॥ ५ ॥ ॥ इति चंडप्रभु जिन स्तवन ॥ ८ ॥ ॥ अथ श्री सुविधिनाथ
 जिन स्तवन ॥ ॥ देसी रसीयानी ॥ सुविधिजिणेसर वंड चित धरी, परमातमसुख दाय
 रे ॥ त्रवीथा ॥ फागणवदि नवमी सुरलोकथी, जिनवरगर्भमां अथ रे ॥ त्रवि० ॥ १ ॥
 मागशिरवदि पंचमीदिने प्रभुजनमीया, महोत्सव करे सुरनाथ रे ॥ त्रवि० ॥ चोसतसहस्र
 कलस जले त्री, अत्रिके अच्युत नाथ रे ॥ त्रवि० ॥ २ ॥ मागशिरवद् ठठिने वासरे,
 संजमलीये शुभ प्राव रे ॥ त्रवि० ॥ मनपर्यवज्ञान तव उपजे, अक्रूत एह वनाव रे ॥
 त्रवि० ॥ ३ ॥ कार्तिक शुद्ध तृतीया दिनरुडो, कुलहल केवल ज्ञान रे ॥ त्रवि० ॥ संदेह
 प्राणे सकल प्राणीतणा, पाम्या श्री जगवान रे ॥ त्रवि० ॥ ४ ॥ सुद्ध नवमी चादरवा
 मासनी, मोक्ष वहै जिन राय रे ॥ त्रवि० ॥ अव्याबाधसुख विदसे प्रभुसदा, पामी
 उत्तम ठाय रे ॥ त्रवि० ॥ ५ ॥ अचलगढ नायक वर राजतां, श्रीउदे सागर सूर रे ॥
 त्रवि० ॥ बुध दर्शनसागर एम विनवे, देजो सुख त्रर पूर रे ॥ त्रवि० ॥ ६ ॥ ॥ इति
 सुविधिनाथ स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ अथ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥ अनेहारे वावो
 जि वा ये ते वांसली रे ॥ ए देशी ॥ ॥ अनेहारे सीतलनाथ जी वंदीये रे, त्रवियण

निर्मल चित्त ॥ वैशाख वदि ठठे चवीरे, जननीजदर सपत्त ॥ सीतल० ॥ २॥ अ० ॥
 वदिमाघमास वारस तिथें रे, प्रभुनो जन्म कल्याण ॥ श्रीजड रथ राजा तातजी रे, जिन
 माता नंदा जण ॥ सीतल० ॥ १ ॥ अ० ॥ माहा वदि वारस ने दिनें रे, दिक्कावरे जिन
 देव ॥ ज्ञान चोर्धुं जगवंत लहे रे, करे ठे सुरनर सेव ॥ सीतल० ॥ ३ ॥ अ० ॥ वदि
 पोषमासनी चोदर्थे रे, जिन रायने केवलनाण ॥ वैशाखवदि बीजे प्रहे रे, प्रभुजी शिव-
 पद गाण ॥ सीतल० ॥ ४ ॥ अ० ॥ पंच कल्याणक जिनतणारे, दिवस कल्या ग्रंथ
 माहे ॥ ए दिन उजव कीजीये रे ॥ जिम दरसण लहीये जडाह ॥ सीतल० ॥ ५ ॥ ॥
 इति शितलनाथ स्तवनं ॥ १० ॥ ॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवन ॥ जगजीवन
 जग वालहो ॥ ए देशी ॥ श्रीकर श्री श्रेयांसजी, नमीयें मूकी मान लावरे ॥ जेठ वदि
 ठठने दिने, चवणकल्याण जगवान लावरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ फागण वदिनी वारसें, लीधो
 प्रभुअवतार लावरे ॥ विष्णुराजा कुल चंदवो, विष्णुराणी सुत सार लावरे ॥ श्री० ॥
 ॥ २ ॥ वदिफागणनी तेरसे, दिक्कावीये जिन राय लावरे ॥ अमासदिन महा मासमां,
 केवल लहे सुख दाय लावरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ श्रावणवदि तृतीया दिने, मोक्षवरे श्री कार
 लावरे ॥ सादिअनंतस्थिति जेहनी, सिद्ध नमो नर नार लावरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कल्या-
 णकदिन रूअडां, उजव करे जदार लावरे ॥ नंदीसर जड सुरवरा, दरसनलहे मनोहार
 लावरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ॥ इति श्रेयांसजिन रतवनं ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्री वासुपूज्य
 जिन स्तवन ॥ देशी मोतीडानी ठे ॥ वासवपूजित पद अर विदु, श्रीवासुपूज्यजिन

नोम वि दृढं ॥ १ ॥ सेवियें जिनवर सुखकंदा, टारिये प्रवकंदा ॥ जेष्टसुद नवमीदिन
 चवीथा, माताकुखें जिनसंतविया ॥ सेवीयें ० ॥ टा० ॥ नवमासें सुत प्रसवे माता, फाग-
 णवदि चौदसें जिनजाता ॥ सुरगिरि सिखरे महोडव थावे, सकलसुरासुर मोदनिपावे ॥
 सेवीयें ० ॥ टा० ॥ १ ॥ फागणनी अमासें जाणो, दिक्ककट्याणक सुपरे वखाणो ॥ माहा-
 शुद वीजे पंचमज्ञान, त्रिगडे वेसी दीये धर्मदान ॥ सेवियें ० ॥ टा० ॥ ३ ॥ आपाढसुद
 चौदसदिन देव, परम महोदय ठाण लहेव ॥ पचकट्याणक जिनवर केरा, टाळे उर्गोति
 छःखना केरा ॥ सेवीयें ० ॥ टा० ॥ ४ ॥ पारांगतनी पूजा करतां, लहीये शिवसुख मननें
 गमतां ॥ श्रीउदसागर सूरिनो शिष्य, बुधदरिसनने पुरो जगीस ॥ सेवीयें ० ॥ टा० ॥
 ॥ ५ ॥ इति वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्री विमलनाथ जिन स्तवन ॥
 जंठरीयानी देशी ॥ विमलनाथजिन तेरमाजी, चावदया प्रतिपाव ॥ उपगारी सिरसे-
 हरोजी, अक्षरण जिनरखवाव ॥ उपगारी अरिहा, वंड त्रिकरण सुख ॥ १ ॥ चवण
 कट्याणक जिनतणोजी, सुदवारस वैशाह ॥ माता उदरे उपनाजी, ज्ञान त्रणें जगनाह ॥
 उपगारी ० ॥ वं० ॥ १ ॥ १ ॥ माहाबादवीजें जगमीयाजी, त्रिभुवनथयोरे उद्योत ॥ जिनरूपरविने
 आगलेजी, सुरथया सहू खद्योत ॥ उपगारी ० ॥ वं० ॥ ३ ॥ शुदी चोथ माहा मास-
 नीजी, सरवविरति परीणाम ॥ अंगीकार प्रभुए कर्पोजी, त्रगवंत गुणमणि धाम ॥
 उपगारी ० ॥ व० ॥ ४ ॥ पोषशुदी ठठने दिनेंजी, केवल नाण कट्याण ॥ वदिसात्म आषा-
 हनीजी, जिनजी प्रहे शिव ठाण ॥ उपगारी ० ॥ वं० ॥ ५ ॥ अथधियाशातना परि हरिजी,

तृणिये विमल जिणंद ॥ उदयसागर सुरि शिष्यनेजी, देजो परम आनंद ॥ जपगारी० ॥
 वं० ॥ ६ ॥ इति श्री विमल जिन स्तवनं ॥ १३ ॥ ॥ अथ श्री अनंतनाथ जिन स्तवन ॥
 वे वे सुनिवर वेरण पागर्वाजी ॥ ए देशी ॥ अनंतनाथ नमीयें चावशुजी, पामी नर अच-
 तार रे ॥ चवण कट्याणक जगवंतनो रे, वदि सातम थावणनी सार रे ॥ अनंत० ॥
 ॥ १ ॥ वदि वैशाखतणी तेरस दीने रे, जन्म हुड श्री कार रे ॥ राजासिद्धसेन मुजसा
 तथा रे, तात मात हरख अपार रे ॥ अनंत० ॥ २ ॥ वैशाख वदि चौतस दिने रे,
 चवण दीये उदार रे ॥ सकल थावकने परिहरी रे, नाथ थया अणगार रे ॥ अनंत० ॥
 ॥ ३ ॥ अंधारिवैशाखनी चौदसे रे, ज्ञान कट्याणक थाय रे ॥ कैतर शुद्ध पंचमी दिने रे,
 मोक्ष पासे जिनराय रे ॥ अनंत० ॥ ४ ॥ ते निःकारण जपगारता रे, परमात्मनि कदाय
 रे ॥ चोखें चित्तें सेवियें रे, दर्शन सागर गुणगाय रे ॥ अनंत० ॥ ५ ॥ ॥ इति
 अनंतजिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥ माहरी सहीरे समा
 णी ॥ ॥ ए देशी ॥ धर्मजिणेर धर्मना थायक, वंदो त्रविषण चावेरे ॥ माहारा प्रभुजी
 ज्ञानी ॥ शुद्ध वैशाखनी सातमे चवीया ॥ मातानीकुळें अचतरीयारे ॥ माहारा० ॥ १ ॥
 माहाशुद्धीजं जन्मकट्याणक, जिनवरजीनुं थावेरे ॥ माहारा० ॥ चारनीकायना सुराण
 महेवव, करवा सिंदरगिरि जावेरे ॥ माहारा० ॥ २ ॥ धववतेरस महामासनी रूडी,
 जिनवर दिक्षा देवेरे ॥ माहारा० ॥ पोपी पुनमे धर्म प्रभुजी, केवळज्ञान ते पावेरे ॥ माहारा०
 ॥ ३ ॥ जेष्टशुद्धी पचमी जिनराया, पाभ्या सिवसुख ठायरे ॥ माहारा० ॥ पंचकट्याणक

जिन त्रिकि करतां, पुन्य त्रहार त्ररायरे ॥ माहारा० ॥ ४ ॥ अष्टादशदोषं जिनवर वर्जित,
 धर्माजिणंद जयकारीरे ॥ माहारा० ॥ उदयसागरसुरि बुध दर्शनने, दोजो प्रभु सुखकारीरे ॥
 माहारा० ॥ ५ ॥ ॥ इति धर्मजिन स्तवनं ॥ १५ ॥ ॥ अथ श्री शान्तिनाथ जिन
 स्तवन ॥ संभवजिन अग्रधारियें ॥ ॥ ए देवी ॥ शान्ति जिणंद दयामयी, त्रजीयें श्री
 त्रगवान, प्रभुजी ॥ नादरवा वदि सातमें, जिनवर चवण कट्याण ॥ प्रभु० ॥ शान्ति०
 ॥ १ ॥ वदितेरस जेठमासनी, जन्म थयो जिनराय ॥ प्रभु० ॥ शान्ति० ॥ मरणी उषडव
 वारीउं, सेवे अमरणण पाय ॥ प्रभु० ॥ शान्ति० ॥ २ ॥ जेठवदि चौदसदिने, दहे चा-
 रित्र परिणाम ॥ प्रभु० ॥ शान्ति० ॥ सुधातम अनुभवरसी, दावे पर परिणाम ॥ प्रभु० ॥
 शान्ति० ॥ ३ ॥ पोस शुदि नवमी दिने, पाभ्या केवल नाण ॥ प्र० ॥ त्रां० ॥ जेठ वदी-
 तेरसवरे, उत्तम सिवनु ठाण ॥ प्रभु० ॥ शान्ति० ॥ ४ ॥ पंचकट्याणक दिनें त्रदां,
 करीयें तप अनुष्ठान ॥ प्रभु० ॥ शान्ति० ॥ जिनवर दर्शन पूजतां, करतां सुख निदान ॥
 प्रभु० ॥ शान्ति० ॥ ५ ॥ ॥ इति शान्तिजिन स्तवन ॥ १६ ॥ ॥ अथ श्री कुशुनाथ
 जिन स्तवन ॥ निरखी निरखी तुज विंवनरे ॥ ए देवी ॥ श्री कुशुजिन सत्तरमा, त्रव-
 त्रथ त्रजण हार ॥ परमातम दीपता ॥ वदिनवमी श्रावण तणी, चवणकट्याण श्रीकार ॥
 परमातम० ॥ १ ॥ वैशाखवदि चौदस तिथे, जन्म थयो त्रगवान ॥ परमातम० ॥ दिना
 कुमरी महोत्सव करे, प्रभुजी रुपनिधान ॥ परमातम० ॥ २ ॥ वदि पंचमी वैशाखनी, दिक्षा
 कट्याणक थाय ॥ परमातम० ॥ चैत्रशुद्ध तृतीया दिने, केवलज्ञान कहाय ॥ परमातम०

॥ ३ ॥ वैशाखवादि एकम दिने, कुंभनाथ गया मोक्ष ॥ परमातम ० ॥ रत्नत्रयी प्रगट करी,
 करमगया सहु सोष ॥ परमातम ० ॥ ४ ॥ केवल शुगल मयी प्रभु, अनंतगुणनो चंडार ॥
 परमातम ० ॥ दर्शनसागर बुध वादे, जिनजीजाठं वलिहार ॥ परमात ० ॥ ५ ॥ ॥ इति
 क्रुशु जिन स्तवनं ॥ १७ ॥ ॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवन ॥ विण मवासोरे विठला
 वारु तमने ॥ ए देशी ॥ श्री अर जिन हित कर साहेव, प्रणमीजे शुच प्रवे ॥ फागण-
 सुदद्वितीया चवणक समे, माता उदरमां अवे ॥ प्यारो चेतनराम, नमीधे एक चित
 आणी ॥ १ ॥ मागशरशुद दशमी दिन जनम्या, माता हुइ खुरयाद ॥ सुदर्शन नरपति
 कुलशुषण, नंदावर्तवंत पाय ॥ प्यारो ० ॥ २ ॥ शुद एकादशी मागशरमासे, दिक्काक-
 द्याणक जाण ॥ कार्तिकशुदवारस दिने केवल, नाण कट्याण बखाण ॥ प्यारो ० ॥ ३ ॥
 शुदमागशर दशमीधे प्रभुजी, पाभ्या पद निर्वाण ॥ कट्याणकपंचनी त्रक्ति करतां, वरीधे
 सुश्रता टाण ॥ प्यारो ० ॥ ४ ॥ ज्ञानानंदि सहीजविलासी, परमातम सुखदाइ ॥ वंदन
 नमनादिक तस करीधे, दर्शन निर्मला थाइ ॥ प्यारो ० ॥ ५ ॥ ॥ इति अरजिन स्तवनं
 ॥ १८ ॥ अथ श्री महिनाथ जिन स्तवनं ॥ ॥ ऋपनजिणंदा ऋपन जिणंदा ॥ ए
 देशी ॥ मल्लीजिणंदा मल्लीजिणंदा, तुमदर्शने दहे सुख नर वंदा ॥ फागणसुदे तुरिया
 विश्वे स्वामी, चवणकट्याण हुळं अत्रिरामी ॥ मल्ली ० ॥ १ ॥ मागशिरशुद एकादशी
 दिवसे, प्रभुजी जन्मे पातक निकसे ॥ सुद इभ्यारस मागशरमासे, श्रीपरमातम दिक्का
 उपासे ॥ मल्ली ० ॥ २ ॥ एहिज दिन पाभ्या केवलज्ञान, जिनवर जपीधे एकचित्त

आण ॥ त्रोटो लोक प्रमादने मूको, इंद्रिकदे ए टाणु न चूको ॥ मल्ली० ॥ ३ ॥ फागण
 शुद्ध वारसदिने वरीया, जिनवर महोदय सुखजरीया ॥ पंचकल्याणक जिनतणा चारंव्या,
 अथ देख्या तेहवा दाख्या ॥ मल्ली० ॥ ४ ॥ कल्याणक तिथे उपवास करीये, आंबिल
 एकासणु मन धरीये ॥ श्रीजदेसागर सूरिनो शिष्य, बुधदर्शन कहे नसुं जगदीस ॥
 मल्ली० ॥ ५ ॥ ॥ इति मल्लीजिनस्तवन ॥ १९ ॥ अथ श्री सुनीसुवत जिनस्तवन ॥
 दावनी ॥ ए देशी ॥ सुनिसुवत जिन वंदिये रे ॥ जिनरंजना दाव ॥ वीसमा प्रभु
 सुख कारे, ह्यव्रंजना दाव ॥ सुदपुनम श्रावण तणीरे ॥ जिन० ॥ चवीया जिन जय
 कारे ॥ ह्यव्र० ॥ १ ॥ जेठवदि आठम दिनेरे ॥ जिन० ॥ जन्मोत्थव श्रीकारे ॥ ह्यव्र० ॥
 सुदवारस फागण तणीरे ॥ जिन० ॥ दिक्षा दीये जिन साररे ॥ ह्यव्र० ॥ २ ॥ फागण-
 वद वारस तिथेरे ॥ जिन० ॥ ज्ञान कल्याणक थायरे ॥ ह्यव्र० ॥ जेठवदि नवमी ज्यो-
 रे ॥ जिन० ॥ मोक्ष कल्याणकेवायरे ॥ ह्यव्र० ॥ ३ ॥ जिनवरजीनी सेवथीरे ॥ जिन० ॥
 दरिसण प्राति दोयरे ॥ ह्यव्र० ॥ अर्चुक्रमे सवि संपति मितेरे ॥ जिन० ॥ ह्यव्र
 जायरे ॥ ह्यव्र० ॥ ४ ॥ अंचल गढे दिनमणिरे ॥ जिन० ॥ उदे सागर सूरिरे ॥
 ह्यव्र० ॥ बुधदर्शन सागर वदेरे ॥ जिन० ॥ देजो सुख जरपूररे ॥ ह्यव्र० ॥ ५ ॥ ॥ इति
 श्री सुनिसुवत जिनस्तवनं ॥ २० ॥ ॥ अथ श्री नमीनाथ जिनस्तवन ॥ ॥ श्री
 पंचा सरा पास जीरे दाव ॥ ए देशी ॥ श्रीनमि नाथने वंदियेरे दाव, पवित्रकरी निज
 मन्न ॥ सुखका रीरे ॥ आसो सुद पुनमे चवीरे दाव, गर्भमां अयाजत्पन्न ॥ सुखका रीरे ॥

श्री० ॥ २ ॥ श्रावणवदि आ तम दिनेरे वाल, जन्मथयो सुपवित्र, सुखका रीरे ॥ परधर
रंग वधामणारे वाल, प्रगद्यो जिन गणणे भित्त, सुखका रीरे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ आषाढ
वदि नवमी तिथेरे वाल, चवणप्रहे जिनचाण, सुखका रीरे ॥ दिधाना महोवव होवेरे
वाल, फलसे संजम ताण, सुखका रीरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सुदमागसिर एकादशीरे वाल,
जिनने केवल नाण, सुखका रीरे ॥ ज्ञानोवव सुर पतिकेरे वाल, करता पवित्र अपाण,
सुखका रीरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वदिवेशाख दशमी जगीरे वाल, शिवपद ऋषि विवास,
सुखका रीरे ॥ निजसत्ता प्रगट करीरे वाल, दरसण नमे उदास, सुखका रीरे ॥ श्री०
॥ ५ ॥ इति श्री नमिनाथ जिन स्तवन ॥ ९१ ॥ ॥ अथ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥
धातकीखडे हो के पूखर अरथ जलो ॥ ए देशी ॥ श्रीनेमिनाथने हो के अरचो दरखचरे,
प्रभुदरिसण करता हो के समकित शुद्ध वरे ॥ कार्तिकवद द्वादशी हो के प्रभुनो चवण
थयो, तेअवणे सुणतां होके पातिक दूरगयो ॥ १ ॥ श्रावणमुद पंचमी होके नेमि जन्म
थयो, सुप्रभुजल परसे हो के त्रिभुवनेदर्प जयो ॥ समुज्ज्वनंदन हो के सुखविलसे सदा,
शिवादेविजाया हो के वंवन शखमुदा ॥ ९ ॥ सुदवठश्रावणनी हो के सहसा वन जद,
सहस्रनर साथ हो के जिन दिक्षा मही ॥ वदिआसोअमावासे हो के नेमिजिणेरने,
केवलजपने हो के घाती क्यकरीने ॥ ३ ॥ आषाढमुद आठम हो के पाम्या मुक्ति पुरी,
श्रीजिनमूर्ति हो के संसारसिंधु तरी ॥ जलटदिव आणी हो के पंचकल्याण कहा, जवा
सांचल्या हो के प्रंथकीमें कहा ॥ ४ ॥ श्रीअंचल गड हो के जयवंता विचरे, जदथ-

सागर सूरि हो के कीर्ति जगपसरे ॥ बुधदर्शन गायो हो के जिनजी वावीसमो, त्रुमं-
न्य फिरता हो के देव न तुज समो ॥ ५ ॥ ॥ इति नेमिनाथ स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ अथ
श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥ अर्नतजिणेशर सुं करो साहेवडीयां ॥ ए देशी ॥ पास-
जिणेशर पूजीयें साहेवडीयां, जगवंत परम कृपावरे ॥ गुणवेवडीयां ॥ चैतर वदि चोथे
चवी, साहेवडीयां ॥ वामा उदर मरावरे ॥ गुण० ॥ १ ॥ वदिदशमी पोस मासनी,
साहेवडीयां ॥ जनम्या पास जिणंदरे, गुणवेवडीयां ॥ अश्वसेन नृपनंदनो, साहेव-
डीयां ॥ अहिलंगन सुखकंदरे, गुणवेवडीयां ॥ १ ॥ पोष वदि इयारसें, साहेवडीयां ॥
दिशाकट्याणक थायरे, गुणवेवडीयां ॥ वदिचोथे चैतर तणी, साहेवडीयां ॥ केवलज्ञान
गवायरे, गुणवेवडीयां ॥ ३ ॥ श्रावणसुद आठमदिनें, साहेवडीयां ॥ समेत शिखरपरे
मोक्षरे, गुणवेवडीयां ॥ परमेश्वरजी सदासुखी, साहेवडीयां ॥ वरजीत अढारे दोषरे, गुण-
वेवडीयां ॥ ४ ॥ पंचकट्याणक प्रभुतणां, साहेवडीयां ॥ उजव करजो नित्यरे, गुणवे-
वडीयां ॥ परमानंदरस विलसीयें, साहेवडीयां ॥ ते लहे दरिसण वित्तरे, गुणवेवडीया
॥ ५ ॥ ॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ १३ ॥ ॥ अथ श्री महावीरस्वामीतुं स्तवन ॥
वीर जिणंद परम जप गारी ॥ ए देशी ॥ वीरजिणेशर जग परमेशर, सयल विबुध
वरिजो जी ॥ आषाढसुदनी ठठे जिनजी, माता उदर पविजो जी ॥ वीर० ॥ १ ॥ चैतर
शुद तेरस मधरते, जन्मकट्याणक थावे जी ॥ सकल सुरासुर मंदिर सुंदर, महोत्तव
करवा थावे जी ॥ वीर० ॥ १ ॥ मागशिरवटी दशमी प्रभुजी, दिशावीये शुभ जावेजी ॥

शुद्धवैशाखनी दशमे प्रभुजी, केवल संपदा पावे जी ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कार्तिकवदि अमासे
 शिवनु, ठाणवहे जिन रायजी ॥ पचकल्याणतिथि अत्रुकम प्रांखुं, त्रगावंतना गुण
 गायजी ॥ वीर० ॥ ४ ॥ एकासणुं आंखिल जपवास, तिथियें तप ए करीये जी ॥ नोकर-
 वादी वीस गणीये, सफल मनोरथ करीये जी ॥ वीर० ॥ ५ ॥ चवणदिने परमेष्टि
 गणीये, अरिहत जन्मकल्याणे जी ॥ दिक्कल्याणे नाथाय कहीनें, सर्वज्ञाय नाणक-
 ल्याणे जी ॥ वीर० ॥ ६ ॥ पारागताय निर्वाण कल्याणे, कल्याणक तप कहीये जी ॥
 त्रिकरणसुध नीराससे करता, महोदय ठाणने वरीएजी ॥ वीर० ॥ ७ ॥ वसंत निधि
 ससी मद वसुधायें, सुरतरही चोमासजी ॥ कल्याणक चोवीसी कीधी, प्रभु देजो सुखदय
 वास जी ॥ वीर० ॥ ८ ॥ अंचल गहें दिन दिन दीपे, श्रीउदयसागर सुरिराज जी ॥
 बुधदर्शन सागर शुभ्र चावे, चोवीस जिनवर गाय जी ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति श्री वीर-
 जिन स्तवनं ॥ २४ ॥ ॥ इति श्री उपाध्याय श्री दर्शनसागरजी कृत पंच कल्याण-
 कनी चोवीसी संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री स्वरूपचंद्रजी कृत चोवीशी प्रारंभः ॥ ॥ प्रथमं
 श्री ऋषभ जिन स्तवनं प्रारंभः ॥ वेडले चार घणो ठे राज, वातां केम करो ठो ॥ ए
 देशी ॥ ऋषभजिनेसर दरिसण दीजे, सुजपर करुण कीजे ॥ सेवकने मन वंदित हेजे,
 अजर अमर पद दीजे ॥ वंदित पूरो रे साहेवजी सेवकनो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तुज
 सुख दरिसण सुज मन हररथो, सुजनें प्रभुजी मदिथो ॥ शिवसुख वंडा पूरण मविं,
 अंगण सुरतरु फदीयो ॥ वंदित० ॥ २ ॥ आदि पुरुष श्री आदिजिनेसर, युगला धर्म

निवारी ॥ त्रिभुवन मांहे जिनजी सरिखो, नहीं कोई उपगारी ॥ वंदित ० ॥ ३ ॥ विनी-
 ता नगरी शोभे रूडी, कुलधर नात्रि विराजे ॥ राणी मरुदेवी कूलेंथी, जनम प्रभुजीनो
 राजे ॥ वंदित ० ॥ ४ ॥ यौवनवय समरथ गुण संपद, प्रथम राय कहाया ॥ दान संब-
 त्तरी देइ जनने, संयम दीए सुख दाया ॥ वंदित ० ॥ ५ ॥ लाख चौराथी पूरव आरु,
 पावी सधाव्या सुगते ॥ केवल कमला वीव विवासी, स्वरूपचंद्र सुख युगते ॥ वंदित ०
 ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ १ ॥ अथ द्वितीय श्री अजित जिन रतवनं ॥ श्रीपंचासरो पासजी
 रे ॥ दाव ॥ ए देशी ॥ शुभ्रत्रावें करी सेवियें रे दाव, वीजा अजित जिणंद ॥ त्रवि
 पूजो रे ॥ मंगल माला जेहथी रे दाव, दोवे अतिहि आणंद ॥ त्रवि पूजो रे ॥ वंदना
 माहरी जाणजो रे दाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अयोध्या नगरी त्रवी रे दाव, जितशत्रु
 त्रप तात ॥ त्रवि ० ॥ अजित जिनेसर जनमीथारे दाव, विजया राणी मात ॥ त्रवि ० ॥
 वदना ० ॥ २ ॥ इक्ष्वाण वंशे उंपता रे दाव, देव सकल शिरदार ॥ त्रवि ० ॥ पूरवदिशि
 जेम उगीयो रे दाव, दिनकर तेज अपार ॥ त्रवि ० ॥ वंदना ० ॥ ३ ॥ देव दूजो नही
 एहवो रे दाव, समोवफ इणे संसार ॥ त्रवि ० ॥ तस पद त्रक्ति त्रविपरें रे दाव, त्राव
 संहित त्रित्त धार ॥ त्रवि ० ॥ वंदना ० ॥ ४ ॥ लटत्रवथी त्रमरी हुवे रे दाव, त्रमरी
 त्रय सन्नार ॥ त्रवि ० ॥ मन्समरण महाराजनुं रे दाव, करतां लहे त्रवपार ॥ त्रवि ० ॥
 दना ० ॥ ५ ॥ जिनजीये जेम जीतीयारे दाव, राग रोष रिपुसेन ॥ त्रवि ० ॥ जीतीये
 स सहायथी रे दाव, लहथें शिवसुख चैन ॥ त्रवि ० ॥ वंदना ० ॥ ६ ॥ एम जाणी

जिनराजनी रे दाढ, डव्य चाव चरपूर ॥ त्रवि० ॥ पूजा परमात्म तणी रे दाढ, आर्षे
 सुख ससन्तूर ॥ त्रवि० ॥ वंदना० ॥ ७ ॥ निजपद दायक जिन तणी रे दाढ, धारो
 अखंडित आण ॥ त्रवि० ॥ स्वरूपचंद्र चावेंकरी रे दाढ, एम पर्ये वाण ॥ त्रवि० ॥
 वंदना० ॥ ८ ॥ इति ॥ ९ ॥ अथ तृतीय श्री संभव जिन स्तवनं ॥ ॥ राजा जो मदे ॥
 ए देशी ॥ संभव सुखकर त्रीजा देव, जेहनी सुर नर सारे सेव ॥ जिन बंदीये ॥ अत-
 रगत दर्शो जिन राय, जाणे जीव तणा अत्रिप्राय ॥ जिन० ॥ १ ॥ शिवगति समरण
 कीजे नित्य, सेना सुत ध्यावो निज चित्त ॥ जिन० ॥ अतिशय अर्जित वर्जित पाप,
 समता गुण दावे चव ताप ॥ जिन० ॥ २ ॥ चवजव तारण जुवन प्रदीप, नेहडुं
 रहीये नित्य समीप ॥ जिन० ॥ द्रमा विनय रुजुता संतोष, धारीने कीजे गुण पोष ॥
 जिन० ॥ ३ ॥ तप संयम सत्य शौच विशेष, अर्कचन ब्रह्मचर्य अशेष ॥ जिन० ॥ पाढी
 दजाविध धर्मनो साध, दाढी कर्म तयो चवपाथ ॥ जिन० ॥ ४ ॥ पुत्र जितारी पुत्र चवांत,
 पाण्या शिवरमणी सुख कांत ॥ जिन० ॥ पुण्य पुराकृत नरभव लक्ष, स्वामी चजन
 करी करो शुद्ध ॥ जिन० ॥ ५ ॥ धर्म अर्थ काम ए त्रण वर्ग, साधनधी लहीये अप-
 वर्ण ॥ जिन० ॥ सौभाग्यचंद्र सुनींद सुशीस, स्वरूपचंद्र नमे जगदीस ॥ जिन० ॥ ६ ॥
 इति ॥ ३ ॥ ॥ अथ चतुर्थ श्री अत्रिनंदन जिन स्तवनं ॥ ॥ सिद्धचक्रपद वंदो ॥
 ए देवी ॥ हिमवंत गिरि शिर पद्म डह्यी, सुरतटिनी प्रगटी ठे ॥ पूरव दिशि एक पावन
 करती, पूरण जव कमटी ठे रे ॥ त्रविका जिनसुख वाणी सुणजो, तमे त्रिपदीनो विस्तर

गणजो रे ॥ त्रवि० ॥ जिन० ॥ १ ॥ ए आंकाणी ॥ सुरनदीयें दिशि त्राण जवेखी,
 अत्रिनंदन जिन देखी ॥ त्रिगडे मध्य सिंहासन पेखी, चिहुं दिशि सरखी देखी रे ॥
 त्रवि० ॥ जिन० ॥ २ ॥ कंचन तनु हिमगिरि मन आणो, सुख पद्म डह जाणो ॥ चिहुं
 मुखें तेह डह तटथी वाणी, गंगा प्रवाह वखाणो रे ॥ त्रवि० ॥ जिन० ॥ ३ ॥ पूर्वादि दिशि
 कीध पवित्रा, करवा वचन विवास ॥ नय गम त्रंग प्रमाण सकारण, हेतु आहरण
 उल्लास रे ॥ त्रवि० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ चजगति वारण शिवसुख कारण, जाणी सुर नर
 तरिया ॥ त्राव कल्लोलमा स्नान रमणता, करता त्रवजल तरिया रे ॥ त्रवि० ॥ जिन०
 ॥ ५ ॥ ते जिनवाणी अमीय समाणी, परमानंद नीसाणी ॥ सौत्राण्यचड वचनथी
 जाणी, स्वरूपचंड मन आणी रे ॥ त्रवि० ॥ जिन० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ४ ॥ अथ
 पंचम श्री सुमति जिन स्तवन ॥ मोहना मोती द्यो हमारो ॥ ए देखी ॥ अतुली वल
 अरिहंत नमीजें, मन तनु वचन विकार वमीजें ॥ श्रीजिनकेरी आण वहीजें, तो मन
 वंजित सहेजें वीजें ॥ सेवियें त्रवि सुमति जिणंदा, टावीयें त्रवकंदा ॥ १ ॥ ए आंकाणी ॥
 अशुभाश्रवतो सग न कीजें, समकित शुध सुधारस पीजें ॥ अत्रय सुपत दान दीय
 दीजें, निजशुस्नी त्रवी त्रकि वदीजें ॥ सेवीयें ॥ टावीयें ॥ २ ॥ सुमतिजिनेसर
 सुमति जो आपे, जिन दरिसनथी डर्गति कोपे ॥ नाम जपो अतोत्तरशत जापें, मोह
 तिमिर हरो तपरवि तापे ॥ सेवीये ॥ टावीयें ॥ ३ ॥ त्रिकरण शुध नवविध निर्दु-
 पण, पहेरो श्रीव सवीव विप्रूषण ॥ संशयथी नित्य रहीयें दूखा, जवलगों नत्र अव-

गाहे पूखा ॥ सेवीये० ॥ टालीये० ॥ ४ ॥ धर्मनो काम ते प्रावशुं कीजे, गुरु सुख वचन
 विनय करी दीजे ॥ नव समुद्र तरवो वांहीजे, जड चेतन वेहु प्रिय लखीजे ॥ सेवीये० ॥
 टालीये० ॥ ५ ॥ पंचमगति गामी प्रभु पाया, सवि कारज सीधा दिव प्राया ॥ सौभाग्य
 चंद्र गुरु सुपसाया, स्वरूपचंद्रं जिनना गुण गाया ॥ सेवीये० ॥ टालीये० ॥ ६ ॥ ॥
 इति ॥ ५ ॥ अथ षष्ठ श्री पद्मप्रत्य जिन स्तवन ॥ ॥ श्रीशीतल जिन त्रेटीये ॥
 ए देशी ॥ श्रीपद्म प्रभजिन राज जी, तनु रक कमलसम वान हो ॥ ज्ञान अर्नंत
 सुजाणत, दग करुणा गेह समान हो ॥ श्रीपद्म ० ॥ १ ॥ केवल दर्शन देखीने, कहै
 लोक अलोकनी वात हो ॥ समयांतर उपयोगथी, साकार अनकार जात हो ॥ श्रीपद्म ० ॥
 ॥ २ ॥ प्रावि नूत नविष्यनी, प्रावि आणव कहै जगनाथ हो ॥ चउमुखें वाणी प्ररुपता,
 तारण करण नव पाथ हो ॥ श्रीपद्म ० ॥ ३ ॥ पुष्कर मेघ थकी नदी, बोधी अंकुर-
 रोपण हार हो ॥ श्रेश्ठा नापण रमणता, मूढकंद खंद निरधार हो ॥ श्रीपद्म ० ॥ ४ ॥
 सम संवेग निर्वदता, अनुकंपा अने आस्तिक्य हो ॥ शाखा चार अने नदी, ऊर्ध्व
 शाखा ते विडिम आधिक्य हो ॥ श्रीपद्म ० ॥ ५ ॥ पत्र संपत्ति सुख रूपीया, सुर सुख
 ठे तेहमा फूल हो ॥ फल शिवसुख पामे प्रावि, जिहां अहय स्थिति अनुकूल हो ॥
 श्रीपद्म ० ॥ ६ ॥ प्राव भेष बहुगुण जाणीये, जिनवाणी सकल मल शोध हो ॥ वाणी
 नवनिस्तारिणी, ते सुणि पाम्यो प्रतिबोध हो ॥ श्रीपद्म ० ॥ ७ ॥ ते उपकारी त्रिलोकेने,
 आपे अविचल सुख वास हो ॥ सौभाग्य चंद्र पसायथी, कहै स्वरूपचंद्र गुण नास

हो ॥ श्रीपद्म ० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ६ ॥ अथ सप्तम श्री सुपार्श्व जिन स्तवनं ॥ ॥
 दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन सातमो राज, स्वामी सुपासजी राज, तेहनुं दरि-
 सण हो लदीये पूरण पुण्यथी ॥ प्रभु शुभ्र ध्यानी हो राज, समकित दानी हो राज,
 शोभा अधिकी हो कहीये सुरनर अन्यथी ॥ १ ॥ जगत शिरोमणी राज, वास जिणंदनो
 राज, नमीये तेहनें रे शुद्ध जावित त्रिकिथी ॥ जिन प्रतिमाने हो राज, रूपविधाने हो
 राज, पूजो प्रणामो हो ध्यावो शुभ्रखरी मुक्तिथी ॥ २ ॥ वंजित काजे हो राज, स्वामी
 निवाजे हो राज, ते जिन आपे हो रूडी शिवपुर संपदा ॥ जस मुख दीठे हो राज,
 पातक नीठे हो राज, नामें नवे हो दारिद्र दोहगता कदा ॥ ३ ॥ बाह्य अन्धंतर हो
 राज, शुभ्रगुण शोभता हो राज, सहस अतोतर हो आपे अनंत गुणाकरा ॥ दोष न
 दीसे हो राज, अढार अनेरा राज, निजगुण निर्मल हो त्रासे जेम निशाकरा ॥ ४ ॥
 नथरी वणारसी हो राज, रयणे उल्लसी राज, तिहां प्रभु जनम्या हो स्वामी नर सुर
 इंद्रना ॥ सौत्राभ्यचंद्रनो राज, सेवक वोढ्योजी राज ॥ स्वामी साची हो मानो स्वरूपनी
 वंदना ॥ ५ ॥ ॥ इति सुपार्श्व जिन स्तवन ॥ ७ ॥ अथ अष्टम चंडप्रभ्र जिन स्तवन ॥
 आवे लावनी देशी ॥ चंडप्रभ्र जिनराज, मन मोहन महाराज ॥ आवे लाव, अतिश-
 यपति जिन आवमो जी ॥ सकल कुशलनी वेव, प्रततन मंगल केव ॥ आवे ० ॥ वर
 पुष्कर जलधर समो जी ॥ १ ॥ इरित तिमिर विध्वंस, निरमल गयणे हंस ॥ आवे ० ॥
 ज्ञानावरण निवारवा जी ॥ सागर कोडा कोड, त्रीश्र वडिथति जोड ॥ आवे ० ॥ क्रय

करी केवल धारवा जी ॥ ९ ॥ सुरतरु वर उपमान, आपण मोक्ष निदान ॥ अष्टो ॥
 नरसुर सुख अनुक्रमे लहि जी ॥ नवजल सायर तार, पोहोचावण परपर ॥ अष्टो ॥
 मुक्ति गमन प्रवहण सही जी ॥ ३ ॥ सुख संपत्ति गुण हेत, शक्ति लंवन तनु श्रेत ॥
 अष्टो ॥ चन्द्रप्रज जिन जगपति जी ॥ मन तनु वचन एकद्व, करी ध्यातं निज तत्त्व ॥
 अष्टो ॥ जिम पामो पचम गति जी ॥ ४ ॥ ताप हरण जिम चद्र, जिम तम हरण
 दिणद ॥ अष्टो ॥ तिम नवहर जिन संप्रव जी ॥ सौभाग्यचंद्र गुरु राय, पामी तास
 पसाय ॥ अष्टो ॥ स्वरूप चंद्र इम विनवे जी ॥ ७ ॥ इति चन्द्रप्रज जिन स्तवनं ॥ ८ ॥
 अथ नवम श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥ हवे न जाठ मदी वंचवा रे लो ॥ ए देशी ॥
 साह्य सुविधि जिणंदने रे लो, पूजा धरी मन खंत ॥ शुभ्र नावधी रे, चालो जइय
 जिन वादवा रे लो ॥ उजम आणी अंगमा रे लो, आवास मूको दिगंत ॥ शुभ्र ॥
 चालो ॥ १ ॥ चरण पावन थाये चावता रे लो, दरिसेणे नयन पवित्र ॥ शुभ्र ॥
 पंचाभिगमन सजारीने रे लो, निसिद्धि त्रिकरण विचित्र ॥ शुभ्र ॥ चालो ॥ २ ॥
 गिरनामी कर जोडीने रे लो, वंदन करो एकचित्त ॥ शुभ्र ॥ उच्य याव तव साचवी
 रे लो, शुभ्र करो समकित ॥ शुभ्र ॥ चालो ॥ ३ ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी रे लो,
 तहमां नहि सदेह ॥ शुभ्र ॥ तेहनी नक्ति कर्पा थकी रे लो, लक्ष्मीय सुख अठेह ॥
 शुभ्र ॥ चालो ॥ ४ ॥ शोभनविधि सुविधि प्रभु रे लो, मकर लंवन महाराय ॥
 शुभ्र ॥ दीजं सौभाग्य पद सेवता रे लो, आत्म स्वरूप पसाय ॥ शुभ्र ॥ चालो ॥

॥ ५ ॥ ॥ इति-सुविधि जिन स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ अथ दशम श्री शीतल जिन स्तवनं ॥
 घोभी तो आइ थारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥ श्रीशीतल जिन सेवीयें त्रविप्राणी,
 तार्थे बहुत सुख होय हो मनमान्यो, जिणंद मेरे एह हो सुखदानी ॥ ए आंकणी ॥ बार
 जातिकी निर्झरा ॥ त्रविण ॥ करिके त्रवतोय हो ॥ मनण ॥ १ ॥ सादि अर्नंत प्राणें रह्यो ॥
 त्रविण ॥ ज्योति मयी गत देह हो ॥ मनण ॥ केवल युग सुख वीर्यनो ॥ त्रविण ॥
 अर्नंतपणाथी अवेह हो ॥ मनण ॥ २ ॥ जिनके वचन सबही सुने ॥ त्रविण ॥ खीरोद-
 धिके तरंग हो ॥ मनण ॥ ज्योपणि घट जल देइके ॥ त्रविण ॥ राखे निजघट संग हो ॥
 मनण ॥ ३ ॥ वरणवरणी जल त्रयो ॥ त्रविण ॥ तव न ग्रहे कोउ उर हो ॥ मनण ॥
 त्युं बाणी जिनसुख वदी ॥ त्रविण ॥ धारे सबमत चोर हो ॥ मनण ॥ ४ ॥ आप आपना
 मत थापके ॥ त्रविण ॥ न्यारे न्यारे कहे जेद हो ॥ मनण ॥ करनी न्यारी वतापके ॥
 त्रविण ॥ नय घट न्यारे वेद हो ॥ मनण ॥ ५ ॥ सधरे इहजत सिद्धिकों ॥ त्रविण ॥ जो
 त्रुवे नगरको पंथ हो ॥ मनण ॥ ताहिमें जिवदया बडी ॥ त्रविण ॥ जो वरनत निर्भय
 हो ॥ मनण ॥ ६ ॥ तार्थे जिनपद पाइये ॥ त्रविण ॥ दशम जिनेंजके त्रक हो ॥
 मनण ॥ सौत्राण्यचंद्र दया त्राखे ॥ त्रविण ॥ स्वरूपचंद्र सुख युक्त हो ॥ मनण ॥ ७ ॥
 इति ॥ १० ॥ ॥ अथ एकादश श्रीश्रेयांस जिन स्तवन ॥ ॥ हो हृदधरजी हवे
 कर्म करवुं नेम पराक्रम महोदुं ॥ ए देशी ॥ हो जिनवरजी, निज दरिसण देखाडी प्रीत
 सुधारीये ॥ तुम दरिशाण ठे त्रवत्रय हरणो, आठ कर्मजलधी तारण तरणो, संसारनीने

शिवसुख करणो ॥ हो जिन० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ सुनिश्चावक धर्म छविध जारन्यो,
 ते प्रव्यजनो आगल दारन्यो, तेणे तुज वचनें अमृतचारन्यो ॥ हो जिनवरजी, निज-
 वाणी सत्रलावी समकित आपीये ॥ ९ ॥ जे हुंता पाप तणा कारी, ते तें तार्यो बहु
 नर नारी, तुज सम नदीं कोड उपगारी ॥ हो जिनवरजी, निजकर अवलावावी तारक
 तारीये ॥ ३ ॥ तुं अध्यातम सूरज उदयो, तव मोहादिक तम दूर गयो, प्रवि मनमां
 ज्ञान प्रकाश भयो ॥ हो जिनवरजी, मनउदयाचव वेसी मिथ्यात्व निवारीये ॥ ४ ॥
 तुज वदन कमल दरिसन ध्यारो, तिहा मन मधुकर मोहो महारो, कृणएक तिहांथी
 न रहे न्यारो ॥ हो जिनवरजी, अवलोकन नित्य तेहनो सुजनं दीजीये ॥ ५ ॥ धरणिंड
 सहस्स सुखशु प्राये, ताहारा गुण नित्य नवला दाखे, तोहे पार न लहे गुणनो लाखे ॥
 हो जिनवरजी, अनंत गुणात्मक तुं सोहे गुण ताहारा ॥ ६ ॥ सोत्राभ्यचंड गुरुनो
 शीघ्र, कहे स्वरूपचंड अहो जगदीश, श्रेयांस पणु दीड सुजगीश ॥ हो जिनवरजी,
 नाम श्रेयांस तमारुं समरुं ध्यानमा ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ११ ॥ अथ द्वादशश्री वासुपूज्य
 जिन स्तवन ॥ ॥ धोवीरी वेटी तीखारे नयणरो पाणी लागणो, मारुडो रह्यो रे
 लोत्राय ॥ ए देशी ॥ जिणंदराथा, सुगुण सुखाकर सुंदर, केवलज्ञान चंडार ॥ जिणंद० ॥
 मोह अंधार निवारवा, समरथ तुं दिन कार ॥ जिणंद० ॥ १ ॥ जिणंद० ॥ वासुपूज्य
 सुज वाळहो, दडमन रह्यो रे लोत्राय ॥ ए आंकणी ॥ जिणंद० ॥ धर्म धुरंधर धन्य तुं,
 नरतक्रेव मजार ॥ जिणंद० ॥ बोधवीज वाक्ये वचनहुं, प्रविमन क्यारा उदार ॥

जिण्डं ॥ ९ ॥ जिण्डं ॥ सुमति सहित सहु समकेती, पावे निजवत सार ॥
 जिण्डं ॥ संवर वानी नवी करे, रूहे अग्रमत आचार ॥ जिण्डं ॥ ३ ॥ जिण्डं ॥
 आश्रव खापद वारता, धारता जिन वर आण ॥ जिण्डं ॥ शील सुधारस सीचता,
 वहे चेतन गुण खाण ॥ जिण्डं ॥ ४ ॥ जिण्डं ॥ पान्थो ते दरिसण यदा, जाण्यो तदा
 शिवशर्म ॥ जिण्डं ॥ कुशुरु कुदेव कुधर्मनो, वार्यो चित्तथी नर्म ॥ जिण्डं ॥ ५ ॥
 जिण्डं ॥ अप्पन्निवाइ दीजीधं, दरिसण दोवत दान ॥ जिण्डं ॥ सौंनान्यचंड
 स्वरूपने, वल्लन तुज गुणगान ॥ जिण्डं ॥ ६ ॥ इति वासुपूज्य जिन रतवनं ॥
 अथ त्रयोदश श्री विमल जिन रतवनं ॥ ॥ ह्रंवरुफानी देशी ॥ विमल विमलगुण
 राजता, बाह्य अर्यंतर नेद ॥ जिण्डं जुद्धरीधं ॥ सूची युवा दृष्टांतथी, मन वच काय
 निवेद ॥ जिण्डं ॥ १ ॥ स्पृष्ट वध् निधत ते, निकाचित अतिशेष ॥ जिण्डं ॥
 आत्मप्रदेश माहेमल्या, मल ते कर्म प्रदेश ॥ जिण्डं ॥ २ ॥ असंख्य प्रदेशी चिन्मयी,
 चेतन गुण संत्रार ॥ जिण्डं ॥ प्रदेशें प्रदेशें रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ जिण्डं ॥
 ॥ ३ ॥ पंच रसायन जावना, जावित आतम तत्व ॥ जिण्डं ॥ उपवता गांडी कन-
 कता, पांमे उत्तम सत्व ॥ जिण्डं ॥ ४ ॥ प्रथम जावना श्रुत तणी, वीजी तप तीय
 सत्व ॥ जिण्डं ॥ तुरीय एकता जावना, पंचम जाव सुतत्व ॥ जिण्डं ॥ ५ ॥ एम
 करी सर्व प्रदेशने, विमल कर्मा जिनराय ॥ जिण्डं ॥ नाम यथार्थ विचारीनें, नमे
 स्वरूप नित्य पाय ॥ जिण्डं ॥ ६ ॥ इति ॥ १३ ॥ अथ चतुर्दश श्री अनंत-

जिन स्तवनं ॥ द्वारे लाव रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ द्वारे लाव चतुरश्रिमणी
 चौदमो, जिनपति नाम अनंत भेरे लाव ॥ गुण अनंत प्रगट कर्षो, कर्षो विभावनो अंत ॥
 भेरे लाव ॥ चतुर श्रिमणी चित्त धरो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ द्वारे लाव चार अनंता
 जेहना, आतम गुण अत्रिम ॥ भेरे लाव ॥ ज्ञान दर्शन सुख वीर्यता, कर्म संभ्या ताम ॥
 भेरे लाव ॥ चतुर ॥ २ ॥ द्वारे लाव चतुर धरो निज चित्तमां, ए जिनवरनुं ध्यान ॥
 भेरे लाव ॥ अरथी अरथ निवासनें, सेवे धरी बहुमान ॥ भेरे लाव ॥ चतुर ॥ ३ ॥
 द्वारे लाव ज्ञानावरणी क्य करी, लहुं अनंतुं ज्ञान ॥ भेरे ॥ दर्शनावरण निवारता,
 दर्शन अनंत विधान ॥ भेरे ॥ चतुर ॥ ४ ॥ द्वारे लाव वेदनीय विगमं धनुं, सुख
 अनंत विस्तार ॥ भेरे ॥ अंतराय उदंघतां, वीर्य अनंत उदार ॥ भेरे ॥ चतुर ॥ ५ ॥
 द्वारे लाव अनंत अनंत निजनामनी, श्रिता थापी देव ॥ भेरे ॥ जिम तरस्यां सरवर नजे,
 तिम स्वरूप जिन सेव ॥ भेरे ॥ चतुर ॥ ६ ॥ इति ॥ १४ ॥ ॥ अथ पंचदश श्रीधर्मजिन
 स्तवनं ॥ ॥ शोत्रुंजागिरिना वासी रे सुजरो मानजो रे ॥ ए देशी ॥ धर्मजिणुं
 ध्यावो ध्यानमां रे, जास वफाई वे केवल ज्ञानमां रे ॥ जिनजीये प्रांब्या नव अनेक,
 ते सांप्रदाता आवे हृदय विवेक, नक्तवत्सल प्रभु अमने नवजल तारसे रे ॥ १ ॥ धर्म
 कर्षो वे रे वस्तु स्वभावनें रे, वस्तु प्रकाशेरे उव्य वनावनें रे ॥ चरश्रि अवागाहन
 परिवर्ति, पूरण गलण चेतन गुण कीर्ति, एहवा जावने धर्म वखाणीडि रे ॥ २ ॥ पांच
 अनेरा रे आतम उव्यधी रे, तेहनो ज्ञाता रे चेतन उव्यधी रे ॥ तस परिचय करतां

स्तव्य, पाप्मे पारमार्थिक निजैतत्त्व ॥ तेदानी रे दात्र अपार सुखंकरु रे ॥ ३ ॥ जीव
 संसारी रे ते निज धर्मेने रे, निजचित्तवतो रे वहे शिव शर्मने रे ॥ इत्यथी गुण
 पर्याय विशेष, तन्मय आतां कार्य अशेष, साधक साधनें साध्यने रे ॥ ४ ॥
 चेतना दीय साकारने परा रे, अनाकार अवगमद्वया आगारा रे ॥ प्रत्यक्ष चासे लोक
 अलोक, नासे त्रय त्रमणानो शोक, जिनजिने सेव्यां रे सवि सुख संपजे रे ॥ ५ ॥
 एहवा अतिशय धर्मजिणदना रे, ते अनुमोदे रे वृंद सुणिदनां रे ॥ ते वहे सुख
 सौत्राग्य सहेत, अन्निनव चंद्रकला समवेत, आपो आतम शक्ति स्वरूपने रे ॥ ६ ॥
 ॥ इति धर्मजिन स्तवनं ॥ १५ ॥ ॥ अथ षोडश शांति जिन स्तवनं ॥ ॥ गोरी
 विन अवगुण किम तोरी ॥ ए देशी ॥ सेवो त्रवि शांतिजिणदं सनेहा, शांत रस
 गेहा ॥ समाश्रुत गेहा ॥ सेवो त्रवि शांतिजिणदं सनेहा ॥ ए आंकणी ॥ राग द्वेष
 त्रय पाप सतापित, त्रिविध तापहर मेहा ॥ माया दोत्र राग करी जानो, द्वेष क्रोध मद
 रेहा ॥ सेवो ० ॥ १ ॥ अनंतानुबंधी अप्रत्याखानी, पञ्चबाण संजव वेहा ॥ निज
 अन्योन्य सदशथी चजसव, संख्या वासित देहा ॥ सेवो ० ॥ २ ॥ नोकषाय नव हार्य
 अरति रति, शोक जुगुप्स त्रय रेहा ॥ मन वच काय तपावत तार्थे ॥ कहीयें ताप
 अवेहा ॥ सेवो ० ॥ ३ ॥ जैसे वनद्वय तरु गण बावे, त्यो अंतर्गत एहा ॥ खम सम
 दम उपशम शीतलता, करि जल वहेरी देहा ॥ सेवो ० ॥ ४ ॥ आतमराय राज्य अग्नि
 संन्यो, पूजित त्रिजुवन गेहा ॥ तुम सिर तत्रकी वाह अमासिर, द्यो स्वरूप अनुपेहा ॥

सेवो ० ॥ ५ ॥ ॥ इति आंति जिन स्तवनं ॥ ॥ अथ सप्तदश कुंशुजिन स्तवनं ॥
 ॥ ऋषभ जिनेसर प्रीतम माहरो रे ॥ ए देशी ॥ कुंशुनाथ सत्तरमा जिनपति जी, कुंशु
 तणा पण नाथ ॥ ते जिन नव्य सामग्रीवंतने जी, साचो जिवपुर साथ ॥ २ ॥ श्रीदे-
 वीसुत गुण संनारीयें जी, मन कज कोश निवास ॥ मनमधुकर जिन पदकज कार्णिका
 जी, वासी लहो सुखवास ॥ श्रीदेवी ० ॥ १ ॥ योग खेमंकर गुण ते नाथमांजी, कुंशु
 उपर पण एम ॥ अत्रापकने प्रापक योगते जी, प्रातरक्षण गुणखेम ॥ श्रीदेवी ० ॥ ३ ॥
 लौकिक नाथ महिपतिने कह्यो जी, ते ए अरथ प्रमाण ॥ लोकोत्तर ज्ञानादिक गुण तणा
 जी, दायक रक्षक जाण ॥ श्रीदेवी ० ॥ ४ ॥ ते गुणतो अत्रिलक्षणी अतमा जी, सेवे
 श्रीजगनाथ ॥ जिन जी तेहने मधु माधव परे जी, आपे अश्रुत आथ ॥ श्रीदेवी ० ॥
 ॥ ५ ॥ तिम हुं कुंशु जिनेंज उपासना जी, करी मागुं गुण दीप ॥ नवपरिहार सुगति
 संपादना जी, सत्य स्वरुप सुख होय ॥ श्रीदेवी ० ॥ ६ ॥ ॥ इति कुंशुजिन स्तवनं ॥
 अथ अष्टादश श्रीअरजिन स्तवन ॥ ॥ देउ देउ रे नणंद हठीली ॥ एदेशी ॥ अर नाथ
 अरज अयधारी, निजप्रक्तनां कार्य सुधारो रे ॥ मनमोहना महाराया ॥ संसार अपारा
 वारे, जलघोलना न्याय विचारे रे ॥ जग सोहना जिन राया ॥ १ ॥ पुजलपरवर्त
 अंतता, अया नवक द्योल प्रमंतां रे ॥ मन ० ॥ मनुज खेव कुव आर्य, गुरु श्रुत सह-
 दणा सुकार्य रे ॥ जग ० ॥ २ ॥ एवी सामग्रीने अत्रावे, जिनधर्म न लाथो सुजावे रे ॥
 ॥ मन ० ॥ निघते लघुकर्मा अदने, अनुक्रमे गुण ठाण लदने रे ॥ जग ० ॥ ३ ॥ जिन

धर्म कल्याणक देखी, त्यांथी कुशुर कुदेव जेवखी रे ॥ मन० ॥ वली सुशुर सुदेव
 जपासी, थयो स्रयो जिनमत वासी रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ इम व्यक्त मिथ्यात्वने वाम्यो,
 अय्यकनिवारण कामो रे ॥ मन० ॥ पडखड जे तार जिणंदा, जिरया अंतरषट्परिपु
 टंदा रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ निजतुदय करण तुम शक्ति, तुमे सुक कामे करो व्यक्ति रे ॥
 ॥ मन० ॥ शुरु सौभाग्यचंड पसाया, वही स्वरुपचंड गुण गाया रे ॥ जग० ॥ ६ ॥
 ॥ इति श्री अरजिन स्तवनं ॥ ॥ अथ एकोविंशतितम मद्धिजिन स्तवनं ॥ जीरे
 सफ़ल दिवस थयो आजनो ॥ ए देशी ॥ जीरे महिमा मद्धिजिणंदनी, मानी माहरे
 मन्न ॥ मोह महिपति जीतिओ, वली तस पुत्र मदद ॥ १ ॥ नित नमीर्थे रे नीरागता,
 नमतां दोये जवगद ॥ डःखदोहना दूरें टवे ॥ एहमां नहिं सदेह ॥ जाणो निसंदेह ॥ नित०
 ॥ २ ॥ जीरे मद्धिजिणंदनी साहेवी, देखीनें रति प्रीति ॥ वचन कहे निज कंतने, पनि प्रेमः
 दानी रीति ॥ नित० ॥ ३ ॥ जीरे नाथ कहो ए कुण अठे, कहे ए जिनदेव, जिनते
 किम तुम वस नहिं ॥ कहे इम सत्यमेव ॥ नित० ॥ ४ ॥ जीरे नहिं प्रताप इहां
 माहरो, तो दुथा पौरुष तुजा ॥ हरयो मोह माहरो पिता, तो स्यो आशरो मुजा ॥
 नित० ॥ ५ ॥ जीरे ते सांजली रति प्रीति व, वीजो काम सबाण ॥ मदीने मद्धि जिणंदनी,
 शीर धारी ठे आण ॥ नित० ॥ ६ ॥ जीरे ते माटे तुम वीनहुं, वारो तेह अशेष ॥
 थो सौभाग्य स्वरुपनें, सुख वडिध विशेष ॥ नित० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ १९ ॥
 अथ विद्यतितम श्री सुनिसुवत जिन स्तवनं ॥ हारे आहारी वंगदारी खडकी खोद हो

नणदीरा वीर, काहिर नीजे मरुडी एकदी ॥ अहो थाहारी वंगला ॥ ए देत्री ॥ हारे
 थारो समोवसरण देखान हो सुगतिरा हीरा, आगल उग्रो सेवक सामुहो रे, थाहारे
 सुजरे ॥ हारे थारो समवसरण देखाड हो ॥ सुगतिरा हीरा ॥ ए आंकाणी ॥ हारे सुर
 संवर्तक पवनेकरी रे लो, रजहरि करे शुभ्रजल सित्रहो ॥ सुगतिरा हीरा ॥ कुसुमोत्कर
 जलश्रव जातिनां रे लो, पंचवर्णनां जानुप्रमित हो ॥ सुगतिरा हीरा ॥ १ ॥ आगल ॥
 हारे थाहरो सम ॥ हारे जिहां टक्क अशोक विरा जतो रे लो, तिहां दिव्य धनी सुर
 वाद हो ॥ सुगति ॥ हारे सिंहसन वेठा प्रयु तुमे रे लो, तव वाजत डंडप्रिनाद हो ॥
 सुगति ॥ २ ॥ हारे चिहुं दिशि सित चामर वीजता रे लो, सुर सफल करे निज
 शक्ति हो ॥ सुगति ॥ प्रामडलसितद्युति शोभतो रे लो, त्रण वत्र धरि करे त्रक्ति हो ॥
 सुगति ॥ ३ ॥ हारे प्रातिहार्य अतिशय परिवर्था रे लो, श्रीसुनिसुव्रत जिनराय हो
 ॥ सुगति ॥ जितशत्रु अश्व उधरवा रे लो, आन्धा नरुअह सुर समुदाय हो ॥ सुगति ॥
 ॥ ४ ॥ हारे राय यज्ञ करतो वारीयो रे लो, तमे तार्यो हय धरी हेत हो ॥ सुगति ॥
 वाधीयो यश त्रिहुं लोकमां रे लो, थयो तीरथ एणे सकेत हो ॥ सुगति ॥ ५ ॥ हारे
 तुमे एहवा उपगारी प्रयु रे लो, दीओ अविचलराज पसाय हो ॥ सुगति ॥ तुम तूरे
 सवि सुख पामीं रे लो, स्वरूप चंडोदय थाय हो ॥ सुगति ॥ ६ ॥ आगल ॥
 हारे थाहरो ॥ ॥ इति ॥ ॥ १० ॥ अथ एकविंशतितम श्रीनीनाथजिन स्तवनं
 ॥ ओलमा श्रीजिनराज ओलण सुणो अमत्तणी ललना ॥ ए देत्री ॥ मद्वारी नमिनाथ

जिनेश्वर वंदीयें लवना, प्रव अनेकनां संचित पाप निकंदीयें लवना ॥ जीत्याने सरणे
 जीत लढीजे ए न्याय ठे लवना, रीपु जीत्यानो ए पण एक उपाय ठे लवना ॥ १ ॥
 डव्य शत्रु जेणें गर्भ शका सहजे दम्या लवना, मान मूकीने ते सधदा आवी नभ्या
 लवना ॥ नाम नमि इम सार्थक मनसां ध्याइयें लवना, तो मनवांजित इहपरप्रव
 सुख पाइयें लवना ॥ २ ॥ जीवकर्मनो वैर अनादि निवर्ह ठे लवना, किहां ए जीव
 किहां कर्म समर्थ सनर्ह ठे लवना ॥ गोस्तनथी पय खाणथी कनकोपल परे लवना,
 मद्या आढ्या पण तास विभाव अगनी हरे लवना ॥ ३ ॥ तिम प्रभु समकित
 लाप्रथी पंडित वीथेने लवना, धारी वारी प्रमाद धरी मन धैर्येने लवना ॥ जीती
 प्राव विपक्ष स्वपक्ष विचारिने लवना, सर्वघाति देशघाति अघाति निवारीने लवना
 ॥ ४ ॥ दाधो केवल शुगल निधान सुश्रुक्तिनो लवना, जिनपद त्रोग संयोग मिदाप
 विमुक्तिनो लवना ॥ इम बहिरतर शत्रु नमावी नमिजिने लवना, दारुथ्यो रिपु जय त्रेद
 ते जाणयो त्रविजने लवना ॥ ५ ॥ धर्म द्विविध इम संघ चतुर्विध सांजले लवना,
 त्रज दर्शन केद देश सर्वाविरते त्रिले लवना ॥ जेम तुमे जीत्या रे तेम जीतावो
 माहारा लवना, कहे स्वरूप हवे चरण शरण ठे ताहारा लवना ॥ ६ ॥ इति श्री नमि-
 जिन स्तवन ॥ ११ ॥ ॥ अथ द्वाविंशतितम श्रीनेमनाथजिन स्तवन ॥ ॥ अपने
 पीयाजीकी बात रे हुं केहने पूतुं ॥ ए देशी ॥ नेम जिणंदनो ग्यान रे, जगमां जय-
 करी ॥ जगत जंतुनी रक्षा करवा, प्रभु अतिशय उपगारीरे ॥ वंदो नरनारी ॥ नेम० ॥

ए आकणी ॥ जय समुद्र विजयांग यू, शिवादेवीना जाया ॥ शंखदांतन अंजन ठवी, दश
धनुष्यनी काया ॥ नेम० ॥ १ ॥ अत्रयदान स्वापद जणी, दीधुं वरसी जनने ॥ संयमि
ब्रह्मचारी पणे, साधुं निजमनने ॥ नेम० ॥ २ ॥ प्रतिपद पृथ्वी पावन करी, सहसावने
स्वामी ॥ मौनपणें चापन दिने, केवलसिरि पामी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ पूजे प्रभुने कृष्णजी,
सुणो त्रिभुवन राया ॥ त्रिगुण तीर्थें रेंवत पति, हरिवंश सवाया ॥ नेम० ॥ ४ ॥ उत्तम
स्त्री गुणे परिवरी, राजीमति कन्या, तुम चित्तमां किम नवीवसी, अति तन्वी धन्या ॥
नेम० ॥ ५ ॥ तव सुरपति कहे कृष्णने, जिन चित्त अत्रंगे ॥ ज्ञान गर्भें वैराग्यने, उत्त-
रगने रंगे ॥ नेम० ॥ ६ ॥ न मद्ये प्रवेश अनंगने, कृशांगीनी शी वात ॥ ते सुणी राजी-
मति कहे, सुरनर विख्यात ॥ नेम० ॥ ७ ॥ चिदानंद चित्तमां तिहां, नदीं कोइहुं नाम ॥
चिदानंद संयुत प्रभु, धरुं मुजमन धाम ॥ नेम० ॥ ८ ॥ इम कही जिन दीक्षा प्रही,
करी संयम दीवा ॥ रहनेमि प्रतिबोधीअो, सति परम सुझिवा ॥ नेम० ॥ ९ ॥ एम
अनंतगुण राशीनो, पर पार न आवे ॥ सौभाग्य चंद्र स्वरूपने, जिनधर्म शीखावे ॥
नेम० ॥ १० ॥ ११ ॥ अथत्रयोविंशतितम पार्श्वजिन स्तवन ॥ ॥ सखि आज्ञा आषाढो
उन्नह्यो, सखि ऊरमर वरसे मेह ॥ ए देशी ॥ जीरे आज्ञा दिवस प्रदे जगियो, जीरे आज्ञा
थयो सुविहाण, पास जिणसर त्रेटिआ, थयो आनंद कुशल कल्याण हो ॥ साजन ॥
सुखदायक जाणी सदा, त्रवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीरे विकरणशु-
द्धिं विहं समे, जीरे निसिद्धी ज्ञा मंजना ॥ विहं दिशि निरवण वरजीनें, दीजें खमा-

समण त्रण वार हो ॥ साजन० ॥ २ ॥ जीरे चैत्यवंदन चोविसनो, जोरे स्वरपद वण
 विस्तार ॥ अर्थ चिंतन विट्टु काटना, जिन नाथ निक्षेपा चार हो ॥ साजन० ॥ ३ ॥
 जीरे श्रीजिन पद फरसें वढ़े, कळिमलिन ते पद, कळ्याण ॥ ते वली अजर अमर
 हुवे, अयुनर्जव शुभ्र निर्वाण हो ॥ साजन० ॥ जीरे दोह जाव मूकी परो, जीरे पारस
 फरस पसाय ॥ थाए कळ्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोक्ष उपाय हो ॥ साजन०
 ॥ ५ ॥ जीरे उत्तम नारी नर घणा, जीरे मन धरि त्रकि उदार ॥ आराधी जिनपद
 त्रलो, थाए जिन करे जग उपगार हो ॥ साजन० ॥ ६ ॥ जीरे एहहुं मन निश्चल करी,
 जीरे निश्चिदिन प्रद्युने ध्याय ॥ पांमे सौभाग्य स्वरूपने, निष्ठति कमलावर ध्याय हो ॥
 साजन० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ २३ ॥ ॥ अथ चोवीसमा श्रीवीर जिन स्तवन ॥ ॥
 राजुल पूजे रे सखि प्रत्यं, राजुल पूजे वात रे, सुणो सजनी अमारी वात ॥ ए देगी ॥
 हुं तुम पू हुं रे परमगुरु, हुं तुम पूहुं वाच रे ॥ कही पश्रनो उत्तर साच, हुं एक मागुं
 रे परम गुरु ॥ हुं एक मागुं वाच रे, दीओ नाम तुमारानो साच ॥ ए अंकाणी ॥
 नाम तुमारो रे जगतगुरु, नाम तुमारो वीरजी रे ॥ तेहनो अश्रुत जाव, मनशुं विचारी
 जोइये, तव उपजे विविध वनाव रे ॥ सुणो सदगुरु माहरी वाच रे ॥ हुं तुम० ॥ १ ॥
 नवरस माहे रे जगतगुरु, नवरस माहे पांचमो रे ॥ रसतुं नाम ठे वीर ॥ ते वली
 त्रिविध वखाणीये, तेनां नाम कथां त्रण धीर रे ॥ सुणो० ॥ हुं तुम० ॥ २ ॥ अजि
 दानमां रे जगतगुरु, अजि दान तिम धर्ममां रे, समरथ कहीये वीर ॥ तन धन मन

जंका नदीं, मनमोद रोमांच शरीर रे ॥ सुणो० ॥ हुं तुम० ॥ ३ ॥ ए लक्षण रस रे
 जगतगुरु, ए लक्षण रस वीरनां रे, ते तुमने प्रत्यक्ष ॥ गुण शैतानी ते वता, वहिर-
 तर लक्षण लक्ष रे ॥ सुणो० ॥ हुं तुम० ॥ ४ ॥ तत्व परीक्षक रे जगतगुरु, सत्व परी-
 क्षक सुर दम्भो रे, आजि वीर तुमे एम ॥ लोक शोरण पूरण कर्षो, दान वीर सब-
 त्तर भेम रे ॥ सुणो० ॥ हुं तुम० ॥ ५ ॥ करमने जीती रे जगतगुरु, कर्मने जीती
 केवली रे, वार्यो नव नय नर्म ॥ सत्ताधर्म वतावीयो, एवो धर्म वीर त्रिविधार्म रे ॥ सुणो० ॥
 हुं तुम० ॥ ६ ॥ वीर त्रिविधगुण रे जगतगुरु, वीर त्रिविध गुण राजतां रे, सेवु चरण गुण तुजा
 ॥ सौभाग्यचड स्वरूप ते, दीश्रो वीरजी वीरता मुजा रे ॥ सुणो० ॥ हुं तुम० ॥ ७ ॥ इति
 सान्वय वीरजीन रतवन ॥ १४ ॥ ॥ दाव ॥ ते तरीया रे जाइ ते तरीया ॥ ए
 देशी ॥ इणे अथ स र्षिणीये जिनराथा, सुरनर प्रणमित पाया जी ॥ सेवक जन मनवं-
 दित दाया, निजपद करण पसाया जी ॥ इणे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मातपिता धन्य
 जिदां जिन जाया, धन्यकुल पुर जिदां आया जी ॥ उषन्नदिशि कुमरी हुलराया,
 शची उरंग रमाया जी ॥ इणे० ॥ २ ॥ चोसत इड तणे मन नाया, अपहरण गुण गाया
 जी ॥ लघुवय मेरु शिखर पधराया, तीर्थजदे न्हवराया जी ॥ इणे० ॥ ३ ॥ चुकजोग
 संयम मन दाया, निश्चल मन वच काया जी ॥ परम पुरुष गुण आतम ध्याया, केवले
 सिद्ध सधाया जी ॥ इणे० ॥ ४ ॥ गुरुपसाय जिन आगम पाया, सूत्र अरथ वंचाया जी ॥
 पांच कारण व्यवहार उपाया, जाणी जगत नमाया जी ॥ इणे० ॥ ५ ॥ धन गुरुजी

जिनमर्गं दिखाया, राखी बाहंनी जायाजी ॥ हरित दोहंग छख दूर गमाया, निजपद पाठ
 पढाया जी ॥ इणे ॥ ६ ॥ तास पसार्ये मन उल्लसया, चाव दीप प्रगटाया जी ॥
 उन्मरग तम हरित नसाया, सुक्तिमारग मन धाया जी ॥ इणे ॥ ७ ॥ जिन चोविश
 तणा गुण गाया, उपशम अमृत नाहा जी ॥ गुरु सौभाग्यचद सुपसाया, स्वरूपचंद
 सुखदाया जी ॥ इणे ॥ ८ ॥ कवश ॥ इम ऋष्य जिन धुर वीर जिन वर्णे, चउवीसे
 तिरथंकरा ॥ तस त्रिकि करता ध्यान धरतां, त्रिविध मल नासे परा ॥ सुख संपदाधर
 सुधिर श्ये, जगतजन सुख अनुसरे ॥ सौभाग्यचद्र सुगुरु प्रसादे, स्वरूपचद इम
 उच्चरे ॥ ९ ॥ इति स्वरूपचंद कृत चोवीशी संपूर्ण ॥ ॥ अथ नित्यदात्रजी
 कृत जुदा जुदा रतवन संपह ॥ ॥ अथ प्रथम श्री ऋष्यजिन रतवनं ॥ वंदावनमां
 कान कुमरजी ॥ अथवा ॥ श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ ए देशी ॥ आदिजिनेसर विनति
 अमारी, सांजल महारा स्वामी रे ॥ मरुदेवीना नंदन वाहदा, अरज करुं शिरनामी
 रे ॥ आदि ॥ १ ॥ नात्रि राया कुल हंसदो रे, नयरी विनीतानो राजा रे ॥ वंश
 इक्ष्वाणें शोत्रतो रे, सेवे सुरपति णाका रे ॥ आदि ॥ २ ॥ मूरतिरूप अनोपम
 देवी, जगतें वांध्या प्रेम रे ॥ आसंगा प्रभुजीहुं मांड्या, जलधर चातक जेम रे ॥
 आदि ॥ ३ ॥ प्रभुजीथी अलगा नवी रहीशु, वंजित मानी देहुं रे ॥ जनम मरण
 त्रय दूर निवारी, शिवसुख तादी देहुं रे ॥ आदि ॥ ४ ॥ प्रभुजी विना कोण दाड
 लडावे, जयना ताप शमावी रे ॥ सहेज सुंदर गुरु गुण प्रभुजीना, नित्यदात्र पंक्ति

गावे रे ॥ आदि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ पंदर तिथि पूरी
 थई सुण काया रे, राम हृदयमां राख केनी माया रे ॥ ए देशी ॥ अजित जिणेसर
 सेवीये ॥ सहि मोरी रे ॥ गिरुआ गरीव निवाज ॥ गाडं गुण गोरी रे ॥ त्रुटा सम-
 कित आपये ॥ सहि० ॥ देशे सुगतिनुं राज ॥ गाडं० ॥ १ ॥ सरखा सरखी साहेवडी ॥
 सहि० ॥ वीधां निरमल नीर ॥ गाडं० ॥ केसर तरीय कचोवडी ॥ सहि० ॥ पहेरी
 नवरंगचीर ॥ गाडं० ॥ २ ॥ पूजा करे जिनजी तणी ॥ सहि० ॥ मनमां हरख न
 माय ॥ गाडं० ॥ त्रकेशु त्रगवंतनी ॥ सहि० ॥ वली वली प्रणमे पाय ॥ गाडं० ॥ ३ ॥
 सूर्ति अति रविआमणी ॥ सहि० ॥ रूपे न लहुं पार ॥ गाडं० ॥ प्रेम धरीने साहेवा ॥
 सहि० ॥ अमने पार उतार ॥ गाडं० ॥ ४ ॥ गिरुआ सहेजे गुण करे ॥ सहि० ॥
 देजो वील विवास ॥ गाडं० ॥ नित्यलात्र पंडित विनवे ॥ सहि० ॥ पूरजो मनडानी
 आश ॥ गाडं० ॥ ५ ॥ ॥ इति अजित जिन स्तवनं ॥ ॥ अथ संत्रवजिन स्तवनं ॥
 गोकदीधुं रद्वियामणु ॥ ए देशी ॥ संत्रवनाथ सोहामणा रे, त्रिजुवन नाथक देव ॥
 त्रवियण सेव जो ॥ इंद सरखा जेहनी रे, सेव करे नित्यमेव ॥ त्रवियण० ॥ १ ॥ सूरत
 सुंदर शोत्रती रे, माने महोटा त्रूप ॥ त्रवियण० ॥ नयन कमल दद पांखडी रे, मोहन-
 गारु रूप ॥ त्रवियण० ॥ २ ॥ मीठी वाणी जेहनी रे, वेजा दे जपदेश ॥ त्रवियण० ॥
 सांत्रावतां सुख ऊपजे रे, न रहे डःख वववेश ॥ त्रवियण० ॥ ३ ॥ जिनदरिसणनी
 वावची रे, सुज मन विश्वावीश ॥ त्रवियण० ॥ विश्वावल जेम दाथीड रे. संत्रारे

निश दीश ॥ प्रविशण ॥ ४ ॥ महैर नजर धरी प्रेमशुं रे, देजो अविचलवास ॥
 प्रविशण ॥ नित्यलात्र पंक्ति विनवे रे, सफल करो अरदास ॥ प्रवि ॥ ५ ॥ इति
 संभवजिन रत्नवंतं ॥ अथ संभवजिन रत्नवंतं ॥ मोहन तारा सुखदाने मटके ॥
 मोहन ॥ ए अंकाणी ॥ नयण रसावां न वयण सुखावां, चित्तुं वीधुं चटके ॥ मोहन ॥
 प्रयुजी केशी प्राकि करतां, कर्मनी कस तटके ॥ मोहन ॥ १ ॥ मुज मन लोत्री प्रमर
 तणी परे, जिनगुण कमदें अटके ॥ मोहन ॥ रत्नचितामणि मूकीने राचे, कहो कोण
 काच तणे कटके ॥ मोहन ॥ २ ॥ ए जिन शुणतां क्रोधादिक सहु, आस पासथी पटके ॥
 मोहन ॥ केवलनाणी बहु सुखदानी, कर्मतिकुं दूर पटके ॥ मोहन ॥ ३ ॥ ए जिनने
 जे दिवमां नाणे, तेतो प्रदया प्रटके ॥ मोहन ॥ प्रावत्रकिशुं उलगा करतां, वंठित
 सुखडे सटके ॥ मोहन ॥ ४ ॥ मूरत संभव जिनेश्वर केशी, जोतां हेंहुं हटके ॥
 मोहन ॥ नित्यलात्र कहे ए जिन साचो, गुण गाडं हुं वटके ॥ मोहन ॥ ५ ॥
 इति ॥ अथ अत्रिनंदनजिन रत्नवंतं ॥ अंबा विराजे ठे ॥ ए देशी ॥ अत्रि-
 नंदन जिन राजीया, गुण राजे ठे ॥ महारा प्रयुनी विजग मांहे, ठकुराड राजे ठे ॥
 देव घणा मवी एकटा ॥ गुण ॥ जिनने सेवे अधिक उवांहे ॥ ठकु ॥ १ ॥ समवसरण
 देवं रच्युं ॥ गुण ॥ तिहां वेजा श्रीगवान ॥ ठकु ॥ वेठी वारह परषदा ॥ गुण ॥
 दीये देशना योजन मांहे ॥ ठकु ॥ २ ॥ क्रोध मान माया तजो ॥ गुण ॥ तमे वरजो
 विकथा चार ॥ ठकु ॥ निदा म करजो पारकी ॥ गुण ॥ वली पर हरजो परनार ॥

तकुण्ड ॥ ३ ॥ शीघ्र ज्ञानीपरं पादजो ॥ गुणः ॥ वली देजो अह्नक दान ॥ तकुण्ड ॥
 मुक्तिणां सुख प्राप्तो ॥ गुणः ॥ तमे देशो देवविमान ॥ तकुण्ड ॥ ४ ॥ जीवदया
 दित्तमां धरो ॥ गुणः ॥ जेषी वहिषं सुंदर रूप ॥ तकुण्ड ॥ जक्ति करो जगवंतनी ॥
 गुणः ॥ जेम तरिषं जवजल कूप ॥ तकुण्ड ॥ ५ ॥ मानवजय सफलो थयो ॥ गुणः ॥
 मेकीधो प्रभुशु प्रेम ॥ तकुण्ड ॥ नित्य दान पंडित विनये ॥ गुणः ॥ हुंती पाम्यो शिव-
 सुख एम ॥ तकुण्ड ॥ ६ ॥ इति अत्रिनंदनजिन स्तवनं ॥ ॥ अथ सुमति जिन
 स्तवनं ॥ ॥ सुजने हरि वाहवा ॥ ए देशी ॥ सगत सुमतिनी कीजीये रे, वाधे जग-
 जश वास रे ॥ ओलन करतां एहनी रे, सफल फले सहु आस ॥ १ ॥ जिनना गुण
 रूडा ॥ गुण रूडा रे सुगुण प्रधान, जिनना गुण रूडा ॥ मने वाहवा अभिय समान ॥
 जिनना ॥ ए अंकाणी ॥ नंदन सुमंगला मातनो रे, वदन पूनम चंद रे ॥ त्रिभुवन
 कीर्ति जेहनी रे, गावे चोसठ इंद ॥ जिनः ॥ २ ॥ रूप अनोपम सरति निरखी रे,
 जक्ति करुं मन रंग रे ॥ पूर्व गुण्य पसाजवे में, दाधो प्रभुनो संग ॥ जिनना ॥ ३ ॥
 महेर करी महाराजजी रे, विनतडी अवधार रे ॥ सेवक जाणी आपणो रे, जवजल
 पार उतार ॥ जिनना ॥ ४ ॥ परभाते कवी करी रे, प्रेमं प्रणसुं पाया रे ॥ नित्यदान
 पंडित विनये रे, प्रभुशु दाणी मया ॥ जिनना ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ प्रद्यप्रज
 जिन स्तवनं ॥ ॥ हुंती ने गोरी ज्ञतावली नददाव रे ॥ ए देशी ॥ प्रद्यप्रज ओलं-
 गडी, सुखदाय रे ॥ करशुं आणी नेद के, मनहित थाय रे ॥ रूप अनंतगुण ताहरुं,

सुखदाय रे ॥ रक्तवरण प्रभु देह के, मनहित धाय रे ॥ २ ॥ वाणी प्रभुनी सांजली,
 सुखदाय रे ॥ हैंहुं शीतल धाय के, मनहित धाय रे ॥ परदर्शना वोलडा, सुखदाय
 रे ॥ कहौने केम सोहाय के, मनहित धाय रे ॥ ९ ॥ काच कथीरने कोण प्रहे, सुखदाय
 रे ॥ जेणे कीधा मोती व्यापार के, मनहित धाय रे ॥ खडखावा मन कोण करे, सुख-
 दाय रे ॥ जे पाभ्या अमृतसार के, मनहित धाय रे ॥ ३ ॥ जिनवर केरी चाकरी, सुख-
 दाय रे ॥ करवा जय जयकार के, मनहित धाय रे ॥ अविचल धानक आपजो, सुखदाय रे ॥
 एम कहुं तुं वारोवार के, मनहित धाय रे ॥ ४ ॥ प्रेमनजर सुज ऊपरे, सुखदाय रे ॥
 तमे धरजो गरिव निवाजके, मनहित धाय रे ॥ नित्यदान कहे प्रभु माहरा, सुखदाय
 रे ॥ तमे तक्तवत्सल महाराज के, मनहित धाय रे ॥ ५ ॥ इति प्रह्नप्रभ जिन स्तवनं ॥
 अथ सुपार्थजिन स्तवन ॥ ॥ रातडीआ रमीने किदांशी आविया रे ॥ ९ देशी ॥
 सुज मन तमरो प्रभुगुण क्लवडे रे, रमण करे दिनरात ॥ सुणजो स्वामी सुपास सोहा-
 मणा रे, कर जोडी कहु वात ॥ १ ॥ मनहुं ते चाहेरे प्रभु मववा तणी रे, पण दीशेते
 अंतराय ॥ जीव प्रमादरे कर्म तणे वशे रे, तो किम मलवुं धाय ॥ मनहुं ० ॥ ९ ॥
 लाव चोरशी जीवायोनिमां रे, त्रव अटवी गति चार ॥ काळ अनादि अनंत त्रमतां
 थकां रे, किमहि न आवे पार ॥ मनहुं ० ॥ ३ ॥ मारगवतावोरे साहेव माहरा रे,
 जिम आवुं तुम पाय ॥ लाज वधरोरे सेवक जाणने रे, चो दरिसण जिनराय ॥
 मनहुं ० ॥ ४ ॥ मूरति ताहरी रूपें रूअडी रे, अनुभव पद दातार ॥ नित्यदान प्रभुशुं प्रेम

विनवे रे, तुमथी वहु सुखसार ॥ मनहुं ॥ ५ ॥ ॥ इति सुपार्थ जिन स्तवन ॥
 अथ चंद्रप्रज जिन स्तवन ॥ गुजरी आवी अमारे देश, वारी वारी रे लो महारी
 गुजरी ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रजजीने रे विनवुं, तहारी चाकरीषें मन मोहे ॥ वारी जाडं
 रे लो ॥ महारा जिनजीनी ॥ सूरत मोहन वेवडी ॥ तहारुं रुप अनोपम सोहे ॥
 वारी ॥ महारा ॥ १ ॥ महियवमा जोतां थकां, में दीठा देव अनेक ॥ वारी ॥
 महारा ॥ सुक्तिणां सुख आपवा, प्रभु तुम समो नवी कोए ॥ वारी ॥ महारा ॥ २ ॥
 प्रभु समरथ जाणीने उदगे, प्रभु दावचिया सो वार ॥ वारी ॥ महारा ॥ प्रभु
 प्रेम थयो तुम न्चकिशुं, प्रभु करजो सेवकनी सार ॥ वारी ॥ महारा ॥ ३ ॥ प्रभु
 ज्ञानदशा परगट थइ, मने मलिउ प्रभुनो साथ ॥ वारी ॥ महारा ॥ प्रभु सुख
 संपत्ति आवी मली, मने नूजा श्रीजगनाथ ॥ वारी ॥ महारा ॥ ४ ॥ प्रभु वली वली
 मागुं एटहुं, मने देजो समकित खास ॥ वारी ॥ महारा ॥ नित्यदात्र पंडित जिन-
 तणा, गुण गाये अधिक उदास ॥ वारी ॥ महारा ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ
 सुविधि जिन स्तवनं ॥ ॥ हवे न जाडं महि वेचवारे लो ॥ ए देशी ॥ सुरत सुविधि
 जिणंदनी रे लो, महिमावंत प्रधान ॥ महारा वहालाजीरे ॥ तमने अमारी वंदना रे लो,
 नयण पावन थयां देखतारे लो, गुण अनंत प्रगवान ॥ महारा ॥ तमने ॥ १ ॥ रामा
 राणीना नंदना रे लो, सांजव दीनानाथ ॥ महारा ॥ तमने ॥ प्रेम थरी सेवा करुं रे
 लो, हवे न वोडुं तारो साथ ॥ महारा ॥ तमने ॥ २ ॥ सोना रुपाना फुवनी रे लो,

अंगी वनाहुं सार ॥ महारा० ॥ तमने० ॥ नाच करं प्रभु आर्गाव रे लो, मादलनी
 धमकार ॥ महारा० ॥ तमने० ॥ ३ ॥ अमने णिव सुख आपजोरे लो, शुं कहुं वारो-
 वार ॥ महारा० ॥ तमने० ॥ आतम अनुभव ध्यानशी रे लो, लहीयें वंठित सार ॥ महारा० ॥
 तमने० ॥ ४ ॥ मनना मनोरथ माहरा रे लो, सफल थया सहु आज ॥ महारा० ॥
 तमने० ॥ नित्यलात्र प्रभुपद सेवतारे लो, सीधां ते सधवां काज ॥ महारा० ॥ तमने०
 ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ अथ शीतलजिन स्तवनं ॥ शीतल जिनवर सांजलो रे, गुणनिधि
 गरीव निवाज ॥ देखी दरिसण ताहेरेंरे, सफल थयो दिन आज ॥ शीतल० ॥ १ ॥
 सरत तादरी सोहामणीरे, लाव अमूलक नंग ॥ जाणीयें कटपट्टम सार खी रे, कीधी
 प्रीति अग्रंग ॥ शीतल० ॥ २ ॥ हेजाव नयने करी रे, मलजो मुजने स्वाम ॥ अंतर-
 जामी जो माह रा रे, नव डःख त्रंजण ठाम ॥ शीतल० ॥ ३ ॥ साचो साजन तुं मित्यो रे,
 प्रीति कीधी परमाण ॥ हिचडे त्रीतर तुं वस्यो रे, नवें जाण म जाण ॥ शीतल० ॥ ४ ॥
 थरणी तलमां जोवतां रे, अवर मित्या मुज लाख ॥ पण ते हुं नहिं आदरुं रे, श्रीपरमेश्वर
 साख ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ सीताने मन रामजी रे, राधाने मन कान ॥ नमरो मादति
 झुलडे रे, तिम प्रभुशुं मुज तान ॥ शीतल० ॥ ६ ॥ रोहिणीने मन चंदलो रे, जिम
 मोरा मन मेह ॥ इंद्राणीने मन इंद्रलोरे, तिम प्रभुशुं मुज नेह ॥ शीतल० ॥ ७ ॥
 अमने तमारो ठे आशरो रे, नहि कोइ बीजाशुं वाद ॥ साचो सेवक जाणशो रे, तो
 सवि पूरशो वान ॥ शीतल० ॥ ८ ॥ अचलगवने देहे रे, सुदरा नगर मऊर ॥ महिमा

वंत मया करो रे, त्रवङ्गः ख त्रंजण हार ॥ शीतल ० ॥ ९ ॥ सान्निधकारी जो सद्देवारे,
 प्रणम्यां पातक जाय ॥ सहज सुंदर गुरु रायनो रे, नित्यलात्र प्रभु गुण गाय ॥ शीतल ०
 ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥ ॥ शीतल जिननी सेवा कीर्तन,
 दीजे संपदा सारी रे, इव्य त्रव जिन पूजा करतां, नासे दूरगति त्रारी रे ॥ ११ ॥ संसारी
 प्राणी देव पूजो, देव पूजो हित आणी रे ॥ ए आंकाणी ॥ ज्ञान अन्नंतुं रूप अन्नंतु, शक्ति
 अन्नंती कहीये रे ॥ लोकालोक तणा परकाशी, तेहनी आणज वहीये रे ॥ संसारी ०
 ॥ १ ॥ शक्ति प्रभुनी हैने धरतां, त्रव त्रव पातक दरीये रे ॥ एहवो निश्चे मारा मनमां,
 प्रभु तारे तो तरीये रे ॥ संसारी ० ॥ ३ ॥ करजोडी मद महर मूकी, प्रभुजीने शिर नामूं
 रे ॥ अनुभव पदनी लावच अमने, ते जिनवरधी पामूं रे ॥ संसारी ० ॥ ४ ॥ सेवक
 ऊपर करुणा करजो, वीनतडी चित्त धारी रे ॥ कहे नित्यलात्र प्रभुने प्रणमी, देजो
 सेव तुमारी रे ॥ संसारी ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ अथ शीतलनाथजीनुं स्तवन ॥ ॥ मा-
 हारे शीतल जिनशुं दागी पूरण प्रीत जो, साद्विवजीनी सेवा त्रव डःख त्रंजशे रे
 जो ॥ हारे जिन प्रतिमा जिनवर सरखी दिवमां जोय जो, शक्ति करतां प्रभुजी खूब
 निवाजशे रे जो ॥ १ ॥ जेणे जोतां दाधो रत्नचिंतामणि हाथ जो, तेहने रे मूकीने
 कुण ग्रह काचने रे जो ॥ जेणे मनशुं कीधां जूतानां पञ्चखाण जो, ते नर बोले सो
 वाते पण साचने रे जो ॥ २ ॥ जेपाम्या परिभाव प्रीते अष्टतपान जो, खारुं जल ते पीवा
 कहे कुण मन करे रे जो ॥ जे धरमां वेतां पाम्या लखमी जोर जो, धनने काजे देश

देशांतर कोण फरे रे जो ॥ ३ ॥ जेणें सेव्या पूरण चित्तें अरिदंत देव जो, तेहना
 रे मनमाहे केम बीजा गमे रे जो ॥ ४ ॥ ए तो दोष रहित निकलंकी गुण संभार जो,
 मनभुरे अमारुं प्रभु साथें रमे रे जो ॥ ४ ॥ सुने मलिया पूरण चाग्यें शीतल नाथ जो,
 देखीनें हूं हरख्यो तन मन रंजियो रे जो ॥ एतो दीवलतदायी प्रभुजीनो देदार जो, में तो
 जोतां प्रभुने कर्मदल गंजीयो रे जो ॥ ५ ॥ श्रीविधिपद्व देहरे सुंदरा नयर मकार जो,
 आंगीरे नवरंगी शिखर सोहामणी रे जो ॥ एतो तेजें दीपे जगमग ज्योति विशाल
 जो, सोहें रे मनमोहे मूर्ति रदियामणी रे जो ॥ ६ ॥ श्रीसत्तर एकाशीयें रुडो चाडव
 मास जो, रतवन रच्युं ए प्रेसें पर्व पजूसणे रे जो ॥ श्रीसहज सुंदर शिव्य बोले एणी
 परें वाणी जो, चावें रे नित्य दात्र कहे हरखे घणे रे जो ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ
 श्रेयांस जिन स्तवनं ॥ तुं कयां गइती आज्ञा, रमया रजनी जी रे ॥ ए देशी ॥ श्रेयांस
 जिनसर देव, नयणे निरख्या रे, सुज पातिरु नावां हेव, मनमां हरख्या रे ॥ में कीधो
 प्रभुतो संग, रूप निहावी रे ॥ हुंतो राखुं जिनशुं रंग, समकित अजूवावी रे ॥ १ ॥
 प्रभुजी ठे आतमराम, प्रवडल टावी रे ॥ सुज पूरे वंठित काम, शिव सुख आवी रे ॥
 जेहने सेवे चोसठ इंद, वे कर जोमी रे ॥ मन पास परमानंद, कर्मने त्रीडी रे ॥ २ ॥
 मने महेर करी महाराज, त्रय सहु नावा रे ॥ सुज दूर गयां सवि आज्ञा, कर्मज मावां
 रे ॥ नदीं कोइ जिनिया माहे, देवज एयो रे ॥ नित्य दात्र कहे जहादें, त्रविघण सेवो
 रे ॥ ३ ॥ ॥ इति श्रेयांस जिन स्तवनं ॥ ॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥ नदीं

जाड रे जसुना नीर, इण इण वाटभीरें ॥ ए देशी ॥ श्री वासु पूज्य जिनराज, मनना मोहनीया ॥ प्रभु अमने खूब निवाज, जगना जीवनीया ॥ प्रभु चंपानयरीना राय, मुज मनसा वसीया ॥ तोरा सेवे सुर नर पाय, सुख जोई हसीया ॥ १ ॥ मीठि मूर्ति अति सुखकार, नामे रंग रदिया ॥ प्रभु जीवन प्राण आधार, मनोरथ सवि फदिया ॥ प्रभु ज्या देवीना नंद, पूरण गुणजरिया ॥ जे सेवे पद अरविंद, ते प्रवजल तरिया ॥ २ ॥ तमें कुंवरपणे महाराज, संयम श्री वरिया ॥ तमे तारण तरण जिहाज, अविचल पद धरिया ॥ तुम रूप देखी शिरताज, पातिक सहु खरियां ॥ तमे पावन कीधा आज, महारा सवि परिया ॥ ३ ॥ तमे प्रक्त वत्सल जगवान, करुणा रस जरिया ॥ मुज देजो अविचल धान, सेवक सुख करियां ॥ मुज आज जेई सुविहाण, नयणां मुज तरियां ॥ नित्य दात्र कहे परणाम, प्रभुधी जय वरिया ॥ ४ ॥ ॥ इति वासुपूज्यजिन स्तवनं ॥ ॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥ ॥ शीतल जिनवर साहेवा रे ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य जिन साहेवा रे, सुण महारी अरदास ॥ तुम दरशनने देखवा रे, मुज मनहुं धरे आस ॥ वासु ॥ १ ॥ मदीपलमाहे जोतां थकां रे, दीजा देव अनेक ॥ हरि हर ब्रह्मा सारखा रे, तुम सम नावे एक ॥ वासु ॥ २ ॥ तमे जो त्रिभुवन राजवी रे, तमे जो देवना देव ॥ लोकोत्तर गणशुं जर्या रे, देव करे तुम सेव ॥ वासु ॥ ३ ॥ जनम पूरी चंपा जली रे, वसुपूज्य कुल अवतंस ॥ ज्या जयरे हंसलो रे, मूरत मोहनवंस ॥ वासु ॥ ४ ॥ सत्तर धनुष सोहामणी रे, रक्तोत्पल दल

काय ॥ महिष लंवन चरणांबुजें रे, वहैतेर वाख वरसनुं आय ॥ वासु ॥ ५ ॥
 कुंवरपणे प्रभुजी तमे रे, दीक्षा वीधी मुजाण ॥ आठे कर्म खपावियां रे, पान्या केवल
 नाण ॥ वासु ॥ ६ ॥ क्रोधादिक प्रभुमां नहिं रे, नहि वली विकथा चार ॥ सातें त्रय
 दूरे कर्था रे, करतां पर जप कार ॥ वासु ॥ ७ ॥ चउविह धर्म प्रकाशता रे, चोत्रीश
 अतिशय धार ॥ तीर्थकर श्री वारमा रे, जगगुरु जग आधार ॥ वासु ॥ ८ ॥ त्रव-
 त्रवना फेरा टव्या रे, दीठा श्री जिनराज ॥ वंजित दीजें साहेवा रे, तुं वो गरीब नि
 वाज ॥ वासु ॥ ९ ॥ कवदेश गुणमणिनीवो रे, रूडुं नाम अंजार ॥ तिहां जिनवर
 प्रासाद वे रे, महिमावंत उदार ॥ वासु ॥ १० ॥ श्रावक सहु वसे चाविया रे, जिन-
 धर्मी सुख कार ॥ त्रकि करे त्रगवंतनी रे, धरता दर्ष अपार ॥ वासु ॥ ११ ॥ आंगी
 रची रजियामणी रे, ऊग मग ज्योति विशाख ॥ सारंग मादल वाजता रे, गावे गीत
 रसाल ॥ वासु ॥ १२ ॥ पूजता जिनवर चावशु रे, लहियें शिवसुख सार ॥ सत्तर
 उर्दोतेर थापना रे, वदि तेरस गुरुवार ॥ वासु ॥ १३ ॥ अचल गहपति जाणियें रे,
 विद्यासागर सूरिराय ॥ वाचक सहज सुंदर तणो रे, नित्यदान प्रभुगुण गाय ॥ वासु ॥
 ॥ १४ ॥ ॥ इति श्री वासुपूज्य स्तवनं संपूर्णं ॥ ॥ अथ विमल जिन स्तवन ॥
 सांनल सजनी ॥ ए देशी ॥ विमलजिनेसर साहेवा जी, अरज सुणो एक मोरी जी ॥
 ॥ सुख संपत आबी मली जी, करतां सेवा तोरी ॥ सांनल वीनति ॥ १ ॥ करमतणे
 वल चारेगतिमां, त्रन्यो अनंती वार जी ॥ ए संसार असारमां प्रभु, तुमविण कोण

आधार ॥ सांजल वीनति ॥ २ ॥ प्राग्य अमारुं जागीडं जी, प्रयुने पादव वलगया
जी ॥ मुख देखी प्रयुजी तणुने, पातिक कीधां अलगां ॥ सांजल वीनति ॥ ३ ॥ वाहिर
घटमां पथ घणा वे, ते मुज दिवमां नावे जी ॥ साचो मारग तुं प्रयुजी, अमने तुरत
वतावे ॥ सांजल वीनति ॥ ४ ॥ तुं जसरूपी तुं निकवंकी, अविचल दीवविदासी जी ॥
नित्यलात्र प्रयुशुं प्रेम धरंता, कुमति गइ सहु नासी ॥ सांजल वीनति ॥ ५ ॥ इति ॥
अथ अनंत जिन स्तवनं ॥ ॥ मने अंबाजी ते वदावा जो ॥ ए देशी ॥ श्री अनंत-
जिनेसर सोहंता जो, जवियणनां मन मोहंता जो ॥ अकल अरूपी अनंता जो, इान
गुणे जयवंता जो ॥ १ ॥ चोसठ इंड सेवा करे जो, समकेतनी शुधता धरे जो ॥ नयणे
अमीरस सांचरी जो, डःखदोहण दूरे दारि जो ॥ २ ॥ एहवा जिनवर मलिया जो,
दहाडा अमारा वलीया जो ॥ मन वंछित सहु फलीयां जो, दोखी डरमन टलीया जो
॥ ३ ॥ मुजसानंदन वाहावा जो, जिव दया प्रतिपादा जो ॥ प्रयुनां वयण रसावा जो,
सेवक करो सुखावा जो ॥ ४ ॥ हुंहुं प्रयुनोरणी जो, प्राग्यदशा मुज जागी जो ॥ वीनति
करं पय लागी जो, शिव मुख देखुं मागी जो ॥ ५ ॥ नित्यलात्र कहें शिरनामी जो, अमसां शी
वे स्वामी जो ॥ दीव न करीये स्वामी जो, दीजें अविचल धामी जो ॥ ६ ॥ ॥ इति
अथ शांतिजिन स्तवन ॥ शांतिजीनुं मुखहुं जोवा जणी जी, मुज मनहुं रे लोत्राय ॥
चितहुं जाणे रे उडी महुं जी, पण प्रयु किम रे मलाय ॥ शांति ० ॥ १ ॥ देव न दीधी
मुजने पांखडी जी, आबु हुं किम रे हजर ॥ पण प्रयु जाणजो वंदना जी, आतमराम

सनुर ॥ श्रांति० ॥ ९ ॥ गजपुरी नगरीनो राजीयो जी, अचिरा देवी नंदन एह ॥ जिनरे
 पारेवहुं राखीयुं जी, तिम प्रभु राखजो नेह ॥ श्रांति० ॥ ३ ॥ मस्तकें मुकुट सोहामणो
 जी, कानें कुंभल श्रीकर ॥ बाहे बाजूबंध वेरखा जी, कंठडे नवसरो द्वार ॥ श्रांति०
 ॥ ४ ॥ आज जले रे दिन जगियो जी, दूधडे वृढडा मेह ॥ वाचक सहज सुंदर तणो
 जी, नित्य ज्ञान प्रभु गुण गेह ॥ श्रांति० ॥ ५ ॥ ॥ इति श्रांति जिन स्तवन संपूर्ण ॥
 ॥ ॥ अथ कुंभुजिन स्तवनं ॥ ॥ सुखने मरकटडे ॥ ए देशी ॥ कुंभुनाथतणी
 वलीद्वारी जी, जाडं जिन नामणे ॥ एम बोले अमर नी नारी जी, जाडं ॥ जिन
 पूजवा चालो जइयें जी ॥ जाडं ॥ जेम आपणे पावन थइयें जी ॥ जाडं ॥
 ॥ २ ॥ प्रभुमूर्ति मोहनगारी जी ॥ जाडं ॥ जवियणने बहु हितकारी जी ॥ जाडं ॥
 रुपें मोहा सुर नर नरूप जी ॥ जाडं ॥ प्रभुनी ज्योति अनूपजी ॥ जाडं ॥ १ ॥ प्रभु
 समवसरण मन मोहे जी ॥ जाडं ॥ बार गुणो अशोक टुक सोहे जी ॥ जाडं ॥
 फलदष्टि दींचण समी गजे जी ॥ जाडं ॥ बाणी मधुर ध्वनी गजे जी ॥ जाडं ॥
 ॥ ३ ॥ सुर चामर वीजे चोंपें जी ॥ जाडं ॥ मणिमय सिंहासन उंचे जी ॥ जाडं ॥
 नामंढल तेजे राजे जी ॥ जाडं ॥ देव डंडजि गगने गजे जी ॥ जाडं ॥ ४ ॥
 शिरवत्र अनोपम जाणुं जी ॥ जाडं ॥ गुण अनंत प्रभुना वखाणुं जी ॥ जाडं ॥
 नित्यज्ञान एणी परे बोले जी ॥ जाडं ॥ नदीं कोइ जिनवरने तोले जी ॥ जाडं ॥ ५ ॥
 इति ॥ ॥ अथ कुंभुनाथस्य द्वितीय स्तवनं ॥ केसर वरणो हो, काढ कसुंबो महारा

लाव ॥ ए देशी ॥ कुंशु जिननी हो, सेवा मागु माहारा लाव ॥ विनय करीनें हो, पाये
 लागु महारा लाव ॥ जगजीवन जिनजी हो, इण त्रय दीवा महारा लाव ॥ साकर
 दूधधी हो, लागे मीठा महारा लाव ॥ १ ॥ समोसरण वेजा हो, प्रभुजी दीपे महारा लाव ॥
 शमतारसशु हो, जगने जीपे महारा लाव ॥ देवडंडनि रूनी हो, गगनें वाजे महारा
 लाव ॥ वलि तिहां क्णि जाणुं हो, नामंभल राजे महारा लाव ॥ २ ॥ चारे दिशि
 देवता हो, चाभर दावे महारा लाव ॥ त्रवना फेरा हो, प्रभुजी टावे महारा लाव ॥
 जिनजीनुं दर्शन हो, मोहन गारुं महारा लाव ॥ पद एक दिवधी हो, हुं न विसारुं
 महारा लाव ॥ ३ ॥ सेवक जपर हो, महेर धरीजे महारा लाव ॥ सुखदां दीजे हो,
 ताप हरीजे महारा लाव ॥ नित्यदात्र प्रणमी हो, एम परंपे महारा लाव, प्रभुजीनें
 समरें हो, पातक कंपे महारा लाव ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ नमिजिन स्तवनं ॥
 गरवो केषे रे कोराव्यो के, नंदजीना लाव रे ॥ ए देशी ॥ नमिनाथ जिणोसर वंदो के,
 दिवसां आणी रे ॥ एतो विप्रा राणी नंदो के, गुणमणि खाणी रे ॥ एतो विजय
 त्पति कुलचंदो के, दिवसां आणी रे ॥ एहनें दीठे परमानंदो के, गुणमणि खाणी रे
 ॥ १ ॥ एतो सोवन वर्ण सोदाया के, दिवसां आणी रे ॥ एणे भेदी ससारनी माया
 के, गुणमणि खाणी रे ॥ एतो वितरग नाम कह्याया के, दिवसां आणी रे ॥ एतो
 सुक्ति मंदिरमां गवाया के, गुणमणि खाणी रे ॥ २ ॥ हुंतो त्रक्ति करुं त्रवे त्रार्वे के,
 दिवसां आणी रे ॥ जेम जन्म मरण त्रय त्रवे के, गुणमणि खाणी रे ॥ धरे मंगल

माता आवे के, दिवसां आणी रे ॥ सुज मनहुं आनंद पावे के, गुणमणि खाणी रे ॥ ३ ॥
 प्रभु मूर्तिं सुजने प्यारी के, दिवसां आणी रे ॥ प्रविषणने मोहन गारी के, गुणमणि
 खाणी रे ॥ गुण गावे सुर नर नारी के, दिवसां आणी रे ॥ प्रभु आपे संपत्ति सारी के,
 गुणमणि खाणी रे ॥ ४ ॥ प्रभु तमे हुं सेवक तारो के, दिवसां आणी रे ॥ सुज
 आवा गमण निवारो के, गुणमणि खाणी रे ॥ सुज विनतडी अवधारो के, दिवसां
 आणी रे ॥ नित्य दात्र ठे दास तुमारो के, गुणमणि खाणी रे ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥
 अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ॥ रायजी अमे तो हिंड्याणी के, राज गराशीया रे लो ॥
 ए देशी ॥ जिनजी गोडी मंडण पास के, विनती सांजलो रे लो ॥ जिनजी अरज करुं
 सुविलास के, मूक्री आमलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीवडो टल वले
 रे लो ॥ जिनजी महैर करी महाराज के, आया सवि फले रे लो ॥ २ ॥ जिनजी मन
 जमरो ललचाय के, प्रभुनी जलगे रे लो ॥ जिनजी जेम तेम मेलो आय के, ते करजो
 वगे रे लो ॥ जिनजी दूरथका पण नेह के, साचो मानजो रे लो ॥ जिनजी तुमथी लहुं
 गुणगेह के, अमृत पानजो रे लो ॥ ३ ॥ जिनजी प्रभुशु बांध्यो प्रेम के, ते केम विसरे
 रे लो ॥ जिनजी बीजे जावा नियम के, प्रभुथी दिव ठरे रे लो ॥ जिनजी जोतां ताहारुं
 रूप के, अनुभव सांजरे रे लो ॥ जिनजी ताहरी ज्योति अनूप के, चित्ता छःख वरे
 रे लो ॥ ३ ॥ जिनजी एतु प्रोजन खाय के, मिठाईनी दावचें रे लो ॥ जिनजी आतमने
 हित आय के, प्रभुना गुण रुचे रे लो ॥ जिनजी कर्म तणां बल जोर के, तेहथी तारियें

रे वी ॥ जिनजी समकितना जे चोर के, तेहने वारिये रे वी ॥ ४ ॥ जिनजी निज सेवक
 जाणने, मुक्ति वतावीये रे वी ॥ जिनजी करुणारस आणने, मनमां तावीये रे वी ॥
 जिनजी वाचक सहज सुंदरनो, सेवक झम कहे रे वी ॥ जिनजी पंडित श्री नित्यदान
 के, प्रभुथी सुख वहे रे वी ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पार्थजिन स्तवनं ॥ सुगुण
 सोनागी रे के सहिव माहेरा, श्रीचितामणि पात्रा ॥ पूख पुण्ये रे के दरिसेण देखीये,
 पूनी मारा मनडानी आशा ॥ हुं वविहारी रे के जाजं तारा नामनी ॥ २ ॥ काशी देशे
 रे के नगरी वाणारसी, अश्वसेन राया कुवचंद ॥ माता वामा रे के प्रभुजीने जनमीया,
 दीवडे परमानंद ॥ हुं ॥ १ ॥ मूरत मूरत रे के निरखीने हरखीये, सांजल मोरा स्वाम ॥
 वान वधारण रे के जगमां सुरतरु, तुं मुज आतम राम ॥ हुं ॥ ३ ॥ दाव सुरंगी रे
 के अंगी शोभती, सोहे सोहे प्रभुजीने अंग ॥ शिखर वनावुं रे के सुंदर कोरणी, दिसे
 दिसे नव नवा रंग ॥ हुं ॥ ४ ॥ शिरपर सोहे रे के मुकुट जडावनी, काने कुंडल
 श्रीकार ॥ केडे कंदोरो रे के बाहे वेरवा, कंठडे नवसरो हार ॥ हुं ॥ ५ ॥ विधिपद्म
 देहे रे के मूल नायक प्रभु, जुज मडल जिनराज ॥ ज्ञाविक श्रावक रे के नावे जावना,
 साहेव गरीब निवाज ॥ हुं ॥ ६ ॥ कोइ कुमति आ रे के प्रभुने माने नहि, ते रडवदर्श
 संसार ॥ नव दंडकमाहे रे के गति ठे तेहने, नहि वीये जवनो पार ॥ हुं ॥ ७ ॥ स्रज
 सिंधते रे के जिनप्रतिमा कही, जिन सरखी निरधार ॥ पूजा प्रणामो रे के जवियण
 प्रावधुं, जिम पामो शिव सुख सार ॥ हुं ॥ ८ ॥ संवत सत्तर रे के वरस चौराणुं,

रूढा रूढा प्राद्वय मास ॥ स्तवना क्रीधी रे के परव पंजूसणे, नित्यदान प्रयुजीनो दास
 ॥ हुं० ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ पास जिणंद सदाशिव गामी,
 वादाजी अंतर जामी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ मूरत ताहारी मोहनगारी, त्रिवि-
 णने हित कारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥ वामा रे नंदन सांत्रलो स्वामी, अरज करुं शिर नामी
 रे ॥ ज० ॥ देव घणा में तो नयणे रे दीठा, तुमें घणुं लागो वो मीठा रे ॥ ज० ॥ २ ॥
 में तो मनमां तुंहीज ध्यायो, रत्न चिंतामणि पायो रे ॥ ज० ॥ रात दिवस मुक मनमांहि
 वसियो, हुं हुं तुम गुण रसियो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मेहेर करीने साहिवा नजरे निहालो,
 तमे वो परम कृपालो रे ॥ ज० ॥ गोडी रे गाममां तुंहिज सोहिये, सुर नरनां मन मो-
 हिये रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ वे कर जोडीने प्रयु पायें दागु, नित नित दरिशाण मागुं रे ॥
 ज० ॥ देव नहि कोय ताहारी तोले, नित्य दान एणि परें बोले रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ ॥
 इति ॥ ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥ प्रगाथ्या ते पूरण अविनाशी, जीरे काम क्रोध सर्वे
 गया नासी ॥ सुख दायकना वो स्वामी, जीरे पद पद रूपी प्रयु अंतरजामी ॥ १ ॥
 कलदेश पश्चिम धाम, जीरे पावन कीधां ठे सुखरी गाम ॥ धन धन प्राण्य उदय कीधां,
 जीरे पार्श्व प्रयुजीयें दर्शन दीधां ॥ २ ॥ घटकल्लोव प्रयु परताधारी, जीरे देरुं चणाठयुं
 अति प्रारी ॥ देश परदेशना संघ अावे, जीरे पूजा रचावे प्रयुजीनी प्रावें ॥ ३ ॥ अांगी
 रचावे जर धरी मादा, जीरे रत्न करे ठे रूडा कणकारा ॥ मुकुट कुंभल शिर उत्रधारी,
 जीरे चंडकला शुभ दष्टि तारी ॥ ४ ॥ प्रावी प्रावनाने प्रयु पूजो, जीरे नाथ विना देव

नदी दूजो ॥ प्रभु पूजेथी नवजल तरियें, जीरे नाम देतां नव तिथि वरियें ॥ ५ ॥ अ-
 दार उद्याथी चैतर मास, जीरे पूनमें प्रभुजी पूज्या पास ॥ प्रेमचंद गुरु ज्ञानी जार्वे, जीरे
 धृतकद्वोवजीना गुण गावे ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ सद्गुरुने
 चरणे नमी, गायशुं गोडी राय ॥ माहारा वावा ॥ एकद मद्ध यदरो धणी, देखंतां सुख
 धाय ॥ माहारा० ॥ १ ॥ वामाजीनो कुंवर लाडलो, जोवा सुक मन धाय ॥ मा० ॥ ए
 अंकणी ॥ देव धणा धरणी तवे, ते दीजा न सुहाय ॥ मा० वा० ॥ १ ॥ अखीयां प्यासी
 थइ रही, देखण प्रभु सुख लाव ॥ मा० ॥ अंतरजामी माहेर, मेहेर नजरशुं निहाव ॥
 मा० वा० ॥ ३ ॥ यात्रा करणी दींषा वे, बहु दिननी मनमाहे ॥ मा० ॥ हुकम करो
 प्रभुजी हवे, आहुं धरिय जडाहे ॥ मा० वा० ॥ ४ ॥ दूर देशांतर जइ रहा, तेनां द-
 रियाण सरज्या थाय ॥ मा० ॥ आस विबुधा मानवी, रात दिवस गुण गाय ॥ मा० वा०
 ॥ ५ ॥ समरथ साहिवजी हवे, उंजग कीजें तास ॥ मा० ॥ प्रापति होय तो पामीयें,
 ज्ञान्य फदे सुविदास ॥ मा० वा० ॥ ६ ॥ तुम विण कही कोण साजवे, सेवकनी अर
 दास ॥ मा० ॥ जाणुं तुं सदी आपशो, मनवातित सुख वास ॥ मा० वा० ॥ ७ ॥ कूडा
 कदियुगमां प्रभु, परता पूरण हार ॥ मा० ॥ मारगमां सातिध करो, आप थई अस-
 वार ॥ मा० वा० ॥ ८ ॥ नकिना रंग अनेक ठे, साहिव सुगुण सुजाण ॥ मा० ॥ मन-
 मोहन जगजी वना, प्रभुजी सुक महिराण ॥ मा० वा० ॥ ९ ॥ प्रत्यह गोडी पासजी,
 अरिदव नजण हार ॥ मा० ॥ वाचक सहज सुंदर तणो, नित दात्र जय कार ॥ मा०

वा० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन कळी प्राषामां ॥ सुघड पास प्रभु
 रे दरिसण वेवढोनी दिज्ज ॥ दरिसण तोजो दाख टकनजो, दाख टकनजो दाख टक-
 नजो रे, कामणगारा तोजा नेण ॥ सु० ॥ सांही असांजो तुं अंइयें तुं अंइयें तुं अं-
 इयें रे, मिठडा लगोता तोजा वेण ॥ सु० द० ॥ १ ॥ अंवाथकी असीं आविया आविया
 आविया रे, सफव जनम थयो अज्ज ॥ सु० द० ॥ मेहेर कज जजी सुंमथे सुंमथे सुं-
 मथे रे, वाहे अहेजी वज्ज ॥ सु० द० ॥ २ ॥ दिव लगो मुंजो तोमथे तोमथे तोमथे
 रे, थे जसे वेथो कीद ॥ सु० द० ॥ सजोदी तोके सत्रारीयां सत्रारीयां सत्रारीयां रे, मीद
 चापीयडा जीद ॥ सु० द० ॥ ३ ॥ जगमे देव द्वाजजा द्वाजजा द्वाजजा रे, तेंमें तुं
 वसो पीर ॥ सु० द० ॥ असीं वामाजीजे नंदके नंदके नंदके रे, दरिसणें थेयासुं खलीखीर ॥
 सु० द० ॥ ४ ॥ धोरजी वजा तोजे नामथा नामथा नामथा रे, सुगतीजो दातार ॥ सु०
 द० ॥ अरजो ठाकुर जेटेयो जेटेयो जेटेयो रे, नित्य दात्रजो आथार ॥ सु० द० ॥ ५ ॥
 इति ॥ ॥ अथ पार्श्वनाथ स्तवन ॥ कळी प्राषामां ॥ अमां अंजं नेदडो कंधी, गोडीचे
 पुर वेथी ॥ केसरजो धोर धोरींधी, विंकि अंजं पूजा कंधी ॥ इन वामाजीजो नीणरो
 एडो, वेथो नाए जुणमें तेथो ॥ अमां ॥ १ ॥ सरण मरत पातालजा मारु, जळा सेवी
 पाय ॥ कामणगारो पासजी आयव, मुठे दिवमें चाय ॥ अमां ॥ २ ॥ सर्पिं सर्पा जरे
 वरंधा, दिनो जे नवकार ॥ पासजीजो नावो गिनी डुआ, इंड इंजाणी सार ॥ अमां ॥
 ३ ॥ वेआ देव दिठा जळा, देव न केडे कम्म ॥ तुं निरगनी गति निवारण, अवे

नही दूजो ॥ प्रभु पूजेथी नवजल तरियें, जीरे नाम लेतां नव निधि वरियें ॥ ५ ॥ अ-
 हार द्याथी चैतर मास, जीरे पूनमें प्रभुजी पूज्या पास ॥ भ्रमचंद गुरु ज्ञानी नावें, जीरे
 धृतकल्लोवजीना गुण गावें ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ सद्गुरुने
 चरणे नमी, गायशुं गोडी राय ॥ माहारा बाळा ॥ एकल मद्ध धवरी धणी, देखतां सुख
 थाय ॥ माहारा० ॥ १ ॥ वामाजीनो कुंवर वाडवो, जोवा सुक मन थाय ॥ मा० ॥ ए
 अंकाणी ॥ देव धणा धरणी तवें, ते दीवा न सुहाय ॥ मा० वा० ॥ २ ॥ अखीया प्यासी
 थइ रही, देखण प्रभु सुख लाव ॥ मा० ॥ अंतरजामी माहेरा, मेहेर नजरशुं निहाव ॥
 मा० वा० ॥ ३ ॥ यात्रा करणी वेंशे वे, बहु दिननी मनमाहे ॥ मा० ॥ हुकम करो
 प्रभुजी हवे, आवुं धरिय उवाहे ॥ मा० वा० ॥ ४ ॥ दूर देशातर जइ रहा, तेना द-
 रिशाण सरज्या थाय ॥ मा० ॥ आस विदुशा मानवी, रात दिवस गुण गाय ॥ मा० वा०
 ॥ ५ ॥ समरथ साहिवजी हवे, जंलग कीजें तास ॥ मा० ॥ प्रापति होय तो पामीधें,
 नाग्य फवे सुविदास ॥ मा० वा० ॥ ६ ॥ तुम विण कशो कोण साजवें, सेवकनी अर
 दास ॥ मा० ॥ जाणुं तुं सही आपशो, मनवावित सुख वास ॥ मा० वा० ॥ ७ ॥ कूडा
 कलियुगमां प्रभु परता पूरण हार ॥ मा० ॥ मारगमा सानिध करो, आप थई अस-
 वार ॥ मा० वा० ॥ ८ ॥ अकिना रंग अनेक वे, साहिव सुगुण सुजाण ॥ मा० ॥ मन-
 मोहन जगजी वना, प्रभुजी सुक महिराण ॥ मा० वा० ॥ ९ ॥ प्रत्यक्ष गोडी पासजी,
 अरिद्वज नजण हार ॥ मा० ॥ वाचक सहज सुंदर तणो, नित वाच जय कार ॥ मा०

वा० ॥ २० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन कवी प्राषामां ॥ सुषड पास प्रभु
 रे दरिसण वेवडोनी दिजा ॥ दरिसण तोजो लाख टकनजो, लाख टकनजो लाख टक-
 नजो रे, कामणगारा तोजा नेण ॥ सु० ॥ सांही असांजो तुं अंइयें तुं अंइयें तुं अं-
 इयें रे, मिठडा लगता तोजा वेण ॥ सु० द० ॥ १ ॥ अंधाथकी असीं आविया आविया
 आविया रे, सफल जनम थयो अजा ॥ सु० द० ॥ मेहेर कज जजी सुंमथे सुंमथे सुं-
 मथे रे, बाहे ग्रहेजी वजा ॥ सु० द० ॥ ९ ॥ दिव लगो मुंजो तोमथे तोमथे तोमथे
 रे, थे जसे वेथो कींद ॥ सु० द० ॥ सजोदी तोके संनारीयां संनारीयां संनारीयां रे, मींद
 चापीयडा जींद ॥ सु० द० ॥ ३ ॥ जगमे देव द्वाजजा द्वाजजा द्वाजजा रे, तेंमें तुं
 वगो पीर ॥ सु० द० ॥ असीं वामाजीजे नंदके नंदके नंदके रे, दरिसणें थैयासुं खवीखीर ॥
 सु० द० ॥ ४ ॥ घोरजी वंज तोजे नामथा नामथा नामथा रे, सुगतीजो दातार ॥ सु०
 द० ॥ शरजो ठाकुर जेटेयो जेटेयो जेटेयो रे, नित्य दाजजो आधार ॥ सु० द० ॥ ५ ॥
 इति ॥ ॥ अथ पार्श्वनाथ स्तवन ॥ कवी प्राषामां ॥ अमां अांडं नेदडो कंधी, गोडीचे
 परे वेंधी ॥ केसरजो घोर घोरोंधी, किंकि आांडं पूजा कंधी ॥ इन वामाजीजो नीगरो
 एडो, वेयो नाए जुगमें तेनो ॥ अमां ॥ १ ॥ सरग भरत पातालजा मानु, जजा सेवी
 पाय ॥ कामणगारो पासजी आयल, मुके दिलमें प्राय ॥ अमां ॥ ९ ॥ सर्पि सर्पा जेरे
 वरधा, दिनो जे नवकार ॥ पासजीजो नावो गिनी हुआ, इंद इंडाणी सार ॥ अमां ॥
 ३ ॥ वेआ देव दिवा जजा, देव न केडे करम ॥ तुं निरागी गति निवारण, अवे

कर्मजो दम्भ ॥ अमा० ॥ ४ ॥ जेडां विजा तेडां द्मके जजिया, जगमे वडो पीर ॥ जे
 दर्बजो सांमी मट्यो, खीझी हुआ खीर ॥ अमां० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री वि-
 यासागर सूरि स्तवन ॥ दाव कडखानी ॥ वंदो वीरवर धीरधर सूरि विद्यासुगुरु, स्वव
 विधि पद्म गडपति गाजे ॥ अमल जलगंग सम धरन ठगीश गुन, व्यक्तता प्रकट
 सुरगुरु दिवाजे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ अमृतपाथो धिगुन सूरि सूरी सरू, पड तस पूर्वकृत
 पुण्य आयो ॥ वाणि जस सुनत तव र्म नागे निकट, विकट यत्रावास नूयलोक तायो ॥
 ॥ वंदो० ॥ २ ॥ झणुक समवाधि घट्टपट्ट त्रावादि बहु, सप्त नय तल नव त्रेद जाणे ॥
 लक्ष उपदेश सुपरिह अनुमान द्युत, सरस वाखाण नव रस वखाणे ॥ वंदो० ॥ ३ ॥
 प्रवल पर ताप प्रोथोत महिमंभवे, सकल साधो शिरे अधिक राजे ॥ कुमति पारखंड सब
 दूर नासे निपट, देखि मार्तण्ड जिम दुखड राजे ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ शा करमसिंह कुर्वे
 त्रिदशपति सारिखो, मात कमला तणु सुजस दीपे ॥ विबुधवर ठत्रधर नमति जाके
 सदा, अनड चड कठिन कंदर्प जीपे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ त्रविक नर नारि अतित्राव त्रावे
 करी, वांदतां चित्त आमोद पावे ॥ कहत नितदात्र कर जोर गुरु नाम दे, सिद्धिनव निधि
 सब सिद्धि आवे ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ इति विद्यासागर सूरि स्तवनं समाप्तम् ॥ अथ द्यूत-
 कद्योत्र पार्श्वजिन स्तवनं ॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें त्रोगी ॥ पास जिने-
 सर अति अववेसर, संसार सुखना त्यागी ॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें
 त्रोगी ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ वंदित पूरण चिता चूरण, मन शुद्ध समरे त्रोगी ॥ राग

द्वेष टाढी कर्मने गाढी, झिव पंथे थया योगी ॥ द्दो० ॥ १ ॥ नविजन नावें यात्रा आवें,
 प्रणमे लढी पाय लागी ॥ नवि पर मेहेरें करुणा वेहेरें, नाथ दशा जस जागी ॥ द्दो०
 ॥ ३ ॥ सुथरी गामें वसे शुभ ठामें, तस चरणानुज रागी ॥ मेघलात्र कहे प्रभु धृत
 कळोवजीने, नामें नव निधि जागी ॥ द्दो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ धृतकळोव पार्श्व-
 जिन स्तवनं ॥ ॥ धृतकळोव प्रभु पास जिणंद, अथसेन रायाकुल उपना दिणंद ॥
 मोरा पासजी दो लाव, प्रभुसुख देखी माहारो मन हीसे राज ॥ ए आंकणी ॥ माता वामा
 देवि जायो पुत्र रतन, जेणे नाग नागणीनां कीधां ठे जतन ॥ मोरा० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
 कमज्जोमद गाढ्यो वाळे कीधां रूडां काज, कदि कावमाहे जेनो परतो ठे आज ॥
 मोरा० ॥ मारण नलाने वाढो आपे ठे साद, वढी आपे संपदाने टाळे विष वाद ॥ मोरा०
 प्रभु० ॥ २ ॥ वेनीयो कापेने वाढो तारे ठे क्रिहाज, समयीं आपे वाढो वंदित काज ॥
 मोरा० ॥ देशी विदेशी आवे संघ अनेक, सुथरीमां वास कीधो राखी वाळे टेक ॥ मोरा०
 प्रभु० ॥ ३ ॥ मोणसी अंचलजीनुं जात्रानुं मन्न, संघ लडने आव्या सुथरी प्रसन्न ॥
 मोरा० ॥ संवत अढार वेआसीयें जाण, फागुण वादि चोथे गायो गुण खाण ॥ मोरा०
 प्रभु० ॥ ४ ॥ नेढ्या श्रीधृत कळोव जिनराज, पूजा सत्तर नेदी करे शुभ काज ॥
 मोरा० ॥ मेघ शेरवर गुरुना सुपसाय, झिव्य शुलाव शेरवर गुण गाय ॥ मोरा० ॥ ५ ॥
 इति ॥ ॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥ शांति प्रभु विनति एक महारी रे, तारी आंखडी
 कामणगारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय रे, राणी अचिरा देवी माय रे ॥ तुं

तो गजपुर नगरीनो राय ॥ शांति० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन काति विराजे रे, मुकुटे दीरा
 मणि उज रे ॥ तारी बाणी गंगापुर गाजे ॥ शांति० ॥ २ ॥ प्रभु चाढीश धनुपनी
 काया रे, नवि जनना द्विलमा नाव्या रे ॥ काई राज राजेसर राया ॥ शांति० ॥ ३ ॥
 प्रभु माहारा वो अंतर जामी रे, कंठं विनति हुं शिर नामी रे ॥ चौद राजना वो तुमं
 स्वामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ प्रभु पर्यटा वारे माहे रे, दीए देशना अधिक उवाहें रे ॥ प्रभु
 अंगीएं नेव्या उमाहे ॥ शांति० ॥ ५ ॥ श्रावकश्राविका बहु पुण्यवंतां रे, शुभ करणी
 करे महंता रे ॥ शांति नाथना दरिद्राण करंता ॥ शांति० ॥ ६ ॥ संवत अटार अठाणुज
 सार रे, मास कल्प कर्यो तिणि वार रे ॥ सरि मुक्ति पदना धार ॥ शांति० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण
 ॥ ॥ अथ श्री वीरजगवाननुं स्तवन ॥ श्री सीधारथ नंदन देवा, प्रभु सेव करुं नित्य
 सेवा ॥ देजो मुक नव नव सेवा ॥ जगत गुरु वीर परम उपगारी ॥ प्रभु करुणा निधि
 दातारी ॥ जगत० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ शोच पद्मेर प्रभु देशना वरसे, सांजली नवि
 हृदयमां धरसे ॥ तोरा चरण कमल नित्य फरसे ॥ जगत० ॥ २ ॥ ब्राह्मण देवशर्मा
 जाणे, प्रतिबोधवा मोकलीया ते टाणे ॥ गौतम चाट्या गुण खाणे ॥ जगत० ॥ ३ ॥
 प्रतिबोधीने पावा वलिया, मारग माहे श्रवणे सात्राविया ॥ प्रभु मोक्ष मारग संचरिया
 ॥ जगत० ॥ ४ ॥ ते सांजली द्विलमा वात, गौतमने धाये वज्रवात ॥ विवेक गुण मणि
 रथात ॥ जगत० ॥ ५ ॥ हवे केदने हुं कदीश वीर, गौतम चिंतवे सादस धीर ॥ कर्म
 शत्रुना ओढ्या जंजीर ॥ जगत० ॥ ६ ॥ काती कृष्ण हुंआ निर्वाण, प्रजाते रुद्रनृति

केवल नाण ॥ जयो जयो जयो जणे गुण खाण ॥ जगत० ॥ ७ ॥ अढार देशना राजा म-
 दिया, जाव दीपक मोक्षमां जलिया ॥ डव्य दीपक गुणमणि जारिया ॥ जगत० ॥ ८ ॥
 प्रयु वरिया शिव लटकाली, धरुं ध्यान पद्मासन वादी ॥ तिहां प्रगटी लोक दीवादी ॥
 जगत० ॥ ९ ॥ मुळ मंदिर सुरतरु फलियो, परमात्म गौतम मलियो, गर्द जावत शुभ-
 दिन वलियो ॥ जगत० ॥ १० ॥ संवत जगणीश पचवोतेरा वर्षे, दीवादी दिन मन
 हर्षे ॥ प्रयु मोक्ष वर्णा शुभ दिवसें ॥ जगत० ॥ ११ ॥ इति संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीके-
 सरीआजीतुं स्तवन ॥ सर सतिमाता चरण नमीने, सद्गुरु लारुं पाय जीरे ॥ श्री
 केसरीयानाथनारे, गुणगाढ जिन रायारे ॥ केसरीये जईए जीरे ॥ १ ॥ ए अंकाणी ॥
 स्वर्ग मृत्यु पाताळना रे, सेवे सुर नर इंदाजीरे ॥ वंठीत पूरण संकट चूरण, आत्मने
 सुखकंदाजीरे ॥ वडं वडं धूवेवाना नाथ ॥ केस० ॥ २ ॥ श्रीकवदेश सांथाणनगरथी,
 साहा परवत लथाजीरे ॥ कारतक तेरस सुद गुरुवारे, संघ देइने सधाव्या ॥ केस०
 वडं० ॥ ३ ॥ जावसहित पंथे अचुंक्रमतां, मांडवी वीदर आव्याजी रे ॥ शांतिनाथनांदरि-
 शान कीथां, लीधा काम सुजाया ॥ केस० ॥ वडं० ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद जीत करी
 प्रयु, सीतलनाथ कदाया जीरे ॥ संघ मदी प्रमेकरी वांथां, श्री मूजानगर चित चाहाया
 ॥ केस० ॥ वडं० ॥ ५ ॥ ज्ञानगरी ते अतिजीरण, जगडुसाहनी वसही जीरे ॥
 मूलनाथक माहावीर जीनेथर, दरशन शिवसुख लहीये ॥ केस० ॥ वडं० ॥ ६ ॥ राध-
 णपुर नगरी अतिसुंदर, प्रीति तीरथथी लागी जीरे ॥ श्रावक समकीत आणा धारी,

जैन धरमना रागी ॥ केस० ॥ वंडं० ॥ ७ ॥ वटीघार देशमा परताधारी, श्री सखेश्वर
 पूज्या जीरे ॥ ज्वय सुगांध नावे करी फूले, त्रवो त्रव पातिक धुज्या ॥ केस० ॥ वंडं०
 ॥ ८ ॥ त्यांधी प्रयाणां देई करीने, चाणसमाए आठ्या जीरे ॥ वटवापार्थानाथ पसाये,
 फेरा चोरगसी हराया ॥ केस० ॥ वंडं० ॥ ९ ॥ मारगमा मन मोकलो राखी, सब त्रकि
 बहु कीधी जीरे ॥ मोहोरपासना दरशन कीधां, नर त्रव दाहो लीधा ॥ केस० ॥ वंडं०
 ॥ १० ॥ मागसर सुद दशमी दिन वाद्या, श्री ऋषदेव सुख कारी जीरे ॥ नव अंगे
 जीन पूजारचीरे, फूल पगर त्रयो सारा ॥ केस० वंडं० ॥ ११ ॥ हाथजोड प्रभु-
 जीके आगे, त्रावत्रकि श्रुत देजो जीरे ॥ आ त्रव वंजित सफल थयो सब, त्रवोत्रव
 दरिशाण देजो ॥ केस० ॥ वंडं० ॥ १२ ॥ अचलगढपति दिनदिन दीपे, विवेकसागर
 सरिराया जीरे ॥ विद्या गुण मणि कीर्ति शोभे, त्रविजनने सुख साधा ॥ केस०
 वंडं० ॥ १३ ॥ जगणीस वत्रीसा वरसे, दरशन ऋषत्रजी पाया जीरे ॥ देव सागर गुरु
 चरण पसाए, सरूपसागर गुण गाया ॥ केस० ॥ वंडं० ॥ १४ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री
 धर्मनाथजीतुं स्तवन ॥ होजी नीदरडी वेरण होयरही ॥ ए देशी ॥ श्री जिनवरपद पूजीये,
 त्रावेत्रकि हो करे सुर नर दास के ॥ सम कित दरिशाण सुखलहे, जाये त्रवोत्रव हो
 मिथ्या छःख नास के ॥ धर्माजिनेश्वर वंदीये ॥ १ ॥ विजय विमानधी चवीप्रभु, सागर
 एकत्रीश हो पूरण आयु मान के ॥ चवण कट्याणीक जिनतणो, माता सुवता हो कुले
 अत्रधि नाण के ॥ धर्म० ॥ १ ॥ धनधन नयरी रत्नपूरी, त्रानुराजा हो घरे मंगल पूर के ॥

जनम कल्याणी तिष्ठे समे ॥ चौद्वारके हो शुभ उदयो सूर के ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ लघु-
वय वधतां जोवन वली, संसारे हो योगवती कर्म के ॥ दीक्षाकल्याणक तप तप्या, घाती-
हृयधी हो केवल गुण परम के ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ समोवसरण सुर तिहां रचे, चौसठहेंद
हो कर्यो महोवव सार के ॥ फूल अमर वरसावतां, लपटकुंमरी हो त्रणे जय जय कार
के ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ रत्नसिंहासन पूर्वमुखे, प्रजुवाणी हो लोकालोक वलाण के ॥ अमृत
समरस वरसंतां, त्रविपीतां हो घटघट गुण जाण के ॥ ६ ॥ निरवाणीक नभुं पंचमो,
लक्ष चौरासी हो त्रव गड डख त्रास के ॥ ज्योतमें ज्योत मिळी रही, पाम्याअनंद हो
शिवधरे सुखवास के ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ पंच कल्याणीक जिन तणां, त्रावेपूजे हो आगम
वई साख के ॥ त्रिकरण जोगे साधन क्रीया, रमे समता हो रसवचन सुत्रांख के ॥ धर्म०
॥ ८ ॥ पश्चिम दिशे कज्जेशमां, जरणोतगामे हो संबचैत्य कराय के ॥ रथजात्राजवव
शुभश्या, मनवंडित हो फल पुन्य जपाय के ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ संवत जगणीश्र अडनी-
शामां, शुद्धैयाखे हो एकादशी नृगुवार के ॥ थापना तई सूरी सानिधे, होजो संबधने हो
नित्य मंगल माळ के ॥ धर्म० ॥ १० ॥ रसनाएके प्रजु तुम तणां, कोई पार न हो पाम्यो
गुण वेह के ॥ देवसागर कृपाशार्कि, सरूपसागर हो नित्य नित्य गुण गेह के ॥ धर्म०
॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सिध्चक्रजीतुं स्तवन ॥ सखी चावो ने सिध् चक्र बांद्वा,
ठांफवा त्रव तणां पाप रे ॥ सखी आशो मासज आवीयो, श्यो अनंद हरख अपार
रे ॥ सखी सुद सातम दिन रुअडो, कुडो वे अशिर संसार रे ॥ सखी० ॥ १ ॥ सखि

अत्रांवल नव मन धारीयं, पात्नीयं चडते जाव रे ॥ सखी जिम मयणाये पात्नीज, टात्नीज
 रोग श्रीपाद रे ॥ सखी० ॥ १ ॥ सखी इम नव पद धवली धाइयें, पाइये सुख अपार
 रे ॥ सखी गरणु गणयिं सहसनी, मननो थिर करी जाव रे ॥ सखी० ॥ ३ ॥ सखी उषध
 अंजन कीधायकी, जिम तिमर रोग मटी जाय रे ॥ सखी तिम सिध चक्र सेवा थकी,
 कष्ट अनंत पदाय रे ॥ सखी० ॥ ४ ॥ सखि ए सिध चक्रना गुण तणो, कोई न वहे
 पार रे ॥ सखी मेव शेखर सूपजायथी, शिष्य गुदाव ने तार रे ॥ सखी० ॥ ५ ॥ इति
 सपूर्णः ॥ ॥ अथ क्रमादात्रजी विगेरे पंडितकृत नवपदनां त्रिश सत्वन प्रारभ्यते ॥
 प्रथम अरिहंत पदस्य प्रथम रत्वन ॥ गिरिवर दरिशन विरला पावे ॥ ए देशी ॥ श्री
 सिधचक्र आराधो जावे, सेवतां सुख संपद पावे ॥ अरिहंतादिक नवपद थावे, आंविद
 तप करी जावना जावे ॥ २ ॥ श्री सिधचक्र आराधो जावे ॥ ए आकणी ॥ आशो शुदि
 सातमथी करतां, नव आंविद चित्त चोखे जावे ॥ त्रण टंक नित्य देव वांटीजे, पडिकमणां
 दोय करिये जावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ मंत्रआराधन फल ए महोदु, उर्गति सबही दूर हवावे ॥
 आराधनथी शिवसुख पावे, तप जप ध्यानथी कर्म जलावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ प्रथमपदे
 अरिहंतने थावे, श्रुतवर्ण अनंत सुख पावे ॥ मध्यदले जिन स्थापना थावे, पात्रीश गुण
 वाणीये सुहावे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ प्रातिहारज आठ अनोपम, निर्यामक सववाह कहावे ॥
 चोत्रीश अतिशय जश शोचंता, इंद्रादिक जसु उलग गावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ त्रण ज्ञान
 सहित प्रभु जन्म्या, दीक्षासमय मन.पर्यव थावे ॥ घाति कर्म खपावे जगगुरु, केवल

दर्शन शुरु कहवै ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पहेले पदे एहवा जिन वांडं, बार गुणै करी जिन गुण
 गावे ॥ कहे कामावात्र सुमतिर्ये वंदो, एहथी अजरामर पद पावे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति
 ॥ अथ श्री अरिहंतपदरथ द्वितीय स्तवनं ॥ श्री पचासरो पासजी रे दाव ॥ ए देशी ॥
 श्रुत देवी समरी करी रे दाव, सहस्र लहियें सुपसाय रे ॥ नविक जन ॥ श्री सिद्धचक्र
 आराधवा रे दाव, आनंद अंग न माय रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ १ ॥ आराध्यां सुख थाय
 रे नविकजन, अद्विय विघन दूरें हरे रे दाव, पातक दूर पलाय रे ॥ नविक जन ॥
 श्री० ॥ २ ॥ पहेले पदे अरिहंत जी रे दाव, श्वेतवर्ण सुख कार रे ॥ न० ॥ बार गुणै
 करी शोचता रे दाव, पाम्या सुखनो पार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चोत्रिश अतिशय
 शोचता रे दाव, वाणी गुण पात्रीश रे ॥ न० ॥ प्राति हार्य आठे नला रे दाव, ना-
 वना गुण पचवीश रे ॥ न० ॥ श्री ॥ ४ ॥ त्रिगर्वा तेजें जगमगे रे दाव, सोवन सिंहा-
 सन श्रेष्ठे ॥ न० ॥ चतुर्मुख दिये देशना रे दाव, दान शिखल तप नाव रे ॥ न० ॥
 श्री० ॥ ५ ॥ पर्वदा बारे शोचती रे दाव, वैर न करे लगार रे ॥ न० ॥ नाषा समजे
 आपणी रे दाव, योजन लगे मनोहार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवे गुणै करी दीपता
 रे दाव, श्री अरिहंत सुजाण रे ॥ न० ॥ सेवो ध्यावो नित्यप्रत्ये रे दाव, जिन पामो
 सुख खाण रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ मयणा ने श्रीपालजी रे दाव, पाम्या एहथी सिद्धि
 रे ॥ न० ॥ रोग शोक दूरें गया रे दाव, पाम्या बहु सिद्धि टुद्धि रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ८ ॥
 एहवो नाव सुणी करी रे दाव, आराधो सिद्ध चक्र रे ॥ न० ॥ कहे कवियण नावें

करी रे दाव, पामथो नवनो पार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री
 अरिहंत पदस्य तृतीय स्तवन ॥ जागे सो जिनप्रक कहवे ॥ ए देशी ॥ श्री सिध् चक्र
 आराधो प्राणी, सङ्गु कहे एम वाणी रे ॥ मन वच काया शुद्ध करीने, नजी देजो नवि
 प्राणी रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ नव दिन नव आंखिल तप कीजे, त्रण टंक देव वांटीजे रे ॥
 पक्कमणा वेहु टक करी ने, सिध् चक्र सेवा रचीजे रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सोना रूपामय
 सिध्चक्रें, आठ पांखडी दीजे रे ॥ मध्यविचाले अरिहंत थापी, आठ पद पांखडी दीजे
 रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एम नव पदने थापी निर्मल, मन शुध् जाप जपीजे रे ॥ गुण जेहना
 जेटला ठे तेटलां, काजस्सग्न खामणा दीजे रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अरिहंतादिक नवपद जपीधे,
 नवदिन निर्मल बुध् रे ॥ गणणुं तेर हजार गणीने, थिर करी आतम शुध् रे ॥ श्री०
 ॥ ५ ॥ आथो चैन दो मासें नव दिन, सातमथी तप कीजे रे ॥ एम साडा चार संव-
 त्सरे, ए तप पूर्ण करीजे रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एम नवपदनुं ध्यान धरंतां, मनोवाचित फल
 पावे रे ॥ वाचक मेरु जियर गुरु नमतां, उदय अचल सुख थावे रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥
 इति ॥ ३ ॥ ॥ अथ श्री अरिहंत पदस्य चतुर्थ स्तवन ॥ राग खंजाती ॥ श्री अरिहंत
 सदा शरण ॥ अष्ट महा प्रातिहारज विराजे, चोत्रिअ अतिशय धरण ॥ श्री० ॥ १ ॥
 केवल ज्ञान केवल दर्शनमय; धवल वरष शिव सुख करण ॥ प्रभु पांतीश वचन गुण
 शोभित, नव नावल दारिद्रहरण ॥ श्री० ॥ १ ॥ सम वसरण जिन चोसुख मंडन, सब
 संसार समुद्रतरण ॥ नवपद मध्य प्रथम पद पूजहुं, देव सकल प्रणमित चरण ॥ श्री०

॥ ३ ॥ इति ॥ ४ ॥ अथ सिद्धपदस्य प्रथम स्तवन ॥ धन धन श्री अरिहंत जी रे, जेणे
 जंढखाव्यो धर्म ॥ सद्युणा ॥ ए देशी ॥ श्री सिद्ध चक्र आराधिये रे, त्रौफ कर्मना फंद ॥
 सद्युणा ॥ संज सखल महा मोटको रे, टाले जवना फंद ॥ स० ॥ जिम जिम सिद्धपद
 सेविये रे, आतमने हितकार ॥ स० ॥ १ ॥ श्री सिद्ध चक्र प्रभावधी रे, मयणा सुंदरी
 श्रीपाल ॥ स० ॥ रोग गयो संपदा बर्द रे, पाभ्या जोग रसाव ॥ स० ॥ श्री० ॥ २ ॥
 नमण जलें सिद्धचक्रने रे, सातथें कुटी त्राय ॥ स० ॥ रोग गयो सुखीया थया रे, हरखे
 त्रिज धर जाय ॥ स० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बीजे पदें सिद्ध ध्याईयें रे, रक्त वर्ण मनोहार ॥
 स० ॥ पूर्वदिशें सिद्ध स्थापना रे, आठ गुणें सुखकार ॥ स० श्री० ॥ ४ ॥ पूर्वप्रयोग
 प्रमाणधी रे, बंधन वेद असंग ॥ स० ॥ समय कर्ध्वगति जेहनी रे, ते सिद्ध प्राणमो
 रंग ॥ स० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ताख पीस्तालीश जाणियें रे, सिद्धशिलातुं मान ॥ स० ॥
 द्वितीयाथें ड आकार ते रे, तिहां सिद्ध जीव प्रमाण ॥ स० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ मध्यविचादें
 ध्याईयें रे, जोयण आठ विस्तार ॥ स० ॥ वाताग्रजाग अंतें अग्ने रे, दीय पासं तिण
 वार ॥ स० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ एहवा सिद्धने सेवतां रे, बीजे पदें सुखवास ॥ स० ॥ सुगुरु
 तत्व पसायधी रे, क्रमा मुक्ति सुखिवास ॥ स० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥ अथ श्री सिद्ध-
 पदस्य द्वितीय स्तवन ॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लाग्यो मोरी सजनी जी ॥ ए देशी ॥
 वागवादिनी देवी समरीजें, सद्गुरु प्राणमी पाया जी ॥ श्री सिद्धचक्र गाठं मन रंगें, आनंद
 अंग न माय रे ॥ सिद्धचक्र सेवो जी रे ॥ १ ॥ बीजे पदें सिद्धजी जाणो, आठ गुणें

गुण खणो जी ॥ रक्तवर्ण सोहे अति सुंदर, तेजें ऊढामल प्राणो रे ॥ सि० ॥ २ ॥
 अलख अमूरत तुं आविनाबी, चिदानंद पदवासी जी ॥ अष्ट कर्मदल चूर करीने, हुवा
 शिवपद वासी रे ॥ सि० ॥ ३ ॥ पन्नर नेदें जे सिद्ध हुवा, प्रावलिग तिहां एक जी ॥
 डव्यलिग रचना करीने, शिव साधन सुविवेक रे ॥ सि० ॥ ४ ॥ पार्थनाथ सुख निसुणी
 करीने, ध्यावो सिद्धपद सारो जी ॥ मन स्थिरता राखो नवि सूधे, तो पामो नवपारो रे
 ॥ सि० ॥ ५ ॥ अचलगढ सदा सुखकारी, राजेंद्रसागर सूरि जी ॥ श्री जिनलाज सुगुरु
 पसाये, मेघसुनि जयकारी रे ॥ सि० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सिद्धपदस्य तृतीय
 स्तवनं ॥ श्री अरिहंत नमीजें ॥ चतुरनर ॥ श्री० ॥ ए देशी ॥ श्री सिद्धचक्र आराधो ॥
 नविक जन ॥ श्री सिद्धचक्र आराधो ॥ नव पद ध्यान धरत जगत जन, सकल पदारथ
 साधो ॥ न० ॥ श्री० ॥ १ ॥ नव पद ध्याने पास कुमारे, नगने वलतो जगार्यो ॥ धर-
 णेंड पद आपी तेदने, डःखतो पार उतार्यो ॥ न० ॥ श्री० ॥ २ ॥ नव पद ध्याने नव-
 निधि पामे, सजुरुने शिर नामे ॥ अरिहंतादिक पद ने जपता, दखमीधर विश्रामे ॥ न०
 ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वडशाखायें शीकुं वांधी, चोरने माथे वेसार्यो ॥ अत्रिकुंडथी वलतो टावी,
 सुरपद देइ सधार्यो ॥ न० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीश्रीपाल ने मयणा सुंदरी, जपतां नवपद
 रंगें ॥ रोग गया ने संपदा पामी, नवपद ध्यान प्रसंगें ॥ न० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नवपद-
 ध्याने त्रिल ने त्रिल्लडी, पाम्यां राजनी लीला ॥ राजसिंह पृथ्वीपति पदवी, संपद पाम्या
 सलीला ॥ न० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एम-नवपदना ध्यान पसार्यें, पाम्या संपत्ति रंगे ॥ वाचक

मेरुशिखर पद सेवी, उदय वहै सुख अंगे ॥ न० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ
 श्री सिद्धपदस्य चतुर्थं स्तवनं ॥ राग आशावरी ॥ अथवा रामयी ॥ श्री सिद्धके गुण
 गाढ सखीरी, जीडं कवही नहीं होय डखी री ॥ श्री० ॥ १ ॥ पत्रे त्रेद सिद्धांतही
 प्राख्यं, सो सिद्ध समरण घटमें राख्या ॥ श्री० ॥ २ ॥ अप्ट कर्म जेणे दूरही कीधां,
 ध्यान वर्दे सवि कारज सीधां ॥ श्री० ॥ ३ ॥ रक्तवर्ण दूजे पदे ध्याउ, सुमति कवया
 कहे शिव सुख पाउ ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ अथ तृतीय श्री आचार्यपदस्य प्रथम
 स्तवनं ॥ वहावाजीनी वाटडी अमो जोतां रे ॥ ए देशी ॥ सहुरुने करुं प्रणाम रे, वली
 नवपदनुं धरुं ध्यान रे, जेथी सासय सुख परधान ॥ नवि, सिद्धचक्रने नित्य सेवो रे ॥
 जिम अजरामर पद देवो ॥ न० ॥ १ ॥ धर्म अर्थनां चार चक्र वलाणो रे, उपराम
 संवर मन आणो रे, सुविवेक ते त्रीजो जाणो ॥ न० ॥ २ ॥ सिद्धचक्र ते चोथो सार रे,
 जेदधी तेज प्रताप अपार रे, जेम चक्र वर्दे चक्री धार ॥ न० ॥ ३ ॥ पद त्रीजे आचा-
 रिज विराजे रे, दक्षिण दिशें स्थापना बाजे रे, सोवन दान वत्रीश गुण राजे ॥ न० ॥ ४ ॥
 गजानार धुरंधर पूरा रे, पचाचारने पादवे शूरा रे, जग पडिवोहे ससनूरा ॥ न० ॥ ५ ॥
 सरण वारण दीये जनने रे, चोयण पडिचोयण जतने रे, एम त्रीजे पदे नमो तेहने ॥
 न० ॥ ६ ॥ पंचद्विय संवर धारे रे, नवविध बह्मगुति धारे रे, क्रोधादिक कपाय निवारे
 ॥ न० ॥ ७ ॥ पंच समिति त्रिगुति पावे रे, पंच महाव्रत नित्य संजावे रे, पंचाचार
 सदा ते पावे ॥ न० ॥ ८ ॥ ज्ञानाचार दर्शन पद धारे रे, चास्त्रि ने वीर्याचार रे, ए

त्रयीश गुणे सूरि धार ॥ न० ॥ ९ ॥ श्री अचल गहराय रे, सुक्तिसागर सूरि पसाय रे,
 क्षमलात्र प्रभु गुण गाय ॥ न० ॥ १० ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री आचार्य पदस्य द्वितीय
 स्तवनं ॥ तजियं तेहने ते घडी रे, जे पाडे तजनमा त्रंग ॥ ए देशी ॥ सरस्वतीने समरी
 करी रे, सहुरु प्रणमी पाय ॥ सिद्धचक्र गुण गायवा रे, आनंद अंग न माय ॥ हो
 प्राणी ॥ त्रविजन सेवो त्रावधी रे, श्री सिद्धचक्रनो यंत्र ॥ १ ॥ तद्धारक पद जाणीये रे,
 त्रीजुं पद मन धार ॥ सेवनवर्ण सोढामणुं रे, त्रयीश गुणें सुविचार ॥ हो प्रा० ॥ न०
 ॥ २ ॥ पूरव गुण्य पसाजले रे, सहुरु दर्शन शाय ॥ गुण्य संयोगे पामीये रे, पाप सकल
 मिट जाय ॥ हो प्रा० न० ॥ ३ ॥ अचल गहपति दीपता रे, राजेंद्र सागर सूरि ॥ मेघमुनि
 एम विनवे रे, सेव्यां सुख नरपूर ॥ हो प्रा० ॥ न० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री
 आचार्य पदस्य तृतीय स्तवनं ॥ राग विदावल ॥ रे जीव जिनधर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥
 नवपद ध्यान धरो सदा, त्रवियण मन त्रावे ॥ इःख दोहण दूरें टले, सुख संपद आवे ॥
 न० ॥ १ ॥ प्रथमपदे अरिहंतजी, गुण वार वीराजे ॥ बीजे पदे श्री सिद्धजी, आठ गुणें
 राजे ॥ न० ॥ २ ॥ पद त्रीजे आचार्यना, त्रयीश गुण जाणो ॥ गुण पचवीश रूडा लही,
 जवचाय वखाणो ॥ न० ॥ ३ ॥ साधु सकलना गुण लहो, सत्यावीश सुरंगा ॥ ज्ञान
 तणा गुण जाणो, पच पवित्र सुरंगा ॥ न० ॥ ४ ॥ दर्शन पद लहो सातमे, सडसठ
 गुण सार ॥ चारित्र पद आठमे सही, सत्तर गुण सार ॥ न० ॥ ५ ॥ नवमे पदे तपने
 नमो, गुण वार सडूणा ॥ एम नवपदना गुण लही, काजस्सग्न करो नमणा ॥ न० ॥ ६ ॥

एम नवपदनुं कीर्जिये, गरणुं तेर हजार ॥ मेरुशेखर गुरु सेवतां, लक्षिये उदय अपार ॥ ७॥ इति ॥ ॥ अथ श्री आचार्यपदस्य चतुर्थं स्तवनं ॥ राग केदारो गोपी ॥ कुला-
 घर वेठे जगत दयाल ॥ ए देशी ॥ श्री आचारिज ध्याइये रे, सोनागी सुखकार ॥
 महिमावंत सुजाणिये रे, सुंदर संयमधार ॥ नवियां वंदो मन धरी नार्ये, जेम नवनिधि
 धरे श्रावे ॥ न० ॥ १ ॥ गुण वनीशे शोभता रे, पावे पंचाचार ॥ नविक जीव प्रतिबो-
 धता रे, करता जग विहार ॥ न० ॥ २ ॥ हेमवर्ण तनु दीपता रे, वीजे पदे विस्तार ॥
 विनयसागर कहे सेवतां रे, लदीये नवनो पार ॥ न० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ अथ चतुर्थं
 श्री जवधाय पदस्य प्रथम स्तवनं ॥ श्रांतिजीनुं सुखहुं जीवा नणी ॥ ए देशी ॥ श्री
 सिद्धचक्र आराधिये जी, पूजतां पाप पलाय ॥ नामश्री नव निधि संपजे जी, आपद
 सकट जाय ॥ श्री० ॥ १ ॥ समकित शुद्ध होये नहुं जी, हृदयमां होय जजास ॥ जिम
 जग सूरज जाणिये जी, पूरे जगत सवि आश ॥ श्री० ॥ २ ॥ आंविद तप आराधतां
 जी, होये कर्म चकचूर ॥ सिद्धचक्रने सेवतां जी, स्वर्गनां सुख नरपूर ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 बोधे पदे पाठक जाणिये जी, नीव वर्ण मनोहार ॥ पञ्चिम दिशे करो स्थापना जी,
 गुण पचवीश सुखकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ आगम अर्थ विस्तारतां जी, आचारिज ने जव-
 द्वाय ॥ वीजे नवे सुख लहे जी, आगम वचन पसाय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ वावनाचंदन तणी
 परे जी, शीतल गुण मंजीर ॥ नव दव ताप निवारवा जी, जवधाय साहस धीर ॥ श्री०
 ॥ ६ ॥ नविक जीव पडिवोधवा जी, कृतप्रयास विचार ॥ श्री मुक्तिदाव जवधायना जी,

तत्त्व बहुं सुखकार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री उवधाय पदस्य द्वितीय स्तवनं ॥
 शारदने प्रणमी करी, सहस्र प्रणमी पाय रे ॥ श्री सिद्धचक्र अपाराधवा, मुक्त मन उजट
 धाय रे ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र सेवो सदा, जिम पामोत्रव पार रे ॥ संकट कष्ट नावे कदा,
 जिम अथ दूर पदाय रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चोथु पद उवधायनुं, नील वर्ण सुखकार रे ॥
 गुण पचवीशो शोचता, शांत दांत मन धार रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ श्रुतसागर साधु त्रवा,
 सूत्र जणाय सार रे ॥ तपक्रिया संयोगधी, त्रांखे अर्थ विचार रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मुनिग-
 णमहि शोचता, श्री उवधाय मुनींद्र रे ॥ मेघमुनि एम उच्चरे, नमतां ते परम आनंद
 रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री उवधाय पदस्य तृतीय स्तवनं ॥ जिशिवर दरिशन
 विरला पावे ॥ ए देवी ॥ नवपद ध्यान धरो त्रवि प्राणी, श्री गौतम गुरुनी ए वाणी ॥
 चौद पूर्वनो सार ए जाणी, अपाराधो अहोनिश गुणखाणी ॥ नव० ॥ १ ॥ नवपद जपतां
 नव निधि पामे, सुर नर सरिखा तस शिर नामे ॥ विद्यानिधि होये विण कामे, त्रवदव
 हुत ते विश्रामे ॥ नव० ॥ २ ॥ एहीज मंत्र प्रत्रावे केरु, पाम्या सुर सम रुद्धि वसेइ ॥
 मानव त्रवमे वांछित वेरु, अंते शिवपद पामे तेइ ॥ नव० ॥ ३ ॥ नवपदनुं तो गणणुं
 कीजे, गुरुमुख एहनो त्रेद लहीजे ॥ मानव त्रवनो लाहो वीजे, एहथी सधवां कारज
 सीके ॥ नव० ॥ ४ ॥ अरिहत सिद्ध आचारिज जाणो, उवधाय पद चोथे मन आणो ॥
 पंचमे पदे सवि साधु वखाणो, दर्शन ज्ञान सहेजे सुख माणो ॥ नव० ॥ ५ ॥ अपातमे
 चारित्र निर्मल कीजे, नवमे पदे तप तेह वरीजे ॥ एम नवपद नित्य ध्यान धरीजे,

सेवतां शिव संपद लीजें ॥ नव० ॥ ६ ॥ एणीपरे जे नवपदने ध्यावे, सेवतां सुख वांछित
 आवे ॥ नव० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ उवचाय पदरय चतुर्थ स्तवनं ॥ राग धन्याश्री ॥
 आगम हे अविकारा ॥ ए देशी ॥ सदा सुख दायक अति वैरागी ॥ श्री उवचाय
 मनोहर मूरति, जिन शासन सोचागी ॥ स० ॥ १ ॥ सूत्र सिद्धांत अनेक वखाणे, जेम
 महिमा जग जाणी ॥ गुण पचवीश विराजित सुंदर, नील वर्ण वड चागी ॥ स० ॥ २ ॥
 चोथे चरण चतुर चित ध्यावत, आपदा दूरहि चागी ॥ तकि शुक्ति करी जिनगुण गावत,
 क्रमा मुक्तिमति जागी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ अथ पचम श्री साधुपदस्य प्रथम
 स्तवनं ॥ पाडली पुरमां रे प्यारे ॥ ए देशी ॥ नव पद मंत्रने आराधो, जेम मुक्ति मार-
 गने साधो ॥ विधिहुं आंखिल उंली कीजें, आ नव परनव जिम सुख लीजें ॥ १ ॥
 नव पदमंत्रने आराधो ॥ ए आंकणी ॥ पांचमे पदें साधुने वांदो, सतावीश गुणें आ-
 णंदो ॥ उत्तर दिशें जस स्थापना बाजे, श्यामवर्ण नमो सुख साजे ॥ न० ॥ २ ॥ नरना
 दोष अछार निवारी, लही दिक्षा शिक्षा दिये सारी ॥ शत्रु मित्र राखे सम चावें, क्रोधादिक
 जीपे वड दावें ॥ न० ॥ ३ ॥ नवविध चावलोच करे देतें, दशमो केशनो लोच
 करे प्रीतें ॥ बावीश परिसह फोज हठावे, सतर प्रकारें संयम चावे ॥ न० ॥ ४ ॥ दोष
 सुद्धतावीश आहारना टाळे, बार प्रकारें तपने पाळे ॥ संयम अर्थी गेह करावे, साधु न
 रहे तिहां मन चावे ॥ न० ॥ ५ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्तिने पाळे, पंचद्रवियने संवर धारे ॥
 क्रोध मान माया लोचन वारी, ए अछार सीलांगरथ धोरी ॥ न० ॥ ६ ॥ सत्य हेतु नव

अष्टवी मुक्तावे, फरस्यो रसगुण ताणे द्रवे ॥ शुद्ध मारग प्ररूपक वाजे, एहवा साधु
 नमो मुख साजे ॥ न०॥ ७ ॥ कोडी सहस्र नव साधु नमीजे, पंच परमेष्ठी शुद्ध गणीजे ॥
 अथगम वचन द्दामा कहे मानुं, हवे ज्ञानादिक बार वलाणुं ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥
 अथ श्री साधुपदस्य द्वितीय स्तवन ॥ देशी हुंवलढानी ॥ हसवाहन समरी करी रे,
 सहुरु प्रणमी पाय ॥ नविक जून सांजतो ॥ श्री सिद्धचक्र आराधवा रे, मुऊ मन आनंद
 थाय ॥ न० ॥ १ ॥ पांचभुं पद ते जाणीये रे, साधु जला गुणखाणि ॥ न० ॥ ३ ॥ श्यामवर्ण
 तनु दीपता रे, बोले अमृत वाणि ॥ न० ॥ २ ॥ पंचाश्रवने टावता रे, पावे पंचाचार
 ॥ न० ॥ पंच समिति तिल्य आदरे रे, त्रण गुप्ति मन धार ॥ न० ॥ ३ ॥ सत्तर जेद
 सयम तणा रे, दशाविध यति आचार ॥ न० ॥ सतावीश गुणें शोचता रे, पंच महावत
 धार ॥ न० ॥ ४ ॥ अढी द्वीपमां मुनिवरा रे, जे होये किरिया पात्र ॥ न० ॥ त्रण काल
 तस वदना रे, डःख न रहे तिलमात्र ॥ न० ॥ ५ ॥ बार जेदें तप आदरे रे, वारे विषय
 कषाय ॥ न० ॥ खटकायनी रक्षा करे रे, एहवा मुनि गुण धार ॥ न० ॥ ६ ॥ अचलगात्रपति
 दीपतारे, राज राजेंद्र सूरि ॥ न० ॥ मेघमुनि करे वंदना रे, प्रेमे सदा नरपूर ॥ न० ॥ ७ ॥
 अथ श्री साधुपदस्य तृतीय स्तवन ॥ ए क्तु रूमी रूडी महारा वहावा, रूनों मास
 वसंत ॥ ए देशी ॥ ए तप रूडुं रूडुं नवि प्राणी, सेवो गुणमणि खाणी ॥ साची सुधारस
 सरखी जाणो, गुरु गोयमनी वाणी ॥ ए तप० ॥ १ ॥ ए तप करतां निर्मल ज्ञावे, मुख
 संपद शिर थावे ॥ रोग जोक संकट सवि नासे, दोहना दूरे जावे ॥ ए तप० ॥ २ ॥ एहवा

गुण निरुणीति श्रेणिक, कहे किम तप ए कीर्जे ॥ केणी परे एह नव पद स्थापीर्जे, किण-
 विध सेवा रचीर्जे ॥ ए तप ॥ ३ ॥ रूपासोनामय स्थापना करीने, अष्ट कमलदल
 कीर्जे ॥ मध्य दलें अरिहंतने स्थापी, सिद्धपद पूर्वे धरीर्जे ॥ ए तप ॥ ४ ॥ दक्षिण
 दिशें आचारिज उवीर्जे, दिशि पश्चिम उव्वाय ॥ साधु सकल उत्तरदिशें स्थापी, दिशे
 चार कह्वाय ॥ ए तप ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक चारे अग्निथी, विदिशि ईशाननी सीमा ॥
 एणी परे नवपद स्थापना स्थापी, पूजीये निश्चें नीमा ॥ ए तप ॥ ६ ॥ त्रण काल जिन
 पूजा रचीर्जे, नवपद जाप जपीर्जे ॥ वाचक मेरुशेखर पद सेवक, उदय अधिक जश
 लीर्जे ॥ ए तप ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री साधुपदस्य चतुर्थं स्तवन ॥ पूजाकरणं
 नव्यात्ररणं ॥ ए देशी ॥ पंचमे पदे पूजो तमे पूजो, पूजो सुमति धारी ॥ श्री अणगार
 तपोधन निर्मल, विहित वदत सुख कारी ॥ पंच ॥ १ ॥ श्यामलवर्णं सुजाण मनोहर,
 सतावीश गुण धारी ॥ पंचइन्द्रिय विषय निवारण, नवपयोधि तरण तारी ॥ पंच ॥ २ ॥
 राग द्वेष माया मद मत्सर, क्रोध लोभ सवि परि हारी ॥ अशुभ कर्म सम लजिन पुला-
 यन, क्रमा सुक्ति जयकारी ॥ पंच ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ अथ षट् दर्शनपदस्य प्रथम
 स्तवनं ॥ आदि जिणंद मया करो ॥ ए देशी ॥ श्रीसिद्धचक्र आराधिये, सुख संपत्ति
 सुविनास रे ॥ नाम थकी नव निधि हुवे, पूजतां तो सुखवास रे ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र
 आराधिये ॥ ए आंकणी ॥ पंचामृत करि एकटां, सिद्धचक्र नवण कीर्जे रे ॥ वाचना
 चंदन कुसुमथी, पूजनि दाहो दीर्जे रे ॥ श्री ० ॥ ७ ॥ धूप दीप फल पूजना,

अमृत स्वस्तिक कीर्त्तं रे ॥ मन वच काया स्थिर करी, उच्य ज्ञावथी पूजीर्त्तं रे
 ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उठे पदं दर्शन नमो, सड्याठ गुण सोहावे रे ॥ नैऋत दिशे तस
 रथापना, उज्वल वर्ण कहावे रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ समकित विण ज्ञावि जीवने, किरिया
 कोई न देखे रे ॥ विड घणां विण अंकथी, जिम आवे नहि देखे रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 ज्ञान चारित्रि विण एहथी, होवे शुद्ध प्रधान रे ॥ अतर सुहृत् दर्शन होवे, ते पामे सुख
 निधान रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ नेद अनेक दर्शन तणा, सड्याठ नेद उदार रे ॥ त्रिकरण
 शुद्ध जे दिव धरे, ते पामे जव पार रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ दर्शन पद ठठुं जडुं, श्रीसिद्ध
 यंत्रमकार रे ॥ कहे ह्यमावाज ए सेवतां, सुमति सदा सुखकार रे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति
 ॥ ॥ अथ श्री दर्शनपदस्य द्वितीय स्तवन ॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥
 श्री जिनवरने शिवा नमावी, सहुरु लही सुपसाया रे ॥ शारदाने ध्याज मन रगे, जे देखी
 सुर राया रे ॥ १ ॥ जविजन ज्ञावे श्रीसिद्धकनता, प्रेमें प्राणसुं पाया रे ॥ नवपद जाप
 जपो रे प्राणी, जलट अंग सवाया रे ॥ ज० ॥ २ ॥ सातमे पदं दर्शनने ध्यावो, जेथी
 तर्था तरशे बहु प्राणी रे ॥ तेहने नित्यप्रत्ये संजारे, हृदयमां ज्ञावज आणी रे ॥ ज०
 ॥ ३ ॥ चौराशी दाख जीवायोनिमां, ज्ञाम्यो अनंती वार रे ॥ जन्म मरणनां छःख बहु
 पाम्यो, दर्शन लह्यो सार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्यतणे संयोगे, कर्म गयां सवि नाथी
 रे ॥ तुम दरिशन देखी छःख नातां, पाम्या सुख मेवासी रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ काम क्रोध मद
 मत्सर मूके, ते नर दर्शन पामे रे ॥ चिदा नंद होवे निज आत्म, पामे शिवसुख टामो

रे ॥ न० ॥ ६ ॥ शकशत नेदे दर्शन जाणो, श्वेत वर्ण मन आणो रे ॥ सेव्यां ध्यायां
 बहुसुख होशो, श्री सिद्धचक्रशुं जाणो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीअचल गडपति गुरु राया,
 दिन दिन तेज सवाया रे ॥ श्री राजेंद्र सागर सूरिया, मेघ वंदे नित्य पाया रे ॥ न०
 ॥ ८ ॥ इति ॥ अथ श्री दर्शनपदस्य तृतीय स्तवन ॥ आज हजारी होवो प्राहुणो ॥ ए
 देशी ॥ श्री सिद्धचक्र आराधिये, वही उत्तम अवतार ॥ साजन मोश हे ॥ सकल करो
 सुक वयणथी, पासुं सुख अपार ॥ सा० ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र पसायथी, नर ना-
 रीनां टुंद ॥ सा० ॥ वीला वही वही घणी, वली चरण नमाया इंद ॥ सा० ॥ श्री०
 ॥ २ ॥ ए सिद्धचक्रना गुण घणा, केतां कहुं एक जीह ॥ सा० ॥ जे सारा हे एक मना,
 कोइ न लोपे तस वीह ॥ सा० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ श्री श्रीपाल नरेश्वरू, वली मयणा
 सुंदरी सार ॥ सा० ॥ रोग नयो सवि देहथी, वली पास्यां ऋद्धि अपार ॥ सा० ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ पग पग सिद्धचक्र ध्यानथी, परण्या नारी अनेक ॥ सा० ॥ मनना मनोरथ सवि
 फल्या, वली राज्यवीला सुविवेक ॥ सा० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ एम वीजा पण प्राणीया, ए
 सिद्धचक्रनुं ध्यान ॥ सा० ॥ अविचल सुख संपत्ति वही, पास्या शिव पुर स्थान ॥ सा०
 ॥ श्री० ॥ ६ ॥ गुरु गौतम वाणी सुणी, जे नित्य करशे ध्यान ॥ सा० ॥ मेरुशेखर गुरु
 सेवतां, उदय होय शुभ ज्ञान ॥ सा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री दर्शन-
 पदस्य चतुर्थ स्तवनं ॥ राग कानडो ॥ ध्याउं रेमार्द मनमें, दरि राण चित्त उमंगे ॥ इर्नाति
 दसन, दरिद्र डख चूरण, पंच प्रकारे अत्रंगे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ मगध द्वीप जूसें बहुं सम-

कित, नारायण परं चंगे ॥ बहु जवसंचित कडुष हरे जो, जेसे गंग तरंगे ॥ ध्या० ॥ १ ॥
 अष्ट पर्दे सुखकारक पूजुं, तुम देखो अंग जपण ॥ जाव जाकि धरि जस गुण गावत,
 विनय सागर मन रंगे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ ॥ अथ सप्तम श्री ज्ञानपदस्य प्रथम स्तवनं ॥
 कर्म परिष्ठा करण कुमर चढ्यो रे ॥ ए देखी ॥ श्री सिद्धचक्र आराधो जावहुं रे, ए
 सम जग नहि कोय ॥ यंत्र सकल महि सुंदर रे, मंत्र बमो महिमाय ॥ श्री सिद्धचक्र
 आराधो जावहु रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ नवदिन आंविद कीजे निर्मलां रे, सेवो श्री
 सिद्धचक्र ॥ देववदन त्रण कालनां जाणियें रे, सामायिक दीय वार ॥ श्री० ॥ १ ॥ गणुं
 गणियें त्रिकरण शुद्धु रे, नोकर वादी बीज ॥ अष्ट प्रकारें पूजा मन रुती रे, जांख्यो
 श्री जगदीश ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इह जव परजव लहे सुख संपदा रे, जेम नरपति श्रीपाल
 ॥ वरसचार खट मास ए सेवतां रे, पामे मांगलिक मात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सप्तमपर्दे नमो
 ज्ञान सोहामणुं रे, श्वेत वर्ण मनोहार ॥ अग्नि कोणें जेहनी स्थापना रे, गुण एकावन
 धार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञान पदारथ जगमा जाणियें रे, जेहथी समकित शुद्ध ॥ नद्यानक
 पेय अप्रेयना रे, पामे एहथी शुद्ध ॥ श्री० ॥ ६ ॥ मनधी न जाणे कुनकरणविधि रे,
 तेहथी कुंज केम थाय ॥ ज्ञान दयाथी प्रथम ठे नियमता रे, सदसज्जाव वनाय ॥ श्री० ॥
 ॥ ७ ॥ ज्ञान त्रयां नरतादिक सुख लहुं रे, ज्ञान सकल गुण मूल ॥ रवि शशि मेघ
 परें ए जाणियें रे, एहहुं ज्ञान अमूल ॥ श्री० ॥ ८ ॥ ज्ञान पांचसुं पामे परबुं रे, ते
 लहे शिवपद वास ॥ कहे क्षमावाच सप्तमपर्दे ए नमो रे, ज्ञाने सुमतिविलास ॥ श्री०

॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीज्ञानपदस्य द्वितीय स्तवन ॥ मंत्रा कह एक राजसभामा
 ॥ ए देशी ॥ ब्रह्मवदनी देवी समरी, सहुरु प्राणमी पाया रे ॥ सिद्धचक्र गालं मन रंगे,
 अनांद अंग न माया रे ॥ १ श्रीसिद्धचक्र सेवो त्रवि प्राणी, पूरण पद जिम पावो
 रे ॥ ससम पद तुमं मनमां धारो, ज्ञान गुणें करी ध्यावो रे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पांच
 त्रेंदं ज्ञान वखाणो, अज्ञानतिमिर निवारो रे ॥ ज्ञानावर्णाय कर्मज त्रोमी, अज्ञान
 अंधने टावो रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मति श्रुत अवाधि मनःपर्यव ज्ञानी, केवल ज्ञानने
 वरिया रे ॥ श्रुतसागर प्रभु ज्ञानदिणदा, अनुभव रसना दरिया रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥
 एहहुं जाणनि त्रवी प्राणी, ज्ञान त्रणो गुणखाणी रे ॥ श्री जिनदात्र सुगुरुने पसार्ये,
 मेघसुनिनी वाणी रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री ज्ञानपदस्य तृतीय स्तवनं ॥
 अने हारे बहावो बसे विमलाचर्ये रे ॥ ए देशी ॥ अने हारे गुरु गौतम दिथे देशना
 रे, राजगद्दिने उद्यान ॥ श्रेणिक नृप अादे मली रे, सांजवे त्रवि शुभ्र ध्यान ॥ गुरु
 महारो दीथे वे देशना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अने हारे लाख चोरत्नी योनिमां रे,
 जीव अनंती बार ॥ त्रमियो जीव करणी विना रे, न लह्यो धर्मविचार ॥ गु० ॥ १ ॥ अ०
 डलह्यो नर त्रव पामीने रे, समरो श्री नवकार ॥ मन वच काया स्थिर करी रे, जिम
 पामो मव पार ॥ गु० ॥ ३ ॥ अ० अरिहंत पद पहेहुं कहुं रे, बीजे सिद्ध उदार ॥ त्रीजुं
 पद आचार्यतुं रे, जवचाय चोधुं धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ अ० पाचमे पदे साधु त्रणो रे, तरे
 दर्शन जाए ॥ सातमे पदे ज्ञानने त्रजो रे, आठमे चारित्र जाए ॥ गु० ॥ ५ ॥ अ० नवमे

पदं तप जाणिये रे, एम कहे गोयम स्यामि ॥ एणी परें नवपद रथापीने रे, सेवो
 त्रवि अत्रिराम ॥ गु० ॥ ६ ॥ अ० एम नव पदने सेवता रे, वहे त्रवि आत्म ऋषि ॥
 मेरु शोखर नामथी रे, उदय होय प्रसिद्धि ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीज्ञानपदस्य
 चतुर्थं स्तवन ॥ रग नट्ट ॥ मेरे जिनकी इणविध पूजा कीजें ॥ ए देशी ॥ जिनराजकी
 सुखवाणियें ॥ अंगथी आत्मस निवारकें, पंचज्ञान वखाणिये ॥ जि० ॥ १ ॥ मति श्रुत
 अवाधि अनुपम उत्तम, मन.पर्यव मन आणियें ॥ पंचम पुण्य प्रकाश कहीजें, केवली
 केवल नाणियें ॥ जि० ॥ २ ॥ सिद्धपुरीपंथें दीपक दीपता, जाण्यो इणें सहिनाणिये ॥
 सप्तम पद सुख कारक सुंदर, देवकीरति मनें माणिये ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ अथ
 अष्टम श्रीचारित्र्यपदस्य प्रथम स्तवन ॥ जिनजी दशमा शीतल नाथ के, सुणो एक
 विनति रे लो ॥ ए देशी ॥ त्रविद्या श्रीसिद्धचक्र आराधनुं, फल महोदु कहतुं रे लो ॥
 त्रविद्या आराधनथी प्राणी, जगमा सुख वहे रे लो ॥ त्र० ॥ श्री कांत राजार्यें श्रीमती,
 वयणे ध्याइयो रे लो ॥ त्र० ॥ गुरु उपदेशें नवपद, मंत्र आराधियो रे लो ॥ १ ॥ त्र० ॥
 तेदथकी बीजे चवें, ऋषि बहु पासीयो रे लो ॥ त्र० ॥ श्रीसिद्धचक्रनी पूजा, मां मन
 त्रावियो रे लो ॥ त्र० ॥ श्री श्रीपाल ने मयणा, पुनरपि ध्यायीयो रे लो ॥ त्र० ॥
 पाभ्यो सुक रसाव के, नवमे स्वर्गे गयो रे लो ॥ २ ॥ त्र० ॥ आराधन जगमांहि, फल
 महोदु कहतुं रे लो ॥ त्र० ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज, सेवे सुख वहे रे

लो ॥ ४० ॥ पाठक साधु ज्ञान, दर्शन चारित्र कहे रे लो ॥ ४० ॥ तप ए नवपद
 सेवे, स्वर्ग मुक्ति वहे रे लो ॥ ३ ॥ ४० ॥ आठमे पदे चारित्र, सेवो सुख करु रे
 लो ॥ ४० ॥ गुण जेहना दश सात, पूजो त्रवत्रय हरु रे लो ॥ ४० ॥ स्थापना
 वायु खूणे, श्वेत मनो हरु रे लो ॥ ४० ॥ एहहुं पद चारित्र, नमो जग दिन करु रे
 लो ॥ ४ ॥ ४० ॥ आठ करम द्यय थाये, आत्म निर्महुं रे लो ॥ ४० ॥ एक
 दिवस चारित्र, पर्याय पावे त्रहुं रे लो ॥ ४० ॥ पामे शिव सुख सार, अवर सुख
 केटहुं रे लो ॥ ४० ॥ शिवसुख संपत्ति पासें, स्वर्ग सुख जेटहुं रे लो ॥ ५ ॥ ४० ॥
 दीनपणे जे चारित्र, आदरे भावशुं रे लो ॥ ४० ॥ तेहने सेवे सुर नर, इंड नमे इशुं
 रे लो ॥ ४० ॥ जिम श्री संप्रति राय, जगतमां सुख लह्यो रे लो ॥ ४० ॥ सुगुरु
 द्रमा पसाय, सुमतिषें सुख लह्यो रे लो ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीचारित्रपदस्य
 द्वितीय रतवन ॥ तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिवमें ॥ ए देशी ॥ श्री सिद्धचक्र आराधो
 त्रविद्या, एहशी अजरामर पद पावे ॥ श्री० ॥ ए अांकणी ॥ सकल यंत्रमांहे
 शिरोमणि, सेवंतां सुख संपत्ति पावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ अांवल तप विधीशु कीजें,
 देवपूजा त्रण टंक सुहावे ॥ गणुं गणीषें नवदिन तांड, अरिहंतादिक नवपद त्रावे
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ एहशी स्वर्ग मुक्ति सुख लहियें, डर्गाति सबही दूरें जावे ॥ शाश्वतां
 सुख एहशी त्रवि पामे, जीव-अनेक तर्या मन त्रावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ आठमे पदे
 चारित्र तुमें वंदो, श्वेत वर्ण नमो त्रावे त्रावें ॥ सतर त्रेद संयमना जाणो, वायु खुणे

स्थापना सुहवे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चारित्र्यी श्रीसंप्रति राजा, एक दिवसमां राज्यपद पावे ॥
 अयवंती सुकुमाव ते भवें, एक निरायें अमरपद पावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ एहवा चारित्र्ये तुमं
 ध्यावो, मन वच काययें भविभावे ॥ श्रीगुरु द्रमा लाभपसायें, सुमति लाभ अनंतो पावे
 ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री चारित्र्यपदस्य तृतीय स्तवनं ॥ जोसी तारा
 पतळामा जोयें ॥ ए देशी ॥ गण धर गौतम स्वामी, नयरी राजगृही है, आठ्या वन ठे
 तिहा जी ॥ दीधी वधामणी ताम, वनपादके तव श्रेणिक, आराम ठे तिहां जी ॥ १ ॥
 सुणी गुरु अगमन भूप, वांदावा जावे, लशकर परिवारहुं जी ॥ अभिगम साचवी पाच,
 गुरुपद वादे हो, सकल नर नारीहुं जी ॥ २ ॥ वेसी यथो चित लाय, देशना सुणी है,
 मन वच काया धिर करी जी ॥ तव गौतम गणधार, नवपद महिमा, भांखे मनहित धरी
 जी ॥ ३ ॥ अरिहत सिद्ध उदार, तिम आचार्य उवद्याय, साधु भणे जी ॥ दंसण ने नाण
 सार, चारित्र्य वली है, तप करे आदर घणे जी ॥ ४ ॥ प्रथम ए तप निर धार, आदर
 कीजे है, आयो शुद्धि सात्मे जी ॥ नव आंखिल निरधार, सिद्धयंत्र पूजा कीजें है,
 नित्य प्रातमें जी ॥ ५ ॥ पडिकमणां दीय टंक, खट मासे है, पूरण तप सुंदरु जी ॥ ते
 तप कीधे सार, भवि जीव पासे, सुख मनो हरु जी ॥ ६ ॥ ए नवपदने प्रभाव, वांछित
 पासे है, इह भव परभव सुख घणां जी ॥ वाचक मेरु पसाय, उदय अधिक सुख संपत्ति,
 घर नहिं मणा जी ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री चारित्र्य पदस्य चतुर्थ स्तवनं ॥
 राग सारंग ॥ भविक जिन सेव करो तुम चित लाह ॥ परमानंद परम पद दायक, जिम

नवनिधि धर आइ ॥ त्रवि० ॥ १ ॥ चारित्र चंग चतुर्गतिचूरण, त्रिभुवन कीर्ति
 जाइ ॥ ऋषि सिद्धि इह लोक लहीजे, परब्रव मुक्ति सखाइ ॥ त्रवि० ॥ २ ॥ सकल
 संसार पयोनिधि तारक, नारी नर हित दायी ॥ अष्टम पद अनोपम जनम, सुमति
 सकल गुण गाइ ॥ त्रवि० ॥ ३ ॥ ॥ इति ॥ अथ श्री नवम तपः पदस्य प्रथम
 स्तवनं ॥ अरत तप ब्रावशु ए ॥ ए देशी ॥ श्री सिद्धचक्र आराधिये ए, शिवसुख
 फल दातार ॥ नमो सिद्ध चक्रने ए ॥ नाम शकी नव निधि होवे ए, सेवतां संकट
 जाय ॥ नमो० ॥ १ ॥ अद्विधिविधन सहु उपशमे ए, जपतां नवपद ध्यान ॥ नमो० ॥
 सकल पदारथ पामीये ए, पग पग पामे निधान ॥ नमो० ॥ २ ॥ अांविब तप
 विधिशुं करो ए, जिम पामो त्रव पार ॥ नमो० ॥ जीव अनेक एहथी तर्था ए, कहेतां
 नवे पार ॥ नमो० ॥ ३ ॥ नवमे पदे तप ध्याइये ए, वार गुणे मनोहार ॥ नमो० ॥ ईशान
 दिशे करो स्थापना ए, श्वेतवर्ण सुखकार ॥ नमो० ॥ ४ ॥ कर्म निकाचित टालवा
 ए, ए तप सुरतरुकंद ॥ नमो० ॥ षड् विधि बाहिर तप कह्युं ए, षभूविध अर्च्यंतर
 जेद ॥ नमो० ॥ ५ ॥ क्रमासहित तप जे करे ए, ते पामे त्रवपार ॥ नमो० ॥ सर्व
 मंगल माहे मोटकुं ए, एहथी अनुब्रव सार ॥ नमो० ॥ ६ ॥ तप तपीयां उपशम रसें
 ए, खंधक सम अणगार ॥ नमो० ॥ एम अनेक तपे तर्था ए, कहेतां नवे पार ॥
 नमो० ॥ ७ ॥ नवमे पदे ए तप नमो ए, मन वच स्थिर करी काय ॥ नमो० ॥
 ए नवपद आराधतां ए, कर्म निकाचित जाय ॥ नमो० ॥ ८ ॥ ज्ञाश्वतां सुख

एहशी वहे ए, अजरामर पद सार ॥ नमो० ॥ गुण अनता एहमां ए, नामं जय जय
 कार ॥ नमो० ॥ ए ॥ संवत अढार सत्ताणुवे ए, शरदपूनम शनिवार ॥
 नमो० ॥ श्रीभुजनगरे विराजता ए, पार्श्वचितामणि सार ॥ नमो० ॥ १० ॥
 अचलगडें दिन करु ए, दिन दिन अधिकुं तेज ॥ नमो० ॥ सुक्तिसागर सूरि
 शोभता ए, प्रणमो भवि मन हेज ॥ नमो० ॥ ११ ॥ तास पसायें गुण स्तव्या
 ए, क्षमावात्र गुण राशि ॥ नमो० ॥ श्रीगुरु वयण पसायथी ए, सुमति वहे
 सुविदास ॥ नमो० ॥ १२ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री तपः पदस्य द्वितीय
 स्तवनं ॥ रूपत्र जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे ॥ ए देशी ॥ श्रीसिक्चक आरायो ज्ञावशु
 रे, मनोवांछित फल दोष ॥ रोग शोक त्रयवारक जाणीयें रे, ए सम जग नहिं कोय
 ॥ श्री० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज जाणीयें रे, चोथो पाठक सार ॥ साधु दर्शन
 ज्ञान चारित्रि भया रे, नयमे तप मन धार ॥ श्री० ॥ २ ॥ ए नवपद आराधतो सुख
 वहे रे, जिम नरपति श्रीपाव ॥ रोग नयोते संपदा बहु वही रे, पाम्या स्वर्ग रसाव
 ॥ श्री० ॥ ३ ॥ स्वर्ग आसु सुख पूरण अतुभवी रे, नर भव वही अचतार ॥ नर सूर
 अंतर आठ चवां वही रे, अंतं सुक्ति साधार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ एम श्रीपाव सुक्तिसुख
 जोगवे रे, ते नवपद पसाय ॥ वीजा पण भविप्राणी बहु तर्या रे, जपतां नवपद
 सार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नवमेपदुं सेवो तप भावशुं रे, श्वेतवर्ण सुख कार ॥ ईशान विदिशो
 स्थापना एहनीरे, वार गुण जयकार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ए नव पदनो महिमा सांभवी रे,

धारशो हृदय मकार ॥ ते लहे सुख स्वर्ग मुक्ति तणां रे, नरभय मंगलमाव ॥ श्री० ॥ ७ ॥
 श्री चिंतामणि पार्श्व पसायथी रे, श्रीशुजनगर मकार ॥ कहे क्मालाम ए सेवतां रे,
 सुमति लहे जयकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री तपःपदस्य तृतीय
 स्तवनं ॥ गोरी मारी आवो रसीक कर तवे रे ॥ ए देशी ॥ त्रविषण चाव धरी नित्य
 सेविये रे, साचो श्रीसिध्दचंद्र ॥ मन वच काया त्रिकरण स्थिर करी रे, आराधो ए यंत्र
 ॥ न० ॥ १ ॥ ए नवपद ध्यान केइ प्राणीया रे, पाम्या परिगल रुद्धि ॥ रोग शोक
 संकट दूरें करे रे, कहे वदी महा अड सिद्धि ॥ न० ॥ १ ॥ एणे मंत्रें पन्नग सुरपद लह्योरे,
 थयो धरणेंड पति इंद्र ॥ त्रिलपद्विपति एहने सेवतां रे, पदवी पाम्यो नरेंद्र ॥ न० ॥ ३ ॥
 वदी आकाशें जाती खेचरी रे, पाडी बाणप्रहार ॥ इण मंत्रें पंचेंद्रिय जावथी रे, थइ
 तप पांडुनी नार ॥ न० ॥ ४ ॥ कंबल ने संबल कादव काढीया रे, शकट सकल सय
 पंच ॥ अंतसेमे ए नवपद ध्यानथीरे, पाम्या सुर सुखसंच ॥ न० ॥ ५ ॥ कृष्ण जुजंगम
 घटमहिं थयो रे, आणी धर्मनो द्वेष ॥ निज गृहिणी दणवाने कारणे रे, पण थयो हार
 विशेष ॥ न० ॥ ६ ॥ एम अनेक अले नवपद तणा रे, गुणनो नहिं कोइ पार ॥
 सुरगुरु पण एम चांखी नवि शके रे, एहना यशानो विस्तार ॥ न० ॥ ७ ॥ गुणमणिमंदिर
 सिध्दचंद्र एह ठे रे, चौद पूरवनी सार ॥ चक्रेश्वरी सानिध्द एहनी करे रे, टावे विघन
 अपार ॥ न० ॥ ८ ॥ श्री सुनिचंद्र गुरु वयणें तदा रे, श्रीविमलेश्वर देव ॥ संब त्रिकि
 करे संकट सवि हरे रे, सारे अहोनिश सेव ॥ न० ॥ ९ ॥ एम जे नवपद केरा गुण

स्तवे रे, राखी त्रिकरण शुद्धि ॥ वाचक मेरुशेखर पद सेवतां रे, उदय लहे नव निधि
 ॥ त्र० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री तपःपदस्य चतुर्थं स्तवन ॥ राग विद्या
 वल ॥ आज धरे राग वधावो ॥ नवमे पदे नित्य नेह धरीजें, तपती हरण तपध्याव ॥ आ०
 ॥ १ ॥ अष्ट कर्मधन धन पावक, तास विषय जो दावो ॥ डरित छःख दारिद्र नासण,
 प्राव धरी गुण गावो ॥ आ० ॥ १॥ एह स्वरूप देखी अति सुंदर, निज चित्त शुभ्रमति
 गावो ॥ विनयसागर सुनि एम पर्ये, उं सुखसंपत्ति पावो ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति श्री
 ह्यमादात्रजी विंगेरे पंडितो विरचित नवपदनां षड्विंश स्तवनानि संपूर्णानि ॥ ॥ अथ
 श्री मुक्तिसागर सूरि कृत नवपदनी उढीना स्तवन प्रारभ्यते ॥ प्रथम स्तवन ॥ देखी
 लवनानी ॥ देश मनोहर मादवो, निरुपम नथरी उजेण लवना ॥ राज करे तिहां
 राजियो, प्रजापाद नृपाद लवना ॥ श्री सिध्दचक्र आराधिये ॥ १ ॥ ए अंकाणी ॥
 तस अंगज वे वादिका, मयणा जग विख्यात लवना ॥ जिनमती पासे विद्या न्राणी,
 चोश्रव कला विशाव लवना ॥ श्री० ॥ २ ॥ सातशे कोढीनो अधिपति, श्री श्रीपाद
 नरींद लवना ॥ परणावीमयणा तेहने, कोढीशुं धरती नेह लवना ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पीडचावो
 देव जूहारीये, रूपन जिणंद ईष्ट देव लवना ॥ पूजी प्रणमी आवीआ, गुरु पासे
 ससनेह लवना ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कहे मयणा सुणो पूज्यजी, तुम श्रावकनी देह लवना ॥
 कवण कर्म संयोगथी, केम जावो रोग एह लवना ॥ श्री० ॥ ५ ॥ गुरु कहे वत्स सांजवो,
 नहि अम अवर आचार लवना ॥ सिध्द चक्र जंत्र जोहने, करशुं तुम उपकार लवना

॥ श्री० ॥ ६ ॥ आद्यो शुद्धि सातम दिने, किञ्च उद्वी उदार लवना ॥ पाच इन्द्रियो
 वश करी, केवल त्रूमि संथार लवना ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पडिकमणां दीप टंकनां, देव
 वंदन त्रण काल लवना ॥ विधिशुं जिनवर पूजिये, गणणुं तेर हजार लवना
 ॥ श्री० ॥ ८ ॥ एम नव दिन आंविद करे, मयणा ने श्रीपाल लवना ॥ पंचामृत न्हवणे
 करी, नवरावे नरतार लवना ॥ श्री० ॥ ९ ॥ सातशे कोडीतणो, रोग गयो ततकाल
 लवना ॥ श्री श्रीपाल नरींद थया, श्री जिन धर्म पसाय लवना ॥ श्री० ॥ १० ॥ श्री
 सिद्धचक्र सेवा फली, पाभ्या सुख श्रीपाल लवना ॥ पूर्व पुण्य पसायथी, सुक्त दहे
 वरमाद लवना ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ अथ द्वितीय रतवन ॥ श्री गुरुवचन
 तप करे रे दाव ॥ स्त्री अने नरतार रे चतुर नर, श्री सिद्धचक्र सेवा करे रे दाव ॥ ए
 आंकणी ॥ त्रकि युक्ति घणी साचवे रे दाव, रहे स्वामी आवास रे ॥ चतुर ॥ श्री० ॥
 १ ॥ अरिहंतादि पहेवे पदे रे दाव, बीजे सिद्धनुं ध्यान रे ॥ चतुर ॥ बीजे आचारज
 उवधायनो रे दाव, सकल साधु प्रणमे पाय रे ॥ चतुर ॥ श्री० ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन
 चारिजनां रे दाव, गुण स्तवे चित्त उदार रे ॥ चतुर ॥ नवमे तप पूरु अयुं रे दाव,
 फल्यां वंदित काज रे ॥ चतुर ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एम नव दिन आंविद करे रे दाव
 मयणा ने श्रीपाल रे ॥ चतुर ॥ दंपति सुख वियां स्वर्गनां रे दाव, विलसे सुख
 श्रीकार रे ॥ चतुर ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सोइ जिम दीरा प्रत्ये रे दाव, आणी दीये कसी
 ताय रे ॥ चतुर ॥ मयणा वेहु कुव उर्ध्या रे दाव, श्री जिन धर्म पसाय रे ॥ चतुर ॥

॥ श्री० ॥ ५ ॥ गुरु दीवो गुरु देवता रे दाव, गुरु महोटा महिराण रे ॥ चतुर० ॥ प्रवोद,
 वि पार उत्तरिया रे दाव, जलधिषे जिम नाव रे ॥ चतुर० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जे नव पद
 गुरुजी दीयां रे दाव, धरता तेहशुं नेह रे ॥ चतुर० ॥ पुरव पुण्ये पामीया रे दाव,
 सुक्ति वर्या गुण गेह रे ॥ चतुर० ॥ श्री ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ तृतीय स्तवनं ॥ देशी
 अाठे दावनी ॥ राजप्रही जयान, समवसर्था प्रगवान, आठे दाव, श्रेणीक वंदन
 आवीया जी ॥ १ ॥ हय गय रथ परिवार, मंत्री अत्रय कुमार, आठे दाव ॥ बहु
 परिवारे परिवर्था जी ॥ २ ॥ बाधा प्रभुजीना पाय, वेवी पर्यदा वार, आठे दाव ॥ जि-
 नवाणी सुणवा त्राणी जी ॥ ३ ॥ देशना दे जिनराज, सांजदे सहु नर नार, आठे दा-
 व ॥ नवपद महिमा वर्णवे जी ॥ ४ ॥ आशो चैत्रज मास, कीजे श्योली जह्लास, आ-
 ठे दाव ॥ शुद्ध सातमथी माडिये जी ॥ ५ ॥ पच विषय परि हार, केवल प्रमि सथार,
 आठे दाव ॥ जुगते जिनवर पूजीये जी ॥ ६ ॥ जपिये श्री नवकार, देव वंदन त्रण का-
 व ॥ आठे दाव ॥ तेर हजर गणणु गणो जी ॥ ७ ॥ एम नव आविल सार, कीजे अो-
 ली उदार, आठे दाव ॥ दंपति सुख लहां स्वर्गनां जी ॥ ८ ॥ जपतां नव पद ध्यान, म-
 यणाने श्रीपाव, आठे दाव ॥ अनुक्रमे सुक्ति पद वर्या जी ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ ॥
 अथ चतुर्थ स्तवनं ॥ ॥ अलवेदांनी देशी ॥ आज उजम ठेरे अधिको, जोवा दरिस-
 ण प्रभु सुख मटको ॥ मटके मोहा रे दंदा, जाणुं मोरा प्रभुसुख पूनम चंदा ॥ श्री सि-
 चक ने रे सेवो ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ केसर चंदनरे षष्ठीवे, नवे अंगे प्रभुजीनी पूजा

रचिये ॥ पूजानां फल ठे रे मीठां, ते तो मयणायें प्रत्यक्ष दीठां ॥ श्री० ॥ १ ॥ पहेंले प-
 द् अरिहंतजी दीजें, बीजे सिध्दपद् ध्यान धरीजें ॥ बीजे आचा रज शुणीयें, उवचाय प-
 द्दनें बोधे गुणीयें ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पांचमे साधु रे प्रणमे, ठठे दरिसन ज्ञान सातमे ॥
 आठमे चारित्र रे सार, नवमे तप चार उज्ज्वलवान ॥ श्री० ॥ ४ ॥ एम नव आंविद रे
 कीजें, स्वामी वत्सल पारणुं दीजें ॥ रात्रीयें जागरण रे कीजें, स्वामी न्नाहने श्रीफल दी-
 जें ॥ श्री० ॥ ५ ॥ एकाशी आंविदे रे तप पूरुं, शक्ति सार करो उजमणुं ॥ सिध्दचक्र म-
 हिमा ठे रे रूढी, अष्ट कर्म थायेचकचूरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एम नव पदने रे ध्यातां, मयणा
 श्रीपाल जग विख्याता ॥ पुण्यें सिध्दचक्र रे सेव्यां, चाखे मुक्ति शिव वहु मेवा ॥ श्री० ॥
 ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ पंचम स्तवनं ॥ देशी हुमखडानी ॥ श्रीसिध्दचक्र आराधियें
 रे, जेना गुण अनंत ॥ जिनेश्वर पूजीयें ॥ अडविध अड बोधें करी रे, नवमी सिध्द न-
 संत ॥ जिनेश्वर पूजीयें ॥ १ ॥ चक्र वाड फिरे चक्र जुं रे, फरता पद् ठव्यां आठ ॥ जि-
 नेश्वर ० ॥ मध्यजाग वच्चें ठव्या रे, राता सिध्द जगवत ॥ जिनेश्वर ० ॥ १ ॥ ज्ञान द्-
 र्शन चारित्र गुणे रे, द्वायक समकित वंत ॥ जिनेश्वर ० ॥ कर्मपयडी अड क्रय करी
 रे, पत्तर नेदें सिध्द ॥ जिनेश्वर ० ॥ ३ ॥ लोकने अंतें जड वश्या रे, सादि अनंतमे
 ज्ञान ॥ जिनेश्वर ० ॥ जोगेश्वर पण ध्यावतां रे, आणी ठव्या निज कंठ ॥ जिनेश्वर ०
 ॥ ४ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि नमो रे, उवचाय ने सर्व साधु ॥ जिनेश्वर ० ॥ नाण दर्शन
 चारित्र तपो रे, एम नव पद् संयुक्त ॥ जिनेश्वर ० ॥ ५ ॥ नक्ति करो सिध्द चकनी रे,

जाप जपो एकांत ॥ जिनेश्वर ॥ नवे दिन आविल कर्तुं रे, मयणा ने श्रीपाल ॥ जि-
 नेश्वर ॥ ६ ॥ दुंपति नवपद सेवतां रे, पाभ्यां नवमो सर्ग ॥ जिनेश्वर ॥ आत्म अ-
 नुभव ज्ञानधीरे, मुक्ति लढे अपवर्ग ॥ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ षट्
 स्तवनं ॥ वंगालानी देशी ॥ सेवो रे त्रविजन त्रिकि त्राव, ध्यावोरे सिद्धचक्र मन उमाय
 ॥ त्रवि सांजलो ॥ आशो चैत्र मासें उमंग, कीर्जे उदी नव अत्रंग ॥ त्रवि सांजलो ॥
 १ ॥ उत्रय टंक पन्निकमणुं जाण, देव वदन पूजा त्रण काल ॥ त्रवि ॥ केसर चंदन मृगमद
 सार, पूजा रचावो थड उजमाल ॥ त्रवि ॥ २ ॥ मंगल दीवो उत्तम ध्यान, धान्य फ-
 लादिक नैवेद्य थाल ॥ त्रवि ॥ चउद पूर्वो जो ठे सार, तैणे कारण समरो नव कार
 ॥ त्रवि ॥ ३ ॥ ए सिद्धचकनी त्रिकि निमित्त, नवपद जाप जपो एकत ॥ त्रवि ॥
 जपता नवपद मयणा श्रीपाल, उवर रोग गयो ततकाल ॥ त्रवि ॥ ४ ॥ सातजो म-
 ह्निपति नमण प्रत्राव, देही पाभ्या कंचन वान ॥ त्रवि ॥ वाधी संपदा जगजस नूर,
 पाभ्या मुक्ति मुख त्ररपूर ॥ त्रवि ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ सप्तम स्तवन ॥ सि-
 ष्चक्र सेवा करो, मनमोहन मेरे ॥ जे ठे परम कृपाल, लाव मनमोहन मेरे ॥ ए-
 आकणी ॥ आविय वि वन दूरे करे ॥ मन ॥ उत्तरे त्रवपार ॥ लाव ॥ १ ॥ आ-
 शो शुद्धि सातम दिने ॥ मन ॥ कीर्जे उदी उदार ॥ लाव ॥ उत्रय टंक काजरसगा
 करो ॥ मन ॥ तजी विषय प्रमाद ॥ लाव ॥ २ ॥ केसर चंदन घशी घणां ॥ मन ॥
 ॥ पूजा रचो श्रीकार ॥ लाव ॥ धान्य फलादिक दोकीये ॥ मन ॥ फूले पगर त्रराव

॥ लाडल ॥ ३ ॥ श्री सिध्दचक्र जाकि करे ॥ मन ० ॥ मयणा ने श्रीपाल ॥ लाडल ॥
 देव वंदन काजसग्ग करो ॥ मन ० ॥ पूरव नव अर्यास ॥ लाडल ॥ ४ ॥ एम नव-
 पद विधि साचवे ॥ मन ० ॥ चार वरस खट मास ॥ लाडल ॥ दंपति नव पद सेवतां
 ॥ मन ० ॥ दहे सुकि सुख वास ॥ लाडल ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ अथ अष्टम स्तवन ॥
 धृत कल्लोल पार्श्व प्यारा रे ॥ ए देशी ॥ आशो चैतर मासें, करो मन उल्लासें रे न-
 वियां, श्री सिध्द चक्र आराधो ॥ ए आंकणी ॥ पूर्व दिशि अरिहंत, श्वेत चार गुणे
 सोहंत रे ॥ नविण ॥ श्री ० ॥ १ ॥ मध्यत्राणे सिद्ध राज, सोहे रक्त वर्ण गुण आव
 रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ दक्षिण आचार्य जेपे, पीत वाहन बनीश गुण शोभे रे ॥ न ० ॥
 श्री ० ॥ २ ॥ पश्चिम नीला पञ्चवीश, वाचक द्वादश संगीत रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ उत्तर
 दीर्घे धनवान ॥ गुण सत्यावीश सोहे तनु तापे रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ ३ ॥ नाण नसुं अ-
 न्न सुणे, एकावन उज्वल वर्ण रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ नैऋत्य सुणे दरशन राजे, धवला
 गुण सडशठ राजे रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ ४ ॥ वायु सुणे चारित्र, नला सितेर गुण प
 विन रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ ईशान खूणे तप ताजा, षट् बाह्य अर्यंतर विसाजे रे ॥ न ०
 ॥ श्री ० ॥ ५ ॥ एम नव पद जे पूजे, तेना रोग सकल तिहां भुजे रे ॥ न ० ॥ श्री ० ॥ दं-
 पति नव पद सेव्यां, चाखे गुण्ये सुकि मेवा रे ॥ न ० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ
 नवम स्तवन ॥ अजित जिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ नव पद महिमा सांजलो, वीर
 ज्ञांखे हो जिनधर्मनो मर्म के, पर्वदा चार मली तिहां, देव देवी हो नर नारीनां वंद के ॥

नव पद० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ जैनधर्म जग सुरतरु, जे सेवे हो धरी चित्त उदार के
 ॥ आ नव परत्रव सुख लहे, जेम पाम्या हो कुवर श्रीपाल के ॥ नव० ॥ २ ॥ पूजे ते
 नृप प्रणमी प्रभु, कोण नृपति हो कुंवर श्रीपाल के ॥ एणे त्रवे सुख संपदा, केम परत्र-
 वें हो लहे स्वर्ग निधान के ॥ नव० ॥ ३ ॥ कहे गौतम श्रेणिक सुणो, तुमने दाखुं हो
 श्रीपाल चरित्र के ॥ निजा विकथा परिहरो, वली सांजली हो करो श्रवण पवित्र के ॥
 नव० ॥ ४ ॥ अंग अतोपम देजामां, नृप नामें हो सिंहस्थ नृपाल के ॥ राणी कमल प्रजा
 देवी, तस अंगज हो कुंवर श्रीपाल के ॥ नव० ॥ ५ ॥ गुरुमुख नवपद उच्चर्या, नृप से-
 वे हो धरी चित्त उदार के ॥ त्रिकि करे गुरु देवनी, व्रत पावे हो समकित शुं बार के ॥
 नव० ॥ ६ ॥ पूर्वे नवपद आचर्या, श्रीकंत राजा हो श्रीकंता नार के ॥ तेणे गुण्यें ऋषि
 रमणी मली, वली देखो हो स्वर्ग नवमो कटप के ॥ नव० ॥ ७ ॥ आठ सखी श्री कंता-
 नी, ते राखे हो नव पदशुं प्रेम के ॥ ते गुण्यें नृपकुल जपनी, थइ मयणानी हो लखु पा-
 टें वेन के ॥ नव० ॥ ८ ॥ देशता सुणी नृप रंजिठ, दर्पित थयां हो नगरीनां लोक के ॥
 त्रिकि करे सिद्धचकनी, कहे धन धन हो जैन धर्म पोत के ॥ नव० ॥ ९ ॥ बाधे कमला
 कीतिने, जस प्रसरे हो गुण्य जोगे तेज के ॥ चरण कमल नित्य सेवतां, बोलावे हो व-
 ली मुक्ति रत्न के ॥ नव० ॥ १० ॥ ॥ इति श्री मुक्ति सागर स्वरि कृत नवपदनी उ-
 त्तिनां रत्नवन संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्री गोपीपार्थनाथजीनुं चोढावीशु प्रारंभः ॥ पास-
 जिणंद प्रसिद्ध सिद्ध, गोडीपुर मंडण ॥ महिमा मंदिर मोह मयण, मिथ्यात विहंडण ॥

ए कल मह्य अनेक रूप, अगणित गुण आगर ॥ त्रिभुवन बंधव धवल धिग, करुणा
 रस सागर ॥ १ ॥ जिन तुम अजव सरूप, सकल कल अकल अगोचर ॥ न लहे अ-
 लहे जतपति अगित, अति अटके जो चर ॥ दुःख वचन जीरण लिखित, अनुसारे जा-
 णी ॥ शुणहुं स्वामी निरीह पणें, सुणजो त्रवि प्राणी ॥ २ ॥ विधिपद्द गव महेंड स-
 रि, गवेश निर्देशें ॥ शाखा चारज अत्रयसिंह, सरि उपदेशें ॥ गोत्र मीठडीया जस वंज,
 पाटण पुरवासी ॥ शाह मेधो जेणें सात धात, जिन धर्म वासी ॥ ३ ॥ चौद वत्रीस
 फगण शुद्धि, बीजने नृगुवारें ॥ खेता नोडी तातमात, निज सुकृत सारे ॥ तेणें पडतो
 पास विंव, वेहवा नर त्रव फल ॥ चवधिव्ह संव हजूर हरखें, खरची धन परिगल ॥
 ४ ॥ त्रकि युक्ति अति अकित चित्त, नित्य निर्मल सारी ॥ पण पसतावे तुरक त्रयें,
 प्रतिमा त्रंभारी ॥ मलक महावल हुसन खान, कीधो जतारो ॥ पांसठे तेणें ठाम जोर,
 गुजराती वारो ॥ ५ ॥ तरल तुरंग किशोर अत्रसुर, करता ह्य हणता ॥ केइ एराकी जठ-
 लंत, खुरीयें त्रंड खणता ॥ बांधण त्याहि घोडार मांहि, खीवी खोसंतां ॥ प्रगट अथा
 तिहां पास विंव, सुख दायक संता ॥ ६ ॥ खिजमतगार नफर फजर, नजरें गुजरावे ॥
 दोड शुशाल निहाल मदक, या कोण कहेलावे ॥ वान पडिल कोड वणिक सुता, तसु हुरम
 त्रणें इम ॥ कीजे इसकूं दंडवत, सदा ताजिम दाजिम ॥ ७ ॥ यह मजवत बहुत कौत,
 हे त्रूत हिंडका ॥ धरियें इस शिर जाफसान, सिंदलका त्रूका ॥ इणी परेरहेतां तेणें ठामें-
 वोहोल्या दिन केइ ॥ सितेरे जे वात हुइ, सुणजो मन देइ ॥ ८ ॥ दाव पहे

ती ॥ चुन्डीनी देवीमां ॥ इणे अवसरें पुर पारकरें, राणो खेंगार राजान रे ॥ तैह-
 ने दरबारे दीपतो, संघवी काजल परधान रे ॥ इणे ० ॥ २ ॥ तस बन्हेवी निज कुवति-
 लो, दे वाणुंद शा वे दयाल रे ॥ मेघो खेताजत पाटणे, व्यापारकरे धूताल रे ॥ इणे ०
 ॥ ९ ॥ सुपनंतर सुर कहे शायने, वे म्नेव महोल जिन विंव रे ॥ तस दाससवासो दे-
 इने, देजो म करजो विवंव रे ॥ इणे ० ॥ ३ ॥ प्रतिमा देइ आवे गुरु कन्हें, जोइ
 कहे श्रीमरु तुग रे ॥ तुम देशें ए अति अतिशयी, तीरथ यात्रे जतंग रे ॥ इणे ० ॥
 ४ ॥ करियाणुं दइ पोहोचें धरें, सुरति ठवे रू माहे रे ॥ पंथे कोइ न गणे पोठीआ, वांध्यो
 धणो मोह जहाहें रे ॥ इणे ० ॥ ५ ॥ समजावे नासुं शेठने, जपे देजो मुज रास रे ॥
 मामो ए नामें माहरे, प्रतिमा रहेशे अम पास रे ॥ इणे ० ॥ ६ ॥ मेघोकहे लेखो राखसुं,
 पण ते सवलो तिण ठाम रे ॥ गामुं नरी चाले थल दिशें, वासो वसे गोडी गाम रे ॥
 इणे ० ॥ ७ ॥ सुहणे सुर कहे गहुची जिहां, माडो प्रासाद मंडाण रे ॥ नाणुं तिहां धन
 श्रीफल तलें, मीतुं जल पाहाणनी खाण रे ॥ इणे ० ॥ ८ ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ ॥ निड-
 डी वेरण हुद रही ॥ ए देवी ॥ हांजी उदयपाल ठाकुर तिहां, जोरावर हो खेतशी वु-
 णोत के ॥ इहां रहो निरनय शाहजी, आदरशुं हो कहे देइ महोत के ॥ धन धन गोडी जग
 धणी, पोहवी पाले हो प्राजो जस पीठ के ॥ धन ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आवे शिवाट दे-
 शांतरी, यक्ष प्रयो हो करे प्रथम तैयार के ॥ नूमि कलं प्रयु वेसवा, रहें चिहुं दिशि हो
 लशकर हुशियार के ॥ धन ० ॥ २ ॥ पुखती वंधावी पीठिका, वर दिवसं हो जाणे अ-

हिनाण के ॥ सखर गजरो शिखरशुं, मध्य मंडप हो सवि मोक्ष मंडाण क ॥ धन० ॥
 ३ ॥ पवासणे वेठा पासजी, नरोळ करी हो पूजे नवे नाव के ॥ सजल मधुर जल लह-
 कती, वरदायी हो वंधावी वाव के ॥ धन० ॥ ४ ॥ एहवे चउद चोराणुये, आशुयोगे
 हो कर्णे भेधे काल के ॥ नाणेजो आणी घरे, काजलशा हो करे चैत्यनी, चाल के ॥
 धन० ॥ ५ ॥ रंग मंडप रचना वनी, अति जंचा हो थंन तामोताम के ॥ कौडे कर-
 वे कोरणी, वित वावरी हो थिर कीधुं ठे नाम के ॥ धन० ॥ ६ ॥ वली रे महाजनना
 सहा यशुं, मेधाना हो सुत चववे काम के ॥ मुख्य मंजप शुन मांडणी, करी जिनहर
 हो जो वंध अत्रिराम के ॥ धन० ॥ ७ ॥ चोवीशवट्टो पंचाणुं, तेणे थाप्यो हो आगल
 रही जेह के ॥ चोवीश गोत्रनी देहरी, महाजननी हो फरती ठे तेह के ॥ धन० ॥
 ८ ॥ टाल त्रीजी ॥ धण रा होला ॥ ए देशी ॥ इणी परें वत्तेंवेहुने रे, मांहो मांहें विवाद
 ॥ गिरुळ गोडी ॥ गोडी गाजेजी जिणुंद, तेजें दीपेजी दिणुंद, जग महिमा अगम अपार
 ॥ गिरु० ॥ ए अंकणी ॥ पण सरखा राखे प्रशु रे, वधवा न दीये विष वाद ॥ गिरु० ॥
 २ ॥ वनेवी महेटो दशे रे, ए ठे पूजक प्राय ॥ गिरु० ॥ मेधानां संतत हजी रे, तेणे
 गोती कहेवाय ॥ गिरु० ॥ ९ ॥ शिखर दंड वडी ध्वजा रे, चढतां करे रे कलेश ॥ गिरु०
 ॥ आज लगें ठे एहने रे, इम बहु वचन विशेष ॥ गिरु० ॥ ३ ॥ अंगुली बांधी एकती
 रे, पूजन दीजे कदाप ॥ ताकुर वे नही मंडकुं रे, ए विहुतुं अथाप ॥ गिरु० ॥ ४ ॥ उ-
 दयवंत अति जजला रे, विधिपक्क श्रावक वेह ॥ गिरु० ॥ तेखदार दिव दोवती रे,

प्रभुजीशुं पूरण सनेह ॥ गिरु ० ॥ ५ ॥ समकेत धारी जागतो रे, धिग धवल धर धीर
 ॥ गिरु ० ॥ साह्य करी आगल रह्यो रे, खगधर खेतल वीर ॥ गिरु ० ॥ ६ ॥ अधिकुं उ
 तु जे कह्युं रे, ते खमजो महाराज ॥ गिरु ० ॥ ठेकाणा बध पण खरी रे, वात ठे गरीब
 निवाज ॥ गिरु ० ॥ ७ ॥ पहेंदां स्तवन त्रायां घणां रे, तिहां काळा संवाद ॥ गिरु ० ॥ स-
 ज्ञान साचो सहजजो रे, शो रे जूतामां सवाद ॥ गिरु ० ॥ ८ ॥ ॥ ढाल पांचमी
 ॥ राग धन्याश्री अथवा आशावरी ॥ जयो जयो गोडी पास जिनेसर, तक्त वत्सल त्र-
 गवान रे ॥ देवल वार ने वीजी रे प्रतिमा, विषमा अल विच शान रे ॥ जयो ० ॥ १ ॥
 आद्युध धारी नीले घोडे, आप अद असवार रे ॥ किहां रे वालक अवधूत जुजंगम, दे-
 खाडे दीदार रे ॥ जयो ० ॥ २ ॥ आवे संघ अनेक विदेशी, निरुपम महिमा गाट रे ॥
 चोर चरडनुं कांड न चाले, विघ्न निवारे वाट रे ॥ जयो ० ॥ ३ ॥ जंगल तूट्या रावें जा-
 तु, ततक्षण देता नाम रे ॥ दीवी रे धरी मार्ग देखाडे, मूर्के चिंतित ताम रे ॥ जयो ०
 ॥ ४ ॥ दरिया विचमाहे वाहाण डोवंता, समस्तां दीये साद रे ॥ सयल असुर सुर नर-
 वर सेवे, नवि लोपे मरजाद रे ॥ जयो ० ॥ ५ ॥ विष हर वैरी व्याधि वैश्वानर, त्रयत्रां-
 जे हरि त्रात रे ॥ प्रायें केवने अधिक न राखे, पच दिवस उपरांत रे ॥ जयो ० ॥
 ६ ॥ आ त्रवे वंचित सकल होवे पण, कर्म निविडबंध कोय रे ॥ ध्यान शुद्धं समकित
 निर्मलता, स्वर्ग सुक्ति फल होय रे ॥ जयो ० ॥ ७ ॥ डव्य त्राव विधि पूजो त्राणमो, ना-
 म जपो नर नार रे ॥ स्तवन त्राणो मद मत्सर मूर्की, उत्पत्ति साची मन धार रे

॥ जयो० ॥ ८ ॥ कवच ॥ इम शुष्यो गोडीपस स्वामी, हुकुम पामी जेहनो ॥ दशादिशे
 पसरतो अरति हरतो, प्रगट परतो जेहनो ॥ श्री अमर सागर सूरि अंचल, गढपति
 राठ पसाडवे ॥ पय नमी लखमीचंद्र वाचक, शिल्प दावाण्य इम त्रणे ॥ ९ ॥ इति श्री
 गोडी पारसनाथजीनुं चोढावीथुं संपूर्णः ॥ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनां पांच कट्या-
 णिकनुं चोढावीथुं प्रारंभः ॥ दोहा ॥ भ्रमे प्रणमुं सरस्वती, मातुं अक्षिरव वाणि ॥ वीर
 तणा गुण गायथुं, पंच कट्याणिक जाणि ॥ १ ॥ गुण गातां जिनजी तणा, लहीए त्रव-
 नो पार ॥ सुख समाधि दोय जीवनें, सुणजो सहु नर नार ॥ २ ॥ दाज पहेवी ॥ चावो
 गरवो रमीए रूडा रामथुं जो ॥ ए देशी ॥ जंबू द्वीपना नरनमां जो, रुडुं माहणकुंड वे नाम
 जो ॥ ऋष्यदत्त माहणतिहां वसे जो, तस नारी देवानंदा नाम जो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो
 जिनजी तणां जो ॥ ए अंकाणी ॥ जेम समकित निर्मल थाय जो ॥ अष्ट माहासिद्धि
 संपजे जो, वली पातक दूर पलाय जो ॥ चरित्र० ॥ २ ॥ उजवी ठठ आवाढनी जो,
 योगे उत्तरा फाल्गुनी सार जो ॥ पुष्कोत्तर सुविमानथी जो, चवी कुंखें दीयो अवतार
 जो ॥ चरित्र० ॥ ३ ॥ देवानंदा तेणी रयणीयें जो, सुतां सुपन लह्यां दश चार जो ॥
 फल पूढे निज कंतने जो, कहे ऋष्यदत्त मनधार जो ॥ चरित्र० ॥ ४ ॥ त्रोग अरथ सु-
 ख पामथुं जो, तमें देहेशो पुत्र रतन जो ॥ देवानंदा ते सांत्रवी जो, कीथुं मनमां तह-
 ति वचन जो ॥ चरित्र० ॥ ५ ॥ संसारिक सुख त्रोगवे जो, सुणो अचरज हूज तेणी
 वार जो ॥ सुधर्म इंड तिहां कणे जो, जोड अवधि तणे अनुसार जो ॥ चरित्र० ॥ ६ ॥

चरम जिणेश्वर ऋषना जो, देखी हरख्यो इंद्र महाराज जो ॥ सात आठ पग सामो
 जइ जो, एम बंदन करे शुभ साज जो ॥ चरित्र० ॥७॥ शक्र रतव विधियुं करी जो, फरी
 वेणो सिंहासन जाम जो ॥ मन विमासणमा पड्युं जो, चित्त चिंतवे सुरपति ताम जो ॥ च-
 रित्र० ॥ ८ ॥ जिन चक्री हरि रामजी जो, अंतपंत माहण कुवं जोय जो ॥ आव्या नही
 नही आव्यो जो, एतो उग्र योग राजकुल होय जो ॥ चरित्र० ॥ ९ ॥ अंतिम जिणेश-
 वर आविया जो, एतो माहणकुलमां जेण जो ॥ एतो अठेरा नूत ठे जो ॥ थयुं हुडा
 आवसर्पिणी तेण जो ॥ चरित्र० ॥ १० ॥ काळ अनंत जाते थके जो, एह्यां दया अ-
 ठेरां थाय जो ॥ इण आवसर्पिणीमा थया जो, ते कहीयें जे चित्त लाय जो ॥ चरित्र० ॥
 ११ ॥ गर्भ हरण उपसर्गनो जो, मूल रूपे आव्या रवि चंद्र जो ॥ निष्कल देशना जे
 थई जो, गयो सौधर्म चमरेंद्र जो ॥ चरित्र० ॥ १२ ॥ ए श्री वीरनी वारमां जो, कृष्ण
 अमर कंका गया जाण जो ॥ नेम नाथने वारे सही जो, स्त्री तीर्थ मल्ली गुण खाण जो
 ॥ चरित्र० ॥ १३ ॥ एकसो आठ सिखा ऋषयने जो, वार सुविधिने असंयति जो ॥
 शीतल नाथ वारे थयु जो, कुल हरिवंशनी उतपत्ति जो ॥ चरित्र० ॥ १४ ॥ एम विचार करे
 इदलो जो, प्रभु नीच कुले अवतार जो ॥ तेहनुं कारण शुं अठे जो, इम चितवे हृदय
 मोऊर जो ॥ चरित्र० ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ दाव वीजी ॥ आशो मासें शरद पून-
 मनी रात जो ॥ ए देखी ॥ प्रव मोहोटा कहीए प्रभुना सत्तावीश जो, मरिची त्रिदंडी ते
 मंदि त्रीजे प्रवे रे जो ॥ तिहां प्ररत चक्रीसर वांहे आव्या जोय जो, कुलनो मद करी

नीच गोत्र बांधुं तेह्वे रे जो ॥ १ ॥ एतो माहण कुदमां आठ्या जिनवर देव जो, अ-
ति अणजुगतुं एह थयु थाजे नही रे जो ॥ जे जिनवर चकी नीच कुल माहें जो, ठे
माहारो आचार धरुं उत्तम कुले सही रे जो ॥ १॥ एम चितवी तेज्योहरिणगमेधी देव जो,
कहे माहण कुंडे जइने ए कारज करो रे जो ॥ ठे देवानंदानी कुंखे चरम जीणंद जो ॥
हर्ष धरीने प्रयुनें तिदांथी संहरो रे जो ॥ ३ ॥ नयर क्क्रीकुंड राय सिंशरथ गेह जो, त्रिश-
दा राणी तेहनी ठे रूपे जली रे जो ॥ तस कुंखें जइ संक्रमावो प्रयुने आज जो, त्रिश-
दानो जे गर्भ अठे ते माहण कुदें रे जो ॥ ४ ॥ जेम इंदे कहुं तेम कीधुं ततकण तेण
जो, व्याथी रातने अंतरे प्रयुने संहर्या रे जो ॥ माहणी सुपनां जाणे त्रिशदा हरीने
लीध जो, त्रिशदा देखी चौद सुपन मनमां धर्या रे जो ॥ ५ ॥ गज टुपज अने सिंद
लक्ष्मी फूजनी माद जो, चंदो सूरज ध्वज कुंज पद्मसरोवर रे जो ॥ सागरने देव
विमानज रत्ननी राशि जो, चौदमे सुपने देखी अग्नि मनोहरु रे जो ॥ ६ ॥ शुभ
सुहणा देखी हरखी त्रिशदा नार जो, परजाते जठिने पीयु आगद कहे रे जो ॥
ते साजली दिवमां राय सिंशरथ नेह जो, सुपनपाठक तेडीने पूठे फल लहे रे जो ॥
॥ ७ ॥ तुम होशे राज अरधने सुत सुख जोग जो, सुणी त्रिशदा देवी सुखे गर्भ पोषण
करे रे जो ॥ तव माता हेते प्रयुजी रह्या संदीन जो, ते जाणीने त्रिशदा छःख दिवमां धरे
रे जो ॥ ८ ॥ में कीधां पाप अघोर जयो जव जेह जो, देव अटरो दोषी देखी नवि
शके रे जो, सुद गर्भ हर्यां जे केम पासुं हवे तेह जो, रांकतणे धर रत्न चिंतामणि किम

टके रे जो ॥ ९ ॥ प्रभुजीए जाणी ततखिण डखनी घात जो, मोह विटवन जादीम
जगमा जे लहुं रे जो ॥ जुळ दीठा विण पण एवढो जणे मोह जो, नजरे बांध्या प्रे-
मनुं कारण शुं कहुं रे जो ॥ १० ॥ प्रभुगर्भ थकी हवे अनिप्रह दीर्घो एह जो, मात
पिता जीवतां संयम वेशुं नदी रे जो ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्युं अंग जो,
मातने मन ऊपन्यो हर्ष घणो सही रे जो ॥ ११ ॥ अहो प्राग्य अमारु जायुं स-
हियर आज जो, गर्भ अमारो हाव्यो सहु चिंता गड रे जो ॥ एम सुखनर रहतां पूरण
हुवा नव मास जो, तेऊपर वदी साढी सात रयणी थई रे जो ॥ १२ ॥ तव चैत्र तणी
शुद्धि तेरस उत्तरा रिक्त जो, जन्म्या श्रीजिन वीर हुई वधामणी रे जो ॥ सहु धरणी
विकसी जगमां थयो प्रकाश जो, सुर नरपति घर टुष्टि करे सोवन तणी रे जो ॥ १३
॥ ॥ दाव वीजी ॥ माहारी सहीरे समाणी ॥ ए देशी ॥ जनम समय श्रीवीरनो जाणी,
आवी टप्पन कुमारी रे ॥ जग जीवन जिनजी ॥ जनम महोत्सवकरी गीतज गाये, प्रभु-
जीनी जाळं बलिहारी रे ॥ जग ० ॥ १ ॥ ततक्षण इंद्र सिंहासन दाव्युं, घोष घंटा वज्रमावी
रे ॥ जग ० ॥ मलिया कोडी सुरासुर देवा, मेरु पर्वते आवी रे ॥ जग ० ॥ २ ॥ इंद्रो
पंच रुपें प्रभुजीने, सुरगिरि ऊपर दावे रे ॥ जग ० ॥ यत्नकरी हियडामां राखे, प्रभुने
शीश्र नमावे रे ॥ जग ० ॥ ३ ॥ एक कोडी साठ दाख कवशना, निर्मल नीरे, त्रिरिया
रे ॥ जग ० ॥ नहानो दावक ए केम सहेशे, इंद्रे संशय धरिया रे ॥ जग ० ॥ ४ ॥
अतुलिवल जिन अवधे जोई, मेरु अंगुठे चंभ्यो रे ॥ जग ० ॥ पृथिवी दाव कळोव

धई तव, धरणीधर तिहां कंच्यो रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ जिननुं वल देखीने सुरपति, त्रिक
 करीने खमावे रे ॥ जग० ॥ चार दुषभनां रूप धरीने, जिनवरने नवरावे रे ॥ जग० ॥
 ६ ॥ अमृत अंगुठे थापीने, माता पासे भेले रे ॥ जग० ॥ देव सहु नंदीसर जाये,
 आवतां पातक ठेले रे ॥ जग० ॥ ७ ॥ हवे प्रजाते सिंशरथ राजा, अति घणां उजव
 मंडावे रे ॥ जग० ॥ चकले चकले नाच करावे, जगतना दाण लंडावे रे ॥ जग०
 ॥ ८ ॥ वारसे दिवसे सज्जन संतोषी, नाम दीधुं वर्धमान रे ॥ जग० ॥ अनुक्रमे वध-
 ता आठ वरधना, हुआ श्रीजगवान रे ॥ जग० ॥ ९ ॥ एक दिन प्रजुजी रमवा चा-
 ल्या, तेव तेवडा संघाती रे ॥ जग० ॥ इंड मुखे प्रशंसा निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती
 रे ॥ जग० ॥ १० ॥ पद्मनरूपे जाडे वलग्यो, प्रजुजीए नांख्यो जाली रे ॥ जग० ॥
 ताड समान वली रूप कीधुं, सुठीए नांख्यो जाली रे ॥ जग० ॥ ११ ॥ चरणे नमी-
 ने खमावे ते सुर, नाम धरे महवीर रे ॥ जग० ॥ जेहवा तुमने इंडे वखाण्या, तेहवा
 जो प्रजु धीर रे ॥ जग० ॥ १२ ॥ मात पिता नियाले त्राणवा, मुके वातक जाणी रे
 ॥ जग० ॥ इड आवी तिहां प्रश्रज पूजे, प्रजु कहे अर्थ वखाणी रे ॥ जग० ॥ १३ ॥
 जौवन वय जाणी प्रजु परण्या, नारी जसोदा नामे रे ॥ जग० ॥ अक्यावीजे वरषे प्रजु-
 नां, मात पिता स्वर्ग पासे रे ॥ जग० ॥ १४ ॥ चार्डजीनो आग्रह जाणी, दीय वरस
 धर वासी रे ॥ जग० ॥ तेहवे लोकांतिक सुर बोले, प्रजु कहो धर्म प्रकाशी रे ॥ जग०
 ॥ १५ ॥ ॥ ढाल चौथी ॥ ॥ तारे माथे पंचरंगी पाव सोनारो जोगलो मारुजी ॥

ए देशी ॥ प्रभु आपी वरसी दान प्रभुं रवि जगते ॥ जिनवरजी ॥ एक कोडी ने अठ
 लाख सोनइया दिन प्रत्ये ॥ जिन० ॥ मगशिर वदि दशमी उत्तरा योगे मन धरी ॥
 जिन० ॥ जार्दनी अनुमति मानी नें दीक्षा वरी ॥ जिन० ॥ १ ॥ तेइ दिवसधकी चज-
 नाणी प्रभुजी थया ॥ जिन० ॥ साधिक एक वरसते चीवरधारी प्रभु रह्या ॥ जिन० ॥
 पवी दीधु वंजणने वे वार खंनो खंडे करी ॥ जिन० ॥ प्रभु विदार करे एकाकी अत्रिप्रह-
 चित्त धरी ॥ जिन० ॥ २ ॥ साडा वार वर्षमा घोर परिसह जे सह्या ॥ जिन० ॥ शूलपा-
 णिने संगम देव गोशालाना कह्या ॥ जिन० ॥ चंडकोशीने गोवाले खीर रांधी पग ऊपर
 ॥ जिन० ॥ काने खीला खोस्या ते छट सहु प्रभु उरुरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ देइ अमदना
 वाकला चंदन वाला तारिया ॥ जिन० ॥ प्रभु पर उपकारी सुख दुःख सम धारीया
 ॥ जिन० ॥ वमासी वे ने नव चोमासी कहीये रे ॥ जिन० ॥ अढीमास त्रिमास दोढ-
 मास ए वे वे लहीये रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ खट कीधा वे वे मास प्रभु सोढामणा ॥ जिन०
 ॥ वार मासने पख व्होतर ते रवीयामणा ॥ जिन० ॥ लठ वसें जगणवीश वार अठ-
 म वखाणीये ॥ जिन० ॥ प्रजादिक प्रतिमा दिन वे चौदश जाणीये ॥ जिन० ॥ ५ ॥
 साडा बारवरषे तप कीधां विण पाणीये ॥ जिन० ॥ पारणां त्रणसें जगण पचाश ते
 जाणीये ॥ जिन० ॥ तव कर्म खपावी ध्यात शुक्ल मन ध्यावता ॥ जिन० ॥ वैजाख शु-
 दि दशमी उत्तरा योगे सोहावता ॥ जिन० ॥ ६ ॥ शादितुकर तवे प्रभु पाभ्या केवल
 नाण रे ॥ जिन० ॥ लोकालोक तणा प्रकारी थया प्रभु जाण रे ॥ जिन० ॥ इंद्रजति

प्रमुख प्रतिबोधी गणधर-कीध रे ॥ जिन० ॥ संघ स्थापना करीने धर्मनी देशना । दी-
 ध रे ॥ जिन० ॥ ७॥ चौद सहस्र जवा अणगार प्रभुने शोभता ॥ जिन० ॥ वली साधवी
 सहस्र उत्रीश कही निर्बोभता ॥ जिन० ॥ जगणसाठ सहस्र एकवाख ते श्रावक संपदा
 ॥ जिन० ॥ तिन दाख ने सहस्र अद्वार ते श्राविका समुदा ॥ जिन० ॥ ८ ॥ चौद पु-
 रंधारी त्रणशे संख्या जाणीये ॥ जिन० ॥ तेरशे उद्विनाणी सातशे केवली वखाणीये
 ॥ जिन० ॥ द्वाद्विधधारी सातशे विपुलमति वली पांचशे ॥ जिन० ॥ वली चारशे वादी ते प्रभुजी
 पासें वसे ॥ जिन० ॥ ९ ॥ शिष्य सातशे ने वली चौदशे साधवी सिद्धयथा ॥ जिन० ॥
 ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां मन गहगह्यां ॥ जिन० ॥ प्रभुजीये त्रीश वरस धर वासें
 जोगव्या ॥ जिन० ॥ बद्धमस्थपणामां वार वरस ते जोगव्यां ॥ जिन० ॥ १० ॥ त्रीश
 वरस केवल वेहेतादीश वरस संयमपणुं ॥ जिन० ॥ संपूरण वर्दोत्तेर वरस अ्यायु श्रीवी-
 रतणुं ॥ जिन० ॥ दीवादी दिवसे स्वाती नक्षत्र सोहंकरु ॥ जिन० ॥ मध्वरातें मुक्ति
 पहीता प्रभुजी मनोहरु ॥ जिन० ॥ ११ ॥ ए पांच कट्याणिक चोवीशमा जिनवर
 तणां ॥ जिन० ॥ ते त्रणतां गुणतां हरख होये मनमां घणा ॥ जिन० ॥ जिनशासन
 नायक त्रिशवा सुत चित्त रजणो ॥ जिन० ॥ त्रवियणने शिव सुखकारी त्रवत्रय त्रं-
 जणो ॥ जिन० ॥ १२ ॥ कलश ॥ जय वीरजिनवर संघ सुखकर, शुण्यो अति उत्सुक
 धरी ॥ संवत सत्तर एक्याशीये, सुरत चोमांसु करी ॥ श्री सहज सुंदर तणो सेवक,
 त्रकिशुं एणी परें कहे ॥ प्रभुजी शुं पूरण प्रेम पाम्यो, नित्यवात्र वंदित वहे ॥ १३ ॥ इति

श्रीमहावीरस्वामीना पाच कट्याणिकतुं चोढावीयुं संपूर्णं ॥ ॥ अथ श्री आनंदधन
 कृत ऋषभप्रमुख चोवीश जिनस्तुति प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चिदानंद आनंदमय,
 चिदरूपि अतिकार ॥ सिद्धबुद्धसुविशुद्धतुं, तुं जग परमाधार ॥ १ ॥ तुज कृपावताथी कंतं,
 ज्ञाषात्राधार ॥ तवना जिन वावीशनी, आनंदधन रस कूप ॥ २ ॥ राजशुद्धि जेम
 देखीने, डमक करे मन आश ॥ बुद्धिशुद्धि विण हुं डमक, अरथराज शुद्धि राश ॥ ३ ॥
 आशय आनंद धन तणो, अतिगंभीर ऊदार ॥ वाढक वाह प्रसारी जिम, कहै ऊदधि
 विस्तर ॥ ४ ॥ तेम मनोरथ मुज मने, बुद्धिविण केम थाय ॥ गुरुकृपाथी गहन नग,
 पंगु पार लंघाय ॥ ५ ॥ श्री ज्ञाषा ज्ञापातणी, को एहहुं कहि देय ॥ पीस्यहुं शुं पीसहुं,
 पीसें ठाण न वेय ॥ ६ ॥ ॥ श्री ऋषभजिन स्ववन प्रारभ्यते ॥ राग मारु ॥ करम
 परीक्षा करण कुंवर चट्यो रे ॥ ए देशी ॥ ऋषभजिनेश्वर प्रीतम माहरो रे ॥ ओर न
 चाहुं रे कंत ॥ रीठयो साहेव संग न परिहरे रे ॥ जगो सादि अनंत ॥ ऋषभ ० ॥ १ ॥
 प्रीतसगार्द्ध रे जगमां सहु करे रे ॥ प्रीतसगार्द्ध न कोय ॥ प्रीतसगार्द्ध रे निरुपाधिक
 कही रे ॥ सोषाधिक धन खोय ॥ ऋषभ ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काट जहण करे रे ॥
 मिलशुं कंतने थाय ॥ ए भेलो नवि कहियें संजवे रे ॥ भेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषभ ० ॥ ३ ॥
 कोइ पति रंजन अतिषणो तप करे रे ॥ पतिरंजन तन ताप ॥ ए पतिरंजन में नवि
 चित्तधरुं रे, रंजनधातु मिलाप ॥ ऋषभ ० ॥ ४ ॥ कोइ कहै वीजारै लखव अखख
 तणी रे ॥ लख पूरे मन आश ॥ दोपरहितने वीजा नवि घटे रे ॥ वीजा दोष विवास ॥

ऋषभ० ॥ ५ ॥ चित्तप्रसन्नो रे पूजन फल कह्युं रे ॥ पूज अखंडित एह ॥ कपटरहित
 शइ आतम अरपणा रे ॥ अणंदधन पद रेह ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री
 अजितजिन स्तवनं ॥ राग आशाजरी ॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचर्वे रे ॥ ए देशी ॥
 पंथडो निहाडुरे बीजा जिनतणो रे ॥ अजित अजित गुण धाम ॥ जे तें जीत्यारे तेणे हुं
 जीतिज रे ॥ पुरुष किर्युं सुज नाम ॥ पंथडो ॥ १ ॥ चर्म नयण करी मारण जोवतो रे
 ॥ न्रूवो सयल संसार ॥ जेणे नयणे करी मारण जोइये रे ॥ नयण ते दीव्य विचार
 ॥ पंथभो ॥ १ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे ॥ अंधो अंध पुढाय ॥ वस्तु विचा-
 रेरे जो आगमं करी रे ॥ चरण धरण नही ताय ॥ पंथडो ॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे
 वाद परंपरा रे ॥ पार न पदोंचे कोय ॥ अन्निमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे ॥ ते विरला
 जग जोय ॥ पंथडो ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दीव्य नयनतणो रे ॥ विरह पड्यो निरधा-
 र ॥ तरतम जोगें तरतम वासना रे ॥ वासित बोध आधार ॥ ५ ॥ काल दवाधि दही
 पंथ निहावशुं रे ॥ ए आस्था अविदंब ॥ ए जनजीवरे जिनजी जाणजो रे ॥ अणंद
 धन मत अंब ॥ पंथभो ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ अथ श्री संभव जिन रत्नवन ॥ राग
 रामगिरि ॥ रातनी रमिने किहांथी आविया रे ॥ ए देशी ॥ संभव देव ते धुर सेवो
 सर्वे रे ॥ लही प्रभु सेवन नैद ॥ सेवन कारण पहेवी न्रूमिका रे ॥ अत्रय अद्वैप
 अखेद ॥ संभव ॥ १ ॥ त्रयचंचलता हो जे परणामनी रे ॥ द्वेष अरोचक प्राव ॥ खेद
 प्रवर्तिहो करतां याकीधें रे ॥ दोष अवोध दखाव ॥ संभव ॥ १ ॥ चरमावर्तहो

चरम करण तथा रे ॥ जवपरिणति परिपाक ॥ दोष टवे वली दृष्टी खुवे ज्ञानी रे ॥
 प्राप्ति प्रवचन वाक ॥ संजव० ॥ ३ ॥ परिचय पातिक धातिक साधुस रे ॥ अकुशल
 अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे ॥ परिशीलन नय हेत ॥ संजव०
 ॥ ४ ॥ कारण जोगेहो कारण नीपजे रे ॥ एमां कोड न वाद ॥ पणकारण विण कारण
 साधिये रे ॥ ए निज मत जन्माद ॥ संजव० ॥ ५ ॥ सुग्रह सुगम करी सेवन आदरे रे
 ॥ सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे ॥ आनंदधन रसरूप ॥
 सजव० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री अत्रिनंदन जिन स्तवनं ॥ राग धन्याश्री
 सिधुओ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥ अत्रिनंदन जिन दरशन तरसिये
 ॥ दर्शन डर्लज देव ॥ मतमत नेद रे जो जड पूविये, सहु थापे अहमेव ॥ अत्रिनंदन०
 ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिशाण दोहिटुं ॥ निरणय सकल विशेष ॥ मदमे धेयो रे अंधो
 केम करे ॥ रवि शशि रूप विवेख ॥ अत्रिनंदन० ॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चितधरी जोइये ॥
 अति दूरगम नय वादा ॥ आगमवादें हो गुरुगमको नही ॥ ए सबलो विखवादा ॥ अत्रिनंदन०
 ॥ ३ ॥ धाति डुगर आडा अतिघणा ॥ तुज दरिशाण जगनाथ ॥ धीठार्द करी मारग
 संचरं ॥ सेंगूकोड न साध ॥ अत्रिनंदन० ॥ ४ ॥ दरशाण दरशाण रटतो जो फरुं ॥ तो राण
 रोऊ समान ॥ जेहने पीपासा हो असत पाननी ॥ किम राजे विष पान ॥ अत्रिनंदन०
 ॥ ५ ॥ तरसन आवे हो मरण जीवन तणो ॥ सीजे जो दरिशाण काज ॥ दरिशाण
 दर्लज सुलज कृपा थकी ॥ आनंदधन महाराज ॥ अत्रिनंदन० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥

अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥ राग वसंत तथा केदारो ॥ सुमती चरण कण आतम
 अरपणा ॥ दरपण जिम अविकार ॥ सुभ्यानी ॥ मति तरपण बहु सन्मत जाणीये ॥
 परिसरण सुविचार ॥ सुभ्यानी ॥ सुमति ० ॥ १ ॥ त्रिविध शकव तनुं धरगत आतमा
 ॥ वहिरातम धूरी भेद ॥ सु ० ॥ बीजो अंतर आतम तिसरो ॥ परमातम अविभेद
 ॥ सुभ्यानी ॥ सुमति ० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे कायादिके ग्रहो ॥ वहिरातम अव्यरूप ॥ सुभ्यानी
 ॥ कायादिकनो हो साखी धर रह्यो ॥ अंतर आतम रूप ॥ सुभ्यानी ॥ सुमति ०
 ॥ ३ ॥ ज्ञानानंद हो पूरण पावतो ॥ वरजित सकल उपाधि ॥ सुभ्यानी ॥ अतिद्विय
 गुण गण मणि आगरू ॥ इम परमातम साध ॥ सुभ्यानी ॥ सुमति ० ॥ ४ ॥ वहिरात-
 म तज अंतर आतमा ॥ रूप थई थिर जाव ॥ सुभ्यानि ० ॥ परमातमनुं हो आतम जावहुं
 ॥ आतम अरपण दाव ॥ सुभ्यानी ॥ सुमति ० ॥ ६ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां
 ॥ नरमदवे मति दोष ॥ सुभ्यानि ० ॥ परम पदारथ संपति संपजे ॥ आनंदधन रस पोष
 ॥ सुभ्यानी ॥ सुमति ० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री पद्मप्रज्ञ जिन स्तवनं ॥ राग
 मारु तथा सिंधुओ ॥ चांदवीया सदेशो कहेजे मारा कंथने रे ॥ ए देशी ॥ पद्मप्रज्ञ-
 जिन तुळ सुळ आंतरं रे ॥ किम चांजे जगवंत ॥ करमविपाके कारण जोइने रे ॥ कोइ
 कहे मतिमंत ॥ पद्मप्रज्ञ ० ॥ १ ॥ पयइतिई अणुजाग प्रदेशथी रे ॥ मूल उत्तर बहु
 नैद ॥ घाति अघाति हो बंधूदय ऊदिरणा रे ॥ सता करम विभेद ॥ पद्मप्रज्ञ ० ॥ २ ॥ कन-
 कोपलवत् पयडि पुरसतणी रे ॥ जोडी अनादि स्वभाव ॥ अन्य संजोगी जिहां लगे

आतमा रे ॥ संसारी कहेवाय ॥ पद्मप्रभ० ॥ ३ ॥ कारण जोंगे हो बंधे बंधने रे ॥ कार-
 ण सुगति मुकाय ॥ आश्रव संवरनाम अनुक्रमे रे ॥ हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥
 ४ ॥ धूजन करणे हो अंतर तुळ पड्यो रे ॥ गुणकरणे करी त्रंग ॥ प्रथ उर्कतेकरी पं-
 डित जन कह्यो रे ॥ अंतर त्रंग सुख्यं ॥ पद्म प्रभ० ॥ ५ ॥ तुळ सुळ अंतर अंतर
 जाजसे रे ॥ वाजसे मंगल तूर ॥ जीवसरोवर अतिशय वाधसे रे ॥ आनंदधन रसपूर
 ॥ पद्म प्रभ० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सुपार्थ जिन स्तवन ॥ ॥ राग सारंग
 मद्दर ॥ लवनाती देशी ॥ श्रीसुपास जिन वंदिये ॥ सुखसंपत्तिने हेतु ॥ लवना ॥
 शांत सुशरस जल निधि ॥ त्रवसागरमां सेतु ॥ लवना ॥ श्रीसुपास० ॥ १ ॥ सात म-
 हा त्रय टाळतो ॥ सप्तमजिनवर देव ॥ लवना ॥ साव धान मन सा करी ॥ धारो जिनपद-
 सेव ॥ लवना ॥ श्रीसुपास० ॥ २ ॥ शिवशंकर जगदीश्वरु ॥ चिदानंद त्रगवान ॥ लवना
 ॥ जिन अरिदा तीर्थंकर ॥ ज्योतिष रूप असमान ॥ लवना ॥ श्रीसुपास० ॥ ३ ॥ अ-
 लखनिरंजन वल्लु ॥ सकल जंतु विस राम ॥ लवना ॥ अत्रय दान दाता सदा ॥ पूरण
 आतम राम ॥ लवना ॥ श्रीसुपास० ॥ ४ ॥ वीत राग मद कटपना ॥ रति अरति भय
 सेग ॥ लवना ॥ निद्रा तंजा डरं दसा ॥ रहित अबाधित योग ॥ लवना ॥ श्रीसुपा-
 स० ॥ ५ ॥ परम पुरुष परमातमा ॥ परमेश्वर परधान ॥ लवना ॥ परम पदारथ परमेष्टि ॥
 परम देव परमान लवना ॥ श्रीसुपास० ॥ ६ ॥ विधि विरंचि विश्वंभरु ॥ ऋषीकेश जगनाथ ॥
 लवना ॥ अघदर अघमोचन धणी ॥ मुक्ति परमपद साथ ॥ लवना ॥ श्रीसुपास० ॥ ७ ॥ एम अनेक

अत्रिधा धरे ॥ अत्रुभव गम्य विचार ॥ लवना ॥ जे जाणे तेदने करे ॥ आनंदधन
 अवतार ॥ लवना ॥ श्रीसुपास ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री चंद्रप्रय जिन
 स्तवनं ॥ राग केदारो तथा गोडी ॥ कुमरी रोवे आकंद करे सुने कोइ मूकावे ॥ ए देशी
 ॥ देखण देरे सखी सुने देखण दे ॥ चंद्र प्रय सुख चंद्र ॥ सखी ॥ उपशम रसनो कं-
 द ॥ सखी ॥ गत कलमल डल दंद ॥ सखी ॥ १ ॥ सुहम निगोद न देखीओ ॥
 सखी ॥ बादर अतिहि विशेष ॥ सखी ॥ पुढवी आउ न दे खिउं ॥ सखी ॥ तेउ
 वाउ न देस ॥ सखी ॥ ९ ॥ वनसपति अति घण दिहा ॥ सखी ॥ दीउो नहि दीदार
 ॥ सखी ॥ वि ति चजरिदि जल दिहा ॥ सखी ॥ गति सत्री पण धार ॥ सखी ॥
 ३ ॥ सुरतिरि निरय निवासमां ॥ सखी ॥ मनुज अनारज साथ ॥ सखी ॥ अपज्जाता
 प्रतिआसमां ॥ सखी ॥ चतुर न चढीओ दाथ ॥ सखी ॥ ४ ॥ एम अनेक अल
 जाणिये ॥ सखी ॥ दरिशाण विणु जिण देव ॥ सखी ॥ आगमथी मत जाणिये ॥ सखी ॥
 कीजे निरमल सेव ॥ सखी ॥ ५ ॥ निरमल साधुभक्ति लही ॥ सखी ॥ योग अवंचक
 होय ॥ सखी ॥ किरिया अवंचक तिम सही ॥ सखी ॥ फल अवंचक जोय ॥ सखी ॥
 ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ सखी ॥ मोहनीय क्य जाय ॥ सखी ॥ कामिक
 पूरण सुरतरू ॥ सखी ॥ आनंदधन प्रयु पाय ॥ सखी ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥
 अथ श्री सुबुद्धि जिन स्तवन ॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥
 सुबुद्धि जिणसर पाय नमीने ॥ शुभ करणी एम कीजे रे ॥ अति घणो उलट अंग

धरीने ॥ ब्रह्म उठी पूजाजें रे ॥ सुबुद्धि० ॥ २ ॥ ज्वय भाव सुचि जाव धरीने ॥ हरखे
 देहरे जइयें रे ॥ दहतिगणण अहिगम साचवतां ॥ एकमना धुरिषइये रे ॥ सुबुद्धि०
 ॥ कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो ॥ धूप दीप मन साखी रे ॥ अंगपूजा पण भेद सुणी
 एम ॥ गुरुमुख अागम भाखी रे ॥ सुबुद्धि० ॥ ३ ॥ एहनुं फल दीय त्रेद सुणीजे ॥
 अनंतर ने परं पर रे ॥ आणा पावण चित्त प्रसन्ना ॥ सुगति सुगति सुरमंदिर रे ॥
 सुबुद्धि० ॥ ४ ॥ फल अक्षत वर धूप पर्दयो ॥ गंध नैवेद्य फल जल जरी रे ॥ अंग
 अय पूजा मदि अड विध ॥ त्रावे त्रविक सुत्नगति वरी रे ॥ सुबुद्धि० ॥ ५ ॥ सतर त्रेद एक विस
 प्रकारे ॥ अतोत्तर सत त्रेदे रे ॥ भावपूजा बहुविधि निरधारी ॥ दोहग डरगति ठेदे रे ॥
 सुबुद्धि० ॥ ६ ॥ तुरिय त्रेद पडिवती पूजा ॥ जपशम खीण सयोगी रे ॥ चउहापूजा
 इम उत्तर ज्यणे ॥ त्राधी केवल जोगी रे ॥ सुबुद्धि० ॥ ७ ॥ एम पूजा बहु त्रेद
 सुणीने ॥ सुवदायक शुभकरणी रे ॥ त्राविक जीव करशे ते देशे ॥ आनंदधन पद
 धरणी रे ॥ सुबुद्धि० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवन ॥ राग
 धन्याश्री गोडी ॥ मंगलिक माता गुणह विशावा ॥ ए देशी ॥ शीतल जिनपति
 जलित त्रिभंगी ॥ विविध त्रंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता ॥ उदासी-
 नता सोहे रे ॥ शीतल० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हित करणी करुणा ॥ कर्म विदारण तीक्ष्ण
 रे ॥ दानादान रहित परणामी ॥ उदासीनता विक्षण रे ॥ शीतल० ॥ २ ॥ परडःख
 वेदन इजा करुणा ॥ तीक्ष्ण परडःख रीके रे ॥ उदासीनता ऊनय विवक्षण ॥ एक

तामे केम सीजे रे ॥ शीतल ० ॥ ३ ॥ अभयदान ते मद्र द्य कर्तुणा ॥ तादृणता शुण
 रे ॥ प्रेरण विणु कृत ऊदासीनता ॥ एम विरोध मति नावे रे ॥ शीतल ० ॥ ४ ॥ शक्ति व
 कि त्रिभुवन प्रभुता ॥ निप्रंथता संयोगे रे ॥ योगी त्रोगी वक्ता मौनी ॥ अनुपयो
 उपयोगे रे ॥ शीतल ० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु त्रंग त्रिचंगी ॥ चमत्कार चित देती रे
 अचरित्रकारी चित्र विचित्रा ॥ आनंदधन पद देती रे ॥ शीतल ० ॥ ६ ॥ इति
 ॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवन ॥ राग गोडी ॥ अहो मतवादे साजना ॥ ए देखी
 श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ आतमरामी नामी रे ॥ अध्यातम मत पूरण पासी
 सहज सुगति गति गामी रे ॥ श्रीश्रेयांस ० ॥ १ ॥ सयल संसारी इंद्रिय रामी ॥
 नीगुण आतम रामी रे ॥ मुख्यपणे जे आतम रामी ॥ ते केवल निःकामी रे ॥ श्रीश्रेयांस
 ॥ २ ॥ निजस्वरूप जे किरिया साधे ॥ तेह अध्यातम दाहिये रे ॥ जे किरिया करी च
 गति साधे ॥ ते न अध्यातम कदीये रे ॥ श्रीश्रेयांस ० ॥ ३ ॥ नामअध्यातम ठवण अध
 तम ॥ ज्व्य अध्यातम बंदो रे ॥ नाव अध्यातम निजगुण साधे ॥ तो तेह
 रढमंडो रे ॥ श्रीश्रेयांस ० ॥ ४ ॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणीति ॥ निर विकल्प आत
 जो रे ॥ शब्द अध्यातम नजना जाणी ॥ हान प्रहण मति धरजो रे ॥ श्रीश्रेयांस ०
 ५ ॥ अध्यातम जे वस्तु विचारी ॥ वीजा जाण दवासी रे ॥ वस्तु गते जे वस्तु प्रक
 ॥ आनंदधन मत वासी रे ॥ श्रीश्रेयांस ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ वासुपूज्य डि
 स्तवन ॥ राग गोडी तथा परजीव ॥ तूं गीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देखी ॥ वासु

ज्य जिन त्रिजुवन स्वामी ॥ धननामी पर नामी रे ॥ निराकार साकार सचेतन ॥ करम
 करम फल कामी रे ॥ वासुपूज्य० ॥ १ ॥ निराकार अनेद संग्राहक ॥ नेद ग्राहक साकारो
 रे ॥ दर्शन ज्ञान ज्ञेदे चेतना ॥ वस्तु ग्रहण व्यापारो रे ॥ वासुपूज्य० ॥ २ ॥ कर्ता
 परिणामि परिणामो ॥ कर्म जे जीवें करियें रे ॥ एक अनेक रूप नय वादें ॥ निर्यते
 नर अनुसरियें रे ॥ वासुपूज्य० ॥ ३ ॥ इख सुख रूप करम फल जाणो ॥ निश्चय एक
 आनंदो रे ॥ चेतनता परिणाम न चूके ॥ चेतन कहे जिन चंदो रे ॥ वासुपूज्य० ॥
 ४ ॥ परिणामी चेतन परिणामो ॥ ज्ञानकरम फल ज्ञावी रे ॥ ज्ञान करम फल चेतन
 कहिये ॥ वेजो तेह मनावी रे ॥ वासुपूज्य० ॥ ५ ॥ आत्मज्ञानी श्रमण कहविये ॥ वी-
 जा तो इव्य विंगी रे ॥ वस्तु गते जे वस्तु प्रकाशे ॥ आनंदधन मति संगी रे ॥ वा-
 सुपूज्य० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री विमल जिन स्तवन ॥ राग महार ॥ इडर आंवा
 आंवादी रे ॥ इजर दाडिम ज्ञाख ॥ ए देशी ॥ इख दोहग दूरे टट्यां रे ॥ सुख संपदशुं
 नेट ॥ धीगधणी मथे क्रिया रे ॥ कृणजे नर खेट ॥ विमल जिन ॥ दीठां लोचण आज
 ॥ मारा सिधां वंजित काज ॥ विमलजिन ॥ दीठां ॥ १ ॥ चरण कमल कमला वसे रे
 ॥ निरमल थिर पद देख ॥ समल अशिरपद परिहरी रे ॥ पंजक पामर पेख ॥ विमल०
 ॥ दीठां ॥ २ ॥ सुजमन तुज पद पंजजे रे ॥ लीणो गुण मकरंद ॥ रंक गणे मंदिर ध-
 रा रे ॥ इंद चंद नागिद ॥ विमल० ॥ दीठां ॥ ३ ॥ साहैव समरथ तुं धणी रे ॥ पा-
 म्यो परम उदार ॥ मन विसरामी वावहो रे ॥ आत्मचो आधार ॥ विमल० ॥ दीठां ॥ ४ ॥

दरिद्रान् दीपे जिनतणुं रे ॥ संशय न रहे वेध ॥ दिनकर कर नर पसरता रे ॥ अंधकार
 प्रति खेध ॥ विमल ० ॥ दीजां ० ॥ ५ ॥ अमीय नरी मूरति रची रे ॥ उपमा न घटे कोय
 ॥ ज्ञांत सुधारस फीवती रे ॥ निरखित तृपति न दोष ॥ विमल ० ॥ दीजां ० ॥ ६ ॥ एक
 अरज सेवक तणी रे ॥ अवधारो जिन देव ॥ कृपाकरी मुज दीजीये रे ॥ आनंदधन प-
 द सेव ॥ विमल ० ॥ दीजां ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवन ॥ राग
 रामयी ॥ कडवान्नी देशीनी ढाल प्रसिद्धे ॥ धार तरवारनी सोहिवी दोहिवी ॥ चौदमा जि-
 नतणी चरण सेवा ॥ धारपर नाचता देख बाजीगरा ॥ सेवना धारपर रहे न देवा ॥ धा-
 र ० ॥ १ ॥ ए आंकणी वे ॥ एक कहे सेवीये विविध किरिया करी ॥ फल अनेकांत लो-
 चनन देखे ॥ फल अनेकांत किरिया करी वापडा ॥ रडवडे चार गतिमांहि देखे ॥ धार ०
 ॥ २ ॥ गहना नेद बहु नयण निहावतां ॥ तलनी वात करतां न दाजें ॥ उदरप्ररणा-
 दि निजकाज करता थका ॥ मोहनडिया कलिकाव राजे ॥ धार ० ॥ ३ ॥ वचननिरपेक्ष
 व्यवहार जूठो कह्यो ॥ वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥ वचननिरपेक्ष व्यवहार संसार फल
 ॥ सांजवी आदरी कांड राचो ॥ धार ० ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे ॥ केम रहे
 शुद्ध श्रध्दा न आणो ॥ शुद्ध श्रध्दान विण सर्व किरिया करी ॥ वारपर दीपणो तेह जाणो
 ॥ धार ० ॥ ५ ॥ पापनहि कोइ उत्सूत्र प्राषण जिशो ॥ धर्म नही कोइ जग सूत्र सारि-
 खो ॥ सूत्र अनुसार जे प्रविक किरिया करे ॥ तेहनो शुद्ध चारित्र परिखो ॥ धार ० ॥
 ६ ॥ एह उपदेशनुं सार संक्षेपयी ॥ जे नरा चित्तमां नित्य ध्याये ॥ ते नरा दीव्य बहु

काव सुख अर्जुनवी ॥ निघत आनंदधन राज पावे ॥ धार० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥
 अथ श्री धर्म जिन स्तवन ॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशीमां ॥ धरम जिनेसर
 गाळं रागशु ॥ भंग म पड्यो हो प्रीत ॥ जिनेसर ॥ वीजो मन मंदिर आणुं नदी ॥ ए
 अम कुल वट रीत ॥ जिनेसर ॥ धरम० ॥ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धरम न जा-
 णे हो मर्म ॥ जिने० ॥ धरम जिनेसर चरणप्रहा पवी ॥ कोइ न बांधे हो कर्म ॥ जिने० ॥
 धरम० ॥ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सदगुरु करे ॥ देखे परम तिधान ॥ जिने० ॥ रुद्रय
 नयण निहाले जगधणी ॥ महिमा भेरु स मान ॥ जिने० ॥ धरम० ॥ ३ ॥ दोडत दोफत
 दोफत दोडीड ॥ जेती मननी रे दोड ॥ जिने० ॥ प्रेम प्रतीत विचारो हूकडी ॥ गुरुगम
 देजो रे जोड ॥ जिने० ॥ धरम० ॥ ४ ॥ एक पखी केम प्रीतिवरे पडे ॥ उन्नयमित्या
 हुर संधि ॥ जिने० ॥ हुंरांगी हुं मोहे फंदीयो ॥ तुंनिरांगी निर वध ॥ जिने० ॥ धरम०
 ॥ ५ ॥ परमनिधान प्रगट सुख आगावे ॥ जगत उलंधी हो जाय ॥ जिने० ॥ ज्योति-
 विना जुळ जगदीशनी ॥ अंधो अंध पूलाय ॥ जिने० ॥ धरम० ॥ ६ ॥ निरमल गुण-
 मणि रोदण नूधरा ॥ सुनिजत मानस हंस ॥ जिने० ॥ धन्य ते नगरी धन्य वेला घडी
 ॥ मातापिता कुल वंश ॥ जिने० ॥ धरम० ॥ ७ ॥ मनमधुकर वर कर जोडी करे ॥ पद-
 कज निकट निवास ॥ जिने० ॥ धननामी आनंदधन साजवो ॥ ए सेवक अरदास ॥
 जिने० ॥ धरम० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री शांति जिन स्तवन ॥ राग मल्हार
 ॥ चतुर चोमासुं पन्किमी ॥ ए देशी ॥ शांति जिन एक मुज विनति, सुणो त्रिभुवन राय

रे ॥ शांति स्वरूप केम जाणिये ॥ कह्यो मन केम पर स्वाय रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ ए आक-
 णी ॥ धन्य तुं आतम जेहने ॥ एहवो प्रश्न अवकाश रे ॥ धीरज मन धरी सांनवी ॥
 कहुं शांति प्रतिपास रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ नाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे ॥ कहा जिन-
 वर देव रे ॥ ते तेम अवितथ्य सहदे ॥ प्रथम ए शांतिपद सेव रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ आग-
 म धर गुरु समकित्ती ॥ किरिया संवर सार रे ॥ संप्रदायी अवंचक सदा ॥ शुचि अनु-
 नवा धार रे ॥ शांति० ॥ ४ ॥ शुद्ध आवांवन आदरे ॥ तजी अवर जंजाव रे ॥ ताम-
 सी टुत्ति सवि परिहरी ॥ नजे सात्त्विकी साव रे ॥ शांति० ॥ ५ ॥ फल विसंवाद जेमां
 नहि ॥ शब्द ते अर्थ संबंध रे ॥ सकल नयवाद व्यापी रह्यो ॥ ते शिव साधन संधि रे
 ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विधि प्रतिषेध करी आतमा ॥ पदारथ अविरोध रे ॥ ग्रहण विधि
 महाजने परिग्रह्यो ॥ इसो आगममें बोध रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ इष्टजन संगति परिहरी ॥
 नजे सुगुरु संतान रे ॥ जोग सामर्थ्य चित्त नाव जे ॥ धरे सुगति निदान रे ॥ शांति०
 ॥ ८ ॥ मान अपमान चित्तसम गणे ॥ सम गणे कनक पाषाण रे ॥ वंदन निंदकसम गणे ॥
 इशो ह्येय तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥ सर्व जगजंतुने समगणे ॥ गणे तृण मणि नाव रे ॥
 सुक्तिसंसार वेहु सम गणे ॥ सुणे नव जलनिधि नाव रे ॥ शांति० ॥ १० ॥ आपणो आतम
 नाव जे ॥ एक चेतना धार रे ॥ अवर सवि साथ संयोगधी ॥ एह निज परिकर सार रे ॥
 शांति० ॥ ११ ॥ प्रभुसुखधी एम सांनवी ॥ कहे आतमरामरे ॥ ताहरे दरिद्राणे निरतस्थो
 ॥ मुक्त सिद्धां सविकाम रे ॥ शांति० ॥ १२ ॥ अहो अहो हुं मुऊने कहुं ॥ नमो मुक्त नमो मुक्त

रे ॥ अमितकल दान दातारनी ॥ जेहनी जेट थइ तुऊ रे ॥ शांति ॥ २३ ॥ शांति स्वरूप
 संक्षेपथी ॥ कह्यो निज पर रूप रे ॥ आगममाहे विस्तर घणो ॥ कह्यो शांतिजिन नूप
 रे ॥ शांति ॥ २४ ॥ शांति स्वरूप एम जावसें ॥ धरी शुद्ध प्रणिध्यान रे ॥ आनंद धन
 पद पामशे ॥ ते देखेथे बहु मान रे ॥ शांति ॥ २५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री कुंभ
 जिन स्तवन ॥ ॥ राग गुर्जरी तथा रामकवी ॥ अंबर दे हो सुरारी हमारो ॥ ए देयी
 ॥ कुभुजिन मनहुं किमहि न बाजे हो ॥ कुभु ॥ जिम जिम जतन करीने राहुं ॥ ति-
 मतिम अलगुं बाजे हो ॥ कुंभु ॥ १ ॥ रजनी वासर वसति जजड ॥ गयण पायावे
 जाय ॥ सापखाए ने सुखहुं थोभुं ॥ एह जखाणो न्याय हो ॥ कुंभु ॥ २ ॥ मुक्तिपा आ-
 चिदाधी तपीया ॥ ज्ञानने ध्यान अन्ध्यासें ॥ वयरीहुं कांड एहवुं चिंते ॥ नाखे आवे
 पासे हो ॥ कुंभु ॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें ॥ नावे किणविधि आंकु ॥ किहां-
 कणे जो हठकरी हटकुं ॥ तो व्यावतणी परें वांकुं हो ॥ कुंभु ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं
 तो ठगतो न देखुं ॥ साहु कार पण नाहि ॥ सर्व मांहेने सह्यथी अलगुं ॥ ए अचरिज मन
 मांहे हो ॥ कुंभु ॥ ५ ॥ जेजे कहूं ते कान न धारे ॥ आपमतें रहे कावो ॥ सुर नर पं-
 डित जन समजावे ॥ समजे न महारो सावो हो ॥ कुंभु ॥ ६ ॥ में जाणुं ए विंगनपुं-
 सक ॥ सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ ठे नर ॥ एहने कोइ न जेले हो ॥ कुंभु ॥
 ७ ॥ मनसाधु तेणे सधवुं साधुं ॥ एहवात नही खोटी ॥ एमकहे साधुं ते नवि
 मानु ॥ एकही वात ठे मोटी हो ॥ कुंभु ॥ ८ ॥ मनहुं छराराध्व ते वया आणुं ॥ ते आग-

मयी मति आणुं ॥ आनंदधन प्रभु महारुं आणो ॥ तो साचु करी जाणुं हो ॥ कुंभु ०
 ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री अर जिन रतवन ॥ राग परज तथा मारु ॥ रूपन-
 नो वंश रयणायरु ॥ ए देवी ॥ धरम परम अर नाथनो ॥ किम जाणुं नगवंत रे ॥ स्वपर
 समय समजावीये ॥ महिमा वंत महंत रे ॥ धरम ० ॥ १ ॥ ए अंकणी ॥ शुश्रुतम
 अनुभव सदा ॥ स्व समय एह विदास रे ॥ पर वडी ठा हडी जे पडे ॥ तेपर समय
 निवास रे ॥ धरम ० ॥ २ ॥ तारा नक्षत्र ग्रह चंडनी ॥ ज्योति दिनेश मजार रे ॥ दर्श-
 न ज्ञान चरण शकी ॥ शक्ति निजातम धार रे ॥ धरम ० ॥ ३ ॥ नारी पीढो चीकणो
 ॥ कनक अनेक तरंग रे ॥ पर्याय दृष्टि न दीजीये ॥ एकज कनक अग्रंग रे ॥ धरम ०
 ॥ ४ ॥ दरशाण ज्ञानचरण शकी ॥ अलख सरूप अनेक रे ॥ निरविकल्प रस पीजीये
 ॥ शुद्ध निरंजन एक रे ॥ धरम ० ॥ ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे ॥ ते रंजे एक तंत रे ॥
 व्यवहारे लख जे रहै ॥ तेहना नेद अंतत रे ॥ धरम ० ॥ ६ ॥ व्यवहारे लखे
 दोहिदा ॥ कांड न आवे हाथ रे ॥ शुद्ध नय थापना सेवतां ॥ नविरहै डविधा
 साथ रे ॥ धरम ० ॥ ७ ॥ एक पखि लखी प्रीतनी ॥ तुमसाथे जग नाथ रे ॥ कृपा क-
 रीने राखजो ॥ चरण तले ग्रही हाथ रे ॥ धरम ० ॥ ८ ॥ चक्री धरमतीरथ तणो ॥
 तीरथफल तत सार रे ॥ तीरथसेवे ते लहे ॥ आनंद धन निर धार रे ॥ धरम ० ॥ ९ ॥ इति
 ॥ ॥ अथ श्री मल्ली जिन रतवन ॥ राग काफ्री ॥ सेवक किम अवनगणिये हो ॥ ए दे-
 शी ॥ सेवक किम अत्र गणिये हो ॥ महिजिन ॥ एह अत्र शोभा सारी ॥ अवर जेहने

आदर अति दीर ॥ तेदने मूल निवारी हो ॥ मद्धि० ॥ १ ॥ ज्ञान सुरूप अनादि तुमरं
 ॥ ते लीधुं तुमै ताणी ॥ जुडं अज्ञान दशा रीसावी ॥ जातां काण न आणी हो ॥ मद्धि०
 ॥ २ ॥ निजा सुपन जागर जजागरता ॥ तुरिय अवस्था आवी ॥ निजा सुपन दशा
 रीसाणी ॥ जाणी न नाथ मनावी हो ॥ मद्धि० ॥ ३ ॥ समकीत साथे सगाइ कीधी ॥
 सपरिवार शुं गाढी ॥ मिथ्यामति अपराधण जाणी ॥ घरथी बाहिर काढी हो ॥ मद्धि०
 ॥ ४ ॥ दास्य अरति रति शोक उगडा ॥ त्रय पासर कर सावी ॥ नोकषाय श्रेणी
 गज चढतां ॥ श्वानतणी गति जावी हो ॥ मद्धि० ॥ ५ ॥ राग द्वेष अकिरतिनी प-
 रिणति ॥ ए चरण मोहना बोधा ॥ वीतराग परिणति परणमता ॥ उठी नाठा बोधा हो
 ॥ मद्धि० ॥ ६ ॥ वेदोदय कामा परिणामा ॥ काम्यकरम सहु त्यागी ॥ तिःकामी करुणारस
 सागर ॥ अनंत चतुष्कपद पागी हो ॥ मद्धि० ॥ ७ ॥ दान विघन वारी सहु जनने ॥ अन्नय
 दान पद दाता ॥ लात्रविघन जग विघन निवारक ॥ परम लात्र रस माता हो ॥ मद्धि० ॥
 ८ ॥ वीर्य विघन पडितवीर्ये दृणी ॥ पूरण पद वी योगी ॥ ओगोपओग दीय विघन निवारी ॥
 पूरण भोग सुओगी हो ॥ मद्धि० ॥ ९ ॥ ए अढार दूषण वर्जिततनुं ॥ सुनिजन टुंदे गाय
 ॥ अकिरतिरूपक दोषनिरूपण ॥ निरदूषण मन त्राया हो ॥ मद्धि० ॥ १० ॥ ॥ इण
 विघ परबी मन विसरामी ॥ जिनवरगुण जे गावे ॥ दीनवंधुनी महेर नजरथी ॥ अनंद
 घन पद पावे हो ॥ मद्धि० ॥ ११ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सुनिसुवत जिन स्तवन ॥
 राग काफी ॥ आवा आप पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥ सुनीसुवत जिनराय, एक सुज

विनति निसुणो ॥ आतम तत्व कथुं जाण्युं जगतगुरु ॥ एह विचार सुज कहियो ॥ आत-
 म तत्व जाणया विण निरमल ॥ चित्त समाधि नवि लहियो ॥ सुनी ० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥
 कोइ अबंध आतम तत माने ॥ किरिया करतो दीसे ॥ क्रिया तणुं फल कहो कोण नो-
 गवे ॥ एम पुढ्युं चित्त रीसे ॥ सुनि ० ॥ २ ॥ जड चेतन ए आतम एकज ॥ थावर
 जंगम सरिखो ॥ ड्यल सुख सकर दूषण आवे ॥ चित्तविचारी जो परिखो ॥ सुनी ० ॥ ३ ॥
 एक कहे नित्यज आतम तत ॥ आतम दरशण वीनो ॥ कृतविनाश अकृतगम दूषण ॥
 नवि देखे मत हीणो ॥ सुनी ० ॥ ४ ॥ सौगत मति रागी कहे वादी ॥ क्षिणक ए आतम
 जाणो ॥ बंध मोह सुख डख न घटे ॥ एह विचार मन आणो ॥ सुनी ० ॥ ५ ॥ भूत
 चतुष्क वरजित आतम तत ॥ सत्ता अलगो न घटे ॥ अंध शकट जो नजर न देखे ॥
 तो शुं कीजें शकटे ॥ सुनी ० ॥ ६ ॥ एम अनेक वादी मत विज्रम ॥ संकट पडियो न
 लहे ॥ चित्त समाध ते माटे पुहुं ॥ तुम विण तत कोइ न कहे ॥ सुनी ० ॥ ७ ॥ वलतु
 जण गुरु इणिपरें चाये ॥ पदथात सब ठंडी ॥ राग द्वेष मोह पख वर्जित ॥ आतम
 शुं रट मंडी ॥ सुनी ० ॥ ८ ॥ आतम ध्यान करे जो कोइ ॥ सो किरि इणमें नावे ॥ वा-
 गजाल बीजुं सहु जाणे ॥ एह तत्व चित्त चावे ॥ सुनी ० ॥ ९ ॥ जेणे विवेकधरी ए
 पख ग्रहीये ॥ ते तत ज्ञानी कहाये ॥ श्रीमनी सुव्रत कृपा करो तो ॥ आनंद धन पद
 लहिये ॥ सुनी ० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ अथ श्री नमि जिन रत्तवन ॥ राग आशावरी ॥
 धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ पट दरशण जिन अंग चणीजे ॥ न्यास ष-

ऋंग जो साधे रे ॥ नमि जिनवरना चरण जपासक ॥ षट दरशन आराधे रे ॥ पट०
 ॥ १ ॥ ए अंकणी ॥ जिन सुर पादप पाय वखाणु ॥ सांख्य जोग दीय नैदे रे ॥
 ज्ञातम सत्ता विवरण करता ॥ लहो ड्गा अंग अखेदे रे ॥ पट० ॥ २ ॥ नैद अत्रैद
 सुगत मीमासक ॥ जिनवर दीय कर नारी रे ॥ लोकालोक अवलवन नजिये ॥ गुरु-
 गमथी अथधारी रे ॥ पट० ॥ ३ ॥ लोकायतिक कूप जिनवरनी ॥ अंश विचारी जो
 कीजे रे ॥ तत्वविचार सुधारस धारा ॥ गुरुगम विण केम पीजे रे ॥ पट० ॥ ४ ॥ जैन
 जितेश्वर वर उत्तम अंग ॥ अंतरंग बहिरंगे रे ॥ अक्षर न्यास धरा आराधक ॥ आ-
 राधे धरी संगे रे ॥ पट० ॥ ५ ॥ जिनवरमां सवदां दरिशाण ठे ॥ दर्शन जिनवर न-
 जना रे ॥ सागरमा सवली तटनी सही ॥ तटनीमां सागर नजना रे ॥ पट० ॥ ६ ॥
 जिन स्वरूप थड जिन आराधे ॥ ते सही जिनवर होवे रे ॥ नगी ईदीकाने चटकवे ॥
 ते नृगी जग जोवे रे ॥ पट० ॥ ७ ॥ चूरणि त्राव्य सूत्र निर्युक्ति ॥ वृत्ति परंपर अनु-
 त्रव रे ॥ समय पुरुषनां अंग कहां ए ॥ जे ठेदे ते छरत्रव रे ॥ पट० ॥ ८ ॥ मुजावीज
 धारणा अक्षर ॥ न्यास अर्थ विनियोगे रे ॥ जे ध्यावे ते नवि वंचीजे ॥ क्रिया अर्वांचक
 नोगे रे ॥ पट० ॥ ९ ॥ श्रुत अनुसार विचारी बौद्धुं ॥ सुगुरु तथाविधि न मिले रे ॥
 किरिया करी नवि साधी शकीये ॥ ए विषवाद चित्त सवदे रे ॥ पट० ॥ १० ॥ ते माटे
 जना कर जोडी ॥ जिनवर आगाळ कहीये रे ॥ समय चरण सेवा शुश्र देख्यो ॥ जेम
 अनंदवन लहीये रे ॥ पट० ॥ ११ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

राग माहृणी ॥ धण रा ढोळा ॥ ए देशी ॥ अष्ट नवंतर वाळही रे ॥ तुं सुऊ आतम
 राम ॥ मनरा वाळा ॥ सुगति स्त्रीशुं आपणे रे ॥ सगपण क्रीड न काम ॥ मन० ॥ २ ॥
 धर आवो हो वाळिम धर आवो ॥ मारी आशाना विसराम ॥ मन० ॥ रथ फेरो हो
 साजन रथ फेरो ॥ साजन मारा मनोरथ साथ ॥ मन० ॥ १ ॥ नारी पखो स्यो नेहजो रे ॥
 साचकहे जग नाथ ॥ मन० ॥ ईश्वर अरधंगे धरी रे ॥ तुं सुज जावे न हाथ ॥ मन०
 ॥ ३ ॥ पशुजननी करुणा करी रे ॥ आणी हृदय विचार ॥ मन० ॥ माणसनी करुणा
 नही रे ॥ ए कुण धर आचार ॥ मन० ॥ ४ ॥ प्रेम कळपतर ठेदीयो रे ॥ धरियो जोग
 धतूर ॥ मन० ॥ चतुराईरो कुण कहो रे ॥ गुरु मितीयो जग सूर ॥ मन० ॥ ५ ॥
 महारं तो एमां क्युंही नही रे ॥ आप विचार राज ॥ मन० ॥ राजसजामां वेसतां रे ॥
 किसडी बधसी लाज ॥ मन० ॥ ६ ॥ प्रेमकरे जग जन सहु रे ॥ निरवाहे ते उर ॥
 मन० ॥ प्रीतकरीने ठोडी दे रे ॥ तेशुं न चावें जोर ॥ मन० ॥ ७ ॥ जो मनमां एहवुं
 हतुं रे ॥ निसपति करत न जाण ॥ मन० ॥ निसपति करीने वांडतां रे ॥ माणस
 हुर नुकसांन ॥ मन० ॥ ८ ॥ देतां दान संवत्सरी रे ॥ सहु वहे वंजित पोष ॥ मन० ॥
 सवक वजित नवि वहे रे ॥ ते सेवकनो दोष ॥ मन० ॥ ९ ॥ सखी कहे ए ग्रामजो
 रे ॥ हुं कहुं वरुण स्वत ॥ मन० ॥ इण वरुण साची सखी रे ॥ आप विचार हेत ॥
 मन० ॥ १० ॥ रागी शुं रागी सहु रे ॥ वेरंगी श्यो राग ॥ मन० ॥ रागविना केम दा-
 खवो रे ॥ सुगति सुंदरी माग ॥ मन० ॥ ११ ॥ एक गुह्य घटुं नथी रे ॥ सघजोड

जाणे दीक ॥ मन० ॥ अनेकांतिक जोगधो रे ॥ ब्रह्मचारी गान रोग ॥ मन० ॥ १७ ॥
 जिणजोणी तुमने जोडं रे ॥ तिणजोणी जोवो राज ॥ मन० ॥ एकवार सुजने जुडं रे ॥
 तो सीजे सुज काज ॥ मन० ॥ १३ ॥ मोहदशा धरी जावता रे ॥ चित लहे तरग रि-
 चार ॥ मन० ॥ वीत रागता आदरी रे ॥ प्राणनाथ निरवार ॥ मन० ॥ १४ ॥ सेवक
 पण ते आदरे रे ॥ तो रहे सेवक माम ॥ मन० ॥ आश्रय साथे चाजोयें रे ॥ एहिज
 रूडु काम ॥ मन० ॥ १५ ॥ त्रिविध योग धरी आदर्शो रे ॥ नेम नाथ ज तर ॥ मन० ॥
 धारण पोषण तरणो रे ॥ नवरस मुगता दार ॥ मन० ॥ १६ ॥ कारणरुमी प्रभु
 ज्यो रे ॥ गण्यो न काज अकाज ॥ मन० ॥ कृगा करी सुज दीजोयें रे ॥ आनंद धन
 पद राज ॥ मन० ॥ १७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री धार्वाजिन स्तवन ॥ राग सारंग
 रसीयानी देशी ॥ ध्रुवपद रामी हो स्वामी मादरा ॥ नि-कामी गुण राय ॥ सुभ्यानी ॥
 निजगुण कामी हो पामी तुं धणी ॥ ध्रुव आरामी हो थाय ॥ सुभ्यानी ॥ ध्रुव० ॥ १ ॥
 सर्वव्यापी कहे सर्व जाणंग पणे ॥ पर परिणमन सरूप ॥ सुभ्यानी ॥ पररूपें करी
 तत्वपणुं नही ॥ स्व सता चिदरूप ॥ सुभ्याना ॥ ध्रुव० ॥ २ ॥ ज्ञेय अनेकें हो ज्ञान
 अनेकता ॥ जलप्राजन रवि जेम ॥ सुभ्याना ॥ ड्रम एकरम पणे गुण एकरता ॥ निज-
 पद रमता हो खेम ॥ सुभ्यानी ॥ ध्रुव० ॥ ३ ॥ परक्षेत्रे गत क्षेत्रे जाण्ये ॥ परक्षेत्रे
 थयुं ज्ञान ॥ सुभ्यानी ॥ अस्तित्पणुं निज क्षेत्रें तुमने कव्यो ॥ निर्मलता गुण मान ॥ सु-
 भ्यानी ॥ ध्रुव० ॥ ४ ॥ क्षेत्र विनाशो हो ज्ञान विनिश्चरु ॥ काव प्रनाणे रे थाय ॥

सुभ्यानी ॥ स्वकादे करी स्व सत्ता सदा ॥ ते पर रीते न जाय ॥ सुभ्यानी ॥ ध्रुव ० ॥ ५ ॥
 परभाव करी परता पामता ॥ स्वसत्ता थिर ताण ॥ सुभ्यानी ॥ आत्मचतुष्कमयी परमां
 नदी ॥ तो केम सहनुो रे जाण ॥ सुभ्यानी ॥ ध्रुव ० ॥ ६ ॥ अशुरु लघु निज गुणेने दे-
 खतां ॥ इव्य सकल देखंत ॥ सुभ्यानी ॥ साधारण गुणी साधर्म्यता ॥ दूपण जलने
 दष्टांत ॥ सुभ्यानी ॥ ध्रुव ० ॥ ७ ॥ श्री पारसजिन पारस रस समो ॥ पण इहां पारस
 नांदि ॥ सुभ्यानी ॥ पूरण रसीड हो निजगुण परसनो ॥ आनंदधन मुज माहि ॥ सु-
 भ्यानी ॥ ध्रुव ० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमहावीर जिन रतन ॥ राग धन्याश्री ॥
 वीरजीने चरणे लासुं ॥ वीरपणुं ते मासुं रे ॥ मिथ्या मोह तिमिर त्रय त्रासुं ॥ जित
 नगाळ वासुं रे ॥ वीर ० ॥ १ ॥ लजमल वीरय लेख्या सगे ॥ अत्रिसंविज मति अंगे रे ॥
 सूक्ष्म थूल क्रियाने रंगे ॥ योगी थयो जमंगे रे ॥ वीर ० ॥ २ ॥ असंख्य प्रदेशें वीर्य
 असाखे ॥ योग असंखित कंखे रे ॥ पुज्जलण तेणे दे सुविशेष ॥ यथाशक्ति मति लेखे
 रे ॥ वीर ० ॥ ३ ॥ लक्षुष्ट वीरयने वेंसें ॥ योग क्रिया नयो पेसे रे ॥ योग तणी ध्रुयताने
 वेंसें ॥ आत्म शक्ति न खेसे रे ॥ वीर ० ॥ ४ ॥ कारवीर्य वशें जेम योगी ॥ तेम आ-
 तम थयो योगी रे ॥ सूरपणे आत्म उपयोगी ॥ आये तेहने अयोगी रे ॥ वीर ० ॥ ५ ॥
 वीरपणुं ते आत्म ताणे ॥ जाणुं तुमची वाणे रे ॥ ध्यानविनाणे शक्ति प्रमाणे ॥ निज
 ध्रुवपद पहिचाणे रे ॥ वीर ० ॥ ६ ॥ आलंबन साधन जें त्यागे ॥ पर परिणतिने त्रागे
 रे ॥ अक्षय दर्शन ज्ञान वैरागे ॥ आनंदधन प्रसु जागे रे ॥ वीर ० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्थजिन स्तवन ॥ शान्तिजिन एक मुज विनति ॥ ए देशी ॥ पासजिन ता-
हरा रूपनुं ॥ मुज प्रति चास केम होय रे ॥ तुज मुज सत्ता एकता ॥ अचल विमल
अकल जोय रे ॥ पास० ॥ १ ॥ ए आंकाणी ठे ॥ मुऊ प्रवचन पद्धथी ॥ निश्चय ज्ञेद
न कोय रे ॥ विवहारे लखि देखीये ॥ ज्ञेद प्रतिज्ञेद बहु जोय रे ॥ पास० ॥ २ ॥ वं-
धन मोख नहि निश्चये ॥ विवहारे राज दीय रे ॥ अखांडित अवाधित सोय कदा ॥ नित
अवाधित सोय रे ॥ पास० ॥ ३ ॥ अन्वय हेतु व्यतिरेकथी ॥ अंतरो तुऊ मुऊ रूप
रे ॥ अंतर भेटवा कारणे ॥ आत्मस्वरूप अनुप रे ॥ पास० ॥ ४ ॥ आत्मता परमा-
त्मता ॥ शुद्ध नय ज्ञेद न एक रे ॥ अवर आरोपित धर्म ठे ॥ तेहना ज्ञेद अनेक रे ॥
पास० ॥ ५ ॥ धरमी धरमथी एकता ॥ तेह मुऊ रूप अज्ञेद रे ॥ एक सत्ता लख ए-
कता ॥ कहेते मूढमति खेद रे ॥ पास० ॥ ६ ॥ आत्म धरम अनुसरी ॥ रमेजे आत्म
राम रे ॥ आनद धन पदवी लहे ॥ परम आत्म तस नाम रे ॥ पास० ॥ ७ ॥ इति ॥
॥ अथ श्री महावीरजीनुं स्तवन ॥ पंथडो निहाळुं रे बीजा जिन तणो रे ॥ ए देशी ॥
चरम जिणिसर विगत स्वरुपनुं रे ॥ जातुं केम सरूप ॥ साकारी विण ध्यान न संजवे
रे ॥ ए अविकार अरूप ॥ चरम० ॥ १ ॥ आप सरूपे आत्ममां रमे रे ॥ तेहना धुर
वे ज्ञेद ॥ असख उक्रोसें साकारी पदे रे ॥ निराकारी निरज्ञेद ॥ चरम० ॥ २ ॥ मुखम
नाम चरम निराकार जे रे ॥ तेह ज्ञेद नहीं अंत ॥ निराकार जे निरगति कर्मथी रे ॥
तेह अज्ञेद अनंत ॥ चरम० ॥ ३ ॥ रूप नहीं कश्ये वंधन घट्युं रे ॥ वंधन मोक्क न

कोय ॥ बंध मोक्षविण सादि अनंततु रे ॥ जंग संग केम होय ॥ चरम० ॥ ४ ॥ इत्य-
 विना तेम सत्ता नवि लहे रे ॥ सत्ता विण स्यो रूप ॥ रूपविना केम सिद्ध अनंतता रे ॥
 त्रावु अकल सरूप ॥ चरम० ॥ ५ ॥ आतमता परिणति जे परिणम्या रे ॥ ते मुक
 त्रदा त्रेद ॥ तदाकार विण मारा रूपनु रे ॥ ध्यातुं विध प्रतिपेध ॥ चरम० ॥ ६ ॥ अं-
 तिम त्रव गहणे तुज जावनुं रे ॥ जावहुं शुद्ध सरूप ॥ तइयें आनंद धन पद पामशुं
 रे ॥ आतम रूप अनूप ॥ चरम० ॥ ७ ॥ इति श्री आनंदधन कृत चोविश जिन
 स्तुति तथा श्री ज्ञानसार कृत वे स्तवन मली उवीश स्तवन संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्री
 देवचंजनी कृत चोवीशी प्रारभः ॥ तत्र प्रथम श्री ऋषयजिन स्तवन ॥ निज्जडी वेरण
 हुद रही ॥ ए देशी ॥ ऋषय जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजें हो कहो चतुर विचार ॥ प्र-
 शुजी जइ अलगा वश्या ॥ तिहां किणे नवि हो कोइ वचन उचार ॥ रूपत्र० ॥ १ ॥ का-
 गल पण पदोंचे नहीं, नवि पदोंचे हो तिहां को परधान ॥ जे पदोंचे ते तुम समो,
 नवि त्रांखे हो कोइनु व्यवधान ॥ ऋषत्र० ॥ २ ॥ प्रीत करे ते रागीया, जिनवरजी हो
 तमें तो वितरण ॥ प्रीतडी जेह अरागीया, जेवववी हो लोकोत्तर माग ॥ रूपत्र० ॥ ३ ॥
 प्रीति अनादिनी विष त्री, ते रीतें हो करवा मुऊ त्राव ॥ करवी निर्विष प्रीतनी, किण
 त्राते हो कहो वने वनाव ॥ ऋषत्र० ॥ ४ ॥ प्रीति अनंती परधकी, जे तोडे हो ते जोडे
 एह ॥ परम पुरुषधी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह ॥ रूपत्र० ॥ ५ ॥ प्रशुजीने
 अवलंबतां, निज प्रशुता हो प्रगटे गुण राश ॥ देवचंजनी सेवना, आपे मुऊ हो अवि-

चव सुख वास ॥ ऋषत्र० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री अजितजिन स्तवमं ॥ देखो
 गति देवनी रे ॥ ए देशी ॥ इानादिक गुण संपदा रे, तुल अनत अपार ॥ ते सांन-
 लतां ऊपनी रे, रुचि तेणे पार उतार ॥ १ ॥ अजित जिन ता र जो रे, तारजो दीन
 दयाल ॥ अजित० ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनुं रे, सामथी संयोग ॥ मलतां
 कारण नीपजे रे, कर्ता तेणे प्रयोग ॥ अजित० ॥ २ ॥ कार्यासिद्ध कर्ता वसु रे, वही
 कारण सयोग ॥ निज पद कारक प्रभु मित्या रे, दोष निमित्तह जोग ॥ अजित०
 ॥ ३ ॥ अजकुल गत केसरि वहे रे, निज पद सिंघ निहाल ॥ तिम प्रभु नक्तं नवि
 वहे रे, आतम शक्ति संत्राल ॥ अजित० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्ता पणे रे, करी अपारोप
 अत्रद ॥ निजपद अरथी प्रभुशकी रे ॥ करे अनेक उमेद ॥ अजित० ॥ ५ ॥ एहवा
 परमातम प्रभु रे, परमानंद स्वरूप ॥ स्यादवाद सत्ता रसी रे, अमल अखड अनूप ॥
 अजित० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख त्रम टट्यो रे, नारयो अव्या बाध ॥ समर्थुं अजि-
 लाखी पणुं रे, कर्ता साधन साध्य ॥ अजित० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामीत्वता रे, व्यापक
 भोका भाव ॥ कारणता कारज दिशा रे, सकल ग्रह्य निज नाव ॥ अजित० ॥ ८ ॥
 श्रधा नासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सता रसी रे, जिनवर दूर-
 शण पाम ॥ अजित० ॥ ९ ॥ तिणे निर्गमक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र
 सुख सागरु रे, नाव धरम दातार ॥ अजित० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सं-
 नवजिन स्तवमं ॥ धण रा ढोला ॥ ए देशी ॥ श्री संनव जिन राजजी रे, ताहं अकल

स्वरूप ॥ जिनवर पूजो ॥ स्वर पर प्रकाशक दिनमणि रे, समता रसनो नृप ॥ जिन०
 ॥ १ ॥ पूजो पूजो रे त्रिविक जिन पूजो, प्रभु पूज्या परमानंद ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥
 अक्सिवाद निमित्त वो रे, जगत जंतु सुख काज ॥ जिन० ॥ हेतु सत्य बहु मानथी
 रे, जिन सेव्यां शिव राज ॥ जिन० ॥ २ ॥ उपादान आतम सही रे, पुष्टाद्वंवन देव ॥
 जिन० ॥ उपादान कारण पणे रे, प्रगट करे प्रभु सेव ॥ जिन० ॥ ३ ॥ कारजगुण
 कारण पणे रे, कारण कारण अनूप ॥ जिन० ॥ सकल सिद्धता ताहरी रे, माहारे
 साधन रूप ॥ जिन० ॥ ४ ॥ एक वार प्रभु वंदना रे, आगमरीते थाय ॥ जिन० ॥
 कारण सत्ये कार्यनी रे, सिद्धि प्रतीती कराय ॥ जिन० ॥ ५ ॥ प्रभुपणे प्रभु उदखी
 रे, अमल विमल गुण गेह ॥ जिन० ॥ साध्यदष्टि साधकपणे रे, वंदे धन नर तेह ॥
 जिन० ॥ ६ ॥ जन्म कृताश्च तेहनो रे, दिवस सफल पण तास ॥ जिन० ॥ जगतश-
 रण जिन चरणे रे, वंदे धरिय उह्लास ॥ जिन० ॥ निज सत्ता निज प्रावथी रे, गुण
 अनंततुं टाण ॥ जिन० ॥ देवचंद्र जिन राजजी रे, शुद्ध सिद्ध सुख खाण ॥ जिन० ॥ ८ ॥
 ॥ ॥ इति ॥ अथ श्री अत्रिनंदन जिन स्तवनं ॥ ब्रह्मचरिज पद पूजियें ॥ ए देशी ॥
 कथुं जाणुं कथुं वनी आवशो, अत्रिनंदन रस रीत हो मित्त ॥ पुढल अनुभव त्यागथी,
 करवी जसु परतीत हो मित्त ॥ कथुं ॥ १ ॥ परमातम परमेश्वरू, वस्तुगतें ते अक्षित
 हो मित्त ॥ इव्ये इव्य मित्त नही, प्रावे ते अन्य अद्यास हो मित्त ॥ कथुं ॥ २ ॥
 शुद्ध स्वरूप सनातनो, निर्मल जे निःसंग हो मित्त ॥ आतम विभ्रति परिणम्यो, न

कर ते परसग हो मित ॥ क्युं ॥ ३ ॥ पण जाणुं आगम वदें, मलवो तुम प्रभु साथ हो मित ॥ प्रभु तो स्व संपत्तिमयी, शुद्ध स्वरूपनो नाथ हो मित ॥ क्युं ॥ ४ ॥ पर परिणामिकता अठे, जेतुज पुजव जोग हो मित ॥ जड चव जगनी एजनी, न घटे तुकने जोग हो मित ॥ क्युं ॥ ५ ॥ शुध निमित्त प्रभु ग्रहो, करी अशुध पर द्वेष हो मित ॥ आत्मावची गुण वही, सह साधकनो ध्येय हो मित ॥ क्युं ॥ ६ ॥ जिम जिनवर आवंवेने, वधे सधे एक तान हो मित ॥ तिम तिम आत्मावनी, ग्रहे स्वरूप निदान हो मित ॥ क्युं ॥ ७ ॥ स्व स्वरूप एकवता, साधे पूर्णानंद हो मित ॥ रमे जोगवे आतमा, रत्नत्रयी गुणवृद हो मित ॥ क्युं ॥ ८ ॥ अग्निदान अवलंबने, परमानंद विलास हो मित ॥ देवचंद्र प्रभु सेवना, करी अनुभव अत्रयास हो मित ॥ क्युं ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन ॥ कड्यानी देशी ॥ अहो सिरी सुमतिजिन शुश्रता ताहरी, स्वगुण पर्याय परिणाम रामी ॥ नित्यता एकता अस्तित्ता इतरभुत, जोग्य जोगीधको प्रभु अकामी ॥ अहो ॥ १ ॥ उपजे व्यव वहे तहवी तेहवो रहे, गुण प्रमुख बहुवता तहवी विंडि ॥ आत्मत्रावें रहे अपरता नवि ग्रहे, लोक प्रदेश मित पण अखडी ॥ अहो ॥ २ ॥ कार्य कारण पणे परिणमे तहवी धुव, कार्य नैदे करे पण अत्रेदी ॥ कर्तता परिणमे नव्यता नवि रमे, सकल वेत्ता धको पण अत्रेदी ॥ अहो ॥ ३ ॥ शुश्रता बुधता देव परमात्मता, सहज निज नाव जोगी अयोगी ॥ स्वपर उपयोगि तादात्म्य सत्ता रसी, शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ अहो ॥ ४ ॥

वस्तु . निज परिणते सर्व परिणामकी, एटले कोइ प्रयुता न पासे ॥ करे जाणे रसे
 अनुभव ते प्रयु, तत्व स्या मित्व शुचि तत्व धामे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ जीव नवि पुगवा
 नैव पुगवा कदा, पुगवाधार नहि तास रंगी ॥ परतणो ईश नहि अपर ऐश्वर्यता,
 वस्तु धर्मे कदा न परसंगी ॥ अहो० ॥ ६ ॥ संप्रहे नहि आपे नहीं परत्रणी, नवि करे
 आदरे न पर राखे ॥ शुद्धस्या द्वाद निज प्राव योगी जिके, तेह परप्रावने केम चाखे ॥
 अहो० ॥ ७ ॥ ताहरी शुद्धता नास आश्चर्यथी, उपजे रुचि तेणे तत्व ईहे ॥ तत्वरंगी
 थयो दोषथी जन्मथो, दोष त्यागे टले तत्व तीहे ॥ अहो० ॥ ८ ॥ शुद्ध मार्गे वध्यो साध्य
 साधन सध्यो, स्वामी प्रतिदंसत्ता आराधे ॥ आत्मनिष्पत्ति तिम साधना नवि टके,
 वस्तु उत्सर्ग आत्म समाधे ॥ अहो० ॥ ९ ॥ माहरी शुद्ध सत्ताणी पूर्णता, तेहनो
 हेतु प्रयु तुहि साचो ॥ देवचंद्रे स्त्वयो मुनिगणे अनु नव्यो, तत्व चर्के चविक सकल
 राचो ॥ अहो० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री पद्मप्रज्ञ जिन स्तवन ॥ हुं तुज
 आगल श्री कहुं केवरीया दाव ॥ ए देशी ॥ श्रीपद्म प्रज्ञ जिन गुण निधि रे दाव,
 जगतारक जग दीश रे वाह्वेसर ॥ जिन उपगार श्री लहे रे दाव, चविजन सिद्धि
 जगीश रे ॥ वा० ॥ १ ॥ तुज दृशिण मुज वावहुं रे दाव, दृशिण शुद्ध पवित रे ॥
 वा० ॥ दर्शन शब्द नये करे रे दाव, संप्रह एवं प्रूत रे ॥ वा० ॥ २ ॥ तु० ॥ बीजे वृद्ध
 अनंतता रे दाव, पसरे प्रू जल योग रे ॥ वा० ॥ तिम मुज आत्म संपदा रे दाव,
 प्रणटे प्रयु संयोग रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तुज० ॥ जगत जंतु कारज रुची रे दाव, साधे

उदयं प्राण रे ॥ वा० ॥ चिदानंदं सुवि दासता रे दाव, वाधे जिनवर जाण रे ॥ वा०
 ॥ ४ ॥ तुळ० ॥ लडिध सिद्धि मंत्राक्षरं रे दाव, उपजे साधक संग रे ॥ वा० ॥ सहज
 अध्यात्म तत्वता रे दाव, प्रगटे तत्वी रंग रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तुळ० ॥ लोह धातु
 कंचन हुवे रे दाव, पारस फरशान पासि रे ॥ वा० ॥ प्रगटे अध्यात्म दिशा रे दाव,
 व्यक्त गुणी गुण ग्राम रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ तुळ० ॥ आत्मसिद्धि कारज प्रणी रे दाव,
 सहज निर्धामक हेतु रे ॥ वा० ॥ नामादिक जिनराजनां रे दाव, त्रयसागर माहे
 सेतु रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ तुळ० ॥ शंभ्रन इंद्रिय योगनो रे दाव, रक्त वरण गुण राय रे ॥
 वा० ॥ देवचंद्र वंदे स्तव्यो रे दाव, आप अधर्ण अकाय रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ तुळ० ॥
 ॥ इति ॥ अथ श्री सप्तम श्रीसुपार्थ जिन स्तवन ॥ हो सुंदर, तप सरिखो, जग
 को नही ॥ ए देशी ॥ श्री सुपास आनंदमें, गुण अनंतनो कद हो ॥ जिनजी ॥ ज्ञाना
 नंद पूरणो, पवित्र चारित्रानंद हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ संरक्षण विण नाथ जो,
 जव्य विना धनवंत हो ॥ जिनजी ॥ करता पद किरिया विना, संत अजेय अनंत
 हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अगम अगोचर अमर तु, अन्वय रुद्धि समूह हो ॥
 जिनजी ॥ वर्ण गध रस फरस विणु, निज त्रोक्ता गुण व्यूह हो ॥ जिनजी० ॥ श्री०
 ॥ ३ ॥ अक्षय दान अचिंतना, दात्र अयत्ने प्रोग हो ॥ जिनजी ॥ वीर्य शक्ति अप्र-
 यासता, शुद्ध स्वगुण उपजोग हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ एकांतिक आत्यंतिको,
 सहज अकृत स्वाधीन हो ॥ जिनजी ॥ निरुपचरित निर्द्वंद्व सुख, अन्य अहेतूक

पीन हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ एक प्रदेशे तादरे, अव्याबाध समाय हो ॥ जिनजी ॥
 तसु पर्याय अविनागता, सर्वा काश न माय हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एम अनंत
 गुणनो धणी, गुण गुणनो आनंद हो ॥ जिनजी ॥ त्रोग रमण आख्याद युत, प्रभु तु
 परमानंद हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अव्याबाध रुचि धर्द, साधे अव्या बाध हो ॥
 जिनजी ॥ देवचंद्र पद ते लहे, परमानंद समाध हो ॥ जिनजी ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥
 अथ श्री चंद्रप्रज जिन स्तवन अष्टम ॥ श्री श्रेयांस जिन अंतरयामी ॥ ९ ॥ देशी ॥ श्री
 चंद्र प्रज जिन पद सेवा, हेवायें जे हदिया जी ॥ आतम गुण अनुभवथी मदिया, ते
 प्रव प्रथथी दक्षिया जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ उव्य सेव वंदन नमनादिक, अर्चन वली गुण
 ग्रामो जी ॥ नाव अत्रेद थावानी ईहा, पर त्रावें निःकामो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ नाव सेव अ-
 पवादें नैगम, प्रभुगुणने संकटपे जी ॥ संप्रह सत्ता तुद्यारोपें, त्रेदात्रेद विकटपे जी ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ व्यवहारें बहु मान ज्ञान निज, चरणें जिनगुण रमणा जी ॥ प्रभु गुण
 आवंवी परिणामें, कृत्रु पद ध्यानस्मरणा जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ शब्दें शुक्ल ध्याना रोहण,
 समत्रिरूढ गुण दशमे जी ॥ वीअ शुक्ल अविकटप एकत्वे, एवंभूत ते अमममें जी ॥
 श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्गें समकित गुण प्रगढ्यो, नैगम प्रभुता अशें जी ॥ संप्रह आतम सत्ता
 लंबी, सुनिपद नावप्रशासे जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ कृत्रुसूत्रें जे श्रेणी पदस्थें, आतमशक्ति
 प्रकाशे जी ॥ यथाख्यात पद शब्द स्वरूपें, शुद्ध धर्म जह्लासे जी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ नाव
 सयोगि अयोगि शैवेसैं, अंतिम जग नय जाणो जी ॥ साधनतार्यें निज गुण

व्यक्ति, तेह सेवना वखाणो जी ॥ श्री० ॥ ८ ॥ कारण नावतेह अपवाद, कार्यरूप
उत्सर्गो जी ॥ आत्मभाव ते नाव दव्य पद, बाह्य प्रवृत्ति निसर्गो जी ॥ श्री० ॥ ९ ॥
कारण नाव परंपर सेवन, प्रगटे कारण नावो जी ॥ कारण सिधे कारणता
व्यय, शुचि परिणामिक नावो जी ॥ श्री० ॥ १० ॥ परम शुणी सेवन तन्मयता,
निश्चय ध्याने ध्यावे जी ॥ शुशतम अनुभव आत्वादी, देवचंद्र पद पावे जी ॥
श्री० ॥ ११ ॥ ॥ इति ॥ अथ नवम श्री सुविधि जिन स्तवन ॥ आरा महेला ऊपर
मेह, ऊरुखे वीजवी हो दाव ॥ एदेशी ॥ दीजो सुविधि जिणंद, समाधिरसें चर्यो ॥ हो
दाव ॥ समाधि रसें चर्यो ॥ आसुं आत्मस्वरूप, अनादिनो विसर्यो ॥ हो दाव ॥ अ० ॥
सकल विभाव उपाधि, धर्की मन जसर्यो ॥ हो दाव ॥ थ० ॥ सत्ता साधन मार्ग, चणी
ए संचर्यो ॥ हो दाव ॥ च० ॥ १ ॥ तुम प्रचु जाणंग रीति, सरवजग देखता ॥ हो दाव
॥ स० ॥ निज सतार्थे शुरु, सहुने देखता ॥ हो दाव ॥ स० ॥ पर परिणति अर्धेष,
पणें जवेखता ॥ हो दाव ॥ पण० ॥ योग्यपणें निज शक्ति, अनंत गवेखता हो दाव ॥
अ० ॥ १ ॥ दानादिक निज नाव, हता जे परवशा ॥ हो दाव ॥ हता० ॥ ते निजसमुख
नाव, प्रहीवही तुज दशा ॥ हो दाव ॥ प्रही० ॥ प्रचुनो अङ्गुत योग, स्वरूप तणी रसा ॥
हो दाव ॥ स्वरूप० ॥ चासे चासे तास, जास शुण तुक जिसा ॥ हो दाव ॥ जास०
॥ ३ ॥ मोहादिकनी धूम, अनादिनी ऊतरे ॥ हो दाव ॥ अनादि० ॥ अमल अखंड
अद्विस, स्वभावज सात्रे ॥ हो दाव ॥ स्वभाव० ॥ तव्य रमण शुचिध्यान, चणी जे

आदरे ॥ हो लाव ॥ जणी ० ॥ ते समतारस धाम, स्वामी मुद्रा वरे ॥ हो लाव ॥ स्वामी ०
 ॥ ४ ॥ प्रभु वो त्रिभुवन नाथ, दास हुं ताहरो ॥ हो लाव ॥ दास ० ॥ करुणानिधि
 अत्रि लाव, अठे मुज ए खरो ॥ हो लाव ॥ अठे ० ॥ आत्म वस्तु स्वभाव, सदा मुठ
 सांखरो ॥ हो लाव ॥ सदा ० ॥ नासन वासन एह, चरण ध्यान धरो ॥ हो लाव ॥ चरण ०
 ॥ ५ ॥ प्रभु मुजने योग, प्रभु प्रभुता वखे ॥ हो लाव ॥ प्रभु ० ॥ ज्व्य तणे साधर्म्य,
 स्वसंपत्ति उवखे ॥ हो लाव ॥ स्व ० ॥ उवखतां बहु मान, सहित रुचि पण वधे ॥ हो लाव ॥
 सहित ० ॥ रुचि अनुयायी वीर्य, चरण धारा सधे ॥ हो लाव ॥ चरण ० ॥ ६ ॥ क्षयो-
 पशमिक गुण सर्व, थया तुळ गुण रसी ॥ हो लाव ॥ थया ० ॥ सत्ता साधन शक्ति, व्यकता
 उवखसी ॥ हो लाव ॥ व्यकता ० ॥ हवे संपूरण सिद्ध, तणी शी वार ठे ॥ हो लाव ॥ तणी ० ॥
 देवचंद्र जिन राज, जगत आधार ठे ॥ हो लाव ॥ जगत ० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ अथ
 दशम श्री शीतल जिन स्तवन ॥ आदर जीव क्रमगुण आदर ॥ ए देशी ॥ शीतल-
 जिनपति प्रभुता प्रभुनी, मुजधी कहिय न जाय जी ॥ अनंतता निर्मलता पूरणता,
 ज्ञान विना न जणाय जी ॥ शीतल ० ॥ १ ॥ चरम जलधि जल मिणे अंजली, गति
 जीपे अति वाय जी ॥ सर्व आकाश उदंधे चरणे, पण प्रभुता न गणाय जी ॥
 शीतल ० ॥ २ ॥ सर्व ज्व्य प्रदेश अनंता, तेहथी गुण पर्याय जी ॥ तास वर्गथी अनंत
 गुण प्रभु, केवल ज्ञान कहाय जी ॥ शीतल ० ॥ ३ ॥ केवल दर्शन एम अनंतो, ग्रहे
 सामान्य स्वभाव जी ॥ स्वपर अनंतथी चरण अनंतो, स्वरमण संवर नाव जी ॥

शीतल ० ॥ ४ ॥ इव्य क्षेत्र ने काव्य प्राय गुण, राजनीति ए चार जी ॥ त्रास विना जन
 चेतन प्रयुनी, कोइ न दोषे कार जी ॥ शीतल ० ॥ ५ ॥ शुश्रूषाय शिर प्रयु जपयोगे,
 जे समरे तुज नाम जी ॥ अथवाबाध अनंतो पामे, परम अमृत सुख धाम जी ॥ शीतल ०
 ॥ ६ ॥ आणा ईश्वरता निर्भयता, निर्वाहकता रूप जी ॥ प्राय स्वाधीन ते अव्यय रीते,
 इम अनंत गुण नूप जी ॥ शीतल ० ॥ ७ ॥ अव्या बाध सुख निर्मल तेतो, करण
 ज्ञाने न जणाय जी ॥ तेहज एहनो जाणंग जोका, जे तुम सम गुण राय जी ॥ शीतल ०
 ॥ ८ ॥ एम अनंत दानादिक निजगुण, वचनातीत पद्धर जी ॥ वासन त्रासन त्रावे
 डर्यन, प्रापति तो अति दूर जी ॥ शीतल ० ॥ ९ ॥ सकल प्रत्यक्षणे त्रिभुवन गुरु,
 जाणुं तुज गुण प्राप्त जी ॥ वीजुं कांड न मागुं स्वामि, एहिज ठे मुज काम जी ॥ शीतल ०
 ॥ १० ॥ एम अनंत प्रयुता सदर्हतां, अर्चे जे प्रयु रूप जी ॥ देवचंद्र प्रयुता ते पामे,
 परमानंद स्वरूप जी ॥ शीतल ० ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ एकादश श्री श्रेयांस जिन
 स्तवनं ॥ प्राणी वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस प्रयु तणी, अति अद्भुत
 सहजानंद रे ॥ गुण एकविध त्रिक परणम्यो, एम गुण अनंतनो वृद्ध रे ॥ १ ॥ मुनिचंद्र
 जिणंद अमंद दिणंद परं, नित्य दीपतो सुख कद रे ॥ ए अंकाणी ॥ निज ज्ञाने करी
 ज्ञेयनो, ज्ञायक ज्ञाता पद ईश रे ॥ देखे निज दर्शन करी, निज दृश्य सामान्य जगीश
 रे ॥ मुनि ० ॥ २ ॥ निज रम्यं रमण करो, प्रयु चारित्र्यं रमता राम रे ॥ जोग अनंतने
 जोगवो, जोगें तेणे जोका स्वाम रे ॥ मुनि ० ॥ ३ ॥ देय दान नित दीजते, अति दाता

प्रभु स्वयमेव रे ॥ पात्र तुभ्यं निज शक्तिना, ग्राहक व्यापकमय देव रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥
 परिणामिक कारज तणो, करता गुण करणे नाथ रे ॥ अक्रिय अक्षय स्थितिमयी,
 निकटक अनंती आथ रे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ परिणामिक सत्ता तणो, आविर्भाव विदास
 निवास रे ॥ सहज अकृत्रिम अपराश्रयी, निर्विकल्प ने निःप्रयास रे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥
 प्रभु प्रभुता संनारतां, गातां करतां गुण प्राप्त रे ॥ सेवक साधनता बरे, निज संवर
 परिणति प्राप्त रे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ प्रगट तत्त्वता ध्यावतां, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे ॥
 तत्त्वरमण एकाग्रता, पूरण तर्वे एह समाय रे ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ प्रभु दीठे मुक्त सांभरे,
 परमात्म पूर्णानंद रे ॥ देवचड जिन राजना, नित्य वंदो पद अरविंद रे ॥ मुनि० ॥
 ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ द्वादश श्रीवासुपूज्य जिन स्तवनं ॥ पंथडो निहाबुं रे
 वीजा जिन तणो रे ॥ ए देशी ॥ पूजना तो कीजें रे वारमा जिन तणी रे, जसु प्रगट्यो
 पूज्य स्वभाव ॥ परकृत पूजारे जे इहे नदीं रे, साधक कारज दाव ॥ पूजना० ॥ १ ॥
 डव्यथी पूजारे कारण नावनुं रे, नाव प्रशस्त ने शुभ ॥ परम इष्ट बह्वन्न त्रिभुवन धणी
 रे, वासु पूज्य स्वयंबुध ॥ पूजना० ॥ २ ॥ अतिशय महिमारे अति जपगारता रे, निर्मल
 प्रभु गुण राग ॥ सुरमणि सुरघट सुर तरु तुं बते रे, जिन रागी महा प्राग ॥ पूजना०
 ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञाना दिक गुण आत्मना रे, प्रभु प्रभुता लय दीन ॥ शुभ स्वरूपी रूपे
 तन्मयी रे, तसु आस्वादन पीन ॥ पूजना० ॥ ४ ॥ शुद्ध तत्व रस रंगी चेतना रे, पामे
 आत्म स्वभाव ॥ आत्मादावी निज गुण साधतो रे ॥ प्रगटे पूज्य स्वभाव ॥ पूजना०

॥ ५ ॥ आप अकतीं सेवाथी दुवे रे, सेवक पूरण सिद्धि ॥ निज धन न दीथे पण
 आश्रित वहे रे, अक्षय अक्षर शक्ति ॥ पूजना ० ॥ ६ ॥ जिनवर पूजा रे ते निज
 पूजना रे, प्रगटे अन्वय शक्ति ॥ परमानंद विदासी अनुभवे रे, देवचंद्र पद व्यक्ति ॥
 पूजना ० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ त्रयोदश श्री विमल जिन स्तवनं ॥ दास अरदास
 शी परे करे जी ॥ ए देशी ॥ विमलजिन विमलता ताहरी जी, अवर वीजे न कहाय ॥
 लघु नदी जिम तिम दंभीयें जी, स्वयंभू रमण न तराय ॥ विमल ० ॥ १ ॥ सयल
 पुढवी गिरि जल तरु जी, कोइ तोले एक द्वाय ॥ तेह पण तुज गुण गण त्राणी जी,
 जालवा नदीं समरथ ॥ विमल ० ॥ २ ॥ सर्व पुजल नत्र धर्मना जी, तेम अधर्म प्रदेश ॥
 तास गुण धर्म पज्जव सहु जी, तुज गुण एक तणी देश ॥ विमल ० ॥ ३ ॥ एम निज
 त्राव अनंतनी जी, अस्तित्ता केवळी थाय ॥ नास्तित्ता स्वपर पद अस्तित्ता जी, तुज
 समकाल समाय ॥ विमल ० ॥ ४ ॥ तादरा शुद्ध स्वभावने जी, आदरे धरी बहु
 मान ॥ तेहने तेहिज निपजे जी, ए कोइ अश्रुत तान ॥ विमल ० ॥ ५ ॥ तुम्ह प्रभु तुम्ह
 तारक विभुजी, तुम समो अवर न कोय ॥ तुम दरिसेण थकी हूं तर्षो जी, शुद्ध आदांबन
 होय ॥ विमल ० ॥ ६ ॥ प्रभु तणी विमलता ओलवळी जी, जे करे थिर मन सेव ॥
 देवचंड पद ते वहे जी, विमल आनंद स्वयमेव ॥ विमल ० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ ॥
 अथ चतुर्दश श्री अनंत जिन स्तवनं ॥ दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुज ॥ ए देशी ॥
 मूरति हो प्रभु मूरति अनंत जिणंद, ताहरी हो प्रभु ताहरी मुज नयणे वसी जी ॥

समता हो प्रभु समता रसनो कंद, सहैजें हो प्रभु सहैजें अनुभव रस लसी जी ॥ १ ॥
त्रवदव हो प्रभु त्रवदव तापित जीव, तेहने हो प्रभु तेहने अमृत धन समी जी ॥
मिथ्याविष हो प्रभु मिथ्या विषनी खीव, हरवा हो प्रभु हरवा जांगुलि मन रमी जी
॥ २ ॥ जाव हो प्रभु जाव चिंतामणि एह, आत्म हो प्रभु आत्म संपति आपवा जी
जी ॥ एहीज हो प्रभु एहिज शिव सुख गेह, तत्व हो प्रभु तत्वावंचन आपवा जी
॥ ३ ॥ जाये हो प्रभु जाये आश्रव चाल, दीठे हो प्रभु दीठे संवरता वधे जी ॥ रत्न हो प्रभु
रत्नप्रयी गुण माल, अध्यात्म हो प्रभु अध्यात्म साधन सधे जी ॥ ४ ॥ मीठी हो प्रभु
मीठी सूरत तुफ, दीठी हो प्रभु दीठी रुचि बहु मानधी जी ॥ तुजगुण हो प्रभु तुजगुण
चासन युक्त, सेवे हो प्रभु सेवे तसु त्रव त्रय नधी जी ॥ ५ ॥ नामें हो प्रभु नामें अद्भुत
रंग, ठवणा हो प्रभु ठवणा दीठे जह्लसैं जी ॥ गुण आस्वाद हो प्रभु गुण आस्वाद
अत्रंग, तन्मय हो प्रभु तन्मय तायें जे धसैं जी ॥ ६ ॥ गुण अनंत हो प्रभु गुण
अनंतनो वृंद, नाथ हो प्रभु नाथ अनंतने आदरें जी ॥ देवचंद्र हो प्रभु देवचंद्रने आ-
नंद, परम हो प्रभु परम महोदय ते वरे जी ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ अथ पंचदश श्री धर्म
जिन स्तवन ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥ धर्म जगनाथनो धर्म
शुचि गाइयें, आपणो आत्मा तेहवो प्राविषें ॥ जाति जसु एकता तेह पवटे नहिं,
शुद्ध गुण पजूवा वस्तु सत्तामयी ॥ १ ॥ नित्य निरवयव वलि एक अक्रिय पणे, सर्व
गत तेह सामान्य जावे चाणे ॥ तेहथी इतर सावयव विशेषता, व्यक्तिनेदें पडे जेहनी

चेदता ॥ १ ॥ एकता पिडने नित्य अविनाशता, अस्ति निज ऋद्धिश्ची कार्यं गत चेदता ॥
 त्राव श्रुत गम्य अत्रिलाप्य अनंतता, त्रव्य पर्यायनी जे परावर्तता ॥ ३ ॥ क्षेत्र गुण
 त्राव अविनाग अनेकता, नाश उत्पाद अनित्य परनास्तिता ॥ क्षेत्र व्याप्यत्व अत्रेद
 अव्यक्तता, वस्तु ते रूपश्ची नियत अत्रव्यता ॥ ४ ॥ धर्म प्राय त्रावता सकल गुण
 शुभता, त्रोग्यता कर्तता रमण परिण मता ॥ शुभ स्वप्रदेशता तत्व चैतन्यता, व्याप्य
 व्यापक तथा ग्राह्य ग्राहक गता ॥ ५ ॥ संग परिवारश्ची स्वामी निज पद लभ्युं, शुभ
 आत्मिक आनंद पद संग्रह्युं ॥ जहवि परत्रावश्ची हुं त्रयोदधि वस्त्यो, परतणो संग
 संसारतायें प्रस्त्यो ॥ ६ ॥ तहवि सत्ता गुणे जीव ए निर्मलो, अन्य संश्लेष जिम फिटक
 नवि शामलो ॥ जे परोपाधिश्ची छट्ट परिणति गही, त्राव तादात्म्यमां माहरुं ते नहीं
 ॥ ७ ॥ तिणे परमात्म प्रभु त्रक्ति रणी धर्द्द, शुभ कारणसें तत्व परिणति मयी ॥
 आत्मग्राहक श्ये तजे पर गृहणता, तत्व त्रोगी श्ये टवे परत्रोग्यता ॥ ८ ॥ शुभ नि-
 प्रयास निजत्राव त्रोगी यदा, आत्म क्षेत्रे नहीं अन्य रक्षण तदा ॥ एक असहाय
 निस्सग निर्द्वंद्वता, शक्ति उत्सर्गनी श्येय सहु व्यक्तता ॥ ९ ॥ त्रेणे मुक्त आतमा तुजशकी
 नीपजे, माहरी संपदा सकल मुज संपजे ॥ तिणे मन मंदिरे धर्म प्रभु ध्याइये, परम
 देवचड निज सिद्धि सुख पाईये ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ अथ षोडश श्री श्रांति जिम
 स्तवनं ॥ माता किहां ठे रे ॥ ए देशी ॥ जगत दिवाकर जगत कृपानिधि, वाटहा मारा
 समवसरणमां वेठा रे ॥ चञ्चमुख चञ्चविह धर्म प्रकाशे, ते में नयणे दीठा रे ॥ १ ॥ त्रविक

जन हरखो रे, निरखी जांति जिणंद ॥ त्रविक० ॥ उपशम रसनी कंद, नहि दण
सरखो रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रातिहारज अतिशय शोभा ॥ वा० ॥ ते तो कहिय न
जावे रे ॥ धूक वाढकथी रवि कर चरनुं, वर्णन केणि परें थावे रे ॥ त्रविक० ॥ १ ॥
वाणी गुण पांतीब्र अनोपम ॥ वा० ॥ अतिसंवाद सरूपें रे ॥ त्रव डःख वारण शिव
सुख कारण, सुधो धर्म प्ररूपे रे ॥ त्रविक० ॥ ३ ॥ दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशि सुख ॥
वा० ॥ त्रवणा जिन उपकारी रे, तसु आतंवन लहिय अनेके, तिहां थया समकित धारी
रे ॥ त्रविक० ॥ ४ ॥ खट नय कारय रूपें त्रवणा ॥ वा० ॥ सग नय कारण टाणी रे ॥
निमित्त समान थापना जिनजी, ए आगमनी वाणी रे ॥ त्रविक० ॥ ५ ॥ साधक तीन
निक्षेपा मुख्य ॥ वा० ॥ जेविणु जाव न लहीयें रे ॥ उपकारी हुग जाष्यें चारुया, जाव
वंदकनो महीयें रे ॥ त्रविक० ॥ ६ ॥ त्रवणा समव सरणें जिन सेंती ॥ वा० ॥ जो अत्रेद-
ता वाधी रे ॥ ए आतमना स्वस्वभाव गुण, व्यक्त योग्यता साधी रे ॥ त्रविक० ॥ ७ ॥
त्रहुं थयुं में प्रयु गुण गाथा ॥ वा० ॥ रसनानो फल लीधो रे ॥ देवचंद्र कहे महारा
मननो, सकल मनोरथ सीधो रे ॥ त्रविक० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥ अथ सप्तदश श्री कुंशु
जिन स्तवनं ॥ चरम जिनसरू ॥ ए देशी ॥ समवसरण वेसी करी रे, वारह परखद मांदि ॥
वस्तु स्वरूप प्रकाशता रे, करुणाकर जग नाहो रे ॥ १ ॥ २ ॥ कुंशु जिनसरू ॥ निर्मल तुज
सुख वाणी रे, जे श्रवणें सुणे ॥ तेहिज गुण मणि खाणि रे ॥ कुंशु ॥ ए आंकणी ॥
गुण पर्याय अनंतता रे, वली स्वभाव अगाह ॥ नय गम चंग निक्षेपना रे, हेयादेय प्रवाहो

रे ॥ कुशु० ॥१॥ कुशुनाथ प्रभु देवता रे, साधन साधक सिद्धि ॥ गौण मुख्यता वचनमां
 रे, ज्ञान ते सकल ससिद्धि रे ॥ कुशु० ॥ ३ ॥ वस्तु अनंत स्वभाव वे रे, अनंत कथक
 तसु नाम ॥ प्रादक अवसर बोधथी रे, कहेवे अर्पित कामो रे ॥ कुशु० ॥४॥ शेष अनर्पित
 धर्मने रे, सापेक्ष श्रद्धा बोध ॥ उन्नय रहित प्राप्तन हुवे रे, प्रगटे केवल बोधो रे ॥
 कुशु० ॥ ५ ॥ वति परणति गुण वर्तना रे, प्राप्तन जोग अनंद ॥ सम कर्तव्य प्रभु
 ताहरे रे, रम्य रमण गुण वदो रे ॥ कुशु० ॥ ६ ॥ निजभावै शी अस्तित्ता रे, पर
 नास्तित्व स्वभाव ॥ अस्तित्पणे ते नास्तित्ता रे, शीय ते उन्नय स्वभावो रे ॥ कुशु० ॥ ७ ॥
 अस्तित् स्वभाव जे आपणो रे, रुचि वैराग्य समेत ॥ प्रभु सन्मुख वंदन करी रे, मागीअ
 ज्ञातम हेतो रे ॥ कुशु० ॥ ८ ॥ अस्तित् स्वभाव रुचि धर्दे रे, ध्यातो अस्तित् स्वभाव ॥
 देवचंद्र पद ते वहे रे, परमानंद जमावो रे ॥ कुशु० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ अथ अष्टादश
 श्री अर जिन स्तवनं ॥ रामचंद्रके वाग ॥ ए देवी ॥ प्रणमो श्री अर नाथ, शिवपुर साथ
 ख से री ॥ त्रिभुवन जन आधार, नव निस्तार करो री ॥ १ ॥ कर्ता कारण योग, कारण
 सिद्धि वहे री ॥ कारण चार अनप, कार्याधि तेह भहे री ॥ २ ॥ जे कारण ते कार्य,
 थाये पूर्ण पदें री ॥ उपादान ते हेतु, माटी घटतेवदे री ॥ ३ ॥ उपादानथी त्रिभ,
 जे विणु कार्य न थाये ॥ न हुवे कारण रूप, कर्ताने उपवसाये ॥ ४ ॥ कारण तेह
 निमित्त, चक्रादिक घट नावे ॥ कार्य तथा समवाय, कारण नियत ने दावे ॥ ५ ॥ वस्तु
 अनेद स्वरूप, कार्यपणुं न भहे री ॥ ते असाधारण हेतु, कुत्रै रथास वहे री ॥ ६ ॥

जेहनी नवि व्यापार, त्रिन्न नियत बहु जावी ॥ त्रूमि काल आकाश, घट कारण सद्ब्रजावी
 ॥ ७ ॥ एह अपेक्षा हेतु, आगम मांहि कह्यो री ॥ कारण पद उत्पन्न, कार्य थये न
 दह्यो री ॥ ८ ॥ कर्ता आत्म डव्य, कारज सिद्धि पणो री ॥ निज सत्तागत धर्म, ते
 उपादान गणो री ॥ ९ ॥ योग समाधि विधान, असाधारण तेह वदे री ॥ विधि आ-
 चरण त्रक्ति, जिणे निज कार्य सधे री ॥ १० ॥ नरणाति पढम संघयण, तेह अपेक्षा
 जाणो ॥ निमित्ताश्रित उपादान, तेहने देखे आणो ॥ ११ ॥ निमित्त हेतु जिनराज,
 समता असत खाणी ॥ प्रभु अवतंवन सिद्धि, नियमा एह वखाणी ॥ १२ ॥ पुष्ट हेतु
 अरनाथ, तेहने गुणथी हविये ॥ रीळ त्रक्ति बहुमान, योग ध्यानथी मळिये ॥ १३ ॥
 म्होदाने उत्संग, वेवाने श्री चिंता ॥ तिम प्रभु चरण पसाय, सेवक थया निचिंता ॥ १४ ॥
 अर प्रभु प्रभुता रंग, अंतर शक्ति विकासी ॥ देवचंजने आनंद, अक्षय योग विदासी
 ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ एकोनविशः श्री महिजिन स्तवनं ॥ देखी कामिनी
 देय, के कामें व्यापीये रे के कां ॥ ए देशी ॥ महिनाथ जगनाथ, चरण युग ध्याईये
 रे ॥ चरणं ॥ शुश्रूतम प्राग्जाव, परम पद पाईये रे ॥ परमं ॥ साधक कारक
 षट्क, करे गुण साधना रे ॥ करे ॥ तेहिज शुश्रू स्वरूप, थाये निरा बाधना रे ॥ थाये ॥
 ॥ १ ॥ कर्ता आत्म डव्य, कारज निज सिद्धता रे ॥ कारजं ॥ उपादान परिणाम,
 प्रयुक्त ते करणता रे ॥ प्रयुक्तं ॥ आत्म संपद दान, तेह संप्रदानता रे ॥ तेहं ॥
 दाता पात्र ने देय, त्रिजाव अत्रेदता रे ॥ त्रिजाव ॥ २ ॥ स्वपर विवेचन करण, तेह

अर्पादानधी रे ॥ तेह ० ॥ सकल पर्याय आधार, संबंध आस्थानधी रे ॥ संबंध ० ॥
 बाधक कारक नाव, अनादि नि वार वा रे ॥ अनादि ० ॥ साध कता अव्यवंची, तेह
 समारवा रे ॥ तेह ० ॥ ३ ॥ शुद्ध पणे पर्याय, प्रवर्तन कार्यमे रे ॥ प्रवर्तन ० ॥ कर्ता
 दिक परिणाम, ते आत्म धर्म मे रे ॥ ते ० ॥ चेतन चेतन नाव, करे समवेतमे रे ॥ करे ० ॥
 सादि अनंतो काव, रहे निज खेतमे रे ॥ रहे ० ॥ ४ ॥ पर कर्तृत्व स्वभाव, करे तां जगि
 करे रे ॥ करे ० ॥ शुद्ध कार्य रुचि नास, अये नवि आदारे रे ॥ अये ० ॥ शुभ्रतम निज
 कार्य, रुचि कारक फिरे रे ॥ रुचि ० ॥ तेहिज मूल स्वभाव, ग्रहे निज पद वरे रे ॥ ग्रहे ०
 ॥ ५ ॥ कारण कारज रूप, अठे कारक दशा रे ॥ अठे ० ॥ वस्तु प्रगट पर्याय, एह मनमे
 वस्या रे ॥ एह ० ॥ पण शुद्ध सरूप ध्यान, ते चेतनता ग्रहे रे ॥ ते ० ॥ तव निज साधक
 नाव, सकल कारक जहे रे ॥ सकल ० ॥ ६ ॥ माहंत पूर्णानंद, प्रगट करवा जणी रे ॥
 प्रगट ० ॥ पुष्टाववन रूप, सेव प्रयुजी तणी रे ॥ सेव ० ॥ देवचंद्र जिनचंद्र, जगति
 मनमे धरो रे ॥ जगति ० ॥ अव्या बाध अनंत, अक्षय पद आदारे रे ॥ अक्षय ० ॥ ७ ॥
 ॥ इति ॥ ॥ अथ विजमा श्रीसुनिसुवत जिन स्तवनं ॥ उदंगडी उदंगडी सुहेवी हो श्री
 श्रेयांसनी रे ॥ ए देशी ॥ उदंगडी उदंगडी तो कीजे श्रीसुनिसुवत खामिनी रे, जेहथी
 निज पद सिद्धि ॥ केवल केवल ज्ञानादिक गुण जहसे रे, जहीयं सहज समृद्धि ॥ १ ॥
 उदंगडी ॥ उपादान उपादान निज परिणति वस्तुनी रे, पण कारण निमित्त आधीन ॥
 पुष्ट अपुष्ट जिविध ते उपदिश्यो रे, ग्राहक विधि आधीन ॥ २ ॥ उदंगडी ॥ साध्य

साध्य धर्म जेमांही हुवे रे, ते निमित्त अति पुष्ट ॥ पुष्ट पुष्ट मांहि तिव वासक वासना
 रे, नवि प्रभंसक छष्ट ॥ ३ ॥ उदंगडी ० ॥ दंड दंड निमित्त अपुष्ट घना तणो रे, नवि
 घटता तसु मांहि ॥ साधक साधक प्रभंसकना अत्रे रे, तिणे नहि नियत प्रवाह ॥ ४ ॥
 उदंगडी ० ॥ खटकारक खटकारक ते कारण कार्यनां रे, जे कारण स्याधीन ॥ ते कर्ता
 ते कर्ता सहुकारक ते वसु रे, कर्म ते कारण पीन ॥ ५ ॥ उदंगडी ० ॥ कारण कारण संकल्पे
 कारक दशा रे, वति सत्ता सदुभाव ॥ अथवा अथवा तुल्य धर्मने जोयवे रे, साध्यारो-
 पण दाय ॥ ६ ॥ उदंगडी ० ॥ अतिशय अतिशय कारण कारक करणता रे, निमित्त अने उ-
 पादान ॥ सप्रदान संप्रदान कारण पद प्रवनशी रे, कारण व्यय अपादान ॥ ७ ॥ उदं-
 गडी ० ॥ प्रवन प्रवन व्यय विणु कारण नवि हुवे रे, जिमद्वष दे न घटव ॥ शुद्धाधार
 शुद्धाधार स्वगुणनुं डव्य वे रे, सत्ताधार सुतत्व ॥ ८ ॥ उदंगडी ० ॥ आत्म आत्म
 कर्ता कारण सिध्ता रे, तसु साधन जिन राज ॥ प्रभु दीते प्रभु दीते कारण रुचि उ-
 पजे रे, प्रगटे आत्म समाज ॥ ९ ॥ उदंगडी ० ॥ वंदन वंदन सेवन नमन वदि पूजना
 रे, समरण स्तवन वदी ध्यान ॥ देवचंद्र देवचंद्र कीजे जिन राजनी रे, प्रगटे पूर्ण निधान
 ॥ १० ॥ उदंगडी ० ॥ ॥ इति ॥ ॥ अथ एकविंशः श्री नमिजिन स्तवनं ॥ पीठो-
 लारी पाद, उत्रा दोय राजवी रे ॥ ए देशी ॥ श्रीनमिजिनवर सेव, घनाधन ऊनम्भो रे ॥
 घनाधन ० ॥ दीठां सिध्दा रोरे, नविक चित्तशी गम्भो रे ॥ नविक ० ॥ शुचि आचरणा
 सीती, ते अन्न वधे वडां रे ॥ ते ० ॥ आत्म परिणति शुद्ध, ते वीज ऋकडा रे ॥

ते० ॥ १ ॥ वाजे वाय सुवाय, ते पावन त्रावना रे ॥ ते० ॥ इंद्र धनुष त्रिक योग, ते
 त्रिकि इक मना रे ॥ ते० ॥ निर्मल प्रभु रत्न वीष, ध्वनि धन गर्जना रे ॥ ध्वनि० ॥
 तृष्णा प्रीषम काल, तापनी तर्जना रे ॥ तापनी० ॥ २ ॥ शुभ वेद्यानी आदि, ते वग-
 पकति वनी रे ॥ ते० ॥ श्रेणी सरोवर हस, वसे शुचि गुण सुनि रे ॥ वसे० ॥ चउगति
 मारग वंध, त्रिकि जन घर रह्या रे ॥ त्रिकि० ॥ चेतन समता संग, रंगमें उमह्या
 रे ॥ रंगमें० ॥ ३ ॥ सम्यक् दृष्टि मोर, तिहां हरखे धणुं रे ॥ तिहां० ॥ देखी अद्भुत
 रूप, परम जिनवर तणुं रे ॥ परम० ॥ प्रभु गुणनो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥
 ते० ॥ धरम रुचि चित जूमि, मांदि निश्चल रही रे ॥ मांदि० ॥ ४ ॥ चातक श्रमण
 समूह, करे तव पारणो रे ॥ करे० ॥ अनुभव रस आस्ताद, सकल दुःख वारणो रे ॥
 सकल० ॥ अशुभाचार निवारण, तृण अंकुरता रे ॥ तृण० ॥ विरति तणा परिणाम, ते
 वीजनी पूरता रे ॥ ते० ॥ ५ ॥ पच महावत धान्य, तणा कर्षण वध्यां रे ॥ तणां० ॥
 साध्य त्राव निज थापी, साधनताएं सध्या रे ॥ साधन० ॥ दायिक दर्शन ज्ञान, चरण
 गुण उपना रे ॥ चरण० ॥ आदिक बहुगुण सस्य, आतम घर तीपना रे ॥ आतम०
 ॥ ६ ॥ प्रभुदरिण महामेह, तणे पर वज्रमें रे ॥ तणे० ॥ परमानंद सुत्रिक, धया
 सुऊ देशमें रे ॥ धया० ॥ देवचंद्र जिनचंद्र, तणो अनुभव करो रे ॥ तणो० ॥ सादि-
 अनंतो काल, आतम सुख अनुसरो रे ॥ आतम० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥ अथ द्वाविंश-
 श्री नेमनाथ जिन रत्नवन ॥ पद्य प्रज्ञ जिन जइ अलगा वस्या ॥ ए देशी ॥ नेम जिणे-

सर निज कारज कर्षो, तांड्यो सर्व विनायो जी ॥ आतम शक्ति संकल प्रगटी करी,
 आखाद्यो निजप्रा यो जी ॥ १ ॥ नेम० ॥ राजुल नारी रे सारी मति धरी, अग्रवंद्या
 अरिहंतो जी ॥ उत्तम संगे रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतो जी ॥ २ ॥ नेम० ॥
 धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाती अग्रहो जी ॥ पुजल ग्रहवे रे कर्म कलं-
 कता, वाधे वाधक बाह्यो जी ॥ ३ ॥ नेम० ॥ रागी संगे रे राग दशा वधे, धाये तिणें
 संसारो जी ॥ नीरागी धी रे रागनुं जोन्हुं, लहीधें चवनो पारो जी ॥ ४ ॥ नेम० ॥
 अप्रशस्तता रे टालि प्रशस्तता, करतां आश्रव नासे जी ॥ संवर वाधे रे साधे निर्जारा,
 आतम प्राव प्रकाशे जी ॥ ५ ॥ नेम० ॥ नेमि प्रभु ध्याने रे एकत्वता, निजतत्त्वं एक-
 तानो जी ॥ शुद्ध ध्याने रे साधि सुसिद्धता, लहियें मुक्ति निदानो जी ॥ ६ ॥ नेम० ॥
 अगम अरूपी रे अलख अगोचरु, परमात्म परमीशो जी ॥ देवचंड जिन वरनी
 सेवना, करतां वाधे जगीशो जी ॥ ७ ॥ नेम० ॥ इति ॥ ॥ अथ त्रयोविंशः श्री पार्श्व-
 जिन स्तवनं ॥ कनखानी देशी ॥ सहज गुण अगरो, स्वामी सुख सागरो, ज्ञान वैरागरे
 प्रभु सवायो ॥ शुद्धता एकता, तीक्ष्णता चावधी, चोह रिपु जीति जय पडह वायो
 ॥ १ ॥ सहज० ॥ वस्तु निज प्राव, अविनास निकलंकता, परिणति टुत्तिता करि
 अजेदें ॥ चावता दान्म्यता, शक्ति उद्भासथी, संतति योगने तुं उजेदें ॥ २ ॥ सहज०
 दोष गुण वस्तुनी, लखिय यथार्थता, लहि उदासीनता अपर प्रावें ॥ ध्वंसित
 ज्ञान्यता, प्राव कर्तापणुं, परम प्रभु तूं रम्यो निज स्वप्रावें ॥ ३ ॥ सहज० ॥ शुभ्र

अशुभ नाव, अविनास तहकीकता, शुभ अशुभ नाव तिहा प्रभु न कीधो ॥ शुद्ध परिणामता, वीर्य कर्ता धर्द, परम अकीयता अमृत पीधो ॥ ४ ॥ सहज० ॥ शुद्धता प्रभु तणी, आत्मभावें रमे, परम परमात्मता तास थाये ॥ मिश्र भावें अवे, त्रिगुणनी त्रिव्रता, त्रिगुण एकत्व तुज चरण थाये ॥ ५ ॥ सहज० ॥ उपशम रस त्री, सर्व जन सकरी, मूर्ति जिन राजनी आज नेटी ॥ कारणे कार्य नि, ष्पत्ति श्रधन वे, तिणे नव त्रमणनी त्रीड मेटी ॥ ६ ॥ सहज० ॥ नयर खंभावतें, पार्श्वप्रभु दरशने, विकसते हर्ष उत्साह बाधो ॥ हेतु एकत्वता, रमण परिणामधी, सिद्धि साधकपणो आज साधो ॥ ७ ॥ सहज० ॥ आज कृत पुण्य, धन दीह माहरो शयो, आज नर जनम में सफल नाव्यो ॥ देवचंद्र स्वामि, त्रैविशमो वंदीधो, त्रिकि नर चित्त, तुज गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥ सहज० ॥ ॥ इति ॥ अथ चतुर्विंशः श्री महावीर जिन स्तवन ॥ कडव्यानी देशी ॥ तार हो तार प्रभु, मुज सेवक तणी, जगतमां एटलो मुजश लीजें ॥ दास अवगुण त्रयो, जाणी पोता तणो, दयानिधि दीन पर दया कीजें ॥ तार० ॥ १ ॥ राग द्वेषें त्रयो, मोह वैरी नज्यो, लोकनी रीतिमां धणुंये रातो ॥ क्रोधवश धमधम्यो, शुद्ध गुण नवि रम्यो, त्रम्यो नवमांहि हुं विषयमातो ॥ तार० ॥ २ ॥ आदर्शुं आचरण, लोक उपचारधी, शास्त्र अत्र्यास पण कांई कीधो ॥ शुद्ध श्रधन वद्वि, आत्म अवदांब विनु, तेहवो कार्य तिणे को न सीधो ॥ तार० ॥ ३ ॥ स्वामि दरिस्वण समो, निमित्त जही, निर्मलो, जो उपादान ए शुचि नथाओ ॥ दोष को वस्तुनो, अहवा उद्यम तणो, स्वामी सेवा

सद्दी निकट वाशे ॥ तार० ॥ ४ ॥ स्वामि गुण उलखी, स्वामिने जे जने, दरिसण शुद्ध-
 ता तेह पासे ॥ ज्ञान चारित्र्य तप, वीर्य उद्धासथी, कर्म जीपी वसे सुक्ति धामे ॥ तार० ॥
 ॥ ५ ॥ जगत वत्सल मदा, वीर जिनवर सुणी, चित्त प्रभु चरणे शरण वास्यो ॥
 तारज्यो बापजी, विरुद निज राखवा, दासनी सेवना र खे जोशो ॥ तार० ॥ ६ ॥ वीनति
 मानज्यो, शक्ति ए आपज्यो, नाव स्याद्वादता शुद्ध नासे ॥ साधि साधक दशा, सिध्ता
 अनुभवी, देवचंद्र विमल प्रभुता प्रकाशे ॥ तार० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ कलश ॥
 चोवीसे जिनगुण गाइये, ध्याइये तत्व सरूपो जी ॥ परमानंद पद पाइये, अक्षय ज्ञान
 अनूपो जी ॥ चोवीसे ॥ १ ॥ चवदहसें वावन नला, गणधर गुण नंडारो जी ॥ समता
 मयि साहु साहुणी, सावय सार्वर्ह सारो जी ॥ चोवीसे ॥ २ ॥ वर्द्धमान जिनवरतणो,
 शासन अति सुखकारो जी ॥ चउविह संघ विराजता, दूसम काल आधारो जी ॥
 चोवीसे ॥ ३ ॥ जिन सेवनथी ज्ञानता, लहें हिताहित बोधो जी ॥ अहित त्याग हित
 अदरे, संयम तपनी शोधो जी ॥ चोवीसे ॥ ४ ॥ अत्रिनव कर्म अग्रहणता, जीर्ण
 कर्म अत्रावो जी ॥ निःकर्मनि अबाधता, अवेदन अनाकुल त्रावो जी ॥ चोवीशे ॥ ५
 ॥ त्रावरोगना विगमथी, अचल अक्षय निराबाधो जी ॥ पूर्णनिंद दशा लही, विवसे
 सिद्ध समाधो जी ॥ चोवीशे ॥ ६ ॥ श्री जिनचंडनी सेवना, प्रगटे पुण्य प्रधानो जी ॥
 सुमति सागर अति उद्धसे, साधुरंग प्रभुध्यानो जी ॥ चोवीशे ॥ ७ ॥ सुविहित गड
 खरतर वरू, राजसागर उवकायो जी ॥ ज्ञान धर्म पाठक तणो, शिष्य सुजश सुखदायो

जी ॥ चोवीशे ॥ १८ ॥ दीपचंद्र पाठक तणो, शिष्य स्तवे जिनराजो जी ॥ देवचंद्र पद
सेवतां, पूर्णानंद समाजो जी ॥ चोवीशे ॥ १९ ॥ ॥ इति देवचंद्रजी कृत चतुर्विं-
शति जिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ अथ साधवीजी देवश्रीजी कृत गरवीठ पांच प्रार-
यते ॥ आपें वेनी चलो सहिअं, जिनमंदिरकुं जइयें ॥ जिनमंदिरकु जइयें तो, प्रभु
दरिसणकु पइयें रे ॥ आपें ॥ १ ॥ मंदिर जातां कुमति वारे, तेपण लागे लारें ॥ पार
न आवे वडी एक टाणु, केम आतम अजुवाळुं रे ॥ आपें ॥ २ ॥ नरक निगोद
बहु जव नटक्यो, तोए न पामी तृति ॥ तृणा तरुणी आतम बोडी, मोह रायकी चेटी
रे ॥ आपें ॥ ३ ॥ चउद राजके चोकमें नाटक, विविध प्रकारें रमियो ॥ देश चोरश्री
फेरा फरीयो, कारज कोइ न सरियो रे ॥ आपें ॥ ४ ॥ क्रोध पाडोशी केड न मूके, तेणे
मुज वीथो वेरी ॥ चोरराजी लख जीवा जोनि, जव त्रमणकी सेली रे ॥ आपें ॥ ५ ॥
जमतां जमतां पार न आव्यो, प्रभु दरिसण न पायो ॥ काळ अनंतो निंद गमायो, वफी
फजरमां जायो रे ॥ आपें ॥ ६ ॥ जागीने वली जव में जोयुं, त्रींतर हइहुं खोळ्यु ॥
मोह तिमिर तव दूर नातो, प्रभु दरिसण मन हरव्यो रे ॥ आपें ॥ ७ ॥ वीर वशीमां
पेसतां सामा, जिमणा चरम जिणंदा ॥ बहु परिवारे वीरप्रभु वेजा ॥ चंद्र प्रभु मुख
दिवारे ॥ आपें ॥ ८ ॥ चंद्रकिरण जिम शीतल देत्रया, शमता रसना दरिया ॥ सुकुट
कुंडल शिर वज धरावे, समकित वीजना दाता रे ॥ आपें ॥ ९ ॥ धनुष डोढ्यो उंची
काया, ललन चंद्र सुहाया ॥ लखमणा नंदन नयणें जोतां, मेह अमीरस वुजा रे ॥

अर्घ्यं ॥ १० ॥ जमण्णं वाञ्छु चावाश्र जनना, दारसण्णं दागं मात्ता ॥ पशालानन्दनं स्याम
 वेत्ता, ज्ञानं अमीरस पीथा रे ॥ अर्घ्यं ० ॥ ११ ॥ संवत उगणीश तेन्नीअ आपाद, शुद्धि
 सत्तम गुरु वारं ॥ पुण्य प्रत्तावं प्रत्तुगुण गाया, सुक्ति मोहोत्तल सधाव्या रे ॥ अर्घ्यं ० ॥ १२ ॥
 इति प्रथम स्तवनं ॥ अथ गरवी वीजी ॥ चात्तो सखि शांति नाथने देहेरे के, वेत्ता जग धरणी
 रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु मुख पूनमको चंद के, दीपे दिन मण्णि रे लोत्त ॥ १ ॥ के वारी
 प्रत्तु शौलमा शांतिनाथ के, सेवा करे सुर मण्णि रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु अचिरा नंदन
 देव के, प्रत्तु करुणा करो रे लोत्त ॥ २ ॥ के वारी प्रत्तु लंची धनुष चात्तीशनी, काया
 दीपती रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु म्हालंदन पाय पीठ के, पद्मासनं शोचती रे लोत्त ॥ ३ ॥
 के वारी प्रत्तु अविनाशी अरिहत, के अतिशय चोवीशं रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु जगडे
 वेत्ता नाथ, के उन्न त्रण विरं धर्या रे ॥ लोत्त ॥ ४ ॥ के वारी प्रत्तु पर्वदा वार विराजे,
 दीए प्रत्तु देशना रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु चजमुख चिहुं दिश पोखे, वाणी पांवीश गुणी
 रे लोत्त ॥ ५ ॥ के वारी प्रत्तु जीवदया परत्ताव, के दीय पदवी लही रे लोत्त ॥ के वारी
 प्रत्तु चक्रवर्ति नरेन्द्र, के पति तीरथ अर्यो रे लोत्त ॥ ६ ॥ के वारी प्रत्तु दाख वरषनी
 आय, के पूरी शिववधू वर्या रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु सुखने मटके अटक्कुं, मन जाडं
 त्रामण रे लोत्त ॥ ७ ॥ के वारी प्रत्तु दागी तुमहुं प्रीत, के वनी अति आकरी रे
 लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु पदपंकजनी सेव, के करं तुम चाकरी रे लोत्त ॥ ८ ॥ के वारी
 प्रत्तु तुम चरणे मुज चित्त, के कृपानिधि तारज्यो रे लोत्त ॥ के वारी प्रत्तु मागुं शरणां-

चार, के दर्जाति वारज्यो रे लोव ॥ ९ ॥ के वारी प्रभु सेवकनी अरदास, के सुजरो मा-
 नज्यो रे लोव ॥ के वारी प्रभु देव तमारो दास, के मुक्ति आपज्यो रे लोव ॥ १० ॥
 इति ॥ ॥ अथ गरवी व्रीजी ॥ चावो सखि जइयें जातरा रे लोव, जिहां ठे मरु देवीनो
 नंद, शुभ्र नावधी रे ॥ चावो जइयें जिन वांदवा रे लोव ॥ १ ॥ चावतां चरण पावन
 थया रे लोव, आतम दूर्ध भराय ॥ शुभ्र ० ॥ वीर वशीमां पेसता रे लोव, नयणां पा-
 वन थाय ॥ शुभ्र ० ॥ चावो ० ॥ १ ॥ दश जत चैत्य शोहामणा रे लोव, वच्चें अष्टापद
 उत्तग ॥ शुभ्र ० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरा रे लोव, चोमुख प्रतिमा चार ॥ शुभ्र ० ॥ चावो ०
 ॥ ३ ॥ पूरव द्वारें पेसतां रे लोव, निस्सही कही त्रण वार ॥ शुभ्र ० ॥ पांच अग्निगमन
 साचवी रे लोव, परदक्षिण त्रण वार ॥ शुभ्र ० ॥ चावो ० ॥ ४ ॥ मूल नायक ऋषनना-
 थजी रे लोव, अजितनाथ शिवसाथ ॥ शुभ्र ० ॥ चारें ड्वारें विंवापना रे लोव, अष्ट
 दश दीप चार ॥ शुभ्र ० ॥ चावो ० ॥ ५ ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी रे लोव, ऋषनजी
 पूर्व प्रसिध् ॥ शुभ्र ० ॥ अष्टापद गिरि सिध् थया रे लोव, नदिन पुरें कर्यो विश्राम ॥
 शुभ्र ० ॥ चावो ० ॥ ६ ॥ शैव नरशी सुत हीरजी रे लोव, कुञ्जर अंगं सुजात ॥ शुभ्र ० ॥
 तस नार्थां शुक्लपक्षिणी रे लोव, उत्तम कुर्वें उत्पन्न ॥ शुभ्र ० ॥ चावो ० ॥ ७ ॥ दान
 शीघल तपस्या गुणे रे लोव, पूर वाई जग विख्यात ॥ शुभ्र ० ॥ सुगुरु संयोग उपदे-
 शधी रे लोव, चैत्य कर्यो चोसार ॥ शुभ्र ० ॥ चावो ० ॥ ८ ॥ समकित दृढ गुण
 आत्मा रे लोव, ज्ञान त्रकि निमित्त ॥ शुभ्र ० ॥ सफल त्रयो दिन आजनो रे लोव

देव जात्रा फल दीध ॥ शुभ्र० ॥ चावो० ॥ १८ ॥ कल्प दृक् फल्यो गुण्य अंकूरधी रे लोव,
 मुक्ति वर्यां सुख नरपूर ॥ शुभ्र० ॥ चावो० ॥ १० ॥ ॥ इति ॥ अथ गरवी चोधी ॥
 वीरवशी रक्षियामणी रे लाव, दीपे ठे इंड अवास ॥ नविपूजो रे ॥ चैत्य शिखर शोना
 घणी रे लाव, स्वर्णयुं करता वाद ॥ नवि० ॥ वीर शासन जय जयकरं रे लाव ॥ ११ ॥
 त्रैलोक्य दीपक देहरां रे लाव, चउ सुख प्रतिमा चार ॥ नवि० ॥ ध्वजा पताका फरे
 चउ दिशों रे लाव, गणपशुं करे गुंजार ॥ नवि० ॥ वीर० ॥ १२ ॥ वीर एकाकी राजतो
 रे लाव, पुण्ये प्रगढ्यो परिवार ॥ नवि० ॥ पडिमा पाषाण पीस्तावीस एकसो रे लाव,
 धातु संख्या परिमाण ॥ नवि० ॥ वीर० ॥ ३ ॥ सिंशरथ कुल शेहरो रे लाव, त्रिशवा
 अंग सुजात ॥ नवि० ॥ चरम जिणंद चोवीशमा रे लाव, शासनना सुवतान ॥ नवि० ॥
 वीर० ॥ ४ ॥ माणशर वदि दशमी दिने रे लाव, लीधो संजम नार ॥ नवि० ॥ चउ-
 नाणी प्रभुजी थया रे लाव, तार्यां चंदन वाव ॥ नवि० ॥ वीर० ॥ ५ ॥ वरस द्वादश
 तपस्या करी रे लाव, उपर वली खट मास ॥ नवि० ॥ एकाकी वसुधा तलें रे लाव,
 विचरे दीन द्याव ॥ नवि० ॥ वीर० ॥ ६ ॥ अग्निप्रह लीधा आकारा रे लाव, करता
 जग उपकार ॥ नवि० ॥ नर तिर्थेच देवनां कर्यां रे लाव, उपसर्ग सहा अपार ॥ नवि० ॥
 वीर० ॥ ७ ॥ क्रमा श्रमण देवढी तणा रे लाव, उपशम श्रेणीथें दौर ॥ नवि० ॥ मन
 समरण महाराजजी रे लाव, तोड्या कर्म जंजीर ॥ नवि० ॥ वीर० ॥ ८ ॥ वैशाख शुदि
 दशमी दिने रे लाव, ध्यान शुक्ल मन ध्याय ॥ नवि० ॥ जोग नावी मुजा करी रे लाव,

प्रभु पाभ्या केवल ज्ञान ॥ त्रवि० ॥ वीर० ॥ ९ ॥ कार्तिक कृष्ण दीवाली दिनें रे लाब
वीर पावा निर्वाण ॥ त्रवि० ॥ सुर नर नारी जय जय त्रणे रे लाब, देव मट्या सुक्ति
त्राण ॥ त्रवि० ॥ वीर० ॥ १० ॥ इति श्री वीरस्तवन रूप गरवी चोथी संपूर्ण ॥
अथ उपरनी गरवीयोनो कदश प्रारंभ ॥ राग धन्याश्री ॥ (गायो गायो रे वीरजी शान-
सन गायो) ॥ नदिन पुर नगर शोहामणुं रे, वसे नागला गोत्र विस्तार ॥ शेट नरसी
संवपति थया रे, राख्यो नव खंड नाम ॥ जुवो गति पुण्यनी रे ॥ पुण्यें वडित होय,
मोहें मारयां फले रे ॥ १ ॥ पुण्यें लखमी जपार्जिने रे, कीधा धर्मनां काम ॥ चैत्य संघ
ज्ञान गुरु तणी रे, त्रक्ति करे जदार ॥ जुवो० ॥ पुण्यें० ॥ मोहें ॥ २ ॥ विधि पद्म गज-
पति राजता रे, जश कीरति विस्तार ॥ पुण्य प्रगट सुक्ति मिट्या रे, रत्न तेज अणार ॥
जुवो० ॥ पुण्यें० ॥ मोहें० ॥ ३ ॥ ज्ञानगुणे रत्नागरु रे, रवि शशि तेज प्रताप ॥ कटप
जुम परें वरसता रे, देता अलक दान ॥ जुवो० ॥ पुण्यें० ॥ मोहें० ॥ ४ ॥ तस वद्वज
विचक्षण रे, विवेक सागर सूरिराय ॥ अचल गजपति राजता रे, दिन दिन तेज सवाय ॥
जुवो० ॥ पुण्यें० ॥ मोहें० ॥ ५ ॥ संवत् जगणीश तेजीशे रे, रूडो श्रावण मास ॥
चातुर्मास कर्यो संघ आझायें रे, देव दर्शन शून्य चाव ॥ जुवो० ॥ पुण्यें० ॥ मोहें०
॥ ६ ॥ ॥ इति ॥ अथ गरवी पाचमी ॥ काशी देशें ते नयरी वणारसी रे लोब, तिहां
जन्म्या ठे पास त्रेवीशमा रे लोब ॥ अश्वसेन राया कुल दिन मणि रे लोब, जेनी सेवा
करे सुर नर मली रे लोब ॥ १ ॥ दिग्-कुमरी लप्यन आवी मली रे लोब, प्रभुनो

जन्म महोत्सव करवा प्राणी रे लोव ॥ ऊर्ध्व लोकनी आठ कुमारिका रे लोव, जव
 वरसावे कुसुमादिका रे लोव ॥ २ ॥ शुचि ईशान शुणे धर प्राण करे रे लोव, जो-
 जन एक अशुचि दूरें टवे रे लोव ॥ पूर्वे रुचकनी आठ आरीसा धरे रे लोव, द-
 क्षिण आठ जव कवशा नरे रे लोव ॥ ३ ॥ अफ पश्चिम दिशि पला करे रे लोव,
 उत्तर आठ चामर शिर पर धरे रे लोव ॥ विदिशि चारे चारनी दीवा करे रे लोव, रुचक द्वा-
 पनी चौ वावा मली रे लोव ॥ ४ ॥ रक्षा पोटली बांधी वेढुकने रे लोव, मंदिर प्राण-
 गरी मेढ्यां माणिकें रे लोव ॥ माजी पुत्र तमारो लाडको रे लोव, चिरंजीवजो क्रीड
 वरसो लगे रे लोव ॥ ५ ॥ स्नात्र महोत्सव करी गुण गावती रे लोव, प्रभु रास रमाडी
 हुलरावती रे लोव ॥ जन्म महोत्सव करी गर्द स्थानकें रे लोव, त्यारे सुधर्म इंद्र आ-
 सन चट्युं रे लोव ॥ ६ ॥ अवधि ज्ञाने जोया प्रभु जन्मिया रे लोव, त्यारे चोश्राठ
 इंद्र त्रेला हुआ रे लोव ॥ मेरु गिरि शिखरें नवरवीया रे लोव, जिन जननी मंदिर
 पधरवीया रे लोव ॥ ७ ॥ प्रभु सुकृष्ट कुडव अवतंकारीया रे लोव, वज्र भेडी दंडे
 रमाडीया रे लोव ॥ प्रभु वाव प्रावे क्रीडा करे रे लोव, तीन ज्ञान कला नित्य अ-
 नुसरे रे लोव ॥ ८ ॥ अथ खेलावा स्वामी वनमां भया रे लोव, तिहां कमठ हठी
 नजरे चड्यो रे लोव, अज्ञानी कष्ट क्रिया करे रे लोव, पन्नग काय अग्निमां पर जवे
 रे लोव ॥ ९ ॥ तुज ज्ञान दया करुणा नहिं रे लोव, लोक प्ररमावी नवकूपमां
 पडे रे लोव ॥ काष्ट फोडी नवकार शुणाविया रे लोव, नाग निकाय धरणेंड पद

थापीया रे दौल ॥ १० ॥ प्रभु संयम विधे शुभ शासने रे दौल, उपशम काउ-
 स्सगा रहे एक आसने रे दौल ॥ जल उपसर्ग कर्षो कमठे घणो रे दौल, त्यारे
 धरण्ड आसन चढ्यो रे दौल ॥ ११ ॥ नागपाज कमल रचना करी रे दौल, शिर
 तन धरे फणी टोपनो रे दौल ॥ चरणे नमी असुर उत्रो रह्यो रे दौल, दश नवनु
 वैर खमाविद्युं रे दौल ॥ १२ ॥ प्रभु सुमति सदा दित्त वासिया रे दौल, चञ्ज कर्म
 खपाव्या घन घातिया रे दौल ॥ प्रभु उपशमश्रेणी दोरी करी रे दौल, कृपकश्रेणी
 चढी सुक्ति वरी रे दौल ॥ १३ ॥ शत एक आधु पूरण करी रे दौल, शिव पहेता
 समेत शिखर गिरि रे दौल ॥ प्रभु चञ्ज राजना जो धणी रे दौल, वासो कीधो सु-
 धरी नगरी नणी रे दौल ॥ १४ ॥ कव देश पश्चिम सुधरी नदी रे दौल, तखते वेला
 श्री घृतकङ्खोवजी रे दौल ॥ सुधरी गामनो संघ सोत्रागियो रे दौल, देव दरशन गुरु
 चरण रागियो रे दौल ॥ १५ ॥ पार्श्व यक्ष सदा आनंद करे रे दौल, सुख मान्या
 पासा-संघना पडे रे दौल ॥ जमणा अजित शाति कृषननाथजी रे दौल, धर्मना-
 थजी पूरे शिव साधजी रे दौल ॥ १६ ॥ नेम कुंथु श्रेयांस अग्यारमा रे दौल, सुम-
 तिनाथ विराजे चौसुखे रे दौल ॥ पार्श्वनाथजी परिकर शोत्रता रे दौल, नाग दं-
 वन पादपीठ शोत्रता रे दौल ॥ १७ ॥ प्रभु जल वटे काज तरावियां रे दौल,
 नाग नागिणी बलतां जगरीयां रे दौल ॥ जे कोह घृतकङ्खोवजीना रागिया रे दौल,
 इहा संघवी सदा सघ लावीया रे दौल ॥ १८ ॥ प्रभु पूजा रचावे अष्ट मंगल रे

लोब, अचल गहनी कीर्ति विस्तरी रे लोब ॥ गुण्य पाटें सुक्ति पद पामीया रे लोब,
 रल संघ सकद मन प्राविथा रे लोब ॥ १९ ॥ तस पाटें पवित्र विचक्रणा रे लोब,
 सानिध्य कारी महा कावीजी शासने रे लोब ॥ संवत जगणी वरस वत्रिशमां रे
 लोब, चतुर्मासो कियो संघ आझा रे लोब ॥ २० ॥ आथो पूनम तिथि गुरु वासरे
 रे लोब, गुरु आणा वहुं शिर उपरे रे लोब ॥ गरवी गाइ श्रमणी देव श्री रे लोब
 जे सांजवे ते जिन गुण रागिया रे लोब ॥ २१ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ परमं परमेष्ठिपंचक, प्रणिपत्यात्मपरोपकारकं ॥ विदधामि
 समासतः रफुटं, दशधारधनसूत्रसंग्रहम् १ ऋषकः प्रणिपातपूर्वकं, गुरुसंगततरंगरंगितः ॥
 वदतीति विप्रोऽधुनोचितं, कुरु निस्तारय मां त्रवर्णावात् २ महुरैर्मंडत्रिमर्तोदरै-र्जितसिंधां-
 तगतैर्बचोन्नरैः। सुप्रदानिव वदिनो रणे, गुरुस्तसाह्वयतीति रीतिवित ३ अथि धीर विवेकवा
 नसि, स्मृतकृत्योसि गुणप्रणिरसि। परलोकहितावहोऽधुना, यदि प्रो धर्ममतिस्तवारस्यहो
 ऽ सुकृतस्य कृतस्य कर्मणः, शुभमस्युः कलसाधिरोपणं। नवहस्तमतस्य शस्यते, वरकुंजस्य
 हि कोटिसारता ५ जननं यदि जातमग्निनां, मरणं तन्नियतं त्रविष्यति। इति निश्चयत,
 प्रमोदनाकु, तदिमं पंडितमस्युमाचरद् अतिचारविशोधनं १ व्रतो-च्चरणं २ कामणमागसां-
 ३ कुरु ॥ त्यज पातककारणानि वै ४ श्रय चत्वारि ५ निर्निदं हकृतं दं ॥ ७ ॥ सुकृतान्पनुमोद
 यात्मनः ७ शुभप्रावं कुरु ८ चायानं त्यज ९ स्मर पंचनमस्कृतीर्मुदा १० शिवधर्मांशु
 लजस्य प्रो यथा ८ ज्ञानादिकाचारकपंचके वा-न्तीचार आगान्मम योऽपि सुक्ष्मः। आलो-

चयेऽह तमशेषमथ, त्रिधा विभुत्वा गुरुदेवसाक्षि ए यद्कालमुखाष्टके मया, पठित ज्ञानम-
 पाठि चापरैः । विधिना पठता च विधीतं, यद्व्यज्ञातमधीत्य गर्वितं १० वसनेरशनेश्च
 पुरतर्के-र्न च साहाय्यमकारि शक्तितः । पुटसंपुटपटिकादि य-न्मयकाशातितमस्तु तद्ब्रथा ११
 मलिनं फलशंकरादिभि, शुभ्रसम्भ्यकत्वमकारि कारणैः । न कृत जिनपूजन मुदा, जिनपा-
 ज्ञापि न चारु पाठिता १२ गुरुदेवधन कचिद्वदे, सति सामर्थ्यं उर्पोक्षितं चिरं । निखिल
 दुरितं दृश्यास्तु मे, कृतमासातनया कथापि यत् १३ समितिशुतगुप्तिभिः सम, चरणं
 सम्यगिद न पाठित । अथत्रदकवन्दिवाव्यगा-दथ एकेन्द्रिय जंतवो हता ॥ १४ ॥
 कृमिपूतरशंखशुक्तिका-प्रसुखा द्विन्द्रियकारतथैव ये । युणमत्कुणकुंशुकीटिका-प्रज्जवास्त्रि
 द्वियजंतुजातयः १५ चतुरिन्द्रियनृगकृतिका-सरपाद्यश्चिककोलिकादयः । खजलरज्वलचा-
 रिदेहिनः, किल पंचेन्द्रियकास्त्रिधा पुनः १६ इति संस्तुतिसश्रिता हता, अत्रिधातादिदश-
 प्रकारकेः । तनुवाद्दरजतवो मथा, मम मिथ्यारस्तु तद्वद्य ड-कृतं १७ अन्तं जगद् क्रुधा-
 दिभि-र्यददत्त जगुह स्वाम्बकं । नरदेवतिरश्रिसंजवं, त्रिविधं मैशुनमत्र सेवितम् १८
 नवधा धनधान्यकादिके, समताकारि च यत्परिग्रहे । नियमेषु निशाशानादिषु, यदती
 चारितमस्तु तद्ब्रथा १९ युग्मं ॥ सति शक्तिररेऽपि यत्तपो, न कृतं द्वादशधा जिनोदितं ॥
 त्रिावसाधनधर्मकर्मसू-अमितं नैव तद्वद्य निंदये २० प्राणतिपातविरतिप्रमुखव्रतानि, पूर्व
 यथाविधि सुधीर्नवताडतानि । ज्ञावेन संप्रति पुनर्नृण धारितानि, यत्पादयोर्नैरतिचारमतो
 हितानि २१ सह संप्रति सर्वदेहिना-म्पराधं च क्रमस्व तन्निरं । नज मैत्र्यमति त्यक्त

क्रुधं, शमसंवेगसुधारसं पिव ११ हिंसासूततचौर्यमैथुनधनकांक्षाक्रुधं मानकं, मायात्वोन्न-
 क्तदी च रत्यरतिमत्याख्यात्तपैशुन्यकै. । द्वेषः प्रेमपरापवादवदन मायामुषान्नाषणं,
 मिथ्यादर्शनश्रव्यपातकपद चाष्टादशापि त्यज १३ इह ये कश्चिताश्चतुर्विधा, अत्रिधारस्था-
 पनद्व्यन्नावतः । शरणं चरणारस्तदहंतां, ब्रज मृत्योरवनं वितन्वतां १४ सुवनाधिपवा-
 नमंतर मनुजज्योतिरमृतर्यन्मिषु । नम शारवतचैत्यसंस्थिता-हंताविवात्यमिताति नावतः
 १५ विमलार्तुदरैवताचल-कनकाष्टापदपर्यतादिषु । अपरास्वपितीर्थन्मीकान्स्वत्रिर्वदे जि-
 नजन्मन्मिषु-१६ धनकर्ममदं विदह्य ये, तपसापुः परमात्मरूपतां । दश पंच च विभ्र-
 तो त्रिदो, मध सिद्धाः शरणं त्रवंतु ते १७ शिवसाधकयोगसाधका, विषयग्रामनियोग-
 बाधकाः । शरणं मम सर्वसाधवो, मनुजक्षेत्रगताः क्षमाजुवः १८ त्रवसागरतरणक्षमः
 सकलप्राणिहितः शमोत्तम. ॥ शरणं दशधा जिनोदितो, मम धर्मः शिवशर्मसाधनं १९
 मरणसमये आराधनास्तवकः ॥ कुमतं यदिह प्ररूपितं, जिनधर्मो यदपहृतो मया । गुणि-
 ना गुणमत्सगः कृतः, कुकुटंबं पुपुषु ममत्वतः ३० प्रकृता सुकृतांतरायता, जनता पातक-
 कर्मणीरिता । विकथाः कथिता. प्रमादतः परिगर्हं तदशेषद. कृतं ३१ शुभमं ॥ जिनमंदिरविंब-
 पुरतके-ध्वपिसधे धनसुप्तमजसा ॥ प्रतिपादितपः समर्थित, यददं धर्मविधौ सहायतां ३२
 विदधे विधितेशना मया, पठितः पाठित आगमोपि यत् । समयाहुजमन्वदप्यहं, निजगुण्यं,
 त्वनुमोदयाम्यदं ॥ शुभमं ॥ ३३ ॥ त्रवपंजरत्रंजनोद्भुताः, परिशुश्र्वात्मगुणाः सदा यथा । परि-
 नावय त्रव्यन्नावना, मनसि द्वादशसख्ययाऽधुना ३४ स्वगतेऽन्यमतेपि सर्वदा. महिमा

यस्य महाविद्यया । विधिनानशनं पृथग्विद्वान्निघातसत्वरं, रमर मत्रं परमेष्ठिपुत्रं ३६
 कलिमदिर, सुरसंपद्वज्रहेत्वनुतर । अथसंबन्धिघातसत्वरं, रमर मत्रं परमेष्ठिपुत्रं ३६
 अथानारतवक एव कृत. क्रमेण, साम्यस्थितेन गुरुणा जयशेखरेण । एता विद्याव्य
 निधि यः शयन विद्यते, तस्मै महोदयपदं नियतं प्रदत्ते ॥३७॥ इति श्रीजयशेखरसूरिकृ-
 तअथानारतवकः ॥ श्री ॥ श्रीसुत्रं चवतु श्रीकट्याणमस्तु ॥

॥ इति संपूर्णः ॥

श्रीसिद्धिदा केन यथावय ।

गोकार्त्त ।

